

आनन्दाश्रमसंस्कृतग्रन्थावलिः ।



ग्रन्थाङ्कः ७१

त्रिमल्लभट्टविरचिता

बृहद्योगतरङ्गिणी ।

अस्याः द्वितीयो भागः ।

एतत्पुस्तकं

करवीरस्थैः वे० शा० रा० रा० हनुमन्त पाध्येशास्त्री
इत्येतैः संशोधितम् ।

तच्च

हरि नारायण आपटे

इत्यनेन

पुण्याख्यपत्तने

आनन्दाश्रममुद्रणालये

आयसाक्षरैर्मुद्रयित्वा

प्रकाशितम् ।

शालिवाहनशकाब्दाः १८३५

ख्रिस्ताब्दाः १९१४

(अस्य सर्वेऽधिकारा राजशासनानुसारेण स्वायत्तीकृताः)

मूल्यं द्वादशाणकाधिकं रूपकपञ्चकम् (रु० ५०१२)



अथ बृहद्योगतरङ्गिणीस्थविषयानुक्रमणिका ।

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
तत्र प्रथमस्तरङ्गः । १		दोषजो व्याधिः	११
मङ्गलाचरणम्	१	चिकित्सालक्षणम्	११
अनुबन्धचतुष्टयम्	१	वैद्यलक्षणम्	११
चिकित्साफलम्	१	वातादिदोषप्रकोपहेतुनिरूप-	
ग्रन्थप्रशस्तिः	१	णम्	११
रोगशान्त्युपायाः	१	वातप्रकोपः	५
चिकित्साया अष्टावङ्गानि...	२	पित्तप्रकोपः	११
चिकित्सापादाः	२	कफप्रकोपः	११
संक्षेपतो दोषाणां कथनम्.	२	वातविकारलक्षणम्	११
देशविशेषेण दोषनिरूपणम्.	३	पित्तविकारलक्षणम्	११
साधारणदेशकथनम्	३	कफविकारलक्षणम्	६
मात्राचतुष्टयम्	३	दोषाणामुत्पत्तिकथनम् ...	११
प्रकृतित्रयम्	३	अथ द्वितीयस्तरङ्गः । २	
मलरेतःसंरक्षणपूर्विका चि-	३	अथ शारीरम्	७
कित्सा कार्या	३	शारीरज्ञानप्रयोजनम् ...	११
स्वल्परोगोऽप्यनुपेक्ष्यः ...	३	सर्वशारीरसंग्रहः	११
आसन्नमरणस्यापि चिकि-	३	शरीरोत्पत्तिक्रमः	११
त्सा कार्या	३	गृहीतगर्माया लक्षणम् ...	११
चिकित्सोत्तरं वैद्यपूजनाकर-	३	ऋतुलक्षणम्	११
णे दोषः	३	अनार्तवकाले गर्भग्रहणामावे	
लोभेन चिकित्सापण्यविक्रये	३	कारणम्	११
निषेधः	३	गर्भवृद्धिकथनम्	८
रोगपरीक्षोत्तरं चिकित्सा	३	प्रतिमासं गर्भवृद्धिव्यवस्था.	११
कार्या	३	गर्भस्य द्वैविध्ये हेतुः	९
व्याधिभेदाः	३	विकृतोत्पत्तिहेतुः	११
कर्मजो व्याधिः	३	गर्भनष्टहेतुः	११
कर्मदोषजो व्याधिः	३	अङ्गप्रत्यङ्गोत्पत्तिः	११

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

LIBRARY

1950-1951		1952-1953		1954-1955		1956-1957		1958-1959		1960-1961		1962-1963		1964-1965		1966-1967		1968-1969		1970-1971		1972-1973		1974-1975		1976-1977		1978-1979		1980-1981		1982-1983		1984-1985		1986-1987		1988-1989		1990-1991		1992-1993		1994-1995		1996-1997		1998-1999		2000-2001		2002-2003		2004-2005		2006-2007		2008-2009		2010-2011		2012-2013		2014-2015		2016-2017		2018-2019		2020-2021		2022-2023		2024-2025		2026-2027		2028-2029		2030-2031		2032-2033		2034-2035		2036-2037		2038-2039		2040-2041		2042-2043		2044-2045		2046-2047		2048-2049		2050-2051		2052-2053		2054-2055		2056-2057		2058-2059		2060-2061		2062-2063		2064-2065		2066-2067		2068-2069		2070-2071		2072-2073		2074-2075		2076-2077		2078-2079		2080-2081		2082-2083		2084-2085		2086-2087		2088-2089		2090-2091		2092-2093		2094-2095		2096-2097		2098-2099		2100-2101		2102-2103		2104-2105		2106-2107		2108-2109		2110-2111		2112-2113		2114-2115		2116-2117		2118-2119		2120-2121		2122-2123		2124-2125		2126-2127		2128-2129		2130-2131		2132-2133		2134-2135		2136-2137		2138-2139		2140-2141		2142-2143		2144-2145		2146-2147		2148-2149		2150-2151		2152-2153		2154-2155		2156-2157		2158-2159		2160-2161		2162-2163		2164-2165		2166-2167		2168-2169		2170-2171		2172-2173		2174-2175		2176-2177		2178-2179		2180-2181		2182-2183		2184-2185		2186-2187		2188-2189		2190-2191		2192-2193		2194-2195		2196-2197		2198-2199		2200-2201		2202-2203		2204-2205		2206-2207		2208-2209		2210-2211		2212-2213		2214-2215		2216-2217		2218-2219		2220-2221		2222-2223		2224-2225		2226-2227		2228-2229		2230-2231		2232-2233		2234-2235		2236-2237		2238-2239		2240-2241		2242-2243		2244-2245		2246-2247		2248-2249		2250-2251		2252-2253		2254-2255		2256-2257		2258-2259		2260-2261		2262-2263		2264-2265		2266-2267		2268-2269		2270-2271		2272-2273		2274-2275		2276-2277		2278-2279		2280-2281		2282-2283		2284-2285		2286-2287		2288-2289		2290-2291		2292-2293		2294-2295		2296-2297		2298-2299		2300-2301		2302-2303		2304-2305		2306-2307		2308-2309		2310-2311		2312-2313		2314-2315		2316-2317		2318-2319		2320-2321		2322-2323		2324-2325		2326-2327		2328-2329		2330-2331		2332-2333		2334-2335		2336-2337		2338-2339		2340-2341		2342-2343		2344-2345		2346-2347		2348-2349		2350-2351		2352-2353		2354-2355		2356-2357		2358-2359		2360-2361		2362-2363		2364-2365		2366-2367		2368-2369		2370-2371		2372-2373		2374-2375		2376-2377		2378-2379		2380-2381		2382-2383		2384-2385		2386-2387		2388-2389		2390-2391		2392-2393		2394-2395		2396-2397		2398-2399		2400-2401		2402-2403		2404-2405		2406-2407		2408-2409		2410-2411		2412-2413		2414-2415		2416-2417		2418-2419		2420-2421		2422-2423		2424-2425		2426-2427		2428-2429		2430-2431		2432-2433		2434-2435		2436-2437		2438-2439		2440-2441		2442-2443		2444-2445		2446-2447		2448-2449		2450-2451		2452-2453		2454-2455		2456-2457		2458-2459		2460-2461		2462-2463		2464-2465		2466-2467		2468-2469		2470-2471		2472-2473		2474-2475		2476-2477		2478-2479		2480-2481		2482-2483		2484-2485		2486-2487		2488-2489		2490-2491		2492-2493		2494-2495		2496-2497		2498-2499		2500-2501		2502-2503		2504-2505		2506-2507		2508-2509		2510-2511		2512-2513		2514-2515		2516-2517		2518-2519		2520-2521		2522-2523		2524-2525		2526-2527		2528-2529		2530-2531		2532-2533		2534-2535		2536-2537		2538-2539		2540-2541		2542-2543		2544-2545		2546-2547		2548-2549		2550-2551		2552-2553		2554-2555		2556-2557		2558-2559		2560-2561		2562-2563		2564-2565		2566-2567		2568-2569		2570-2571		2572-2573		2574-2575		2576-2577		2578-2579		2580-2581		2582-2583		2584-2585		2586-2587		2588-2589		2590-2591		2592-2593		2594-2595		2596-2597		2598-2599		2600-2601		2602-2603		2604-2605		2606-2607		2608-2609		2610-2611		2612-2613		2614-2615		2616-2617		2618-2619		2620-2621		2622-2623		2624-2625		2626-2627		2628-2629		2630-2631		2632-2633		2634-2635		2636-2637		2638-2639		2640-2641		2642-2643		2644-2645		2646-2647		2648-2649		2650-2651		2652-2653		2654-2655		2656-2657		2658-2659		2660-2661		2662-2663		2664-2665		2666-2667		2668-2669		2670-2671		2672-2673		2674-2675		2676-2677		2678-2679		2680-2681		2682-2683		2684-2685		2686-2687		2688-2689		2690-2691		2692-2693		2694-2695		2696-2697		2698-2699		2700-2701		2702-2703		2704-2705		2706-2707		2708-2709		2710-2711		2712-2713		2714-2715		2716-2717
-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------	--	-----------

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
प्रत्यङ्गानि	”	अथ तृतीयस्तरङ्गः । ३	
शब्दादिगुणाः	१०	अथ मानपरिमाणा	२३
कस्मान्द्रूतात्किमुत्पद्यते तन्नि-	”	मगधपरिमाणा	”
रूपणम्	”	कलिङ्गपरिमाणा	२५
देहे पितृमातृजप्रत्यङ्गविभागः	”	कृष्णात्रेयप्रोक्तं परिमाणम्.	”
सत्त्वादिगुणाः	”	अथ चतुर्थस्तरङ्गः । ४	
कलालक्षणम्	११	ओषधीनां युक्तायुक्तता	२६
आशयाः	”	गुडूच्याद्योषधियोजना	”
धातवः	१२	शुष्काद्रौषधियोजना	”
धातुमलाः	१३	अनुक्तकालादिव्यवस्था	”
उपधातवः	१४	ओषधीनां गुणागुणवर्णनम्.	”
सप्त त्वचः	”	ओषधीनां प्रतिनिधयः	”
दोषाः	”	गोरक्षमतेनौषधीनां प्रतिनि-	
शिराः	१६	धयः	२७
स्नायवः	”	अथ पञ्चमस्तरङ्गः । ५	
कण्डराः	”	अथ स्नेहपानविधिः	२८
धमन्यः	”	स्नेहमेदाः	”
पेश्यः	१७	स्नेहमात्रा	२९
अस्थीनि	”	रोगविशेषेण स्नेहविशेषः	”
संधयः	”	कालविशेषेण स्नेहपानम्	”
रन्ध्राणि	”	स्नेहनयोग्याः	”
स्रोतांसि	१८	स्निग्धलक्षणम्	”
मर्माणि	१९	स्नेहपाकविधिः	३०
अस्थिमर्माणि	”	तैलशोधनम्	”
संधिमर्माणि	”	स्नेहे जलप्रमाणम्	”
शिरामर्माणि	२०	सिद्धस्नेहलक्षणम्	३१
एकादश मांसमर्माणि	२१	स्नेहविधिक्रमः	”
सप्तविंशतिस्रायुमर्माणि	”	त्रिविधस्नेहपाकगुणाः	३२
आहारादिलक्षणम्	२२		
स्वस्थसमधातोर्मज्जादिमानम्	२३		
वयोविचारः	”		

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
अथ षष्ठस्तरङ्गः । ६		विरेकार्हः	३५
अथ स्वेदविधिः	३३	कोष्ठप्रकाराः	३७
स्वेदमेदाः	३३	विरेकमात्राः	३७
स्वेदनायोग्याः	३३	वर्षाकाले विरेचनम्	३७
स्वेदनायोग्याः	३३	शरदि विरेचनम्	३७
अतिस्वेदने दोषः	३३	हेमन्ते विरेचनम्	३९
तापाभिधः स्वेदः	३३	शिशिरवसन्तकाले विरेचनम्	३९
उपनाहस्वेदः	३४	ग्रीष्मर्तौ विरेचनम्	३९
द्रवस्वेदः	३४	अमयामोदकः	३९
ब्रीहिमवस्वेदः	३४	मृद्वीकादिगणः । विरेकोत्तर-	
स्वेदसमाप्तिः	३४	नियमः	४०
अथ सप्तमस्तरङ्गः । ७		दुर्विरक्तस्य लक्षणम्	४०
अथ वमनविधिः	३५	विरेकस्यातियोगः	४०
वमनयोग्यः	३५	तस्य शान्त्युपायः	४०
वमनायोग्यः	३५	सुविरक्तलक्षणम्	४०
वमनक्रिया	३५	रेचकसेवनगुणाः	४०
वमने काथादिप्रमाणम्	३६	विरेकमध्ये निषेधः	४१
वमने वेगप्रमाणम्	३६	मोज्यपदार्थाः	४१
वमनविरेचनयोः प्रस्थप्रमाणम्	३६	मलहरौषधानि	४१
वमनेन कफादीनां जयः	३६	नाराचो रसः	४१
अतिवान्तस्य लक्षणम्	३६	विचित्रविद्याधरः	४१
वमनातियोग उपायः	३६	इच्छाविभेदी रसः	४२
सम्यग्वान्तलक्षणम्	३७	नाराचरसः	४२
वमने पथ्यम्	३७	रेचनस्तम्भनोपायः	४२
वमने कुपथ्यम्	३७	अथ नवमस्तरङ्गः । ९	
अथाष्टमस्तरङ्गः । ८		अथ बस्तिविधिः	४३
अथ विरेकविधिः	४३	अनुवासनबस्तिः	४३
विरेकायोग्यः	४३	निरुहबस्तिः	४३
		उत्तरबस्तिः	४४
		नेत्रबस्तिः	४५



विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
शिरोबस्तिः... ..	४६	रक्तमोक्षेऽङ्गुलप्रमाणम्	५४
बस्तिमात्राः	४७	सावशेषरक्तस्रावः	५५
बस्त्यवगाहनविधिः	४७	अतिरक्तस्रावितस्य लक्षणम् ..	५५
कर्णपूरणमात्राविधिः	४८	रक्तक्षयोपायः	५५
तैलाभ्यङ्गविधिः	४८	तस्य हितम्	५५
अथ दशमस्तरङ्गः । १०		तस्य निषेधः	५५
अथ नस्यविधिः	४९	त्रिदोषरुधिरचिह्नम्	५५
नस्यनिषेधः... ..	४९	अथ त्रयोदशस्तरङ्गः । १३	
नस्यदाने वयोविचारः	४९	अथ राजार्हसवत्यादिगुणाः ..	५५
नस्यस्य बिन्दुमात्रा	४९	तत्र माण्डानि	५५
वैरेचनं नस्यम्	५०	पाकविधिः	५६
बृंहणप्रकारः	५०	महानसोपयोग्युपकरणानि ..	५६
नस्यदाने दिनमर्यादा	५०	सर्ववस्तूनि	५६
रोगविशेषेण नस्यविशेषः... ..	५१	अन्नरक्षार्थं विदुष्टान्नपरीक्षार्थं च	५६
बिन्दुप्रमाणम्	५१	सद्वैद्यस्थापनम्... ..	५७
अथैकादशस्तरङ्गः । ११		सद्वैद्यलक्षणम्	५७
अथ धूमपानविधिः	५२	कुवैद्यलक्षणम्	५८
धूमपानानर्हाः	५२	अथ चतुर्दशस्तरङ्गः । १४	
धूमपानगुणाः	५२	अथ सूपकारलक्षणम्	५७
धूमपानप्रकारः	५२	सूपकारवर्णनम्	५७
रोगविशेषेण धूमविशेषः	५२	सूपकाराध्यक्षवर्णनम्	५९
अपराजितो धूमः	५२	अथ पञ्चदशस्तरङ्गः । १५	
नेत्रसंज्ञिका नलिका	५२	अथ क्रतुचर्या	५७
अथ द्वादशस्तरङ्गः । १२		प्रत्यङ्गि क्रतवः	५७
अथ रक्तस्रुतिः	५३	अयनविचारः	५७
रुधिरस्वरूपम्	५३	हेमन्तः	६०
रक्तस्रावप्रशस्तिः	५३	शिशिरः	६१
रक्तमोक्षकरणसाधनम्	५३	वसन्तः	६१

Date		Time		Location		Remarks	
1911	10/1	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/2	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/3	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/4	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/5	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/6	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/7	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/8	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/9	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/10	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/11	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/12	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/13	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/14	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/15	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/16	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/17	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/18	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/19	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/20	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/21	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/22	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/23	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/24	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/25	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/26	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/27	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/28	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/29	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/30	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/31	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
ग्रीष्मः	६२	सामान्यसूपरन्धनप्रकारगुणः ..	॥
तत्र निषेधः	॥	कुल्माषः	६९
तत्र सेव्यम्	॥	माषसूपः	॥
वर्षाः	६३	आढकीसूपः	॥
शरत्	॥	चाणकसूपः	॥
अथ षोडशस्तरङ्गः । १६		कलायसूपः	॥
अथ सिद्धान्तादिपाकगुणकथ-		मकुठसूपः	॥
नम्	६४	मसूरसूपः	॥
तत्र भक्तम्	॥	राजमाषसूपः	॥
नलपाकः	॥	निष्पावसूपः	७०
भक्तगुणाः	६५	वर्तुलसूपः	॥
मृष्टतण्डुलभक्तम्	॥	कुलित्सूपगुणाः	॥
नानाधान्यभक्तगुणाः	॥	द्वित्रिवैदलसूपगुणाः	॥
पीतभक्तम्	॥	नानान्नसूपगुणाः	॥
इक्षुरससाधितं भक्तम्	॥	सतुषवितुषसूपगुणागुणौ ..	॥
तक्रसिद्धभक्तम्	६६	पर्पटाः	॥
यवागूः	॥	मुद्गजपर्पटाः	॥
विलेपी	॥	तण्डुलपर्पटाः	७१
पेया	॥	माषतण्डुलकृशरा	॥
मण्डः	॥	मुद्गतण्डुलकृशरा	॥
अष्टगुणमण्डः	६७	पायसम्	॥
वैदलयूषः	॥	पोलिका	॥
मुद्गयूषः	॥	अङ्गारकर्करी	॥
दाडिमामलकयूषः	॥	मण्डकाः	७२
मुद्गामलकयूषः	॥	मण्डपूरिका	॥
कुलित्सूपयूषः	॥	यमला रोटिका	॥
सूपमूलकयूषः	६८	पूरिका	॥
चणकयूषः	॥	वेष्टनी	७३
मकुठयूषः	॥	कचवल्ली	॥
कृताकृतयूषौ	॥	वटकः	॥
		काञ्चीकवटकः	॥



विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
पुष्पवटी	७४	क्षीरवटी	११
मुद्गवटी	११	क्षीरमोदकः	११
पक्कवत्यः	११	स्वादुलङ्गुकाः	११
खण्डिता	७५	दुग्धमण्डकाः	११
पत्रवत्यः	११	दुग्धकरञ्जिका	८३
माषमुद्गजेण्डर्यौ	११	क्षीरशाकम्	११
शुष्कवटी	७६	लपसी	११
पानकम्	११	मैमी	११
छिन्नपानकम्	११	चन्द्रहासा	११
रागखाडवः	७७	शुद्धघेवरः	८४
शिखरिणी	११	नारिकेरजघृतपूरः	११
वासवती	११	दुग्धघेवरः	११
निम्बादिसंधानगुणाः	११	शालिपिष्टजघेवरः	११
मांससंधानम्	७८	कसेरुघेवरः	११
तित्तिरिसंधानम्	११	आम्रसघेवरः	११
वराहमांससंधानम्	११	गुहाकः	११
मत्स्यसंधानम्	११	अपूपः	८५
गोधूमफेणिका	११	दधिवटिका	११
माषफेणिका	७९	कुण्डली	११
नवनीतफेणिका	११	मण्डः	११
माषफेणी	११	इन्दुरसा	८६
दधिलङ्गुकाः	८०	कंसारः	११
शमितालङ्गुकाः	११	सक्तुः	११
माषमुद्गलङ्गुकाः	११	यवसक्तुः	११
मत्स्यलङ्गुकाः	११	यवचणकसक्तवः	११
मांसलङ्गुकाः	८१	चणकसक्तवः	८७
शालूकलङ्गुकाः	११	लाजसक्तुः	११
बिन्दुमोदकः	११	सक्तुनिषेधः	११
कूष्माण्डादिव्रीजमोदकाः	११	कुल्माषाः	११
दुग्धप्रकाराः	८२	लाजाः	११
क्षेहदुग्धसक्तुकः	११	धानागुणाः	११

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
पृथुकगुणाः...	११	व्यायामगुणाः...	११
होलकः	११	अर्धबलक्षणम्	९३
त्रंजिका	८८	व्यायामानर्हाः	११
पुष्करम्	११	अभ्यङ्गः	११
चणकहोलकः	११	तैलम्....	११
मांसरन्धनप्रकारगुणागुणाः..	११	अभ्यङ्गगुणाः	११
भृष्टादिलक्षणम् ...	८९	कर्णे रसपूरणम् ...	११
सर्वमांसप्रक्षालनप्रकारः ...	११	स्नेहावगाहनगुणाः ...	९४
मांसरन्धनवेसवारः....	११	तस्य निषेधः	११
अथ सप्तदशस्तरङ्गः । १७		स्नानगुणाः	११
अथ दिनचर्या ...	९०	स्नाननिषेधः ...	९५
प्रातरभिवाद्याः ...	११	मूषणगुणाः...	९६
मलाद्युत्सर्गनियमः....	११	देवाद्यभिवादाने गुणः ...	११
मलमार्गशौचगुणाः ...	११	भोजनसमयेऽष्टमङ्गलदर्शनम्.	११
पादप्रक्षालनम्	११	नृणामिच्छाचतुष्टयम् ...	११
हृदिप्रसाधनम् ...	११	भोजनेच्छाविधाते दोषः ...	११
जिह्वानिर्लेखनम् ...	११	पिपासाविधाते दोषः ...	११
मुखप्रक्षालनम् ...	११	निद्राविधाते दोषः....	९७
दन्तधावनकाष्ठानि ...	११	सुरतस्पृहाविधाते दोषः ...	११
दन्तधावनायोग्याः....	९१	आहारव्यवस्था ...	११
जिह्वानिर्लेखनसाधनानि...	११	हेमपात्रम् ...	११
गण्डूषः	११	रौप्यम् ...	९८
तस्य निषेधः	११	कांस्यपात्रम् ...	११
रोगविशेषेण मुखप्रक्षालन-		पैतलम् ...	११
योग्योदकम् ...	११	लोहपात्रम् ...	११
नस्यम् ...	९२	ताम्रपात्रम्	११
अञ्जनम् ...	११	सृन्मयपात्रम् ...	११
अञ्जने निषेधः ...	११	काष्ठपात्रम् ...	११
केशप्रसाधनकरणम्	११	दलपात्रम् ...	११
आदर्शगुणाः	११	जलपात्रम् ...	११
		काचादिपात्रम् ...	११

Report of the _____															
Date				Time				Location				Weather			
Day	Month	Year	Hour	Minute	Second	Lat	Long	Temp	Humid	Dir	Force	Height	Direction	Distance	Remarks
1	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
2	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
3	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
4	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
5	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
6	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
7	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
8	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
9	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
10	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
11	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
12	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
13	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
14	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
15	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
16	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
17	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
18	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
19	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
20	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
21	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
22	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
23	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
24	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
25	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
26	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
27	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
28	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
29	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
30	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	
31	1	1900	12	00	00	10	10	20	80	090	10	10	090	10	

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
वृष्टिदोषनिवारणम् ...	११	अथाष्टादशस्तरङ्गः । १८	
भोजनक्रमः... ..	९९	अथ रात्रिचर्या	११
भोजनात्प्राग्भोज्यानि ...	१००	संध्यावर्जककर्माणि	११
भोजनोत्तरं भक्षणायोग्याः	११	क्षीणशुक्लक्षणम्	११
अन्नपरीक्षा	११	स्त्रीणां बालादिसंज्ञाः	११
विषयुक्तान्नम्	११	बालादिलक्षणम्	१०६
उदकपाननियमः	१०१	कालविशेषेण बालादिमो-	
भोजनोत्तरं स्मर्यमाणाः	११	ग्यत्वम्	११
ताम्बूलद्रव्यगुणाः	११	सद्यः प्राणकराणि	११
ताम्बूलरचना	११	सद्यः प्राणहराणि	११
ताम्बूलगुणाः	१०२	देशविशेषजातस्त्रीस्वभावः..	११
ताम्बूलभक्षणानर्हाः	११	दिनमर्यादा	१०७
भोजनोत्तरं निषिद्धानि	११	गमनायोग्याः स्त्रियः	११
खट्वातूल्यादिगुणाः	१०३	मैथुननिषेधः	११
प्रवातसेवनगुणाः	११	अतिव्यवाये दोषः	११
पूर्वादिवातगुणाः	११	जलपानस्योपक्रमकालः ...	११
व्यजनाद्यनिलगुणाः	११	उदकप्रमाणम्	१०८
दिवास्वापनिषेधः	११	अथैकोनविंशस्तरङ्गः । १९	
दिवास्वापार्हाः	१०४	अथ द्रव्यरसविपाकादिवर्ण-	
दिवामैथुननिषेधः	११	नम्	११
उष्णीषगुणाः	११	मधुरगुणाः	१०९
उपानद्धारणगुणाः	११	अम्लरसः	११
अधारणे दोषाः	११	लवणरसः	११
छत्रधारणम्	११	तिक्तः	११
दण्डधारणम्	११	कटुरसः	११०
शिबिकादिवाहनगुणाः	११	कषायः	११
क्ष्वातपः	१०५	वह्निगुणाः	११
वृष्टिः	११	गुणागुणाः	११
अग्निः	११	वीर्यम्	११
धूमः	११		
सतताध्ययनादि	११		

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
वीर्यगुणाः	१११	तडागजलगुणागुणाः ...	११
विपाकः	११	वापीजलगुणागुणाः ...	११
विपाकगुणाः	११	निर्झरजलम् ...	११
प्रभावः	११	औद्भिर्द्वं जलम् ...	११
तद्विशेषः	११	चौण्ड्यजलम् ...	११
रसभेदाः	११	केदारजलम् ...	११७
रसोत्पत्तिहेतुभूतानि ...	११२	चन्द्रकान्तजलम् ...	११
अथ विंशस्तरङ्गः । २०		हंसोदकम् ...	११
अथ जलगुणागुणकथनम्	११	ऋतुविशेषे जलविशेषगुणाः	११
सामान्यवारिगुणाः	११३	मासविशेषे जलविशेषः ...	११
सामान्यदिव्यवारिगुणाः ...	११	आनूपजाङ्गलसाधारणजल-	
तौषारम् ...	११	गुणाः	११८
हिमजलम्	११	निन्द्यजलम् ...	११
धाराजलम् ...	११	व्यापन्नजलसंस्काराः ...	११
करकाजलम् ...	११४	जलग्रहणविधिः ...	११
भौमलक्षणगुणागुणाः ...	११	जलपानविधिः ...	११
सामान्यनदीजलगुणागुणाः	११	भोजने जलपानविधिः ...	११
विशेषः	११	रात्रिशेषे पीतजलस्य गुणाः	११
हिमालयोद्भूतनदीवारिगुणा-	११	उष्णवारिलक्षणगुणाः ...	११
गुणाः	११	ऋतुविशेषे जलक्वाथनियमः	१२०
मलयजनदीजले गुणागुणाः	११	रात्रिपीतोष्णोदकगुणाः ...	११
सह्यजनदीजलगुणागुणाः	११	शीतलकरणविधिः	११
विन्ध्यजनदीजलगुणागुणाः	११	निषिद्धमुष्णोदकम् ...	११
पारियात्रजनदीगुणागुणाः	११५	उष्णोदकप्रयोगः ...	११
तडागोद्भूतनदीगुणागुणाः	११	उष्णोदकनिषेधः	११
कन्दरोद्भूतनदीगुणागुणाः	११	उष्णवारिमन्दाचरणम् ...	११
मरुद्भूतनदीगुणागुणाः ...	११	नालिकेरपानीयगुणाः ...	१२१
पूर्वादिसमुद्रगणां सरितां		अथैकविंशस्तरङ्गः २१ ।	
गुणागुणाः	११	अथ दुग्धम् ...	१२१
कूपवारिगुणागुणाः ...	११	सामान्यक्षीरगुणागुणाः ...	११
सारसाङ्गुगुणागुणाः ...	११६		

[illegible]

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
गोदुग्धगुणागुणाः	११	आजम्	११
गोवर्णभेददुग्धगुणागुणाः.....	११	पक्वदुग्धदधिगुणाः....	११
बालवत्साविवत्सादुग्धम्	१२२	निःसारदुग्धदधिगुणाः ...	११
पिण्याकाद्यशनजदुग्धम् ...	११	बद्धस्य दध्ने गुणागुणाः ...	११
माहिषम् ...	११	शर्करादधिगुणाः	१२७
आजम् ...	११	सगुडदधिगुणाः ...	११
आविकम् ...	११	दधिमक्षणे कालादिनियमः	
औष्ट्रम् ...	११	ऋतुविशेषे दधिगुणागुणाः	११
हस्तिनीदुग्धम् ...	११	दधिमक्षणविधित्यागे दोषाः	११
आश्वम्	११	सरगुणाः ...	११
नारीदुग्धम् ...	१२३	मस्तुगुणाः ...	११
धारोष्णधाराशीतगुणाः ...	११	अथ त्रयोविंशस्तरङ्गः । २३	
अपक्वदुग्धम् ...	११	अथ सामान्यतक्रगुणाः ...	१२८
क्वथितदुग्धम्	११	तक्रभेदाः ...	११
शर्करासहितदुग्धम् ...	११	तल्लक्षणानि ...	११
रात्रिक्षीरगुणाः ...	११	तद्गुणाः ...	११
संध्याकालीनं पयः ...	११	मन्दादितक्रगुणाः ...	११
रात्रिपीतदुग्धगुणाः ...	१२४	तन्वादिगुणाः	११
निषिद्धदुग्धम् ...	११	दोषविशेषे संयोगविशेषः...	१२९
अधिकारविशेषे गुणविशेषः	११	आमतक्रगुणाः ...	११
बष्कयणीदुग्धगुणाः ...	११	कालादिभेदे गुणभेदः ...	११
मथितदुग्धगुणाः ...	११	तक्रनिषेधः ...	११
तत्फेनगुणाः.....	११	तक्रसेवनगुणाः ...	११
संतानिकागुणाः ...	११	अच्छाच्छम्... ..	११
पीयूषादिगुणलक्षणानि	१२५	अथ चतुर्विंशस्तरङ्गः । २४	
अथ द्वाविंशस्तरङ्गः । २२		अथ नवनीतम् ...	१३०
अथ सामान्यदधिगुणाः ...	११	गव्यम् ...	११
दधिभेदाः ...	११	माहिषम् ...	११
गोदधिगुणाः	१२६	आजम् ...	११
माहिषम्	११		

姓名	性别	年龄	职业	住址	联系电话	备注
张三	男	35	教师	北京市海淀区中关村大街100号	13800138000	
李四	女	28	医生	北京市朝阳区建国路123号	13900139000	
王五	男	45	工程师	上海市浦东新区世纪大道100号	13600136000	
赵六	女	30	会计	广州市天河区珠江新城123号	13500135000	
孙七	男	25	程序员	深圳市南山区科技园100号	13400134000	
周八	女	38	律师	北京市东城区东直门大街100号	13300133000	
吴九	男	40	销售经理	武汉市武昌区中南路100号	13200132000	
郑十	女	32	设计师	杭州市西湖区西湖路100号	13100131000	
陈十一	男	22	学生	南京市鼓楼区鼓楼大街100号	13000130000	
冯十二	女	33	护士	成都市武侯区武侯大道100号	12900129000	
朱十三	男	42	农民	山东省潍坊市寿光市蔬菜基地	12800128000	
徐十四	女	27	记者	广东省深圳市福田区福田街道	12700127000	
马十五	男	37	公务员	浙江省杭州市西湖区西溪街道	12600126000	
朱十六	女	29	模特	北京市朝阳区三里屯太古里	12500125000	
李十七	男	48	企业家	上海市浦东新区陆家嘴金融区	12400124000	
王十八	女	31	歌手	北京市朝阳区工人体育场	12300123000	
张十九	男	23	运动员	北京市昌平区奥林匹克公园	12200122000	
赵二十	女	36	科学家	北京市海淀区中关村科学城	12100121000	
孙二十一	男	41	作家	北京市西城区西便门大街	12000120000	
周二十二	女	26	舞蹈家	北京市东城区东便门大街	11900119000	
吴二十三	男	39	画家	北京市西城区西便门大街	11800118000	
郑二十四	女	34	音乐家	北京市东城区东便门大街	11700117000	
陈二十五	男	24	电竞选手	上海市浦东新区电竞馆	11600116000	
冯二十六	女	35	瑜伽教练	北京市朝阳区瑜伽会所	11500115000	
朱二十七	男	43	厨师	北京市西城区西便门大街	11400114000	
徐二十八	女	28	花艺师	北京市朝阳区花艺工作室	11300113000	
马二十九	男	38	茶艺师	北京市西城区西便门大街	11200112000	
朱三十	女	30	茶艺师	北京市朝阳区茶艺馆	11100111000	
李三十一	男	44	茶艺师	北京市西城区西便门大街	11000110000	
王三十二	女	29	茶艺师	北京市朝阳区茶艺馆	10900109000	
张三十三	男	39	茶艺师	北京市西城区西便门大街	10800108000	
赵三十四	女	31	茶艺师	北京市朝阳区茶艺馆	10700107000	
孙三十五	男	25	茶艺师	北京市西城区西便门大街	10600106000	
周三十六	女	36	茶艺师	北京市朝阳区茶艺馆	10500105000	
吴三十七	男	46	茶艺师	北京市西城区西便门大街	10400104000	
郑三十八	女	27	茶艺师	北京市朝阳区茶艺馆	10300103000	
陈三十九	男	37	茶艺师	北京市西城区西便门大街	10200102000	
冯四十	女	28	茶艺师	北京市朝阳区茶艺馆	10100101000	
朱四十一	男	38	茶艺师	北京市西城区西便门大街	10000100000	
徐四十二	女	29	茶艺师	北京市朝阳区茶艺馆	99900999000	
马四十三	男	39	茶艺师	北京市西城区西便门大街	99800998000	
朱四十四	女	30	茶艺师	北京市朝阳区茶艺馆	99700997000	
李四十五	男	40	茶艺师	北京市西城区西便门大街	99600996000	
王四十六	女	31	茶艺师	北京市朝阳区茶艺馆	99500995000	
张三十七	男	41	茶艺师	北京市西城区西便门大街	99400994000	
赵四十八	女	32	茶艺师	北京市朝阳区茶艺馆	99300993000	
孙四十九	男	26	茶艺师	北京市西城区西便门大街	99200992000	
周五十	女	37	茶艺师	北京市朝阳区茶艺馆	99100991000	
吴五十一	男	47	茶艺师	北京市西城区西便门大街	99000990000	
郑五十二	女	28	茶艺师	北京市朝阳区茶艺馆	98900989000	
陈五十三	男	38	茶艺师	北京市西城区西便门大街	98800988000	
冯五十四	女	29	茶艺师	北京市朝阳区茶艺馆	98700987000	
朱五十五	男	39	茶艺师	北京市西城区西便门大街	98600986000	
徐五十六	女	30	茶艺师	北京市朝阳区茶艺馆	98500985000	
马五十七	男	40	茶艺师	北京市西城区西便门大街	98400984000	
朱五十八	女	31	茶艺师	北京市朝阳区茶艺馆	98300983000	
李五十九	男	41	茶艺师			

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
सद्योनवनीतम्	११	मद्यगुणाः	११
चिरंतननवनीतम् ...	११	मद्योपयोगिद्रव्याणि	११
अथ पञ्चविंशस्तरङ्गः । २५		मद्यपानविधिः ...	११
अथ घृतम् ...	१३१	सुरा ...	११
तत्र सामान्यघृतगुणाः ...	११	वारुणी ...	११
गव्यघृतगुणाः ...	११	बैभीतकी सुरा ...	११
आजम् ...	११	यवसुरा ...	११
माहिषम् ...	११	अरिष्टः ...	११
दुग्धभवं घृतम् ...	११	मार्द्विकम् ...	११
हैयङ्गवीनं घृतम् ...	११	खार्जूरम् ...	१३६
पुराणघृतम् ...	११	शार्करः ...	११
नूतनम् ...	१३२	गौडादयो भेदाः ...	११
घृतमण्डः ...	११	अथाष्टाविंशस्तरङ्गः । २८	
रोगविशेषे घृतविशेषः ...	११	अथेक्षुगुणाः	१३६
अथ षड्विंशस्तरङ्गः । २६		सामान्येक्षुगुणाः	११
अथ तैलम् ...	१३२	रक्तेक्षुः ...	११
तिलतैलम् ...	१३३	पौण्ड्रकः ...	१३७
अतसीतैलम् ...	११	कृष्णेक्षुः ...	११
तुवरीतैलम् ...	१३४	वंशेक्षुः ...	११
सार्षपम् ...	११	शतपर्वा ...	११
राजिकातैलम् ...	११	कान्तारः ...	११
एरण्डतैलम् ...	११	तापसेक्षुः ...	११
कुसुम्भबीजतैलम् ...	११	काष्ठेक्षुः ...	११
निम्बतैलम् ...	११	कोशकारः ...	११
पालाशमाधूकपाटलातैलानि ...	११	सूचीपत्रादयः ...	११
आम्रतैलम् ...	१३५	दन्तनिष्पीडितेक्षुगुणाः ...	११
अथ सप्तविंशस्तरङ्गः । २७		यन्त्रनिष्पीडितरसगुणाः ...	११
अथ मद्यम् ...	११	आवर्तितरसगुणाः ...	११
		सितोपला ...	११

姓名	性别	年龄	籍贯	职业	文化程度	健康状况	婚姻状况	子女情况	其他
张德胜	男	45	山东	工人	高中	良好	已婚	2子1女	
李秀英	女	38	河南	教师	大学	良好	已婚	1子1女	
王建国	男	52	江苏	干部	大学	良好	已婚	2子1女	
赵红梅	女	41	四川	护士	中专	良好	已婚	1子1女	
刘志强	男	35	广东	程序员	本科	良好	已婚	1子1女	
陈丽娟	女	48	湖南	医生	大专	良好	已婚	2子1女	
周大伟	男	30	浙江	工程师	硕士	良好	已婚	1子1女	
吴小芳	女	28	安徽	会计	本科	良好	已婚	1子1女	
孙明辉	男	55	湖北	农民	小学	一般	已婚	3子1女	
郑晓燕	女	33	江西	记者	本科	良好	已婚	1子1女	
马长龙	男	42	广西	司机	初中	一般	已婚	2子1女	
林美玲	女	36	福建	设计师	大专	良好	已婚	1子1女	
徐国强	男	50	山西	工人	高中	一般	已婚	2子1女	
黄文娟	女	44	陕西	教师	大学	良好	已婚	1子1女	
周伟明	男	39	四川	工程师	本科	良好	已婚	1子1女	
吴小红	女	31	广东	护士	中专	良好	已婚	1子1女	
孙志强	男	47	湖南	干部	大学	良好	已婚	2子1女	
郑丽娟	女	40	河南	教师	大专	良好	已婚	1子1女	
马长龙	男	35	浙江	程序员	本科	良好	已婚	1子1女	
林美玲	女	29	安徽	会计	本科	良好	已婚	1子1女	
徐国强	男	53	湖北	农民	小学	一般	已婚	3子1女	
黄文娟	女	37	江西	记者	本科	良好	已婚	1子1女	
周伟明	男	43	广西	司机	初中	一般	已婚	2子1女	
吴小红	女	32	福建	设计师	大专	良好	已婚	1子1女	
孙志强	男	49	山西	工人	高中	一般	已婚	2子1女	
郑丽娟	女	41	陕西	教师	大学	良好	已婚	1子1女	
马长龙	男	36	四川	工程师	本科	良好	已婚	1子1女	
林美玲	女	30	广东	护士	中专	良好	已婚	1子1女	
徐国强	男	46	湖南	干部	大学	良好	已婚	2子1女	
黄文娟	女	39	河南	教师	大专	良好	已婚	1子1女	
周伟明	男	38	浙江	程序员	本科	良好	已婚	1子1女	
吴小红	女	34	安徽	会计	本科	良好	已婚	1子1女	
孙志强	男	54	湖北	农民	小学	一般	已婚	3子1女	
郑丽娟	女	38	江西	记者	本科	良好	已婚	1子1女	
马长龙	男	44	广西	司机	初中	一般	已婚	2子1女	
林美玲	女	33	福建	设计师	大专	良好	已婚	1子1女	
徐国强	男	51	山西	工人	高中	一般	已婚	2子1女	
黄文娟	女	42	陕西	教师	大学	良好	已婚	1子1女	
周伟明	男	40	四川	工程师	本科	良好	已婚	1子1女	
吴小红	女	35	广东	护士	中专	良好	已婚	1子1女	
孙志强	男	48	湖南	干部	大学	良好	已婚	2子1女	
郑丽娟	女	43	河南	教师	大专	良好	已婚	1子1女	
马长龙	男	37	浙江	程序员	本科	良好	已婚	1子1女	
林美玲	女	31	安徽	会计	本科	良好	已婚	1子1女	
徐国强	男	56	湖北	农民	小学	一般	已婚	3子1女	
黄文娟	女	40	江西	记者	本科	良好	已婚	1子1女	
周伟明	男	45	广西	司机	初中	一般	已婚	2子1女	
吴小红	女	36	福建	设计师	大专	良好	已婚	1子1女	
孙志强	男	50	山西	工人	高中	一般	已婚	2子1女	
郑丽娟	女	44	陕西	教师	大学	良好	已婚	1子1女	

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
खण्डः....	१३८	आर्द्राकृतमुद्गुणाः	११
श्वेतशर्करा ...	११	मुद्गुशिम्बः ...	११
मधुशर्करा यवासशर्करा ...	११	स्नेहासिद्धशिम्बार्द्रमुद्गुणाः	११
फाणितम् ...	११	माषः...	११
गुडः	११	राजमाषः ...	११
अथैकोनत्रिंशस्तरङ्गः । २९		मकुष्ठः ...	११
अथ मधु ...	१३९	निष्पावः	१४३
मधुवर्णाः ...	११	आढकी ...	११
सामान्यमधुगुणाः ...	११	वर्तुलः	११
माक्षिकादीनां विशिष्टगुणाः	११	कलायत्रिपुटगुणाः....	११
मधूच्छिष्टगुणाः ...	११	चणकः	११
अथ त्रिंशस्तरङ्गः । ३०		मसूरः ...	११
अथ शालयादि ...	१४०	कुलित्थः ...	११
सामान्यशालिगुणाः	११	तिलाः ...	१४४
रक्तशालिः	११	तुवरी ...	११
महाशालिः ...	११	अतसी ...	११
षष्टिकाः ...	११	किरटा ...	११
महाषष्टिकाः ...	११	सर्षपः	११
कृष्णव्रीहिः ...	११	राजिका ...	११
दग्धभूजातशालयः	११	शणः....	११
सामान्यस्थलजशालिगुणाः	१४१	प्रियङ्गुगुणाः	११
केदारजाः	११	श्यामाकः	११
रोपिताः ...	११	कोद्रवः	१४४
गोधूमगुणाः ...	११	नीवारः ...	१४५
उम्बिका	११	यावनालः ...	११
यवगुणाः ...	११	गवेधुका ...	११
शिम्बीधान्यम् ...	११	नन्दीमुखीवेणुयवादि ...	११
शिम्बगुणाः ...	१४२	गुणहीनधान्यम्	११
मुद्गः	११	नूतनधान्यगुणाः ...	११
		वर्षापितधान्यगुणाः ...	११
		विशिष्टनूतनान्नगुणागुणाः	११

Date		Time		Location		Remarks	
1900	10/1	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/2	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/3	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/4	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/5	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/6	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/7	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/8	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/9	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/10	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/11	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/12	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/13	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/14	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/15	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/16	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/17	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/18	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/19	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/20	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/21	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/22	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/23	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/24	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/25	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/26	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/27	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/28	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/29	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/30	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30
1900	10/31	10:00	10:30	10:00	10:30	10:00	10:30

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ॥	पृष्ठाङ्काः ॥
अथैकत्रिंशस्तरङ्गः । ३१		अञ्जीरम् ११	
		अक्षोटम् ११	
अथ फलानि १४६		शृङ्गाटम् ११	
द्राक्षा ११		पालेवतमाणवके ११	
आम्रः ११		तूतम् ११	
सामान्यजम्बूः ११		गाङ्गेरुतोदने ११	
राजजम्बूफलम् ११		तुवरकः ११	
लघुजम्बूः ११		बीजपूरः ११	
नारिकेलम् ११		मधुकर्कटी १५१	
पिण्डखजूरीस्वल्पखजूरीफलम् ११		नागरम् ११	
सलेमानी ११		जम्बीरम् ११	
कदली ११		अम्लवतसम् ११	
दाडिमम् ११		साराम्लम् ११	
बदरम् ११		निम्बूकम् ११	
क्षीरिणीफलम् १४८		कर्मरङ्गम् ११	
चारः.... ११		अम्लिका ११	
परुषकम् ११		वृक्षाम्लम् १५२	
तिन्दुकः ११		करमर्दम् ११	
किङ्किणी ११		कपित्थम् ११	
आरुकम् ११		आम्रातकम् ११	
मधूकः ११		राजाम्रम् ११	
पनसम् १४९		कमुकम् ११	
लकुचम् ११		ताम्बूलम् ११	
तालः ११		त्याज्यफलम् १५३	
खर्बूजम् ११			
शिम्बितिकाफलम् ११		अथ द्वात्रिंशस्तरङ्गः । ३२	
महाच्छिम्बितिकाफलम् ११		अथ शाकानि १५३	
अमृतफलम् ११		सामान्यशाकम् ११	
वातामम् १४९		कूष्माण्डम् ११	
निकोचकमुकूलके ११		कालिङ्गम् ११	
आलुकम् १५०		अलाबु १५४	

Table 1. Demographic and Clinical Characteristics of the Study Population			
Characteristic	Number (n)	Percentage (%)	Mean (SD)
Age (years)	100	100	65.2 (12.5)
Gender			
Male	55	55	
Female	45	45	
Ethnicity			
Caucasian	60	60	
African American	20	20	
Hispanic	15	15	
Asian	5	5	
Other	5	5	
Education Level			
High School or less	30	30	
Some College	25	25	
Bachelor's Degree	20	20	
Master's Degree	10	10	
PhD	5	5	
Marital Status			
Married	40	40	
Single	15	15	
Divorced	10	10	
Widowed	15	15	
Income Level			
< \$10,000	10	10	
\$10,000 - \$20,000	15	15	
\$20,000 - \$30,000	20	20	
\$30,000 - \$40,000	15	15	
\$40,000 - \$50,000	10	10	
> \$50,000	10	10	
Comorbidities			
Hypertension	45	45	
Diabetes	30	30	
Cholesterol	25	25	
Asthma	10	10	
Depression	15	15	
Anxiety	10	10	
Other	5	5	

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
कर्कटी	११	चुक्रा	११
त्रपुसम्	११	शतपुष्पा	११
चिर्मटम्	११	मेथिका	११
वालुकम्	११	मीनाक्षी	११
शीर्णवृन्तम्	११	चक्रमर्दम्	११
कोशातकी	११	पुनर्नवाशाकम्	१५८
राजकोशातकी	११	उपोदकी	११
महाकोशातकी	११	लोणिका	११
वृन्ताकम्	१५५	सुनिषण्णः	१५८
बिम्बी	११	तिलपर्णी	११
कारवेलम्	११	सितवारः	११
कर्कोटकम्	११	नाली	११
वन्ध्यकर्कोटकी	११	सार्धपम्	११
डोडिका	११	कौसुम्भम्	११
पृथुशिम्बः	११	चणकशाकम्	११
डिण्डिमः	१५५	कलायशाकम्	१५९
शिम्बी	११	चाङ्गेरी	११
पटोलम्	११	कासमर्दः	११
बृहत्पटोलिका	१५६	सौमाञ्जनम्	११
अथ पत्रशाकं तत्र वास्तूकः	११	मधुशिशुः	११
रक्तवास्तूकः	११	अथ पुष्पाणि तत्र सौमाञ्जनपुष्प-	
चक्रवर्तिशाकम्	११	गुणाः	१५९
चिल्ली	११	मधुशिशुपुष्पम्	११
कालशाकम्	११	मधुशिशु	११
चञ्चुः	११	कदलीपुष्पम्	१६०
नाडीकः	११	मुनिद्रुमपुष्पम्	११
करम्बी	१५७	अथ मूलशाकानि	११
तण्डुलीयः	१५७	सूरणः	११
फोङ्गः	११	आलूकी	११
मारीषः	११	गर्जरम्	११
पालक्या	११	माणकः	१६१

[illegible]

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
कसेरुकशालूके	११	प्रसहाः	११
आलूकम्	११	ग्राम्याः	११
पिण्डालु	११	कूलेचराणां मणना गुणाश्च १६६	
हस्तालु	११	पुवाः...	११
वाराहीकन्दः	११	कोशस्थगुणाः	११
मुसलीकन्दः	११	पादिनः	११
केलूटम्	११	मत्स्याः	११
कदलीकन्दः	११	विशिष्टानां जन्तूनां गुणाः... १६७	
लशुनः	११	मेघमांसगुणाः	११
पलाण्डुः	११	मेघपुच्छः	११
गृञ्जनः	१६२	गृञ्जनसारः	११
अथ नालशाकं तत्रास्थिशृङ्ख		हरिणी	११
लिका	११	गोकर्णशम्बरौ	११
आलूकीनालम्	११	गवयः	११
करीरः	११	कस्तूरीमृगः...	११
भूस्वेदजं शाकम्	११	मुण्डिनी	१६८
निषिद्धशाकम्	११	वातप्रसीचित्रमृगच्छिकार... गुणाः	११
अथ त्रयस्त्रिंशस्तरङ्गः । ३३		रुरुः	११
अथ मांसानि	१६३	न्यक्तुः	११
तत्र सामान्यमांसगुणाः	११	शशः...	११
तद्भेदाः	११	सलकसेन्धे	११
जाङ्गललक्षणम्	११	सूकरः	११
आनूपलक्षणगुणाः...	११	गण्डकः	१६९
जाङ्गलानां गणनाविशिष्ट- गुणाः	१६४	महिषः	११
बिलेशयलक्षणगुणाः	११	उष्ट्रमांसगुणाः	११
गुहाशयलक्षणगुणाः	११	घोटकः	११
पर्णमृगः	१६५	शृगालः	११
विष्किराः	११	मूषकः	११
प्लवाः	११	राजीमृगः	११
		पक्षिमांसगुणाः	११
		लावाः	१७०

[illegible]

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
वार्तिकः	११	क्षुद्रमत्स्याः	११
कृष्णतित्तिरो गौरतित्तिरश्च.	११	अतिक्षुद्रमत्स्याः	११
चटकः	१७०	मत्स्याण्डगुणाः	११
कुक्कुटाः	११	शुष्कमत्स्याः	११
हारीतः	१७१	दग्धमत्स्याः	११
पाण्डुधवलौ	११	कूपजादिमत्स्यगुणाः	११
चित्रपक्षः	११	ऋतुविशेषे मत्स्यविशेषाः	११
पारावतः	११	सद्योहतमांसादिगुणाः	१७५
पक्ष्यण्डस्थ गुणाः	११	अथ चतुर्विंशस्तरङ्गः ३४ ।	
मयूरमांसम्	११	अथ हरीतकीगुणाः	११
सारसः	११	हरीतकीलक्षणम्	११
हंसः	१७२	सामान्यहरीतकी	१७६
चक्रवाकादिगुणाः	११	विशेषः	११
मत्स्याः	११	ऋतुहरीतकी	११
शिलीन्धः	११	सामान्यहरीतकीगुणाः	११
भकुडः	११	आमलकी	१७७
मोयिका	११	बिभीतिकः	११
पाठीनः	११	त्रिफला	११
शृङ्गी	११	भूम्यामलकी	१७८
हिल्लिशः	१७३	राजामलकम्	११
शकुली	११	वासकः	११
गर्गरः	११	गुडूची	११
कविका	११	तत्सत्त्वगुणाः	११
वर्मिः	११	बिल्वम्	११
डण्डमत्स्यः	११	अग्निमन्थः	१७९
एरङ्गः	११	पाटला	११
महाशकरः	११	काश्मरी	११
गरुडी	११	श्योनाकः	११
मकुरः	११	महत्पञ्चमूलम्	११
सपादमत्स्यः	१७४	गोक्षुरः	११
प्रोक्षी	११		

		Date		Time		Location		Remarks	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	2	3	4	5	6	7	8		

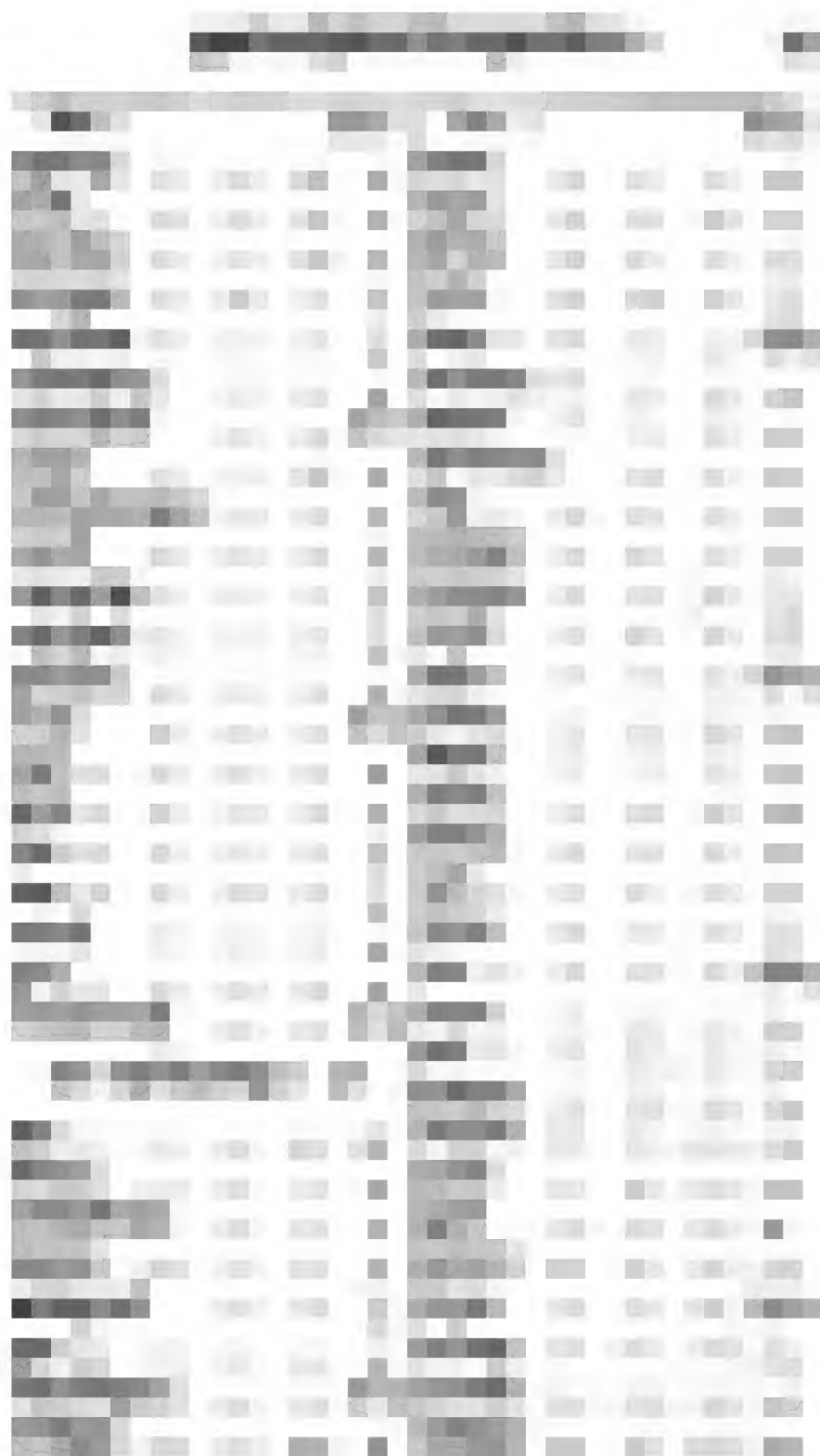
विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
शालिपर्णी	१८०	कटुकी	११
पृश्निपर्णी	११	अङ्गोलः	११
बृहती	११	निम्बगुणाः	११
लघुकण्टकारी	११	महानिम्बः	११
लघुपञ्चमूलम्	११	किरातः	१८६
अष्टवर्गः	११	कुटजः	११
तत्र जीवकर्षभकयोरुत्पत्ति-		इन्द्रयवः	११
लक्षणम्	१८१	मदनफलम्	११
मेदामहामेदयोरुत्पत्तिलक्ष-		कङ्कुष्ठम्	११
णम्	११	चोकः	११
काकोलीक्षीरकाकोल्योरु-		सातला	११
त्पत्तिलक्षणम्	११	अश्मन्तः काञ्चनारमेदः ...	१८७
ऋद्धिवृद्धयोरुत्पत्तिलक्षणम्	११	काञ्चनारकोविदारौ ...	११
अष्टकवर्गप्रतिनिधिः ...	१८२	निर्गुण्डी	११
जीवन्ती	११	मेषशृङ्गी	११
मधुयष्टी	११	श्वेतपुनर्नवा	११
माषपर्णीमुद्गपर्ण्यौ ...	११	रक्तपुनर्नवा	११
जीवनीयगणः	११	रास्ना	१८८
एरण्डद्वयगुणः	१८३	अश्वगन्धा	११
सारिवाद्वयम्	११	प्रसारिणी	११
यासमुण्ड्यौ	११	शतावरी	११
बृहन्मुण्डी	११	महाशतावरी	११
श्वेतापामार्गः	११	बलाचतुष्टयम्	११
रक्तापामार्गः	१८४	तेजस्विनी	१८९
कपिला	११	ज्योतिष्मती	११
दातिनी	११	देवदारु	११
त्रिवृत्	११	सरलः	११
श्यामा त्रिवृत्	११	पुष्करमूलम्	११
ऐन्द्रवारुणीद्वयम्	११	कुष्ठम्	१९०
राजवृक्षः	११	शृङ्गी	११
नीलिनी	१८५	रोहिषम्	११

2			
1	2	3	4
5	6	7	8
9	10	11	12
13	14	15	16
17	18	19	20
21	22	23	24
25	26	27	28
29	30	31	32
33	34	35	36
37	38	39	40
41	42	43	44
45	46	47	48
49	50	51	52
53	54	55	56
57	58	59	60
61	62	63	64
65	66	67	68
69	70	71	72
73	74	75	76
77	78	79	80
81	82	83	84
85	86	87	88
89	90	91	92
93	94	95	96
97	98	99	100

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
कदफलम्	मुसलीकन्दः
मार्गी	कापिकच्छुः
पाषाणभेदः	पुत्रजीवः ...	१९५
मुस्ता	वन्ध्यकंकोटकी
धातकी ...	१९१	विष्णुक्रान्ता
मोचिका	शङ्खपुष्पी
विदारीकन्दः	दुग्धिकोष्णा
वाराहीकन्दः	नागार्जुनी
पाठा	अधःपुष्पी
मूर्धा	मल्लतकः ...	१९६
मञ्जिष्ठा	चिरपोटी
हरिद्रा ...	१९२	इन्द्रशाकम्
दार्धी	द्रोणपुष्पी
प्रपुन्नाडः	ब्राह्मीमाण्डूक्यौ
बाकूची	सूर्यभक्ताद्वयम्
भृङ्गराजगुणाः	मत्स्याक्षी ...	१९७
पर्पटः	जलपिप्पली
शणपुष्पी ...	१९३	गोजिह्वा
त्रायमाण्णा	नागदमनी
महाजालिनी	विरवेली
विषा	वन्दाकः
काकमाची	पिण्डारुः
काकजङ्घा	छिकिणी
लोध्रद्वयम्	रोहीतकः ...	१९८
वृद्धदारुः	मोचकः
देवदाली ...	१९४	अजगन्धा
हंसपादी	सैरेयकः
सोमवल्ली	गिरिकर्णोद्वयम्
नाकुली	क्षुरकः
वटपत्री	कार्पासः
लज्जालुः	आरामशीतला ...	१९९

		1990		1991		1992		1993		1994		1995		1996		1997		1998		1999		2000		2001		2002		2003		2004		2005		2006		2007		2008		2009		2010		2011		2012		2013		2014		2015		2016		2017		2018		2019		2020		2021		2022		2023		2024		2025		2026		2027		2028		2029		2030		2031		2032		2033		2034		2035		2036		2037		2038		2039		2040		2041		2042		2043		2044		2045		2046		2047		2048		2049		2050		2051		2052		2053		2054		2055		2056		2057		2058		2059		2060		2061		2062		2063		2064		2065		2066		2067		2068		2069		2070		2071		2072		2073		2074		2075		2076		2077		2078		2079		2080		2081		2082		2083		2084		2085		2086		2087		2088		2089		2090		2091		2092		2093		2094		2095		2096		2097		2098		2099		2100		2101		2102		2103		2104		2105		2106		2107		2108		2109		2110		2111		2112		2113		2114		2115		2116		2117		2118		2119		2120		2121		2122		2123		2124		2125		2126		2127		2128		2129		2130		2131		2132		2133		2134		2135		2136		2137		2138		2139		2140		2141		2142		2143		2144		2145		2146		2147		2148		2149		2150		2151		2152		2153		2154		2155		2156		2157		2158		2159		2160		2161		2162		2163		2164		2165		2166		2167		2168		2169		2170		2171		2172		2173		2174		2175		2176		2177		2178		2179		2180		2181		2182		2183		2184		2185		2186		2187		2188		2189		2190		2191		2192		2193		2194		2195		2196		2197		2198		2199		2200		2201		2202		2203		2204		2205		2206		2207		2208		2209		2210		2211		2212		2213		2214		2215		2216		2217		2218		2219		2220		2221		2222		2223		2224		2225		2226		2227		2228		2229		2230		2231		2232		2233		2234		2235		2236		2237		2238		2239		2240		2241		2242		2243		2244		2245		2246		2247		2248		2249		2250		2251		2252		2253		2254		2255		2256		2257		2258		2259		2260		2261		2262		2263		2264		2265		2266		2267		2268		2269		2270		2271		2272		2273		2274		2275		2276		2277		2278		2279		2280		2281		2282		2283		2284		2285		2286		2287		2288		2289		2290		2291		2292		2293		2294		2295		2296		2297		2298		2299		2300		2301		2302		2303		2304		2305		2306		2307		2308		2309		2310		2311		2312		2313		2314		2315		2316		2317		2318		2319		2320		2321		2322		2323		2324		2325		2326		2327		2328		2329		2330		2331		2332		2333		2334		2335		2336		2337		2338		2339		2340		2341		2342		2343		2344		2345		2346		2347		2348		2349		2350		2351		2352		2353		2354		2355		2356		2357		2358		2359		2360		2361		2362		2363		2364		2365		2366		2367		2368		2369		2370		2371		2372		2373		2374		2375		2376		2377		2378		2379		2380		2381		2382		2383		2384		2385		2386		2387		2388		2389		2390		2391		2392		2393		2394		2395		2396		2397		2398		2399		2400		2401		2402		2403		2404		2405		2406		2407		2408		2409		2410		2411		2412		2413		2414		2415		2416		2417		2418		2419		2420		2421		2422		2423		2424		2425		2426		2427		2428		2429		2430		2431		2432		2433		2434		2435		2436		2437		2438		2439		2440		2441		2442		2443		2444		2445		2446		2447		2448		2449		2450		2451		2452		2453		2454		2455		2456		2457		2458		2459		2460		2461		2462		2463		2464		2465		2466		2467		2468		2469		2470		2471		2472		2473		2474		2475		2476		2477		2478		2479		2480		2481		2482		2483		2484		2485		2486		2487		2488		2489		2490		2491		2492		2493		2494		2495		2496		2497		2498		2499		2500		2501		2502		2503		2504		2505		2506		2507		2508		2509		2510		2511		2512		2513		2514		2515		2516		2517		2518		2519		2520		2521		2522		2523		2524		2525		2526		2527		2528		2529		2530		2531		2532		2533		2534		2535		2536		2537		2538		2539		2540		2541		2542		2543		2544		2545		2546		2547		2548		2549		2550		2551		2552		2553		2554		2555		2556		2557		2558		2559		2560		2561		2562		2563		2564		2565		2566		2567		2568		2569		2570		2571		2572		2573		2574		2575		2576		2577		2578		2579		2580		2581		2582		2583		2584		2585		2586		2587		2588		2589		2590		2591		2592		2593		2594		2595		2596		2597		2598		2599		2600		2601		2602		2603		2604		2605		2606		2607		2608		2609		2610		2611		2612		2613		2614		2615		2616		2617		2618		2619		2620		2621		2622		2623		2624		2625		2626		2627		2628		2629		2630		2631		2632		2633		2634		2635		2636		2637		2638		2639		2640		2641		2642		2643		2644		2645		2646		2647		2648		2649		2650		2651		2652		2653		2654		2655		2656		2657		2658		2659		2660		2661		2662		2663		2664		2665		2666		2667		2668		2669		2670		2671		2672		2673		2674		2675		2676		2677		2678		2679		2680		2681		2682		2683		2684		2685		2686		2687		2688		2689		2690		2691		2692		2693		2694		2695		2696		2697		2698		2699		2700		2701		2702		2703		2704		2705		2706		2707		2708		2709		2710		2711		2712		2713		2714		2715		2716		2717		2718		2719		2720		2721		2722		2723		2724		2725		2726		2727		2728		2729		2730		2731		2732		2733		2734		2735		2736		2737		2738		2739		2740		2741		2742		2743		2744		2745		2746		2747		2748		2749		2750		2751		2752		2753		2754		2755		2756		2757		2758		2759		2760		2761		2762		2763		2764		2765		2766		2767		2768		2769		2770		2771		2772		2773		2774		2775		2776		2777		2778		2779		2780		2781		2782		2783		2784		2785		2786		2787		2788		2789		2790		2791		2792		2793		2794		2795		2796		2797		2798		2799		2800		2801		2802		2803		2804		2805		2806		2807		2808		2809		2810		2811		2812		2813		2814		2815		2816		2817		2818		2819		2820		2821		2822		2823		2824		2825		2826		2827		2828		2829		2830		2831		2832		2833		2834		2835		2836		2837		2838		2839		2840		2841		2842		2843		2844		2845		2846		2847		2848		2849		2850		2851		2852		2853		2854		2855		2856		2857		2858		2859		2860		2861		2862		2863		2864		2865		2866		2867		2868		2869		2870		2871		2872		2873		2874		2875		2876		2877		2878		2879		2880		2881		2882		2883		2884		2885		2886		2887		2888		2889		2890		2891		2892		2893		2894		2895		2896		2897		2898		2899		2900		2901		2902		2903		2904		2905		2906		2907		2908		2909		2910		2911		2912		2913		2914		2915		2916		2917		2918		2919		2920		2921		2922		2923		2924		2925		2926		2927		2928		2929		2930		2931		2932		2933		2934		2935		2936		2937		2938		2939		2940		2941		2942		2943		2944		2945		2946		2947		2948		2949		2950		2951		2952		2953		2954		2955		2956		2957		2958		2959		2960		2961		2962		2963		2964		2965		2966		2967		2968		2969		2970		2971		2972		2973		2974		2975		2976		2977		2978		2979		2980		2981		2982		2983		2984		2985		2986		2987		2988		2989		2990		2991		2992		2993		2994		2995		2996		2997		2998		2999		3000		3001		3002		3003		3004		3005		3006		3007		3008		3009		3010		3011		3012		3013		3014		3015		3016		3017		3018		3019		3020	
--	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः
कुकुरन्दुः	११	कदम्बः	११
वामी... ..	११	ककुभः	११
बलामोटा	११	शिरीषः	११
शरपुङ्खा	११	अर्गटः	११
मयूरशिखा	११	वेतसः.... ..	२०४
लक्ष्मणकन्दः	११	जलवेतसः	११
मांसरोहिणी	२००	वज्जुलः	११
उच्चटा	११	श्लेष्मान्तकः	११
अस्थिसंधानकृत	११	पीलु	११
रुदन्ती	११	शाकवृक्षः	११
मङ्गाशुद्धिः.... ..	११	शालवृक्षः	११
मङ्गागुणाः	११	तमालः	११
दूर्वाद्वयम्	११	खदिरः	२०५
काशः	२०१	इरिमेदः	११
कुशः.... ..	११	बम्बूलः	११
मुक्षः.... ..	११	बीजकः	११
नलः	११	तिनिसः	११
वंशः	११	मूर्जः.... ..	११
यवानी	११	पलाशः	११
बृष्यः.... ..	११	धवः	२०६
पातालगारुडी	२०२	धन्वनः	११
अथ पञ्चत्रिंशस्तरङ्गः । ३५		सर्जः.... ..	११
बटः	११	वर्णवृक्षः	११
पिप्पलः	११	जिङ्गिणी	११
पारिसपिप्पलः	११	शलुकी	११
उदुम्बरः	११	इडुदी	११
काकोदुम्बरी	११	कटम्भरा	११
पृक्षः.... ..	११	मोषकः	२०७
पञ्चक्षीरिवृक्षाः	२०३	पारिमद्रः	११
नन्दीवृक्षः	११	शाल्मली	११
		नन्दीवृक्षः	११



विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
सप्तपर्णः	११	वौहारः	११
हारिद्रकः	११	अजगन्धा	११
करञ्जः	११	वचा	२१३
बृहत्करञ्जः	२०८	हपुषा	११
करञ्जिका	११	विडङ्गम्	११
तिरिगिच्छिः	११	धान्यकम्	११
शमी	११	हिङ्गुपत्री	११
शिरीषिका	११	हिङ्गु	११
अरिष्टकः	११	वंशरोचना	२१४
शिशिपा	११	सेन्धवम्	११
अगस्त्यवृक्षः	२०९	सौवर्चलम्	११
अथ षट्त्रिंशस्तरङ्गः । ३६		विडलवणम्	११
शुण्ठ्यादिगुणकथनम्	११	सामुद्रलवणम्	११
आर्द्रकम्	११	भूमिजलवणम्	११
मरिचगुणाः... ..	११	गडलवणम्	११
पिप्पली	२१०	औखरम्	२१५
त्र्यूषणम्	११	काचलवणम्	११
पिप्पलीमूलम्	११	यवक्षारः	११
चतुर्षणम्	११	स्वर्जिका	११
चव्यम्	११	टङ्कणः	११
गजपिप्पली.... ..	२११	सोमक्षारः	११
चित्रकद्वयम्	११	लवणक्षारः.... ..	११
पञ्चकोलम्	११	सर्वे क्षाराः	११
षडूषणम्	११	चित्राक्षारः	२१६
शतपुष्पा बृहच्छतपुष्पा च	११	अथ सप्तत्रिंशस्तरङ्गः । ३७	
मेथिका	११	अथ कर्पूरादिगुणकथनम्...	११
अहित्थः	२१२	कर्पूरः	११
अजमोदा	११	कस्तूरीद्वयम्	११
श्वेतकृष्णजीरकं बाष्पिका च	११	जवादिमार्जारी	११
जवानी	११	श्वेतचन्दनम्	११



विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
रक्तचन्दनम्	२१७	स्थौण्यम्	११
मलयाद्रिचन्दनम्	११	चोरकः	११
अगुरुः	११	मुरा	११
अगुरुसत्त्वम्	११	कर्चूरः	११
कुङ्कुमं केसरम्	११	सटी	११
सिंहकः	२१८	स्पृक्का	११
एलावालुकम्	११	ग्रन्थिपर्णः	११
जातीफलम्	११	नली	११
जातीपत्री	११	पद्माख्यम्	२२३
लवङ्गम्	११	प्रपौण्ड्रकम्	११
कङ्कालम्	११	तगरम्	११
स्थूलैला	११	गोरोचना	११
सूक्ष्मैला	११	नखद्वयम्	११
त्वचम्	११	पतङ्गम्	११
पत्रम्	११	लाक्षालक्तकौ	११
नागकेसरम्	११	पर्पटीलाक्षा	२२४
त्रिजातचतुर्जाते	११	पद्मिनीकुमुदिन्यौ	११
तालीसपत्रम्	११	पद्मचारिणी	११
श्रीवासः	११	कमलादि	११
व्रीडः	२२०	केसरः	११
वालकम्	११	पद्मबीजम्	११
मांसी	११	मृणालशालूके	११
उशीरम्	११	मालती	२२५
कौन्ती	११	मलिका	११
प्रियङ्गुः	११	यूथिकाद्वितयम्	११
परिपेलम्	११	शतपर्णीत्रयम्	११
शैलेयम्	११	केतकीस्वर्णकेतक्यौ	११
उशीरमेदः	११	नेवाली	११
कुन्दुरुः	२२१	वननेवाली	११
गुग्गुलुः	११	माधवी	२२६
शाला	२२२	लघुचम्पकबृहच्चम्पकौ	११



विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
नागचम्पकः...	११	रसायनम् ...	११
बकुलः ...	११	बृंहणम् ...	११
बकपुष्पम् ...	११	वाजिकरम् ...	११
कुन्दः ...	११	शुक्रलम् ...	११
विचकिलः ...	११	रेतसो जनकानि ...	११
मुचुकुन्दः ...	११	विकाशि ...	११
तिलकः ...	११	मदकारि ...	११
गणेरुका कर्णिकारः ...	२२७	अभिष्यन्दि ...	११
बन्धूकः ...	११७	अथैकोनचत्वारिंशस्तरङ्गः । ३९	
जपा ...	११	अथ विरुद्धाहारकथनम् ...	२३०
सिन्दूरी ...	११	विरुद्धाशननिषेधः ...	११
तुलसी ...	११	निषिद्धदुग्धम् ...	११
फणिज्जकः ...	११	निषिद्धं दधि ...	११
दमनः ...	११	निषिद्धतक्रम् ...	११
बर्बरी ...	११	कालविशेषेण दुग्धादीनां	
बाणपुष्पत्रयम् ...	११	पथ्यापथ्यत्वम् ...	११
अथाष्टात्रिंशस्तरङ्गः । ३८		दुष्टमांसम् ...	२३१
पाचनलक्षणम् ...	११	वृन्ताकादीनां दुष्टत्वकथनम्	११
दीपनपाचनलक्षणम् ...	११	अथ चत्वारिंशस्तरङ्गः । ४०	
शमनम् ...	११	अथ रास्नादिगणः ...	११
अनुलोमनम् ...	२२८	काकोल्यादिगणः ...	२३२
संसनम् ...	११	कृष्णादिगणः ...	११
मेदनम् ...	११	स्थिरादिगणः ...	११
रेचनम् ...	११	त्रायन्तिकागणः ...	११
वमनम् ...	११	विमीतकादिगणः ...	११
संशोधनम् ...	११	विश्वोपकुल्यादिगणः ...	११
छेदनम् ...	११	पिप्पल्यादिगणः ...	११
लेखनम् ...	११	वटादिगणः ...	११
दीपनपाचनम् ...	११	पलादिगणः ...	११
ग्राहि ...	२२९		



विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
अष्टवर्गः ११		लोहगुणाः ११	
चतुर्जातिकम् २३३		निषेधः ११	
वरणादिगणः ११		किङ्कम् ११	
दशमूलमणः ११		किङ्कप्रकाराः ११	
अथैकचत्वारिंशस्तरङ्गः । ४१		तलक्षणानि ११	
अथ धात्वादीनां लक्षणशो-		सामान्यकिङ्कम् २४३	
धनमारणगुणाः		किङ्कगुणाः ११	
स्वर्णाद्यष्टधातवः २३४		वङ्गम् ११	
स्वर्णोत्पत्तिः ११		वङ्गशोधनम् ११	
हेमशोधनम् ११		वङ्गगुणाः २४४	
हेममारणम् ११		सीसकशोधनम् ११	
हेमगुणाः २३५		सीसकगुणाः २४५	
रूप्योत्पत्तिः ११		अथोपधातवः ११	
तस्य नव गुणाः २३६		अभ्रकोत्पत्तिः ११	
तस्य दश दोषाः ११		अभ्रशोधनम् २४६	
रूप्यशोधनम् ११		अभ्रमारणम् २४७	
रजतमारणम् ११		धान्याभ्रकस्य विधिः ११	
रजतगुणाः २३७		अमृतीकरणम् २४८	
ताम्रोत्पत्तिः ११		निषेधः ११	
सदोषत्वम् ११		अभ्रगुणाः ११	
ताम्रशोधनम् ११		स्वर्णमाक्षिकम् २४९	
ताम्रमारणम् २३८		अशुद्धत्वम् ११	
ताम्रगुणाः ११		शुद्धिप्रकारः ११	
रीतिकांस्ये २३९		मारणविधिः ११	
तच्छोधनम् ११		गुणाः ११	
तद्वृणाः ११		तारमाक्षिकम् २५०	
लोहोत्पत्तिः ११		तन्मारणम् ११	
कान्तलक्षणम् २४०		तालकविधिः ११	
लोहशोधनम् २४२		तालकस्य शोधनम् ११	
लोहमारणम् ११		तालकमारणम् ११	
		तालकगुणाः २५१	

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
मनःशिला	॥	गण्डूकायन्त्रम्	॥
मनःशिलाशोधनम्	॥	वालुकायन्त्रम्	२६१
मनःशिलागुणाः	॥	भूधरायन्त्रम्	॥
खर्परम्	॥	स्वर्णजारणम्	२६२
खर्परगुणाः	२५२	बिडानि	॥
तुत्थम्	॥	दोलायन्त्रेण हेमजारणम् ...	२६३
तुत्थगुणाः	॥	कच्छपयन्त्रेण हेमजारणम्	॥
स्रोतोऽञ्जनम्	॥	घनसत्त्वजारणम्	२६४
स्रोतोऽञ्जनगुणाः	॥	अभ्रकसत्त्वजारणम्	॥
अथ द्विचत्वारिंशस्तरङ्गः । ४२		गर्भहृतिः	२६५
अथ रसोत्पत्तिः	२५३	तल्लक्षणम्	॥
रसदोषाः	॥	दोलायन्त्रजारणम्	॥
दोषविकाराः	२५४	प्रमाणजारणम्	॥
कञ्चुकाः	॥	अञ्जनवेधने	२६६
कञ्चुकविकाराः	॥	तारवीजम्	॥
रसस्य संस्काराः	॥	हेमवीजम्	२६७
पटसारणम्	२५५	रञ्जनसारणार्थं तैलम्	॥
मर्दनम्	॥	द्वन्द्वमेलापकौषधानि	॥
मूर्च्छनम्	२५६	अन्यद्रसरञ्जनम्	॥
उत्थापनम्	॥	पत्रलेपाधिकारः	२६८
स्वेदनम्	॥	सिद्धमतखोटः	२६९
ऊर्ध्वपातनम्	॥	खोटान्तरम्	॥
अधःपातनम्	२५७	बाह्यदुतयः	॥
तिर्यक्पातनम्	॥	सारणा	२७०
पातनम्	॥	क्रामणम्	॥
बोधनम्	॥	खोटमार्गेण जारणम्	॥
नियमनम्	२५८	सिद्धचूर्णकल्कः	२७१
दीपनम्	२५९	सिद्धयोगाः	२७२
जारणम्	॥	हेमकरणप्रयोगः	॥
गन्धकजारणम्	२६०	तारकृष्णी	२७४
		अन्या तारकृष्णी	२७५

Table 1. Summary of the data sets used in the study									
Data set		Description		Number of samples		Number of features		Number of classes	
MNIST	Train	Handwritten digits	55,000	10	784	10	10	10	10
	Dev	Handwritten digits	5,000	10	784	10	10	10	10
	Test	Handwritten digits	10,000	10	784	10	10	10	10
	Total	Handwritten digits	70,000	30	784	30	30	30	30
SVHN	Train	Street View House Numbers	73,462	10	1088	10	10	10	10
	Dev	Street View House Numbers	7,346	10	1088	10	10	10	10
	Test	Street View House Numbers	14,692	10	1088	10	10	10	10
	Total	Street View House Numbers	95,500	30	1088	30	30	30	30
CIFAR-10	Train	10 classes of images	60,000	100	32x32x3	100	10	10	10
	Dev	10 classes of images	6,000	100	32x32x3	100	10	10	10
	Test	10 classes of images	10,000	100	32x32x3	100	10	10	10
	Total	10 classes of images	76,000	200	32x32x3	200	20	20	20
CIFAR-100	Train	100 classes of images	60,000	100	32x32x3	100	100	100	100
	Dev	100 classes of images	6,000	100	32x32x3	100	100	100	100
	Test	100 classes of images	10,000	100	32x32x3	100	100	100	100
	Total	100 classes of images	76,000	200	32x32x3	200	200	200	200

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
हेमरक्ती	२७६	बोलम्	११
लघुताम्रयोगः	११	श्यामबोलम्	११
हेमविद्या	२७७	मानुषबोलम्	११
रसबन्धनम्	११	गैरिकत्रयम्	११
दरदाकृष्टिः	११	समुद्रफेनः	२८२
जलयन्त्रद्वयम्	२७८	खटिकाद्वयम्	११
मुद्राद्वयम्	२७९	शम्बूकः	११
वज्रमुद्रा	११	रसाञ्जनम्	११
मदनमुद्रा	११	कासीसद्वयम्	११
अपरा मदनमुद्रा	२८०	कान्तपाषाणः	११
पारदः	२८१	कपर्दिका	२९०
ऊर्ध्वभस्म	११	शुक्तिका	११
पारदगुणाः	२८२	दरदः	११
तलभस्म	११	कङ्कुष्ठम्	११
भस्मसूतगुणाः	२८३	शङ्खः	२९१
कर्पूररसप्रकारः	११	दक्षिणावर्तशङ्खः	११
रसराजः	२८४	भूनागसत्त्वमयूरपक्षसत्त्वगुणाः	११
दरदेशः	११	टङ्कणः	११
अथ त्रिचत्वारिंशस्तरङ्गः । ४३		अपरष्टङ्कणः	११
अथोपरसाः	२८५	शिलाजतु	११
तत्र गन्धकम्	११	शिलाजतुशोधनम्	११
गन्धकशुद्धिः	११	शुद्धशिलाजतुपरीक्षा	११
गन्धकगुणाः	११	अशुद्धशिलाजतुवैगुण्यम्	११
वज्रम्	११	शुद्धशिलाजतुगुणाः	११
तद्वर्णः	२८६	पङ्कः	११
वज्रपरीक्षा	११	वालुका	११
वज्रशोधनम्	११	रत्नानि	२९४
वज्रमारणम्	११	उपरत्नानि	११
वैक्रान्तगुणाः	२८७	तेषां लक्षणानि	११
वैक्रान्तमारणम्	११	तेषां शोधनम्	११
सिन्दूरम्	२८८	तेषां मारणम्	११

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
रत्नोपरत्नगुणाः	२९५	अथ पञ्चचत्वारिंशस्तरङ्गः । ४५	
विषाणि	"	नाडीपरीक्षा ...	३०७
कालकूटादिविषभेदाः	२९६	अथ षट्चत्वारिंशस्तरङ्गः । ४६	
विषशोधनम् ...	२९७	जिह्वापरीक्षा ...	३०९
विषमारणम् ...	२९८	अथ सप्तचत्वारिंशस्तरङ्गः । ४७	
विषसेवनमात्राविधिः	"	स्वप्नाः ...	३०९
विषे पथ्यम्	२९९	अथाष्टचत्वारिंशस्तरङ्गः । ४८	
विषगुणाः	"	कृतविज्ञानीयम् ...	३१२
उपविषाणि ...	"	रोगमुक्तिविज्ञानकोष्टकम् ...	३१३
गुञ्जाशुद्धिः ...	३००	अथैकोनपञ्चाशस्तरङ्गः । ४९	
लाङ्गलीशुद्धिः ...	"	शकुनाः ...	३१४
विषमुष्टिशोधनम् ...	"	अथ पञ्चाशस्तरङ्गः । ५०	
जैपालशुद्धिः ...	"	वर्णस्वरविचारः	३१५
धत्तूरबीजशोधनम् ...	"	तत्कोष्टकम् ...	३१६
अहिफेनशुद्धिः ...	"	अथैकपञ्चाशस्तरङ्गः । ५१	
अर्काद्युपविषाणां गुणाः ...	३०१	मूत्रपरीक्षा ...	"
सेहुण्डगुणाः	"	अथ द्विपञ्चाशस्तरङ्गः । ५२	
कलिकारीगुणाः ...	"	मलपरीक्षा ...	३१७
गुञ्जागुणाः	"	अथ त्रिपञ्चाशस्तरङ्गः । ५३	
करवीरगुणाः ...	"	दृष्टिपरीक्षा ...	३१८
विषमुष्टिः	"		
जैपालगुणाः	३०२		
धत्तूरः ...	"		
अहिफेनः ...	"		
अभ्रसत्त्वपातनविधिः ...	"		
तालकसत्त्वम्	"		
अभ्रकण्टिकाः	३०३		
अथ चतुश्चत्वारिंशस्तरङ्गः । ४४			
अरिष्टज्ञानोपायः ...	"		
छायापुरुषलक्षणम्	३०६		

[illegible]

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
अथ चतुष्पञ्चाशस्तरङ्गः । ५४		बलवलक्षणम् ३२८	
ससाध्यव्याधिनिरूपकः ११		अथ सप्तपञ्चाशस्तरङ्गः । ५७	
अथ पञ्चपञ्चाशस्तरङ्गः । ५५		अथ ज्वराधिकारः... .. ११	
भैषज्यग्रहणविधिः... .. ३१९		रोगज्ञानोपायः ११	
भैषज्यग्रहणे मङ्गलम् ११		ज्वरोत्पत्तिः ३२९	
भैषज्यकालाः ११		ज्वरस्वरूपम् ११	
मात्राः ३२१		ज्वरहेतुः ११	
अथ षट्पञ्चाशस्तरङ्गः । ५६		वातज्वरनिदानम् ३३०	
ज्वरादिरोगोद्देशः ३२२		पित्तज्वरलक्षणम् ११	
दोषभेदाः ११		श्लेष्मज्वरलक्षणम् ३३१	
दोषादिवृद्धेर्निदानम् ३२३		वातपित्तज्वरलक्षणम् ११	
अतिवृद्धदोषधातुमलानां		वातश्लेष्मज्वरलक्षणम् ११	
ह्रासनम् ३२४		पित्तश्लेष्मज्वरलक्षणम् ११	
दोषधातुमलानां क्षयस्य		संनिपातज्वरलक्षणम् ११	
निदानम् ११		संनिपातभेदाः ३३२	
क्षीणानां लक्षणानि ११		नामानि ११	
ओजःक्षयस्य निदानम् ३२५		विद्धाख्यः ११	
क्षीणौजसो लक्षणम् ११		शर्कराख्यः ११	
क्षीणानां दोषधातुमलानां		मूलाख्यः ११	
वर्धनम् ११		विस्फुरणाख्यः ११	
क्षेण्यकारणं क्षीणस्येच्छावि-		शीघ्रकारी ३३३	
शेषः ३२६		फम्फणाख्य ११	
दोषधातुमलानां वृद्धानां च		व्यालाकृत्याख्यः ११	
चिकित्सा ३२७		संग्रामाख्यः ११	
बललक्षणम्... .. ११		क्रकचाख्यः ११	
बलस्य क्षयनिदानम् ११		कर्कटाख्यः ११	
बलक्षयलक्षणम् ११		पाकलाख्यः ११	
बलवृद्धिलक्षणम् ११		संमोहः ११	
		कूटपालः ११	

Date		Time		Location		Remarks	
1900	10/1	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/2	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/3	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/4	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/5	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/6	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/7	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/8	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/9	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/10	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/11	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/12	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/13	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/14	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/15	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/16	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/17	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/18	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/19	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/20	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/21	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/22	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/23	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/24	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/25	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/26	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/27	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/28	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/29	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/30	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1900	10/31	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
तन्त्रान्तरस्थसंनिपातभेदना- मानि	३३४	अन्तर्वेगलक्षणम्	३४०
तेषां कालावधिः	॥	बहिर्वेगलक्षणम्	॥
संधिगः	॥	आमज्वरः	॥
अन्तकः	॥	विषमहेतुः	॥
रुग्दाहकः	३३५	पच्यमानलक्षणम्	॥
चित्तभ्रमः	॥	निरामज्वरलक्षणम्	॥
कर्णकः	॥	ज्वरस्य दशोपद्रवाः	॥
कण्ठकुब्जः	॥	विषमे पञ्च गदाः	३४१
शीताङ्गः	॥	बहुलक्षणम्	॥
तन्द्रिकः	॥	तत्रासाध्यत्वम्	॥
प्रलापकः	३३६	धातुपाकलक्षणम्	॥
रक्तष्ठीवी	॥	दोषपाकलक्षणम्	॥
मुग्रनेत्रः	॥	तत्रौषधदानम्	॥
अभिन्यासः	॥	ज्वरमोक्षलक्षणम्	३४२
जिह्वकः	॥	ज्वरस्वेदः	॥
त्रिदोषमर्यादा	॥	विगतज्वरलक्षणम्	॥
साध्यासाध्यत्वम्	३३७	अथाष्टपञ्चाशस्तरङ्गः । ५८	
आगन्तुः	॥	अथ सर्वज्वरोपक्रमः	॥
विषमज्वरप्रकरणम्	॥	निवातसेवनगुणाः	॥
पञ्च प्रकाराः	॥	व्यजनानिलस्य	॥
तेषां स्थानानि	॥	चर्मव्यजनस्य	॥
संततः	३३८	वंशव्यजनस्य	३४३
सततकः	॥	खार्जूरानिलस्य	॥
अन्येष्टुष्कः	॥	मायूरवस्त्रवेत्रजाः	॥
तृतीयकचतुर्थकौ	॥	तरुणज्वरे निषेधः	॥
विषमलक्षणम्	॥	परिषेकादिसेवनापगुणाः	॥
त्रिविधस्तृतीयकः	॥	लङ्घनाचरणम्	॥
अङ्गग्रहज्वरः	॥	लङ्घनसहत्वम्	३४४
सप्तधातुगतज्वरलक्षणम्	३३९	दोषप्रमाणम्	॥
साध्यासाध्यत्वम्	॥	तरुणज्वरः	॥

Year	1990	1991	1992	1993	1994	1995	1996	1997	1998	1999	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021	2022	2023	2024	2025	2026	2027	2028	2029	2030	2031	2032	2033	2034	2035	2036	2037	2038	2039	2040	2041	2042	2043	2044	2045	2046	2047	2048	2049	2050	2051	2052	2053	2054	2055	2056	2057	2058	2059	2060	2061	2062	2063	2064	2065	2066	2067	2068	2069	2070	2071	2072	2073	2074	2075	2076	2077	2078	2079	2080	2081	2082	2083	2084	2085	2086	2087	2088	2089	2090	2091	2092	2093	2094	2095	2096	2097	2098	2099
1990	1990	1991	1992	1993	1994	1995	1996	1997	1998	1999	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021	2022	2023	2024	2025	2026	2027	2028	2029	2030	2031	2032	2033	2034	2035	2036	2037	2038	2039	2040	2041	2042	2043	2044	2045	2046	2047	2048	2049	2050	2051	2052	2053	2054	2055	2056	2057	2058	2059	2060	2061	2062	2063	2064	2065	2066	2067	2068	2069	2070	2071	2072	2073	2074	2075	2076	2077	2078	2079	2080	2081	2082	2083	2084	2085	2086	2087	2088	2089	2090	2091	2092	2093	2094	2095	2096	2097	2098	2099
1990	1991	1992	1993	1994	1995	1996	1997	1998	1999	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021	2022	2023	2024	2025	2026	2027	2028	2029	2030	2031	2032	2033	2034	2035	2036	2037	2038	2039	2040	2041	2042	2043	2044	2045	2046	2047	2048	2049	2050	2051	2052	2053	2054	2055	2056	2057	2058	2059	2060	2061	2062	2063	2064	2065	2066	2067	2068	2069	2070	2071	2072	2073	2074	2075	2076	2077	2078	2079	2080	2081	2082	2083	2084	2085	2086	2087	2088	2089	2090	2091	2092	2093	2094	2095	2096	2097	2098	2099	

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
हीनलङ्घनम्	३४५	दुरालभादिः.....	३५१
लङ्घनातिक्रमे दोषाः	३४५	पर्पटककाथः	३५१
लङ्घनगुणाः	३४५	श्लेष्मजे बीजपूरादिः	३५१
जलदानयोग्यः	३४५	भूनिम्बादिः....	३५१
मन्दपानीयदानयोग्यः	३४५	आमलक्यादिः	३५१
शीतलजलदानयोग्यः	३४५	चातुर्भद्रावलेहिका	३५१
उष्णजलपानप्रशस्तिः	३४५	सर्वज्वरे गुडूच्यादिः	३५१
उष्णोदकलक्षणम्	३४५	वातपित्ते पञ्चभद्रं जलम्	३५१
रोगकालादिभेदेनोष्णोदकप्र-		वातश्लेष्मजे क्षुद्रादिः	३५२
माणम्	३४५	आरोर्यपञ्चकम्	३५२
उष्णोदकपानगुणाः	३४५	पित्तश्लेष्मजेऽधृताष्टकम्	३५२
तस्य क्रिया	३४५	संनिपातजे दशमूलादिः	३५२
समयान्तरगुणाः	३४५	भाग्यादिकाथः	३५३
कषायनिषेधः	३४५	अष्टादशाङ्गः	३५३
वमने क्रमः	३४५	पञ्चतित्तकषायः	३५३
औषधदानसमयान्तरगुणागु-		अष्टाङ्गावलेहिका	३५४
णाः	३४८	दशमूलाष्टादशाङ्गः	३५४
तत्रविशेषः	३४८	चतुर्दशाङ्गः	३५४
अथैकोनषष्टितमस्तरङ्गः । ५९		वालुकास्वेदः	३५५
ज्वरे पथ्यानि	३४९	नस्यम्	३५५
शाकानि	३४९	निष्ठीवनम्	३५५
अन्नम्	३४९	शिरीषाद्यञ्जनम्	३५५
ज्वरे मांसानि	३४९	धातुगतज्वराक्रिया	३५५
फलानि	३५०	सिद्धार्थादिः	३५६
पुराणधान्यम्	३५०	उद्धूलनम्	३५६
ज्वरे पाचनम्	३५०	दम्भादिक्रियाः	३५६
तत्संप्रदानकालः	३५०	संधिगादीनां चिकित्सा	३५७
वातज्वरे शालिपर्ण्यादिः	३५०	संधिगः	३५७
किरातादिः	३५०	अन्तकचिकित्सा	३५७
काश्मर्यादिः....	३५०	रुग्दाहप्रतीकारः	३५७
पैत्ते कट्फलानि	३५०	चित्तविभ्रमप्रतीकारः	३५९

Date		Time		Location		Remarks	
1900	10/1	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/2	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/3	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/4	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/5	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/6	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/7	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/8	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/9	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/10	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/11	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/12	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/13	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/14	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/15	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/16	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/17	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/18	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/19	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/20	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/21	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/22	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/23	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/24	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/25	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/26	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/27	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/28	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/29	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/30	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1900	10/31	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
कर्णिकाचिकित्सा ...	३६०	नारायणास्त्रम्	११
कण्ठकुञ्जचिकित्सा ...	११	सुदर्शनचूर्णम् ...	११
शीताङ्गचिकित्सा ...	३६१	लघुसुदर्शनम्	३७५
तन्द्रिकाचिकित्सा ...	११	तालीसाद्यम् ...	११
प्रलापकचिकित्सा	३६२	सितोपलाद्यम्	११
रक्तष्ठीविप्रतीकारः ...	११	जीर्णज्वरे तैलानि ...	११
भुग्ननेत्रचिकित्सा ...	११	षट्कतैलम् ...	११
अभिन्यासचिकित्सा ...	३६३	लाक्षारसविधिः	३७३
संनिपातभैरवो रसः ...	३६४	लघुलाक्षातैलम्	११
संनिपातारिः ...	३६५	बृहल्लाक्षादितैलम् ...	११
जिह्वकचिकित्सा ...	११	मध्यमलाक्षातैलम् ...	११
आगन्तुज्वराधिकारः ...	११	षट्चरणतैलम् ...	११
विषमज्वरचिकित्सा ...	३६७	अङ्गारकं तैलम् ...	११
विषमे क्रिया ...	११	दाहज्वरप्रतीकारः ...	३७७
चातुर्थिकज्वरचिकित्सा ...	३६८	सप्तधातुगतज्वरचिकित्सा ...	११
मुस्तादिकाथः ...	३६९	अथ रसाः ...	३७८
पिप्पलीवर्धमानम्	११	संनिपाते वीरभद्राख्यो रसः	११
क्षुद्रादिः	३७०	ब्रह्मास्त्ररसः	११
तत्रापराजितो धूपः ...	११	विद्याधररसः	३७९
माहेश्वरो धूपः ...	११	विनोदविद्याधरः	११
दाव्यादिः ...	३७१	ज्वरमुरारिः	११
शृङ्ग्यादिचतुःषष्टिककाथः	११	महाज्वराङ्कुशः	३८०
कल्याणकं घृतम् ...	३७२	चिन्तामणिरसः ...	११
लघुषट्पलं घृतम् ...	११	सूचिकाभरणो रसः ...	११
महाषट्पलं घृतम् ...	११	महाशीतज्वराङ्कुशः ...	३८१
जीर्णज्वरप्रकरणम् ...	३७३	चन्द्रशेखरः	११
निदिग्धिकादिः	११	मृतसंजीवनी गुटिका ...	११
अथ चूर्णानि ...	११	भस्मेश्वरः ...	११
द्राक्षादिचूर्णम् ...	११	पञ्चवक्त्रो रसः ...	३८२
आमलक्यादि ...	३७४	स्वर्णमालिनीवसन्तः ...	११
अनन्तादि....	११	ज्वरघ्नी बटिका ...	११

Table 1. Summary of the data sets used in the study			
Dataset	Number of samples	Number of features	Number of classes
Dataset 1	1000	1000	10
Dataset 2	2000	2000	20
Dataset 3	3000	3000	30
Dataset 4	4000	4000	40
Dataset 5	5000	5000	50
Dataset 6	6000	6000	60
Dataset 7	7000	7000	70
Dataset 8	8000	8000	80
Dataset 9	9000	9000	90
Dataset 10	10000	10000	100
Dataset 11	11000	11000	110
Dataset 12	12000	12000	120
Dataset 13	13000	13000	130
Dataset 14	14000	14000	140
Dataset 15	15000	15000	150
Dataset 16	16000	16000	160
Dataset 17	17000	17000	170
Dataset 18	18000	18000	180
Dataset 19	19000	19000	190
Dataset 20	20000	20000	200
Dataset 21	21000	21000	210
Dataset 22	22000	22000	220
Dataset 23	23000	23000	230
Dataset 24	24000	24000	240
Dataset 25	25000	25000	250
Dataset 26	26000	26000	260
Dataset 27	27000	27000	270
Dataset 28	28000	28000	280
Dataset 29	29000	29000	290
Dataset 30	30000	30000	300
Dataset 31	31000	31000	310
Dataset 32	32000	32000	320
Dataset 33	33000	33000	330
Dataset 34	34000	34000	340
Dataset 35	35000	35000	350
Dataset 36	36000	36000	360
Dataset 37	37000	37000	370
Dataset 38	38000	38000	380
Dataset 39	39000	39000	390
Dataset 40	40000	40000	400
Dataset 41	41000	41000	410
Dataset 42	42000	42000	420
Dataset 43	43000	43000	430
Dataset 44	44000	44000	440
Dataset 45	45000	45000	450
Dataset 46	46000	46000	460
Dataset 47	47000	47000	470
Dataset 48	48000	48000	480
Dataset 49	49000	49000	490
Dataset 50	50000	50000	500
Dataset 51	51000	51000	510
Dataset 52	52000	52000	520
Dataset 53	53000	53000	530
Dataset 54	54000	54000	540
Dataset 55	55000	55000	550
Dataset 56	56000	56000	560
Dataset 57	57000	57000	570
Dataset 58	58000	58000	580
Dataset 59	59000	59000	590
Dataset 60	60000	60000	600
Dataset 61	61000	61000	610
Dataset 62	62000	62000	620
Dataset 63	63000	63000	630
Dataset 64	64000	64000	640
Dataset 65	65000	65000	650
Dataset 66	66000	66000	660
Dataset 67	67000	67000	670
Dataset 68	68000	68000	680
Dataset 69	69000	69000	690
Dataset 70	70000	70000	700
Dataset 71	71000	71000	710
Dataset 72	72000	72000	720
Dataset 73	73000	73000	730
Dataset 74	74000	74000	740
Dataset 75	75000	75000	750
Dataset 76	76000	76000	760
Dataset 77	77000	77000	770
Dataset 78	78000	78000	780
Dataset 79	79000	79000	790
Dataset 80	80000	80000	800
Dataset 81	81000	81000	810
Dataset 82	82000	82000	820
Dataset 83	83000	83000	830
Dataset 84	84000	84000	840
Dataset 85	85000	85000	850
Dataset 86	86000	86000	860
Dataset 87	87000	87000	870
Dataset 88	88000	88000	880
Dataset 89	89000	89000	890
Dataset 90	90000	90000	900
Dataset 91	91000	91000	910
Dataset 92	92000	92000	920
Dataset 93	93000	93000	930
Dataset 94	94000	94000	940
Dataset 95	95000	95000	950
Dataset 96	96000	96000	960
Dataset 97	97000	97000	970
Dataset 98	98000	98000	980
Dataset 99	99000	99000	990
Dataset 100	100000	100000	1000

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
नवज्वरहरा वटी	॥	ज्वरातिसारे....	॥
उदकमञ्जरीरसः	३८३	हिक्कायाम्	॥
ज्वराङ्कुशः	॥	वमनशान्तिः	॥
हुताशनो रसः	॥	कासारिः	॥
शीतमञ्जरी रसः	॥	निद्रानाश उपायाः	॥
भिषमारसः	३८४	ज्वरशान्त्यर्थं विष्णुस्तवनम् ३९१	
शीतारिः	॥	अथ द्विषष्टितमस्तरङ्गः । ६२	
चातुर्थिकारिः	॥	अथ दुर्जलजनितज्वरचिकित्सा ॥	
अथ षष्टितमस्तरङ्गः । ६०		शुण्ठीकाथः....	॥
संनिपाते मूर्च्छायां लोकनाथो		पटोलादिः	३९२
रसः	॥	किराततित्कादिचूर्णम् ...	॥
संनिपातसूर्यः	३८५	दुर्जलजेता रसः	॥
जलयौगिकः	३८६	अथ त्रिषष्टितमस्तरङ्गः । ६३	
त्रिदोषनीहारसूर्यः	॥	अथातीसारनिदानम्	॥
रसचूडामणिः	॥	असाध्यलक्षणम् ...	३९४
वाडवाख्यो रसः	३८७	अतीसारनिवृत्तिलक्षणम्	॥
सूचिकाभरणो रसः	॥	अथ चतुःषष्टितमस्तरङ्गः । ६४	
सूचिकाभरणो रसो रससि-		अतीसारपूर्वरूपचिकित्सा... ३९५	
न्धूक्तः	३८८	षडङ्गयूषः	॥
त्रिपुरभैरवः	॥	आमातिसारः	॥
गन्धलोहः	३८९	धान्यपञ्चकं चतुष्कं च ...	॥
अथैकषष्टितमस्तरङ्गः । ६१		अमयादिचतुःसमा गुटिका ३९७	
अथ प्रत्येकं ज्वरोपद्रवाणां		कलिङ्गादिचूर्णम् ...	॥
चिकित्सा	॥	शूलातीसारशान्त्यर्थं सार्पि-	
मूर्च्छायाम्	॥	ष्पानम् ...	३९८
अरुचौ	॥	पक्वातीसारः....	॥
श्वासे	॥	समङ्गाद्या गुटिका... ३९९	
अरतौ	॥	कञ्चटकादि... ॥	
पिपासायाम्	३९०		

[illegible]

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
लघुगङ्गाधरं चूर्णम्	...	प्रवाहिकाः
अङ्गोलमूलकल्कः	ऽयूषणाद्यं घृतम्
वातातीसारचिकित्सा	... ४००	पुरीषक्षयः
पित्तातीसारचिकित्सा	...	सामान्योपचारः ४११
रक्तातीसारः ४०१	सर्वातीसार उपचारः
कुटजाष्टकक्राथः	कुटजाष्टकावलेहः
वत्सकादिक्राथः	कपित्थाष्टकम्
ह्रीबेरादिः ४०२	लघुलाईचूर्णम् ४१२
रंजाञ्जनादिचूर्णम्	बृहलाईचूर्णम्
पिच्छाबस्तिः ४०३	मृतसंजीवनो रसः
क्षीरिवृक्षाद्यं घृतम्...	...	चन्द्रप्रभा वटी
कुटजक्षीरम्....	...	अथ पञ्चषष्टितमस्तरङ्गः । ६५	
शतावरीकल्कः	अथ ज्वरातीसारः ४१३
नवनीतावलेहः ४०४	पाठासप्तकक्राथः ४१४
चन्दनकल्कः	वागरादिः
गुदपाके भ्रंशे दाहे चोपचारः	...	बृहद्गुदव्यादिः
गुदव्यथायामुपचारः	...	ह्रीबेरादिः
श्लेष्मातिसारः ४०५	कलिङ्गादिक्राथः
संनिपातातिसारः ४०६	उशीरादिक्राथः ४१५
बृहच्छालिपण्यादि	...	बिल्वादिः
कुटजपुटपाकः	व्योषाद्यं चूर्णम्
स्योनाकपुटपाकः	अथ षट्षष्टितमस्तरङ्गः । ६६	
कुटजावलेहः ४०७	अथ ग्रहण्यधिकारः ४१६
षडङ्गघृतम् ४०८	ग्रहणीनिदानम्
श्लेष्मपित्तातिसारः	...	ग्रहणीलक्षणम्
वातश्लेष्मातिसारः	कलालक्षणम्
छर्द्यतीसारः ४०९	पूर्वरूपम्
शोफातीसारः	वातजा
भयशोकजावतीसारौ	...	तत्र व्यथाः
कल्याणकावलेहः		
आमपाचनविधिः ४१०		

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
पित्तजा	४१७	सुवर्णरसपर्पटी	११
कफजा	११	ग्रहणीकपाटः	११
त्रिदोषजा	११	ग्रहणीगजकेसरीरसः	४२५
घटीयन्त्राख्यो ग्रहणीरोगः	११	ग्रहणीकपाटम्	११
संग्रहणीलक्षणम्	११	रसपर्पटी	११
साध्यासाध्यलक्षणम्	४१८	शम्बूकमस्मयोगः	११
अथ सप्तषष्टितमस्तरङ्गः । ६७		ग्रहण्यां निषिद्धान्नानि	४२६
अथ ग्रहणीचिकित्सा	११	अगस्तिसूतराजः	११
तत्र वातजा	११	अथाष्टषष्टितमस्तरङ्गः । ६८	
तस्या उपचारः	११	अथाशोधिकारः	११
पञ्चमूलाद्यं घृतम्	४१९	निदानम्	११
शुण्ठीघृतम्	११	वाताशोहेतुः	११
अथ पित्तग्रहणी	११	पित्ताशोहेतुः	४२७
रसाञ्जनादिचूर्णम्	११	कफाशोहेतुः	११
नागराद्यं चूर्णम्	११	त्रिदोषाशोहेतुः	११
चन्दनाद्यं घृतम्	४२०	पूर्वरूपम्	११
अथ श्लेष्मग्रहणी	११	वाताशोलक्षणम्	११
रास्नादिचूर्णम्	११	पित्ताशोलक्षणम्	४२८
अथ सर्वजा ग्रहणी	११	कफाशोलक्षणम्	११
शुण्ठ्यादिः	११	त्रिदोषाशोलक्षणम्	११
चित्रकादिगुटिका	४२१	रक्ताशोलक्षणम्	११
कल्याणकावलेहः	११	वातानुबन्धः	४२९
वृद्धगङ्गाधरं चूर्णम्	११	कफानुबन्धः	११
बृहल्लवङ्गादिचूर्णम्	४२२	साध्यत्वादि	११
जातीफलाद्यं चूर्णम्	११	अथैकोनसप्ततितमस्तरङ्गः । ६९	
महाकल्याणगुडः	११	अथाशश्चिकित्सा	४३०
सर्जरसचूर्णम्	४२३	तस्य प्रतिक्रिया	११
बिल्वादिघृतम्	११	तिलादिमोदकः	४३१
तक्रहरीतकी	११	मरीचादिमोदकः	११
अथ रसाः	४२४		



विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
नागकेसराद्यवलेहिका ...	॥	विष्टब्धाजीर्णम् ...	॥
शिरीषबीजादिलेपः ...	४३२	चिदग्धाजीर्णम् ...	॥
रालाधूमादिः ...	॥	रसशेषाजीर्णम् ...	॥
सूरणपिण्डी ...	॥	विषूचीलक्षणम् ...	॥
काङ्कायनगुडचिकित्सा ...	४३३	पञ्चोपद्रवाः ...	४४०
समशर्करं चूर्णम् ...	॥	अलसकलक्षणम् ...	॥
चतुःसमी मोदकः ...	॥	दण्डालसकलक्षणम् ...	॥
सिन्धूत्थदेवदाल्यादिलेपः ...	४३४	विलम्बिका ...	॥
क्षारसूत्रम् ...	॥	देशजातामसमुद्भवलक्षणम् ...	॥
प्राणप्रदो मोदकः ...	॥	अलसे विषूच्यामरिष्टम् ...	॥
श्रीबाहुशालो गुडः ...	॥	भस्मकलक्षणम् ...	॥
अगस्त्यमोदकः ...	४३५	अजीर्णोपचारः ...	४४१
व्योषाद्यं चूर्णम् ...	॥	षट्प्रकाराजीर्णोपशमः ...	॥
विजयचूर्णम् ...	४३६	तत्र लेपः ...	॥
बृहद्भल्लतकलेहः ...	॥	दिवास्वापाहार्ः ...	॥
अग्निदाहादि ...	॥	गुडाष्टकम् ...	॥
नित्योदितो रसः ...	॥	अजीर्णभेदेन वमनाद्युपचाराः ४४२	
अर्शःकुठारो रसः ...	४३७	चित्रकादियवागूः ...	॥
पृथ्वापृथ्वम् ...	॥	संजीवनी गुटिका ...	॥
अथ सप्ततितमस्तरङ्गः । ७०		विषूचिकाञ्जनम् ...	४४३
अथाग्निमान्द्याधिकारः ...	॥	अग्निमुखं चूर्णम् ...	॥
मन्दाद्यग्निचतुष्टयम् ...	॥	हिङ्गवष्टकं चूर्णम् ...	॥
त्रिदोषजः ...	४३८	लघुवैश्वानरं चूर्णम् ...	॥
तद्रक्षणक्रमः ...	॥	लवणभास्करं चूर्णम् ...	॥
तस्योपचारः ...	॥	अथान्यलवणभास्करं चूर्णम् ४४४	
अथैकसप्ततितमस्तरङ्गः । ७१		धनंजयवटी ...	॥
अजीर्णनिदानम् ...	॥	शङ्खद्रावः ...	४४५
अजीर्णसामान्यलक्षणम् ...	४३९	अमृतार्णवो रसः ...	॥
आमाजीर्णम् ...	॥	बृहदग्निमुखं चूर्णम् ...	४४६
		एकैकाहारजनिताजीर्णस्यैकै-	
		कमौषधम् ...	॥

Date		Description		Amount	
1890	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	
1891	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	
1892	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	
1893	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
शङ्खवटी	४४९	अथ त्रिसप्ततितमस्तरङ्गः । ७३	
अपरा शङ्खवटी	"	अथ कृमिनिदानम्	"
अग्निकुमारः	४५०	कफोद्भवाः कृमयः	"
शङ्खवटीरसः	"	शोणितोद्भवाः	४५८
बृहन्महोदधिः	"	पुरीषजाः	"
क्रव्यादरसः	४५१	आभ्यन्तरकृमिलक्षणम्	"
बृहत्क्रव्यादरसः	"	कृमिरोगचिकित्सा	४५९
रामबाणः	४५२	विट्कफोत्थकृमिनाशोपायाः	"
अग्निमुखो रसः	४५३	रक्तजकृमिनाशे धूपः	४६०
अजीर्णारिः	"	विडङ्गादितैलम्	"
विषूच्यादिचिकित्सा	"	कृमिमुद्गरो रसः	"
अनुमूतमौषधम्	४५४	निषेधः	"
चुक्रायं तैलम्	"	अथ चतुःसप्ततितमस्तरङ्गः । ७४	
उत्क्रेशलक्षणम्	"	अथ पाण्डुरोगनिदानम्	४६१
दारुषट्कम्	"	मृज्जलक्षणम्	४६२
अमृता हरीतकी	४५५	असाध्यत्वम्	"
हुताशनः	"	कामला	"
लघुकव्यादः	"	कोष्ठशाखाश्रया कामला	"
अथ द्विसप्ततितमस्तरङ्गः । ७२		कुम्भकामला	"
अथ मस्मकरोगनिदानं चिकि-		हलीमकम्	४६३
त्सा च	४५६	अथ चिकित्सा	"
उपद्रवाः	"	अयोमोदकः	"
तस्य क्रिया	"	मण्डूरवटकाः	"
विरेचनम्	"	मण्डूरलवणम्	४६४
तस्य हितम्	"	नवप्लवसं चूर्णम्	"
तस्य विशिष्टत्वम्	"	हलीमकाविधिः	४६५
दोषधात्वग्निष्क्रापकता	"	त्रिफलाद्यो लोहः	४६६
तस्योपचाराः	४५७	त्रैलोक्यनाथः	"
विदार्यादिघृतम्	"	अमृताद्यं घृतम्	"

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting system in providing reliable financial information.

2. The second part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting system in providing reliable financial information.

3. The third part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting system in providing reliable financial information.

4. The fourth part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting system in providing reliable financial information.

5. The fifth part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting system in providing reliable financial information.

6. The sixth part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting system in providing reliable financial information.

7. The seventh part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting system in providing reliable financial information.

8. The eighth part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting system in providing reliable financial information.

9. The ninth part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting system in providing reliable financial information.

10. The tenth part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting system in providing reliable financial information.

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
अथ पञ्चसप्ततितमस्तरङ्गः । ७५		क्षयलक्षणम्... .. ४७७	
रक्तपित्तनिदानम् ४६७		शोषलक्षणम् ४७७	
साध्यासाध्यत्वम् ४६८		स्वप्नदृष्टत्वम्... .. ४७८	
रक्तपित्तचिकित्सा ४६८		राजयक्ष्मणो लक्षणम् ४७८	
रेचनम् ४६९		व्यवायशोषिशोकशोषिणौ ४७८	
रक्तपित्तस्योपचारः ... ४६९		जराशोषी ४७९	
तस्यान्नम् ४७०		व्यायामशोषी ४७९	
यूषार्थेऽन्नम् ४७०		अध्वप्रशोषी ४७९	
अम्लदानम् ४७०		रक्तशोषी ४७९	
दानार्थे फलानि ४७०		अथ क्षयरोगचिकित्सा ४८०	
शाकम् ४७०		षडङ्गयूषः ४८०	
मांसरसदानम् ४७०		सप्तामृतलौहम् ४८०	
चन्दनाद्यं चूर्णम् ४७०		दशमूलादिकाथः ४८०	
राजमार्तण्डोक्तोपचारः ... ४७०		तालीसाद्यं चूर्णम् ४८०	
एलादिगुटिका ४७०		सितोपलाद्यं चूर्णम् ... ४८१	
प्रियङ्गुवादिचूर्णम् ४७१		च्यवनप्राशविभीतकावलेहौ ४८१	
दूर्वाद्यं घृतम् ४७२		चतुर्दशाङ्गलोहम् ४८२	
वासाद्यं घृतम् ४७२		अगस्त्यहरीतकी ४८२	
शतावरीघृतम् ४७३		च्यवनप्राशः... .. ४८२	
बृहच्छतावरीघृतम्... .. ४७३		खण्डपिप्पल्यावलेहः ४८३	
कुष्माण्डावलेहः ४७४		शिवगुटिका ४८३	
खण्डकूष्माण्डः ४७४		लघुशिवगुटिका ४८४	
वासाखण्डः... .. ४७५		शिलाजतुप्रयोगः ४८५	
खण्डखाद्यो लेहः ४७५		यवान्याद्यं चूर्णम् ४८५	
खण्डामलकं खण्डहरीतकी च ४७६		द्विपञ्चमूलाद्यं घृतम् ४८६	
रसाः... .. ४७६		बलाद्यं घृतम् ४८६	
वासासूतः ४७६		द्राक्षासवः ४८६	
अथ षट्सप्ततितमस्तरङ्गः । ७६		पिप्पल्याद्यरिष्टः ४८७	
अथ क्षयरोगनिदानम् ४७६		छागलादिघृतम् ४८७	
		चन्दनादितैलम् ४८७	
		बृहन्नवायसम् ४८७	



विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
लाक्षादितैलम्	११	अग्निरसः	११
महालाक्षादितैलम् ...	४८८	हिताहितम् ...	५००
रत्नगर्भपोटलीरसः...	११	अथाष्टसप्ततितमस्तरङ्गः । ७८	
कुमुदेश्वरो रसः ...	४८९	अथ कासनिदानम्...	११
पञ्चामृताख्यो रसः ...	११	पञ्च प्रकाराः	११
राजमृगाङ्कः.....	११	पूर्वरूपम् ...	५०१
मृगाङ्कः	४९०	वातजः कासः ...	११
कनकसुन्दरो रसः ...	११	पित्तजः	११
सुवर्णपर्पटीरसः ...	११	कफजः	११
प्राणप्रदा पर्पटी ...	४९१	क्षयजः ...	११
लोकेश्वररसः ...	११	कासचिकित्सा ...	५०२
लोकेश्वरपोटलीरसः ...	११	पथ्यम्	११
द्वितीयो राजमृगाङ्कः ...	४९२	तस्योपचारः ...	११
शिलाजत्वादिलौहम् ...	११	अपराजितो लेहः ...	११
वसन्तकुसुमाकरः ...	४९३	भार्याद्यवलेहः ...	११
त्रैलोक्यचिन्तामणिः ...	११	विश्वादिलेहः ...	५०३
सूर्यप्रभा गुटिका ...	४९४	दशमूलादिघृतम् ...	११
अथ सप्तसप्ततितमस्तरङ्गः । ७७		कण्टकारीलेहः ...	११
अथोरःक्षतनिदानम् ...	४९५	बलादिक्वाथ... ..	११
उरःक्षतचिकित्सा	४९६	शठ्यादिक्वाथः ...	११
एलादिगुटिका ...	११	खर्जूरादिलेहः	५०४
यष्ट्याह्वयं घृतम्	४९७	क्षीरामलघृतम्	११
बलाद्यं घृतम्	११	नवाङ्गयूषः ...	११
श्वदंष्ट्राद्यं घृतम् ...	११	शठ्याद्यवलेहः ...	११
कल्याणघृतम्	११	व्योषाद्यं घृतम् ...	११
द्राक्षादिघृतम् ...	४९८	अथ द्वन्द्वजकासचिकित्सा	११
अमृतप्राशावलेहः ...	११	कट्फलादिः... ..	११
रसरजः ...	११	अथ क्षतकासचिकित्सा	५०५
अमृतेश्वरो रसः	४९९	इक्ष्वाद्यवलेहः ...	११
राजमृगाङ्को रसः ...	११	अथ क्षयकासचिकित्सा ...	११

Date		Time		Location		Remarks	
1911	10/1	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/2	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/3	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/4	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/5	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/6	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/7	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/8	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/9	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/10	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/11	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/12	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/13	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/14	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/15	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/16	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/17	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/18	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/19	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/20	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/21	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/22	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/23	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/24	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/25	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/26	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/27	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/28	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/29	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/30	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/31	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
पिप्पल्यावलेहः	५०६	असाध्यलक्षणम्	५१६
काकुभचूर्णम्	५०६	हिक्काचिकित्सा	५१७
पिप्पल्यादिघृतम्	५०६	अंथाशीतितमस्तरङ्गः । ८०	
पिप्पल्याद्यवलेहः	५०६	अथ श्वासनिदानम्	५१६
अथ कासश्वासः	५०७	पञ्चधाश्वासनिरोधनिदानम्	५१७
अमृतादिकाथः	५०७	पूर्वरूपम्	५१७
भाग्यादिकाथः	५०७	श्वाससंप्राप्तिः	५१७
पथ्यादिगुटिका	५०७	महाश्वासलक्षणम्	५१७
अथ सर्वकासः	५०७	ऊर्ध्वश्वासः	५१७
कुनट्यादिलेहः	५०८	छिन्नश्वासः	५१७
हरीतक्याद्यो मोदकः	५०८	तमकश्वासः	५१७
शर्करासमं चूर्णम्	५०८	प्रतमकश्वासः	५१८
कर्पूराद्यं चूर्णम्	५०८	क्षुद्रश्वासलक्षणम्	५१८
मरिचाद्यं चूर्णम्	५०८	अथ श्वासप्रतीकारः	५१९
कण्टकारीघृतम्	५०९	कुलत्थादिकाथः	५१९
व्याघ्रीहरीतकी	५०९	दशमूलदिकाथः	५१९
कासकण्डनोऽवलेहः	५०९	देवदारवादिकाथः	५१९
पारदादिचूर्णम्	५१०	गुडादिगुटिका	५२०
कासकर्तरी गुटिका	५१०	कूष्माण्डमूलचूर्णम्	५२०
निषेधः	५१०	गृङ्ग्यादिचूर्णम्	५२०
अथैकोनाशीतितमस्तरङ्गः । ७९		गुडावलेहः	५२०
अथ हिक्कानिदानम्	५१३	हृद्रिद्रावलेहः	५२०
हिक्कालक्षणम्	५१३	शठ्याद्यं चूर्णम्	५२०
पञ्चप्रकाराः	५१३	भाग्यादिलेहः	५२०
पूर्वरूपम्	५१३	चित्रकहरीतक्यवलेहः	५२१
अन्नजा हिक्का	५१३	भार्गीहरीतक्यवलेहः	५२१
यमला	५१४	क्षुद्रावलेहः	५२१
क्षुद्रिका	५१४	गुटी	५२१
गम्भीरा	५१४	श्वासकुठारः	५२१
महाहिक्का	५१४		

PUBLISHED WEEKLY		Subscription Office	
Volume	Number	Year	Price
50	1	1933	\$3.00
50	2	1933	\$3.00
50	3	1933	\$3.00
50	4	1933	\$3.00
50	5	1933	\$3.00
50	6	1933	\$3.00
50	7	1933	\$3.00
50	8	1933	\$3.00
50	9	1933	\$3.00
50	10	1933	\$3.00
50	11	1933	\$3.00
50	12	1933	\$3.00
50	13	1933	\$3.00
50	14	1933	\$3.00
50	15	1933	\$3.00
50	16	1933	\$3.00
50	17	1933	\$3.00
50	18	1933	\$3.00
50	19	1933	\$3.00
50	20	1933	\$3.00
50	21	1933	\$3.00
50	22	1933	\$3.00
50	23	1933	\$3.00
50	24	1933	\$3.00
50	25	1933	\$3.00
50	26	1933	\$3.00
50	27	1933	\$3.00
50	28	1933	\$3.00
50	29	1933	\$3.00
50	30	1933	\$3.00
50	31	1933	\$3.00
50	32	1933	\$3.00
50	33	1933	\$3.00
50	34	1933	\$3.00
50	35	1933	\$3.00
50	36	1933	\$3.00
50	37	1933	\$3.00
50	38	1933	\$3.00
50	39	1933	\$3.00
50	40	1933	\$3.00
50	41	1933	\$3.00
50	42	1933	\$3.00
50	43	1933	\$3.00
50	44	1933	\$3.00
50	45	1933	\$3.00
50	46	1933	\$3.00
50	47	1933	\$3.00
50	48	1933	\$3.00
50	49	1933	\$3.00
50	50	1933	\$3.00

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
अथैकाशीतितमस्तरङ्गः । ८१		खाडवं चूर्णम् ५२९	
अथ स्वरभेदनिदानम् ... ५२२		सूतादिगुटी ॥	
वातजस्वरभेदः ॥		अथ त्र्यशीतितमस्तरङ्गः । ८३	
पित्तजः ॥		अथ छर्दिनिदानम् ॥	
कफजः ॥		पूर्वरूपम् ५३०	
सर्वालङ्गजः ॥		वातजा ॥	
असाध्यः स्वरभेदः ... ५२३		पित्तजा ॥	
अथ स्वरभेदचिकित्सा ... ॥		कफजा ॥	
कासमर्दघृतम् ॥		त्रिदोषजा ॥	
पित्तस्वरभेदे शुण्ठ्यादिघृतम् ॥		बीभत्सजा ॥	
कफस्वरभेदे पिप्पल्यादि-		साध्यासाध्यत्वम् ॥	
घृतम् ५२४		तदुपद्रवाः ५३१	
संनिपातस्वरभेदचिकित्सा ... ॥		अथ छर्दिचिकित्सा ॥	
क्षयजस्वरभेदचिकित्सा ... ॥		धान्यकादिः ॥	
अथ सामान्यविधिः ... ॥		लाजादिपूषाः ॥	
चव्यादिचूर्णम् ॥		चन्दनपानकम् ॥	
व्याघ्रीघृतम् ॥		चन्दनाद्यवलेहः ॥	
बदरीपत्रावलेहः ५२५		मुद्गकषायः ५३२	
निदिग्धिकावलेहः ॥		पर्पटकाथः ॥	
गोरक्षवटी ॥		हरीतक्यवलेहः ॥	
अथ द्वाशीतितमस्तरङ्गः । ८२		मक्षिकाविडवलेहः ॥	
अथारोचकनिदानम् ... ५२६		लाजसक्तवलेहिका ॥	
अरोचकचिकित्सा ॥		कफच्छर्दिचिकित्सा ॥	
अम्लिकापानकम् ५२७		धात्रीफलादिपानकम् ... ५३३	
मठः ॥		मसूरसक्तुः ॥	
चत्वारः कवलग्रहाः ... ५२८		एलाद्यं चूर्णम् ॥	
कारव्यादिगुटिका ॥		त्रिदोषच्छर्दिचिकित्सा ... ॥	
यवानीखाडवं चूर्णम् ... ॥		सामान्यच्छर्दिचिकित्सा को-	
लवङ्गादिचूर्णम् ॥		लाद्यवलेहः ॥	
		लाजादियोगत्रयम् ॥	

Date		Time		Location		Remarks	
1911	10/1	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/2	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/3	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/4	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/5	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/6	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/7	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/8	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/9	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/10	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/11	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/12	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/13	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/14	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/15	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/16	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/17	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/18	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/19	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/20	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/21	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/22	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/23	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/24	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/25	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/26	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/27	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/28	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/29	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/30	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/31	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
आम्रास्थपादिकाथः ...	५३४	पृथिव्यादिकमूर्छा ...	५३४
बिल्वादिः ...	५३४	विषमद्यजे मूर्छे ...	५३४
जम्बूपलवादि ...	५३४	तन्द्रालक्षणम् ...	५३४
पद्मकाद्यं घृतम् ...	५३४	कुमलक्षणम् ...	५४१
मयूरपक्षभस्मावलेहः ...	५३४	तत्र संन्यासः ...	५४१
अथ सामान्यविधिः ...	५३४	मूर्छाचिकित्सा ...	५४२
अथ चतुरशीतितमस्तरङ्गः ।	८४	भ्रमचिकित्सा ...	५४२
अथ तृष्णानिदानम् ...	५३५	तन्द्राचिकित्सा ...	५४२
वातजा तृष्णा ...	५३५	संन्यस्तचिकित्सा ...	५४३
पित्तजा ...	५३५	मरितताम्रचूर्णम् ...	५४३
कफजा ...	५३५	अथ षडशीतितमस्तरङ्गः ।	८६
क्षतजा ...	५३५	अथ पानात्ययनिदानम् ...	५४४
क्षयजा ...	५३५	प्रथममदगुणाः ...	५४४
रसक्षयजा ...	५३५	द्वितीयमदगुणाः ...	५४४
त्रिदोषजा ...	५३५	तृतीयमदगुणाः ...	५४४
असाध्यत्वम् ...	५३५	चतुर्थमदगुणाः ...	५४४
अथ तृष्णाचिकित्सा ...	५३५	वातजमदात्ययः ...	५४५
पित्तजतृष्णाचिकित्सा ...	५३७	पित्तजः ...	५४५
कफजतृष्णाचिकित्सा ...	५३७	कफजः ...	५४५
अथ सामान्यविधिः ...	५३७	त्रिदोषजः ...	५४५
रसादिगुटी ...	५३८	परमदालिङ्गम् ...	५४५
अथ पञ्चाशीतितमस्तरङ्गः ।	८५	पानाजीर्णम् ...	५४५
अथ मूर्च्छानिदानम् ...	५३९	पानविभ्रमः ...	५४५
पूर्वरूपम् ...	५३९	अथैतच्चिकित्सा ...	५४६
वातजा मूर्छा ...	५३९	मद्यपानमात्रा ...	५४६
पित्तजा ...	५३९	पानस्य प्रशस्तिः ...	५४६
कफजा ...	५४०	वातपानात्ययः ...	५४७
संनिपातजा ...	५४०	पित्तपानात्ययः ...	५४७
		कफपानात्ययः ...	५४७

[illegible]

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
अष्टाङ्गलवणम्	५४८	बह्वराक्षससेवितः	५५५
सामान्यचिकित्सा ...	५५	असाध्यमर्यादा	५५
कज्जलीरसः.....	५४९	ग्रहसमयः	५५
अथ सप्ताशीतितमस्तरङ्गः । ८७		तस्य व्याप्तिः	५५
अथ दाहनिदानम्	५५०	अथैतत्प्रतीकारः ...	५५
दाहचिकित्सा ...	५५०	ब्राह्म्यादिकल्कः ...	५५६
चन्दनादिक्राथः	५५१	सिद्धार्थकादियोगः ...	५५६
कुशादितैलघृते	५५१	ऽयूषणवर्तिः ...	५५६
रसादिगुटी ...	५५१	आगन्तून्मादचिकित्सा ...	५५७
अथाष्टाशीतितमस्तरङ्गः । ८८		महापैशाचिकं घृतम्	५५७
अथोन्मादनिदानम्	५५२	चेतसं घृतम्... ..	५५७
उन्मादस्य सामान्यं रूपम् ५५२		पानीयकल्याणकघृतम् ...	५५८
वातजोन्मादः	५५२	सारस्वतं चूर्णम्	५५८
पित्तजः	५५२	विश्वाद्यं चूर्णम् ...	५५९
कफजः	५५२	हिङ्गवाद्यं घृतम् ...	५५९
संनिपातजः....	५५२	महाचेतसं घृतम् ...	५५९
मनोविकारजः ...	५५३	कृष्णाद्यञ्जनम् ...	५६०
विषजः ...	५५३	ऋक्षलोमादिधूपः	५६०
असाध्यत्वम्... ..	५५३	विगतोन्मादलक्षणम्	५६१
भूतजः ...	५५३	नस्यम्	५६१
देवजुष्टलक्षणम्	५५४	भूतभैरवो रसः	५६१
दैत्यजुष्टलक्षणम् ...	५५४	उन्मादगजकेसरी	५६१
गन्धर्वग्रहपरिपीडितः ...	५५४	अथैकोनवतितमस्तरङ्गः । ८९	
यक्षग्रहपरिपीडितः...	५५४	अथापस्मारनिदानम् ...	५६२
पितृग्रहाभिजुष्टः ...	५५४	वातजोऽपस्मारः	५६२
भुजङ्गमजुष्टः ...	५५४	पित्तजः ...	५६२
राक्षसगृहीतः ...	५५४	कफजः ...	५६२
पिशाचजुष्टः ...	५५४	त्रिदोषजः	५६२
		अथापस्मारचिकित्सा ...	५६४
		नस्यम् ...	५६४

Date		Description		Amount	
1890	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	
1891	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	
1892	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	
1893	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
अञ्जनम्	११	धनुस्तम्भः	११
धूपः	११	मणायामः	५७०
कल्याणकं चूर्णम्	११	बाह्याभ्यन्तरायामौ	११
ब्राह्मीघृतम्	११	कफपित्तान्वितः	११
स्वल्पपञ्चगव्यघृतम्	११	असाध्यत्वम्	११
वचाद्यं घृतम्	५६५	पक्षाघातः	११
कटुभ्यादितैलम्	११	वातपित्तसमन्वितः	११
कपित्थादिवर्तिः	११	पक्षाघातासाध्यत्वम्	५७१
जलघृतलक्षणम्	११	अर्दितः	११
स्मृतिसागरः	११	अर्दितस्य वर्षावधिः	११
अथ नवतितमस्तरङ्गः । ९०		हनुग्रहः	११
अथ वातव्याधिनिदानम्	५६६	मन्यस्तम्भः	११
आक्षेपकाद्योऽशीतिर्वारोगाः ११		जिह्वास्तम्भः	५७२
गुदस्थः	५६७	शिरोग्रहः	११
आमाशयस्थः	११	गृध्रसी	११
पक्वाशयस्थः	११	विश्वाची	११
वातप्रकोपः	११	क्रोष्टुकशीर्ष	११
त्वग्गतः	५६८	खञ्जपङ्कज	११
रुधिरगतः	११	कलायखञ्जः	११
मांसमेदोगतः	११	वातकण्टकः	११
मज्जास्थिगतः	११	पाददाहः	११
शुक्रगतः	११	पादहर्षः	५७३
शिरागतः	११	अवबाहुकः	११
स्नायुगतः	११	मूकमिम्भिणगद्गदाः	११
कफाघृतलक्षणम्	११	तूनी	११
आक्षेपकः	५६९	प्रतूनी	११
अपतन्त्रकः	११	आध्मानः	११
अपतानकः	११	प्रत्याध्मानः	११
दण्डापतानकः	११	वाताष्ठीला	११
तस्याऽऽयुष्प्रमाणम्	११	प्रत्यष्ठीला	११
		वेपथुः	५७४

Table 1. Summary of the data sets used in the study									
Data set		Number of samples		Number of features		Number of classes		Number of samples per class	
MNIST	Training	55,000	784	10	784	10	5,500	550	550
	Validation	5,000	784	10	784	10	500	50	50
	Test	10,000	784	10	784	10	1,000	100	100
	Training	55,000	784	10	784	10	5,500	550	550
	Validation	5,000	784	10	784	10	500	50	50
	Test	10,000	784	10	784	10	1,000	100	100
	Training	55,000	784	10	784	10	5,500	550	550
	Validation	5,000	784	10	784	10	500	50	50
	Test	10,000	784	10	784	10	1,000	100	100
	Training	55,000	784	10	784	10	5,500	550	550
SVHN	Training	73,462	1024	10	1024	10	7,346	735	735
	Validation	7,346	1024	10	1024	10	735	73	73
	Test	14,692	1024	10	1024	10	1,469	147	147
	Training	73,462	1024	10	1024	10	7,346	735	735
	Validation	7,346	1024	10	1024	10	735	73	73
	Test	14,692	1024	10	1024	10	1,469	147	147
	Training	73,462	1024	10	1024	10	7,346	735	735
	Validation	7,346	1024	10	1024	10	735	73	73
	Test	14,692	1024	10	1024	10	1,469	147	147
	Training	73,462	1024	10	1024	10	7,346	735	735
CIFAR-10	Training	50,000	3,136	10	3,136	10	5,000	500	500
	Validation	5,000	3,136	10	3,136	10	500	50	50
	Test	10,000	3,136	10	3,136	10	1,000	100	100
	Training	50,000	3,136	10	3,136	10	5,000	500	500
	Validation	5,000	3,136	10	3,136	10	500	50	50
	Test	10,000	3,136	10	3,136	10	1,000	100	100
	Training	50,000	3,136	10	3,136	10	5,000	500	500
	Validation	5,000	3,136	10	3,136	10	500	50	50
	Test	10,000	3,136	10	3,136	10	1,000	100	100
	Training	50,000	3,136	10	3,136	10	5,000	500	500

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
ऊर्ध्ववातः	महामाषाद्यं तैलम्
असाध्यत्वम्	शतावरीतैलम्	५८४
अथैतच्चिकित्सा	महाबलातैलम्
यूषः	नारायणं तैलम्
प्रदेहः	५७५	जीवनारायणतैलम्
बेसवारः	शतावरीनारायणं तैलम्	५८६
स्वेदः	दशविधताशवरीतैलम्	५८७
माषादिसप्तकम्	५७६	लघुनारायणं तैलम्	५८८
माषादिकाथः	शतावरी तैलम्
रसोनसप्तकम्	दशमूलादि तैलम्
माषोण्डरी	५७७	सुगन्धितैलम्
दशमूल्यादिकाथः	एलादितैलम्
सहचरादिकाथः	विष्णुतैलम्	५८९
दशमूलादिकाथः	वातनाशनं तैलम्
दशमूल्यादिः	छागलाद्यं घृतम्	५९०
दारुषट्कम्	त्वक्शून्यतालक्षणम्	५९१
जिह्वास्तम्भे कल्याणकावलेहः ५७८		नारायणं चूर्णम्
एरण्डबीजपायसः	५७९	अथ रसाः
तैलादियोगाः	महानाराचो रसः
रास्नाद्यो गुग्गुलुः	५८०	वातनाशनो रसः	५९२
हिङ्गवादिचूर्णम्	स्वच्छन्दभैरवो रसः
गृध्रस्युत्तारणप्रकारः	वातविध्वंसनो रसः
शिरावेधविधिः	वातराक्षसः	५९३
आदित्यगुग्गुलुः	द्वितीयो वातराक्षसः	५९४
त्रयोदशाङ्गो गुग्गुलुः	५८१	अथैकनवतितमस्तरङ्गः । ९१	
महारास्नादिकाथः	५८२	अथ वातरक्तनिदानम्
योगराजो गुग्गुलुः	वातजम्	५९५
रास्नाद्यो गुग्गुलुः	पित्तजम्
द्वात्रिंशको गुग्गुलुः	कफजम्
लघुविषगर्भतैलम्	५८३	द्रवजम्
अतिप्रसास्त्रिणीतैलम्		

[illegible]

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
याप्यत्वम्	”	कुष्ठादितैलम् ...	६०५
अथ वातरक्तचिकित्सा	५९६	कट्वरं तैलम् ...	”
द्वैविध्यम्	”	अथ त्रिनवतितमस्तरङ्गः । ९३	
निषेधः	५९७	अथाऽऽमवातनिदानम्	”
तस्यान्नम् ...	”	आमलक्षणम् ...	६०६
मांसम् ...	”	आमवातस्य सामान्यलक्षणम् ..	”
शाकान्नम्	”	आमचिकित्सा ...	”
भक्ष्यम्	”	शतपुष्पादिलेपः	६०७
वासादिकाथः	”	अहिंसादिलेपः ...	”
मञ्जिष्ठादिनवकार्षिककाथः ..	”	रास्नादिपञ्चकम् ...	”
गुडूच्यादिकाथः ...	५९८	रास्नादिसप्तकम्	६०८
गुडूचीयोगः....	”	महारास्नादिकाथः ...	”
द्वितीयो गुडूच्यादिकाथः....	”	चित्रकादिचूर्णम्	”
काश्मर्यादिकाथः	”	पुनर्नवाद्यं चूर्णम्	६०९
लघुमञ्जिष्ठादिकाथः ...	५९९	गुडूच्यादिचूर्णम् ...	”
बृहन्मञ्जिष्ठादिः	”	वैश्वानरं चूर्णम्	”
अमृताद्यवलेहिका	”	सिंहनादो गुग्गुलुः....	”
कैशोरको गुग्गुलुः ...	”	बृहद्रसोनपिण्डः ...	”
पुनर्नवाद्यो गुग्गुलुः ...	६००	एरण्डगुटी	६१०
अमृताद्यो गुग्गुलुः....	”	एरण्डतैलम् ...	”
लघुमरिचादितैलम्... ..	६०१	काञ्जिकषट्पलकं घृतम् ...	”
अथ रसाः ...	”	सैन्धवाद्यं तैलम् ...	”
सर्वेश्वरो रसः ...	”	शुण्ठीखण्डपाकः ...	६११
शिलाजतुयोगः	६०२	पञ्चाननवटी ...	”
अर्केश्वरो रसः ...	”	अजमोदावटी ...	”
चोपाचिनीवाष्पः ...	”	अथ चतुर्नवतितमस्तरङ्गः । ९४	
अथ द्विनवतितमस्तरङ्गः । ९२		अथ शूलनिदानम्	६१२
अथोरुस्तम्भनिदानम्	६०३	तत्र हेतुः	”
पूर्वरूपम् ...	”	तन्त्रान्तरसक्तान्नदोषशूलः...	६१३
अरुस्तम्भचिकित्सा ...	”		

PATIENT'S NAME		DATE		PHYSICIAN	
1	1	1	1	1	1
2	2	2	2	2	2
3	3	3	3	3	3
4	4	4	4	4	4
5	5	5	5	5	5
6	6	6	6	6	6
7	7	7	7	7	7
8	8	8	8	8	8
9	9	9	9	9	9
10	10	10	10	10	10
11	11	11	11	11	11
12	12	12	12	12	12
13	13	13	13	13	13
14	14	14	14	14	14
15	15	15	15	15	15
16	16	16	16	16	16
17	17	17	17	17	17
18	18	18	18	18	18
19	19	19	19	19	19
20	20	20	20	20	20
21	21	21	21	21	21
22	22	22	22	22	22
23	23	23	23	23	23
24	24	24	24	24	24
25	25	25	25	25	25
26	26	26	26	26	26
27	27	27	27	27	27
28	28	28	28	28	28
29	29	29	29	29	29
30	30	30	30	30	30
31	31	31	31	31	31
32	32	32	32	32	32
33	33	33	33	33	33
34	34	34	34	34	34
35	35	35	35	35	35
36	36	36	36	36	36
37	37	37	37	37	37
38	38	38	38	38	38
39	39	39	39	39	39
40	40	40	40	40	40
41	41	41	41	41	41
42	42	42	42	42	42
43	43	43	43	43	43
44	44	44	44	44	44
45	45	45	45	45	45
46	46	46	46	46	46
47	47	47	47	47	47
48	48	48	48	48	48
49	49	49	49	49	49
50	50	50	50	50	50
51	51	51	51	51	51
52	52	52	52	52	52
53	53	53	53	53	53
54	54	54	54	54	54
55	55	55	55	55	55
56	56	56	56	56	56
57	57	57	57	57	57
58	58	58	58	58	58
59	59	59	59	59	59
60	60	60	60	60	60
61	61	61	61	61	61
62	62	62	62	62	62
63	63	63	63	63	63
64	64	64	64	64	64
65	65	65	65	65	65
66	66	66	66	66	66
67	67	67	67	67	67
68	68	68	68	68	68
69	69	69	69	69	69
70	70	70	70	70	70
71	71	71	71	71	71
72	72	72	72	72	72
73	73	73	73	73	73
74	74	74	74	74	74
75	75	75	75	75	75
76	76	76	76	76	76
77	77	77	77	77	77
78	78	78	78	78	78
79	79	79	79	79	79
80	80	80	80	80	80
81	81	81	81	81	81
82	82	82	82	82	82
83	83	83	83	83	83
84	84	84	84	84	84
85	85	85	85	85	85
86	86	86	86	86	86
87	87	87	87	87	87
88	88	88	88	88	88
89	89	89	89	89	89
90	90	90	90	90	90
91	91	91	91	91	91
92	92	92	92	92	92
93	93	93	93	93	93
94	94	94	94	94	94
95	95	95	95	95	95
96	96	96	96	96	96
97	97	97	97	97	97
98	98	98	98	98	98
99	99	99	99	99	99
100	100	100	100	100	100

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
शूलचिकित्सा	६१४	अग्निमुखो रसः	११
तिलकल्कस्वेदः	११	शूलगजकेसरी	११
कार्पासादिस्वेदः	११	अथ पञ्चनवतितमस्तरङ्गः । ९५	
कुलत्थयूषः	११	अथ परिणामशूलनिदानम् । ६२१	
बलादिकाथः	६१५	वातजः	११
करञ्जाद्यं चूर्णम्	११	पित्तजः	११
एरण्डादिकाथः	११	कफजः	६२२
हिङ्गवाद्यं चूर्णम्	११	त्रिदोषजः	११
पित्तशूले शतावर्यादिकाथः ६१६		परिणामशूलचिकित्सा	११
धात्रीचूर्णम्	११	विडङ्गाद्यो मोदकः	११
श्लेष्मशूले त्रिलवणादि- चूर्णम्	११	नागरादिकल्कः	११
त्रिदोषशूले शम्बूकचूर्णयोगः ११		एरण्डादिभस्मयोगः	६२३
मण्डूरावलेहः	६१७	शम्बूकभस्मयोगः	११
एरण्डद्वादशकम्	११	शम्बूकादिगुटिका	११
आमशूले चित्रकादिकाथः ११		शम्बूकाद्यो मोदकः	११
एरण्डसप्तकम्	११	कृष्णाद्यं लोहम्	११
द्वन्द्वशूले कण्टकार्यादि ... ११		पथ्याद्यं लोहम्	६२४
क्षाराम्बुयोगः	६१८	त्रिफलाद्यं लोहम्	११
द्राक्षादिः	११	चतुःसमो लाहः	११
शूले साधारणो विधिः	११	सामुद्राद्यं चूर्णम्	११
तुम्बुर्वाद्यं चूर्णम्	११	भीममण्डूरवटकः	६२५
द्विक्षाराद्यं चूर्णम्	११	शतावरीमण्डूरः	११
रुचकादिचूर्णम्	११	तारामण्डूरवटकः	६२६
तैलधाराबस्तिः	११	लोहगुगुलुः	११
पथ्यादिचूर्णम्	६१९	गुडाद्यं लोहम्	६२७
हिङ्गवाद्या वटी	११	त्रिनेत्राख्यो रसः	११
शूलघृतम्	११	दशोपद्रवाः	६२८
सूर्यप्रभा वटी	११	निषेधः	११
हिङ्गवादिचूर्णम्	६२०		
शूलगजकेसरी रसः	११		

Date		Time		Location		Remarks	
1911	10/1	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/2	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/3	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/4	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/5	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/6	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/7	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/8	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/9	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/10	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/11	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/12	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/13	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/14	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/15	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/16	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/17	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/18	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/19	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/20	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/21	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/22	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/23	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/24	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/25	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/26	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/27	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/28	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/29	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/30	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/31	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
अथ घणवतिमस्तरङ्गः । ९६		अथ सामान्यविधिः ...	११
अथ वेगग्रहनिदानम् ...	११	हिङ्गवाद्यं घृतम् ...	६३८
अथोदावर्तनिदानम् ...	६२९	सामुद्रादिवर्तिः ...	११
अथैतयोश्चिकित्सा ...	६३०	नादेयीक्षारः ...	११
द्विरुत्तरं चूर्णम् ...	६३१	वज्रक्षारः ...	११
प्रलेपः ...	११	अपरो वज्रक्षारः ...	६३९
मदनादिफलवर्तिः ...	११	दाधिकं घृतम् ...	११
नाराचचूर्णम् ...	११	रक्तगुल्मचिकित्सा ...	११
नाराचरसः ...	११	शताह्वादिकल्कः ...	११
अथ सप्तनवतिमस्तरङ्गः । ९७		तिलकाथः ...	६४०
अथाऽऽनाहोपक्रमः ...	६३२	पलाशक्षारघृतम् ...	११
बचाद्यं चूर्णम् ...	११	कह्लाराद्यं घृतम् ...	११
फलवर्तिः ...	११	अथ रसाः ...	११
अथाष्टनवतिमस्तरङ्गः । ९८		विद्याधररसः ...	११
अथ गुल्मनिदानम् ...	११	वङ्गेश्वरः ...	६४१
अथ गुल्मचिकित्सा ...	६३४	गुल्मारिः ...	११
मातुलुङ्गाद्यवलेहः ...	११	अथैकोनशततमस्तरङ्गः । ९९	
नागराद्यवलेहः ...	११	अथ हृद्रोगनिदानम् ...	११
हिङ्गुपञ्चकचूर्णम् ...	११	वातहृद्रोगे पिप्पल्यादिचूर्णम्	६४२
केतकीक्षारयोगः ...	११	पुष्करमूलाद्यं चूर्णम् ...	११
चित्रकाद्यं घृतम् ...	११	पित्तहृद्रोगे द्राक्षाद्यं चूर्णम्	६४३
पित्तगुल्मचिकित्सा ...	६३५	कफहृद्रोगे त्रिवृताद्यौ चूर्ण-	
कफगुल्मचिकित्सा ...	११	काथौ ...	११
क्षीरषट्पलकं घृतम् ...	११	त्रिदोषहृद्रोगचिकित्सा ...	११
मिश्रकस्त्रेहः ...	६३६	कृमिजहृद्रोगचिकित्सा ...	६४४
संसृष्टगुल्मचिकित्सा ...	११	अथ सामान्यहृदामयप्रतीकारः	११
हिङ्गवादिचूर्णगुटिका ...	११	हिङ्गवाद्यं चूर्णम् ...	११
त्रिदोषगुल्मचिकित्सा ...	६३७	पुष्कराद्यं चूर्णम् ...	११
		ककुमाद्यं चूर्णम् ...	११
		दशमूलीकाथः ...	११

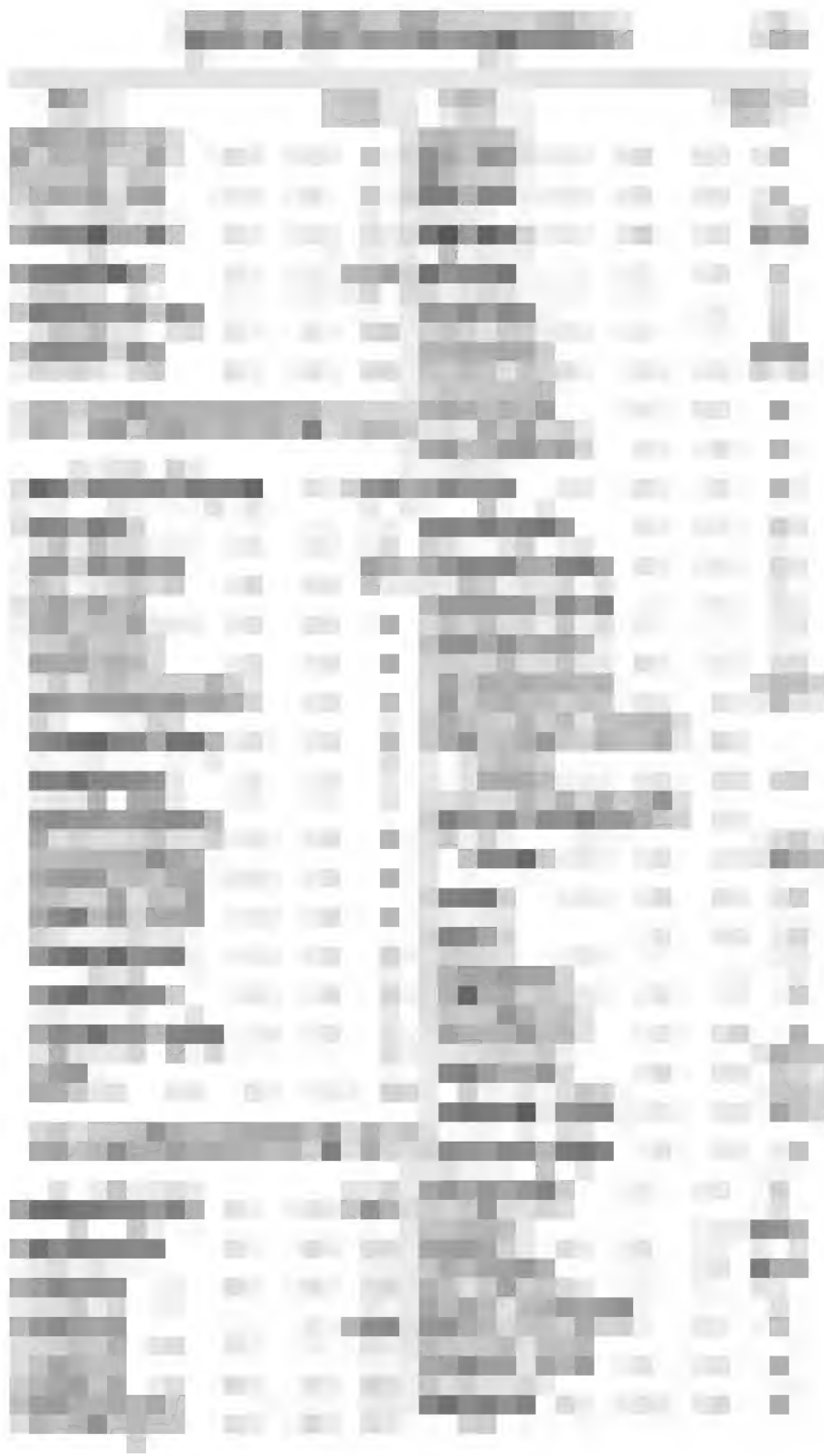
Date		Description	
1890	Jan 1	Balance	100.00
	Jan 15	Received from A. B.	50.00
	Feb 1	Received from C. D.	25.00
	Feb 15	Received from E. F.	75.00
	Mar 1	Received from G. H.	100.00
	Mar 15	Received from I. J.	150.00
	Apr 1	Received from K. L.	200.00
	Apr 15	Received from M. N.	250.00
	May 1	Received from O. P.	300.00
	May 15	Received from Q. R.	350.00
	Jun 1	Received from S. T.	400.00
	Jun 15	Received from U. V.	450.00
	Jul 1	Received from W. X.	500.00
	Jul 15	Received from Y. Z.	550.00
	Aug 1	Received from A. B.	600.00
	Aug 15	Received from C. D.	650.00
	Sep 1	Received from E. F.	700.00
	Sep 15	Received from G. H.	750.00
	Oct 1	Received from I. J.	800.00
	Oct 15	Received from K. L.	850.00
	Nov 1	Received from M. N.	900.00
	Nov 15	Received from O. P.	950.00
	Dec 1	Received from Q. R.	1000.00
	Dec 15	Received from S. T.	1050.00
	Total		10000.00

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
षष्ठमघृतम्	॥	पित्तमारुतजः	॥
त्रिनेत्रो रसः	६४५	पित्तकफजः... ..	६५२
अथ शततमस्तरङ्गः । १००		उदरान्तर्गतपार्श्वगमनम्	॥
अथ मूत्रकृच्छ्रनिदानम्	॥	उपचितपित्तः	॥
वातजमूत्रकृच्छ्रचिकित्सा... ..	६४६	कफेन कुण्डलीभूतोऽसाध्यः ६५३	
पित्तजमूत्रकृच्छ्रचिकित्सा... ..	॥	अथ मूत्राघातचिकित्सा	॥
तृणपञ्चमूलकाथपयसी	॥	नलादिकाथः	॥
शतावर्यादिकाथः	६४७	वीरतर्वादिकाथः	॥
हरीतक्यादिकाथः	॥	दशमूलीकाथः	॥
शतावरीसर्पिःपयसी	॥	गोक्षुरकाथः... ..	६५४
श्लेष्मकृच्छ्रचिकित्सा	॥	शुद्धशिलाजतुयोगः	॥
त्रिदोषकृच्छ्रचिकित्सा	॥	चित्रकाद्यं घृतम्	॥
बृहत्यादिकाथः	॥	धान्यगोक्षुराद्यं घृतम्	॥
अभिघातमूत्रकृच्छ्रचिकित्सा ६४८		स्वगुताद्यं चूर्णम्	६५५
शुक्रविबन्धजकृच्छ्रचिकित्सा	॥	क्षौद्रार्धभागं घृतम्... ..	॥
शक्रद्विघातजकृच्छ्रचिकित्सा	॥	अथ द्वाधिकशततमस्तरङ्गः । १०२	
गोक्षुरादिकाथः	॥	अथाश्मरीनिदानम्	६५६
अश्मरीजकृच्छ्रचिकित्सा	॥	तद्भेदाः	॥
एलादिकाथः	॥	पूर्वरूपम्	॥
अथ सामान्यमूत्रकृच्छ्रविधिः ६४९		अथ चिकित्सा	६५७
एलाद्यबलेहः	॥	शुण्ठ्यादिकाथः	॥
गोक्षुराद्यो गुग्गुलुः... ..	॥	वरुणकाथः... ..	॥
त्रिकण्टकादिकाथः	॥	वीरतर्वादिः... ..	॥
लोहमस्मयोगः	॥	पित्ताश्मया पाषाणभेदकाथः ६५८	
त्रिकण्टकाद्यं घृतम्	६५०	श्लेष्माश्मया शिम्बादिः	॥
महाचन्द्रकलानामरसः	॥	शुक्राश्मया कूष्माण्डरसः... ..	६५९
अथैकाधिकशततमस्तरङ्गः । १०१		तिलादिकाथः	॥
अथ मूत्राघातनिदानम्	६५१	पाषाणभेदादिकाथः	॥
वातजः	॥	हरिद्रायोगः... ..	॥
		कुटजयोगः	॥



विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
चापुसर्षीजनालिकेरकुसुम-		अथ प्रमेहचिकित्सा ...	६६७
योगः	६६	यवप्रशस्तिः	॥
वरुणक्वाथकुटजकल्कौ ...	॥	मेहेषु हितम्	॥
वरुणाद्यं घृतम्	॥	निषेधः	॥
अश्मरीकण्डनो रसः	॥	कफप्रमेह उपचारः	॥
त्रिविक्रमो रसः	६६१	पित्तप्रमेहे	६६८
पथ्यम्	॥	वातप्रमेहेषु	॥
अथ उच्यधिकशततमस्तरङ्गः । १०३		द्वन्द्वजप्रमेहेषु	॥
अथ प्रमेहनिदानम्	६६२	दुष्टरक्तजप्रमेहे	॥
कफजप्रमेहोपद्रवाः	६६३	सामान्यप्रमेहचिकित्सा	॥
पित्तजप्रमेहोपद्रवाः	॥	शिवादिकाथः	॥
असाध्यत्वम्	॥	त्रिफलाद्यं चूर्णम्	६६९
कटसाध्यत्वम्	६६४	कतकयोगः	॥
मधुमेहः	॥	त्रिफलादिकाथः	॥
मेहशुद्धिः	॥	न्यग्रोधाद्यं चूर्णम्	॥
प्रमेहजपिटकानामानि	॥	आमलकाद्यवलेहिका	६७०
शराविका	॥	गोक्षुरादिगुटी	॥
कच्छापिका	६६५	दाडिमाद्यं घृतम्	॥
जालिनी	॥	सिंहामृतं घृतम्	६७१
विनता	॥	धन्वन्तरिसर्पिः	॥
अलजी	॥	गुडूचीयोगः	६७२
मसूरिका	॥	शाल्मलीयोगः	॥
सर्पपिका	॥	त्रिफलादियोगः	॥
पुत्रिणी	॥	गन्धकयोगः	॥
विदारिका	॥	गुडूचीयोगः	॥
विद्रधिका	॥	चन्द्रप्रभा वटी	॥
जन्मजाः पिटकाः	६६६	पूगपांसुः	६७३
पिटकाया असाध्यत्वम्	॥	बृहत्पूगपाकः	॥
स्त्रियो न प्रमेहन्ति	॥	नागभस्मयोगः	६७४
पिटकानामुपद्रवाः	॥	वज्रभस्मयोगः	॥
		अभ्रकयोगः	॥

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
हरिशंकरो रसः	११	दूष्योदरम्	११
भेघनादो रसः	११	प्रीहोदरम्	११
बोलबद्धो रसः	११	बद्धोदरम्	६८२
लघुवक्त्रेश्वरः	६७५	क्षतोदरम्	११
प्रमेहकुठारो रसः	११	उदकोदरम्	११
सर्वेश्वरो रसः	११	यत्नसाध्यम्	६८३
अथ चतुरधिकशततमस्तरङ्गः । १०४		असाध्यत्वम्	११
अथ मेदोरोगनिदानम्	६७६	अथ चिकित्सा	११
मेदोपक्रमः	११	उपचारः	११
अथ चिकित्सा	६७७	कुष्ठादिचूर्णम्	११
मेदोवर्धनम्	११	सामुद्राद्यं चूर्णम्	११
तस्योपचारः	११	दशमूलाद्यं घृतम्	११
व्योषादिसक्तुप्रयोगः	११	पित्तोदरोपचारः	११
त्रिफलाद्यं तैलम्	११	श्लेष्मोदरोपचारः	६८५
नवकगुग्गुलुः	११	त्रिदोषजोदरे नागराद्यं	
हरीतक्यादियोगः	११	यमकम्	११
महासुगन्धतैलम्	११	दूष्योदरत्रिलिङ्गोदरचि-	
बिल्वाद्यौ योगौ	११	कित्सा	६८६
तिलाद्युद्वर्तनम्	११	पथ्यम्	११
रसभस्मयोगः	११	निषेधः	११
ज्यूषणाद्यं चूर्णम्	११	कङ्कुठचूर्णम्	११
मूर्तिः	११	चव्यादिकाथः	११
अथ पञ्चाधिकशततमस्तरङ्गः । १०५		बबूलपाकः	६८७
अथोदरनिदानम्	६८०	पटोलाद्यं चूर्णम्	६८८
अष्टधोदराणि	११	नारायणं चूर्णम्	११
वातोदरम्	११	तस्यानुपानम्	११
पित्तोदरम्	६८१	महाक्षारः	६८९
कफोदरम्	११	नाराचघृतम्	६९०
त्रिलिङ्गजठरम्	११	द्वितीयं नाराचघृतम्	
		त्रिवृताद्यं घृतम्	११
		विन्दुघृतम्	११



विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
शालिपर्णीतैलम् ...	६९१	वङ्गेश्वरो रसः ...	११
प्रीहचिकित्सा	११	उदरारिः ...	६९९
वातजः ...	११	जलोदरारिः... ..	११
रक्तजः ...	६९२	चण्डमास्करो रसः....	११
त्रिदोषजः ...	११	इच्छामेदी रसः ...	११
तस्योपचाराः ...	११	नाराचो रसः ...	७००
सिन्ध्वादिचूर्णम् ...	११	जलोदरारिरसः ...	११
द्रवन्तीनागवटी ...	११	अथ षडधिकशततमस्तरङ्गः । १०६	
शिगुक्राथः ...	६९३	अथ शोथनिदानम्....	११
कुष्ठादिचूर्णम् ...	११	तस्य हेतुः ...	७०१
अर्कपत्रक्षारः ...	११	सामान्यलिङ्गम् ...	११
लघुहिङ्गवादिचूर्णम् ...	११	वातजः	११
शङ्खनाभिचूर्णम् ...	११	पित्तजः ...	११
शरपुङ्खामूलचूर्णम् ...	११	कफजः ...	११
शाल्मलीपुष्पक्राथः ...	६९४	द्वन्द्वजः ...	११
यवान्यादिचूर्णम्	११	संनिपातजः....	११
विडङ्गादिचूर्णम्	११	अभिघातादिजः ...	११
विडङ्गादिक्षारः	११	विषजशोथः ...	७०२
मल्लतकमोदकः ...	११	सर्वदेहगशोथः ...	११
अमयामोदकाः ...	६९५	कष्टसाध्यत्वम् ...	११
वज्रक्षारः ...	११	असाध्यत्वम् ...	११
अग्निमुखं लवणम् ...	११	आमान्वितशोफः ...	११
चित्रकायं घृतम् ...	६९६	शोथचिकित्सा ...	७०३
महारोहीतकं घृतम् ...	११	वातजशोथचिकित्सा ...	११
यकृद्वालयुदरे पिप्पलीघृतम् ...	११	पित्तजशोथचिकित्सा ...	११
बद्धगुदप्रतीकारः ...	६९७	कफजशोथचिकित्सा	११
क्षतोदरवृकोदरप्रतीकारः ...	११	पथ्यादिक्राथः ...	७०४
हरीतक्यादिक्राथः ...	६९८	गुडाद्यं चूर्णम् ...	११
बृहत्पुनर्नवादिः ...	११	पुनर्नवाद्यं चूर्णम् ...	७०५
लघुपुनर्नवादिक्राथः ...	११		
अथ रसाः	११		

Date		Description		Amount	
1890	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	
1891	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	
1892	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	
1893	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
गोमूत्रमण्डूरः	७०६	गण्डमालायामुपचाराः	११
पुनर्नवाद्यं घृतम्	११	ग्रन्थिचिकित्सा	७१७
शुष्कमूलकाद्यं तैलम्	११	शस्त्रकर्म	११
पञ्चमूलाद्यं तैलम्	११	अर्बुदचिकित्सा	७१८
कंसहरीतकी	७०७	शास्त्रोटकविल्वतैलम्	७१९
दशमूलहरीतकी	११	काञ्चनारगुग्गुलुः	११
श्वयथुघाती रसः	११	निर्गुण्डीतैलम्	७२०
निषेधः	७०८	दुच्छन्दरीतैलम्	११
अथ सप्ताधिकशततमस्तरङ्गः । १०७		गुञ्जातैलम्	११
अथान्धवृद्धिकुरण्डबध्नरोग-		चन्दनादितैलम्	११
निदानम्	११	व्योषाद्यं तैलम्	११
अथ चिकित्सा	७०९	चक्रमर्दतैलम्	११
षडूषणगुग्गुलुः	११	निषेधः	७२१
रास्नादिकाथः	७१०	गण्डमालाकण्डनो रसः	११
मांस्यादिघृतम्	७११	अथ नवाधिकशततमस्तरङ्गः । १०९	
बिल्वाद्यं चूर्णम्	११	अथ श्लीपदनिदानम्	११
अथाष्टाधिकशततमस्तरङ्गः । १०८		वातजम्	११
अथ गलगण्डनिदानम्	७१२	पित्तजम्	११
पित्तजः	११	श्लेष्मजम्	७२२
कफजः	११	असाध्यत्वम्	११
क्षयवृद्धियुक्तलक्षणम्	११	देशदोषजम्	११
गण्डमालापचीनिदानम्	७१३	निषेधः	११
ग्रन्थिनिदानम्	११	अथ श्लीपदचिकित्सा	११
अर्बुदापचीनिदानम्	११	गोमूत्रहरीतकी	७२३
अथ चिकित्सा	७१४	वृद्धदारुकं चूर्णम्	११
पथ्यम्	११	पिप्पल्याद्यं चूर्णम्	७२४
उपचारः	११	कृष्णाद्यो मोदकः	११
अमृताद्यं तैलम्	७१६	सौरेश्वरं घृतम्	११
तुम्बीतैलम्	११	विडङ्गाद्यं तैलम्	११

Date		Time		Location		Remarks	
1911	10/1	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/2	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/3	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/4	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/5	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/6	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/7	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/8	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/9	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/10	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/11	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/12	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/13	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/14	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/15	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/16	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/17	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/18	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/19	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/20	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/21	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/22	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/23	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/24	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/25	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/26	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/27	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/28	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/29	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/30	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/31	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
अथ दशाधिकशततमस्तरङ्गः । ११०		पक्वशोफलक्षणम् ...	७३१
अथ विद्रधिनिदानम् ... ७२५		रक्तपाकः ...	७३१
वातजः ...	७२५	वातव्रणः ...	७३१
पित्तजः ...	७२५	पित्तव्रणः ...	७३१
कफजः ...	७२५	कफव्रणः ...	७३१
संनिपातजः ...	७२५	रक्तव्रणः ...	७३२
आगन्तुविद्रधिः ...	७२५	दुष्टव्रणलिङ्गम् ...	७३२
रक्तजः ...	७२६	शुद्धव्रणलक्षणम् ...	७३२
अधिष्ठानविशेषेण विद्रधि-		बद्धव्रणः ...	७३२
लिङ्गम् ...	७२६	व्रणरोहणम् ...	७३२
साध्यासाध्यत्वम् ...	७२६	सम्यग्बद्धव्रणः ...	७३२
स्तनविद्रधिनिदानम् ... ७२७		व्रणाशयः ...	७३३
विद्रधिचिकित्सा ...	७२७	साध्यासाध्यत्वम् ...	७३३
तस्य क्रिया ...	७२७	अथ चिकित्सा ...	७३४
अपक्वविद्रधिचिकित्सा ...	७२८	विम्लापनम् ...	७३४
वातजविद्रधिवुपचारः ...	७२८	अवसेचनम् ...	७३४
पित्तजविद्रधिवुपचारः ...	७२८	वातजशोथे लेपः ...	७३५
परिधेकः ...	७२९	पित्तजशोथे लेपः ...	७३५
प्रियङ्गुवाद्यं तैलम् ...	७२९	शोथनिर्वापणलेपः ...	७३५
वरुणक्वाथः ...	७२९	श्लेष्मजशोथे लेपः ...	७३५
हरीतक्यादिचूर्णम् ...	७२९	कफवातकृतशोथे कोष्णलेपः ...	७३५
वरुणादिघृतम् ...	७२९	बृहन्यग्रोधादिलेपः ...	७३५
कज्जलीयोगः ...	७२९	उपनाहः ...	७३६
अथैकादशाधिकशततम-		क्वचिच्छन्ननिक्षेपापवादः ...	७३६
स्तरङ्गः । १११		पाचनभेदनम् ...	७३६
अथ व्रणशोथनिदानम् ... ७३०		रोपणम् ...	७३७
रक्तागन्तुव्रणः ...	७३०	वर्तिः ...	७३७
आमव्रणः ...	७३०	दुष्टव्रणलेपः ...	७३७
पच्यमानव्रणः ...	७३०	अग्निदग्धप्रतीकारः ...	७३८
		यवादिधूपः ...	७३८
		त्रिफलागुग्गुलुः ...	७३८

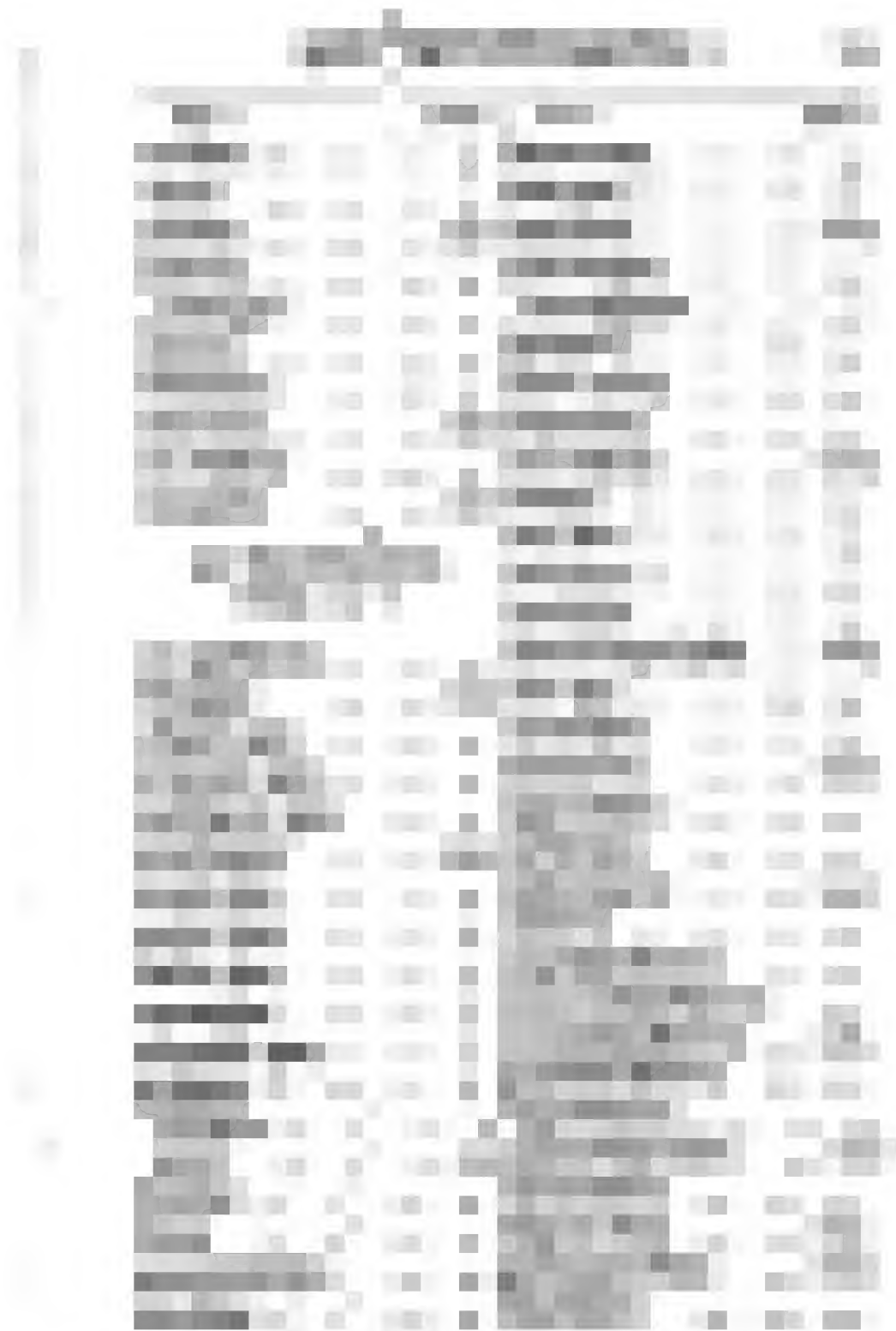
विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
गुग्गुलुवटकः	७३९	जात्यादितैलम्	७४५
विडङ्गादिगुग्गुलुः	७३९	विपरीतमल्लतैलम्	७४५
अमृताद्यो गुग्गुलुः	७४०	दूर्वादितैलम्	७४६
जात्यादिघृतं तैलं वा	७४०	सप्तविंशतिको गुग्गुलुः	७४६
स्वर्जिकाद्यं घृतम्	७४०	अथ त्रयोदशाधिकशततम- स्तरङ्गः । ११३	
पारदादिमलहरः	७४०	अथाग्निदग्धव्रणनिदानम्	७४७
मनःशिलादिलेपः	७४०	सिक्थकादिघृतम्	७४७
अथ द्वादशाधिकशततम- स्तरङ्गः । ११२		लाङ्गलीकं घृतम्	७४८
अथ सद्योव्रणनिदानम्	७४१	चन्दनाद्यं यमकम्	७४८
छिन्नलक्षणम्	७४१	अथ चतुर्दशाधिकशततम- स्तरङ्गः । ११४	
भिन्नलक्षणम्	७४१	अथ मग्ननिदानम्	७४९
तस्य कोष्ठः	७४१	मग्नचिकित्सा	७५०
विन्द्वलक्षणम्	७४२	लाक्षागुग्गुलुः	७५१
क्षतलक्षणम्	७४२	आमाद्यो गुग्गुलुः	७५१
पिञ्चितम्	७४२	गोधूमयोगः	७५१
घृष्टलक्षणम्	७४२	बोलयोगः	७५१
सशल्यः सरुजो व्रणः	७४२	निषेधः	७५१
शल्योपद्रवः	७४२	अथ पञ्चदशाधिकशततम- स्तरङ्गः । ११५	
असाध्यत्वम्	७४२	अथ नाडीव्रणनिदानम्	७५२
वातकृता रुजः	७४२	नाडीव्रणचिकित्सा	७५२
सामान्यमर्मलिङ्गम्	७४२	सप्ताङ्गो गुग्गुलुः	७५३
स्नायुविन्द्वत्वम्	७४३	अथ षोडशाधिकशततम- स्तरङ्गः । ११६	
अस्थिविन्द्वत्वम्	७४३	अथ मगंदरनिदानम्	७५३
उपद्रवाः	७४३		
अथ सद्योव्रणचिकित्सा	७४४		
वंशत्वगादिकाथः	७४४		
गौरादिघृतम्	७४४		
तिक्तादिघृतम्	७४४		

Date		Time		Location		Remarks	
1911	10/1	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/2	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/3	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/4	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/5	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/6	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/7	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/8	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/9	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/10	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/11	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/12	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/13	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/14	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/15	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/16	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/17	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/18	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/19	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/20	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/21	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/22	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/23	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/24	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/25	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/26	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/27	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/28	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/29	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/30	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/31	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
पञ्चविधत्वम्	५५४	स्त्रीपुंसयोर्द्वारुणोपदंशः	५५४
पूर्वरूपम्	५५४	अथोपदंशचिकित्सा	५५४
शतपोनको दोषः	५५४	उषचारः	५६०
उद्ग्रशिरोधरो दोषः	५५४	वातजोपचारः	५५४
परिस्रावी	५५४	पित्तजोपचारः	५५४
शम्बूकावर्तकः	५५५	पित्तास्रजोपचारः	५५५
उन्मार्गी	५५५	कफजोपचारः	५५५
असाध्यत्वम्	५५५	प्रक्षालने योगः	५५५
अथ चिकित्सा	५५५	मूनिम्बादिघृतम्	५६१
लेपः	५५५	करञ्जाद्यं घृतम्	५५५
भिन्नक्रिया	५५५	आगारधूमाद्यं तैलम्	५५५
तिलादिलेपः	५५६	पारदाद्यं सर्पिः	५५५
निशादितैलम्	५५६	उपदंशगजकेसरी रसः	५५५
सिक्थकघृतम्	५५६	उपदंशमजकेसरी	५६२
बिडालास्थिलेपः	५५६	उपदंशान्धसूर्यः	५५५
नवकार्षिको गुग्गुलुः	५५७	अथाष्टादशाधिकशततम- स्तरङ्गः । ११८	
जम्बूकप्रकारः	५५७	अथ रतिदोषनिदानम्	५५७
विष्यन्दनं तैलम्	५५७	अथ चिकित्सा	५६३
करवीराद्यं तैलम्	५५७	रसकर्पूरः	५५७
रूपराजरसः	५५७	तालकमंसम्	५६४
त्रिनेत्रो रसः	५५८	अन्यो रसकर्पूरः	५५७
अथ सप्तदशाधिकशततम- स्तरङ्गः । ११७		गन्धकरसायनम्	५५७
अथोपदंशनिदानम्	५५७	अन्यद्वन्द्वकरसायनम्	५६५
पञ्च प्रकाराः	५५७	सिन्दूररसः	५६६
वातजः	५५९	वीरविक्रमो रसः	५६७
पित्तजः	५५९	अथैकोनविंशत्यधिकशततम- स्तरङ्गः । ११९	
कफजः	५५९	अथ शुक्रदोषनिदानम्	५५९
असाध्यत्वम्	५५९		
लिङ्गाशोऽरोगः	५५९		

Date		Time		Location		Remarks	
1911	10/1	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/2	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/3	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/4	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/5	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/6	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/7	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/8	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/9	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/10	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/11	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/12	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/13	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/14	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/15	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/16	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/17	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/18	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/19	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/20	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/21	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/22	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/23	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/24	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/25	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/26	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/27	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/28	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/29	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/30	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/31	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
सार्पणिका	११	मेदस्थानगतम्	११
अलजी	११	मज्जाघृतम्	११
पुष्करिका ...	७६८	असाध्यत्वम् ...	७७४
शतपोनकः ...	११	दोषाश्रितकुष्ठम् ...	११
शोणितार्बुदः	११	सप्तधामहाकुष्ठम् ...	११
मांसपाकः ...	११	कुष्ठभेदवर्णः...	११
तिलकालकाः ...	११	तन्मध्ये वर्जनम् ...	११
असाध्यत्वम् ...	७६९	विशेषवर्जनम् ...	११
अथ चिकित्सा ...	११	अथ चिकित्सा ...	७७५
रसाञ्जनलेपः ...	७७०	रक्तस्रावः ...	११
अथ विंशत्यधिकशततम- स्तरङ्गः । १२०		तस्य क्रिया ...	११
अथ कुष्ठनिदानम् ...	११	तस्योपचारः....	११
विषमकुष्ठम् ...	७७१	पथ्यादिलेपः ...	११
औदुम्बरं कुष्ठम् ...	११	सोमराजीबाकुचीचूर्णम् ...	७७६
मण्डलाख्यं कुष्ठम्	११	तस्य प्रदेहः ...	११
ऋक्षजिह्वाख्यं कुष्ठम्	११	धात्र्यादिलेपः ...	११
पुण्डरीककुष्ठम् ...	७७२	केसरषष्ठयोगः ...	७७७
काकणं कुष्ठम्	११	प्रपुन्नाटादिलेपः ...	११
चर्माख्यं कुष्ठम् ...	११	खादिरोदकम् ...	११
किटिभं कुष्ठम् ...	११	खदिराष्टकक्राथः ...	७७८
अलसककुष्ठम्	११	नवकषायः ...	११
चर्मदलाख्यं कुष्ठम् ...	११	लघुमाञ्जिष्ठादिकषायः ...	११
कच्छुकुष्ठम् ...	११	सामान्यमाञ्जिष्ठादिकषायः ...	११
स्फोटकुष्ठम् ...	११	मध्यममाञ्जिष्ठादिकषायः ...	७७९
शतारुः ...	७७३	वृद्धमाञ्जिष्ठादिकषायः ...	११
विचर्चिका ...	११	गुडूच्यादिकषायः ...	११
श्वित्रम्	११	शुण्ठ्यादिमहाकषायः ...	७८०
कुष्ठकण्डूभेदविशेषः	११	धतूरकादितैलम्	११
मांसाश्रितम् ...	११	सिन्दूराद्यं तैलम् ...	७८१
		बृहत्सिन्दूराद्यं तैलम्	७८२
		निशादिप्रलेपः ...	११



विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
जीरकतैलम्	७८३	शशिलेखावटी	७९६
अर्कतैलम्	७८४	श्वेतारिः	७९७
त्रिफलागुटिका	७८५	कुष्ठाद्युपदंशादौ तालादिले-	
शशाङ्कलेखादिलेहः	७८६	पनम्	७९८
त्रिफलामोदकः	७८७	तालकभस्म....	७९९
पञ्चनिम्बचूर्णम्	७८८	तालकभूतिक्रिया	८००
सर्वाङ्गसुन्दरीगुटिकाः	७८९	अथैकविंशत्यधिकशततम-	
एकविंशतिको गुग्गुलुः	७९०	स्तरङ्गः । १२१	
तिक्तपदपलकं घृतम्	७९१	अथोददर्शितपित्तकोठनि-	
पञ्चतिक्तकं घृतम्	७९२	दानम्	७९३
तिक्तकं घृतम्	७९३	अथ चिकित्सा	७९४
महातिक्तकं घृतम्	७९४	सिद्धार्थककाथः	७९५
महाखादिरं घृतम्	७९५	आर्द्रकखण्डम्	७९६
गुग्गुलुपञ्चतिक्तकं घृतम्	७९६	ताम्रयोगः	७९७
वज्रतैलम्	७९७	अथ द्वाविंशत्यधिकशततम-	
तृणतैलम्	७९८	स्तरङ्गः । १२२	
अन्यद्वज्रतैलम्	७९९	अथाम्लपित्तनिदानम्	७९९
लघुमरिचाद्यं तैलम्	८००	पित्तजम्	८००
बृहन्मरिचाद्यं तैलम्	८०१	वातजम्	८०१
सर्पपादिचूर्णम्	८०२	कफजम्	८०२
विषतैलम्	८०३	वातकफजम्....	८०३
अथ प्राक्रिया	८०४	कफपित्तजम्	८०४
महातालकेश्वरो रसः	८०५	अथ चिकित्सा	८०५
मल्लतकावलेहः	८०६	पथ्यम्	८०६
कुष्ठकुठारः	८०७	चित्रकादिकाथः	८०७
अथाष्टादशविधकुष्ठचिकित्सा	८०८	द्राक्षादिगुटी	८०८
श्वित्रचिकित्सा	८०९	अविपत्तिकरं चूर्णम्	८०९
स्वल्पनीलीघृतम्	८१०	एलादिचूर्णम्	८१०
महानीलीघृतम्	८११	अमयाद्यवलेहः	८११
ज्योतिष्मतीतैलम्	८१२		
श्वित्रेमसिंहो रसः	८१३		

Date		Description		Amount	
1900	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	
1901	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	
1902	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	
1903	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
यवादिकाथः	... ८०२	अथ चिकित्सा	... १
गुडूच्यादिः	... १	राम्नादिलेपः	... ८१०
दशाङ्गकाथः	... १	पटोलादिकाथः	... १
पटोलादिकषायः	... १	त्रायमाणादिकाथः	... १
त्रिकटुकाद्यं चूर्णं लेहश्च	... १	दशाङ्गलेपः	... ८११
पिप्पलीघृतम्	... १	मांस्यादिलेपः	... १
शतावरीतिलम्	... ८०३	द्वितीयस्त्रायमाणादिकाथः	१
द्राक्षाद्यं घृतम्	... १	गुडूच्यादिकाथः	... १
नारिकेलखण्डपाकः	... १	वृषाद्यं घृतम्	... ८१२
खण्डपिप्पल्यवलेहः	... ८०४	गौराद्यं सर्पिः	... १
रसामृतम्	... १	करञ्जाद्यं तैलम्	... १
लीलाविलासो रसः	... १	अथ चतुर्विंशत्यधिकशत- तमस्तरङ्गः । १२४	
धात्रीलोहम्	... ८०५	अथ स्नायुकनिदानम्	... १
चृषपुष्पादिचूर्णम्	... १	अथ चिकित्सा	... ८१३
गुड्याद्यो मोदकः	... १	अतिविषाद्यं चूर्णम्	... १
खण्डकूष्माण्डकावलेहः	... १	शिगुमूलादिलेपः	... ८१४
नारिकेलखण्डपाकः	... ८०६	अथ पञ्चविंशत्यधिकशत- तमस्तरङ्गः । १२५	
बृहन्नारिकेलपाकः	... १		
अथ त्रयोविंशत्यधिकशत- तमस्तरङ्गः । १२३			
अथ विसर्पनिदानम्	... ८०७	अथ विस्फोटनिदानम्	... १
वातजः	... १	अष्टधात्वम्	... १
पित्तजः	... ८०८	वातजः	... १
कफजः	... १	पित्तजः	... १
संनिपातजः	... १	कफजः	... ८१५
वातपित्तविसर्पः	... १	कफपित्तजः	... १
ग्रन्थ्याख्यः	... १	वातपित्तजः	... १
कर्दमाख्याः	... ८०९	कफवातजः	... १
तस्योपद्रवाः	... १	त्रिदोषजः	... १
साध्यासाध्यत्वम्	... १	पित्तहेतुजः	... १

Table 1. Summary of the data sources and the variables used in the study

Data source		Variables	
National Longitudinal Survey of Children and Youth (NLSCY)	Child's sex	Male	Female
	Child's age	0-1	2-5
	Family structure	Single-parent	Two-parent
	Family income	Low	High
	Parental education	Low	High
	Parental employment	Unemployed	Employed
	Parental mental health	Good	Poor
	Parental substance use	None	Some
	Parental delinquency	None	Some
	Parental criminal record	None	Some
National Longitudinal Survey of the Youth (NLSY)	Child's sex	Male	Female
	Child's age	0-1	2-5
	Family structure	Single-parent	Two-parent
	Family income	Low	High
	Parental education	Low	High
	Parental employment	Unemployed	Employed
	Parental mental health	Good	Poor
	Parental substance use	None	Some
	Parental delinquency	None	Some
	Parental criminal record	None	Some
National Longitudinal Survey of the Adolescent Health (Add Health)	Child's sex	Male	Female
	Child's age	0-1	2-5
	Family structure	Single-parent	Two-parent
	Family income	Low	High
	Parental education	Low	High
	Parental employment	Unemployed	Employed
	Parental mental health	Good	Poor
	Parental substance use	None	Some
	Parental delinquency	None	Some
	Parental criminal record	None	Some

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
असाध्यत्वम्	११	कोदवाकारः....	८२०
तस्योपद्रवाः ...	११	अथ चिकित्सा ...	११
अथ चिकित्सा ...	८१६	वेणुत्वगादिधूपः ...	११
द्विपञ्चमूलादिकाथः ...	११	वानर्यादिकाथः	८२१
द्राक्षादिकाथः ...	११	बृहत्पटोलादिकाथः ...	११
भूनिम्बादिकाथः ...	११	निम्बादिकाथः	११
द्वादशाङ्गः	११	द्राक्षादिकाथः ...	८२२
अमृतादिकाथः ...	८१७	पञ्चमूलादिकाथः	११
दशाङ्गलेपः ...	११	दुरालभादिकाथः ...	११
कम्पिह्लाद्यं तैलम् ...	११	गुडूच्यादिः ...	८२३
पञ्चतिक्तकं घृतम् ...	११	नागरादिः	११
अथ षड्विंशत्यधिकशतत- मस्तरङ्गः । १५६		निम्बादिकाथः ...	११
अथ मसूरिकानिदानम्	११	काञ्चनारादिः ...	११
वातमसूरिका ...	८१८	पटोलादिः ...	११
पित्तजा ...	११	खदिराष्टकम्	११
रक्तपित्तजा ...	११	पटोलादिकाथः ...	८२४
कफजा ...	११	शिरीषादिचूर्णम्	११
त्रिदोषजा ...	११	निम्बादिधावनम् ...	११
चर्मसंज्ञिता ...	११	अथाञ्जनम् ...	११
कफपित्तजा ...	११	मसूरीधूपनम्	११
त्वग्गता ...	८१९	शीतलाष्टकम् ...	८२६
रसगता	११	अथ सप्तविंशत्यधिकशततम- स्तरङ्गः । १२७	
रक्तगता	११	अथ क्षुद्ररोगनिदानम् ...	८२७
मांसगता ...	११	अजगल्लिका... ..	११
मेदोगता ...	११	यवप्रख्या ...	११
मज्जागता ...	११	अन्धालजी ...	११
शुक्रगता ...	११	विवृता ...	११
सदोषा ...	११	कच्छपिका ...	११
साध्यासाध्यत्वम् ...	११	वल्मीकम् ...	८२८

Date		Time		Location		Remarks	
1911	10/1	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/2	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/3	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/4	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/5	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/6	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/7	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/8	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/9	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/10	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/11	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/12	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/13	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/14	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/15	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/16	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/17	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/18	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/19	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/20	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/21	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/22	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/23	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/24	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/25	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/26	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/27	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/28	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/29	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/30	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/31	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
इन्द्रवृद्धा	११	विवर्तिका	११
गर्दभिका	११	अवपाटिका	८३२
पाषाणगर्दभः	११	निरुद्धप्रकशः	११
पनसिका	११	संनिरुद्धगदः	११
जालगर्दभः	११	अहिपूतनः	११
इरिषेल्लिका	११	वृषणकच्छूः	११
कक्षा	११	गुदभ्रंशः	८३३
गन्धनामा	८२९	सूकरदंष्ट्रकः	११
अग्निरोहिणी	११	अथ क्षुद्ररोगचिकित्सा	११
चिप्पः	११	उपोदकाद्यं तैलम्	८३४
कुनखः	११	चाङ्गेरीघृतम्	११
अनुशयी	११	हरिद्रालेपस्तैलं च	८३५
विदारिका	११	कनकतैलम्	८३६
शर्कराबुद्दः	११	मञ्जिष्ठाद्यं तैलम्	८३७
पाददारी	८३०	कुङ्कुमाद्यं तैलम्	११
कदरम्	११	अपरं कुङ्कुमाद्यं तैलम्	११
अलसः	११	हरिद्राद्यं तैलम्	८३८
इन्द्रलुतम्	११	विषतैलम्	११
दारुणकम्	११	गुञ्जातैलम्	८३९
अरुणिका	११	भृङ्गराजतैलम्	११
पलितम्	११	प्रपौण्डरीकाद्यं तैलम्	११
मुखद्रुषिका	११	चन्दनाद्यं तैलम्	११
पञ्चिनीकण्टकः	११	कृष्णीकरणम्	८४०
जतुमाणिः	८३१	पटोलघृतम्	८४१
मशः	११	अथाष्टाविंशत्यधिकशततम- स्तरङ्गः । १२८	
तिलकालकाः	११		
न्यच्छम्	११	अथ मुखरोगनिदानम्	८४२
व्यङ्गः	११	वातजः	११
नीलिका	११	पित्तजः	११
पाण्डुत्वम्	११	कफजः	११
प्रसुप्तिः	११		

[illegible]

विषयः	पृष्ठाङ्काः ।	विषयः ।	पृष्ठाङ्काः ।
संनिपातजः...	...	कण्ठशुण्डी
रक्तजः	तुण्डिकेरी
अथाष्टौ दन्तमूलजाः ...	८४३	ध्रुवः
शीताद्व्याधिः	कच्छपः
दन्तपुष्पुटकः	अर्बुदः
दन्तवेष्टः	मांससंघातः....	८४७
लालास्रावी...	...	पुष्पुटः
महासौपिरः...	...	तालुपाकः
परिदरः	८४४	अथ कण्ठगताः
अपकुशः	रोहिणी
विदर्भः	कण्ठशालूकः
अथ दन्तवेष्टगताः...	...	अधिजिह्वः	८४८
खलिवर्धनः	बलयः
करालः	बलाससंज्ञकः
अधिमांसकः	एकवृन्दः
अथ दन्तरोगनिदानम्	...	वृन्दम्
दन्तविद्रधिः...	...	शतघ्नी
दालनः ...	८४५	गिलायुः
क्रिमिदन्तकः	गलविद्रधिः
मञ्जनकः	गलाधः ...	८४९
दन्तहर्षः	स्वरघ्नः
दन्तशर्करा	विदारी
कपालिका	अथ सर्वमुखरोगनिदानम्	...
श्यावदन्तकः	असाध्याः
हनुमोक्षः	ओष्ठरोगोपक्रमः ...	८५०
अथ जिह्वाविकाराः ...	८४६	दन्तरोगोपक्रमः
वातजः	कुष्ठादिचूर्णम्	८५१
पित्तजः	जातीपत्रादिचूर्णम्	...
कफजः	कणाद्यं चूर्णम्	...
कफरक्तजः	जीरकादिचूर्णम्	...
अथ तालुगताः	भद्रमुस्तादिर्गुटी	...



विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
दशमूल्यादितैलघृते...	८५२	परिपोटकः ...	११
लोभाद्यं तैलम्	११	उत्पातः ...	११
सहचरकाथः ...	११	उन्मन्थकः ...	११
सहचराद्यं तैलम्	११	दुर्विन्द्वे दोषः ...	११
जिह्वारोगोपक्रमः ...	८५३	परिलेही ...	११
तालुरोगोपक्रमः	११	अथ कर्णरोगचिकित्सा ...	११
गलरोगोपक्रमः ...	८५४	खलुतैलम् ...	८६०
कालकं चूर्णम् ...	८५५	हिङ्गवाद्यं तैलम् ...	११
पीतकं चूर्णम् ...	११	अपामार्गतैलम् ...	११
तेजोवत्यादिगुटिका	११	भूलतातैलम् ...	८६१
सर्वमुखपाकचिकित्सा ...	११	शम्बूकतैलम् ...	११
पञ्चपल्लवकषायः ...	११	चत्वारि तैलानि ...	११
सप्तच्छदादिकाथः ...	८५६	क्षारतैलम् ...	११
पटोलादिकाथः ...	११	मधुसूक्तम्	११
खादिरादिगुटिकाः...	११	दीपिकातैलम् ...	८६२
अथैकोनत्रिंशदधिकशततम- स्तरङ्गः । १२९		समुद्रफेनचूर्णम् ...	११
अथ कर्णरोगनिदानम् ...	८५७	विषयोगः ...	११
कर्णनादः	११	रास्नाद्यो गुग्गुलुः ...	११
बाधिर्यम्	११	पञ्चकषायः	११
कर्णक्ष्वेडः	११	कुष्ठाद्यं तैलम् ...	८६३
कर्णसंस्त्रावः	११	गन्धकतैलम्	११
कर्णगूथकः	११	कर्णकृमौ योगत्रयम् ...	११
कर्णप्रतिनाहः ...	८५८	कृमिकर्णो योगचतुष्टयम् ...	११
क्रिमिकर्णः	११	कृमिकर्णयोगः ...	११
कर्णगतकीटलक्षणम् ...	११	कर्णमलहरणोपायः ...	८६४
क्षताभिघातजो विद्राधिः ...	११	कर्णप्रतीनाहे क्रिया....	११
पूतिकर्णकः	११	निषेधः ...	११
वातादिजन्यस्रावः ...	११	अथ कर्णपालिरोगचि- कित्सा ...	११
अथ कर्णपालिगताः	८५९	शतावरीतैलम् ...	११
		जीवनीयतैलम्	११

Date		Time		Location		Remarks	
1911	10/1	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/2	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/3	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/4	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/5	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/6	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/7	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/8	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/9	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/10	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/11	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/12	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/13	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/14	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/15	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/16	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/17	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/18	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/19	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/20	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/21	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/22	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/23	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/24	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/25	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/26	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/27	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/28	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/29	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/30	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul
1911	10/31	10:00	11:00	St. Paul	St. Paul	St. Paul	St. Paul

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
जीवन्त्याद्यं तैलम्	॥	पीनसादिषूपायः	॥
अथ त्रिंशदधिकशतत- मस्तरङ्गः । १३०		व्याघ्रीतैलम्	८७०
अथ नासारोगोपक्रमः	८६५	शिथुतैलम्	॥
पूतिनासः	॥	प्रतिश्यायप्रतीकारः....	॥
नासिकापाकः	॥	सख्याद्यं चूर्णम्	८७१
पूयरक्तः	॥	चित्रकहरीतकी	॥
क्षवथुः	॥	हिङ्गवादि तैलम्	८७२
क्षवथुभेदः	८६६	अथैकत्रिंशदधिकशततम- स्तरङ्गः । १३१	
भ्रंशथुः	॥	अथ नेत्ररोगनिदानम्	॥
दीप्तः... ..	॥	वातजविकाराः	॥
प्रतीनाहः	॥	पित्तजविकाराः	८७३
स्रावः	॥	कफजविकाराः	॥
नासापरिशोषः	॥	रक्तजविकाराः	॥
आमपीनसलक्षणम्	॥	अधिमन्थदोषः	॥
प्रतिश्यायः	॥	दोषजदृष्टिघातस्य नियमदि- नानि	॥
पूर्वरूपम्	८६७	आमान्दितं नेत्रम्	॥
वातजप्रतिश्यायः	॥	पक्वदोषः	॥
पित्तजप्रतिश्यायः	॥	नेत्रपाकः	॥
कफजप्रतिश्यायः	॥	हताधिमन्थरोगः	८७४
संनिपातजप्रतिश्यायः	॥	वातपर्ययः	॥
कटसाध्यत्वम्	॥	शुष्कनेत्रपाकः	॥
असाध्यत्वम्	८६८	अन्यतोवातः	॥
अथ चिकित्सा	॥	अम्लाध्युषितनेत्रम्	॥
गुडाद्यो योगः	॥	शिरोत्पातनेत्रदोषः....	॥
मरिचादियोगः	॥	कृष्णगता विकाराः	॥
चित्रकादिगुटी	८६९	दृष्टिगता विकाराः	८७५
कदफलादिचूर्णं क्वाथश्च	॥	प्रथमपटलगतदोषजविकाराः	॥
पाठाद्यं तैलम्	॥	द्वितीयपटलगतदोषजविकाराः	॥
सर्जादिकषायो घृतं च	॥		

Date		Description		Amount	
1900	Jan 1	Balance		100.00	
		Jan 5	Jan 5	10.00	
		Jan 10	Jan 10	20.00	
		Jan 15	Jan 15	30.00	
		Jan 20	Jan 20	40.00	
		Jan 25	Jan 25	50.00	
		Jan 30	Jan 30	60.00	
		Jan 31	Jan 31	70.00	
		Feb 1	Feb 1	80.00	
		Feb 5	Feb 5	90.00	
		Feb 10	Feb 10	100.00	
		Feb 15	Feb 15	110.00	
		Feb 20	Feb 20	120.00	
		Feb 25	Feb 25	130.00	
		Feb 30	Feb 30	140.00	
		Feb 31	Feb 31	150.00	
		Mar 1	Mar 1	160.00	
		Mar 5	Mar 5	170.00	
		Mar 10	Mar 10	180.00	
		Mar 15	Mar 15	190.00	
		Mar 20	Mar 20	200.00	
		Mar 25	Mar 25	210.00	
		Mar 30	Mar 30	220.00	
		Mar 31	Mar 31	230.00	
		Apr 1	Apr 1	240.00	
		Apr 5	Apr 5	250.00	
		Apr 10	Apr 10	260.00	
		Apr 15	Apr 15	270.00	
		Apr 20	Apr 20	280.00	
		Apr 25	Apr 25	290.00	
		Apr 30	Apr 30	300.00	
		Apr 31	Apr 31	310.00	
		May 1	May 1	320.00	
		May 5	May 5	330.00	
		May 10	May 10	340.00	
		May 15	May 15	350.00	
		May 20	May 20	360.00	
		May 25	May 25	370.00	
		May 30	May 30	380.00	
		May 31	May 31	390.00	
		Jun 1	Jun 1	400.00	
		Jun 5	Jun 5	410.00	
		Jun 10	Jun 10	420.00	
		Jun 15	Jun 15	430.00	
		Jun 20	Jun 20	440.00	
		Jun 25	Jun 25	450.00	
		Jun 30	Jun 30	460.00	
		Jun 31	Jun 31	470.00	
		Jul 1	Jul 1	480.00	
		Jul 5	Jul 5	490.00	
		Jul 10	Jul 10	500.00	
		Jul 15	Jul 15	510.00	
		Jul 20	Jul 20	520.00	
		Jul 25	Jul 25	530.00	
		Jul 30	Jul 30	540.00	
		Jul 31	Jul 31	550.00	
		Aug 1	Aug 1	560.00	
		Aug 5	Aug 5	570.00	
		Aug 10	Aug 10	580.00	
		Aug 15	Aug 15	590.00	
		Aug 20	Aug 20	600.00	
		Aug 25	Aug 25	610.00	
		Aug 30	Aug 30	620.00	
		Aug 31	Aug 31	630.00	
		Sep 1	Sep 1	640.00	
		Sep 5	Sep 5	650.00	
		Sep 10	Sep 10	660.00	
		Sep 15	Sep 15	670.00	
		Sep 20	Sep 20	680.00	
		Sep 25	Sep 25	690.00	
		Sep 30	Sep 30	700.00	
		Sep 31	Sep 31	710.00	
		Oct 1	Oct 1	720.00	
		Oct 5	Oct 5	730.00	
		Oct 10	Oct 10	740.00	
		Oct 15	Oct 15	750.00	
		Oct 20	Oct 20	760.00	
		Oct 25	Oct 25	770.00	
		Oct 30	Oct 30	780.00	
		Oct 31	Oct 31	790.00	
		Nov 1	Nov 1	800.00	
		Nov 5	Nov 5	810.00	
		Nov 10	Nov 10	820.00	
		Nov 15	Nov 15	830.00	
		Nov 20	Nov 20	840.00	
		Nov 25	Nov 25	850.00	
		Nov 30	Nov 30	860.00	
		Nov 31	Nov 31	870.00	
		Dec 1	Dec 1	880.00	
		Dec 5	Dec 5	890.00	
		Dec 10	Dec 10	900.00	
		Dec 15	Dec 15	910.00	
		Dec 20	Dec 20	920.00	
		Dec 25	Dec 25	930.00	
		Dec 30	Dec 30	940.00	
		Dec 31	Dec 31	950.00	

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
तृतीयपटलगतदोषजविकाराः	॥	धात्र्यादिकाथः ॥
चतुर्थपटलगतदोषजविकाराः	॥	त्रिफलायोगः ८८५
लिङ्गनाशः ८७६	चन्द्रोदयवर्तिः ॥
वातजदोषे रूपदर्शनम् ॥	चन्द्रकलावर्तिः ॥
पित्तजदोषे रूपदर्शनम् ॥	नयनामृतम् ॥
कफजदोषे रूपदर्शनम् ॥	गुटिकाञ्जनम् ८८६
रक्तजदोषे रूपदर्शनम् ॥	नारायणाञ्जनम् ॥
संनिपातजदोषे रूपदर्शनम्	॥	नक्तान्ध्यकेतुः ॥
षड्विधरागलक्षणम् ८७७	नागार्जुनी शलाका ॥
षड्द्वारोगाः ॥	शशिकलावर्तिः ८८७
पित्तविदग्धदृष्टिः ॥	चन्द्रप्रभा वर्तिः ॥
श्लेष्मविदग्धदृष्टिः ८८८	रत्नाञ्जनम् ॥
धूमदर्शी ॥	वैदेहीवर्तिः ८८८
ह्रस्वजात्यः ॥	त्रिफलाघृतम् ॥
नकुलान्ध्यम् ॥	मध्यमं त्रैफलं घृतम् ॥
गम्भीरसंज्ञकः ॥	महात्रैफलं घृतम् ८८९
शुक्लगतविकाराः ॥	अथ द्वात्रिंशदधिकशततम-	
संधिगतविकाराः ८७९	स्तरङ्गः । १३२	
वर्त्मपक्ष्मजाः ॥	अथ शिरोरोगनिदानम् ८९०
अथ नेत्ररोगचिकित्सा ८८१	वातजः ॥
तस्य क्रिया ॥	पित्तजः ॥
अञ्जनस्यर्तुसमानकालः ॥	कफजः ॥
आश्रयोतनमात्रा ८८२	त्रिदोषजः ॥
वाङ्मात्रा ॥	रक्तजः ॥
आश्रयोतनम् ॥	क्रिमिजः ८९१
उपनाहौ ८८३	सूर्यावर्तिः ॥
पटोलादिकाथः ॥	अनन्तवातः ॥
वासादिकाथः ॥	अर्धावभेदकः ॥
महावासादिकाथः ८८४	शङ्खकः ॥
अम्लिकाञ्जनम् ॥	अथ चिकित्सा ८९२
चित्रकादिकाथः ॥		

THE HISTORY OF THE

1791

1791		1792		1793		1794		1795		1796		1797		1798		1799		1800		1801		1802		1803		1804		1805		1806		1807		1808		1809		1810		1811		1812		1813		1814		1815		1816		1817		1818		1819		1820		1821		1822		1823		1824		1825		1826		1827		1828		1829		1830		1831		1832		1833		1834		1835		1836		1837		1838		1839		1840		1841		1842		1843		1844		1845		1846		1847		1848		1849		1850		1851		1852		1853		1854		1855		1856		1857		1858		1859		1860		1861		1862		1863		1864		1865		1866		1867		1868		1869		1870		1871		1872		1873		1874		1875		1876		1877		1878		1879		1880		1881		1882		1883		1884		1885		1886		1887		1888		1889		1890		1891		1892		1893		1894		1895		1896		1897		1898		1899		1900		1901		1902		1903		1904		1905		1906		1907		1908		1909		1910		1911		1912		1913		1914		1915		1916		1917		1918		1919		1920		1921		1922		1923		1924		1925		1926		1927		1928		1929		1930		1931		1932		1933		1934		1935		1936		1937		1938		1939		1940		1941		1942		1943		1944		1945		1946		1947		1948		1949		1950		1951		1952		1953		1954		1955		1956		1957		1958		1959		1960		1961		1962		1963		1964		1965		1966		1967		1968		1969		1970		1971		1972		1973		1974		1975		1976		1977		1978		1979		1980		1981		1982		1983		1984		1985		1986		1987		1988		1989		1990		1991		1992		1993		1994		1995		1996		1997		1998		1999		2000		2001		2002		2003		2004		2005		2006		2007		2008		2009		2010		2011		2012		2013		2014		2015		2016		2017		2018		2019		2020		2021		2022		2023		2024		2025		2026		2027		2028		2029		2030		2031		2032		2033		2034		2035		2036		2037		2038		2039		2040		2041		2042		2043		2044		2045		2046		2047		2048		2049		2050		2051		2052		2053		2054		2055		2056		2057		2058		2059		2060		2061		2062		2063		2064		2065		2066		2067		2068		2069		2070		2071		2072		2073		2074		2075		2076		2077		2078		2079		2080		2081		2082		2083		2084		2085		2086		2087		2088		2089		2090		2091		2092		2093		2094		2095		2096		2097		2098		2099		2100		2101		2102		2103		2104		2105		2106		2107		2108		2109		2110		2111		2112		2113		2114		2115		2116		2117		2118		2119		2120		2121		2122		2123		2124		2125		2126		2127		2128		2129		2130		2131		2132		2133		2134		2135		2136		2137		2138		2139		2140		2141		2142		2143		2144		2145		2146		2147		2148		2149		2150		2151		2152		2153		2154		2155		2156		2157		2158		2159		2160		2161		2162		2163		2164		2165		2166		2167		2168		2169		2170		2171		2172		2173		2174		2175		2176		2177		2178		2179		2180		2181		2182		2183		2184		2185		2186		2187		2188		2189		2190		2191		2192		2193		2194		2195		2196		2197		2198		2199		2200		2201		2202		2203		2204		2205		2206		2207		2208		2209		2210		2211		2212		2213		2214		2215		2216		2217		2218		2219		2220		2221		2222		2223		2224		2225		2226		2227		2228		2229		2230		2231		2232		2233		2234		2235		2236		2237		2238		2239		2240		2241		2242		2243		2244	
------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--	------	--

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
षड्बिन्दुघृतम्	११	काश्मीरघृतम्	११
षड्बिन्दुतैलम्	११	प्रदरारिः	९०१
शिरोवस्तिविधिः	८९३	अथ पञ्चत्रिंशदधिकशततम- स्तरङ्गः । १३५	
विडङ्गाद्यं तैलम्	११	अथ सोमरोगनिदानम्	११
कुङ्कुमयोगः	११	तस्य लक्षणम्	११
इन्द्रलुप्ते योगचतुष्टयम्	८९४	अथ चिकित्सा	११
महानीलीतैलम्	८९५	अथ षट्त्रिंशदधिकशततम- स्तरङ्गः । १३६	
शांकरी कृतिः	८९६	अथ नागार्जुनकृतयोगसारो- क्तस्त्रीद्वेषचिकित्सा	९०२
तैलकृष्णीकृतिः	११	अथ सप्तत्रिंशदधिकशततम- स्तरङ्गः । १३७	
अथ त्रयस्त्रिंशदधिकशततम- स्तरङ्गः । १३३		अथ योनिरोगनिदानम्	९०३
अथ स्त्रीरोगाः	८९७	वातजो दोषः	९०४
स्त्रीपुष्पजननोपायः	११	पित्तजः	११
अथ चतुस्त्रिंशदधिकशततम- स्तरङ्गः । १३४		श्लेष्मजः	११
अथ प्रदरनिदानम्	११	सर्वदोषप्रकोपजः	११
वातजः	११	अथ चिकित्सा	९०५
कफजः	११	वचाद्यवलेहः	११
पित्तजः	११	योनिविशोधनम्	११
द्वन्द्वजः	८९८	अथाष्टात्रिंशदधिकशततमस्त- स्तरङ्गः । १३८	
त्रिदोषजः	११	अथ योनिकन्दनिदानम्	९०६
शुद्धार्तवम्	११	अथ चिकित्सा	९०७
असाध्यत्वम्	११	अथैकोनचत्वारिंशदधिकश- ततमस्तरङ्गः । १३९	
अथ चिकित्सा	११	अथ गर्भोत्पादनविधिः	११
दाव्यादिः	८९९		
जीरकावलेहः	९००		
मुद्गघृतम्	११		
शाल्मलीघृतम्	११		

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
नष्टार्तचिकित्सा	११	निर्गुण्ड्यादिकाथः	११
गर्भावस्था	१०८	देवदार्वादिकाथः	११
पुत्रकारकयोगः	११	अमृतादिकाथः	११
फलघृतम्	१०९	सहचरादिकाथः	११
अथ चत्वारिंशदधिकशततम- स्तरङ्गः । १४०		मध्यमसौभाग्यशुण्ड्यवलेहः ११९	
अथ मूढगर्भनिदानम्	११०	सौभाग्यशुण्ठी	११
अथ चिकित्सा	१११	पञ्चजीरावलेहः	११
स्रावप्रतिबन्धोपायः	११२	प्रतापलङ्केश्वरो रसः	१२०
गर्भरक्षणोपायः	११	अथ त्रिचत्वारिंशदधिकशततम- स्तरङ्गः । १४३	
शूलनिवारणोपायः	११३	अथ स्तनरोगः	११
गर्भिणीज्वरादिशान्त्युपायः ११		स्तनशोथोपक्रमः	११
हृत्विरेवादिकाथः	११	स्तन्यरोगः	१२१
गर्भिण्युपद्रवनिवारणोपायः ११		सप्तविधक्षीरम्	११
गर्भपातनिवारणोपायः	११	वातदुष्टस्तन्य उपायः	१२२
मूढगर्भापकर्षणम्	११४	पित्तदुष्टस्तन्ये	११
सुखप्रसवोपायः	११	कफदुष्टस्तन्ये	११
वातशुष्कगर्भचिकित्सा	११६	द्विदोषदुष्टस्तन्ये	११
अथैकचत्वारिंशदधिकशततम- स्तरङ्गः । १४१		त्रिदोषदुष्टस्तन्ये	११
अथ मक्कलनिदानम्	११	क्षीरालसकलक्षणम्	११
अथ चिकित्सा	११	स्तन्यविशुद्धिविधिः	११
अथ द्विचत्वारिंशदधिकशततम- स्तरङ्गः । १४२		स्तन्यवृद्धिः	१२३
अथ सूतिकारोगनिदानम्... ११७		वज्रकाञ्जिकम्	११
अथ चिकित्सा	११८	सूतास्तनरक्षा	११
दशमूलकाथः	११	स्तनमार्जनमन्त्रौ	११
		श्रीमल्लालम्	१२४
		कासीसाद्यं तैलम्	११
		करवीराद्यं तैलम्	११
		कर्पूराद्यं तैलम्	११
		योनिसंकोचीकरणम्	११

Date		Description		Amount	
1890	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	
1891	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	
1892	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	
1893	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
पण्डादियोषिद्वर्गनिवारण-		लूताविषम्	९४१
पातनविधिः	९२५	मूषकविषम्	९४२
अथ चतुश्चत्वारिंशदधिकशतत-		कृकण्टकविषम्	११
मस्तरङ्गः । १४४		वृश्चिकविषम्	११
		कणभविषम्	११
अथ बालरोगनिदानम्	९२६	मण्डूकविषम्	११
ग्रहग्रस्तबालरोगनिदानम्	९२७	मत्स्यविषम्	९४३
असाध्यलक्षणम्	९२८	जलौकाविषम्	११
अथ चिकित्सा	११	गृहगोधिकाविषम्	११
बालानामौषधदानमात्रा	११	शतपद्यादिविषम्	११
मूर्वाद्यवलेहः	९२९	मक्षिकाविषम्	११
भद्रमुस्ताक्राथः	११	चतुष्पदादिजीवविषम्	११
पलंकपादिधूपः	११	निर्विषलक्षणम्	११
मूर्वाद्युद्वर्तनम्	९३०	श्वविषम्	११
विल्वादिक्राथावलेहौ	११	सर्पविषचिकित्सा	९४४
नागरादिक्राथः	११	सर्पविषहरा वर्तिः	९४५
लोधाद्यवलेहः	११	आस्तिकागदः	९४६
मुस्ताद्यवलेहः	११	वृश्चिकविषप्रतीकारः	११
समङ्गाद्यवलेहः	११	तत्र मन्त्रः	११
अष्टमङ्गलम्	९३१	श्वविषप्रतीकारः	११
सौमघृतम्	९३२	नखदन्तविषप्रतीकारः	९४७
अथ ग्रहग्रस्तबालरोगचि-		मक्षिकाविषप्रतीकारः	११
कित्सा	९३३	वरटीविषप्रतीकारः	११
तत्र सामान्यविधिः	११	भ्रमरविषप्रतीकारः	११
विशेषविधिः	९३४	मूषकविषप्रतीकारः	९४८
अथ पञ्चचत्वारिंशदधिकश-		मण्डूकविषप्रतीकारः	११
ततमस्तरङ्गः । १४५		स्त्रीविद्धविषप्रतीकारः	११
		शृङ्गिमत्स्यविषप्रतीकारः	११
अथ विषनिदानम्	९३९	पिपीलिकादिविषप्रतीकारः	११
जङ्गमविषम्	९४०	शतपदीविषप्रतीकारः	११
दूषीविषम्	११	स्थावरविषप्रतीकारः	११

Date		Description		Amount	
1900	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	
1901	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	
1902	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	
1903	Jan 1	Balance		100.00	
	Feb 1	Interest		5.00	
	Mar 1	Interest		5.00	
	Apr 1	Interest		5.00	
	May 1	Interest		5.00	
	Jun 1	Interest		5.00	
	Jul 1	Interest		5.00	
	Aug 1	Interest		5.00	
	Sep 1	Interest		5.00	
	Oct 1	Interest		5.00	
	Nov 1	Interest		5.00	
	Dec 1	Interest		5.00	

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
सर्वविषयनाशिनी महाविद्या ..	११	अथ स्त्रीषाण्ड्यनिदानम्	१५७
विषज्वरपातो रसः	११	शुक्रार्तवयोर्लक्षणम्	१५७
लूताविषप्रतीकारः	११	वाजीकरणविधिः	१५७
विषमुक्तनिषेधः	११	स्त्रीगमन क्रतुदिनमर्यादा	१५८
अथ षट्चत्वारिंशदधिकशततम- स्तरङ्गः । १४६		स्त्रीसङ्गनिषेधः	१५८
विरुद्धाहारकथनम्	११	सेवनयोग्या स्त्री	१५८
संयोगविरुद्धम्	११	मैथुनान्ते हितम्	१५८
कालविरुद्धम्	११	शुक्रदोषनिवारणार्थं भेषजम् ..	१५९
विशिष्टसंयोगविरुद्धम्	११	अथ सामान्यविधिः	१५९
अथ सप्तचत्वारिंशदधिकशत- तमस्तरङ्गः । १४७		पूपलिकापाकः	१६०
अथ षाण्ड्याधिकारः	१५४	रसालाकरणविधिः	१६०
स्वहेतुजम्	१५४	बृहदश्वगन्धाद्यं घृतम्	१६१
वातदुष्टशुक्रम्	१५४	शतावरीघृतम्	१६१
पित्तदुष्टशुक्रम्	१५४	लघुवाजिगन्धाद्यं घृतम्	१६२
श्लेष्मदुष्टशुक्रम्	१५४	गोक्षुरादिचूर्णम्	१६२
रक्तदुष्टम्	१५४	स्वर्णमाक्षिकादिचूर्णम्	१६२
द्विदोषदुष्टम्	१५४	पायसविधिः	१६२
त्रिदोषदुष्टम्	१५४	माषादिचूर्णम्	१६३
क्लेशजननदोषः	१५४	माषाद्यं घृतम्	१६३
शुक्रक्षयहेतुः	१५४	गोधूमाद्यं घृतम्	१६४
शुक्रजननक्रमः	१४६	जीवन्तीयं घृतम्	१६४
सौगन्धिकदोषः	१५४	गुडकूष्माण्डकावलेहः	१६५
कुम्भीकदोषः	१५४	बृहत्कूष्माण्डपाकः	१६५
ईर्ष्यकदोषः	१५४	महाकूष्माण्डपाकः	१६६
एकाङ्गदोषः	१५४	अश्वगन्धापाकः	१६६
मर्मच्छेददोषः	१५४	गोक्षुरपाकविधिः	१६७
महापण्डलक्षणम्	१५४	कपिकच्छुपाकः	१६७
		बृहन्मुसलीपाकः	१६८
		योगसारोक्तोऽश्वगन्धापाकः ..	१६९
		बृहत्सौभाग्यशुण्ठी... ..	१७०
		अमृतमल्लोतकम्	१७०
		रतिवल्लभाख्यपूगपाकः	१७१

Date		Time		Location		Remarks	
1911	10/1	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/2	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/3	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/4	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/5	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/6	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/7	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/8	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/9	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/10	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/11	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/12	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/13	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/14	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/15	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/16	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/17	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/18	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/19	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/20	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/21	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/22	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/23	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/24	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/25	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/26	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/27	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/28	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/29	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/30	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000
1911	10/31	10:00	11:00	1000	1000	1000	1000

विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।	विषयाः ।	पृष्ठाङ्काः ।
महाकामेश्वरः	९७२	अपरो रसरजः	९९०
कामसुन्दरो मोदकः	९७३	कामिनीमदभञ्जनो रसः	९९१
मूलकामेश्वरो रसः	९७४	महामुगन्धितैलम्	९९२
कामदेववटी	९७५	रतिवल्लभाख्यं तैलम्	९९३
कामदेवचूर्णम्	९७६	पञ्चसायकः	९९४
मदनमञ्जरी वटिका	९७७	कामिनीविधूननः	९९५
वङ्गेश्वरादिवटी	९७८	सिद्धलक्ष्मीश्वरो रसः	९९६
कामेश्वरो मोदकः	९७९	लक्ष्मीविलासो रसः	९९७
महाकामेश्वरो मोदकः	९८०	वीर्यस्तम्भनम्	९९८
चन्द्रोदयो रसः	९८१	जातीफलवटिका	९९९
कामबाणो रसः	९८२	लोहादियोगः	१०००
कामदेवो रसः	९८३	अन्यप्रकारः	१००१
मृत्युञ्जयो रसः	९८४	भोगपुरन्दरवटी	१००२
आनन्दो रसः	९८५	अनङ्गमेखला गुटिका	१००३
अनङ्गनिगडो रसः	९८६	अनङ्गमेखलो मोदकः	१००४
प्रमदेभाङ्कुशो रसः	९८७	कर्पूरादिलेपनम्	१००५
पुष्पधन्वा रसः	९८८	अहिफेनयोगः	१००६
पञ्चसायकः	९८९	सौरतगुटिका	१००७
प्रमदानन्दो रसः	९९०	वीर्यरोधनगुटी	१००८
मदनकामेश्वरः	९९१	जातीफलगुटिका	१००९
नारीमत्तगजाङ्कुशः	९९२	पतङ्गयोगः	१०१०
स्तम्भने पञ्चबाणो रसः	९९३	लेपनम्	१०११
शृङ्गाराभ्रम्	९९४	ध्वजवृद्धीकरणम्	१०१२
षण्मुखरसः	९९५	योमिसंकोचीकरणम्	१०१३
रसरजः	९९६	अन्यप्रकारः	१०१४
महाराजवटीरसः	९९७	योषिद्वावणम्	१०१५
राजवटीरसः	९९८	अथाष्टचत्वारिंशदधिकशतत- मस्तरङ्गः । १४८	
मदनकामेश्वरो रसः	९९९		
पूर्णन्दुरसः	१०००	अथ संक्षेपतः सर्वरोगचिकित्सा ,, अथ ग्रन्थप्रशस्तिः १०००	
वीर्यरोधिनी गुटिका	१००१		
हिरण्यगर्भगुटिका	१००२		

समाप्तेयं बृहद्योगतरङ्गिणीस्थविषयानुक्रमणिका ।



अथ नवसप्ततितमस्तरङ्गः ।

अथ हिक्कानिदानम्—

विदाहिगुरुविष्टम्भिरूक्षामिष्यन्दिभोजनैः ।

शीतपानाशनस्नानरजोधूमातपामिलैः ॥ १ ॥

व्यायामकर्मभाराध्ववेगाघातापतर्पणैः ।

हिक्का श्वासश्च कासश्च नृणां समुपजायते ॥ २ ॥

हिक्कालक्षणम्—

मुहुर्मुहुर्वायुरुदेति संस्वनो यकृत्प्लिहान्त्राणि मुखोद्दिवाऽऽक्षिपेत् ।

स घोषवानाशु हिनस्त्यसून्यतस्ततस्तु हिक्केत्यभिधीयते बुधैः ॥ ३ ॥

पञ्चप्रकारनामान्याह—

अन्नाजां यमलां क्षुद्रां गम्भीरां महतीं तथा ।

वायुः कफेनानुगतः पञ्च हिक्काः करोति च ॥ ४ ॥

पूर्वरूपमाह—

कण्ठोरसोर्गुरुत्वं च वदनस्य कषायता ।

हिक्कानां पूर्वरूपाणि कुक्षेराटोप एव च ॥ ५ ॥

अन्नजामाह—

पानान्नैरतिसंमुक्तैः सहसा पीडितोऽनिलः ।

हिक्कयत्यूर्ध्वगो भूत्वा तां विद्यादन्नजां मिषक् ॥ ६ ॥

करोति हिक्कामरुजां मन्दवेगां क्षयानुगाम ।

समं सात्म्यन्नपानेन या प्रयाति च साऽन्नजा ॥ ७ ॥

यमलामाह—

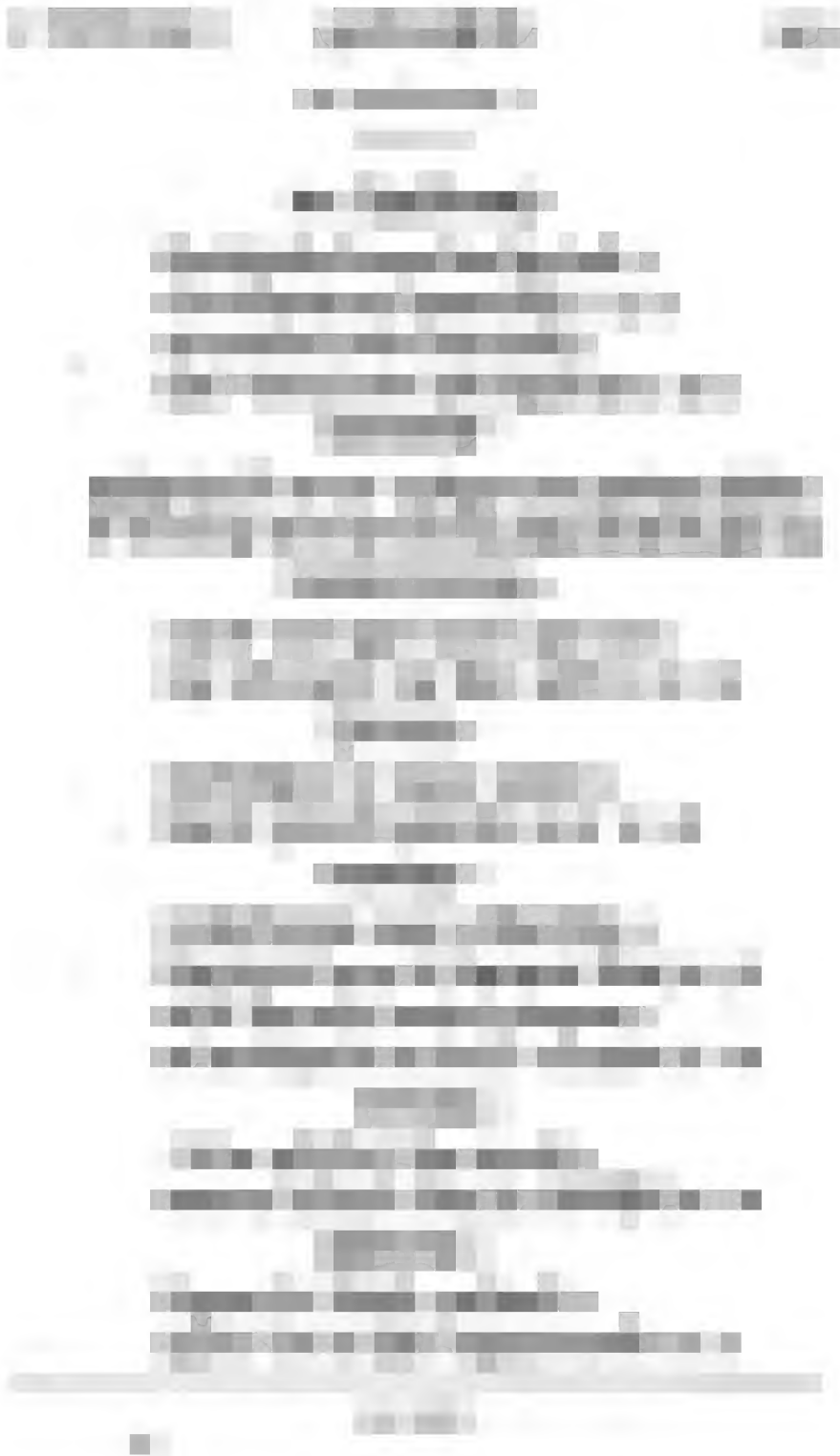
चिरेण यमलैर्वेगैर्या हिक्का संप्रवर्तते ।

कम्पयन्ती शिरोऽग्रीवां यमलां तां विनिर्दिशेत् ॥ ८ ॥

क्षुद्रिकामाह—

विकृष्टकालैर्या वेगेर्मन्दैः समभिवर्तते ।

क्षुद्रिका नाम सा हिक्का जङ्गमूलात्प्रधावति ॥ ९ ॥



गम्भीरामाह—

नाभिप्रवृत्ता या हिक्का घोरा गम्भीरनादिनी ।
 शुष्कोष्ठकण्ठनासास्यकासपार्श्वरुजाकरी ॥ १० ॥
 अनेकोपद्रवैर्युक्ता गम्भीरा नाम सा स्मृता ।

महाहिकामाह—

मर्माण्युत्पीडयन्तीव सततं या प्रवर्तते ॥ ११ ॥
 देहमायास्य बेगेन घोषयत्यपि तृष्यति ।
 महाहिकेति सा ज्ञेया सर्वगात्रावकम्पिनी ॥ १२ ॥

असाध्यत्वमाह—

आयम्यते हिक्कति यस्य वेहो
 दृष्टिश्चोर्ध्वं ताम्यते यस्य नित्यम् ।
 क्षीणोऽन्नद्विदक्षौति यश्चातिमात्रं
 तौ द्वौ चान्त्यौ वर्जयेद्विक्कमानौ ॥ १३ ॥
 अतिसंचितदोषस्य भक्तद्वेषकृतस्य च ।
 व्याधिभिः क्षीणदेहस्य वृद्धस्यातिव्यवायिनः ॥ १४ ॥
 एषां या सा समुत्पन्ना हिक्का हन्त्याशु जीवितम् ।
 यमिका च प्रलापार्तिमोहतृष्णासमन्विता ॥ १५ ॥
 अक्षीणश्चाप्यदीनश्च स्थिरधात्विन्द्रियश्च यः ।
 तस्य साधयितुं शक्या हन्ति हिक्का ततोऽन्यथा ॥ १६ ॥

इति हिक्कानिदानम् ।

अथ हिक्कायाश्चिकित्सा—

यत्किञ्चित्कफवातघ्नमुष्णं वातानुलोमनम् ।
 भेषजं पानमन्नं वा हिक्काश्वासेषु तद्धितम् ॥ १७ ॥
 हिक्काश्वासातुरे पूर्वं तैलाक्ते स्वेद इष्यते ।
 ऊर्ध्वाधःशोधनं शस्तं दुर्बले शमनं मतम् ॥ १८ ॥
 वातेन हिक्काः प्रभवन्ति पञ्च तासामसाध्यत्वमुदाहरन्ति ।
 अक्षीणमांसस्य भवेच्च साध्या प्रान्ते च हिक्के परिवर्जनीये ॥ १९ ॥



प्राणावरोधतर्जनविस्मापनशीतवारिपरिषेके ।
 चित्रैः कथाप्रयोगैः शमयेद्विक्कां मनोभिघातैश्च ॥२०॥
 हिकार्तस्य पयश्छागं हितं नागरसाधितम् ।
 रसान्पचेत्फलाम्लांश्च लाजचूर्णं ससैन्धवम् ॥ २१ ॥
 नारीपयःपिष्टसुशुक्लचन्दनं घृतं सुखोष्णं च ससैन्धवं च ।
 पिष्टं तथा सैन्धवमम्बुना वा निहन्ति हिकां ननु नावनेन ॥२२॥
 इति नारायणीयात् ।

सुश्रुतात्—

यष्ट्याह्वं वा माक्षिकेणावलीढं
 कृष्णाचूर्णं शर्कराढ्यं च किं वा ।
 सार्पिः कोष्णं क्षीरमुष्णं रसो वा
 हन्याद्विक्षोः पानतः पञ्च हिकाः ॥ २३ ॥

प्रदीपात्—

शिखिपिच्छमस्म कृष्णाचूर्णं मधुमिश्रितं मुहुर्लीढम् ।
 हिकां हरति प्रबलां श्वासं चैवातिदुस्तरं छर्दिम् ॥ २४ ॥

वृन्दात्—

कोलमज्जाञ्जनं लाजास्तित्का काञ्चनगैरिकम् ।
 कृष्णा धात्री सिता शुण्ठी कासीसं दधिनाम च ॥ २५ ॥
 पाटल्याः सफलं पुष्पं कृष्णा खजूरमुस्तकम् ।
 पडेटे पादिका लेहा हिकाम्ना मधुसंयुताः ॥ २६ ॥
 मधुकं मधुसंयुक्तं पिप्पलीशर्करान्वितम् ।
 नागरं गुडसंयुक्तं हिकाम्नं नावनत्रयम् ॥ २७ ॥
 स्तन्येन मक्षिकाविष्टा नस्थे वाऽलक्तकाम्बुना ।
 योज्यं हिकाभिभूतेभ्यः स्तन्यं वा चन्दनान्वितम् ॥ २८ ॥
 मधुसौधर्वलोपेतं मातुलुङ्गरसं पिबेत् ।
 हिकार्तो मधुना लिह्याच्छुण्ठीं धात्रीं कणान्विताम् ॥ २९ ॥
 कृष्णामलकशुण्ठीनां चूर्णं मधुसितायुतम् ।
 मुहुर्मुहुः प्रयोक्तव्यं हिकाश्वासनिवारणम् ॥ ३० ॥

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

हिक्काश्वासी पिवेन्द्रागीं सविश्वामुष्णवारिणा ।
नागरं वा सितामार्गीसौवर्चलसमन्वितम् ॥ ३१ ॥

रसरत्नप्रदीपात्—

दशमूलीजलयुतं सूतं हिक्कासु योजयेत् ।
श्वासकासहरः सर्वो विधिरत्रापि युज्यते ॥ ३२ ॥

बौद्धसर्वस्वात्—

पाटलाफलतोयेन क्षौद्रेण च समन्वितम् ।
हेममस्म निहन्त्येव हिक्काः पञ्चापि दुस्तराः ॥ ३३ ॥
कटुकगैरिकाम्यां च मुक्तामस्म तथैव च ।
बीजपूरस्य तोयेन ताम्रं तद्वत्समाक्षिकम् ॥ ३४ ॥
हेममुक्तार्ककान्तानां भस्म वल्लभितं वरम् ।
बीजपूरसक्षौद्रसौवर्चलसमन्वितम् ॥ ३५ ॥
हन्ति हिक्काशतं सत्यमेकमात्राप्रयोगतः ।
का कथा पञ्चहिक्कानां हरणे पुनरुच्यते ॥ ३६ ॥

वसन्तराजात्—

प्रवालशङ्खत्रिफलाचूर्णं मधुघृतप्लुतम् ।
पिप्पली गैरिकं चेति लेहो हिक्कानिवारणः ॥ ३७ ॥
दशमूलीकषायेण मधुना च समन्वितम् ।
कान्तायोभस्म हिक्कानां पञ्चानां पञ्चतां नयेत् ॥ ३८ ॥
इति योगतरङ्गिण्यां हिक्कानिदानचिकित्साकथनं नामैकोनाशीति-
तमस्तरङ्गः ॥ ७९ ॥

अथाशीतितमस्तरङ्गः ।

अथ श्वासनिदानम्—

ग्रैरेव कारणैर्हिक्का बहुभिः संप्रवर्तते ।
तैरेव कारणैः श्वासो घोरो भवति देहिनम् ॥ १ ॥

अथ पञ्चधाश्वासनिरोधनिदानम्—

महोर्ध्वच्छिन्नतमकक्षुद्रभेदैस्तु पञ्चधा ।
मिथ्यते स महाव्याधिः श्वास एको विशेषतः ॥ २ ॥

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that proper record-keeping is essential for the transparency and accountability of the organization. This section also outlines the specific procedures for recording and verifying financial data.

2. The second part of the document addresses the role of the audit committee in overseeing the financial reporting process. It details the committee's responsibilities, including reviewing the financial statements, assessing the effectiveness of internal controls, and ensuring compliance with applicable laws and regulations. The committee's findings and recommendations are presented in this section.

3. The third part of the document provides a detailed overview of the internal control system. It describes the various controls implemented to mitigate risks and ensure the reliability of financial information. This includes controls over the revenue cycle, the procurement process, and the management of assets. The document also discusses the ongoing monitoring and evaluation of the internal control system.

4. The fourth part of the document discusses the results of the audit. It presents the findings of the audit team, highlighting areas of strength and areas for improvement. The audit team's conclusions and recommendations are provided in this section, along with a timeline for implementing the necessary corrective actions.

5. The fifth part of the document provides a summary of the key findings and conclusions. It reiterates the importance of maintaining high standards of financial reporting and internal control. The document concludes with a statement of commitment to continuous improvement and transparency.

पूर्वरूपमाह—

प्राग्रूपं तस्य हृत्पीडा शूलमाध्मानमेव च ।
आनाहो वक्त्रवैरस्यं शङ्खनिस्तोद एव च ॥ ३ ॥

संप्राप्तिमाह—

यदा स्रोतांसि संरुध्य मारुतः कफपूर्वकः ।
विष्वग्प्रजति संरुद्धस्तदा श्वासान्करोति हि ॥ ४ ॥

महाश्वासलक्षणमाह—

उद्धूयमानवातो यः शब्दवद्दुःखितो वरः ।
उच्चैः श्वसिति संरुद्धो मत्तर्षभ इवानिशम् ॥ ५ ॥
प्रनष्टज्ञानविज्ञानस्तथा विभ्रान्तलोचनः ।
विवृताक्षाननो बद्धमूत्रवर्चा विशीर्णवाक् ॥ ६ ॥
दीनः प्रश्वसितं चास्य दूराद्विजायते भृशम् ।
महाश्वासोपसृष्टस्तु क्षिप्रमेव विपद्यते ॥ ७ ॥

ऊर्ध्वश्वासमाह—

ऊर्ध्वं श्वसिति यो दीर्घं न च प्रत्याहरत्यधः ।
श्लेष्मावृतमुखस्रोताः क्रुद्धगन्धवहार्दितः ॥ ८ ॥
ऊर्ध्वदृष्टिर्विपश्यंश्च विभ्रान्ताक्ष इतस्ततः ।
प्रमुह्यन्वेदनार्तश्च शुष्कास्योऽरतिपीडितः ॥ ९ ॥
ऊर्ध्वश्वासे प्रकुपिते ह्यधःश्वासो निरुध्यते ।
मुह्यतस्ताम्यतश्चोर्ध्वं श्वासस्तस्यैव हन्त्यसून् ॥ १० ॥

छिन्नश्वासमाह—

यस्तु श्वसिति विच्छिन्नं सर्वप्राणेन पीडितः ।
न वा श्वसिति दुःखार्तो मर्मच्छेदरुगर्दितः ॥ ११ ॥
आनाहस्वेदमूर्छार्तो दह्यमानेन वास्तिना ।
विप्लुताक्षः परिक्षीणः श्वसनरक्तैकलोचनः ॥ १२ ॥
विचेताः परिशुष्कास्यो विवर्णः प्रलपन्नरः ।
छिन्नश्वासेन विच्छिन्नः स शीघ्रं विजहात्यसून् ॥ १३ ॥

तमकश्वासमाह—

प्रतिलोमं यदा वायुः स्रोतांसि प्रतिपद्यते ।
ग्रीवां शिरश्च संगृह्य श्लेष्माणं समुदीर्य च ॥ १४ ॥

1. 1. 1.

2. 2. 2.

3. 3. 3.

4. 4. 4.

5. 5. 5.

6. 6. 6.

7. 7. 7.

8. 8. 8.

9. 9. 9.

करोति पीनसं तेन रुद्धो घुर्घुरकं तथा ।
 अतीव तीव्रवेगं च श्वासं प्राणप्रपीडकम् ॥ १५ ॥
 प्रताम्यति स वेगेन त्रस्यते संनिरुध्यते ।
 प्रमोहं कासमानश्च स गच्छति मुहुर्मुहुः ॥ १६ ॥
 श्लेष्मणा मुच्यमानेन भृशं भवति दुःखितः ।
 तस्यैव च विमोक्षान्ते मुहूर्तं लभते सुखम् ॥ १७ ॥
 तथाऽस्य ध्वंसते कण्ठः कृच्छ्राच्छक्नोति माषितुम् ।
 न चापि लभते निद्रां शयानः श्वासपीडितः ॥ १८ ॥
 पार्श्वौ तस्यावगृह्णाति शयानस्य समीरणः ।
 आसीनो लभते सौख्यमुष्णं चैवाभिनन्दति ॥ १९ ॥
 उच्छ्रिताक्षो ललाटेन स्विद्यता भृशमार्तिमान् ।
 विशुष्कास्यो मुहुःश्वासो मुहुश्चैवावधम्यते ॥ २० ॥
 मेघाम्बुशीतप्राग्वातैः श्लेष्मलैश्च विवर्धते ।
 स याप्यस्तमकः श्वासः साध्यो वा स्यान्नवोत्थितः ॥ २१ ॥

प्रतमकश्वासमाह-

ज्वरमूर्छापरीतस्य विद्यात्प्रतमकं तु तम् ।
 उदावर्तरजोजीर्णाक्लिन्नकायनिरोधजः ॥ २२ ॥
 तमसा वर्धतेऽत्यर्थं शीतैश्चाऽऽशु प्रशाम्यति ।
 मज्जतस्तमसीवास्य विद्यात्प्रतमकं तु तम् ॥ २३ ॥

क्षुद्रश्वासलक्षणमाह-

रूक्षायासोद्भवः कोष्ठे क्षुद्रो वातमुदीरयेत् ।
 क्षुद्रश्वासेन सोऽत्यर्थं दुःखेनाङ्गप्रबाधकः ॥ २४ ॥
 हिनस्ति न स गात्राणि न च दुःखो यथेतरे ।
 न च भोजनपानानां निरुणध्युचितां गतिम् ॥ २५ ॥
 नेन्द्रियाणां व्यथां नापि कांचिदापादयेद्भुजम् ।
 स साध्य उक्तो बलिनः सर्वे वाऽव्यक्तलक्षणाः ॥ २६ ॥
 क्षुद्रः साध्यतमस्तेषां तमकः कृच्छ्र उच्यते ।
 त्रयः श्वासा न सिध्यन्ति तमको दुर्बलस्य च ॥ २७ ॥
 कामं प्राणहरा रोगा बहवो न तु ते तथा ।
 यथा श्वासश्च हिक्रा च हरतः प्राणमाशु च ॥ २८ ॥

इति श्वासनिदानम् ।

The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. It highlights the journal's role in providing
 a platform for the dissemination of research findings and
 the advancement of the discipline. The second part of the
 paper focuses on the journal's commitment to diversity and
 inclusion, emphasizing the need for a more equitable and
 inclusive research agenda. The third part of the paper
 discusses the journal's efforts to promote the use of
 research in management education, highlighting the
 importance of evidence-based practice. The fourth part of
 the paper discusses the journal's commitment to
 transparency and accountability, emphasizing the need for
 open access and the sharing of research data. The fifth
 part of the paper discusses the journal's commitment to
 the future of management education, highlighting the
 need for innovation and the development of new
 research paradigms. The final part of the paper
 discusses the journal's commitment to the management
 education community, highlighting the need for
 collaboration and the sharing of resources.

The following table shows the results of the regression analysis for the dependent variable "Number of children in the household" (N = 1,000). The independent variables are "Age of the head of household" and "Gender of the head of household". The results are presented in the following table:

अथ श्वासप्रतीकारः—

स्नेहवास्तिमृते केचिदूर्ध्वं चाधश्च शोधनम् ।
 मृदुप्राणवत्तां श्रेष्ठं श्वासिनामादिशन्ति हि ॥ २९ ॥
 सर्वेषु श्वासरोगेषु वातश्लेष्मनिबर्हणम् ।
 विवधीत विधिं विद्वानादौ स्वेदं मृदुं तथा ॥ ३० ॥
 कुलत्थनागरव्याघ्रीवासाभिः कथितं जलम् ।
 पीतं पौष्करसंयुक्तं श्वासकासनिवारणम् ॥ ३१ ॥

इति कुलत्थादिकाथः ।

अथ दशमूलादिकाथः—

दशमूलीकृतः काथः पौष्करेणावचूर्णितः ।
 श्वासकासप्रशमनः पार्श्वशूलविनाशनः ॥ ३२ ॥

इति दशमूलादिकाथः ।

अथ देवदार्वदिकाथः—

देवदारुवर्चाभागीं विश्वकटफलपौष्करैः ।
 कृतः काथो जयत्याशु श्वासकासावशेषतः ॥ ३३ ॥

इति देवदार्वदिकाथः ।

अथ गुडादिगुटिका—

रम्भाकुन्दशिरीषाणां कुसुमं पिप्पलीयुतम् ।
 पिष्ट्वा तण्डुलतोयेन पीत्वा श्वासमपोहति ॥ ३४ ॥
 शृङ्गीमहौषधकणाघनपौष्कराणां
 चूर्णं शठौमारिचयोश्च सिताविमिश्रम् ।
 काथेन पीतममृतावृषपञ्चमूल्याः
 श्वासं त्र्यहेन विनिहन्ति हि घोररूपम् ॥ ३५ ॥
 पञ्चमूली तु सामान्या पित्ते योज्या कनीयसी ।
 महती मारुते देया सैव देया कफेऽधिके ॥ ३६ ॥
 स्वरसं शृङ्गवेरस्य माक्षिकेण समन्वितम् ।
 पाययेच्छ्वासकासघ्नं प्रतिश्यायकफापहम् ॥ ३७ ॥
 गुडशुण्ठीशिवामुस्तैर्धारयेद्गुटिकां मुखे ।
 श्वासकासेषु सर्वेषु विमीतं वाऽपि केवलम् ॥ ३८ ॥

इति गुडादिगुटिका ।



अथ कृष्माण्डमूलचूर्णम्—

कृष्माण्डकशिकाचूर्णं पीतं कोष्णेन वारिणा ।

शीघ्रं शमयति श्वासं कासं चैव सुदारुणम् ॥ ३९ ॥

इति कृष्माण्डमूलचूर्णम् ।

अथ शृङ्गाद्यादिचूर्णम्—

शृङ्गीकटुत्रयफलत्रयकण्टकारी-

भार्गीसपुष्करजटालवणानि पञ्च ।

चूर्णं पिबेदशिशिरेण जलेन हिक्काश्वासो-

र्ध्वातर्कसनारुचिपीनसेषु ॥ ४० ॥

इति शृङ्गाद्यादिचूर्णम् ।

अथ गुडावलेहः—

गुडं कटुकतैलेन मिश्रयित्वा समं लिहेत् ।

त्रिसप्ताहप्रयोगेण श्वासं निःशेषतो जयेत् ॥ ४१ ॥

इति गुडावलेहः ।

अथ हरिद्रादिलेहः—

हरिद्रां मरिचं द्राक्षां कणां राम्नां सटीं गुडम् ।

कटुतैलं लिहन्हन्वाच्छ्वासान्प्राणहरानपि ॥ ४२ ॥

इति हरिद्रादिलेहः ।

अथ शठ्याद्यं चूर्णम्—

शटीं पुष्करजीवन्तीत्वङ्मुस्तं पुष्कराह्वयम् ।

सुरसां तामलक्योऽपि पिप्पल्यगुरुवालकम् ॥ ४३ ॥

नागरं च समं चूर्णं कृत्वा द्विगुणशर्करम् ।

सर्वथा तमकंश्वासे हिक्कायां च प्रयोजयेत् ॥ ४४ ॥

अत्रैकस्माद्द्रव्यादष्टगुणा शर्करेति संप्रदायः ।

इति शठ्याद्यं चूर्णम् ।

अथ भार्ग्यादिलेहः—

भार्गीनागरयोश्चूर्णं लीढमार्द्रकवारिणा ।

श्वासं निहन्ति दुर्धर्षं पञ्चानन इव द्विपम् ॥ ४५ ॥

इति भार्ग्यादिलेहः ।



अथ चित्रकहरीतक्यवलेहः—

पक्त्वा पञ्चतुलां गुडामलशिखिच्छिन्नादशाङ्ग्यम्भसा
पथ्यां पात्रवतां कृतां शिखिशिवां व्योषं चतुर्जातकान् ।
क्षौद्राच्च त्रिपलाञ्जलिद्विकुडवैः क्षाराच्च शुक्त्या युता
शोफार्शःक्षयकुष्ठपीनसकृमिश्वासान्त्रगुल्मान्तकृत् ॥ ४६ ॥
इति चित्रकहरीतक्यवलेहः ।

अथ भार्गीहरीतक्यवलेहः—

द्विद्रोणेऽपां दशजटतुलां तुल्यभार्गी पचेत्त-
त्पादं भूयोऽभयगुडशतं न्यस्य भार्गी शिवा सा ।
त्र्येकाष्टाभ्रं त्रिकटुकचतुर्जातमध्वन्विताऽलं
हिक्काशोफश्वसनकसनैकाहिकापीनसघ्नी ॥ ४७ ॥
इति भार्गीहरीतक्यवलेहः ।

अथ क्षुद्रावलेहः—

व्याघ्रीशतं स्यादमयाशतं च द्रोणे जलस्य प्रपचेत्कषायम् ।
तुलाप्रमाणेन गुडेन युक्तं पक्त्वाऽमयाभिः सह ताभिरत्र ॥ ४८ ॥
शीते क्षिपेत्पण्मधुनः पलानि पलानि च त्रीणि कटुत्रयस्य ।
त्वक्पत्रकैलाकरिकेसराणां चूर्णात्पलं चेति विदेहदक्षः ॥ ४९ ॥
क्षुद्रावलेहः कफजान्विकारान्सश्वासशोषानपि पञ्च कासान् ।
हिक्कामुरोरोगमपस्मृतिं च हत्वा विवृद्धिं कुरुतेऽजलस्य ॥ ५० ॥
इति क्षुद्रावलेहः ।

अथ गुटी—

सितमलवली कटुकीखदिरौ हिमरश्मिदृशौ नयनाक्षिमितौ ।
पुटितं च खले त्रिदिनं सकलं स्वरसैः किल चाऽऽर्द्रकसंजनितैः ॥ ५१ ॥
श्वसने कसने शूले ज्वरेऽजीर्णे तथोदरे ।
सर्पिषां रक्तिकामात्रं चोत्तारो नागवल्लिका ॥ ५२ ॥

अथ श्वासकुठारः—

रसं गन्धं विषं चैव टङ्कणं च मनःशिलाम् ।
एतानि टङ्कमात्राणि मरिचं चाष्टटङ्ककम् ॥ ५३ ॥
एकैकं मरिचं दत्त्वा खल्वे सूक्ष्मं विमर्दयेत् ।
त्रिकटुं टङ्कषट्कं च दत्त्वा पञ्चाद्विचूर्णयेत् ॥ ५४ ॥

1. The first part of the document is a letter from the President of the United States to the Congress, dated January 1, 1861.

2. The second part is a report from the Secretary of the Interior, dated January 1, 1861, on the state of the public lands.

3. The third part is a report from the Secretary of the Treasury, dated January 1, 1861, on the state of the public debt.

4. The fourth part is a report from the Secretary of the War, dated January 1, 1861, on the state of the military forces.

5. The fifth part is a report from the Secretary of the Navy, dated January 1, 1861, on the state of the naval forces.

6. The sixth part is a report from the Secretary of the State, dated January 1, 1861, on the state of the foreign relations.

सर्वमेकत्र संयोज्य काचकूप्यां विनिक्षिपेत् ।
 कासे श्वासे च मन्दाग्रौ वातश्लेष्मामयेषु च ॥ ५५ ॥
 गृञ्जामात्रं प्रदातव्यं पर्णखण्डेन धीमता ।
 संनिपाते च मूर्छायामपस्मारे तथा पुनः ॥ ५६ ॥
 अतिमोहत्वमापन्ने नस्यं दत्त्वा विचक्षणः ।
 रसः श्वासकुठारोऽयं सर्वश्वासविकारजित् ॥ ५७ ॥

इति श्वासकुठारः ।

इति योगतरङ्गिण्यां श्वासनिदानचिकित्साकथनं नामाशीति-
 तमस्तरङ्गः ॥ ८० ॥

अथैकाशीतितमस्तरङ्गः ।

अथ स्वरभेदनिदानम्—

अत्युच्चमाषणविषाध्ययनाभिघात-

संदूषणैः प्रकुपिताः पवनादयश्च ।

स्रोतःसु ते स्वरबहेषु गताः प्रतिष्ठां

हन्युः स्वरं भवति चापि हि षड्विधः सः ॥ १ ॥

वातजमाह—

वातेन कृष्णनयनाननमूत्रवर्चा

भिन्नं शनैर्वदति गर्दभवत्स्वरं च ।

पित्तजमाह—

पित्तेन पीतनयनाननमूत्रवर्चा

ब्रूयाद्वलेन च स दाहसमन्वितेन ॥ २ ॥

अथ कफजमाह—

ब्रूयात्कफेन सततं कफरुद्धकण्ठं

स्वल्पं शनैर्वदति चापि दिवा विशेषात् ।

सर्वलिङ्गत्वमाह—

सर्वात्मके भवति सर्वविकारलिङ्गं

तं चाप्यसाध्यमृषयः स्वरभेदमाहुः ॥ ३ ॥



वर्जनीयमाह—

धूम्येन वाक्क्षयकृते क्षयमाप्नुयाच्च*
 सर्वेषु चापि हतवाक्परिवर्जनीयः ।
 अन्तर्गतं स्वरमलक्ष्यपदं चिरेण भेदो-
 न्वयाद्वदति दिग्धगलस्तृपार्तः ॥ ४ ॥

क्षीणस्य वृद्धस्य कृशस्य चापि चिरोत्थितो यः सहजोपजातः ।
 भेदस्विनः सर्वसमुद्भवश्च स्वरामयो यो न स सिद्धिमेति ॥ ५ ॥
 इति स्वरभेदनिदानम् ।

अथैतच्चिकित्सा—

वातादिजनितश्वासकासघ्ना ये प्रकीर्तिताः ।
 योगांस्तांस्तत्र युञ्जीत यथादोषं चिकित्सकः ॥ ६ ॥
 वाते सलवणं तैलं पित्ते सर्पिः समाक्षिकम् ।
 कफे सक्षारकटुकं क्षौद्रं केवलमिष्यते ॥ ७ ॥
 गले तालुनि जिह्वायां दन्तमूलेषु चाऽऽश्रितः ।
 तेन निष्कृष्यते श्लेष्मा स्वरश्चाऽऽशु प्रसीदति ॥ ८ ॥
 आद्ये कोष्णं जलं पेयं भुक्त्वा घृतगुडौदनम् ।
 क्षीरानुपानं पित्तोत्थे पिबेत्सर्पिरतन्द्रितः ॥ ९ ॥
 स्वरोपघातेऽनिलजे भुक्तोपरि घृतं पिबेत् ।
 मरीचचूर्णसहितं मरुत्स्वरहतिप्रणुत् ॥ १० ॥
 कासमर्दरसं दत्त्वा मार्गिकल्कं शनैः शनैः ।
 सिद्धं सर्पिर्हन्ति पीतं स्वरभेदं मरुद्भवम् ॥ ११ ॥

इति कासमर्दघृतम् ।

पेयं कोष्णं जलं भूयो जग्ध्वा घृतगुडौदनम् ।
 तेन शाम्यति वातोत्थः स्वरभेदो न संशयः ॥ १२ ॥

इति वातस्वरभेदचिकित्सा ।

अथ पित्तस्वरभेदे शुण्ठ्यादिघृतम्—

पैत्तिके तु विरेकः स्यात्पयश्च मधुरैः शृतम् ।
 लिहेन्मधुरवस्तूनां चूर्णं मधुसमन्वितम् ॥ १३ ॥

* क. 'च वाक्येषु चा' इति पाठान्तरम् ।

1. [Illegible]

2. [Illegible]

3. [Illegible]

4. [Illegible]

[Illegible]

[Illegible]

5. [Illegible]

[Illegible]

[Illegible]

6. [Illegible]

7. [Illegible]

[Illegible]

8. [Illegible]

अश्रीयाच्च ससर्पिष्कं यष्टीमधुकपायसम् ।
 शुण्ठीत्वचो दुग्धवतां द्रुमाणां संपिष्टदुग्धं विपचेत्तु तेन ।
 कल्केन यष्टीमधुकस्य सर्पिः सशर्करं पित्तरुजामयघ्नम् ॥ १४ ॥
 इति पित्तस्वरभेदे शुण्ठ्यादिघृतम् ।

अथ कफस्वरभेदे पिप्पल्यादिघृतम्—

पिप्पली पिप्पलीमूलं मरिचं विश्वभेषजम् ।
 पचेन्मूत्रेण मतिमान्कफजे स्वरसंक्षये ॥ १५ ॥
 इति कफस्वरभेदे पिप्पल्यादिचूर्णम् ।

अथ संनिपातस्वरभेदचिकित्सा—

अजमोदां निशां धात्रीं क्षारं वह्निं विचूर्णयेत् ।
 मधुसर्पिर्धुतं लीढ्वा त्रिदोषस्वरभङ्गनुत् ॥ १६ ॥
 फलत्रिकत्र्यूषणयावशूकचूर्णं निहन्यात्स्वरभङ्गमाशु ।
 किं वा कुलत्थो वदनान्तरस्थः स्वरामयं हन्त्यथ पौष्करं वा ॥ १७ ॥
 इति संनिपातस्वरभेद चिकित्सा ।

अथ क्षयभेदस्वरभङ्गचिकित्सा—

क्षयजे स्वरभेदे तु तत्रोक्तं विधिमाचरेत् ।
 कटुतिक्तकषायाद्यैर्भेदः स्वरहतिं जयेत् ॥ १८ ॥
 इति क्षयभेदः स्वरभङ्गचिकित्सा ।

अथ सामान्यविधिः—

चव्यादिचूर्णम्—

चव्याम्लवेतसकटुत्रयतिस्तिडीक-
 तालीसजीरकतुगादहनैः समांशैः ।
 चूर्णं गुडप्रमुदितं त्रिसुगन्धियुक्तं
 वैस्वर्यपीनसकफारुचिषु प्रशस्तम् ॥ १९ ॥
 इति चव्यादिचूर्णम् ।

अथ व्याघ्रीघृतम्—

व्याघ्रीस्वरसविपकं राम्नावाद्यालगोक्षुरव्योषैः ।
 सर्पिः स्वरोपघातं हन्यात्कासं च पञ्चविधम् ॥ २० ॥
 इति व्याघ्रीघृतम् ।

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

अथ बदरीपत्रावलेहः—

बदरीपत्रकलकं वा घृतभृष्टं ससैन्धवम् ।
स्वरोपघाते कासे च लेहमेनं प्रयोजयेत् ॥ २१ ॥

इति बदरीपत्रावलेहः ।

अथ निदिग्धिकावलेहः—

निदिग्धिका तुला ग्राह्या तदर्धं ग्रन्थिकस्य तु ।
तदर्धं चित्रकस्याथ दशमूलं च तत्समम् ॥ २२ ॥
जलद्रोणद्वयं काश्यं गृह्णीयादाढकं ततः ।
पूते क्षिपेत्तदर्धं तु पुराणस्य गुडस्य च ॥ २३ ॥
सर्वमेकत्र कृत्वा तु लेहवत्साधु साधयेत् ।
अष्टौ पलानि पिप्पल्यास्त्रिजातकपलं तथा ॥ २४ ॥
मरिचस्य पलं चैकं सर्वमेकत्र चूर्णितम् ।
मधुनः कुडवं दत्त्वा तदश्रीयाद्यथानलम् ॥ २५ ॥
निदिग्धिकावलेहोऽयं भिषग्भिः परिकीर्तितः ।
स्वरभेदहरो मुख्यः प्रतिश्यायहरस्तथा ॥ २६ ॥
कासश्वासाग्निमान्द्यादीन्गुल्मभेहगलामयान् ।
आनाहं मूत्रकृच्छ्राणि हन्याद्वन्थ्यर्बुदानि च ॥ २७ ॥

इति निदिग्धिकावलेहः ।

अथ गोरक्षवटी—

ब्राह्मी वचाऽभया वासा पिप्पली मधुसंयुता ।
अस्य प्रयोगात्सप्ताहात्किंनरैः सह गीयते ॥ २८ ॥
रसमस्मार्कलोहस्य भावितस्य त्रिसप्तधा ।
क्षुद्राफलरसैर्मुद्गतुल्या कार्या वटी शुभा ॥ २९ ॥
मुखस्था हरते सर्वस्वरभङ्गमसंशयम् ।
गोरक्षनाथैर्गदिता स्वरभेदे कृपालुभिः ॥ ३० ॥

इति गोरक्षवटी ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां स्वरभेदनिदानचिकित्साकथनं नामै-
काशीतितमस्तरङ्गः ॥ ८१ ॥

अथ अशीतितमस्तरङ्गः ।

अथारोचकनिदानम्-

अरोचको भवेद्दोषैर्जिह्वाहृदयसंश्रयैः ।

संनिपातेन मनसः संतापेन च पञ्चमः ॥ १ ॥

वातादिभिः शोकभयातिलोमक्रोधैर्मनोघ्नाशनरूपगन्धैः ।

अरोचकाः स्युः परिहृष्टदन्तकषायवक्त्रत्वमतोऽनिलेन ॥ २ ॥

कटुम्लमुष्णं विरसं च पूति पित्तेन विद्यालवणं च वक्त्रम् ।

माधुर्यपैच्छिल्यगुरुत्वशैत्यविरुद्धसंबन्धयुतं कफेन ॥ ३ ॥

अरोचके शोकभयातिलोमक्रोधाद्यहृद्याशुचिगन्धजे स्यात् ।

स्वामाविकं चाऽऽस्यमथारुचिश्च त्रिदोषजे नैकरसं भवेच्च ॥ ४ ॥

हृच्छूलपीडनयुतं पवनेन पित्ता-

सृङ्गदाहचोषबहुलं सकफप्रसेकम् ।

श्लेष्मात्मकं बहुरुजं बहुभिश्च दौषै-

र्देगुण्यमोहजडताभिरथापरं च ॥ ५ ॥

अरोचकोऽयमाख्यातो भक्तद्वेषमतः शृणु ।

चिन्तयित्वा तु मनसा दृष्ट्वा श्रुत्वा तु भोजनम् ॥ ६ ॥

द्वेषमायाति यो जन्तुर्भक्तद्वेषः स उच्यते ।

कुपितस्य भयार्तस्य यस्य भक्तनिरोधजः ।

यस्य नान्ने भवेच्छ्रद्धा सोऽभक्तच्छन्द उच्यते ॥ ७ ॥

इत्यरोचकनिदानम् ।

अथ चिकित्सा-

वस्तिः समीरणे पित्ते विरेको वमनं कफे ।

सर्वजे सर्वकर्माहं हर्षणं स्यादरोचके ॥ ८ ॥

वान्तो वचान्द्विरनिले विधिवत्पिबेत्तु

स्नेहाम्लतोयमदिरान्यतमेन चूर्णम् ।

कृष्णाविडङ्गयवभस्महरेणुभार्गी-

रास्त्रैलहिङ्गुलवणोत्तमनागराणाम् ॥ ९ ॥

पैत्ते गुडाम्बुमधुकैर्वमनं प्रशस्तं

लेहः ससैन्धवसितामधुसर्पिरिष्टः ।



निम्बाम्बुना कृतवमेः कफजेऽनुपानं
 राजहृमाम्बु मधुना सह दीप्यकाढ्यम् ॥ १० ॥
 चूर्णं यदुक्तमथ वाऽनिलजे तदेव
 सर्वैस्तु सर्वकृतमेनमुपक्रमेत ।
 इच्छाविनाशमयजेषु च बाधकेषु
 माषान्विभावय तथा खलु साध्यरूपान् ॥ ११ ॥
 [*अर्थेषु चातिपतितेषु पुनर्भावाय
 पौराणिकैः श्रुतिपथैरनुमानयेत्तम् (तान्)] ।
 सात्त्व्यान्स्वदेशरचितान्विविधांश्च भक्ष्यान्
 पानानि मूलफलखाड्यवरागलेहान् ॥ १२ ॥
 सेवेद्रसांश्च विविधान्विविधैः प्रयोगै-
 र्भुञ्जीत चापि लघुरूक्षमनःसुखानि ॥ १३ ॥
 अम्लिका मुद्गतोयं च त्वगेलामरिचान्वितम् ।
 अमक्तच्छन्दरोगेषु शस्तं कवलधारणम् ॥ १४ ॥

अथाम्लिकापानकम्—

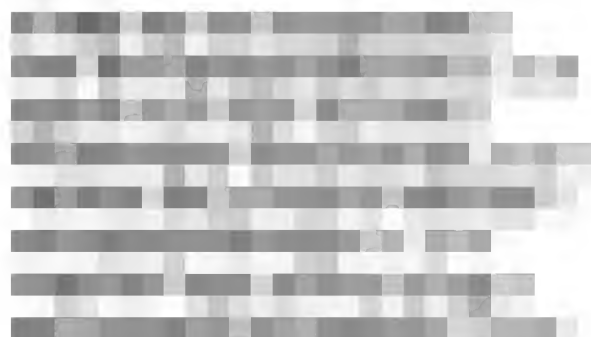
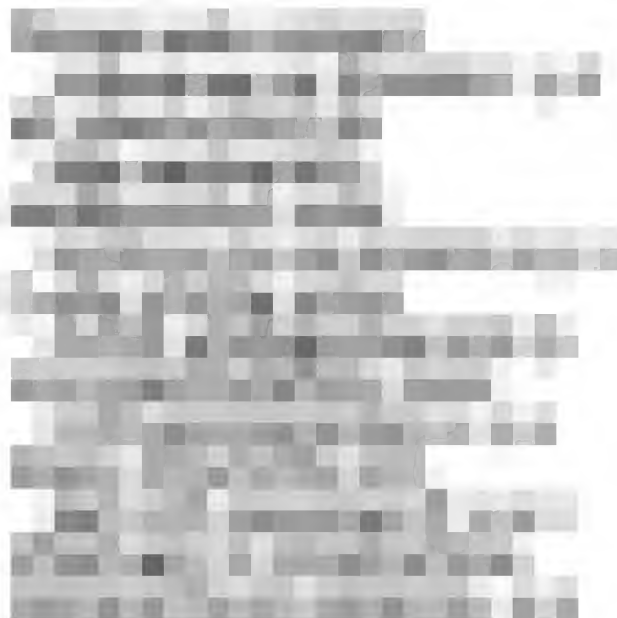
मोज्जग्रे सदा पथ्यं लवणाद्विकमक्षणम् ।
 रोचनं दीपनं बह्वेर्जिह्वाकण्ठविशोधनम् ॥ १५ ॥
 शृङ्गवेररसं वाऽपि मधुना सह योजयेत् ।
 अरुचिश्वासकासघ्नं प्रतिश्यायकफापहम् ॥ १६ ॥
 पक्वाम्लिका सिता शीतवारिणा वस्त्रगालिता ।
 एलालवङ्गकर्पूरमरिचैरवधूलिता ॥ १७ ॥
 पानकस्यास्य गण्डूषं धारयित्वा मुखे मुहुः ।
 अरुचिं नाशयत्येव पित्तं प्रशमयेत्तथा ॥ १८ ॥

इत्यम्लिकापानकम् ।

अथ मठः—

राजिका जीरको मृष्टो मृष्टं हिङ्गु च मागरम् ।
 सैन्धवं दधि गोः सर्वं वस्त्रपूतं प्रकल्पयेत् ॥ १९ ॥

* धनुश्चिह्नान्तर्गतमिदमर्थं ग. पुस्तकस्थम् ।



तावन्मात्रं क्षिपेत्तत्र यथा स्यादुरुचिरुत्तमा ।
तक्रमेतद्भवेत्सद्यो रोचनं वह्निदीपनम् ॥ २० ॥

इति मठः ।

अथ चत्वारः कवलग्रहाः—

धान्यैलापङ्ककोशीरपिप्पलीचन्दनोत्पलम् ।
कुष्ठसौवर्चलाजजीशर्करामरिचं विडम् ॥ २१ ॥
लोध्रं तेजोवती पक्ष्या ऽयूषणं सयवाग्रजम् ।
आर्द्रदाडिमनिर्यासश्चाजजीशर्करायुतः ॥ २२ ॥
सतैलमाक्षिकाश्चैते चत्वारः कवलग्रहाः ।
चतुरोऽरोचकान्हन्युर्वाताद्येकजसर्वजान् ॥ २३ ॥

इति चत्वारः कवलग्रहाः ।

अथ कारव्यादिगुटिका—

कारव्यजाजिमरिचं द्राक्षावृक्षाम्लदाडिमम् ।
सौवर्चलं गुडक्षौद्रमेषां कार्या गुटी शुभा ॥ २४ ॥
बदरास्थिमिता साऽऽस्ये धृताऽरोचकनाशिनी ।

इति कारव्यादिगुटिका ।

अथ यवानीखाडवं चूर्णम्—

यवानीं तित्तिडीकं च नागरं चाम्लवेतसम् ॥ २५ ॥
दाडिमं बदरं चाम्लं कार्ष्णिकाण्युपकल्पयेत् ।
धान्यसौवर्चलाजजी वराङ्गं चार्धकार्ष्णिकम् ॥ २६ ॥
पिप्पलीनां शतं चैकं द्वे शते मरिचस्य च ।
शर्करायास्तु चत्वारि पलान्येकत्र चूर्णयेत् ॥ २७ ॥
यवानीखाडवाख्यं तु चूर्णमेतदरोचकम् ।
हन्त्येव प्रातरेतत्तत्स्थापितं च मुखे मुहुः ॥ २८ ॥
जिह्वाविशोधनं हृद्यं दीपनं मक्तरुचनम् ।
हृत्पीडापार्श्वशूलघ्नं विबन्धानाहनाशनम् ।
कासश्वासहरं ग्राहि ग्रहण्यर्शोविकारनुत् ॥ २९ ॥

इति यवानीखाडवं चूर्णम् ।

अथ लवङ्गादिचूर्णम्—

लवङ्गकङ्कोलमुशीरचन्दनं नतं सनीलोत्पलकृष्णजीरकम् ।
जलं सकृष्णागरुभृङ्गकेसरं कणा च विश्वानलदं सहैलया ॥ ३० ॥

the first of these is the fact that the
the second is the fact that the
the third is the fact that the
the fourth is the fact that the
the fifth is the fact that the
the sixth is the fact that the
the seventh is the fact that the
the eighth is the fact that the
the ninth is the fact that the
the tenth is the fact that the
the eleventh is the fact that the
the twelfth is the fact that the
the thirteenth is the fact that the
the fourteenth is the fact that the
the fifteenth is the fact that the
the sixteenth is the fact that the
the seventeenth is the fact that the
the eighteenth is the fact that the
the nineteenth is the fact that the
the twentieth is the fact that the
the twenty-first is the fact that the
the twenty-second is the fact that the
the twenty-third is the fact that the
the twenty-fourth is the fact that the
the twenty-fifth is the fact that the
the twenty-sixth is the fact that the
the twenty-seventh is the fact that the
the twenty-eighth is the fact that the
the twenty-ninth is the fact that the
the thirtieth is the fact that the
the thirty-first is the fact that the
the thirty-second is the fact that the
the thirty-third is the fact that the
the thirty-fourth is the fact that the
the thirty-fifth is the fact that the
the thirty-sixth is the fact that the
the thirty-seventh is the fact that the
the thirty-eighth is the fact that the
the thirty-ninth is the fact that the
the fortieth is the fact that the
the forty-first is the fact that the
the forty-second is the fact that the
the forty-third is the fact that the
the forty-fourth is the fact that the
the forty-fifth is the fact that the
the forty-sixth is the fact that the
the forty-seventh is the fact that the
the forty-eighth is the fact that the
the forty-ninth is the fact that the
the fiftieth is the fact that the
the fifty-first is the fact that the
the fifty-second is the fact that the
the fifty-third is the fact that the
the fifty-fourth is the fact that the
the fifty-fifth is the fact that the
the fifty-sixth is the fact that the
the fifty-seventh is the fact that the
the fifty-eighth is the fact that the
the fifty-ninth is the fact that the
the sixtieth is the fact that the
the sixty-first is the fact that the
the sixty-second is the fact that the
the sixty-third is the fact that the
the sixty-fourth is the fact that the
the sixty-fifth is the fact that the
the sixty-sixth is the fact that the
the sixty-seventh is the fact that the
the sixty-eighth is the fact that the
the sixty-ninth is the fact that the
the seventieth is the fact that the
the seventy-first is the fact that the
the seventy-second is the fact that the
the seventy-third is the fact that the
the seventy-fourth is the fact that the
the seventy-fifth is the fact that the
the seventy-sixth is the fact that the
the seventy-seventh is the fact that the
the seventy-eighth is the fact that the
the seventy-ninth is the fact that the
the eightieth is the fact that the
the eighty-first is the fact that the
the eighty-second is the fact that the
the eighty-third is the fact that the
the eighty-fourth is the fact that the
the eighty-fifth is the fact that the
the eighty-sixth is the fact that the
the eighty-seventh is the fact that the
the eighty-eighth is the fact that the
the eighty-ninth is the fact that the
the ninetieth is the fact that the
the ninety-first is the fact that the
the ninety-second is the fact that the
the ninety-third is the fact that the
the ninety-fourth is the fact that the
the ninety-fifth is the fact that the
the ninety-sixth is the fact that the
the ninety-seventh is the fact that the
the ninety-eighth is the fact that the
the ninety-ninth is the fact that the
the hundredth is the fact that the

22

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

निरुच्यते छर्दिरिति दोषो वक्रं प्रधावितः ।

पूर्वरूपमाह—

हृत्पासोद्गाररोधौ च प्रसेको लवणस्तनुः ।

द्वेषोऽन्नपाने च भृशं वमीनां पूर्वलक्षणम् ॥ ५ ॥

वातजामाह—

हृत्पार्श्वपीडामुखशोषशीर्षनाभ्यर्तिकासस्वरभेदतोदैः ।

उद्गारशब्दं प्रबलं सफेनं विच्छिन्नकृष्णं तनुकं कषायम् ॥ ६ ॥

कृच्छ्रेण चाल्पं महता च वेगेनाऽऽर्तोऽनिलाच्छर्दयतीह दुःखम् ।

पित्तजामाह—

मूर्छापिपासामुखशोषमूर्धतात्वक्षिसंतापतमोभ्रमार्तः ॥ ७ ॥

पीतं भृशोष्णं हरितं सतिक्तं धूम्रं च पित्तेन वमेत्सदाहम् ।

कफजामाह—

तन्द्रास्यमाधुर्यकफप्रसेकसंतोषनिद्रारतिगौरवार्तः ॥ ८ ॥

स्निग्धं घनं स्वादु कफाद्विशुद्धं सलोमहर्षोऽल्परुजं वमेत्तु ।

त्रिदोषजामाह—

शूलाविपाकारुचिदाहतृष्णाश्वासप्रमोहप्रबलं प्रसक्तम् ॥ ९ ॥

छर्दिच्छिदोषाल्लवणाम्लनीलं सान्द्रोष्णरक्तं वमतां नृणां स्यात् ।

विट्स्वेदमूत्राम्बुवहानि वायुः स्रोतांसि संरुध्य यदोर्ध्वमेति ॥ १० ॥

उत्सन्नदोषस्य समाचितं तं दोषं समुद्भूय नरस्य कोष्ठात् ।

विण्मूत्रयोस्तत्समगन्धवर्णं तृट्श्वासकासारितियुतं प्रसक्तम् ॥ ११ ॥

प्रच्छर्दयेद्दुष्टमिहातिवेगात्तयाऽर्दितश्चाऽऽशु विनाशमेति ।

बीभत्सजामाह—

बीभत्सजा दौहृदजाऽऽमजा स्यादसात्म्यतो वा कृमिजा च या हि ।

सा पञ्चमी तां च विभावयेद्वा दोषोच्छ्रयेणैव यथोक्तमादौ ॥ १२ ॥

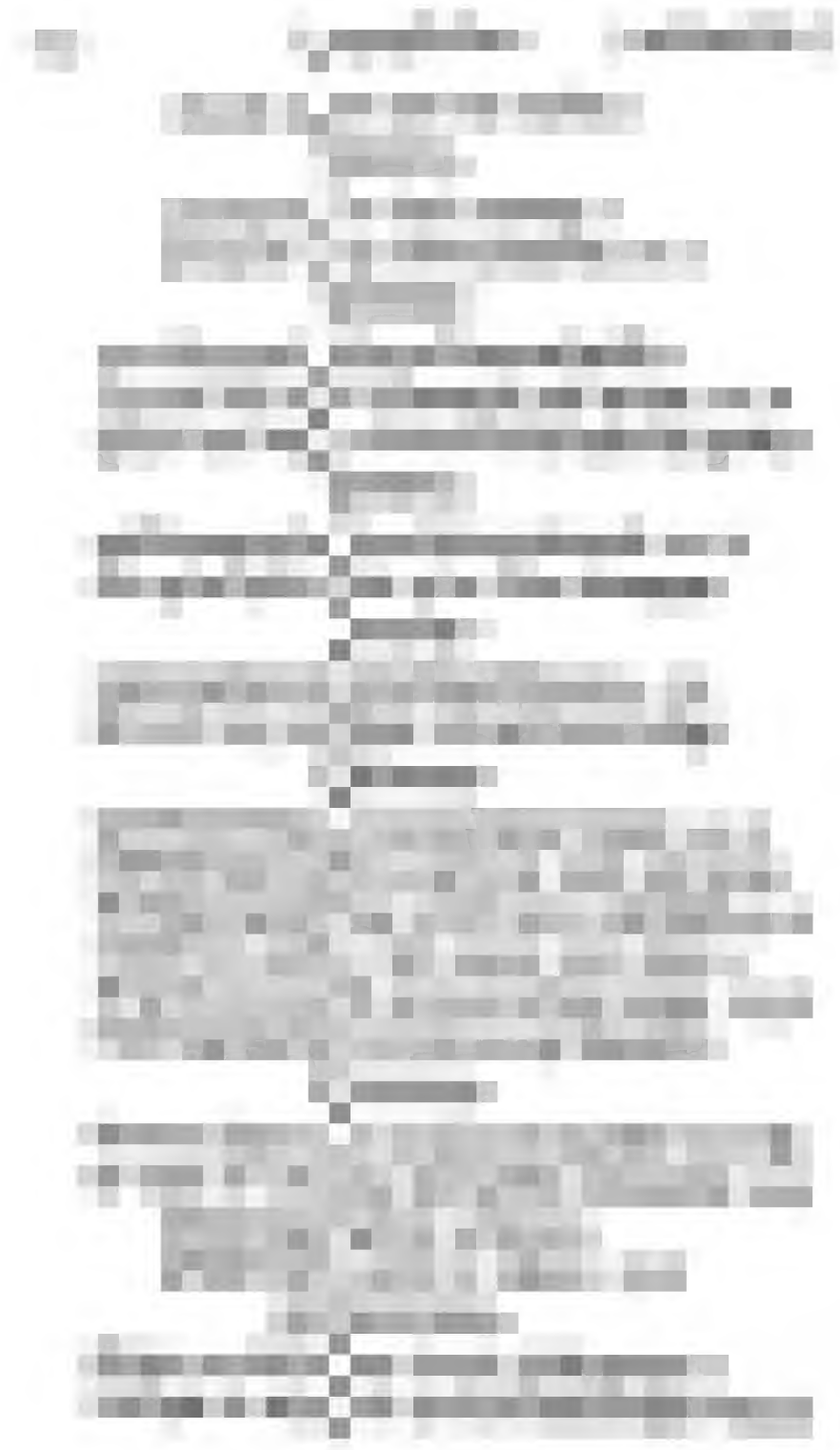
शूलहृत्पासबहुला कृमिजा तु विशेषतः ।

कृमिहृद्गोगतुल्येन लक्षणेन च लक्षिता ॥ १३ ॥

साध्यासाध्यत्वमाह—

क्षीणस्य वा छर्दिरतिप्रसक्ता सोपद्रवा शोणितपूययुक्ता ।

सचन्द्रिकां तां प्रवदेदसाध्यां साध्यां चिकित्सेन्निरुपद्रवां च ॥ १४ ॥



तदुपद्रवानाह—

कासः श्वासो ज्वरो हिक्का तृष्णा वैचित्यमेव च ।

हृद्रोगस्तमकश्चैव ज्ञेयाश्छर्दिरुपद्रवाः ॥ १५ ॥

इति च्छर्दिनिदानम् ।

अथैतच्चिकित्सा—

वातच्छर्दिः । धान्यकादिः—

आमाशयोत्क्लेशभवा हि सर्वाश्छर्द्यो मता लङ्घनमेव तस्मात् ।

प्राकारयेन्मारुतजां विना तु संशोधनं वा कफपित्तहारि ॥ १६ ॥

ससैन्धवं पिबेत्सर्पिर्वातच्छर्दिनिवारणम् ।

लवणत्रयसंयुक्तं संयुक्तं लवणेन वा ।

हन्यात्क्षीरोदकं पीतं छर्दिं पवनसंभवाम् ॥ १७ ॥

धान्याकविश्वदशमूलकषायसिद्धान्

यूषान् रसान् पवनवन्म्यरुचिप्रशान्त्यै ।

पीत्वा सुखानि लभते मधुमिश्रितं वा

शङ्खाह्वयाः स्वरसमूषणचूर्णयुक्तम् ॥ १८ ॥

इति धान्यकादिः । इति वातच्छर्दिः ।

अथ लाजादियूषाः—

लाजामसूरयवमुद्रकृता यवागू-

श्छर्द्यां हिता मधुयुता बहुपित्तजायाम् ।

यूषः सुगन्धिमधुतिक्तरसप्रगाढो

मृद्भट्टलोष्टभवमम्बु हितं तृषायाम् ॥ १९ ॥

इति लाजादियूषाः ।

अथ चन्दनपानकम्—

चन्दनस्याक्षमात्रेण संयोज्याऽऽमलकीरसम् ।

पिबेन्माक्षिकसंयुक्तं पित्तच्छर्दिनिवृत्तये ॥ २० ॥

इति चन्दनपानकम् ।

अथ चन्दनाद्यवलेहः—

चन्दनं च मृणालं च बालकं तगरं वृषः ।

सतण्डुलोदकक्षौद्रकलक एनां वमिं जयेत् ॥ २१ ॥

इति चन्दनाद्यवलेहः ।

THE
JOURNAL
OF
THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
OF GREAT BRITAIN AND IRELAND
VOLUME 10
PART 1
1880
LONDON
PUBLISHED BY THE INSTITUTE
1880

अथ मुद्रकषायः-

कषायो भृष्टमुद्रस्य सलाजमधुशर्करः ।

छर्द्यतीसारतृड्दाहज्वरेषु स उदाहृतः ॥ २२ ॥

इति मुद्रकषायः ।

अथ पर्पटकाथः-

काथः पर्पटजः पीतः सक्षौद्रः शिशिरीकृतः ।

पित्तच्छर्दिशिरस्तापचक्षुर्दाहानपोहति ॥ २३ ॥

इति पर्पटकाथः ।

अथ हरीतक्यवलेहः-

हरीतकीनां चूर्णं तु लिह्यान्माक्षिकसंयुतम् ।

अधोभागीकृते दोषे पित्तच्छर्दिर्निवर्तते ॥ २४ ॥

इति हरीतक्यवलेहः ।

अथ मक्षिकाविडवलेहः-

सिताचन्दनमध्वाढ्यं विलिहेन्मक्षिकाशकृत् ।

सोपद्रवा पित्तमवा छर्दिरेतेन शाम्यति ॥ २५ ॥

इति मक्षिकाविडवलेहः ।

अथ लाजसक्त्वलेहिका-

सर्पिःक्षौद्रसितोपेताल्लजसक्तूलिहेत्तथा ।

पित्तच्छर्दिरेतेनाऽऽशु प्रशाम्यति सुदुस्तरा ॥ २६ ॥

इति लाजसक्त्वलेहिका । इति पित्तच्छर्दिः ।

अथ कफच्छर्दिः-

छर्द्या कफोद्भवायां तु वमनं कारयेद्भिषक् ।

तोयैः सर्षपसिन्धूत्थराठनिम्बकणायुतैः ॥ २७ ॥

शस्यन्ते शालिगोधूमयवमुद्रमकुष्ठकाः ।

षष्टिकास्तक्रयूषश्च पटोलाद्याश्च भोजने ॥ २८ ॥

विडङ्गत्रिफलाविश्वचूर्णं मधुयुतं लिहेत् ।

शाम्यत्यनेन कफजा छर्दिः सोपद्रवा नृणाम् ॥ २९ ॥

इति कफच्छर्दिः ।

一、
二、
三、
四、
五、
六、
七、
八、
九、
十、
十一、
十二、
十三、
十四、
十五、
十六、
十七、
十八、
十九、
二十、
二十一、
二十二、
二十三、
二十四、
二十五、
二十六、
二十七、
二十八、
二十九、
三十、
三十一、
三十二、
三十三、
三十四、
三十五、
三十六、
三十七、
三十八、
三十九、
四十、
四十一、
四十二、
四十三、
四十四、
四十五、
四十六、
四十七、
四十八、
四十九、
五十、
五十一、
五十二、
五十三、
五十四、
五十五、
五十六、
五十七、
五十八、
五十九、
六十、
六十一、
六十二、
六十三、
六十四、
六十五、
六十六、
六十七、
六十八、
六十九、
七十、
七十一、
七十二、
七十三、
七十四、
七十五、
七十六、
七十七、
七十八、
七十九、
八十、
八十一、
八十二、
八十三、
八十四、
八十五、
八十六、
八十七、
八十八、
八十九、
九十、
九十一、
九十二、
九十三、
九十四、
九十五、
九十六、
九十七、
九十八、
九十九、
一百、

अथ धात्रीफलादिपानकम्—

पिष्ट्वा धात्रीफलं द्राक्षां शर्करां च पलोन्मिताम् ।

दत्त्वा मधुपलं चैव कुडवं सलिलस्य च ॥ ३० ॥

वाससा गालितं पीतं हन्ति च्छर्दिं त्रिदोषजाम् ।

इति धात्रीफलादिपानकम् ।

अथ मसूरसक्तुः—

मसूरसक्तवः क्षौद्रं मर्दितं दाडिमाम्मसा ॥ ३१ ॥

पीता निवारयन्त्याशु च्छर्दिं दोषत्रयोद्भवाम् ॥ ३२ ॥

इति मसूरसक्तुः ।

अथैलायं चूर्णम्—

एलालवङ्गजकेसरकोलमज्जा-

लाजाप्रियङ्गुघनचन्दनपिप्पलीनाम् ।

चूर्णं सितामधुयुतं मनुजो बिलिह्य

छर्दिं निहन्ति कफमारुतपित्तजाताम् ॥ ३३ ॥

इत्यैलायं चूर्णम् ।

अथ त्रिदोषच्छर्दिः—

यथा त्रिकटुधान्याकजीरकाणां रजो लिहन् ।

मधुना नाशयेच्छर्दिमरुचिं च त्रिदोषजाम् ॥ ३४ ॥

इति त्रिदोषच्छर्दिः ।

अथ सामान्यच्छर्दिः । कोलायवलेहः—

कोलामलकमज्जानो मक्षिकाविट्सिता मधु ।

सकृष्णतण्डुलो लेहश्छर्दिमाशु व्यपोहति ॥ ३५ ॥

इति कोलायवलेहः ।

अथ लाजादियोगत्रयम्—

मनःशिलामागधिकोषणानां चूर्णं कपित्थाम्लरसेन युक्तम् ।

लाजैः समांशैर्मधुनाऽवलीढं छर्दिं प्रसक्तामसकृन्निहन्ति ॥ ३६ ॥

अश्वत्थवल्कलं शुष्कं दग्ध्वा निर्वापितं जले ।

तद्वारि पानतो नूनं छर्दिं जयति दुस्तराम् ॥ ३७ ॥

लाजाकपित्थमधुमागधिकोषणानां

क्षौद्रामयान्निकटुधान्यकजीरकाणाम् ।

...
...
...
...
...

...
...
...
...

...
...
...
...
...
...

...
...
...
...
...
...
...
...

...
...
...
...
...
...
...
...
...

पथ्यामृतामरिचमाक्षिकपिप्पलीनां

लेहास्त्रयः सकलवम्यरुचिप्रशान्त्यै ॥ ३८ ॥

इति लाजादियोगत्रयम् ।

अथाऽऽम्रास्थ्यादिकाथः—

आम्रास्थिविल्वनिर्यूहः पीतः समधुशर्करः ।

निहन्ति च्छर्द्यतीसारं वैश्वानर इवाऽऽहुतिम् ॥ ३९ ॥

इत्याम्रास्थ्यादिकाथः ।

अथ बिल्वादिः—

बिल्वत्वचो गुडूच्या वा काथः क्षौद्रेण संयुतः ।

छर्दिं त्रिदोषजां हन्ति पर्पटः पित्तजां तथा ॥ ४० ॥

इति बिल्वादिः ।

अथ जम्बूपल्लावादि—

जम्ब्वाम्रपल्लवशृतं क्षौद्रं दत्त्वा सुशीतलं तोयम् ।

लाजैरवचूर्ण्य पिबेच्छर्द्यतिसारे परं सिद्धम् ॥ ४१ ॥

इति जम्बूपल्लावादि ।

अथ पद्मकायं घृतम्—

पद्मकामृतनिम्बानां धान्यचन्दनयोः पचेत् ।

कल्के काथे च हविषः प्रस्थं छर्दिनिवारणम् ॥ ४२ ॥

इति पद्मकायं घृतम् ।

अथ मयूरपक्षभस्मावलेहः—

मयूरपक्षतिं दग्ध्वा तद्भस्म मधुमिश्रितम् ।

लीङ्गा निवारयत्याशु च्छर्दिं सोपद्रवामपि ॥ ४३ ॥

इति मयूरपक्षभस्मावलेहः ।

अथ सामान्यविधिः—

पुराणगौणीभस्माम्भो मधुयुक्तं निपीय तु ।

छर्दिं छिनत्ति मनुज*स्तृणयामिव हुताशनः ॥ ४४ ॥

इति सामान्यविधिः ।

बीमत्संजामबीमत्सैर्हेतुभिः संहरेद्वमिम् ।

दौहदोत्थां वमिं हृद्यैः काङ्क्षितैर्वस्तुभिर्जयेत् ॥ ४५ ॥

* क. 'तृणानीव' इति पाठः ।

१ ग. 'त्वजां तु बी' ।

the first of these is the fact that the
the second is the fact that the
the third is the fact that the
the fourth is the fact that the
the fifth is the fact that the
the sixth is the fact that the
the seventh is the fact that the
the eighth is the fact that the
the ninth is the fact that the
the tenth is the fact that the
the eleventh is the fact that the
the twelfth is the fact that the
the thirteenth is the fact that the
the fourteenth is the fact that the
the fifteenth is the fact that the
the sixteenth is the fact that the
the seventeenth is the fact that the
the eighteenth is the fact that the
the nineteenth is the fact that the
the twentieth is the fact that the
the twenty-first is the fact that the
the twenty-second is the fact that the
the twenty-third is the fact that the
the twenty-fourth is the fact that the
the twenty-fifth is the fact that the
the twenty-sixth is the fact that the
the twenty-seventh is the fact that the
the twenty-eighth is the fact that the
the twenty-ninth is the fact that the
the thirtieth is the fact that the
the thirty-first is the fact that the
the thirty-second is the fact that the
the thirty-third is the fact that the
the thirty-fourth is the fact that the
the thirty-fifth is the fact that the
the thirty-sixth is the fact that the
the thirty-seventh is the fact that the
the thirty-eighth is the fact that the
the thirty-ninth is the fact that the
the fortieth is the fact that the
the forty-first is the fact that the
the forty-second is the fact that the
the forty-third is the fact that the
the forty-fourth is the fact that the
the forty-fifth is the fact that the
the forty-sixth is the fact that the
the forty-seventh is the fact that the
the forty-eighth is the fact that the
the forty-ninth is the fact that the
the fiftieth is the fact that the
the fifty-first is the fact that the
the fifty-second is the fact that the
the fifty-third is the fact that the
the fifty-fourth is the fact that the
the fifty-fifth is the fact that the
the fifty-sixth is the fact that the
the fifty-seventh is the fact that the
the fifty-eighth is the fact that the
the fifty-ninth is the fact that the
the sixtieth is the fact that the
the sixty-first is the fact that the
the sixty-second is the fact that the
the sixty-third is the fact that the
the sixty-fourth is the fact that the
the sixty-fifth is the fact that the
the sixty-sixth is the fact that the
the sixty-seventh is the fact that the
the sixty-eighth is the fact that the
the sixty-ninth is the fact that the
the seventieth is the fact that the
the seventy-first is the fact that the
the seventy-second is the fact that the
the seventy-third is the fact that the
the seventy-fourth is the fact that the
the seventy-fifth is the fact that the
the seventy-sixth is the fact that the
the seventy-seventh is the fact that the
the seventy-eighth is the fact that the
the seventy-ninth is the fact that the
the eightieth is the fact that the
the eighty-first is the fact that the
the eighty-second is the fact that the
the eighty-third is the fact that the
the eighty-fourth is the fact that the
the eighty-fifth is the fact that the
the eighty-sixth is the fact that the
the eighty-seventh is the fact that the
the eighty-eighth is the fact that the
the eighty-ninth is the fact that the
the ninetieth is the fact that the
the ninety-first is the fact that the
the ninety-second is the fact that the
the ninety-third is the fact that the
the ninety-fourth is the fact that the
the ninety-fifth is the fact that the
the ninety-sixth is the fact that the
the ninety-seventh is the fact that the
the ninety-eighth is the fact that the
the ninety-ninth is the fact that the
the hundredth is the fact that the

लङ्घनैर्वमनैर्वाऽपि सात्म्यैर्वाऽसात्म्यसंभवाम् ।

कृमिहृद्रोगवच्चापि साधयेत्कृमिजां वमिम् ॥ ४६ ॥

यथादोषं च वितरेच्छस्तं विधिमनन्तरम् ।

पवनघ्नी चिरोत्थासु प्रयोज्या छर्दिषु क्रिया ॥ ४७ ॥

रसबलिघनसारकोलमज्जामरकुसुमाम्बुधरप्रियङ्गुलाजाः ।

मलयजमगधात्वगेलपत्रं दलितमिदं परिभाव्य चन्दनादिः ॥ ४८ ॥

मधुमारिचयुतं रजोऽस्य माषं जयति वमिं प्रबलां विलिह्य मर्त्यः ॥ ४९ ॥

इति पारदादिचूर्णम् ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां वमिनिदानचिकित्साकथनं नाम त्र्यशी-

तितमस्तरङ्गः ॥ ८९ ॥

अथ चतुरशीतितमस्तरङ्गः ।

अथ तृष्णानिदानम्—

मयश्रमाभ्यां बलसंक्षयाद्वा ऊर्ध्वं श्रितं पित्तविवर्धनैश्च ।

पित्तं सवातं कुपितं नराणां तालुप्रपन्नं जनयेत्पिपासाम् ॥ १ ॥

संततं यः पिबेत्तोयं न तृप्तिमधिगच्छति ।

पुनः काङ्क्षति तोयं यस्तं तृष्णादितमादिशेत् ॥ २ ॥

स्रोतःस्वपांवाहिषु दूषितेषु दोषैश्च तृट् संभवतीह जन्तोः ।

तिस्रः स्मृतास्ताः क्षतजा चतुर्थी क्षयात्तथाऽन्याऽऽमसमुद्भवा च ॥ ३ ॥

भक्तोद्भवा सप्तमिकेति तासां निबोध लिङ्गान्यनुपूर्वशस्तु ।

ताल्वोष्ठकण्ठस्य च तोददाहौ संतापमोहभ्रमविप्रलापाः ॥ ४ ॥

पूर्वाणि रूपाणि भवन्ति तासामुत्पत्तिकाले तु विशेषतो हि ।

वातजामाह—

क्षामास्यता मारुतसंभवायास्तोदस्तथा शङ्खशिरःसु चापि ॥ ५ ॥

स्रोतोनिरोधो विरसं च वक्त्रं सीताभिरान्निश्च विवृद्धिमेति ।

पित्तजामाह—

मूर्च्छान्नविद्वेषविलापदाहा रक्तेक्षणत्वं प्रततश्च शोषः ॥ ६ ॥

शीताभिनन्दो मुखतिक्तता च पित्तात्मिकायां परिदूयनं च ।

the first of these is the fact that the
the second is the fact that the
the third is the fact that the
the fourth is the fact that the
the fifth is the fact that the

the sixth is the fact that the
the seventh is the fact that the
the eighth is the fact that the
the ninth is the fact that the
the tenth is the fact that the
the eleventh is the fact that the
the twelfth is the fact that the
the thirteenth is the fact that the
the fourteenth is the fact that the
the fifteenth is the fact that the
the sixteenth is the fact that the
the seventeenth is the fact that the
the eighteenth is the fact that the
the nineteenth is the fact that the
the twentieth is the fact that the

the twenty-first is the fact that the
the twenty-second is the fact that the
the twenty-third is the fact that the
the twenty-fourth is the fact that the
the twenty-fifth is the fact that the
the twenty-sixth is the fact that the
the twenty-seventh is the fact that the
the twenty-eighth is the fact that the
the twenty-ninth is the fact that the
the thirtieth is the fact that the

कफजामाह—

बाष्पावरोधात्कफसंवृतेऽग्नौ तृष्णा बलासेन भवेन्नरस्य ॥ ७ ॥
निद्रा गुरुत्वं मधुरास्यता च तृष्णादितः शुष्यति चातिमात्रम् ।

क्षतजामाह—

क्षतस्य रुक्शोणितनिर्गमाभ्यां तृष्णा चतुर्थक्षतजा मता सा ॥ ८ ॥

क्षयजामाह—

रसक्षयाद्या क्षयसंभवा च तयाऽभिभूतश्च निशादिनेषु ।
पेपीयतेऽम्भः स सुखं न याति सा संनिपातादिति केचिदाहुः ॥ ९ ॥

रसक्षयजामाह—

रसक्षयोक्तानि च लक्षणानि तस्यामशेषेण भिषग्व्यवस्येत् ।

त्रिदोषजामाह—

त्रिदोषलिङ्गामसमुद्भवा च हृच्छूलनिष्ठीवनसादकर्त्री ।
स्निग्धं तथाऽऽम्लं लवणं च भुङ्क्ते गुर्वन्नमेवाऽऽशु तृषां करोति ॥
दीनः स्वरः प्रताम्ये दीनाननशुष्कहृदयगलतालुः ।
भवति खलु सोपसर्गात्तृष्णा सा शोषिणी कष्टा ॥ ११ ॥

असाध्यत्वमाह—

ज्वरमोहक्षयकासश्वासाद्युपसृष्टदेहानाम् ।
सर्वास्त्वतिप्रसक्ता रोगकृशानां वमिप्रसक्तानाम् ॥
धोरोपद्रवयुक्ता तृष्णा मरणाय विज्ञेया ॥ १२ ॥
इति तृष्णानिदानम् ।

अथ तृष्णाचिकित्सा—

तृष्णाविवृद्धावुदरे च पूर्णे तं वामयेन्मागधिकोदकेन ।
विलेहनं चात्र हितं वदन्ति स्याद्वाडिमाश्रातकमातुलुङ्गैः ॥ १३ ॥
सुवर्णरूप्यादिभिरग्नितामैर्लोष्टैः कृतं वा सिकतापलैर्वा ।
जलं सुखोष्णं शमयेच्च तृष्णां सशर्करं क्षौद्रयुतं जलं वा ॥ १४ ॥
वातघ्नमन्नपानं मृदु लघु शीतं च वाततृष्णायाम् ।
देयं सुगन्धितैलं शिरसि च गात्रेषु सर्वेषु ॥ १५ ॥
तृष्णायां पवनोत्थायां सगुडं दधि शस्यते ।

— — — — —

— — — — —
— — — — —
— — — — —

— — — — —
— — — — —

— — — — —
— — — — —
— — — — —

— — — — —
— — — — —

— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —

— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —

— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —

— — — — —

अथ पित्तजा—

स्वादु तिक्तं द्रवं शीतं पित्ततृष्णाहरं परम् ॥ १६ ॥
 काश्मर्यशर्करायुक्तं चन्दनोशीरधान्यकम् ।
 द्राक्षामधुकसंसिद्धं पित्ततर्पे जलं पिबेत् ॥ १७ ॥
 जीर्णभक्तः पिबेद्वाऽपि सक्षौद्रं तण्डुलोदकम् ।

अथ कफजा—

तिक्तद्रवं कटूष्णं च कफतृष्णानिवारणम् ।
 अन्नपानौषधं सर्वं प्रदद्यात्कफतृड्युते ॥ १८ ॥
 विद्धाढकीधातकिपञ्चकोलदर्भेषु सिद्धं कफजां निहन्ति ।
 हितं भवेच्छर्दिनमेव चात्र तप्तेन निम्बप्रसवोदकेन ॥ १९ ॥
 मुस्तपर्पटकोदीच्यच्छत्राख्योशीरचन्दनैः ।
 शृतं शीतं जलं दद्यात्तृड्दाहज्वरशान्तये ॥ २० ॥

छत्रा धान्याकम् ।

अथ षडङ्गपानम् ।

अथ सामान्यविधिः—

सजीरकान्याद्रकशृङ्गबेर-
 सौवर्चलान्यर्धजलप्लुतानि ।
 मद्यानि हृद्यानि च गन्धवन्ति
 पीतानि सद्यः शमयन्ति तृष्णाम् ॥ २१ ॥
 लाजोदकं मधुयुतं पीतं श्वेताविमिश्रितम् ।
 द्राक्षाखर्जूरसंयुक्तं पिबेत्तृष्णार्दितो नरः ॥ २२ ॥
 शर्कराकेशरक्षौद्रकणाजीरकदाडिमैः ।
 स्नेहो वा तृड्जयी कृष्णामधुक्षीरदुमाङ्कुरैः ॥ २३ ॥
 अम्लदाडिमबीजं धात्रीफलं च धान्याम्लैः ।
 आर्द्रपटास्तरणगतः प्रावृतगात्रस्तृषं हन्ति ॥ २४ ॥
 गोस्तनीक्षुरसक्षीरयष्टीमधुमधूतप्लैः ।
 नियतं नस्यतः पीतैस्तृष्णा शाम्यति दारुणा ॥ २५ ॥
 क्षीरेक्षुरसमृद्धीकाक्षौद्रसिन्धुगुडोदकैः ।
 सहवृक्षाम्लगण्डूषस्तालुशोषतृडन्तकृत ॥ २६ ॥
 वैशद्यं जनयत्यास्ये संदधाति मुखे जलम् ।
 तृष्णादाहप्रशमनं मधुगण्डूषधारणम् ॥ २७ ॥



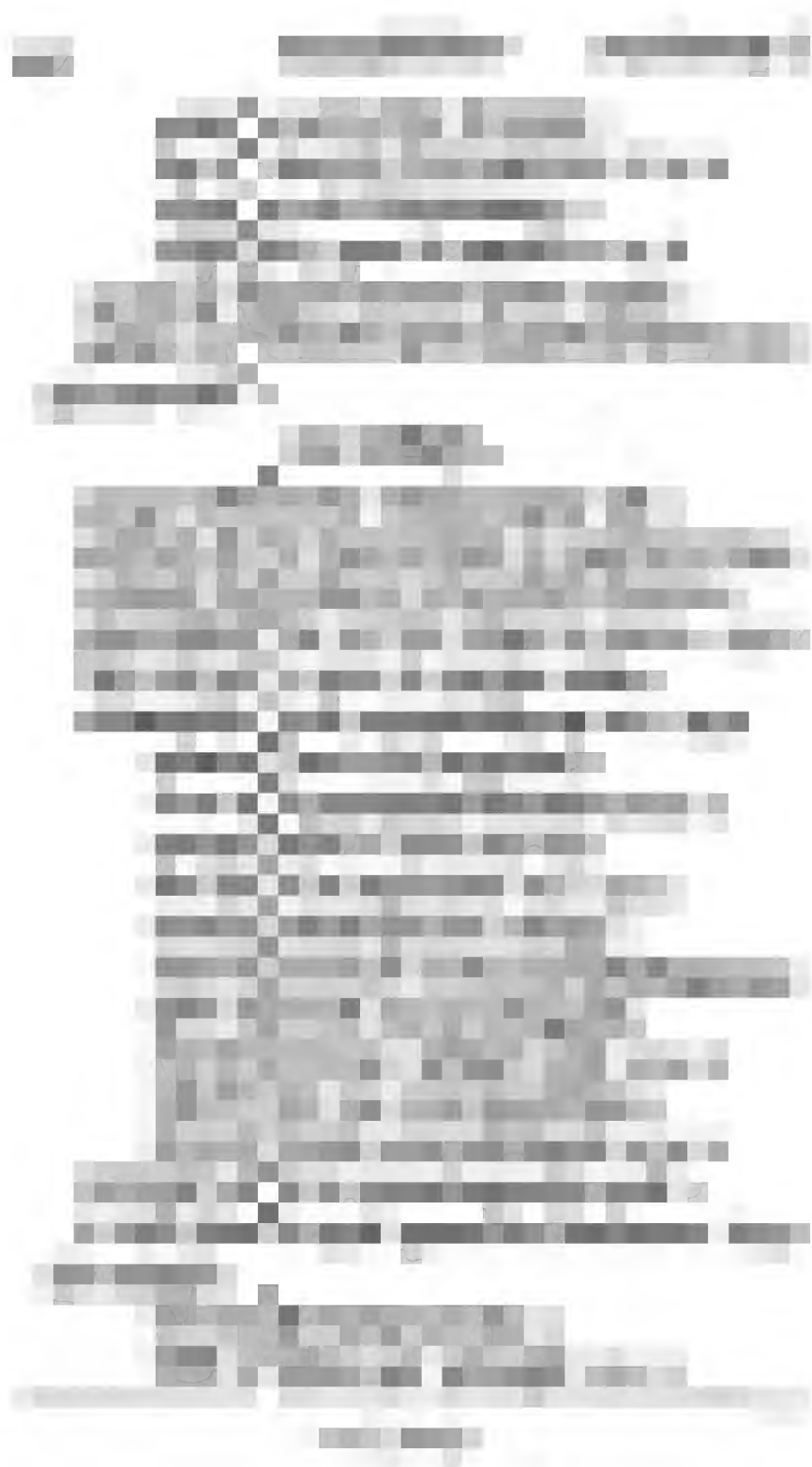
दाडिमं बदरं लोघं कपित्थं बीजपूरकम् ।
 पिष्ट्वा लेपः शिरस्थेषां पिपासादाहनाशनः ॥ २८ ॥
 मधुयुक्तं जलं शीतं पिबेदाकण्ठमातुरः ।
 पश्चाद्भेदशेषं तु तृष्णा तेन प्रशाम्यति ॥ २९ ॥
 वटप्ररोहं मधुं कुष्ठमुत्पलं सलाजचूर्णं गुटिकां प्रकुर्यात् ।
 सुसंहिता सा वदने विधारिता तृष्णां प्रवृद्धामपि हन्त्यशेषतः ॥ ३० ॥
 इति सामान्यविधिः ।

अथ रसादिगुटी—

क्षतोद्भवां रुग्निनिवारणेन जयेद्रसानामसृजश्च पानैः ।
 क्षयोत्थितां क्षीरजलं निहन्यान्मांसोदकं वा मधुकोदकं वा ॥ ३१ ॥
 आमोद्भवां बिल्ववचादिकानां जयेत्कषायैरपि दीपनानाम् ।
 गुर्वन्नजामुल्लिखनैर्जयेच्च क्षयं विना सर्वकृतां च तृष्णाम् ॥ ३२ ॥
 स्निग्धे भक्ष्ये भुक्ते या तृष्णा तां गुडाम्बुना शमयेत् ।
 अतिरूक्षदुर्बलानां तृष्णां शमयेन्नृणामिहाऽऽशु पयः ॥ ३३ ॥
 छागमांसरसं साज्यं शीतं समधुशर्करम् ।
 पीत्वा जयति तृड्दाहमूर्च्छाछर्दिमदात्ययान् ॥ ३४ ॥
 तृष्यन्पूर्वामयक्षीणो न लभेत जलं यदि ।
 मरणं दीर्घरोगं वा प्राप्नुयात्स्वरितं नरः ॥ ३५ ॥
 सात्त्व्यान्नपानभैषज्यैस्तृष्णार्तस्य जयेत्तृषम् ।
 तस्यां जितायामन्योऽपि व्याधिः शक्यश्चिकित्सितुम् ॥ ३६ ॥
 तृषितो मोहमायाति मोहात्प्राणान्विमुञ्चति ।
 तस्मात्सर्वास्ववस्थासु न कचिद्वारि वार्यते ॥ ३७ ॥
 अन्नेनापि विना जन्तुः प्राणान्संधारयेच्चिरम् ।
 तोयाभावे पिपासार्तः क्षणात्प्राणैर्विमुच्यते ॥ ३८ ॥
 रसरजतगुटीं पटीयसीं यो वदनसरोरुहमध्यगां दधाति ।
 स जयति तृषितस्तृषं मनुष्यो भृशमघमिव त्रिमार्गगाम्भः ॥ ३९ ॥
 इति रसादिगुटी ।

रसगन्धककर्पूरैः सैलोक्षीरमरीचकैः ।

ससितैः क्रमवृद्धैश्च सूक्ष्मं चूर्णमहर्मुखे ॥ ४० ॥



त्रिगुञ्जाप्रमितं खादेत्पिबेत्पयुषिताम्बु च ।

भृशं तृषं निहन्त्येवमाश्विनेयप्रकाशितम् ॥ ४१ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां तृष्णानिदानचिकित्साकथनं नाम चतुरशीति-
तमस्तरङ्गः ॥ ८४ ॥

अथ पञ्चाशीतितमस्तरङ्गः ।

अथ मूर्छानिदानम्—

क्षीणस्य बहुदोषस्य विरुद्धाहारसेविनः ।

वेगाघातादभीघातान्द्वीनसत्त्वस्य वा पुनः ॥ १ ॥

करणायतनेषूग्रा बाह्येष्वाम्भ्यन्तरेषु च ।

निवसन्ति यदा दोषास्तदा मूर्च्छन्ति मानवाः ॥ २ ॥

संज्ञावहासु नाडीषु पिहितास्वनिलादिभिः ।

तमोऽभ्युपैति सहसा सुखदुःखव्यपोहकृत् ॥ ३ ॥

सुखदुःखव्यपोहाच्च नरः पतति काष्ठवत् ।

मोहो मूर्च्छेति तामाहुः षड्विधा सा प्रकीर्तिता ॥ ४ ॥

वातादिभिः शोणितेन मद्येन च विषेण च ।

षट्स्वप्नेतासु पित्तं तु प्रभुत्वेनावतिष्ठते ॥ ५ ॥

पूर्वरूपमाह—

हृत्पीडा जृम्भणं ग्लानिः संज्ञादौर्बल्यमेव च ।

सर्वासां पूर्वरूपाणि यथास्वं च विभावयेत् ॥ ६ ॥

वातजामाह—

नीलं वा यदि वा कृष्णमाकाशमथ वाऽरुणम् ।

पश्यंस्तमः प्रविशतिचिराच्च प्रतिबुध्यते ॥ ७ ॥

वेपथुश्चाङ्गमर्दश्च प्रपीडा हृदयस्य च ।

कार्श्यं यावारुणच्छाया मूर्छाये वातसंभवे ॥ ८ ॥

पित्तजामाह—

रक्तं हरितवर्णं वा वियत्पीतमथापि वा ।

पश्यंस्तमः प्रविशति सस्वेदश्च प्रबुध्यते ॥ ९ ॥



सपिपासः ससंतापो रक्तपीताकुलेक्षणः ।
जातमात्रे च पतति शीघ्रं च प्रतिबुध्यते ॥ १० ॥
संभिन्नवर्चाः पीतामो मूर्छाये पित्तसंभवे ।

कफजामाह—

मेघसंकाशमाकाशमावृतं वा तमोघनैः ॥ ११ ॥
पश्यंस्तमः प्रविशति चिराच्च प्रतिबुध्यते ।
गुरुभिः प्रावृत्तैरङ्गैर्यथैवाऽऽर्द्धेण चर्मणा ॥ १२ ॥
सप्रसेकः सहलासो मूर्छाये कफसंभवे ।

संनिपातजामाह—

सर्वाङ्गुतिः संनिपातादपस्मार इवाऽऽगतः ॥ १३ ॥
सा जन्तुं पातयत्याशु विना बीभत्सचेष्टितैः ।

पृथिव्यादिकमूर्छा—

पृथिव्यापस्तमो रूपं रक्तगन्धश्च तन्मयम् ॥ १४ ॥
तस्माद्रक्तस्य गन्धेन मूर्छन्ति भुवि मानवाः ।
द्रव्यस्वभाव इत्येके दृष्ट्वा यदभिमुह्यति ॥ १५ ॥

विषमद्यजे मूर्छे—

गुणास्तीव्रतरत्वेन स्थितास्तु विषमद्ययोः ।
त एव तस्मात्ताभ्यां तु मोहौ स्यातां यथेरितौ ॥ १६ ॥
स्तब्धाङ्गदृष्टिस्त्वसृजो गूढोच्छ्वासश्च मूर्छितः ।
मध्येन विलपञ्शेते नष्टविभ्रान्तमानसः ॥ १७ ॥
गात्राणि विक्षिपन्भूमौ जरां यावन्न याति तत् ।
वेषथुस्वप्नतृष्णाः स्युस्तमश्च विषमूर्छिते ॥ १८ ॥
वेदितव्यं तीव्रतरं यथास्वं विषलक्षणैः ।

तन्द्रामाह—

मूर्छां पित्ततमःप्राया रजःपित्तानिलाञ्जमः ॥ १९ ॥
तमो वातकफात्तन्द्रा निद्रा श्लेष्मतमोमवा ।
इन्द्रियार्थेष्वसंवित्तिर्गौरवं जृम्भणं क्लमः ॥ २० ॥
निद्रार्तस्यैव यस्यैते तस्य तन्द्रां विनिर्दिशेत् ।

कुमलक्षणमाह—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

योऽनायासः श्रमो देहे प्रवृद्धः श्वासवर्जितः ॥ २१ ॥

क्लमः स इति विज्ञेय इन्द्रियार्थप्रबाधकः ॥

तत्र संन्यासः—

दोषेषु मदमूर्च्छायां कृतवेगेषु देहिनाम् ॥ २२ ॥

स्वयमेवोपशाम्यन्ति संन्यासो नौषधैर्विना ।

वाग्देहमनसां चेष्टामाक्षिप्यातिबला मलाः ॥ २३ ॥

संन्यस्यन्त्यबलं जन्तुं प्राणायतनमाश्रिताः ।

स ना संन्याससंन्यस्तः काष्ठीभूतो मृतोपमः ॥ २४ ॥

प्राणैर्विमुच्यते शीघ्रं मुक्त्वा सद्यःफलां क्रियम् ॥ २५ ॥

इति मूर्छानिदानम् ।

अथ मूर्छाचिकित्सा—

वादित्रगीतानुनयैरपूर्वैर्विस्मापनैर्गुप्तफलप्रवर्षैः ।

आभिः क्रियाभिर्यदि न प्रसंज्ञस्तदाऽऽस्यलालापतनाद्विवर्ज्यः ॥ २६ ॥

मूर्छा मोहो द्विधा स प्रभवति सहजागन्तुभेदेन भिन्न-

स्तत्राऽऽगन्तुस्त्रिधा स्यादुधिरविषसुराजन्यभेदाद्विभिन्नः ।

प्रत्येकं दोषभेदान्भवति च सहजः स त्रिधा षट्सु पित्तं

प्राधान्येनेह तिष्ठेदभिदधति च तं द्वंद्वजं संनिपातम् ॥ २७ ॥

सेकावगाहा मणयः सहाराः शीताः प्रदेहा व्यजनानिलाश्च ।

शीतानि पानानि च गन्धवन्ति सर्वासु मूर्छास्वनिवारितानि ॥ २८ ॥

तत्रापि पित्तस्य प्राधान्यात्—

सिद्धानि वर्गे मधुरे पयांसि सदाडिमा जाङ्गलजा रसाश्च ।

तथा यवा लोहितशालयश्च मूर्छासु पथ्यास्तु सतीनमुद्राः ॥ २९ ॥

कोलमज्जोषणोशीरकेसरं शीतवारिणा ।

पीतं मूर्छां जयेल्लीह्वा कृष्णां वा मधुसंयुताम् ॥ ३० ॥

द्राक्षासितादाडिमलाजवन्ति कल्लारनीलोत्पलपद्मवन्ति ।

पिबेत्कषायाणि च शीतलानि पित्तज्वरे यानि च पाययन्ति ॥ ३१ ॥

महौषधामृताद्राक्षापुष्करं ग्रन्थिकोद्भवम् ।

पिबेत्कषायुतं काथं मूर्छायां च मदेषु च ॥ ३२ ॥

स्विन्नमामलकं पिष्ट्वा द्राक्षया सह संसृजेत् ।

विश्वभेषजसंयुक्तं मधुना सह लेहयेत् ॥ ३३ ॥

तेनास्य शाम्यते मूर्च्छा कासः श्वासस्तथैव च ।
 शिरीषबीजगोमूत्रकृष्णामरिचसैन्धवैः ॥ ३४ ॥
 अञ्जनं स्यात्प्रबोधाय सरसोनशिलावचैः ।
 अञ्जनं सम्यगारब्धं मधुसिन्धुशिलोषणैः ॥ ३५ ॥
 प्रमोहद्रोहि भवति भाषितं भिषजां वरैः ।
 मधुकसारं सिन्धूत्थवचोषणकणान्समान् ॥ ३६ ॥
 श्लक्ष्णान्पिष्ट्वाऽम्भसा नस्यं कुर्यात्संज्ञाप्रबोधनम् ।

धमे-

पिबेद्दुरालमाकाथं सघृतं भ्रमशान्तये ॥ ३७ ॥
 पथ्याकाथेन संसिद्धं घृतं धात्रीरसेन वा ।
 शुण्ठीकृष्णाशताह्वानां सामयानां पलं पलम् ॥ ३८ ॥
 गुडस्य षट्पलान्येषा गुटिका भ्रमनाशिनी ।
 ताम्रं दुरालमाकाथैः पीतं तु घृतसंयुतम् ।
 निवारयेद्धमं शीघ्रं तं यथा शम्भुभाषितम् ॥ ३९ ॥

तन्द्रायाम्-

तुरङ्गलालालवणोत्तमेन्दु-
 मनःशिलामागधिकोषणानि ।
 नियोजितान्यक्षिण विनिश्चितं द्वा-
 वतन्द्रां सनिद्रां विनिवारयन्ति ॥ ४० ॥
 सैन्धवं श्वेतमरिचं सर्षपाः कुष्ठमेव च ।
 बस्तमूत्रेण संपिष्टं नस्यं तन्द्रानिवारणम् ॥ ४१ ॥

श्वेतमरिचं शिशुबीजम् ।

शुण्ठीकणागस्तिरसोषणानि
 नस्येन तन्द्राविजयोल्बणानि ।
 क्षुद्राभृतापौष्करनागराणि

मार्गीशिवाभ्यां कथितानि पानात् ॥ ४२ ॥
 रक्तजायां तु मूर्च्छायां हितश्चायं क्रियाविधिः ।
 मद्यजायां पिबेन्मद्यं निद्रां सेवेद्यथासुखम् ॥ ४३ ॥
 विषजायां विषज्ञानि भेषजानि प्रयोजयेत् ।

—

—

—

—

—

—

—

—

अथ संन्यस्तचिकित्सा—

प्रभूतदोषस्तमसोऽतिरेका-

त्संमूर्छितो नैव विबुध्यते यः ।

संन्यस्तसंज्ञः स हि दुश्चिकित्स्यो

नरो भिषग्भिः परिकीर्तितोऽसौ ॥ ४४ ॥

अञ्जनान्य*वपीडाश्च धूमाः प्रथमनानि च ।

सूचीभिस्तोदनं शस्तं दाहः पीडा नखान्तरे ॥ ४५ ॥

लुञ्चनं केशलोम्नां च दन्तैर्दशनमेव च ।

आत्मगुप्तावघर्षश्च हितस्तस्य प्रबोधने ॥ ४६ ॥

सर्पिः कल्याणकं वाऽपि मदमूर्छां पहं पिबेत् ।

कणामधुयुतं सूतं मूर्छायामनुशीलयेत् ॥

शीतसेकावगाहादीन्सर्वाङ्गे पीडनं बृढम् ॥ ४७ ॥

अथ मारितताम्रचूर्णम्—

ताम्रचूर्णं समोशीरं केसरं शीतवारिणा ॥ ४८ ॥

पीतं मूर्छां द्रुतं हन्याद्वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥ ४९ ॥

इति मारितताम्रचूर्णम् ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां मूर्छानिदानचिकित्साकथनं नाम पञ्चाशीति-

तमस्तरङ्गः ॥ ८९ ॥

अथ षडशीतितमस्तरङ्गः ।

अथ पानात्ययनिदानम्—

ये विषस्य गुणाः प्रोक्तास्तेऽपि मध्ये प्रतिष्ठिताः ।

तेन मिथ्योपयुक्तेन भवत्युग्रो मदात्ययः ॥ १ ॥

किं तु मद्यं स्वभावेन यथैवान्नं तथा स्मृतम् ।

अयुक्तियुक्तं रोगाय युक्तियुक्तं यथाऽस्मृतम् ॥ २ ॥

प्राणाः प्राणभृतामन्नं तदयुक्त्या निहन्त्यसून् ।

विषं प्राणहरं तच्च युक्तियुक्तं रसायनम् ॥ ३ ॥

* क, कल्कीकृतौषधरसस्य नासापुटे दानम् ।



विधिना मात्रया काले हितैरन्नैर्यथाबलम् ।
 प्रहृष्टो यः पिबेन्मद्यं तस्य स्यादमृतोपमम् ॥ ४ ॥
 स्निग्धैस्तदन्नैर्मसैश्च भक्ष्यैः सह निषेवितम् ।
 भवेदायुष्प्रकर्षाय बलायोपचयाय च ॥ ५ ॥
 काम्यता मनसस्तुष्टिस्तेजो विक्रम एव च ।
 विधिवत्सेव्यमाने तु मद्ये संनिहिता गुणाः ॥ ६ ॥

अथ प्रथममदस्य गुणाः—

बुद्धिस्मृतिप्रीतिकरः सुखश्च पानान्ननिद्रारतिवर्धनश्च ।
 संपाठगीतस्वरवर्धनश्च प्रोक्तोऽतिरम्यः प्रथमो मदो हि ॥ ७ ॥

अथ द्वितीयः—

अव्यक्तबुद्धिस्मृतिवाग्बिचेष्टः सोन्मत्तलीलाकृतिरप्रशान्तः ।
 आलस्यनिद्राभिहतो मुहुश्च मध्येन मत्तः पुरुषो मदेन ॥ ८ ॥

अथ तृतीयः—

गच्छेद्गम्यां न गुरुंश्च मन्येत्खादेद्भक्ष्याणि च नष्टसंज्ञः ।
 मूयाच्च गुह्यानि हृदि स्थितानि मदे तृतीये पुरुषोऽस्वतन्त्रः ॥ ९ ॥

अथ चतुर्थः—

चतुर्थेऽतिमदे मूढो मग्नदार्ढ्व निष्क्रियः ।
 कार्याकार्यविभागाज्ञो मृतादप्यपरो मतः ॥ १० ॥
 को मदं तादृशं गच्छेदुन्मादमिव चापरम् ।
 बहुदोषमिवाऽऽरूढः कान्तारं स्ववशः कृती ॥ ११ ॥
 निर्भक्तमेकान्ततयैव मद्यं निषेव्यमाणं मनुजेन नित्यम् ।
 उत्पादयेत्कष्टतमान्विकारानापादयेच्चापि शरीरभेदम् ॥ १२ ॥
 क्रुद्धेन भीतेन पिपासितेन शोकाभितप्तेन बुभुक्षितेन ।
 व्यायाममाराध्वपरिक्षितेन वेगावरोधाभिहतेन वाऽपि ॥ १३ ॥
 अत्यम्लरूक्षावततोदरेण सार्जीर्णभुक्तेन तथाऽबलेन ।
 उष्णाभितप्तेन च सेव्यमानं करोति मद्यं विविधान्विकारान् ॥ १४ ॥
 पानात्ययं परमदं पानार्जीर्णमथापि वा ।
 पानविभ्रममुग्रं च तेषां वक्ष्यामि लक्षणम् ॥ १५ ॥

...

...

...

...

...

...

...

...

...

वातजमाह—

हिक्काश्वासशिरःकम्पपार्श्वशूलप्रजागरैः ।
विद्याद्बहुप्रलापस्य वातप्रायं मदात्ययम् ॥ १६ ॥

पित्तजमाह—

तृष्णादाहज्वरस्वेदमोहातीसारविभ्रमैः ।
विद्याद्धरितवर्णस्य पित्तप्रायं मदात्ययम् ॥ १७ ॥

कफजमाह—

छर्द्यरोचकहृत्लासतन्द्रास्तैमित्यगौरवैः ।
विद्याच्छीतपरीतस्य कफप्रायं मदात्ययम् ॥

त्रिदोषजमाह—

ज्ञेयस्त्रिदोषजश्चापि सर्वैर्लिङ्गैर्मदात्ययः ॥ १८ ॥

अथ परमदमाह—

श्लेष्मोच्छ्रयोऽङ्गगुरुता विरसास्यता च
विण्मूत्रसक्तिरथ तन्द्विररोचकश्च ।
लिङ्गं परस्य तु मदस्य वदन्ति तज्ज्ञास्तृष्णा-
रुजा शिरसि संधिषु चापि भेदः ॥ १९ ॥

पानार्जीर्णमाह—

आध्मानमुग्रमथ वोद्विरणं विदाहः
पाने त्वर्जीर्णमुपगच्छति लक्षणानि ।
ज्ञेयानि तत्र मिषजा सुविनिश्चितानि
पित्तप्रकोपजनितानि च कारणानि ॥ २० ॥

पानविभ्रममाह—

हृद्वात्रतोदकफसंस्त्रवकण्ठधूम-
मूर्छावमिज्वरशिरोरुजनप्रदेहाः ।
द्वेषः सुरान्नविकृतेषु च तेषु तेषु
तं पानविभ्रममुशन्त्यखिलेन धीराः ॥ २१ ॥

असाध्यानां मदात्ययादीनां लक्षणमाह—

हीनोत्तरोष्ठमतिशीतममन्ददाहं
तैलप्रमास्यमतिपानहतं त्यजेद्वा ।

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

जिह्वौष्ठदन्तमासितं त्वथ वाऽपि नीलं
पीते च यस्य नयने रुधिरप्रभे वा ॥ २२ ॥
हिक्का ज्वरो वमथुवेपथुपार्श्वशूलाः
कासभ्रमावपि च पानहतं भजन्ते ।

इति पानात्ययपरमदपानाजीर्णपानविभ्रमनिदानम् ।

अथैतच्चिकित्सा—

मद्यं त्वविधिना पीतं रोगान्पानात्ययादिकान् ।
करोति पूर्वं तेनात्र तत्पानविधिरुच्यते ॥ २३ ॥

यथा—

शुद्धकायः पिबेन्मद्यं प्रातःकाले पलद्वयम् ।
मध्याह्ने द्विगुणं तच्च स्निग्धाहारेण पाययेत् ॥ २४ ॥
प्रदोषेऽष्टपलं तद्वन्मात्रा मद्यरसायने ।

इति मद्यपानमात्रा ।

ग्रीष्मे तु शीतमधुरं माध्वीकादि पिबेन्निशि ॥ २५ ॥
शीतकाले तु तीक्ष्णोष्णं गौडिकं पैटिकादिकम् ।
वर्षाकाले वसन्ते च यत्किञ्चिन्मद्यमापिबेत् ॥ २६ ॥

पानस्य प्रशस्तिमाह—

वामा रामा रमणकुशला दक्षिणे पानपात्रं
धृत्वा चाग्रे मरिचलुलितं छागलं भृष्टमांसम् ।
वीणानादैः सरसकविभिर्मोदमानोऽतिमात्रं
सोऽयं धन्यः पिबति मदिरां भैरवो यस्य तुष्टः ॥ २७ ॥

अथ गद्यम्—

कुसुमितलतोपगूढप्रगूढनिरन्तरनवाङ्कुरनिकररोमाञ्चैर्मधुकरनिकरमधु-
मधुरझङ्कारसीत्कारैरुन्मत्तकण्ठकलकण्ठाकुण्ठकण्ठपूजितैः कूजितैर्दक्षि-
णसमीरणसमुल्लसितपल्लवकरप्रचारैस्तरुणतरुभिरालिङ्गिताभिर्लतानता-
ङ्गिभिरभिशोभमानेषु भवनोपवनेषु तुषारकरकिरणराजिविराजिते प्रदोषे
शृङ्गाररससंभारसंपूरितानेकभूषणकमनीयकामिनीसेवितं ललितललनो-
पनीयमानं सुरभिकुसुमैः कल्लारादिभिराह्लादकारिभ्यमनसं सोपदंशं

1. The first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

2. The second part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of chairman.

3. The third part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of secretary.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of treasurer.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of member-at-large.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of member-at-large.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of member-at-large.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of member-at-large.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of member-at-large.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of member-at-large.

मात्रापरिमितं वरतरसरसमानन्दसंदोहसमुदञ्चितं पशुजनवाञ्छितं मधु-
पानमुदञ्चयतीति विधिः ।

इति गद्यम् ॥२८॥

वातपानात्यय आह—

मद्यं सौवर्चलव्योषयुक्तं किञ्चिज्जलान्वितम् ।
जीर्णमद्याय दातव्यं वातपानात्ययापहम् ॥ २९ ॥
योजयेन्मातुलुङ्गाम्लदाडिमैः पानकान्यपि ।
स्निग्धोष्णलवणाम्लांश्च रसाञ्जाङ्गलजाञ्जुमान् ॥ ३० ॥
सूक्तं सौवर्चलं शृङ्गीञ्ज्यूषणार्द्रकदीपकैः ।
मद्यं पीत्वा जयत्युग्रं पवनोत्थं मदात्ययम् ॥ ३१ ॥

पित्तपानात्यय आह—

पित्तपानात्यये पेयं वटशृङ्गं हिमाम्बुना ।
सशर्करं पुनर्मद्यं पिबेत्किञ्चिज्जलान्वितम् ॥ ३२ ॥
द्राक्षामलकखर्जूरपरूषकहिमं पिबेत् ।
सिताविमिश्रितं पित्तपानात्ययविकारनुत् ॥ ३३ ॥

कफपानात्यय आह—

पानात्यये कफोत्थे तु तत्पीत्वोल्लेखनं चरेत् ।
यथाबलं लङ्घनं च दीपनीयौषधानि च ॥ ३४ ॥

अन्यच्च—

अभ्यङ्गोत्सादनस्नानवासोधूपानुलेपनैः ।
स्निग्धोष्णैस्तादृशैरन्नेर्वातप्रकृतिकः पिबेत् ॥ ३५ ॥
शीतोपचारैर्विविधैर्मधुरस्निग्धशीतलैः ।
फलैरन्नेः सह नरः पित्तप्रकृतिकः पिबेत् ॥ ३६ ॥
श्लैष्मिको जाङ्गलैर्मासैर्मरिचैर्मदिरां पिबेत् ।
प्राक्पिबेच्छ्लैष्मिको मद्यं भक्तस्योपरि पैत्तिकः ॥ ३७ ॥
वातिकस्तु पिबेन्मध्ये समदोषो यथेच्छति ।
वातिकस्तु पिबेन्मद्यं प्रायो गौडिकपैष्टिकम् ॥ ३८ ॥
कफपित्तात्मको यस्तु मार्द्विकं माधवं पिबेत् ।
विधिर्वसुमतामेष कथितश्चरकादिभिः ॥ ३९ ॥

1. **Introduction**
 2. **Background**
 3. **Methodology**
 4. **Results**
 5. **Conclusion**
 6. **References**
 7. **Appendix**
 8. **Figure 1**
 9. **Figure 2**
 10. **Figure 3**
 11. **Figure 4**
 12. **Figure 5**
 13. **Figure 6**
 14. **Figure 7**
 15. **Figure 8**
 16. **Figure 9**
 17. **Figure 10**
 18. **Figure 11**
 19. **Figure 12**
 20. **Figure 13**
 21. **Figure 14**
 22. **Figure 15**
 23. **Figure 16**
 24. **Figure 17**
 25. **Figure 18**
 26. **Figure 19**
 27. **Figure 20**
 28. **Figure 21**
 29. **Figure 22**
 30. **Figure 23**
 31. **Figure 24**
 32. **Figure 25**
 33. **Figure 26**
 34. **Figure 27**
 35. **Figure 28**
 36. **Figure 29**
 37. **Figure 30**
 38. **Figure 31**
 39. **Figure 32**
 40. **Figure 33**
 41. **Figure 34**
 42. **Figure 35**
 43. **Figure 36**
 44. **Figure 37**
 45. **Figure 38**
 46. **Figure 39**
 47. **Figure 40**
 48. **Figure 41**
 49. **Figure 42**
 50. **Figure 43**
 51. **Figure 44**
 52. **Figure 45**
 53. **Figure 46**
 54. **Figure 47**
 55. **Figure 48**
 56. **Figure 49**
 57. **Figure 50**
 58. **Figure 51**
 59. **Figure 52**
 60. **Figure 53**
 61. **Figure 54**
 62. **Figure 55**
 63. **Figure 56**
 64. **Figure 57**
 65. **Figure 58**
 66. **Figure 59**
 67. **Figure 60**
 68. **Figure 61**
 69. **Figure 62**
 70. **Figure 63**
 71. **Figure 64**
 72. **Figure 65**
 73. **Figure 66**
 74. **Figure 67**
 75. **Figure 68**
 76. **Figure 69**
 77. **Figure 70**
 78. **Figure 71**
 79. **Figure 72**
 80. **Figure 73**
 81. **Figure 74**
 82. **Figure 75**
 83. **Figure 76**
 84. **Figure 77**
 85. **Figure 78**
 86. **Figure 79**
 87. **Figure 80**
 88. **Figure 81**
 89. **Figure 82**
 90. **Figure 83**
 91. **Figure 84**
 92. **Figure 85**
 93. **Figure 86**
 94. **Figure 87**
 95. **Figure 88**
 96. **Figure 89**
 97. **Figure 90**
 98. **Figure 91**
 99. **Figure 92**
 100. **Figure 93**
 101. **Figure 94**
 102. **Figure 95**
 103. **Figure 96**
 104. **Figure 97**
 105. **Figure 98**
 106. **Figure 99**
 107. **Figure 100**
 108. **Figure 101**
 109. **Figure 102**
 110. **Figure 103**
 111. **Figure 104**
 112. **Figure 105**
 113. **Figure 106**
 114. **Figure 107**
 115. **Figure 108**
 116. **Figure 109**
 117. **Figure 110**
 118. **Figure 111**
 119. **Figure 112**
 120. **Figure 113**
 121. **Figure 114**
 122. **Figure 115**
 123. **Figure 116**
 124. **Figure 117**
 125. **Figure 118**
 126. **Figure 119**
 127. **Figure 120**
 128. **Figure 121**
 129. **Figure 122**
 130. **Figure 123**
 131. **Figure 124**
 132. **Figure 125**
 133. **Figure 126**
 134. **Figure 127**
 135. **Figure 128**
 136. **Figure 129**
 137. **Figure 130**
 138. **Figure 131**
 139. **Figure 132**
 140. **Figure 133**
 141. **Figure 134**
 142. **Figure 135**
 143. **Figure 136**
 144. **Figure 137**
 145. **Figure 138**
 146. **Figure 139**
 147. **Figure 140**
 148. **Figure 141**
 149. **Figure 142**
 150. **Figure 143**
 151. **Figure 144**
 152. **Figure 145**
 153. **Figure 146**
 154. **Figure 147**
 155. **Figure 148**
 156. **Figure 149**
 157. **Figure 150**
 158. **Figure 151**
 159. **Figure 152**
 160. **Figure 153**
 161. **Figure 154**
 162. **Figure 155**
 163. **Figure 156**
 164. **Figure 157**
 165. **Figure 158**
 166. **Figure 159**
 167. **Figure 160**
 168. **Figure 161**
 169. **Figure 162**
 170. **Figure 163**
 171. **Figure 164**
 172. **Figure 165**
 173. **Figure 166**
 174. **Figure 167**
 175. **Figure 168**
 176. **Figure 169**
 177. **Figure 170**
 178. **Figure 171**
 179. **Figure 172**
 180. **Figure 173**
 181. **Figure 174**
 182. **Figure 175**
 183. **Figure 176**
 184. **Figure 177**
 185. **Figure 178**
 186. **Figure 179**
 187. **Figure 180**
 188. **Figure 181**
 189. **Figure 182**
 190. **Figure 183**
 191. **Figure 184**
 192. **Figure 185**
 193. **Figure 186**
 194. **Figure 187**
 195. **Figure 188**
 196. **Figure 189**
 197. **Figure 190**
 198. **Figure 191**
 199. **Figure 192**
 200. **Figure 193**
 201. **Figure 194**
 202. **Figure 195**
 203. **Figure 196**
 204. **Figure 197**
 205. **Figure 198**
 206. **Figure 199**
 207. **Figure 200**
 208. **Figure 201**
 209. **Figure 202**
 210. **Figure 203**
 211. **Figure 204**
 212. **Figure 205**
 213. **Figure 206**
 214. **Figure 207**
 215. **Figure 208**
 216. **Figure 209**
 217. **Figure 210</**



1. The first step is to identify the problem or question that needs to be addressed. This involves understanding the context and the specific requirements of the task.



सौवर्चलमजार्जी च वृक्षाम्लं चाम्लवेतसम् ।

त्वगेलामरिचार्धांशं शर्कराभागयोजितम् ॥ ४० ॥

एतल्लवणमष्टाङ्गमग्निसंदीपनं परम् ।

मदात्यये कफोत्थे तु दद्यात्स्रोतोविशोधनम् ॥ ४१ ॥

अत्रैकद्रव्यभागा त्वगेला मरिचानि प्रत्येकमर्धभागानि शर्करा तु सौव-
र्चलादिभिस्तुल्या ।

इत्यष्टाङ्गलवणम् ।

सर्वजे सर्वमेवेदं प्रयोक्तव्यं चिकित्सितम् ।

आभिः क्रियाभिः सिद्धाभिः शान्तिं याति मदात्ययः ॥ ४२ ॥

न चेन्मद्यक्रमं हित्वा क्षीरमस्योपकल्पयेत् ।

लङ्घनाद्यैः कफे क्षीणे जाते दौर्बल्यलाघवे ॥ ४३ ॥

ततस्तुल्यगुणं क्षीरं विपरीतं तु मर्द्यतः ।

क्षीरप्रयोगं मद्यं च क्रमेणाल्पाल्पमाचरेत् ॥ ४४ ॥

मधुना हन्त्युपयुक्ता त्रिफला रात्रौ गुडार्द्रकं प्रातः ।

सप्ताहात्पथ्यभुजो मदमूर्च्छाकामलोन्मादान् ॥ ४५ ॥

अहानि सप्त वाऽष्टौ वा नृणां पानात्ययः स्मृतः ।

पानं हि मज्जते जीर्णमत ऊर्ध्वं विमार्गगम् ।

पानाजीर्णविनाशाय कुर्यात्कफहरं विधिम् ॥ ४६ ॥

पीतः सगुडः स्वरसः कुसुमफलस्य प्रकाममुषसि मुहुः ।

शमयति कोद्वज्जातं मदमतिवैकल्यकारकं सपदि ॥ ४७ ॥

धत्तूरकबीजमवं मदमपहरति प्रकाममापीतम् ।

छागीक्षीरं ससितं किं वा वृन्ताकवृन्तकस्वरसः ॥ ४८ ॥

समूर्च्छाच्छिद्यतीसारं मदं पूगफलोद्भवम् ।

सद्यः प्रशमयेत्पीतमाकण्ठं वारि शीतलम् ॥ ४९ ॥

वन्यकरीषाघ्राणाज्जलपानाल्लवणभक्षणादपि च ।

पूगजमदः प्रशाम्यति चूर्णरुजाशर्कराकवलात् ॥ ५० ॥

तत्क्षणान्मुदितं चूर्णं समाघ्रातं प्रणाशयेत् ।

ताम्बूलोत्थमदं पुंसामेकमेव स्वभावतः ॥ ५१ ॥

मद्यं पीत्वा यदि वा* तत्क्षणमवलेढि शर्करां सघृताम् ।

मदयति न जातु मद्यं मनागपि प्रथितवीर्यमपि ॥ ५२ ॥

* क. ना इति पाठान्तरम् ।

१ ग. 'द्यद्' । क्षी० । २ ग. हि मज्जते

The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that proper record-keeping is essential for ensuring the integrity of the financial system and for providing a clear audit trail. The document also highlights the need for transparency and accountability in all financial dealings.

The second part of the document outlines the specific procedures for recording transactions. It details the steps involved in the accounting process, from the initial entry of data into the system to the final review and approval of the records. The document also provides guidance on how to handle any discrepancies or errors that may arise during the process.

The third part of the document discusses the importance of regular audits and reviews. It explains that these activities are necessary to ensure that the financial system is operating correctly and that all transactions are properly recorded. The document also provides information on how to conduct an audit and what to look for during the process.

The fourth part of the document discusses the importance of maintaining the confidentiality of financial information. It explains that this information is often sensitive and that it is important to take steps to protect it from unauthorized access. The document also provides guidance on how to handle any breaches of confidentiality that may occur.

The fifth part of the document discusses the importance of keeping the financial system up-to-date. It explains that the system should be regularly updated with the latest information and that any changes should be properly documented. The document also provides information on how to manage the system and how to ensure that it is always available when needed.

The sixth part of the document discusses the importance of training and education. It explains that all personnel involved in the financial system should receive appropriate training and education to ensure that they are able to perform their duties correctly. The document also provides information on how to develop and implement a training program.

The seventh part of the document discusses the importance of communication. It explains that all personnel involved in the financial system should be kept informed of any changes or developments. The document also provides information on how to establish effective communication channels and how to ensure that all information is shared in a timely and accurate manner.

The eighth part of the document discusses the importance of documentation. It explains that all transactions and activities should be properly documented and that the documentation should be easily accessible. The document also provides information on how to develop and implement a documentation system.

The ninth part of the document discusses the importance of security. It explains that the financial system should be protected from any threats or attacks. The document also provides information on how to assess the security of the system and how to implement measures to improve it.

The tenth part of the document discusses the importance of compliance. It explains that the financial system should be operated in accordance with all applicable laws and regulations. The document also provides information on how to ensure compliance and how to handle any violations.

कट्फलमुस्तगुडूचीमाषैः क्रमवर्धितैश्च तत्सर्वम् ।
 घृतमर्दितमास्यधृतं हन्याद्गन्धं सुसंभवं सपदि ॥ ५३ ॥
 शतावरीरसक्षीरयष्टीकलकैः शृतं घृतम् ।
 पुनर्नवाक्काथपयः पानात्ययमपोहति ॥ ५४ ॥

अथ कज्जलीरसः—

जलप्लुतश्चन्दनभूषिताङ्गः स्रग्वी सभक्तां निशि सोपदंशाम् ।
 पिबेत्पुरां नैव लभेत रोगान्मनोमतिघ्नं च मदं न याति ॥ ५५ ॥
 यं दोषमधिकं पश्येत्तमेवाऽऽदौ विनिर्हरेत् ।
 कफस्थानानुपूर्या वा तुल्यदोषे मदात्यये ॥ ५६ ॥
 धात्रीस्वरसनिपीता रसगन्धककज्जली सितासहिता ।
 हरति मदात्ययरोगान्गरुत्मानिवोरगान्सहसा ॥ ५७ ॥
 इति कज्जलीरसः ।

इति योगतरङ्गिण्यां पानात्ययादिनिदानचिकित्साकथनं नाम
 षडशीतितमस्तरङ्गः ॥ ८६ ॥

अथ सप्ताशीतितमस्तरङ्गः ।

अथ दाहनिदानम्—

त्वचं प्रातः स पानोष्मा पित्तरक्ताभिमूर्छितः ।
 दाहं प्रकुरुते घोरं पित्तवत्तत्र भेषजम् ॥ १ ॥
 कृत्स्नदेहानुगं रक्तमुद्रिक्तं दहति ध्रुवम् ।
 शुष्यते तृष्यते चैव ताम्राभस्ताम्रलोचनः ॥ २ ॥
 लोहगन्धाङ्गवदनो वह्निनेवावकीर्यते ।
 पित्तज्वरसमः पित्तात्स चाप्यस्य विधिः स्मृतः ॥ ३ ॥
 तृष्णानिरोधादब्धातौ क्षीणे तेजः समुद्भूतम् ।
 सबाह्याभ्यन्तरं देहं प्रदहेन्मन्दचेतसः ॥ ४ ॥
 स शुष्कगलताल्वोष्ठो जिह्वां निष्कृष्य वेपते ।
 असृजः पूर्णकोष्ठस्य दाहो यः स्यात्स दुस्तरः ॥ ५ ॥
 धातुक्षयोत्थो यो दाहस्तेन मूर्च्छातृडन्वितः ।
 क्षामस्वरः क्रियाहीनः स सीदेद्भृशपीडितः ॥ ६ ॥

मर्माभिघातजोऽप्यस्ति सोऽसाध्यः सप्तमो मतः ।
 सर्व एव हि वज्याः स्युः शीतगात्रेषु देहिषु ॥ ७ ॥
 इति दाहनिदानम् ।

अथैतच्चिकित्सा-

शतधौतघृताभ्यर्क्तं लिह्यात्तं यवसक्तुभिः ।
 कोलामलकयुक्तैर्वा धान्याम्लैरपि बुद्धिमान् ॥ ८ ॥
 छादयेत्तस्य सर्वाङ्गं काञ्जिकाद्राम्बरेण च ।
 लामज्जकेन युक्तेन चन्दनेनानुलेपयेत् ॥ ९ ॥
 चन्दनाम्बुकणस्यन्दितालवृन्तोपधीजितः ।
 स्वप्याद्वाहार्दितोऽम्भोजकदलीदलसंस्तरे ॥ १० ॥
 परिषेकावगाहेषु व्यजनानां च सेवने ।
 शस्यते शिशिरं तोयं दाहतृष्णोपशान्तये ॥ ११ ॥
 फलिनीसेव्यलोध्राम्बु हेमपत्रं कुटन्नटम् ।
 कालीयकरसोपेतं दाहे शस्तं प्रलेपनम् ॥ १२ ॥
 हेमपत्रं नागकेसरपत्रम् ।

अथ चन्दनादिकाथः-

ह्रींभिरपत्रकोशीरचन्दनाम्बुजवारिणा ।
 संपूर्णमवगाहेत द्रोणीं दाहार्दितो नरः ॥ १३ ॥
 पित्तज्वरहरः सर्वः पित्तदाहे विधिर्मतः ।
 वाप्यः कमलहासिन्यो जलयन्त्रगृहाः शुभाः ॥ १४ ॥
 नार्यश्चन्दनादिग्धाङ्गन्यो दाहदैन्यहरा मताः ।
 पाययेत्कमलस्याम्भः शर्कराम्भः पयोऽपि च ॥ १५ ॥
 क्षीरमिक्षुरसं वाऽपि कारयेत्पित्तजिद्विधिम् ।
 पटीरपर्पटोशीरनीरनीरदनीरजैः ॥ १६ ॥
 मृणालमिशिधान्याकपञ्चकामलकैः कृतः ।
 अर्धशिष्टः सिताशीतः पीतः क्षौद्रसमन्वितः ॥ १७ ॥
 काथो विपोथयेद्दाहं क्षणाच्च परमोत्बलम् ।

पटीरं चन्दनम् ।

इति चन्दनादिकाथः ।

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

अथ कुशादितैलघृते—

कुशाद्रिशालिपर्णीभिर्जीवकर्षमसाधितम् ॥ १८ ॥

तैलं घृतं वा दाहघ्नं वातपित्तविनाशनम् ।

इति कुशादितैलघृते ।

अथ रसादिगुटी—

तिलतैलं भवेत्प्रस्थं तत्षोडशगुणे शनैः ॥ १९ ॥

काञ्जिके विपचेत्तस्यादाहज्वरहरं परम् ।

शाखाश्रयां यथान्यायं रोहिणीं व्यधयेच्छिराम् ॥ २० ॥

रक्तजातस्ततो दाहः प्रशाम्यति न संशयः ।

सशर्करं सेन्दुशैलं शीतमम्भः पिबेन्नरः ॥ २१ ॥

तृष्णानिरोधजं दाहं हन्ति तोयमिवानलम् ।

पीत्वा वेणुत्वचः क्वाथं सक्षौद्रं शिशिरं नरः ॥ २२ ॥

रक्तसंपूर्णकोष्ठोत्थदाहं जयति दुस्तरम् ।

धातुक्षयोत्थं दाहं तु जयेद्विद्यार्थसाधनैः ।

क्षीरमांसरसाहारैर्विधिनोक्तेन तत्र च ॥ २३ ॥

रसबलिघनसारचन्दनानां सनलदसेव्यपयोदजीवनानाम् ।

अपहरति गुटी मुखस्थितेयं सकलसमुत्थितदाहमाशु वाति ॥ २४ ॥

इति रसादिगुटी ।

इति योगतरङ्गिण्यां दाहनिदानचिकित्साकथनं नाम सप्ताशीति-

तमस्तरङ्गः ॥ ८७ ॥

अथाष्टाशीतितमस्तरङ्गः ।

अथोन्मादनिदानम्—

मदयन्त्युद्धता दोषा यस्मादुन्मार्गमास्थिताः ।

मानसोऽयमतो व्याधिरुन्माद इति कीर्तितः ॥ १ ॥

एकैकशः सर्वशश्च दोषैरत्यर्थमूर्च्छितैः ।

मानसेन च दुःखेन स पञ्चविध उच्यते ॥ २ ॥



विषाद्भवति षष्ठश्च यथास्वं तत्र मेषजम् ।

स चाप्रवृद्धस्तरुणो मदसंज्ञां विभर्ति च ॥ ३ ॥

विरुद्धदुष्टाशुचिभोजनानि प्रधर्षणं देवगुरुद्विजानाम् ।

उन्मादहेतुर्भयहर्षपूर्वो मनोभिघातो विषमाश्च चेष्टाः ॥ ४ ॥

तैरल्पसत्त्वस्य मलाः प्रदुष्टा बुद्धेर्निवासं हृदयं प्रदूष्य ।

स्रोतांस्यधिष्ठाय मनोवहानि प्रमोहयन्त्याशु नरस्य चेतः ॥ ५ ॥

उन्मादस्य सामान्यं रूपमाह-

धीविभ्रमः सत्त्वपरिप्लवश्च पर्याकुला हृष्टिरधीरता च ।

अबद्धवाक्यं हृदयं च शून्यं सामान्यमुन्मादगदस्य लिङ्गम् ॥ ६ ॥

वातजमाह-

रूक्षालपशीतान्नविरेकधातुक्षयोपवासैरनिलोऽतिवृद्धः ।

चिन्तादिदुष्टं हृदयं प्रविश्य बुद्धिं स्मृतिं चाप्युपहन्ति शीघ्रम् ॥ ७ ॥

अस्थानहासस्मितनृत्यगीतवाङ्मनोविक्षेपणरोदनानि ।

पारुष्यकाश्र्यारुणवर्णता च जीर्णे बलं वाऽनिलजस्य रूपम् ॥ ८ ॥

पित्तजमाह-

अजीर्णकट्वम्लविदाह्यशीतैर्भोज्यैश्चितं पित्तमुदीर्णवेगम् ।

उन्मादमत्युग्रमनात्मकस्य हृदि स्थितं पूर्ववदाशु कुर्यात् ॥ ९ ॥

अमर्षसंरम्भविनम्रभावाः संतर्जनाभिद्रवणौष्ण्यदोषाः ।

प्रच्छाद्यशीतान्नजलाभिलाषी पीतप्रभः पित्तकृतस्य लिङ्गम् ॥ १० ॥

कफजमाह-

संपूरणैर्मन्दविचेष्टितस्य सोष्मा कफो मर्मणि संप्रवृद्धः ।

बुद्धिं स्मृतिं चाप्युपहन्ति चित्तं प्रमोहयन्संजनयेद्विकारम् ॥ ११ ॥

वाक्चेष्टितं मन्दमरोचकं च

नारीविविक्तप्रियतां च निद्रा ।

छर्दिश्च लाला च बलं च भुक्ते

नखादिशौक्ल्यं च कफात्मके स्यात् ॥ १२ ॥

संनिपातजमाह-

यः संनिपातप्रभवो हि घोरः

सर्वैः समस्तैः सह हेतुभिः स्यात् ।

The first part of the paper discusses the importance of the
 second part of the paper discusses the importance of the
 third part of the paper discusses the importance of the
 fourth part of the paper discusses the importance of the
 fifth part of the paper discusses the importance of the
 sixth part of the paper discusses the importance of the
 seventh part of the paper discusses the importance of the
 eighth part of the paper discusses the importance of the
 ninth part of the paper discusses the importance of the
 tenth part of the paper discusses the importance of the

[illegible]

1. The first step is to identify the problem or question that needs to be answered. This involves understanding the context and the specific requirements of the task.

1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 26

Abstract

Abstract

सर्वाणि रूपाणि विमर्ति तावु-
ग्विरुद्धभैषज्यविधिर्विवर्ज्यः ॥ १३ ॥

मनोविकारजमाह—

चौरैर्नरेन्द्रपुरुषै रिरुमिस्तथाऽन्यै-
र्वित्रासितस्य धनबान्धवसंक्षयाद्वा ।
गाढं क्षते मनसिजप्रियया रिरंसो-
र्जायेत चोत्कटतरो मनसो विकारः ॥ १४ ॥

विषजमाह—

चित्रं ब्रवीति च मनोनुगतं विसंज्ञो
गायत्यतो हसति रोदिति चापि मूढः ।
रक्तेक्षणां हतबलेन्द्रियमाः सुदीनः
श्यावाननो विषकृतेन भवेद्विसंज्ञः ॥ १५ ॥

असाध्यत्वमाह—

अवाङ्मुखस्तून्मुखो वा क्षीणमांसबलो नरः ।
जागरूको ह्यसंदेहमुन्मादेन विनश्यति ॥ १६ ॥

भूतजमाह—

अमर्त्यवाग्विक्रमवीर्यचेष्टां ज्ञानादिविज्ञानबलादिभिर्यः ।
उन्मादकालो नियतश्च यस्य भूतोत्थमुन्मादमुदाहरन्ति ॥ १७ ॥

देवजुष्टमाह—

संतुष्टः शुचिरतिदिव्यमाल्यगन्धो
निस्तन्द्रो ह्यवितथसंस्कृतप्रभाषी ।
तेजस्वी स्थिरनयनो वरप्रदाता
ब्रह्मण्यो भवति नरः स देवजुष्टः ॥ १८ ॥

दैत्यजुष्टमाह—

संस्वेदी द्विजगुरुदेवदोषवक्ता
जिह्वाक्षो विगतमयो विमार्गदृष्टिः ।
संतुष्टो न भवति चाक्षपानजातै-
र्दृष्टात्मा भवति स देवशत्रुजुष्टः ॥ १९ ॥

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that proper record-keeping is essential for the integrity of the financial system and for the ability to detect and prevent fraud. The document also notes that accurate records are necessary for the preparation of financial statements and for the calculation of taxes.

2. The second part of the document describes the various methods used to collect and analyze data. It includes a detailed discussion of the different types of data that can be collected, such as financial data, operational data, and customer data. It also discusses the various techniques used to analyze this data, including statistical analysis, data mining, and machine learning.

3. The third part of the document discusses the importance of data security and privacy. It emphasizes that organizations must take appropriate measures to protect their data from unauthorized access, disclosure, and destruction. It also discusses the various legal and regulatory requirements that apply to data security and privacy, such as the General Data Protection Regulation (GDPR) and the California Consumer Privacy Act (CCPA).

4. The fourth part of the document discusses the importance of data governance. It emphasizes that organizations must have a clear and consistent policy for managing their data, including policies for data collection, storage, use, and disposal. It also discusses the various roles and responsibilities that are involved in data governance, such as data owners, data stewards, and data custodians.

5. The fifth part of the document discusses the importance of data quality. It emphasizes that organizations must ensure that their data is accurate, complete, and consistent. It also discusses the various techniques used to measure and improve data quality, such as data profiling, data cleansing, and data validation.

6. The sixth part of the document discusses the importance of data integration. It emphasizes that organizations must be able to integrate data from different sources and systems in order to get a complete and accurate picture of their business. It also discusses the various techniques used to integrate data, such as data warehousing, data lakes, and data integration platforms.

7. The seventh part of the document discusses the importance of data analytics. It emphasizes that organizations must be able to analyze their data in order to identify trends, patterns, and insights that can be used to improve their business. It also discusses the various techniques used to analyze data, such as descriptive analytics, diagnostic analytics, predictive analytics, and prescriptive analytics.

8. The eighth part of the document discusses the importance of data visualization. It emphasizes that organizations must be able to present their data in a clear and concise manner that is easy to understand. It also discusses the various techniques used to visualize data, such as charts, graphs, and dashboards.

9. The ninth part of the document discusses the importance of data communication. It emphasizes that organizations must be able to communicate their data findings to the appropriate stakeholders in a clear and concise manner. It also discusses the various techniques used to communicate data, such as reports, presentations, and dashboards.

10. The tenth part of the document discusses the importance of data ethics. It emphasizes that organizations must be aware of the ethical implications of their data practices and must take appropriate measures to ensure that they are acting in a responsible and ethical manner. It also discusses the various ethical principles that apply to data, such as transparency, accountability, and fairness.

गन्धर्वग्रहपरिपीडितमाह-

हृष्टात्मा पुलिनवनान्तरोपसेवी
स्वाचारः प्रियपरिगीतगन्धमालयः ।
नृत्यन्वै प्रहसति चारु चालपशब्दं
गन्धर्वग्रहपरिपीडितो मनुष्यः ॥ २० ॥

यक्षग्रहपरिपीडितमाह-

ताम्राक्षः प्रियतनुरक्तवस्त्रधारी
गम्भीरो द्रुतगतिरल्पवाक्सहिष्णुः ।
तेजस्वी वदति च किं ददामि कस्मै
यो यक्षग्रहपरिपीडितो मनुष्यः ॥ २१ ॥

पितृग्रहाभिजुष्टमाह-

प्रेतानां स दिशति संस्तरेषु पिण्डा-
ञ्जान्तात्मा जलमपि चापसव्यवस्त्रः ।
मांसेक्षुस्तिलगुडपायसाभिकाम-
स्तद्भक्तो भवति पितृग्रहाभिजुष्टः ॥ २२ ॥

भुजङ्गमजुष्टमाह-

यस्तूष्यं प्रसरति सर्पवत्कदाचि-
त्सृक्किण्यौ विलिहति जिह्वया तथैव ।
क्रोधात्तुलुङ्गमधुदुग्धपायसेप्सु-
विज्ञेयो भवति भुजङ्गमेन जुष्टः ॥ २३ ॥

राक्षसगृहीतमाह-

मांसासृग्विविधसुराविकारलिप्सु-
निर्लज्जो भृशमतिनिष्ठुरोऽतिशूरः ।
क्रोधात्तुर्विपुलबलो निशाविचारी
शौचद्विड्भवति स राक्षसैर्गृहीतः ॥ २४ ॥

पिशाचजुष्टमाह-

उद्धस्तः कृशपरुषो विरुद्धभाषी
दुर्गन्धो भृशमशुचिस्तथाऽतिलोकः ।
बह्वशी विजनवनान्तरोपसेवी
व्याचेष्टन्भ्रमति रुदनपिशाचजुष्टः ॥ २५ ॥

1. The first part of the paper discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. This is essential for ensuring the integrity of the financial statements and for providing a clear audit trail.

2. The second part of the paper focuses on the importance of maintaining accurate records of all transactions. This is essential for ensuring the integrity of the financial statements and for providing a clear audit trail.

3. The third part of the paper discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. This is essential for ensuring the integrity of the financial statements and for providing a clear audit trail.

4. The fourth part of the paper focuses on the importance of maintaining accurate records of all transactions. This is essential for ensuring the integrity of the financial statements and for providing a clear audit trail.

5. The fifth part of the paper discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. This is essential for ensuring the integrity of the financial statements and for providing a clear audit trail.

6. The sixth part of the paper focuses on the importance of maintaining accurate records of all transactions. This is essential for ensuring the integrity of the financial statements and for providing a clear audit trail.

ब्रह्मराक्षससेवितमाह—

देवविप्रगुरुद्वेषी वेदवेदाङ्गाविच्छुचिः ।
आत्मपीडाकरो हासी ब्रह्मराक्षससेवितः ॥ २६ ॥

एतेषामसाध्यमर्यादामाह—

स्थूलाक्षो द्रुतमदनः स्वफेनलेही
निद्रालुः पतति च कम्पते च योऽति ।
यश्चात्रिद्विरदनगादिविच्युतः स्या-
त्सोऽसाध्यो भवति तथा त्रयोदशोऽब्दे ॥ २७ ॥

ग्रहसमयमाह—

देवग्रहाः पौर्णमास्यामसुराः संध्ययोर्द्वयोः ।
गन्धर्वाः प्रायशोऽष्टम्यां यक्षाश्च प्रतिपद्यपि ॥ २८ ॥
पितृग्रहास्तथा दर्शे पञ्चम्यामपि चोरगाः ।
रक्षांसि रात्रौ पैशाचाश्चतुर्दश्यां विशन्ति हि ॥ २९ ॥

तस्य व्याप्तिमाह—

दर्पणादीन्यथा छाया शीतोष्णं प्राणिनो यथा ।
स्वमणिं भास्करोर्चिश्च यथा देहं च देहधृत् ॥
विशन्ति न च दृश्यन्ते ग्रहास्तद्वच्छरीरिणाम् ॥ ३० ॥
इत्युन्मादभूतोन्मादनिदानम् ।

अथैतत्प्रतीकारः—

वातिके स्नेहपानं प्राग्विरेकः पित्तसंभवे ।
कफजे वमनं कार्यं परो बस्त्यादिकः क्रमः ॥ ३१ ॥
यच्चोपदिश्यते कर्म अपस्मारे चिकित्सितम् ।
उन्मादे तच्च कर्तव्यं सामान्याद्दोषदूष्ययोः ॥ ३२ ॥
जलाग्निद्रुमशैलेभ्यो विषमेभ्यश्च तं सदा ।
रक्षेदुन्मादिनं यत्नात्सद्यः प्राणहरा हि ते ॥ ३३ ॥
ब्राह्मीकूष्माण्डीफलपट्टग्रन्थाशङ्कुपुष्पिकास्वरसाः ।
उन्मादहरा दृष्टाः पृथगेते कुष्ठमधुमिश्राः ॥ ३४ ॥
अत्र ब्राह्मीति पदं स्वरसपरं कूष्माण्डीफलं तद्वीजपरम् ।
एते चत्वारो योगाः ।

THE
JOURNAL
OF THE
ROYAL
ANTHROPOLOGICAL
INSTITUTE
LONDON

THE
JOURNAL
OF THE
ROYAL
ANTHROPOLOGICAL
INSTITUTE
LONDON

THE
JOURNAL
OF THE
ROYAL
ANTHROPOLOGICAL
INSTITUTE
LONDON

THE
JOURNAL
OF THE
ROYAL
ANTHROPOLOGICAL
INSTITUTE
LONDON

अथ ब्राह्म्यादिकल्कः—

ब्राह्मीरसः स्यात्सवचः सकुष्ठः सशङ्खपुष्पः ससुवर्णचूर्णः ।
उन्मादिनामुन्मदमानसानामपस्मृतौ भूतहतात्मनां च ॥३५॥
इति ब्राह्म्यादिकल्कः ।

अथ सिद्धार्थकादियोगः—

सितकुसुमबलायाः सार्धकर्षत्रयं यः
शिखरिचरणकोलं क्षीरपाकेन पक्रम् ।
पिबति तदनु नित्यं प्रातरुत्थाय शीतं
जयति झटिति घोरं व्याधिमुन्मादसंज्ञम् ॥ ३६ ॥
सिद्धार्थत्रिफलाशिरीषकटभीश्वेताकरञ्जामरै-
र्मञ्जिष्ठारजनीद्वयत्रिकटुकश्यामावचाहिङ्गुभिः ।
पिष्टैश्छागलमूत्रतोयमगदं सर्वग्रहच्छेदनं कृत्यो-
न्मादविषज्वरप्रशमनं पानादिसंयोजितम् ॥ ३७ ॥
इति सिद्धार्थकादियोगः ।

अथ झूषणवर्तिः—

झूषणं हिङ्गुलवणं वचाकटुकरोहिणी ।
शिरीषं नक्तमालस्य बीजं श्वेताश्च सर्षपाः ॥ ३८ ॥
गोमूत्रपिष्टैरेतैस्तु वर्तिर्नेत्राञ्जने हिता ।
चातुर्थिकमपस्मारमुन्मादं च विनाशयेत् ॥ ३९ ॥
इति झूषणवर्तिः ।

अथाऽऽगन्तून्मादः—

दशमूलाम्बु सघृतं युक्तं मांसरसेन च ।
ससिद्धार्थकचूर्णं वा केवलं वा नवं घृतम् ॥ ४० ॥
उन्मादशान्तये पेयो रसो वा तालशाखजः ।
प्रयोज्यं सार्धपं तैलं नस्याभ्यञ्जनयोः सदा ॥ ४१ ॥
आश्वासयेत्सुहृद्वाक्यैर्धर्मकामार्थसंहितैः ।
ब्रूयादिष्टविनाशांश्च दर्शयेदद्भुतानि वा ॥ ४२ ॥
बद्धं सर्षपतैलाक्तमुत्तानं चाऽऽतपे न्यसेत् ।
कपिकट्ठाऽथ वा तप्तलोहतैलाम्बुभिः स्पृशेत् ॥ ४३ ॥

1. The first part of the document is a letter from the President of the United States to the Congress, dated January 1, 1861.

2. The second part is a report from the Secretary of the Treasury, dated January 1, 1861.

3. The third part is a report from the Secretary of the Interior, dated January 1, 1861.

4. The fourth part is a report from the Secretary of the Navy, dated January 1, 1861.

5. The fifth part is a report from the Secretary of the War, dated January 1, 1861.

कशाभिस्ताडयेद्वृद्धं स्थापयेद्विजने गृहे ।
 रुन्ध्याच्चेतोऽतिविभ्रान्तमेवं व्रजाते तत्सुखम् ॥ ४४ ॥
 सर्पणोद्धृतदंष्ट्रेण दान्तैः सिंहैर्गजैश्च तम् ।
 त्रासयेच्छस्त्रहस्तैश्च शत्रुभिस्तस्करैस्तथा ॥ ४५ ॥
 अथ वा राजपुरुषैर्बहिर्नीत्वा सुसंयतम् ।
 त्रासयेत्तु प्रहारेण तर्जयन्तो यथाऽऽज्ञया ॥ ४६ ॥
 देहदुःखामयेभ्यो हि परं प्राणमयं मतम् ।
 तेन याति शमं तस्मात्सर्वतो विष्णुनामतः ॥ ४७ ॥
 सततं धूपयेच्चैनं श्वगोमांसैश्च पूतिभिः ।
 इष्टद्रव्यविनाशात्तु उन्मादो यस्य जायते ॥ ४८ ॥
 तस्य तत्सदृशः प्राप्तेः सान्त्वनैश्च शमं नयेत् ।
 बुद्ध्वा दोषं वयःसात्म्यं देशं कालं बलाबलम् ॥ ४९ ॥
 चिकित्सितमिदं कुर्यादुन्मादे दोषभूतजे ।
 देवर्षिपितृगन्धर्वैरुन्मत्तः स्यात्तु बुद्धिमान् ॥ ५० ॥
 बर्जयेदञ्जनादीनि तीक्ष्णानि क्रूरकर्म च ।
 सर्पिष्पानादिगायत्रीहोममन्त्रादिरिष्यते ॥ ५१ ॥
 पूजाबल्युपहारैश्च होममन्त्राञ्जनादिभिः ।
 जपेदागन्तुमुन्मादं यथाविधि शुचिर्भिषक् ॥ ५२ ॥
 इत्यागन्तुन्मादः ।

अथ महापेशाचिकं घृतम्—

जटिला पूतना केशी वारटी मर्कटी वचा ।
 त्रायमाणा जया वीरा चोरकं कटुरोहिणी ॥ ५३ ॥
 कायस्था शूकरी छत्रा सातिच्छत्रा पलंकषा ।
 महापुरुषदन्ता च वयस्था नाकुलीद्वयम् ॥ ५४ ॥
 कटम्भरा वृश्चिकाली स्थिरा चैतैर्घृतं पचेत् ।
 तत्तु चातुर्थिकोन्मादग्रहापस्मारनाशनम् ॥ ५५ ॥
 महापेशाचिकं नाम घृतमेतद्यथाऽमृतम् ।
 बुद्धिभेधास्मृतिकरं बालानां चाङ्गवर्धनम् ॥ ५६ ॥
 इति महापेशाचिकं घृतम् ।

अथ चैतसं घृतम्—

पञ्चमूली च काश्मर्या रास्त्रैरण्डस्त्रिवृद्धला ।
 मूर्वा शतावरी चेति क्वाथैर्द्विपलिकैः शुभैः ॥ ५७ ॥

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
LONDON
PUBLISHED BY THE
EDUCATIONAL BOOKS COMPANY
LONDON
1900

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
LONDON
PUBLISHED BY THE
EDUCATIONAL BOOKS COMPANY
LONDON
1900

कल्याणकस्य चाङ्गेन चैतसं नाम तदघृतम् ।
 सर्वचेतोविकाराणां शमनं परमं मतम् ॥ ५८ ॥
 कार्यः कषायो द्विगुणः काथे मस्तुकलागुणम् ।
 कल्याणकोक्तकल्केन पादांशेन घृतं पचेत् ॥ ५९ ॥
 इति चैतसं घृतम् ।

अथ पानीयकल्याणकघृतम्-

विशाला त्रिफला कौन्ती देवदार्वलवालुकम् ।
 स्थिरान्तं हरिद्रे द्वे सारिवे द्वे प्रियङ्गुका ॥ ६० ॥
 मीलोत्पलैलामञ्जिष्ठा दन्ती दाडिमकेसरम् ।
 विडङ्गं पृश्निपर्णी च कुष्ठचन्दनपद्मकैः ॥ ६१ ॥
 तालीसपत्रं बृहती मालतीकुसुमं नवम् ।
 अष्टाविंशतिभिर्द्रव्यैरेतैः कर्षप्रमाणकैः ॥ ६२ ॥
 चतुर्गुणं जलं दत्त्वा घृतं प्रस्थमितं पचेत् ।
 अपस्मारे ज्वरे शोषे कासे मन्दानले क्षथे ॥ ६३ ॥
 वातरक्ते प्रतिश्याथे तृतीयकचतुर्थके ।
 कटिगूले मूत्रकृच्छ्रे विसर्पोपहतेषु च ॥ ६४ ॥
 उन्मादे पाण्डुकण्ड्वोश्च विषमेहगरेषु च ।
 भूतोपहतचित्तानां मन्दधीनामचेतसाम् ॥ ६५ ॥
 शस्तं स्त्रीणां च बन्ध्यानां धन्यमायुर्वलप्रदम् ।
 अलक्ष्मीपापरोगघ्नं सर्वग्रहनिवारणम् ॥
 कल्याणकमिदं सर्पिः श्रेष्ठं पुंस्त्वप्रदं नृणाम् ॥ ६६ ॥
 इति पानीयकल्याणकघृतम् ।

अथ सारस्वतं चूर्णम्-

कुष्ठाश्वगन्धालवणाजमोदं
 द्वे जीरके त्रीणि कटूनि पाठा ।
 *मङ्गल्यपुष्पी च समान्यमूनि
 सर्वैः समानां च वचां विचूर्ण्य ॥ ६७ ॥

* अत्रेत्थं ग पुस्तके पाठान्तरम्-

मङ्गल्यपुष्प्या च समानचूर्णं कृत्वाऽथ चूर्णेन वचोद्भवेन ।
 तुल्येन युक्तं बहुशो रसेन तद्भावितां ब्रह्मविनिर्मितायाः ॥ १ ॥

१ ग. नता रजन्धौ द्वे ।

1. The first part of the paper discusses the importance of the study.

2. The second part of the paper discusses the methodology used in the study.

3. The third part of the paper discusses the results of the study.

4. The fourth part of the paper discusses the conclusions of the study.

5. The fifth part of the paper discusses the implications of the study.

ब्राह्मीरसेनाखिलमेव भाग्यं
 वारत्रयं शुष्कमिदं हि चूर्णम् ।
 अक्षप्रमाणं मधुना घृतेन
 लिह्यान्नरः षष्टिदिनानि यावत् ॥ ६८ ॥
 सारस्वतमिदं चूर्णं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ।
 हिताय सर्वलोकानां दुर्मेधानां विचेतसाम् ॥ ६९ ॥
 एतस्याभ्यासतः पुंसां बुद्धिर्मेधा धृतिः स्मृतिः ।
 संपत्तिः कविताशक्तिः प्रवर्धेतोत्तरोत्तरम् ॥ ७० ॥

इति सारस्वतं चूर्णम् ।

अथ विश्वाद्यं चूर्णम्—

विश्वाजमोदरजनीद्वयसैन्धवोग्रा-
 यष्ट्याह्वकुष्ठमगधोद्धवजीरकाणाम् ।
 चूर्णं प्रभातसमये लिहतः ससर्पि-
 र्वाग्देवता निवसति स्वयमेव वक्त्रे ॥ ७१ ॥

इति विश्वाद्यं चूर्णम् ।

अथ हिङ्गवाद्यं घृतं वृन्दात्—

हिङ्गुसौवर्चलव्योषैर्द्विपलांशैर्घृताढकम् ।
 चतुर्गुणे गवां मूत्रे सिद्धमुन्मादनाशनम् ॥ ७२ ॥

इति हिङ्गवाद्यं घृतं वृन्दात् ।

अथ महाचैतसं घृतम्—

दशमूली तथा रास्ना वातारिस्त्रिवृता बला ।
 मूर्वा शतावरी चेति काथैस्तु कुडवैः पृथक् ॥ ७३ ॥
 कृते काथे घृतप्रस्थद्वयं मृद्वग्निना पचेत् ।
 कल्कीकृतैर्वक्ष्यमाणद्रव्यैः सम्यक्पुनः पचेत् ॥ ७४ ॥

सर्पिर्मधुभ्यां च ततोऽक्षमात्रं लिह्यान्नरः षष्टिदिनं हिताशी ।
 ऐश्वर्यवाचा मनसश्च धैर्यं मेधां च विन्देद्द्विगुणं च कालम् ॥ २ ॥
 पठन्नरः श्लोकसहस्रमश्रमात्तद्वत्प्रयोज्यं द्विगुणं क्रमेण ।
 सारस्वतं चूर्णमिदं प्रदिष्टं स्वयंभुवा लोकहितार्थमुच्चैः ॥
 दुर्मेधसामुन्मदमानसानामपस्मृतिग्रस्तहृदां सुखाय ॥ ३ ॥

इति सा०

विशाला त्रिफला कौन्ती देवदार्वैलवालुकम् ।
 स्थिराऽनन्ता रजन्यौ द्वे प्रियङ्गुः सारिवाद्वयम् ॥ ७६ ॥
 नीलोत्पलैला मञ्जिष्ठा दन्ती दाडिमकेसरम् ।
 विडङ्गं ह्यग्निः*पत्री च कुष्ठं चन्दनपद्मके ॥ ७६ ॥
 तालीसपत्रं बृहती मालतीकुसुमं नवम् ।
 अष्टाविंशतिभिः कल्कैरेतैः कर्षमितैः पृथक् ॥ ७७ ॥
 चतुर्गुणं जलं दत्त्वा पिष्टैस्तद्विषचेदधृतम् ।
 महाचैतसनमैवं सर्वचेतोविकारहृत् ॥ ७८ ॥
 अपस्मारे ग्रहोन्मादे मन्देऽग्नौ ज्वरकासयोः ।
 वातरक्ते प्रतिश्याये शोषे कार्श्ये तृतीयके ॥ ७९ ॥
 मूत्रकृच्छ्रे कटीशूले विसर्पाभिहतेषु च ।
 पाण्ड्वामये तथा कण्डूवां विषमोहगरेषु च ॥ ८० ॥
 अलक्ष्मीपापरक्षोभं सर्वग्रहनिवारणम् ।
 देवादिहतदेहानां गद्गदानामचेतसाम् ॥ ८१ ॥
 शस्तं स्त्रीणां च वन्ध्यानां धन्यमायुर्वलप्रदम् ।
 हन्ति भ्रमं मदं मूर्छां मेधास्मृतिमतिप्रदम् ॥ ८२ ॥
 इति महाचैतसं घृतम् ।

अथ कृष्णायञ्जनम्-

कृष्णामरिचसिन्धूश्चमधुगोरोचनाकृतम् ।
 अञ्जनं सर्वदेवादिकृत्योन्मादहरं परम् ॥ ८३ ॥
 इति कृष्णायञ्जनम् ।

अथ क्षलोमादिधूपः-

ऋक्षजम्बूकलोमानि शलकी लशुनं तथा ।
 हिङ्गु मूत्रं च बस्तस्य धूपमत्र प्रयोजयेत् ॥ ८४ ॥
 एतेन शाम्यति क्षिप्रं बलवानपि यो ग्रहः ।
 इत्यृक्षलोमादिधूपः ।

अथ विगतोन्मादलक्षणम्-

निवृत्तविषमद्यो यो हिताशी प्रयतः शुचिः ॥ ८५ ॥



निजागन्तुभिरुन्मादैः स सत्त्वान्न वियुज्यते ।
 प्रसादश्चेन्द्रियार्थानां बुद्ध्यात्ममनसामपि ॥ ८६ ॥
 धातूनां प्रकृतिस्थत्वं विगतोन्मादलक्षणम् ।

इति विगतोन्मादलक्षणम् ।

अथ नस्यं रसरत्नप्रदीपात्—

कृष्णधत्तूरजैर्बीजैः पञ्चभिः पर्पटीरसः ।
 साज्यो योज्यः प्रशान्त्यर्थमुन्मादस्याऽऽशु नावनम् ॥ ८७ ॥

इति नस्यं रसरत्नप्रदीपात् ।

अथ रसाः—

रसः सतालः सशिलः सलोहः
 स्रोतोञ्जनं सार्कमिदं समं यत् ।
 पिष्टं नृमूत्रेण च तत्समस्ता-
 द्वयो द्विभागो बलिरापचेच्च ॥ ८८ ॥

लौह्यां क्षणं हन्ति घृतेन माषोऽपस्मारमप्युन्मदमानसत्वम् ।
 पिबेदनुड्यूषणहिङ्गयुक्तं सर्पिर्नृमूत्रे रुचकेन साकम् ॥ ८९ ॥
 मूतोन्मादेषु सर्वेषु रसोऽयं मूतभैरवः ।
 धत्तूरपञ्चभिर्बीजैर्देयः सर्पिर्विमिश्रितः ॥ ९० ॥

इति मूतभैरवो रसः ।

अथोन्मादगजकेसरी—

सूतगन्धशिलातुल्यं स्वर्णबीजं विचूर्ण्य च ।
 मावयेदुग्रगन्धायाः क्वाथे मुनिदिनैः पृथक् ॥ ९१ ॥
 रास्त्रारसेन सप्तैव मावयित्वा विचूर्णयेत् ।
 रसः संजायते नूनमुन्मादगजकेसरी ॥ ९२ ॥
 अस्य माषः ससर्पिष्को लीढो हन्ति हठाद्भृशम् ।
 उन्मादाख्यमपस्मारं मूतोन्मादमपि ज्वरम् ॥ ९३ ॥

इत्युन्मादगजकेसरी ।

कल्याणकं प्रयुञ्जीत महद्वा चेतसं घृतम् ।
 तैलं नारायणं वाऽथ महानारायणं तथा ॥ ९४ ॥

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting department in ensuring the integrity of the financial statements. It also highlights the need for transparency and accountability in the reporting process.

2. The second part of the document outlines the various methods used to collect and analyze data, including surveys, interviews, and focus groups. It emphasizes the importance of using a mix of qualitative and quantitative techniques to gain a comprehensive understanding of the research topic.

3. The third part of the document presents the results of the research, showing the distribution of responses across different categories. It includes tables and graphs to illustrate the data, and discusses the implications of the findings for the organization.

4. The fourth part of the document provides a detailed analysis of the data, identifying trends and patterns that may not be immediately apparent from the raw data. It also discusses the limitations of the study and suggests areas for future research.

5. The fifth part of the document concludes the report, summarizing the key findings and providing recommendations for action. It emphasizes the importance of ongoing monitoring and evaluation to ensure that the organization remains on track with its goals and objectives.

ऋते पिशाचादन्येषु प्रतिकूलं न चाऽऽचरेत् ।
 रोगिणं भिषजं यत्ते कुद्धा हन्युर्महौजसः ॥ ९५ ॥
 अशुचीन्बन्धनपानानि नदीरुच्चावचान्यपि ।
 प्रासादाञ्छासिनोऽस्त्राणि सेवेतोन्मादवान्न ना ॥ ९६ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यामुन्मादनिदानचिकित्साकथनं नामाष्टाशीति-
 तमस्तरङ्गः ॥ ८८ ॥

अथ नवाशीतितमस्तरङ्गः ।

अथापस्मारनिदानम्-

स्मृतिर्भूतार्थविज्ञानमपस्तत्परिवर्जनम् ।
 अपस्मार इति प्रोक्तस्ततोऽयं व्याधिरन्तकृत् ॥ १ ॥
 तमःप्रवेशः संरम्भो दोषोद्रेकहतस्मृतिः ।
 अपस्मार इति ज्ञेयो गदो घोरश्चतुर्विधः ॥ २ ॥
 चिन्ताशोकादिभिर्दोषाः कुद्धा हस्तोतसि स्थिताः ।
 कृत्वा स्मृतेरपध्वंसमपस्मारं प्रकुर्वते ॥ ३ ॥
 वातात्पित्तात्कफात्सर्वैर्दोषैः स स्याच्चतुर्विधः ।
 हृत्कम्पः शून्यता स्वेदो ध्यानं मूर्छा प्रमूढता ॥ ४ ॥
 निद्रानाशस्तु तस्मिंस्तु भविष्यति भवन्ति च ।

अथ वातजः-

कम्पते खादते दन्तान्फेनोद्गामी श्वसित्यपि ॥ ५ ॥
 परुषारुणकृष्णानि पश्येद्रूपाणि चानिलात् ।

अथ पित्तजः-

पीतफेनाङ्गवक्त्राक्षः पीतासृग्मूषदर्शनः ॥ ६ ॥
 सतृष्णोष्णानलव्याप्तलोकदर्शी च पैत्तिकः ।

अथ कफजः-

शुक्लफेनाङ्गवक्त्राक्षः शीतहृष्टाङ्गजो गुरुः ॥ ७ ॥
 पश्येच्छुक्लानि रूपाणि श्लैष्मिको मुच्यते चिरात् ।

अथ त्रिदोषजः-

सर्वैरैतैः समस्तैश्च लिङ्गैर्ज्ञेयस्त्रिदोषजः ॥ ८ ॥

अपस्मारः स चासाध्यो यः क्षीणस्यानवश्च सः ।
 प्रस्फुरन्तं च बहुशः क्षीणं प्रचलितध्रुवम् ॥ ९ ॥
 नेत्राभ्यां च विकुर्वाणमपस्मारो विनाशयेत् ।
 पक्षाद्वा द्वादशाहाद्वा मासाद्वा कुपिता मलाः ॥ १० ॥
 अपस्मास्य कुर्वन्ति वेगे किञ्चिदथान्तरम् ।
 देवे वर्षत्यपि यथा भूमौ बीजानि कानिचित् ॥
 शरदि प्रतिरोहन्ति तथा व्याधिसमुद्भवः ॥ ११ ॥

इत्यपस्मारनिदानम् ।

अथापस्मारचिकित्सा—

पूर्वं युक्त्यादपस्मारे छर्दनादीनि बुद्धिमान् ।
 वातिकं बस्तिभिः प्रायः पैत्तिकं तु विरेचनैः ॥ १२ ॥
 कफजं वमनैर्धीमानपस्मारमुपाचरेत्* ।
 तैलेन लक्षुनः सेव्यः पयसा च शतावरी ॥ १३ ॥
 ब्राह्मीरसश्च मधुना सर्वापस्मारभेषजम् ।
 चूर्णैः सिद्धार्थकादीनां भक्षितैरथ वापितैः ॥ १४ ॥
 गोमूत्रपिष्टैः सर्वाङ्गलेपैः शाम्यत्यपस्मृतिः ।

सिद्धार्थकादिरुन्माद् उक्तेः ।

शिथुकट्वङ्गकिणिहीनिम्बत्वग्रसपाचितम् ॥ १५ ॥
 चतुर्गुणे गवां मूत्रे तैलमभ्यञ्जने हितम् ।
 निर्गुण्डीभववृन्दाकनावनस्य प्रयोगतः ॥ १६ ॥
 उपैति सहसा नाशमपस्मारो महागदः ।
 मनोह्रा ताक्ष्यविष्टा च शकृत्पारावतस्य च ॥ १७ ॥
 अञ्जनान्दन्त्यपस्मारमुन्मादं च विशेषतः ।
 यः स्वादेक्षीरभक्ताशी माक्षिकेण वचारजः ॥ १८ ॥
 अपस्मारं महाघोरं चिरोत्थं संजयेद्भुवम् ।
 कूष्माण्डकफलोत्थेन रसेन परिपेषितम् ॥ १९ ॥
 अपस्मारविनाशाय षट्चाह्वं च पिबेड्यहम् ।

* मुपाचरेदित्यस्याग्रेऽयं ग्रन्थो ग. पुस्तके—

ततस्तीक्ष्णं प्रयुज्जीत भिषक्सम्यग्विशोधनम् ।

सर्वशः शुद्धदेहस्य स्यादुन्मादहरी क्रिया ॥

उपयोगो ग्रहोक्तानां योगानां चाप्यशेषतः । इति ॥

The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that proper record-keeping is essential for ensuring the integrity and transparency of the financial system. The document also highlights the need for regular audits and reviews to identify any discrepancies or potential areas of improvement.

In addition, the document outlines the various responsibilities of the accounting department, including the collection and processing of financial data, the preparation of financial statements, and the management of the company's assets and liabilities. It also discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions, including the recording of income, expenses, and assets. The document further emphasizes the need for regular audits and reviews to ensure the accuracy and reliability of the financial information.

अथ नस्यम्—

श्वसृगालबिडालानां कपिलानां गवामपि ॥ २० ॥
पित्तानि नस्यतो हन्युरपस्मारं पृथक्पृथक् ।

अथाञ्जनम्—

यष्टीहिङ्गुवचावक्र*शिरीषलघुनामयैः ॥ २१ ॥
साजमूत्रैरपस्मारे सोन्मादे नावनाञ्जनम् ।

अथ धूपः—

पुष्पोद्धृतं शुनः पित्तमपस्मारघ्नमञ्जनात् ।
तदेव सर्पिषा युक्तं धूपनं परमं स्मृतम् ॥ २२ ॥
उत्तरदिगन्तमुस्तकमूलं बुद्ध्वा समुद्धृतं पुष्पे ।
पीतं पयसा हन्यादपस्मृतिं गोः सवर्णवत्सायाः ॥ २३ ॥
दुश्चिकित्स्यो ह्यपस्मारी चिरकारी महागदः ।
तस्माद्रसायनैरेतैः प्रायशः समुपाचरेत् ॥ २४ ॥
हृत्कम्पोऽक्षिरुजा यस्य स्वेदो हस्तादिशीतता ।
दशमूलीजलं तस्य कल्याणाज्यं च योजयेत् ॥ २५ ॥

अथ कल्याणकं चूर्णम्—

पञ्चकोलं समरिचं त्रिफलाबिडसैन्धवम् ।
कृष्णाबिडङ्गपूतीकयवानीधान्यजीरकम् ॥ २६ ॥
पीतमुष्णाम्बुना चूर्णं वातश्लेष्मामयापहम् ।
अपस्मारे तथोन्मादे दुर्नामिग्रहणीगदे ।
एतत्कल्याणकं चूर्णं नष्टस्याग्रेष्व दीपनम् ॥ २७ ॥
इति कल्याणकं चूर्णम् ।

अथ ब्राह्मीघृतम्—

ब्राह्मीरसे वचाकुष्ठं शङ्खपुष्पीभिरेव च ।
पक्वं पुरातनं सर्पिरपस्मारहरं ध्रुवम् ॥ २८ ॥
इति ब्राह्मीघृतम् ।

अथ स्वल्पपञ्चगव्यघृतम्—

गोशकृद्रसदध्यम्लक्षीरमूत्रैः समैर्घृतम् ।
सिद्धं चातुर्थिकोन्मादग्रहापस्मारनाशनम् ॥ २९ ॥
इति स्वल्पपञ्चगव्यघृतम् ।

...

...

...

...

...

...

...

अथ वचाद्यं घृतम्—

वचाशम्याककैडर्यवयस्थाहिङ्गुरोचकैः ।

सिद्धं पलङ्कपायुक्तं घृतं हन्यादपस्मृतिम् ॥ ३० ॥

इति वचाद्यं घृतम् ।

अथ कटभ्यादितैलम्—

कटमीनिम्बकट्वङ्गमधुशियुत्वचारसैः ।

सिद्धं मूत्रयुतं तैलं लेपाद्धन्यादपस्मृतिम् ॥ ३१ ॥

इति कटभ्यादितैलम् ।

अथ कपित्थादिवर्तिः—

कपित्थाञ्जशरदान्मुद्गान्मुस्तोशीरयवांस्तथा ।

सव्योषान्बस्तमूत्रेण पिष्ट्वा वर्तिः प्रकल्पयेत् ॥ ३२ ॥

अपस्मारे तथोन्मादे सर्पदष्टे गरदिते ।

विषपीते जलमृते एताः स्युरमृतोपमाः ॥ ३३ ॥

इति कपित्थादिवर्तिः ।

अथ जलमृतलक्षणम्—

विट्बधपायुमूर्धाक्षं शीतपादकरोदरम् ।

विद्याजलमृतं जन्तुं शूनपन्नाभिमेहनम् ॥ ३४ ॥

इति जलमृतलक्षणम् ।

अथ स्मृतिसागरः—

रसगन्धकतालानां सशिलाताम्रमस्मनाम् ।

शुद्धानां मूर्छितानां च चूर्णं माष्यं वचाशृतैः ॥ ३५ ॥

एकविंशतिधा पश्चाद्वाह्नीं वारां तथैव च ।

* कटमीबीजतैलेन माषपेदेकवारकम् ॥ ३६ ॥

स्मृतिसागरनामाऽयं रसोऽपस्मारनाशनः ।

सर्पिषा माषमात्रोऽयं भुक्तो हन्यादपस्मृतिम् ॥ ३७ ॥

इति स्मृतिसागरः ।

* क. ज्योतिष्मती ।

१ क. 'शुचोरकैः' । २ ग. 'शुद्धिगुणैः' ।

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting system in providing reliable financial information.

2. The second part of the document describes the various methods used to collect and analyze data, including interviews, surveys, and focus groups.

3. The third part of the document presents the results of the study, showing that the accounting system plays a crucial role in the success of the organization.

4. The fourth part of the document discusses the implications of the findings and provides recommendations for future research.

5. The fifth part of the document concludes the study and summarizes the key findings.

उन्मादोक्तो विधिः सर्वोऽपस्मारेऽपि प्रयुज्यते ।
इति श्रीयोगतरङ्गिण्यामपस्मारनिदानचिकित्साकथने नैमिकोनव-
तितमस्तरङ्गः ॥ ८९ ॥

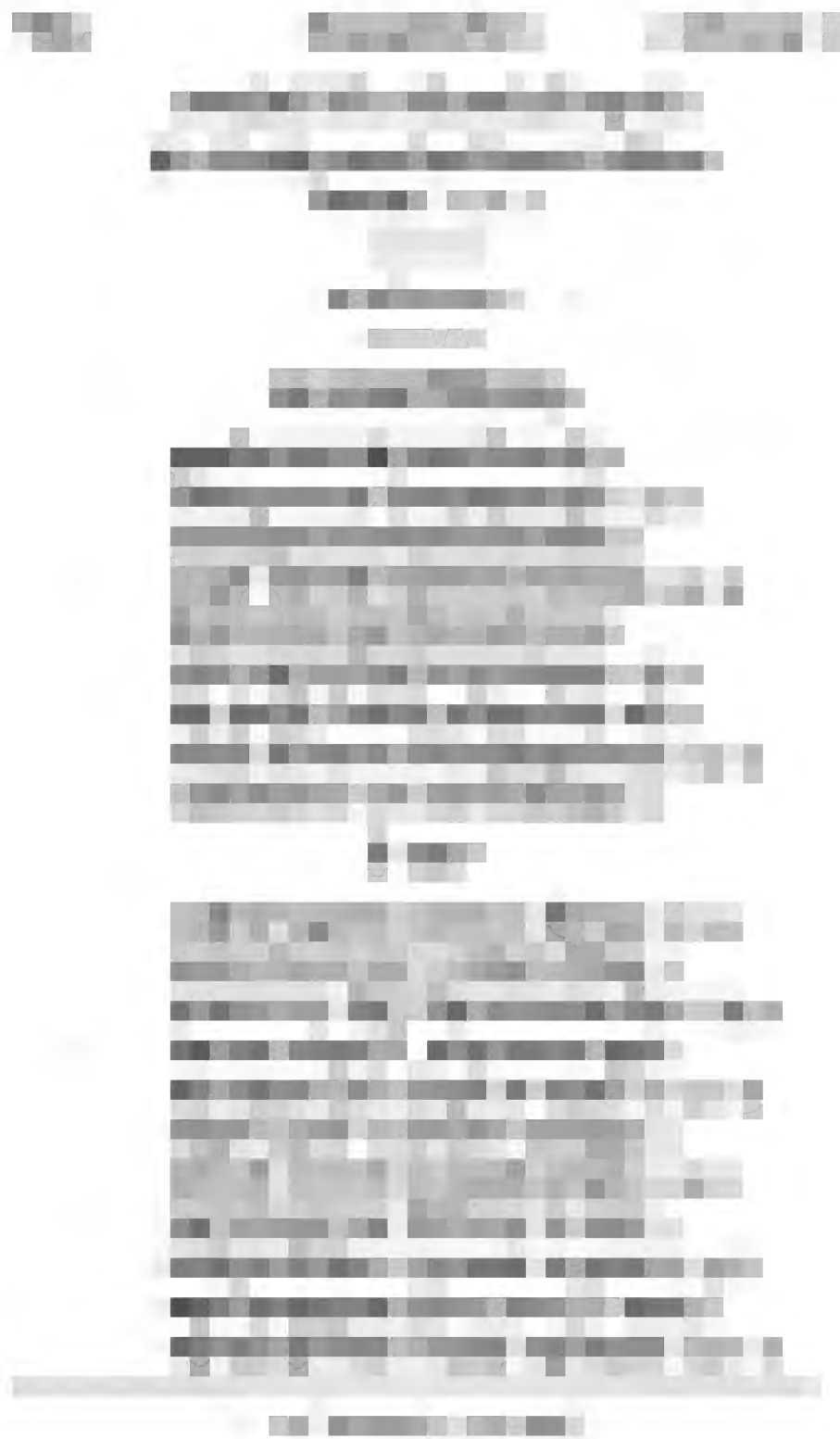
अथ नवतितमस्तरङ्गः ।

अथ वातव्याधिनिदानम्-

रूक्षशीतालपलध्वन्नव्यवायातिप्रजागरैः ।
विषमादुपचाराच्च दोषासृक्प्रावणादपि ॥ १ ॥
लङ्घनप्लवनात्यध्वव्यायामातिविचेष्टितैः ।
धातूनां संक्षयाच्चिन्ताशोकरोगातिकर्षणात् ॥ २ ॥
वेगसंधारणायासादभीघातादभोजनात् ।
मर्मबाधाद्गुजाश्वोष्ट्रशीघ्रयानापतंसनात् ॥ ३ ॥
देहे स्रोतांसि रिक्तानि पूरयित्वाऽनिलो बली ।
करोति विविधान्याधीन्सर्वाङ्गैकाङ्गसंश्रयान् ॥ ४ ॥
अशीतिर्वातजा रोगा भवन्त्याक्षेपकादयः ।

ते यथा-

आक्षेपको हनुस्तम्भ ऊरुस्तम्भः शिरोग्रहः ॥ ५ ॥
बाह्यायामोऽन्तरायामः पार्श्वशूलं कटिग्रहः ।
दण्डापतानकः खल्ली जिह्वास्तम्भस्तथाऽर्दितः ॥ ६ ॥
पक्षाघातः क्रोष्टुशीर्षं मन्यास्तम्भश्च पङ्कता ।
कलायखञ्जता तूनी प्रतितूनी च खञ्जता २० ॥ ७ ॥
पादहर्षो गृध्रसी च विश्वाची चावबाहुकः ।
अपतानो व्रणायामो वातकण्डोऽपतन्त्रकः ॥ ८ ॥
अङ्गभेदोऽङ्गशोफश्च मिस्मिणत्वं च कलता ।
प्रत्यष्ठीलाऽष्ठीलिका च वामनत्वं च कुब्जता ॥ ९ ॥
अङ्गपीडाऽङ्गशूलश्च संकोचः स्तम्भ ४० रूक्षताः ।
अङ्गमङ्गोऽङ्गविभ्रंशो विद्ग्रहो बद्धविदकता ॥ १० ॥



मूकत्वमतिजृम्भो स्यादश्रूद्वारोऽन्त्रकूजनम् ।
 वाताप्रवृत्तिः स्फुरणं शिरापूरणमेव च ॥ ११ ॥
 कम्पः काश्यं श्यावता च प्रलापः क्षिप्रमूत्रता ।
 निद्रानाशः स्वेदनाशो दुर्बलत्वं ६० बलक्षयः ॥ १२ ॥
 शुक्रकाश्यं शुक्रनाशः शुक्रस्यातिप्रवर्तनम् ।
 अनवस्थितचित्तत्वं काठिन्यं विरसास्यता ॥ १३ ॥
 कषायवक्त्रताऽऽध्मानं प्रत्याध्मानं च शीतता ।
 रोमहर्षश्च भीरुत्वं तोदः कण्डू रसाज्ञता ॥ १४ ॥
 शब्दाज्ञता प्रसुप्तिश्च ८० गन्धाज्ञत्वं च गद्गदः ।
 एवंविधानि रूपाणि करोति पवनो बली ॥ १५ ॥

वाग्भट्टात्—

वायुरायुर्बलं वायुर्वायुर्धाता शरीरिणाम् ।
 वायुर्विश्वमिदं सर्वं प्रभुर्वायुः प्रकीर्तितः ॥ १६ ॥
 हेतुस्थानविशेषाच्च भवेद्रोगविशेषकृत् ।
 तत्र कोष्ठाश्रिते दुष्टे निग्रहो मूत्रवर्चसोः ॥ १७ ॥
 ब्रह्महृद्रोगगुल्मार्शःपार्श्वशूलं च मारुते ।
 सर्वाङ्गकुपिते वाते गात्रस्फुरणमञ्जनम् ॥ १८ ॥
 वेदनाभिः परीताश्च स्फुटन्तीवास्य संधयः ।

गुदस्थितमाह—

ग्रहो विण्मूत्रवातानां शूलाध्मानाश्मशर्कराः ॥ १९ ॥
 जङ्घोरुत्रिकर्पात्पृष्ठरोगाः शोथो गुदस्थिते ।

आमाशयस्थितमाह—

रुक्पाश्वोदरहृन्नाभौ तृष्णोद्वारविषूचिकाः ॥ २० ॥
 कासः कण्ठास्यशोषश्च श्वासश्चाऽऽमाशयस्थिते ।

पक्वाशयस्थमाह—

पक्वाशयस्थोऽन्त्रकूजं शूलाटोपौ करोति च ॥ २१ ॥

प्रकोपमाह—

कृच्छ्रमूत्रपुरीषत्वमानाहं त्रिकवेदनाम् ।
 श्रोत्रादिविन्द्रियवधं कुर्यात्क्रुद्धः समीरणः ॥ २२ ॥

त्वग्गतमाह—

त्वग्रूक्षा स्फुटिता सुप्ता कृशा कृष्णा च तुद्यते ।
आतन्यते सरागा च सर्वरुक्त्वग्गतेऽनिले ॥ २३ ॥

रुधिरगतमाह—

रुजस्तीव्राः ससंतापा वैवर्ण्यं कृशताऽरुचिः ।
गात्रे चारुंषि मुक्तस्य स्तम्भश्चासृग्गतेऽनिले ॥ २४ ॥

मांसमेदोगतमाह—

गुर्वङ्गं तुद्यते स्तब्धं दण्डमुद्दिहतं यथा ।
सरुक्विस्तमितमत्यर्थं मांसमेदोगतेऽनिले ॥ २५ ॥

मज्जास्थिस्थितमाह—

मेदोस्थिपर्वणां संधिशूलो मांसबलक्षयः ।
अस्वप्नः संतता रुक्च मज्जास्थिकुपितेऽनिले ॥ २६ ॥

शुक्रगतमाह—

क्षिप्रं मुञ्चति बध्नाति शुक्रं गर्भमथापि वा ।
विकृतिं जनयेच्चापि शुक्रस्थः कुपितोऽनिलः ॥ २७ ॥

शिरागतमाह—

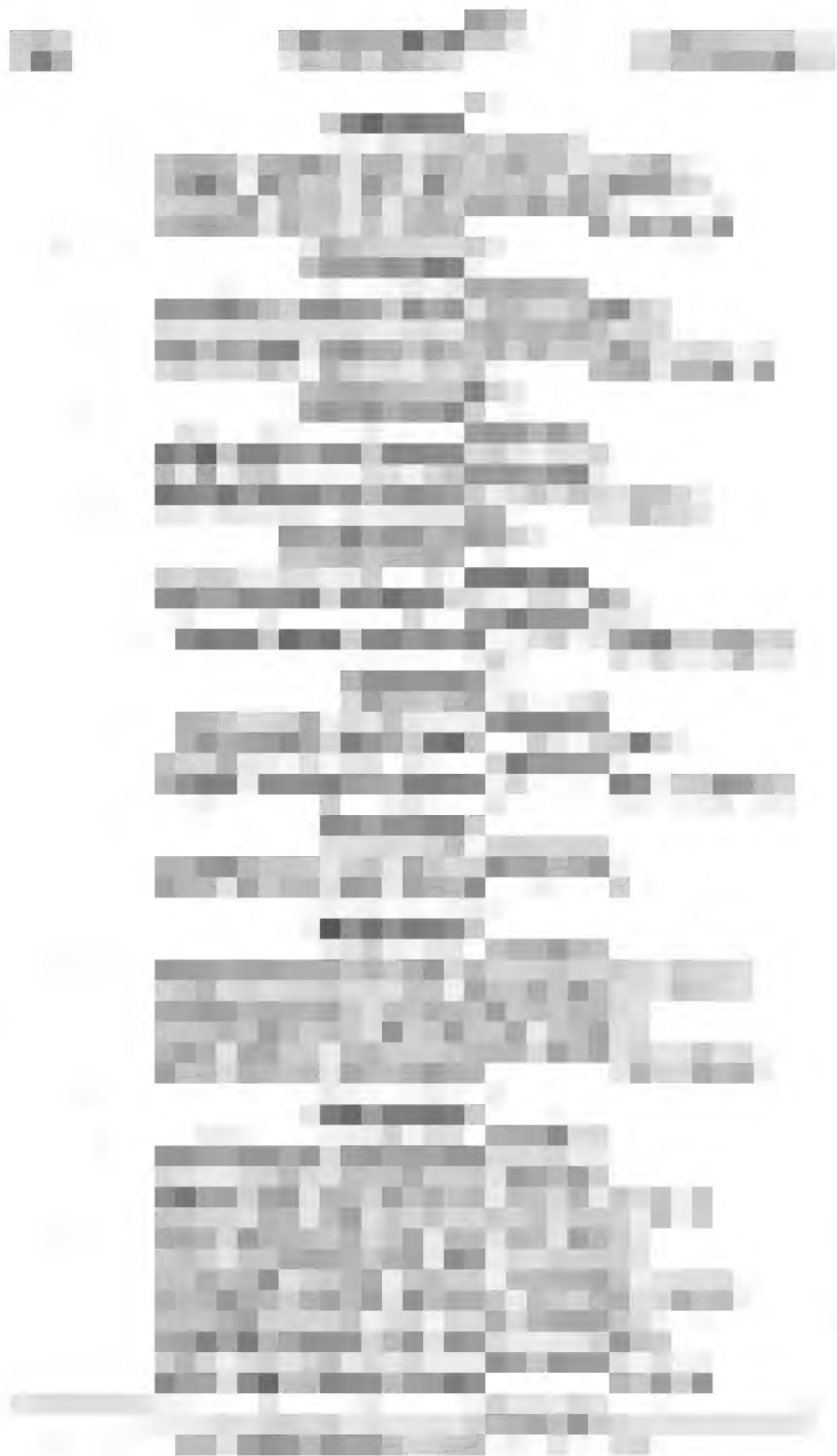
कुर्याच्छिरागतः शूलं शिराकुञ्चनपूरणम् ।

स्नायुगतमाह—

बाह्याभ्यन्तरमायामं खलीं कुब्जत्वमेव वा ॥ २८ ॥
सर्वाङ्गैकाङ्गरोगांश्च कुर्यात्स्नायुगतोऽनिलः ।
हन्ति संधिगतः संधीञ्जूलशोथौ करोति च ॥ २९ ॥

कफावृतमाह—

प्राणे पित्तावृते छर्दिर्दाहश्चैवोपजायते ।
दौर्बल्यं सदनं तन्द्रा वैरस्यं च कफावृते ॥ ३० ॥
उदाने पित्तसंयुक्ते दाहो मूर्छा भ्रमः क्लमः ।
अस्वेदहर्षो मन्दाग्निः शीतता च कफावृते ॥ ३१ ॥
स्वेददाहौष्ण्यमूर्छाः स्युः समाने पित्तसंयुते ।
कफेन सङ्गो विण्मूत्रे गात्रहर्षश्च जायते ॥ ३२ ॥



अपाने पित्तसंयुक्ते दाहौष्ण्ये रक्तमूत्रता ।
 अधःकाये गुरुत्वं च शीतता च कफावृते ॥ ३३ ॥
 व्याने पित्तावृते दाहो गात्रविक्षेपणं क्लमः ।
 गुरूणि सर्वगात्राणि स्तम्भनं चास्थिपर्वणाम् ॥ ३४ ॥
 लिङ्गं कफावृते व्याने शोषः स्तम्भस्तथैव च ।
 स्तम्भनाक्षेपणस्वापशोफशूलानि सर्वगे ॥ ३५ ॥
 स्तम्भनो दण्डकश्चापि शोफशूलौ कफावृते ।

आक्षेपकमाह—

यदा तु धमनीः सर्वाः कुपितोऽभ्येति मारुतः ॥ ३६ ॥
 तदाऽऽक्षिपत्याशु मुहुर्मुहुर्वेहं बहिश्चरः ।
 मुहुर्मुहुस्तदाक्षेपादाक्षेपक इति स्मृतः ॥ ३७ ॥
 क्रुद्धः स्वैः कोपनैर्वायुः स्थानादूर्ध्वं प्रपद्यते ।
 पीडयन्हृदयं गत्वा शिरःशङ्खौ च पीडयेत् ॥ ३८ ॥

अपतन्त्रकमाह—

धनुर्वस्त्रमयेद्गात्राण्याक्षिपेन्मोहयेत्तथा ।
 स कृच्छ्रादुच्छ्वसेद्वाऽपि स्तब्धाक्षोऽथ निमीलकः ॥ ३९ ॥
 कपोत इव कूजेच्च निःसंज्ञः सोऽपतन्त्रकः ।

अपतानकमाह—

हृदि संस्तम्य संज्ञां च हृत्वा कण्ठेन कूजति ॥ ४० ॥
 हृदि मुक्ते नरः स्वास्थ्यं याति मोहं वृते पुनः ।
 वायुना दारुणं प्राहुरेके तमपतानकम् ॥ ४१ ॥

अथ दण्डापतानकमाह—

कफान्वितो मृशं वायुस्तत्रैव यदि तिष्ठति ।
 स दण्डवत्स्तम्भयति कृच्छ्रो दण्डापतानकः ॥ ४२ ॥

तस्याऽऽयुः—

विवर्णबद्धवदनः सस्ताङ्गो नष्टचेतनः ।
 प्रस्विद्यंश्च धनुस्तम्भी दशरात्रं न जीवति ॥ ४३ ॥

धनुस्तम्भमाह—

धनुस्तुल्यं नमेद्यस्तु स धनुस्तम्भसंज्ञितः ।

The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. It then presents a review of the journal's
 content, highlighting the quality and diversity of the
 articles. The second part of the paper discusses the
 journal's impact on the field of management education,
 including its role in advancing research and practice.
 The paper concludes with a discussion of the journal's
 future and its potential to continue to make a
 significant contribution to the field.

[illegible]

1000



1. The first step is to identify the problem or question that needs to be answered. This involves understanding the context and the specific requirements of the task.

[illegible]

Age Group	Percentage of Respondents
18-29	65
30-49	75
50-69	80
70+	85

[illegible]

व्रणायाममाह-

मर्माश्रितं व्रणं प्राप्य वायुर्यः सर्वदेहगः ॥ ४४ ॥

वेगैरानमयेद्देहं व्रणायामं तु तं त्यजेत् ।

बाह्याभ्यन्तरायामावाह-

अङ्गुलीगुल्फजठरहृद्वक्षोगलसंश्रितः ।

स्नायुप्रतानमनिलो यदाऽऽक्षिपति वेगवान् ॥ ४५ ॥

विष्टब्धाक्षः स्तब्धहनुर्भग्नपार्श्वः कफं वमन् ।

अभ्यन्तरं धनुरिव यदा नमति मानवः ॥ ४६ ॥

तदा सोऽभ्यन्तरायामं कुरुते मारुतो बली ।

बाह्यस्नायुप्रतानस्थो बाह्यायामं करोति च ॥ ४७ ॥

तमसाध्यं बुधाः प्राहुः पार्श्वकट्यूरुभक्षनम् ।

कफपित्तान्वितमाह-

कफपित्तान्वितो वायुर्वायुरेव च केवलः ॥ ४८ ॥

कुर्यादाक्षेपकं त्वन्यं चतुर्थमभिधातजम् ।

असाध्यत्वमाह-

गर्भपातनिमित्तश्च शोणितातिस्रवाच्च यः ॥ ४९ ॥

अभिधातनिमित्तश्च न सिध्यत्यपतानकः ।

पक्षघातमाह-

गृहीत्वाऽर्धं तनोर्वार्युः शिरास्नायुं विशोष्य च ॥ ५० ॥

पक्षमन्यतरं हन्ति संधिवन्धान्विमोक्षयन् ।

कृत्स्नोऽर्धकायस्तस्य स्यादकर्मण्यो विचेतनः ॥ ५१ ॥

एकाङ्गरोगं तं केचिदन्ये पक्षवधं विदुः ।

वातपित्तसमन्वितमाह-

सर्वाङ्गरोगं तद्वच्च सर्वकायाश्रितेऽनिले ॥ ५२ ॥

दाहसतापमूर्च्छाः स्युर्वायौ पित्तसमन्विते ।

शैत्यशोफगुरुत्वानि तस्मिन्नेव कफावृते ॥ ५३ ॥

शुद्धघातहतं पक्षं कृच्छ्रसाध्यतमं विदुः ।

साध्यमन्येन संयुक्तमसाध्यं क्षयहेतुकम् ॥ ५४ ॥

1. The first part of the paper discusses the importance of the study.

2. The second part of the paper discusses the methodology used in the study.

3. The third part of the paper discusses the results of the study.

4. The fourth part of the paper discusses the conclusions of the study.

5. The fifth part of the paper discusses the implications of the study.

6. The sixth part of the paper discusses the limitations of the study.

पक्षाघातासाध्यत्वमाह—

गर्भिणीसूतिकाबालवृद्धक्षीणेष्वासृक्क्षये ।
पक्षाघातं परिहरेद्वेदनारहितो यदि ॥ ५५ ॥

अर्दितमाह—

उच्चैर्व्याहरतोऽत्यर्थं खादतः कठिनानि वा ।
हसतो जृम्भमाणस्य विषमाच्छयनासनात् ॥ ५६ ॥
शिरोनासोष्ठचिबुकललाटेक्षणसंधिषु ।
भर्दयत्यनिलो वक्त्रमर्दितं जनयत्यतः ॥ ५७ ॥
वक्त्री भवति वक्त्रार्धं ग्रीवा चाप्यपवर्तते ।
शिरश्चलति वाक्सङ्गो नेत्रादीनां च वैकृतम् ॥ ५८ ॥
ग्रीवाचिबुकदन्तानां यस्मिन्पार्श्वे च वेदना ।
तमर्दितमिति ग्राह्यव्याधिं व्याधिविशारदाः ॥ ५९ ॥
वातात्पित्तात्कफाच्चापि स्यान्निधा स समासतः ।
लालातिप्रस्रवः कम्पः प्रस्फुरन्हनुसंग्रहः ॥ ६० ॥
ओष्ठयोः श्वयथुः शूलमर्दिते वातजे भवेत् ।
पीतमङ्गं ज्वरस्तृष्णा पित्तजे मोहधूपने ॥ ६१ ॥
गण्डे शिरसि मन्यायां शोषः स्तम्भः कफात्मके ।
*भावितं लक्षणं तस्य वेपथुर्नेत्रमाविलम् ॥ ६२ ॥

अर्दितस्य वर्षावधिमाह—

क्षीणस्यानिमिषाक्षस्य प्रसक्ताव्यक्तमाषिणः ।
न सिध्यत्यर्दितं गाढं त्रिवर्षं वेपथस्य च ॥ ६३ ॥

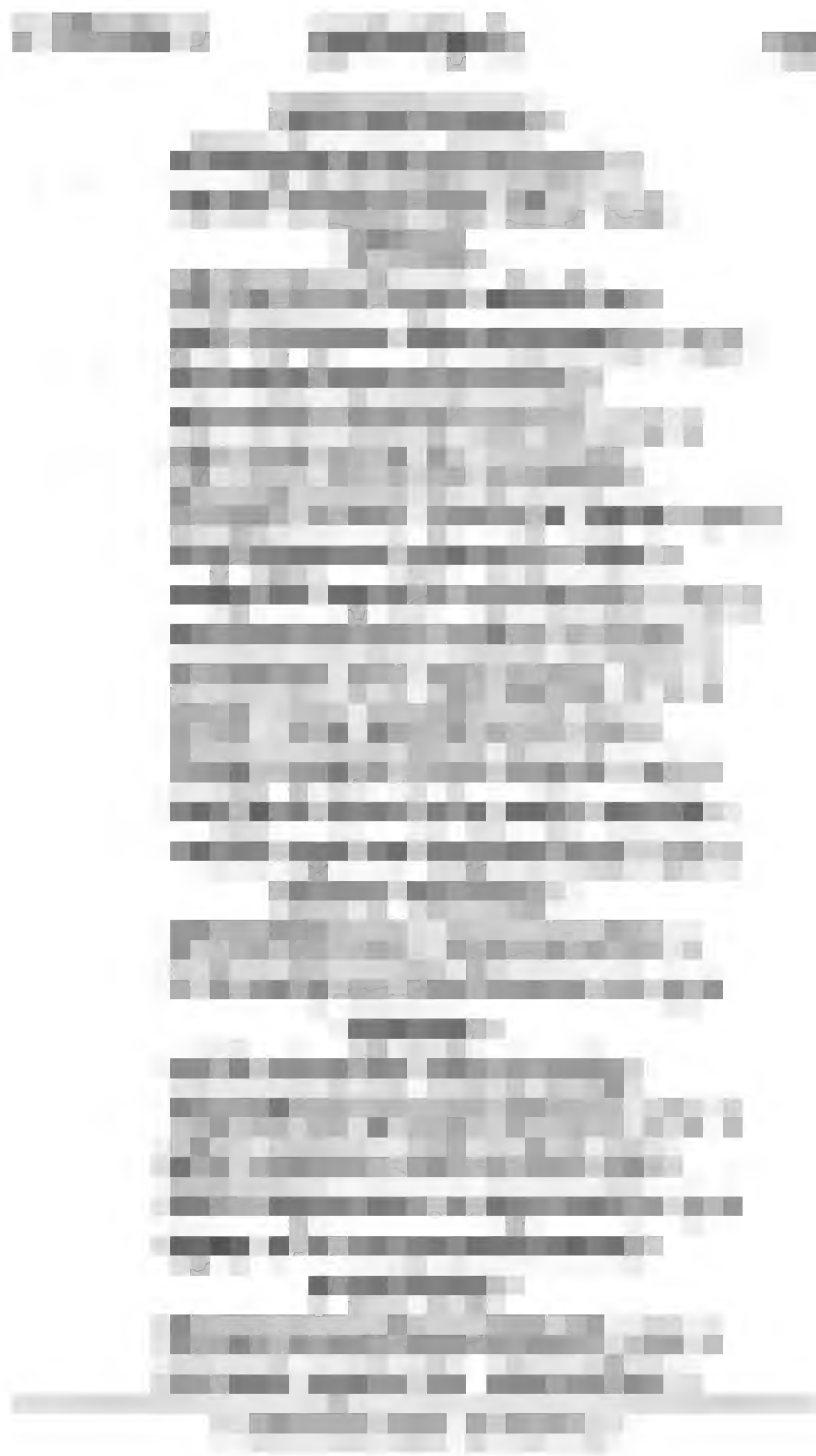
हनुग्रहमाह—

गते वेगे भवेत्स्वास्थ्यं सर्वेष्वक्षेपकादिषु ।
जिह्वानिलैरवनाच्छुष्कमक्षणादभिघाततः ॥ ६४ ॥
कुपितो हनुमूलस्थः संश्रयित्वाऽनिलो हनुम् ।
करोति विवृतास्यत्वमथ वा संवृतास्यताम् ॥ ६५ ॥
हनुग्रहः स तेन स्यात्कृच्छ्राच्चर्वणभाषणम् ।

मन्यास्तम्भमाह—

दिवास्वप्रासनस्थानविवृताध्वनिरीक्षणैः ॥ ६६ ॥
मन्यास्तम्भं प्रकुरुते स एव श्लेष्मणाऽन्वितः ।

* भावितस्याप्रज्ञो लोमहर्ष इति पाठान्तरम् ।



जिह्वास्तम्भमाह-

वाग्वाहिनीशिरासंस्थो जिह्वां स्तम्भयतेऽनिलः ॥ ६७ ॥
जिह्वास्तम्भः स तेनान्नपानवाक्येष्वनीशता ।

शिरोग्रहमाह-

रक्तमाश्रित्य पवनः कुर्यान्मूर्धधराशिराः ॥ ६८ ॥
रक्षाः सवेदनाः कृष्णाः सोऽसाध्यः स्याच्छिरोग्रहः ।

गृध्रसीमाह-

स्फिक्पूर्वकटिपृष्ठोरुजानुजङ्घापदं क्रमात् ॥ ६९ ॥
गृध्रसी स्तम्भरुक्तोदैर्गृह्णाति स्पन्दते मुहुः ।
वाताद्वातकफात्तन्द्रा गौरवारोचकान्विता ॥ ७० ॥

विश्वाचीमाह-

तलं प्रत्वङ्गुलीनां याः कण्डरा बाहुपृष्ठतः ।
बाह्वोः कर्मक्षयकरी विश्वाची वेदनोच्यते ॥ ७१ ॥

क्रोष्टुकशीर्षमाह-

वातशोणितजः शोथो जानुमध्ये रुजाकरः ।
ज्ञेयः क्रोष्टुकशीर्षस्तु स्थूलक्रोष्टुकशीर्षवान् ॥ ७२ ॥

खञ्जपङ्गू आह-

वायुः कट्याश्रितः सक्थः कण्डरामाक्षिपेद्यदा ।
खञ्जस्तदा भवेज्जन्तुः पङ्गुः सक्थोर्द्वयोर्वधात् ॥ ७३ ॥

कलायखञ्जमाह-

प्रक्रामन्वेपते यस्तु खञ्जस्त्रिव च गच्छति ।
कलायखञ्जं तं विद्यान्मुक्तसंधिप्रबन्धनम् ॥ ७४ ॥

वातकण्टकमाह-

रुक्पादे विषमे न्यस्ते श्रमाद्वा जायते यदा ।
वातेन मुल्फमाश्रित्य तमाहुर्वीतकण्टकम् ॥ ७५ ॥

पाददाहमाह-

पादयोः कुरुते दाहं पित्तासृक्सहितोऽनिलः ।
विशेषतश्चङ्क्रमतः पाददाहं तमादिशेत् ॥ ७६ ॥



पादहर्षमाह—

हृष्येते चरणौ यस्य भवेतां वाऽपि सुप्तकौ ।
पादहर्षः स विज्ञेयः कफवातप्रकोपजः ॥ ७७ ॥

अवबाहुकमाह—

अंसदेशस्थितो वायुः शोषयित्वाऽसबन्धनम् ।
शिराश्चाऽऽकुञ्च्य तत्रस्थो जनयत्यवबाहुकम् ॥ ७८ ॥

मूकमिम्भिणगद्गदानाह—

आवृत्य वायुः सकफो धमनीं शब्दवाहिनीम् ।
नरान्करोत्यक्रियकान्मूकमिम्भिणगद्गदान् ॥ ७९ ॥

तूनीमाह—

अधो या वेदना याति वर्चोमूत्राशयोत्थिता ।
भिन्दतीव गुदोपस्थं सा तूनी नामतः स्मृता ॥ ८० ॥

प्रतूनीमाह—

गुदोपस्थे स्थिता चैव प्रतिलोमं प्रधाविता ।
वेगैः पक्काशयं याति प्रतितूनीति सोच्यते ॥ ८१ ॥

आध्मानमाह—

साटोपमत्युग्ररुजमाध्मानमुदरे भृशम् ।
आध्मानमिति जानीयाद्घोरं वातनिरोधजम् ॥ ८२ ॥

प्रत्याध्मानमाह—

विमुक्तपार्श्वहृदयं तदेवाऽऽमाशयोत्थितम् ।
प्रत्याध्मानं विजानीयात्कफव्याकुलितानिलम् ॥ ८३ ॥

वाताष्ठीलामाह—

नामेरधस्तात्संजातः संचारी यदि वाऽचलः ।
अष्ठीलावद्बनो ग्रन्थिरुर्ध्वमायत उन्नतः ॥ ८४ ॥
वाताष्ठीलां विजानीयाद्बहिर्भागावरोधिनीम् ।

प्रत्यष्ठीलामाह—

एतामेव रुजायुक्तां वातविण्मूत्ररोधिनीम् ॥ ८५ ॥
प्रत्यष्ठीलामिति वदेज्जठरे तिर्यगुत्थिताम् ।

1. 1. 1.

2. 2. 2.

3. 3. 3.

4. 4. 4.

5. 5. 5.

6. 6. 6.

7. 7. 7.

8. 8. 8.

9. 9. 9.

10. 10. 10.

11. 11. 11.

12. 12. 12.

वेपथुमाह—

मारुते विगुणे वस्तौ मूत्रं सम्यक्प्रवर्तते ॥ ८६ ॥
विकारा विविधाश्चापि प्रतिलोभे भवन्ति हि ।
सर्वाङ्गकम्पः शिरसो वायुर्वेपथुसंज्ञकः ॥ ८७ ॥

ऊर्ध्ववातमाह—

खल्ली च पादजङ्घोरुकरभूलावभोटिनी ।
अधः प्रतिहतो वायुः श्लेष्मणा मारुतेन वा ॥ ८८ ॥
करोत्युद्गारबाहुल्यमूर्ध्ववातः स कथ्यते ।
स्थाननामानुरूपैश्च लिङ्गैः शेषान्विनिर्दिशेत् ॥ ८९ ॥
सर्वेष्वेतेषु संसर्गं पित्ताद्यैरुपलक्षयेत् ।
हनुस्तम्भार्दिताक्षेपपक्षाघातापतानकाः ॥ ९० ॥
कालेन महता वाता यत्नात्सिध्यन्ति वा न वा ।
नवान्बलवतस्त्वेतान्साधयेन्निरुपद्रवान् ॥ ९१ ॥

असाध्यत्वमाह—

विसर्पदाहरुक्कसङ्गमूर्छारुच्यग्निमार्दवैः ।
क्षीणमांसबलं वाता घ्नन्ति पक्षवधादयः ॥ ९२ ॥
शूनं सुप्तत्वचं मग्नं कम्पाध्माननिपीडितम् ।
रुजार्तिमन्तं च नरं वातव्याधिर्विनाशयेत् ॥ ९३ ॥
अव्याहतगतिर्यस्य स्थानस्थः प्रकृतौ स्थितः ।
वायुः स्यात्सोऽधिकं जीवेद्वीतरोगः समाः शतम् ॥ ९४ ॥

इति वातव्याधिनिदानम् ।

अथैतच्चिकित्सा—

अभ्यङ्गः स्वेदनं वस्तिर्नस्यं स्नेहो विरेचनम् ।
स्निग्धाम्ललवणं स्वादु वृण्यं वातामयापहम् ॥ ९५ ॥

अथ यूषः—

पटोलकफलैर्यूषो वृण्यो वातहरो लघुः ।
वाह्यालककृतो यूषः परं वातविनाशनः ॥ ९६ ॥
मधुरलवणसाम्लस्निग्धनस्योष्णनिद्रा
गुरुरविकरस्तिस्वेदजं तर्पणानि ।
बृहन्जलदूरोषाभ्यङ्गसंमर्दनानि
प्रकुपितपक्वानां शान्तमेतानि कुर्युः ॥ ९७ ॥



पञ्चमूलीबलासिद्धं क्षीरं वातामयापहम् ।
 पित्तस्याऽऽवरके वातरोगे शीतोष्णभेषजम् ॥ ९८ ॥
 कफस्याऽऽवरके वायौ रूक्षोष्णं मक्ष्यभेषजम् ।
 केवले पवनव्याधौ स्निग्धोष्णं मक्ष्यभेषजम् ॥ ९९ ॥
 स्निग्धोष्णशीतरूक्षाद्यैर्वातजो यो न शाम्यति ।
 विकारस्तत्र बिज्ञेयो दुष्टशोणितसंभवः ॥ १०० ॥
 वाजिगन्धाबलाशिगुदशमूलीमहौषधैः ।
 द्वे गृध्रनख्यौ रास्त्रा च गणो मारुतनाशनः ॥ १०१ ॥

अथ प्रदेहः—

आनूपमत्स्यामिषवेसवारैरुष्णैः प्रदेहः पवनापहः स्यात् ।
 स्नेहैश्चतुर्भिर्दशमूलसिद्धैः स्यादौषधैश्चानिलहा प्रदेहः ॥ १०२ ॥

अथ वेसवारः—

निरस्थि पेषितं मांसं स्विन्नं गुडघृतान्वितम् ।
 कृष्णामरिचसंयुक्तं वेसवार इति स्मृतः ॥ १०३ ॥

अथ स्वेदः—

कार्पासास्थिकुलित्थकातिलयवैरेरण्डमाषातसी-
 वर्षाभूसणबीजकाञ्जिकयुतैरेकीकृतैर्वा पृथक् ।
 स्वेदः स्यादिति कूर्परोदरहनुस्फिकपाणिपादाङ्गुली-
 गुल्फस्तम्भकटीरुजो विजयते सामाः समीरोद्भवाः ॥ १०४ ॥
 आमाशयस्थे त्वनिले प्रशस्तं प्राग्लङ्घनं दीपनपाचनं च ।
 प्रच्छर्दनं तीक्ष्णविरेचनं च पुराणमुद्रा यवशालयश्च ॥ १०५ ॥
 पूतीकपथ्यासटिपुष्कराणि बिल्वं गुडूची सुरदारु शुण्ठी ।
 विडङ्गपाठातिविषाकणाश्च क्वाथास्त्रयः सामसमीरणघ्नाः ॥ १०६ ॥
 पक्वाशयगते वायौ हितं स्नेहैर्विरेचनम् ।
 बस्तयः शोधनीयाश्च प्राश्याश्च लवणोत्तराः ॥ १०७ ॥
 कार्यो बस्तिगते वाते विधिर्बस्तिविशोधनः ।
 श्रोत्रादिषु प्रकुपिते कार्यो वातहरः क्रमः ॥ १०८ ॥
 स्नेहाम्यङ्गोपनाहंश्च मर्दनालेपनादि च ।
 त्वङ्मांसासृक्शिराप्राप्ते कुर्याद्रक्तविमोक्षणम् ॥ १०९ ॥

1. Introduction

2. Methodology

3. Results

The first part of the study focuses on the analysis of the data collected from the survey. The results show that the majority of the respondents are male, aged between 25 and 35, and have a university degree. The data also indicates that the majority of the respondents are employed, with a significant proportion working in the private sector. The results of the survey are presented in the following table:

The second part of the study focuses on the analysis of the data collected from the interviews. The results show that the majority of the respondents are male, aged between 25 and 35, and have a university degree. The data also indicates that the majority of the respondents are employed, with a significant proportion working in the private sector.

The third part of the study focuses on the analysis of the data collected from the focus groups. The results show that the majority of the respondents are male, aged between 25 and 35, and have a university degree. The data also indicates that the majority of the respondents are employed, with a significant proportion working in the private sector.

The fourth part of the study focuses on the analysis of the data collected from the case studies. The results show that the majority of the respondents are male, aged between 25 and 35, and have a university degree. The data also indicates that the majority of the respondents are employed, with a significant proportion working in the private sector.

The fifth part of the study focuses on the analysis of the data collected from the experiments. The results show that the majority of the respondents are male, aged between 25 and 35, and have a university degree. The data also indicates that the majority of the respondents are employed, with a significant proportion working in the private sector.

The sixth part of the study focuses on the analysis of the data collected from the surveys. The results show that the majority of the respondents are male, aged between 25 and 35, and have a university degree. The data also indicates that the majority of the respondents are employed, with a significant proportion working in the private sector. The results of the survey are presented in the following table:

स्नेहोपनाहाम्निकर्मबन्धनोन्मर्दनानि च ।
 स्नायुसंध्यस्थिसंप्राप्ते कुर्याद्वाते विचक्षणः ॥ ११० ॥
 स्वेदोपनाहसंमर्दस्नेहनादिकमादरात् ।
 निगूढेऽस्थिगते वाते माणिमन्थेन दारिते ॥ १११ ॥
 नाडीं दत्त्वाऽस्थनि भिषक्चूषयेत्पवनं बली ।
 विरेको मांसमेदस्थे निरूहः शमनानि च ॥ ११२ ॥
 बाह्याभ्यन्तरगस्नेहैरस्थिमज्जगतं जयेत् ।
 शुक्रप्राप्तेऽनिले कार्यं शुक्रदोषचिकित्सितम् ॥ ११३ ॥
 वक्षस्त्रिकस्कन्धगतं वातं मन्यागतं तथा ।
 वमनं हन्ति नस्यं च कुशलेन प्रयोजितम् ॥ ११४ ॥
 माषषलाशुकशिम्बीकचूणरास्नाश्वगन्धोरुबुकाणाम् ।
 *क्राथो नश्यति पीतो रामठलवणान्वितः कोष्णः ॥ ११५ ॥
 अपनयति पक्षाघातं मन्यास्तम्भं सकर्णनादरुजम् ।
 दुर्जयमर्दितवातं सप्ताहाज्जयति चावश्यम् ॥ ११६ ॥
 इति माषादिसप्तकम् ।

अथ माषादिकाथः-

माक्षिकं हिङ्गुं सिन्धूत्थं जरणाद्यास्तु शाणिकाः ।
 क्राथे प्रदेयाः शिशिरे सर्वत्रैष विनिश्चयः ॥ ११७ ॥
 माषात्मगुप्तकैरण्डवाट्यालकशृतं जलम् ।
 हिङ्गुसैन्धवसंयुक्तं पक्षाघातनिवारणम् ॥ ११८ ॥
 इति माषादिकाथः ।

अथ रसोनसप्तकम्-

पलमर्धपलं वाऽपि रसोनस्य सुकुट्टितम् ।
 हिङ्गुजीरकसिन्धूत्थसौवर्चलकटुत्रिकैः ॥ ११९ ॥
 चूर्णितैर्माषकोन्मानैरवचूर्ण्य विलोडितम् ।
 यथाग्निं मक्षितं प्राप्ता रुबुक्राथानुपानतः ॥ १२० ॥
 दिने दिने प्रयोक्तव्यं मासमेकं निरन्तरम् ।
 वातामयं निहन्त्येव मर्दितं चापतन्त्रकम् ॥ १२१ ॥

* क. प्रातः पी° इति पाठान्तरम् ।

१ म. °थः °मितथा करवन्म° ।

1. The first part of the paper discusses the importance of the study and the objectives of the research. It also provides a brief overview of the methodology used in the study.

2. The second part of the paper presents the results of the study. It includes a detailed description of the data collected and the analysis performed.

3. The third part of the paper discusses the implications of the findings and the conclusions drawn from the study. It also provides recommendations for future research.

4. The fourth part of the paper provides a summary of the study and its findings. It also includes a list of references and a list of figures and tables.

एकाङ्गरोगिणां रोगं वृथा सर्वाङ्गरोगिणाम् ।
 ऊरुस्तम्भं गृध्रसीं च शूलद्वन्द्वं कृमीनपि ।
 कटिपृष्ठामयं हन्याज्जाठरं च समीरणम् ॥ १२२ ॥

इति रसोनसप्तकम् ।

अथ माषोण्डरी—

नवनीतेन संयुक्तां खावेन्माषोण्डरीं नरः ।
 दुर्वारमर्दितं हन्ति सप्तरात्रान्न संशयः ॥ १२३ ॥

इति माषोण्डरी ।

अथ दशमूल्यादिकाथः—

दशमूलीबलामाषकाथं तैलाज्यमिश्रितम् ।
 सायं भुक्त्वाऽऽचरेन्नस्यं विश्वाच्यां चावबाहुके ॥ १२४ ॥

इति दशमूल्यादिकाथः ।

अथ सहचरादिकाथः—

सहचरामरदारु सनागरं कथितमम्भसि तैलविमिश्रितम् ।
 पवनपीडितदेहगतिः पिबन्कुतविलम्बितगो भवतीच्छया ॥ १२५ ॥

इति सहचरादिकाथः ।

अथ दशमूलादिकाथः—

दशमूलस्य निर्यूहो हिङ्गुपुष्करचूर्णितः ।
 शमयेत्परिपीतस्तु वातं मिम्भिणिसंज्ञितम् ॥ १२६ ॥

इति दशमूलादिकाथः ।

अथ दशमूल्यादिः—

हनुग्रहे हनुस्तम्भे मन्यास्तम्भेऽर्दिते पिबेत् ।
 दशमूल्यम्भसा कृष्णां पिप्पल्याः स्वरसेन वा ॥ १२७ ॥

इति दशमूल्यादिः ।

अथ दारुषट्कम्—

बाहुशोषे पिबेद्भुक्त्वा सर्पिः कल्याणकं महत् ।
 हृदयं यदि वा पृष्ठमुन्नतं क्रमशः सरुक् ॥ १२८ ॥
 कृद्धो वायुर्यदा कुर्यात्तदा तं कुब्जमादिशेत् ।
 वातघ्नैर्दशमूल्या च नवं कुब्जमुपाचरेत् ॥ १२९ ॥

Figure 1

100

1000

Abstract

1

Figure 1

100

100

1000



1000

Age Group	Percentage
18-24	10%
25-34	25%
35-44	30%
45-54	20%
55-64	10%
65-74	5%
75-84	5%
85+	5%

[illegible][illegible]

[illegible]

स्नेहैर्मांसरसैश्चापि प्रवृद्धं तं विवर्जयेत् ।
 पिप्पल्यादिरजस्तूनीप्रतितून्योः सुखाम्बुजा ॥ १३० ॥
 पिबेद्वा स्नेहलवणं सघृतं क्षारहिङ्गु वा ।
 आध्माने लेपनं पाणितापश्च फलवर्तयः ॥ १३१ ॥
 दारुहैमवतीकुष्ठशताह्वाहिङ्गुसैन्धवैः ।
 अम्लपिष्टैः सुखोष्णैश्च प्रदिह्यादुदरं भिषक् ॥ १३२ ॥
 दीपनं वाचनं चैवाऽऽध्मानघ्नं बस्तिशोधनम् ॥ १३३ ॥

इति दारुषट्कम् ।

अथ जिह्वास्तम्भे कल्याणकावलेहः-

प्रत्याध्माने तु वमनं लङ्घनं दीपनौषधम् ।
 बाह्यायामान्तरायामपार्श्वशूलकटिग्रहान् ॥ १३४ ॥
 खलीदण्डापतनौ च स्नेहस्वेदपुरैर्जयेत् ।
 ऊरुस्तम्भं जयेद्रक्षस्वेदमर्दनकौशिकैः ॥ १३५ ॥
 जयेत्कलायखञ्जं तु हेतुत्यागरसोनतः ।
 माषतैलरसोनाभ्यां बाह्वोश्च परिवर्तनात् ॥ १३६ ॥
 दशाङ्गघ्निमापकाथाञ्च जयेद्वैद्योऽवबाहुकम् ।
 वामनत्वाङ्गसंकोचभङ्गभेदग्रहव्यथाः ॥ १३८ ॥
 मर्दनैर्बस्तिभिः क्वाथैः स्वेदनैश्च मिषजयेत् ।
 अपतानव्रणायामौ स्नेहैर्ब्रणचिकित्सितैः ॥ १३९ ॥
 अङ्गुरौक्ष्यस्तम्भकम्पकार्श्यकापिश्यतोदने ।
 दौर्बल्ये स्फुरणे भ्रंशे स्नेहैर्मर्दनमिष्यते ॥ १४० ॥
 शुक्रकार्श्यं शुक्रनाशे शुक्रस्यातिप्रवर्तने ।
 विह्वग्रहे बद्धविट्के च स्नेहपानं हितं मतम् ॥ १४१ ॥
 प्रलापे भीरुतायां च प्रसुप्तौ चित्तवैकृते ।
 स्वेदनाशे बलक्षये कौशिकः सघृतो हितः ॥ १४२ ॥
 शब्दाज्ञत्वे दृक्क्षये च गन्धाज्ञत्वे च जृम्भणे ।
 निद्रानाशेऽपि च शिरोबस्तिपानं च सर्पिषः ॥ १४३ ॥
 कषायवक्त्रतायां च विरसास्यगदे तथा ।
 रसज्ञतामये चापि लेहः कल्याणको हितः ॥ १४४ ॥

1. The first part of the paper discusses the importance of the study and the objectives of the research. It also provides a brief overview of the methodology used in the study.

2. The second part of the paper presents the results of the study. It includes a detailed analysis of the data collected and a discussion of the findings. The results show that there is a significant correlation between the variables studied.

शीततां रोमहर्षं च शिरापूरणमेव च ।
 कटुतिकैर्जयेद्वैद्यः स्नेहस्वेदनमर्दनैः ॥ १४५ ॥
 वाताप्रवृत्तिमुद्गारमन्त्रकूजनमेव च ।
 निरुहवस्तिनाऽथाङ्गकाठिन्यं स्नेहगाहनात् ॥ १४६ ॥
 प्रत्यष्ठीलाष्ठीलिकयोर्गुल्मेऽभ्यन्तरविद्रधौ ।
 क्रिया हिङ्गवादिचूर्णं च शस्यतेऽत्र विशेषतः ॥ १४७ ॥
 विश्वान्यां खञ्जपङ्गवोश्च दाहे हर्षं च पादयोः ।
 क्रोमुशीर्षविकारे च विकारे वातकण्टके ॥ १४८ ॥
 शिरां यथोक्तां निर्वेध्य चिकित्साऽत्रानिलापहा ।
 जिह्वास्तम्भे क्रिया श्रेष्ठा सामान्योक्ता तु याऽर्दिते ॥ १४९ ॥
 शिरोग्रहे तु कर्तव्या शिरोगतमरुत्क्रिया ।
 सहरिद्रा वचा कुष्ठं पिप्पली विश्वभेषजम् ॥ १५० ॥
 अजार्जी चाजमोदा च यष्टी मधुकसैन्धवम् ।
 एतानि समभागानि श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत् ॥ १५१ ॥
 तच्चूर्णं सर्पिषाऽऽलोड्य प्रत्यहं भक्षयेन्नरः ।
 एकविंशतिरात्रेण भवेच्छ्रुतिधरो नरः ॥ १५२ ॥
 मेघदुन्दुभिनिर्घोषो मत्तकोकिलनिस्वनः ।
 जङ्गद्वदमूकत्वं लेहः कल्याणको जयेत् ॥ १५३ ॥
 इति जिह्वास्तम्भे कल्याणकावलेहः ।

अथैरण्डबीजपायसः—

गुडूचीत्रिफलाकाथैर्गुग्गुलुः पिण्डितो वरः ।
 क्रोमुशीर्षं निहन्त्युच्चैः सेवितो मासमात्रतः ॥ १५४ ॥
 हृते रक्तेऽनिलहरो विधिः कृत्स्नः प्रशस्यते ।
 दशमूलीबलारास्नागुडूचीविश्वभेषजम् ॥ १५५ ॥
 पिबेदेरण्डतैलेन गृध्रसीखञ्जपङ्गुषु ।
 विशोध्यैरण्डबीजानि पिष्ट्वा क्षीरे विपाचयेत् ।
 पायसः स कटीशूले गृध्रस्यां चौषधं परम् ॥ १५६ ॥
 इत्यैरण्डबीजपायसः ।

अथ तैलादियोगाः—

तैलं घृतं चाऽऽर्द्रकमातुलुङ्गयो रसं सचुक्रं सगुडं पिबेद्वा ।
 कट्यूरुपृष्ठत्रिकगुल्मशूलगृध्रस्युदावर्तहनुग्रहेषु ॥ १५७ ॥
 इति तैलादियोगाः ।



अथ रास्नाद्यो गुग्गुलुः—

रास्नायारस्तु पलं चैकं कर्षान्पञ्च च गुग्गुलोः ।

सर्पिषा वटकान्कृत्वा खादेद्गृध्रसिनाशनान् ॥ १५८ ॥

इति रास्नाद्यो गुग्गुलुः ।

अथ हिङ्गवादिचूर्णम्—

हिङ्गवम्लत्रिपटूग्रघट्कटुसटीवृक्षाम्लदीप्याम्लिका

पाठाजाज्यजगन्धमूलहपुषाद्विक्षारसाराभयम् ।

हिध्माध्मानविबन्धवध्मकसनश्वासाग्निसादारुचि-

प्रीहाशोखिलशूलगुल्मगलहृद्रोगाश्मपाण्डुप्रणुत् ॥ १५९ ॥

इति हिङ्गवादिचूर्णम् ।

अथ गृध्रस्युत्तारणप्रकारः—

गृध्रस्यार्तस्य जङ्घायाः स्नेहस्वेदे कृते भृशम् ।

पञ्चां विमर्दितायाश्च सूक्ष्ममार्गेण गृध्रसीम् ॥ १६० ॥

अवतार्याङ्गुलौ सम्यक्कनिष्ठायां शनैः शनैः ।

ज्ञात्वा समुन्नतिं ग्रन्थिं कण्डरायां व्यवस्थितम् ॥ १६१ ॥

तं शस्त्रेण विदार्याऽऽशु प्रवालाङ्कुरसंनिभम् ।

समुद्धृत्याग्निना दग्ध्वा लिम्पेद्यष्ट्याह्वचन्दनैः ॥ १६२ ॥

इति गृध्रस्युत्तारणप्रकारः ।

अथ शिरावेधविधिः—

विध्येच्छिरामिन्द्रबस्तेरधस्ताच्चतुरङ्गुले ।

यदि नोपशमं गच्छेद्दहेत्पादकनिष्ठिकाम् ॥ १६३ ॥

इति शिरावेधविधिः ।

अथाऽऽदित्यगुग्गुलुः—

तैलमेरण्डजं वाऽपि गोमूत्रेण पिबेन्नरः ।

मासमेकं प्रयोगोऽयं गृध्रस्यूरुग्रहापहः ॥ १६४ ॥

रक्तावसेचनं कुर्यादभीक्ष्णे वातकण्टके ।

पिबेदेरण्डतैलं वा दहेत्सूचीभिरेव वा ॥ १६५ ॥

दशमूलीकषायेण पिबेद्वा नागराम्भसा ।

कष्टिशूलेषु सर्वेषु तैलमेरण्डसंभवम् ॥ १६६ ॥

पृथक्पलांशा त्रिफला पिप्पली च विचूर्णिता ।
 दशमूलाम्बुना भाव्या त्वगेलार्धपलान्विता ॥ १६७ ॥
 दत्त्वा पञ्च पलान्यत्र गुग्गुलोर्वटकीकृतः ।
 एष मांसरसाभ्यासाद्वातरोगानशेषतः ॥ १६८ ॥
 हन्ति मन्यास्थिमज्जस्थान्वृत्रमिन्द्राशनिर्यथा ।
 लेहवद्विगुणेनायमालोढ्याऽऽलोढ्य चाऽऽतपे ॥ १६९ ॥
 दशमूलाम्बुना शोष्यः सप्तवारांस्तु गुग्गुलुः ।
 भाव्यवस्तुसमं काश्यं काथोऽष्टांशशृतेन च ।
 आर्द्रं यावद्दिनं भाव्यं सप्ताहं भावनाविधिः ॥ १७० ॥

इत्याषित्यगुग्गुलुः ।

अथ त्रयोदशाङ्गो गुग्गुलुः—

आमाऽश्वगन्धा हपुषा गुडूची
 शतावरी गोक्षुरकं सरास्त्रा ।
 श्यामा सठी घोषवती यवानी
 सनागरा चेति समं विचूर्ण्य ॥ १७१ ॥
 सर्वैः समं गुग्गुलुमत्र दत्त्वा
 कुर्यात्ततोऽर्धं प्रणिधाय सर्पिः ।
 अर्धाक्षमात्रा गुटिकास्ततोऽस्य
 कार्याः पुरस्याथ दिनाननेऽद्यात् ॥ १७२ ॥
 एकां ससर्पिर्मधुना यथा न
 स्पर्शो भवेद्दन्तततेः कथंचित् ।
 ततः कवोष्णं सलिलं सुरां वा
 गव्यं पयो वाऽप्यथ मुद्गयूषम् ॥ १७३ ॥

किंवा रसं मांसभवं निपीय लवङ्गमेकं वदने निदध्यात् ।
 कटिग्रहे गृध्रसिबाहुपृष्ठे हनुग्रहे जानुपदग्रहे च ॥ १७४ ॥
 संधिस्थिते चास्थिगते समीरे मज्जाश्रिते स्नायुगतेऽतिदुष्टे ।
 शूलद्वये पार्श्वशिरोरुजायां मन्याग्रहे कण्ठहृदि ग्रहे च ।
 त्रयोदशाङ्गोऽयमतिप्रशस्तो जयेद्गदान्वातकरुप्रभूतान् ॥ १७५ ॥

इति त्रयोदशाङ्गो गुग्गुलुः ।

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that proper record-keeping is essential for ensuring the integrity and transparency of the financial system. This section also outlines the various methods used to collect and analyze data, highlighting the role of technology in streamlining these processes.

2. The second part of the document focuses on the challenges faced by organizations in implementing effective risk management strategies. It identifies key areas such as market volatility, regulatory changes, and operational risks, and provides detailed recommendations for mitigating these risks. This section also discusses the importance of regular communication and collaboration between different departments to ensure a cohesive risk management approach.

3. The final part of the document concludes with a summary of the key findings and recommendations. It reiterates the importance of ongoing monitoring and evaluation to ensure that the implemented strategies remain effective in the face of changing circumstances.

अथ महाराज्ञादिकाथः—

राज्ञा त्रिः पृथगेकभागमपरं सैर्यान्दयासामृता-

श्वोघ्रा दार्ढमयार्धधक्षुरसटीशुण्ठीरुणा वेल्हरी ।

व्याघ्रौ धाड्यविषावरीवृषबलैरण्डं विशाखो मिशि-

श्वयं चेति शृतं सविश्वमनिले सामे रुबुमेहयुक् ॥१७६॥

इति महाराज्ञादिकाथः ।

अथ योगराजो गुग्गुलुः—

वेल्लालाहिङ्गविमाह्वावृकिजरणविषापञ्चकोलाजमोदा

मूर्वोघ्राकौन्तिमार्गीन्द्रजकटुपटुकाभ्यो वरा द्विः पुरश्चिः ।

सक्षौद्रो योगराजो ग्रहणिचलजराबीजपाण्ड्वर्तिहृदुक्-

त्वग्मुहोहमणशोर्किचिखुडकसनापस्मृतिश्वासशोषे ॥ १७७ ॥

इति योगराजो गुग्गुलुः ।

अथ राज्ञायो गुग्गुलुः—

राज्ञामृतैरण्डसुराह्वविश्वं तुल्येन गाढं पुरुणा विमर्द्य ।

सावेत्समीरी स शिरोगद्दी च नाडीवर्णी चापि भगंदरी च ॥१७८॥

इति राज्ञायो गुग्गुलुः ।

अथ द्वात्रिंशको गुग्गुलुः—

त्रिकटु त्रिफला मुस्तं विडङ्गं चव्यचित्रकौ ।

वचैलापिप्पलीमूलं हपुषा सुरदारु च ॥ १७९ ॥

तुम्बरुं पौष्करं कुष्ठं विषा च रजनीद्वयम् ।

बाण्डिका जीरकं शुण्ठी पत्रं च सदुरालमम् ॥ १८० ॥

सौवर्चलं विडं चैव क्षारौ द्विरदपिप्पली ।

सैन्धवं च समानेतान्कृत्वा तुल्यं च तैः पुरम् ॥ १८१ ॥

साधयित्वा विधानेन कोलमात्रां वटीं चरेत् ।

घृतेन मधुना वाऽपि मक्षयेत्तामहर्मुखे ॥ १८२ ॥

आमं हन्यादुदावर्तमन्त्रवृद्धिं कृमीन्रुजः ।

महाज्वरोपसृष्टानां भूतोपहतचेतसाम् ॥ १८३ ॥

आनाहोन्मादकुष्ठानि पार्श्वशूलहृदामयान् ।

गृध्रसीं च हनुस्तम्भं पक्षाघातापतानकान् ॥ १८४ ॥

1. The first part of the paper discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that this is essential for the proper management of the company's finances and for ensuring that all stakeholders are kept informed of the company's financial health.

2. The second part of the paper discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that this is essential for the proper management of the company's finances and for ensuring that all stakeholders are kept informed of the company's financial health.

3. The third part of the paper discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that this is essential for the proper management of the company's finances and for ensuring that all stakeholders are kept informed of the company's financial health.

4. The fourth part of the paper discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that this is essential for the proper management of the company's finances and for ensuring that all stakeholders are kept informed of the company's financial health.

शोफं प्लीहानमत्युग्रकामलामपचीमपि ।
नाम्ना द्वात्रिंशको ह्येष गुग्गुलुः कथितो महात् ।
धन्वन्तरिकृतो योमः सर्वरोगनिषूदनः ॥ १८५ ॥

इति द्वात्रिंशको गुग्गुलुः ।

अथ लघुविषगर्भतैलम्—

तैलाढकं समतुषाम्बु हयारिहेमनिर्गुण्डि-
भास्करशिफाशृतया तु सिद्धम् ।
धत्तूरकुष्ठकलिनीविषहेमदुग्धा-
रास्नाहयारिकटभीमरिचोपचित्राः ॥ १८६ ॥
मांसीवचादहनसर्पपदेवदारु-
दावीनिशारुजतुत्रिफलासमङ्गाः ।
पिष्ट्वा क्षिपेत्पलमिता विषगर्भमेत-
तैलं समस्तपवनामयनाशनं स्यात् ॥ १८७ ॥

इति लघुविषगर्भतैलम् ।

अथातिप्रसारिणीतैलम्—

सारिण्यश्वाक्शाङ्गिन्निकटुवरिबलासैर्यवृश्चीकरास्ना-
छिन्नागुप्तास्तुलांशा यवबदरकुलत्थाढकान्पङ्क्तिकुम्भे ।
पक्त्वा वा तैलपात्रे समपयसि घटे चाऽऽकैर्मूलकाम्भः
शुक्तं मस्त्वारनालं बधिसर इति तैः शौक्तिकै रुद्धनताब्दैः ॥ १८८ ॥
स्पृष्टोऽग्राष्टवर्गानलसरलसटीबोलगालत्रिजातै-
र्यष्टीशृङ्गाटसिंहेमकणनखनिशादान्तदारुद्विदीप्यैः ।
मांसीपट्टकद्विजाजीविसनलकृमिजिञ्चोरशृङ्गीकसेरु-
क्षारायोमूलरास्नात्रिपटुमिशिहिमैः सारिणीतैलमेतत् ॥ १८९ ॥
जृम्भोद्गारजराखुडक्षयरुजापस्मारमङ्गक्षता-
ध्मानोन्मादमनोनिलश्रुतिशिरस्त्वग्बीजवाग्ब्याधिषु ॥

इत्यतिप्रसारिणीतैलम् ।

अथ महामाषायं तैलम्—

माषोमासणबीजसैर्यकयवक्षुद्रात्रिकण्टार्धमी-
कार्पासास्थिकुलत्थटुण्डबदराजकाथमस्त्वम्लकैः ॥ १९० ॥

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting system in providing reliable financial information.

2. The second part of the document describes the various methods used to collect and analyze data, including interviews, surveys, and focus groups.

3. The third part of the document presents the results of the study, showing that the accounting system plays a crucial role in the success of the organization.

4. The fourth part of the document discusses the implications of the findings and provides recommendations for future research.

5. The fifth part of the document concludes the study and summarizes the key findings.

व्योषोग्रामिशिसिन्धुगालसरणीरास्नानताश्वारुणा-
पाठाकिंजविशाखपुष्करबलाचण्डामुराजक्षुरैः ।
सच्छिन्नोरुबुमाषतैलमथ वा चार्धाङ्गशोषापता-
नाक्षेपाद्यमरुच्चिकावैपचिरुग्दोर्मर्दकम्पादितैः ॥ १९१ ॥
इति महामाषाद्यं तैलम् ।

अथ शतावरीतैलम्—

काणाश्वामिसिमांसिशैलनतरुद्धेदाविशाखारुणा-
रास्नैलोमबलास्थिराहिमसुरैस्तुल्ये वरीवारिणि ।
क्षीरे च द्विरभीरुतैलमनिलव्याधौ खुडे वर्धमानि
क्षीणे कुष्ठजरास्यशोषबधिरव्यङ्गनास्रपित्तज्वरे ॥ १९२ ॥
इति शतावरीतैलम् ।

अथ महाबलातैलम्—

युक्पञ्चाङ्गघिकुलत्थकोलयकैस्तेलं बलाम्भः पर्यो-
शोऽशः षट् षड्विं पचेत्पटुवरीरक्ताविदारीनतैः ।
गोपीयुष्मिशिदारुजीवनबलावृद्धत्रिजातागरु-
श्रेष्ठाबोलविशाखसर्जरसलोम्राश्वजटारुगिभैः ॥
सूतीबालमरुद्गार्तिषु बलातैलं ज्वरोन्मादयो-
र्भूत्राघातहतास्थिमर्मकसने गुल्मान्त्रवृद्धिक्षये ॥ १९३ ॥
इति महाबलातैलम् ।

अथ नारायणं तैलम्—

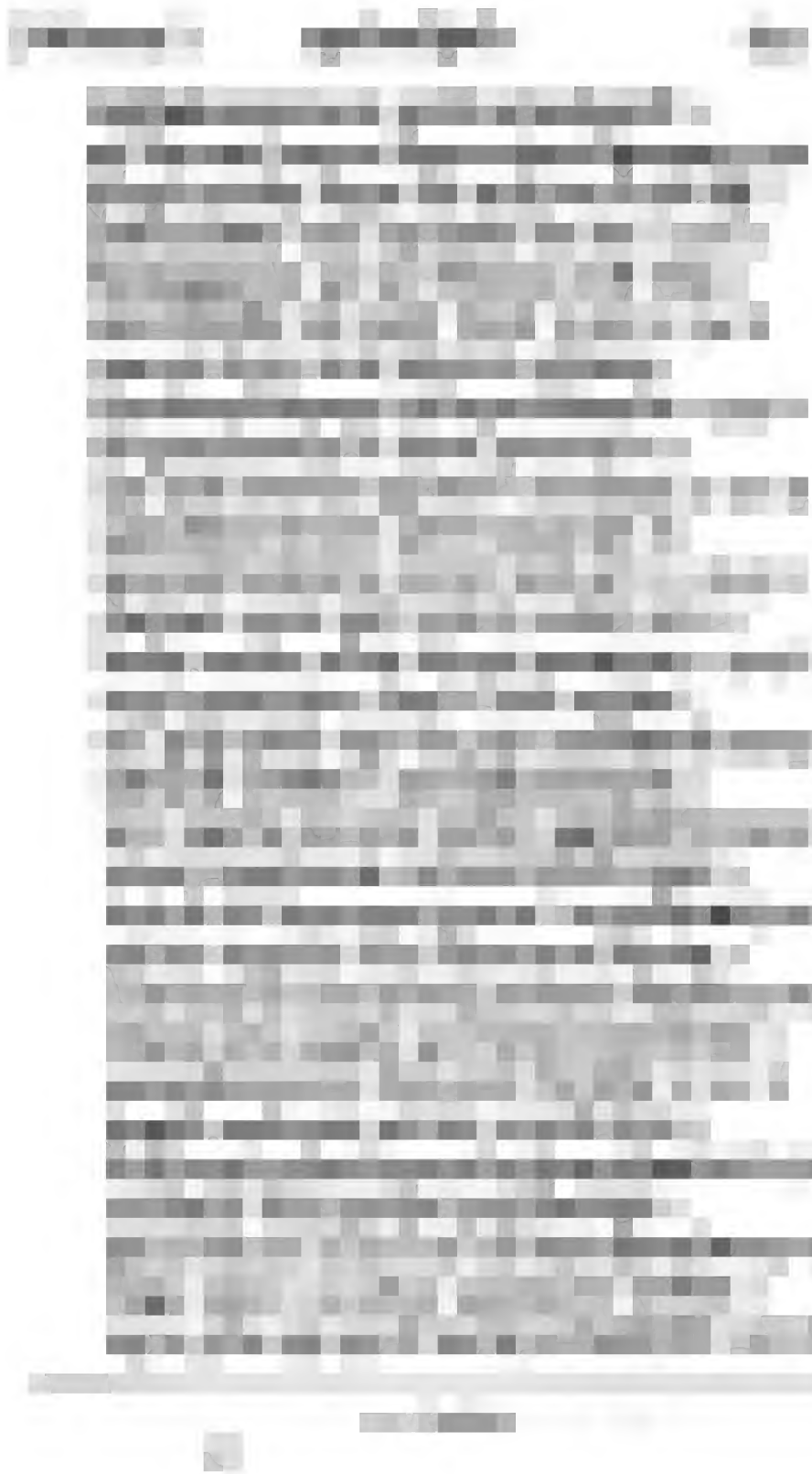
व्याघ्रयौ पञ्चाङ्गघ्रिनिम्बक्षुरसरणिबले क्रूरवाहौ वहेयं (?)
पक्काऽयं ताम्रमध्येऽङ्गघ्रिसमवरिचतुर्गोपयस्तेन पात्रम् (?) ।
तैलं द्याम्राश्वरास्नामिसिनतजटिलादारुरुक्पर्णिशीतो-
ग्रावृद्धैलावलाक्षैः पच पवनगदध्वंसि नारायणाख्यम् ॥ १९४ ॥
इति नारायणं तैलम् ।

अथ जीवनारायणतैलपाठः—

बलाश्वगन्धावृहतीश्वदंष्ट्राश्वोनाकवाट्यालकषारिमद्राः ।
क्षुद्रार्कठिल्लातिबलाग्निमन्थरास्नारणीकाः कपिकच्छुरा च ॥ १९५ ॥

१ ग. 'किंजवि' । २ ग. 'चण्डाः सुराजाक्षु' । ३ ग. 'वयव' । ४ ग. 'द्विद्वे च' । ५ ग. 'वत्वा पक्त्वाऽऽम्रम्' । ६ क. 'कपिला' ।

निर्गुण्डिकैरण्डकुरण्डकानां मूलानि वर्षासरणीयुतानि ।
 मूलं विदध्यादथ पाटलानां संकुट्य पादांशतयोद्धतानाम् ॥ १९६ ॥
 द्रोणद्वयं काथ्यमिदं विकुट्य ताम्रे कटाहेऽप्यथ वाऽपि लौहे ।
 द्रोणैरपामष्टमिरेव पक्त्वा पादावशेषेण रसेन तेन ॥ १९७ ॥
 तैलाढकद्वन्द्वमथात्र दुग्धं छागं निदध्यादथ चापि गव्यम् ।
 क्रमात्पचेत्तैलमिदं प्रपूतं चतुर्गुणं भीरुरसं च दत्त्वा ॥ १९८ ॥
 पुनश्च पूतं विरचय्य कल्के दद्यादमीषां मृदुपिष्टमत्र ।
 रास्नाश्वगन्धामिसिदारुकुष्ठं पर्णाचतुष्कागरुकेसराणि ॥ १९९ ॥
 सिन्धूत्थमांसीरजनीद्वयं च शैलेयकं पुष्करचन्दनं च ।
 एलां सयष्टीं तगराब्दपत्रं भृङ्गाष्टवर्गं च जयापलाशम् ॥ २०० ॥
 वृश्चीवथौणेयकचोरकारुयं मूर्वावचाकटफलपद्मकं च ।
 मृणालजातीफलकेतकीश्च सनागपुष्पं सरलं मुरां च ॥ २०१ ॥
 जीवन्तिकां चन्दनकं ह्युशीरं दुरालभां वानरिकां नखं च ।
 कैवर्तिकं तालशिरः सत्तिकं खर्जूरमुस्तं पृथगक्षमात्रम् ॥ २०२ ॥
 पलद्वयं नूतनकालमेण्याः पिष्ट्वा च तोयेन चतुर्गुणेन ।
 एणः कुरङ्गो हरिणो मयूरो गोधू शशः शलकचक्रवाकौ ॥ २०३ ॥
 वर्तिरलावी वरतिचिरी च ससारसक्रौञ्चकम्बुवर्णाः ।
 अजाः सकूर्माश्च हयः शृगालः सकर्कटाः कुक्कुटहंसकोकाः ॥ २०४ ॥
 धनेश्वरो भासकपेचकाद्या रोहीतपाठीनिशिलीन्ध्रशृङ्गयः ।
 येऽन्येऽपि तोये शिशुमारमुख्या गुहाशया ये च मृगाधिपाश्च ॥ २०५ ॥
 मूमीचरा वस्तुमुखाश्च जीवा बिलेशयाद्याश्च बिलेशयेषु ।
 शाखाचराद्याश्च नमश्चराश्च तेषां तु यूषान्क्रमशो नियुज्यात् ॥ २०७ ॥
 निष्काथ्य तोयेन चतुर्गुणेन काथं क्षिपेत्काथ्यसमं पलानाम् ।
 पृथक्पृथक्तैलसमानमत्र सिद्धे सुगन्धं भिषगर्पयेच्च ॥ २०८ ॥
 कुरङ्गदपं नखमिन्दुसंज्ञं जातीफलं पाण्डुपटीरमेलाम् ।
 कालीयकञ्जोऽङ्गकसारसिंहकाश्मीरकं कुन्दरुमण्डिकां च ॥ २०९ ॥
 सजातिकोशं नलदं सुपुष्पमुख्यं पुनर्धूपितमार्यधूपैः ।
 हैमेऽथ रौप्येऽप्यथ वाऽपि ताम्रे पात्रे निदध्याद्विदमादरेण ॥ २१० ॥
 सिद्धेन मन्त्रेण च मन्त्रयित्वा रहस्यवेदमन्यथ रक्षणीयम् ।
 संपूज्य धुण्डिं बटुकं कुमारीं वैद्यान्दिजान्गौहयहेमवस्त्रैः ॥ २११ ॥



स्वस्येन्दुताराबलमानुघसे शुभे मुहूर्तेऽस्य रसायनस्य ।
 आरम्भकार्येऽत्र स्तुयात्सवेदवाक्त्रिघोषैः सह मङ्गलैश्च ॥ २१२ ॥
 संमर्दने नाशनपानभोज्यानुवासने चाप्यवगाहने च ।
 शिरोक्षिकर्णस्फुटवस्तिकार्ये योज्यं भिषग्भिर्धरणीपतीनाम् ॥ २१३ ॥

अशीतिसंख्याननिलामयांश्च

पित्तोत्थितानां तु तदर्धसंख्यानम् ।

श्लेष्मामयान्विंशतिसंख्ययाऽऽख्यानम्

वशाऽऽमयांश्च क्षतजङ्घभूतान् ॥ २१४ ॥

अष्टौ ज्वरान्विंशतिमेव मेहान्कुष्ठानि चाष्टादश पञ्च पाण्डून् ।
 शूलघ्नं षड्विधयक्ष्मरोगघ्नानशेषानपि पार्श्वपीडाः ॥ २१५ ॥
 अजीर्णमुन्मादमपस्पृतिं च भूतामयं छर्दिमुरक्षतं च ।
 एकाङ्गशोषं सकलाङ्गशोषं बाधिर्यवृद्धनाशमथोदराणि ॥ २१६ ॥

श्वासान्कृमीन्कासविसर्पहिध्मा-

न्नाडीघ्नं गुल्मभगन्दरेषु ।

किं वा बहूक्तेन स नास्ति रोगो

ह्ययं निह्न्यादिह तैलमेतत् ॥ २१७ ॥

षण्डः पुंस्त्वं पुत्रमाप्नोति बन्ध्या

पङ्क्तः पादौ कान्तिहीनस्तु कान्तिम् ।

अन्धो दृष्टिं दुर्बलः पुष्टिमुच्चै-

र्मधाहीनो वाक्पतित्वं मनुष्यः ॥ २१८ ॥

अनेन सिक्ताः सहसा भवन्ति

शुष्काश्चिरेणापि सनीलपत्राः ।

महीरुहाः किं पुनरस्य मर्त्याः

प्रभावतः प्लुषितेन्द्रियाः स्युः ॥ २१९ ॥

इति जीवनारायणं तैलम् ।

अथ शतावरीनारायणं तैलम्-

शतावरी चांशुमती पृश्निपर्णी सटी बला ।

एरण्डस्य च मूलानि बृहत्यौ पूतिकस्य च ॥ २२० ॥

गवेषुकस्य मूलानि तथा सहचरस्य च ।

एषां दशपलान्मागाञ्जलद्रोणे पचेद्बुधः ॥ २२१ ॥

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

पादावशेषे पूते च गर्भे चैनं समावपेत् ।
 पुनर्नवा वचा दारु शताह्वा चन्दनागुरु ॥ २२२ ॥
 शैलेयं तगरं कुष्ठं झुटिर्मासी स्थिरा बला ।
 अश्वह्वा सैन्धवं रास्ना मञ्जिष्ठाघनचोरकम् ॥ २२३ ॥
 कौन्ती प्रियङ्गु स्थौणेयं पलार्धं कल्कयेत्पृथक् ।
 गव्याजपयसोः प्रस्थौ द्वौ द्वावत्र प्रयोजयेत् ॥ २२४ ॥
 शतावरीरसप्रस्थं तैलप्रस्थं भिषक्पचेत् ।
 लवङ्गनखकङ्कोलमल्लिकार्जुनकोशकम् ॥ २२५ ॥
 त्वक्पत्रकं च कर्पूरं तुरुष्कं भीमनिवासकम् ।
 स्पृक्षां कुङ्कुमकस्तूर्यौ दद्यादत्रावतारिते ॥ २२६ ॥
 अस्य तैलस्य सिद्धस्य शृणु वीर्यमतः परम् ।
 अश्वानां वातरुग्णानां कुञ्जराणां तथा नृणाम् ॥ २२७ ॥
 तैलमेतत्प्रयोक्तव्यं सर्ववातविकारनुत् ।
 आयुष्मांश्च नरः पीत्वा निश्चयेन बृद्धो भवेत् ॥ २२८ ॥
 गर्भमश्वत्तरी विन्देत्किं पुनर्मानुषी तथा ।
 हृच्छूलं पार्श्वशूलं च तथैवाधावभेदकम् ॥ २२९ ॥
 अपर्चीं गण्डमालां च वातरक्तं हनुग्रहम् ।
 कामलामश्मरीं पाण्डुमुन्मादं च नियच्छति ॥ २३० ॥
 नारायणेन गदितं तैलमेतत्कृपालुना ।
 नारायणमिति ख्यातं नाम्ना तस्मादिवं भुवि ॥ २३१ ॥

इति शतावरीनारायणं तैलम् ।

अथ दशविधशतावरीतैलं बौद्धसर्वस्वात्—

वरीरसे दशगुणे पक्केऽत्र रससुन्दरम् ।
 प्राणदं विंशतिगुणे सिद्धं त्रिंशद्गुणे तु तत् ॥ २३२ ॥
 चत्वारिंशद्गुणे वीरं पञ्चाशद्गुणतोऽनिलम् ।
 रतिं षष्टिगुणे पूज्यं तस्मात्सप्ततिगुमवेत् ॥ २३३ ॥
 विधिं चाशीतिगुणतः सुधानवतिसंभुणान् ।
 पक्के गुणे शतजीवननारायणगुणं तु तत् ॥
 धन्वन्तरिमते ख्यातं सर्वरोगनिकृन्तनम् ॥ २३४ ॥

इति दशविधशतावरीतैलं बौद्धसर्वस्वात् ।

The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that this is crucial for ensuring the integrity of the financial system and for providing a clear audit trail. The document also highlights the need for transparency and accountability in all financial dealings.

In the second part, the focus shifts to the role of the auditor. It outlines the responsibilities of the auditor and the steps that should be followed to conduct a thorough audit. The document stresses the importance of independence and objectivity in the audit process.

The third part of the document deals with the reporting of audit findings. It provides guidance on how to present the results of the audit in a clear and concise manner, ensuring that all relevant information is included and that the findings are easy to understand.

The final part of the document discusses the importance of ongoing monitoring and review. It notes that the financial system is constantly evolving, and it is essential to keep up-to-date with the latest developments and to make adjustments as needed. The document concludes by emphasizing the need for a strong commitment to excellence in all financial matters.

अथ लघुनारायणं तैलम्-

एलाबलानंतकुचन्दनदारुसौम्या-
 शैलेयकुष्ठकुटिलावरुणाश्रितेन ।
 तैलं सदुग्धमिति सिद्धमभीरुकन्द-
 तोयेन तेन तुलितेन समीरणम् ॥ २३५ ॥
 इति लघुनारायणं तैलम् ।

अथ शतावरीतैलम्-

रुग्दारुद्रविडीप्रियङ्गुतगरत्वक्पत्रकौन्तीनखै-
 मांसीसर्जरसाम्बुचन्दनवचाशैलेयलामज्जकैः ।
 मञ्जिष्ठासरलागुरुद्विपबलाराम्नाश्वगन्धावरी-
 वर्षाभूमिशिसिन्धुभिश्च सकलैरेभिः पचेत्कल्कितैः ॥ २३६ ॥
 तुल्यं गोपयसा वरीरससमं तैलं विपक्वं मृदु
 स्याद्वातघ्नमिदं नृणामिति वरीतैलं भिषक्पूजितम् ॥ २३७ ॥
 इति शतावरीतैलम् ।

अथ दशमूलादितैलम्-

दशमूलकषायविपक्वमथो पयसा च समेन बलाब्दनखैः ।
 त्रुटिचन्दनदारुलतानलदैरुणाजतुकुष्ठवचाकुटिलैः ॥ २३८ ॥
 इति पक्वमिदं तिलजं जयति प्रसमं पवनामयमाशु नृणाम् ।
 बलशुक्रविमारुचिवह्निकरं नृपवृद्धशिशुप्रमदासु हितम् ॥ २३९ ॥
 इति दशमूलादितैलम् ।

अथ सुगन्धितैलम्-

तगरागुरुकुङ्कुमकुन्दुरुभिः सलवङ्गवराङ्गकुरङ्गमदैः ।
 सरलामरदारुदलद्रविडीनखकैसरुङ्गनलिनीनलदैः ॥ २४० ॥
 सतुरुष्कहरेणुबलाक्रथनैरिति तैलमिदं पयसा विपचेत् ।
 नृपतिप्रमदाशिशुभिः स्थविरैरुपयोज्यमिदं पवनामयजित् ॥ २४१ ॥
 इति सुगन्धितैलम् ।

अथैलादितैलम्-

एलामुरासरलशैलजदारुकौन्ती-
 चण्डासटीनलद्वचम्पकहेमपुष्पम् ।



स्थौण्यगन्धरसपूतिदलामृणाल-

श्रीवासकुन्दुरुनखाम्बुवराङ्गकुष्ठम् ॥ २४२ ॥

कालीयकं जलदुर्कटचन्दनश्री-

जार्त्त्याः फलं सविकसं सह कुङ्कुमेन ।

स्पृक्कातुरुष्कलघुलामतया विनीय

तैलं बलाकथनदुग्धदधिप्रपक्कम् ॥ २४३ ॥

मन्दानलेन हितमेतदुदाहरन्ति

वातामयेषु बलवर्णहुताशकारि ॥ २४४ ॥

इत्येलादितैलम् ।

अथ विष्णुतैलम्—

शालिपर्णी पृश्निपर्णी बला च बहुपुत्रिका ।

एरण्डस्य च मूलानि बृहत्याः पूतिकस्य च ॥ २४५ ॥

गवेषुकस्य मूलानि तथा सहचरस्य च ।

एतेषां पलिका मात्रा तैलप्रस्थं विषाचयेत् ॥ २४६ ॥

आजं चैवाथ गव्यं च क्षीरं दद्याच्चतुर्गुणम् ।

अस्य पक्कस्य तैलस्य शृणु वीर्यमतः परम् ॥ २४७ ॥

अश्वानां वातमग्नानां कुञ्जराणां तथैव च ।

अपुमांश्च नरः पीत्वा निश्चयेन पुमान्मवेत् ॥ २४८ ॥

हृच्छूले पार्श्वशूले च तथैवाधाविभेदकम् ।

कामलापाण्डुरोगघ्नं शर्करामश्मरीं तथा ॥ २४९ ॥

क्षीणेन्द्रिया नरा ये च जरया जर्जरीकृताः ।

एषां वाऽपि क्षयो व्याधी रक्तवृद्धिश्च दारुणा ॥ २५० ॥

अर्दितं गलगण्डं च वातशोणितमेव च ।

स्त्रियो वा न प्रसूयन्ते तासां चैव प्रयोजयेत् ।

विष्णुना कथितं तैलं तस्माद्विष्णवभिधं स्मृतम् ॥ २५१ ॥

इति विष्णुतैलम् ।

अथ वातनाशनं तैलम्—

स्रग्ध्रस्वेदरसोनगुग्गुलुसुरारिष्टाज्यमांसासव-

काथैर्वस्तिभिरुष्णवारिवसनान्मोवेश्मभिर्मर्दनात् ।

नस्यैरुत्तरवस्तिभिश्च मृदुना रेकेण धीमान्मिषग्

वातव्याधिमुपाचरोदिह रसैरुक्तैश्च नानाविधैः ॥ २५२ ॥



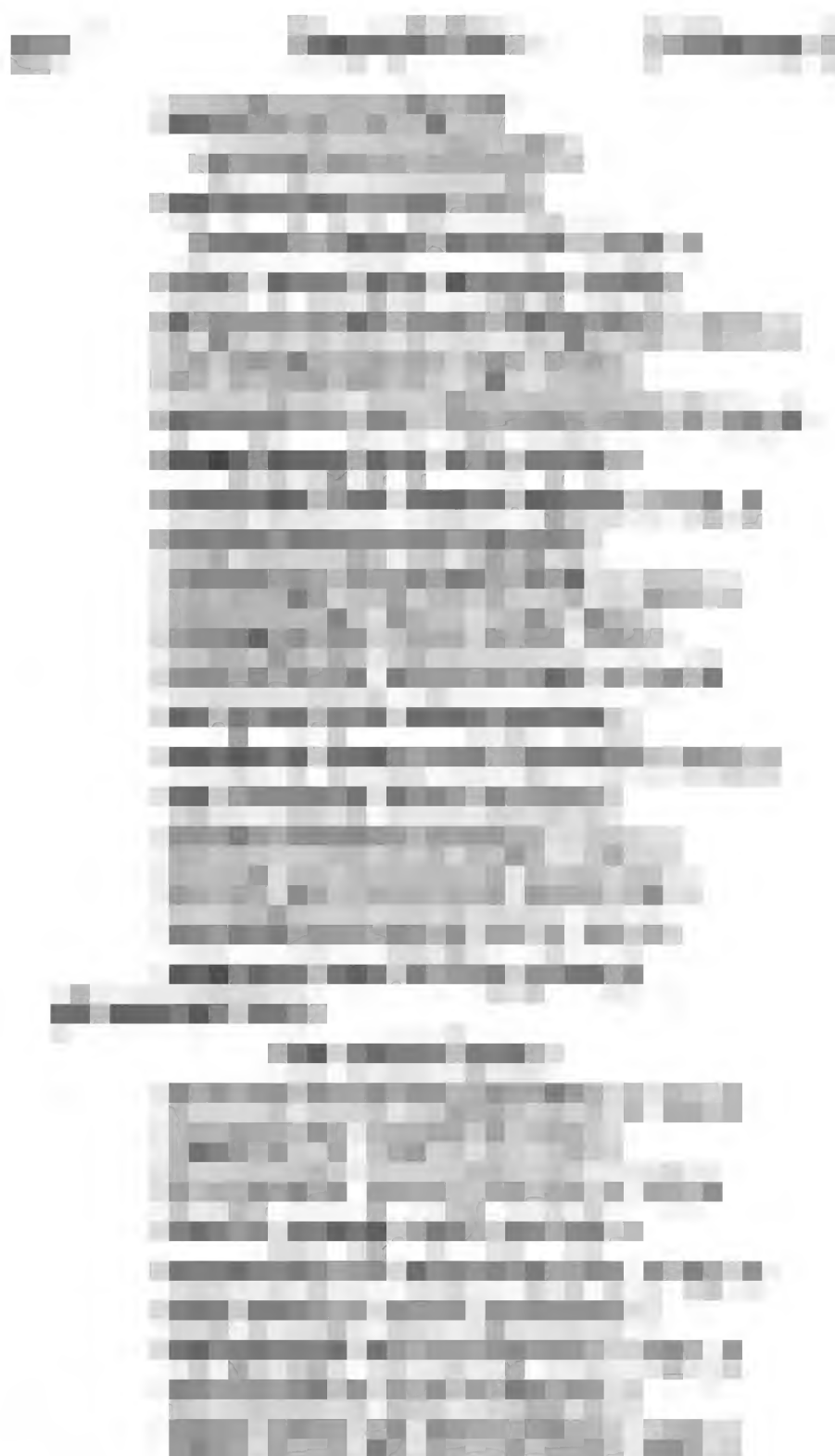
The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. It highlights the journal's role in providing
 a platform for the dissemination of research findings and
 the advancement of the discipline. The second part of the
 paper focuses on the journal's commitment to diversity and
 inclusion, emphasizing the need for a more equitable and
 inclusive research agenda. The third part of the paper
 discusses the journal's efforts to promote the use of
 research in management education, highlighting the
 importance of evidence-based practice. The fourth part of
 the paper discusses the journal's commitment to
 transparency and accountability, emphasizing the need for
 open access and the sharing of research data. The fifth
 part of the paper discusses the journal's commitment to
 the future of management education, highlighting the
 need for innovation and the development of new
 research paradigms. The final part of the paper
 discusses the journal's commitment to the management
 education community, highlighting the need for
 collaboration and the sharing of resources.

The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. The second part of the paper discusses the importance
 of the *Journal of Management Education* in the field of
 management education. The third part of the paper discusses the
 importance of the *Journal of Management Education* in the
 field of management education. The fourth part of the paper
 discusses the importance of the *Journal of Management Education*
 in the field of management education. The fifth part of the
 paper discusses the importance of the *Journal of Management Education*
 in the field of management education. The sixth part of the
 paper discusses the importance of the *Journal of Management Education*
 in the field of management education. The seventh part of the
 paper discusses the importance of the *Journal of Management Education*
 in the field of management education. The eighth part of the
 paper discusses the importance of the *Journal of Management Education*
 in the field of management education. The ninth part of the
 paper discusses the importance of the *Journal of Management Education*
 in the field of management education. The tenth part of the
 paper discusses the importance of the *Journal of Management Education*
 in the field of management education.

रुक्षाम्नीतजलगाहनमैथुनानि
 व्यायामशोकमयजागरसेवनानि ।
 उट्टादियानविषमाशनलङ्घनानि
 वातामयी परिहरेदपि वातलानि ॥ २५३ ॥
 यष्टिकाः खण्डशः कृत्वा खराङ्गारेषु संधमेत् ।
 सिन्दूरवर्णास्तास्तैले क्षिप्त्वा तिष्ठेन्मुहूर्तकम् ॥ २५४ ॥
 ततो निपीततैलास्तास्तत उद्धृत्य यत्नतः ।
 सूक्ष्मखण्डांस्ततः कृत्वा बिभीतामलकोपमान् ॥ २५५ ॥
 अधश्चतुश्चिद्रयुतं कुम्भं ताभिः प्रपूरयेत् ।
 पातालयन्त्रेण धिया तैलमासां समुद्धरेत् ॥ २५६ ॥
 कस्तूर्यगरुनिर्वासतुरुष्कशशिकुङ्कुमैः ।
 जातीकोशेन्दुमार्जारद्रविडीतैलपर्णिकैः ॥ २५७ ॥
 नखत्वङ्मुस्तपत्रैश्च भिषजा वासितं धिया ।
 राजयोग्यमिदं तैलं सर्ववातामयापहम् ॥ २५८ ॥
 बल्यं वृष्यतमं गोप्यं सर्ववातामयापहम् ।
 वातादितानां सौख्याय यशसे भिषजामपि ॥ २५९ ॥
 सद्यः प्रत्ययहेतोश्च भैरवेण प्रकाशितम् ।
 बलवर्णवयस्थैर्यशौर्यकन्दर्पदर्पकृत् ॥ २६० ॥
 वन्ध्यानां पुत्रदं पानात्खण्डावां पुंस्त्वदं परम् ।
 मन्दाग्नेरग्निजननमपस्मारहरं तथा ॥ २६१ ॥
 वातवाताशनं नाम्ना तैलं तैलेषु पूजितम् ॥
 इति वातनाशनं तैलम् ।

अथ छागलायं घृतम्—

आजं मांसं परित्यक्तचर्मशृङ्गखुरादिकम् ॥ २६२ ॥
 पञ्चमूलीद्वयं चैव जलद्रोणे विपाचयेत् ।
 तेन पादावशेषेण घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ २६३ ॥
 जीवनीयैः सयष्ट्याह्वैः सक्षीरैः सवरीरसैः ।
 छागलाद्यमिदं सर्पिः सर्ववातविकारजित् ॥ २६४ ॥
 अर्दिते कर्णनादे च बाधिर्ये मूकामिमिणे ।
 जङ्गद्वदपङ्गूनां खञ्जे गृध्रसिकुब्जयोः ॥ २६५ ॥
 अपतानापतन्त्रे च प्रशस्तं चातिबृंहणम् ।
 शकृद्रसं मांसरसं मूत्रं सौवीरकादिकम् ॥ २६६ ॥



स्नेहतुल्यं दधिक्षीरजलं चैव चतुर्गुणम् ।
इति छागलाघं घृतम् ।

त्वक्शून्यताया लक्षणमाह—

स्पृश्यमाना त्वचा या तु शीतोष्णं मृशकर्कशम् ॥ २६७ ॥
न जानाति बुधैस्त्वक्सा शून्येति परिकीर्त्यते ।
सुप्तवाते त्वसृङ्गोक्षं कारयेद्बहुशो मिषक् ॥ २६८ ॥
दिह्याञ्च लवणागारधूमैस्तैलसमन्वितैः ।
आध्माने लङ्घनं पूर्वं दीपनं पाचनं ततः ॥ २६९ ॥
फलवर्तिक्रियां कुर्याद्द्विस्तिकर्म च शोधनम् ।

अथ नारायणं चूर्णम्—

कर्षमात्रा भवेत्कृष्णा त्रिवृता स्यात्पलोन्मिता ॥ २७० ॥
खण्डादपि पलं ग्राह्यं चूर्णमेकत्र कारयेत् ।
मधुनाऽक्षमितं लिह्याच्चूर्णमाध्माननाशनम् ॥ २७१ ॥

इति नारायणं चूर्णम् ।

अथ रसाः—

महानाराचो रसः—

अमयाऽऽरग्वधो धात्री वृन्ती तिक्ता स्नुही त्रिवृत् ।
मुस्ता प्रत्येकमेतानि ग्राह्याणि पलमात्रया ॥ २७२ ॥
तानि संक्षुद्य सर्वाणि जलाढकयुगे पचेत् ।
तत्र तोयेऽष्टमं मार्गं कषायमवशेषयेत् ॥ २७३ ॥
निस्त्वग्जैपालबीजानि नवानि पलमात्रया ।
तनुवस्त्रधृतान्येव तस्मिन्काथे शनैः पचेत् ॥ २७४ ॥
ज्वालयेदनलं मन्दं यावत्काथो घनो भवेत् ।
ततः खल्वे क्षिपेद्भागानष्टौ जेपालबीजतः ॥ २७५ ॥
मागांस्त्रीन्नागराद्द्वौ च मरिचाद्द्वौ च पारदात् ।
गन्धकाद्द्वौ च तानीह यावद्यामं विमर्दयेत् ॥ २७६ ॥
रसो नाराचनामाऽयं मक्षितो रक्तिकामितः ।
जलेन शीतलेनैव रोगानेतान्विनाशयेत् ॥ २७७ ॥
आध्मानं शूलमानाहं प्रत्याध्मानं तथैव च ।
उदावर्तं तथा गुल्ममुदराणि हरत्यसौ ॥ २७८ ॥

[illegible][illegible]

The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. The second part of the paper discusses the
 importance of the *Journal of Management Education* in the
 field of management education. The third part of the paper
 discusses the importance of the *Journal of Management
 Education* in the field of management education. The
 fourth part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of
 management education. The fifth part of the paper
 discusses the importance of the *Journal of Management
 Education* in the field of management education. The
 sixth part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of
 management education. The seventh part of the paper
 discusses the importance of the *Journal of Management
 Education* in the field of management education. The
 eighth part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of
 management education. The ninth part of the paper
 discusses the importance of the *Journal of Management
 Education* in the field of management education. The
 tenth part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of
 management education.

1. *Journal of the American Medical Association*, 2000; 283: 2686-2692.



The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. It highlights the journal's role in providing
 a platform for the dissemination of research findings and
 the advancement of the discipline. The second part of the
 paper focuses on the journal's commitment to diversity and
 inclusion, emphasizing the need for a more equitable and
 inclusive research agenda. The third part of the paper
 discusses the journal's efforts to promote the use of
 research in management education, highlighting the
 importance of evidence-based practice. The fourth part of
 the paper discusses the journal's commitment to
 transparency and accountability, emphasizing the need for
 open access and the sharing of research data. The fifth
 part of the paper discusses the journal's commitment to
 the development of the field of management education,
 highlighting the need for ongoing research and
 innovation. The sixth part of the paper discusses the
 journal's commitment to the advancement of the
 discipline, highlighting the need for a more
 comprehensive and integrated approach to research.

वेगे शान्ते स सुञ्जीत शर्करासहितं दधि ।
ततस्तत्सैन्धवेनापि ततो दध्योदनं मनाक् ॥ २७९ ॥

इति महानाराचो रसः ।

अथ वातनाशनो रसः-

सूतहाटकवज्राणि ताम्रं लोहं च माक्षिकम् ।
तालं नीलाञ्जनं तुत्थमहिफेनं समांशकम् ॥ २८० ॥
पञ्चानां लवणानां च भागमेकं विमर्दयेत् ।
वज्रीक्षीरैर्दिनैकं तु रुद्ध्वाऽधो भूधरे पचेत् ॥ २८१ ॥
माषैकमार्द्रकद्रावैर्लहयेद्वातनाशनम् ।
पिप्पलीमूलजं क्वाथं सकृष्णमनुपाययेत् ॥ २८२ ॥
सर्वान्वातविकारांस्तु निहन्त्याक्षेपकादिकान् ।

इति वातनाशनो रसः ।

अथ स्वच्छन्दभैरवो रसः-

शुद्धसूतं मृतं लोहं ताम्रं गन्धं च तालकम् ॥ २८३ ॥
पथ्याग्निमन्थनिर्गुण्डीऽयूषणं टक्कणं विषम् ।
तुल्यांशं मर्दयेत्खल्वे दिनं निर्गुण्डिकाद्रवैः ॥ २८४ ॥
मुण्डीद्रावैर्दिनैकं तु द्विगुञ्जं बटकीकृतम् ।
भक्षयेद्वातरोगार्तो नाम्ना स्वच्छन्दभैरवः ॥ २८५ ॥
रास्नामृतादेवदारुशुण्ठीवातारिजं शृतम् ।
सगुग्गुलं पिबेत्कोष्णमनुपानं सुखावहम् ॥ २८६ ॥

इति स्वच्छन्दभैरवो रसः ।

अथ वातविध्वंसनो रसः-

रसं गन्धकं नागवङ्गौ च लोहं
तथा ताम्रजं व्योम निश्चन्द्रिकं च ।
कणाटक्कणं चोषणं नागरं वै
पृथग्भागमेकं विमर्दयेत्कयामम् ॥ २८७ ॥
ततो वत्सनामं चतुःसार्धभागं
दृढं मर्दयेद्भावेना व्योषजा त्रिः ।
धरां चित्रकैर्माकैः कुष्ठतोयै-
स्तथा कारहाटैः सनिर्गुण्डितोयैः ॥ २८८ ॥

मनोधात्रिकैराद्र्कैर्निम्बुनीरै-

स्त्रिभिर्भाविष्येद्वातविध्वंसनोऽयम् ।

समीरे च शूले महाश्लेष्मरोगे

ग्रहण्यां तथा संनिपाते च मौढ्ये ॥ २८९ ॥

अपस्मारमान्द्ये सशैत्ये सपित्तो-

दरुणीहकुष्ठार्शसि स्त्रीगदे च ।

निषेवेत गुञ्जाद्वयं चास्य तत्त-

द्बद्धानुपानैरयं रोगजित्स्यात् ॥ २९० ॥

इति वातविध्वंसनो* रसः ।

अथ वातराक्षसपाठः—

सूतेन मारितं कान्तं शातकुम्भं निरुत्थकम् ।

मृतसूतं तथा गन्धं विषं चाभ्रकमेव च ॥ २९१ ॥

ताम्रं संशोधितं सम्यङ्मारयित्वा समांशकम् ।

पुनर्नवा गुडूच्यग्निः सुरसा चाटरूषकः ॥ २९२ ॥

एतेषां च रसेनैव भावयेन्निदिनं पृथक् ।

दत्त्वा लघुपुटं सम्यक्स्वाङ्गशीतं समुद्धरेत् ॥ २९३ ॥

वातराक्षसनामाऽयं वातरोगे प्रयोजयेत् ।

तत्तद्रोगानुपानेन दीयतां गुञ्जमात्रया ॥ २९४ ॥

ऊरुस्तम्भे वातरक्त आमवाते तथैव च ।

गात्रभङ्गे धनुर्वाते वेदनावात एव च ॥ २९५ ॥

पक्ष्मघातं कम्पवातं सर्वसंधिगतं तथा ।

उन्मादं सुप्तिवातं च वातशूलं नियच्छति ।

तत्तद्रोगानुपानेनाशीतिवातान्नियच्छति ॥ २९६ ॥

इति वातराक्षसः ।

* रस इत्यस्याप्रेऽयं ग्रन्थः क. पुस्तके—

रसं गन्धं विषं चैव ताम्रं लोहं समांशकम् । एतत्सर्वं समं योज्यं विषं च द्विगुणं भवेत् ॥ १ ॥

जैपालं तालकं चैव रसेन समयोजयेत् । त्र्यूषणं च समं योज्यं सर्वमेकत्र चूर्णयेत् ॥ २ ॥

निर्गुण्डीसूरणद्रवैर्भीनुपत्रद्रवैस्तथा । तर्कारीभृङ्गराजस्य तयोन्मत्तरसेन च ॥ ३ ॥

भावनाः खलु दातव्याः सप्त सप्त क्रमात्तथा । द्विगुञ्जं भक्षयेत्प्रातर्मरिचाज्येन संयुतम् ॥ ४ ॥

जानुजङ्घाकटीशूलं पाङ्गुल्यं कोष्ठुशीर्षकम् । मन्यास्तम्भं त्रिकस्तम्भं हनुस्तम्भं च गृध्रसीम् ॥

अधोभागे च ये वाताः सर्वाङ्गे विचरन्ति ये । सर्वान्वातान्क्षेपेदांश्च दैत्याचारायणो यथा ॥

इति महाविध्वंसनो रसः ।

1. Introduction
 2. Background
 3. Methodology
 4. Results
 5. Conclusion
 6. References
 7. Appendix
 8. Index
 9. Table of Contents
 10. Summary
 11. Abstract
 12. Keywords
 13. Subject
 14. Topic
 15. Field
 16. Area
 17. Discipline
 18. Branch
 19. Department
 20. Faculty
 21. School
 22. College
 23. University
 24. Institution
 25. Organization
 26. Company
 27. Enterprise
 28. Business
 29. Industry
 30. Market
 31. Sector
 32. Field
 33. Area
 34. Discipline
 35. Branch
 36. Department
 37. Faculty
 38. School
 39. College
 40. University
 41. Institution
 42. Organization
 43. Company
 44. Enterprise
 45. Business
 46. Industry
 47. Market
 48. Sector
 49. Field
 50. Area
 51. Discipline
 52. Branch
 53. Department
 54. Faculty
 55. School
 56. College
 57. University
 58. Institution
 59. Organization
 60. Company
 61. Enterprise
 62. Business
 63. Industry
 64. Market
 65. Sector
 66. Field
 67. Area
 68. Discipline
 69. Branch
 70. Department
 71. Faculty
 72. School
 73. College
 74. University
 75. Institution
 76. Organization
 77. Company
 78. Enterprise
 79. Business
 80. Industry
 81. Market
 82. Sector
 83. Field
 84. Area
 85. Discipline
 86. Branch
 87. Department
 88. Faculty
 89. School
 90. College
 91. University
 92. Institution
 93. Organization
 94. Company
 95. Enterprise
 96. Business
 97. Industry
 98. Market
 99. Sector
 100. Field
 101. Area
 102. Discipline
 103. Branch
 104. Department
 105. Faculty
 106. School
 107. College
 108. University
 109. Institution
 110. Organization
 111. Company
 112. Enterprise
 113. Business
 114. Industry
 115. Market
 116. Sector
 117. Field
 118. Area
 119. Discipline
 120. Branch
 121. Department
 122. Faculty
 123. School
 124. College
 125. University
 126. Institution
 127. Organization
 128. Company
 129. Enterprise
 130. Business
 131. Industry
 132. Market
 133. Sector
 134. Field
 135. Area
 136. Discipline
 137. Branch
 138. Department
 139. Faculty
 140. School
 141. College
 142. University
 143. Institution
 144. Organization
 145. Company
 146. Enterprise
 147. Business
 148. Industry
 149. Market
 150. Sector
 151. Field
 152. Area
 153. Discipline
 154. Branch
 155. Department
 156. Faculty
 157. School
 158. College
 159. University
 160. Institution
 161. Organization
 162. Company
 163. Enterprise
 164. Business
 165. Industry
 166. Market
 167. Sector
 168. Field
 169. Area
 170. Discipline
 171. Branch
 172. Department
 173. Faculty
 174. School
 175. College
 176. University
 177. Institution
 178. Organization
 179. Company
 180. Enterprise
 181. Business
 182. Industry
 183. Market
 184. Sector
 185. Field
 186. Area
 187. Discipline
 188. Branch
 189. Department
 190. Faculty
 191. School
 192. College
 193. University
 194. Institution
 195. Organization
 196. Company
 197. Enterprise
 198. Business
 199. Industry
 200. Market
 201. Sector
 202. Field
 203. Area
 204. Discipline
 205. Branch
 206. Department
 207. Faculty
 208. School
 209. College
 210. University
 211. Institution
 212. Organization
 213. Company
 214. Enterprise
 215. Business
 216. Industry
 217. Market
 218. Sector
 219. Field
 220. Area
 221. Discipline
 222. Branch
 223. Department
 224. Faculty
 225. School
 226. College
 227. University
 228. Institution
 229. Organization
 230. Company
 231. Enterprise
 232. Business
 233. Industry
 234. Market
 235. Sector
 236. Field
 237. Area
 238. Discipline
 239. Branch
 240. Department
 241. Faculty
 242. School
 243. College
 244. University
 245. Institution
 246. Organization
 247. Company
 248. Enterprise
 249. Business
 250. Industry
 251. Market
 252. Sector
 253. Field
 254. Area
 255. Discipline
 256. Branch
 257. Department
 258. Faculty
 259. School
 260. College
 261. University
 262.

अथ द्वितीयो वातराक्षसः-

सूतभस्मकहिङ्गूलं वङ्गं च गगनं विषम् ।
 ताम्रं टङ्कणकं कान्तं मर्दयेच्चिकटुद्रवैः ॥ २९७ ॥
 पश्चात्कुमारिकातेयैर्वर्षाभूक्ताथभावितः ।
 पक्षाघातं हनुस्तम्भं मन्यास्तम्भं कटिग्रहम् ॥ २९८ ॥
 सर्वानाक्षेपकादींश्च वातव्याधींश्च नाशयेत् ।
 वातराक्षसनामाऽयं सर्ववातनिकृन्तनः ॥ २९९ ॥

इति द्वितीयो वातराक्षसः ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां वातनिदानचिकित्साकथनं नाम नवति-
 तमस्तरङ्गः ॥ ९० ॥

अथैकनवतितमस्तरङ्गः ।

अथ वातरक्तनिदानम्-

लघणाम्लकटुक्षारस्निग्धोष्णाजीर्णभोजनैः ।
 क्लिन्नक्षुष्काम्बुजानूपमांसपिण्याकमूलकैः ॥ १ ॥
 कुलत्थमाषनिष्पावशाकादिपललेक्षुभिः ।
 दध्यारनालसौवीरैर्मूक्ततक्रसुरासवैः ॥ २ ॥
 विरुद्धाध्यशनक्रोधदिवास्वप्नप्रजागरैः ।
 प्रायशः सुकुमाराणां मिथ्याहारविहारिणाम् ।
 स्थूलानां सुखिनां वाऽपि कुप्यते वातशोणितम् ॥ ३ ॥
 हस्त्यश्वोद्वैर्गच्छतश्चाश्वतश्च विदाह्यन्नं सविदाहाशनस्य ।
 कृत्स्नं रक्तं विदहत्याशु तच्च दुष्टं स्रस्तं पादयोश्चीयते तु ॥ ४ ॥
 तत्संपृक्तं वायुना दूषितेन तत्प्राबल्यादुच्यते वातरक्तम् ॥ ५ ॥
 वातलैः शीतलैर्वायुर्वृद्धः कुन्धो विमार्गगः ।
 आढ्यवातं खुडं वातबलासं वातशोणितम् ॥ ६ ॥
 तादृशो वाऽसृजा रुद्धः प्राक्तदेव प्रदूषयेत् ।
 तमाहुर्नामभिस्तच्च पूर्वं पादौ प्रधावति ॥ ७ ॥
 विशेषाद्यानपानाद्यैः प्रलम्बौ तस्य लक्षणम् ।
 भविष्यतः कुष्ठसमं तथा सादः श्लथाङ्गता ॥ ८ ॥

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

स्वेदोऽत्यर्थं न वा कार्यं स्पर्शाज्ञत्वं क्षतेऽतिरूक् ।
 संधिशैथिल्यमालस्यं सदनं पिडकोद्गमः ॥ ९ ॥
 जानुजङ्घोरुकट्यंसहस्तपादाङ्गसंधिषु ।
 निस्तोदः स्फुरणं भेदो गुरुत्वं सुप्तिरेव च ॥ १० ॥
 कण्डूः संधिषु रुग्दाहो भूत्वा नश्यति चासकृत् ।
 वैवर्ण्यं मण्डलोत्पत्तिर्वात सृक्पूर्वलक्षणम् ॥ ११ ॥

इति पूर्वरूपम् ।

अथ वातजम्—

वातेऽधिकेऽधिकं तत्र शूलस्फुरणतोदनम् ।
 वेदना विपरीताश्च स्फुटन्तश्चास्य संधयः ॥ १२ ॥
 शोफस्य रौक्ष्यं कृष्णत्वं श्यावतावृद्धिहानयः ।
 धमन्यङ्गुलिसंधीनां संकोचोऽङ्गग्रहोऽतिरूक् ॥ १३ ॥
 शीतद्वेषानुपशयौ स्तम्भवेपथुसुप्तयः ।
 रक्ते शोफोऽतिरूकोदस्ताम्रश्चिमिचिमायते ॥ १४ ॥
 म्लिग्धरूक्षैः शमं नैति कण्डूकृदसमन्वितः ।

पित्तजमाह—

पित्तेऽतिदाहः संमोहः स्वेदो मूर्छा मदस्तृषा ॥ १५ ॥
 स्पर्शासहत्वं रुग्नागः शोफः पाको भृशोष्मता ।

कफजमाह—

कफे स्तैमित्यगुरुता सुप्तिस्निग्धत्वशीतता ॥ १६ ॥

द्वन्द्वजमाह—

कङ्कर्मन्दा च रुग्द्वन्द्वसर्वलिङ्गं तु संकरात् ।
 मूत्वा भूत्वा प्रणश्यन्ति पुनराविर्भवन्ति च ॥ १७ ॥
 पादयोर्मूलमास्थाय कदाचिद्धस्तयोरपि ।
 आखोरिव विषं क्रुद्धं कृत्स्नं देहं विसर्पति ॥ १८ ॥

याप्यत्वमाह—

आजानु स्फुटितं यच्च प्रभिन्नं प्रसृतं च यत् ।
 उपद्रवैश्च यज्जुष्टं प्राणमांसक्षयादिभिः ॥ १९ ॥

1. **Introduction**

The purpose of this study is to investigate the effects of the proposed system on the performance of the participants. The study was conducted in a laboratory setting with a sample of 30 participants. The results of the study are presented in the following sections.

2. **Method**

2.1. **Participants**

The participants were 30 individuals, 15 males and 15 females, aged between 20 and 30 years. They were all students of the University of [Name] and had no prior experience with the system. The participants were randomly assigned to two groups: the control group and the experimental group. The control group consisted of 15 participants and the experimental group consisted of 15 participants.

2.2. **Procedure**

The participants were familiarized with the system before the experiment. They were then divided into two groups: the control group and the experimental group. The control group used the traditional system and the experimental group used the proposed system.

2.3. **Measurements**

The performance of the participants was measured using the following variables:

2.3.1. **Time**

The time taken by the participants to complete the task was measured. The time was measured in seconds. The time was measured for each participant and the average time was calculated for each group. The time was measured for each participant and the average time was calculated for each group.

2.3.2. **Accuracy**

The accuracy of the participants was measured. The accuracy was measured as the percentage of correct answers. The accuracy was measured for each participant and the average accuracy was calculated for each group. The accuracy was measured for each participant and the average accuracy was calculated for each group.

वातरक्तमसाध्यं स्याद्यच्चातिक्रान्तवत्सरम् ।
 अस्वप्रारोचकश्वासमांसकोथशिरोग्रहाः ॥ २० ॥
 मूर्छायां मन्दरुक्त्वृणाज्वरमोहप्रवेपकाः ।
 हिक्कायां गुल्मवीसर्पपाकतोदभ्रमक्कुमाः ॥ २१ ॥
 अङ्गुलीवक्रतास्फोटदाहमर्मग्रहार्बुदाः ।
 एतैरुपद्रवैर्युक्तं मोहेनैकेन वाऽपि यत् ॥ २२ ॥
 वातरक्तमसाध्यं स्याद्याप्यं संवत्सरोत्थितम् ।
 अकृत्स्नोपद्रवं याप्यं साध्यं स्यान्निरुपद्रवम् ॥ २३ ॥
 एकदोषानुगं साध्यं नवं याप्यं द्विदोषजम् ।
 त्रिदोषजमसाध्यं स्याद्यस्यैते स्युरुपद्रवाः ॥ २४ ॥

इति वातरक्तनिदानम् ।

अथ वातरक्तचिकित्सा—

वाताधिकं वातरक्तं स्नेहाद्यैः समुपाचरेत् ।
 रक्ताद्यं रक्तमोक्षाद्यैः पित्ताद्यं रेचनादिभिः ॥ २६ ॥
 कफाद्यं वमनाद्यैस्तु प्रोक्तैरत्रौषधैर्भिषक् ।
 वातशोणितिनो रक्तं स्निग्धस्य बहुशो हरेत् ॥ २७ ॥
 अल्पाल्पं रक्षयेद्वायुं यथादोषं यथाबलम् ।
 रुग्णागदाहतोदेषु जलौकाभिर्हरेदसृक् ॥ २८ ॥
 शृङ्गमुच्चैश्चिमिचिमाकण्डूरुग्वेदनान्वितम् ।
 प्रच्छन्ने तु शिराभिर्वा देशाद्देशान्तरं व्रजेत् ॥ २९ ॥
 अङ्गे म्लाने तु न स्नाव्यं रूक्षे वातोत्तरे त्वसृक् ।
 गम्भीरं श्वयथुं स्तम्भं कम्पं स्नायुशिरामयान् ॥ ३० ॥
 ग्लानिमन्यांश्च वातोत्थान्कुर्याद्वायुरसृक्क्षयात् ।
 विविधान्वातरोगान्वा मृत्युं वाऽत्यन्तशोषितम् ॥ ३१ ॥
 कुर्यात्तस्मात्प्रयत्नेन स्निग्धाङ्गे रक्तमोक्षणम् ।
 रेचयेत्स्नेहायित्वाऽऽदौ स्नेहयुक्तैर्विरेचनैः ॥ ३२ ॥

द्वैविध्यमाह—

वातरक्तं द्विधा ज्ञेयं गम्भीरोत्तानभेदतः ।
 त्वङ्मांसाश्रयमुत्तानं गम्भीरं त्वितराश्रयम् ॥ ३३ ॥



विरेकास्थापनस्नेहैर्गम्भीरं तदुपाचरेत् ।
उत्तानं लेपनाभ्यङ्गपरिषेकावगाहनैः ॥ ३४ ॥

निषेधमाह—

दिवास्वप्नं च संतापं व्यायामं मैथुनं तथा ।
कटूष्णं गुर्वाभिष्यन्दि लवणाम्लं च वर्जयेत् ॥ ३५ ॥

तस्यान्नमाह—

पुराणयवगोधूमनीवाराः शालिषट्टिकाः ।
आढक्यश्रृणका मुद्गा मसूराः समकुष्ठकाः ॥ ३६ ॥

मांसमाह—

विष्किरप्रतुदानां च मांसं रसकृते हितम् ।

शाकान्नमाह—

सुनिषण्णकवेत्राग्रकाकमाच्यः शतावरी ॥ ३७ ॥
वास्तूकोपोदकाशाकं शाकं सौवर्चलं तथा ।

भक्ष्यार्थमाह—

मारीषमेघनादौ च पटोलद्वयसूरणम् ॥ ३८ ॥
धात्रीफलं शृङ्गवेरं भक्ष्यार्थं वातरक्तिनाम् ।
रूक्षैर्वा मृदुभिः शस्तमसकृद्दस्तिकर्म च ॥
न हि बस्तिसमं किञ्चिद्वातरक्तचिकित्सितम् ॥ ३९ ॥
उभे शताह्वे मधुकं विशालां बलां प्रियालं च कसेरुयुग्मम् ।
घृतं विदारीं च सितोपलां च कुर्यात्प्रदेहं पवने सरक्ते ॥ ४० ॥

अथ वासादिकाथः—

वासागुडूचीचतुरङ्गुलानामेरण्डतैलेन पिबेत्कषायम् ।
क्रमेण सर्वाङ्गजमप्यशेषं जयेद्सृग्वातभवं विकारम् ॥ ४१ ॥

इति वासादिकाथः ।

अथ मज्जिष्ठादिनवकार्षिककाथः—

द्वार्वागुडूचीकटुकोग्रगन्धामज्जिष्ठनिम्बत्रिफलाकषायः ।
वातास्रमुच्चैर्नवकार्षिकाण्यो जयेच्च कुष्ठान्यखिलानि नृणाम् ॥ ४२ ॥

पञ्चरक्तिकमाषेणं योजयेन्नवकार्षिकम् ।

किं त्वेवं साधिते काथे मात्रा योग्या प्रदीयते ॥ ४३ ॥

इति मञ्जिष्ठादिनवकार्षिककाथः ।

गुडूच्यादिकाथः—

गुडूची बाकुची चक्रमर्दश्च पिचुमन्दकः ।

हरितकी हरिद्रा च धात्री वासा शतावरी ॥ ४४ ॥

बला नागबला यष्टी मधुकं क्षुरकोऽपि च ।

पटोलस्य लतोशीरं मञ्जिष्ठा रक्तचन्दनम् ॥ ४५ ॥

गुडूच्यादिरयं काथो वातरक्तान्तकारकः ।

कुष्ठानां श्रेष्ठसंहर्ता कण्डूमण्डलखण्डनः ॥ ४६ ॥

मुनिभिः करुणाकीर्णैः कषायोऽयं प्रकाशितः ।

इति गुडूच्यादिकाथः ।

अथ गुडूचीयोगः—

गुडूच्याः स्वरसः कल्कश्चूर्णं वा काथ एव वा ॥ ४७ ॥

प्रभूतकालमासेव्यं मुच्यते वातशोणितात् ।

इति गुडूचीयोगः ।

अथ गुडूच्यादिकाथः—

वत्सादन्युद्भवः काथः पीतो गुग्गुलुमिश्रितः ॥ ४८ ॥

समीरेण समायुक्तं शोणितं संप्रणाशयेत् ॥ ४९ ॥

इति गुडूच्यादिकाथः ।

अथ काश्मर्यादिकाथः—

तिस्रोऽथ वा पञ्चगुडेन पथ्या जग्ध्वा पिबेच्छिन्नरुहाकषायः ।

तद्वातरक्तं शमयत्युदीर्णं सजानुभिन्नं च्युतमप्यदृश्यम् ॥ ५० ॥

रक्तोत्तरे क्षीरकृतं मधुकोशीरवारिभिः ।

लेपनं शालमलीकल्कमविक्षीरेण संयुतम् ॥ ५१ ॥

सेवनं चात्र कर्तव्यमपि क्षीरैः क्षणे क्षणे ।

पित्तोत्तरे तु काश्मर्यद्राक्षारगवधचन्दैः ॥ ५२ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

11. The eleventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

12. The twelfth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

13. The thirteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

14. The fourteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

15. The fifteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

मधुकक्षीरकाकोलीयुक्तैः काथं सुशीतलम् ।
शर्करामधुसंयुक्तं वातरक्ते पिबेन्नरः ॥ ५३ ॥

इति काश्मर्यादिकाथः ।

अथ लघुमञ्जिष्ठादिकाथः—

मञ्जिष्ठोग्रावरातिक्तानिशानिम्बामृतामरैः ।
सकुष्ठखदिरैः काथः सर्वकुष्ठानिलाञ्जयेत् ॥ ५४ ॥

इति लघुमञ्जिष्ठादिकाथः ।

अथ बृहन्मञ्जिष्ठादिः—

मञ्जिष्ठारिष्टवासात्रिफलदहनकं द्वे हरिद्रे गुडूची
भूनिम्बो रक्तसारः सखदिरकटुका बाकुची व्याधिघातः ।
मूर्वादन्तीविशालाकृमिरिपुजटिलावायसीरास्रपाठा-
श्यामानन्तापटोलैः समरिचमगधैः साधितोऽयं कषायः ॥ ५५ ॥
पीतो हन्यात्समस्तान्सकलतनुगतान् रक्तजातान्विकारान्
कण्डूविस्फोटकादीनलसकविषमश्वित्रपामादिदोषान् ॥ ५६ ॥

इति बृहन्मञ्जिष्ठादिः ।

अथामृताद्यवलेहिका—

अमृताकटुकाशुण्ठीयष्टीकल्कः समाक्षिकः ।
गोमूत्रपीतो जयति सकफं वातशोणितम् ॥ ५७ ॥

इत्यमृताद्यवलेहिका ।

अथ कैशोरको गुग्गुलुः—

संसर्गे संनिपाते च क्रियां मिश्रां समाचरेत् ।
वातरक्ते द्वित्रिलिङ्गे द्वित्रिहेतुसमुत्थिते ॥ ५८ ॥
द्रोणे प्रस्थौ गुडूच्या विपच पुरवराभ्यां च वारोऽर्धशेषं
पूतं भूयो धनेऽस्मिन्क्षिप मरिचकणा वेल्लशुण्ठयुत्तमाश्च ।
शुक्तयंशाः कुम्भदन्त्योः पिचुयुगममृताग्रं च कैशोरकोऽयं
शोफारुगुल्मकुष्ठारुचिखुडकसनाल्पाग्निपाण्डुप्रमेहे ॥ ५९ ॥

इति कैशोरको गुग्गुलुः ।

1. Introduction

2. Background



3. Methodology

4. Results

5. Discussion

6. Conclusion

7. References

8. Appendix

9. Acknowledgments

10. Contact Information

11. Declaration of Interest

12. Funding

13. Author Contributions

14. Ethics Approval

15. Data Availability

16. Supplementary Materials

17. Correspondence

अथ पुनर्नवाद्यो गुग्गुलुः-

पुनर्नवामूलशतं विशुद्धं रुबूकमूलं च तथा प्रगृह्य ।
 दत्त्वा पलं षोडशकं च शुण्ड्याः संक्षुध्य सम्यग्विपचेदघटेऽपाम् ॥ ६० ॥
 पलानि चाष्टावथ कौशिकस्य तेनाटशेषेण पुनः पचेत्तु ।
 एरण्डतैलं कुडवं च दद्यात्तथा त्रिवृच्चूर्णपलानि पञ्च ॥ ६१ ॥
 निकुम्भचूर्णस्य पलं गुडूच्याः पलद्वयं चार्धपलप्रमाणम् ।
 पलत्रयं त्र्यूषणचित्रको च सिन्धूत्थमल्लातविडङ्गकानि ॥ ६२ ॥
 कर्षं तथा माक्षिकधातुचूर्णं पुनर्नवाद्याः पलमेव चूर्णम् ।
 चूर्णानि दत्त्वा ह्यवतार्य शीते खादेन्नरः कर्षमितं प्रमाते ॥ ६३ ॥
 वातास्रमुग्रं सकलं प्रसह्य जयत्यवश्यं त्वथ गृध्रसीं च ।
 जङ्घोरुपृष्ठत्रिकबस्तिवातं तथाऽऽमवातं प्रबलं जयेच्च ॥ ६४ ॥
 इति पुनर्नवाद्यो गुग्गुलुः ।

अथामृताद्यो गुग्गुलुः-

* द्विप्रस्थममृतायाश्च प्रस्थमेकं तु गुग्गुलोः ।
 प्रत्येकं त्रिफलाप्रस्थं वर्षाभूप्रस्थमेव च ॥ ६५ ॥
 सर्वमेकत्र संकुट्य काथयेन्नत्वणेऽम्मसि ।
 पादशेषं परिस्राव्य पुनरग्रावधिश्रयेत् ॥ ६६ ॥
 तावत्पचेत्कषायं तु यावत्सान्द्रत्वमाप्नुयात् ।
 दन्तीव्योषविडङ्गानि गुडूचीत्रिफलात्वचम् ॥ ६७ ॥
 प्रत्येकमर्धपलिकं गृहीयाच्च प्रति प्रति (?) ।
 कर्षं तु त्रिवृतायास्तु सर्वमेकत्र चूर्णयेत् ॥ ६८ ॥
 तत्साधुसिद्धं विज्ञाय कटूष्णे निक्षिपेद्बुधः ।
 ततश्चाग्निबलं ज्ञात्वा तस्य मात्रां प्रयोजयेत् ॥ ६९ ॥
 बातरक्तं तथा कुष्ठं गुदजान्यग्निसादनम् ।
 दुष्टव्रणं प्रमेहांश्च आमवातं मगंदरम् ॥ ७० ॥
 नानाद्व्यवातश्च यथून्हन्त्यात्सर्वामयानयम् ।
 अश्विभ्यां निर्मितो ह्येषोऽमृताख्यो गुग्गुलुः परः ॥ ७१ ॥

* अत्रायं ग. पुस्तके पाठः—

प्रस्थमेकं गुडूच्याश्च प्रस्थार्धं चरगुग्गुलोः ।

प्रत्येकं त्रिफलायाश्च तावन्मानं विनिर्दिशेत् ॥ ८० ॥

१ ग. 'थेत्कलशे जले । पा० ।

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

इत्यमृताद्यो *गुग्गुलुः ।

अथ लघुमरिचादितैलम्—

मरिचार्कशिलार्कपयःकलिनीविषमुष्टिविषामरनिबन्धनैः ।

कुटजं सचतुर्गुणगोम्बुगृतं किल तैलमसूक्ष्मपवनापहरम् ॥ ७२ ॥

इति लघुमरिचाद्यं तैलम् ।

कुष्ठोक्तं बृहन्मरिचाद्यं तैलमप्यत्र योज्यम् ।

अथ रसाः—

अथ सर्वेश्वरो रसः शार्ङ्गधरात्—

शुद्धसूतं चतुर्गन्धं पलं यामं विचूर्णयेत् ।

मृतताम्राभ्रलोहानां द्रव्यं च पलं पलम् ॥ ७३ ॥

सुवर्णं रजतं चैव प्रत्येकं दशनिष्ककम् ।

माषैकं मृतवज्रं च तालसत्त्वं पलद्वयम् ॥ ७४ ॥

जम्बीरोन्मत्तवासामिः सुहृर्कविषमुष्टिभिः ।

मर्द्यं हयारिजद्रावैः प्रत्येकेन दिनं दिनम् ॥ ७५ ॥

एवं सप्तदिनं मर्द्यं तद्गोलं वस्त्रवेष्टितम् ।

वालुकायन्त्रगं स्वेद्यं त्रिदिनं लघुवह्निना ॥ ७६ ॥

आदाय चूर्णयेच्छूलक्ष्णं पलैकं योजयेद्विषम् ।

द्विपलं पिप्पलीचूर्णं मिश्रं सर्वेश्वरो रसः ॥ ७७ ॥

द्विगुञ्जो लिह्यते क्षौद्रैः सुप्तिमण्डलकुष्ठनुत ।

आजानु स्फुटितं चापि वातरक्तमपोहति ॥ ७८ ॥

बाकूचीं देवकाष्ठं च कर्षमात्रं सुचूर्णितम् ।

लिहेदेरण्डतैलाक्तमनुपानं सुखावहम् ॥ ७९ ॥

इति सर्वेश्वरो रसः शार्ङ्गधरात् ।

* “ अथ बृहन्मरिचाद्यं तैलम्—

मरिचरजनीकुष्ठमांसीविशालानिम्बामृतारग्वधाश्वासदन्ती । ध्रुवृत्तिपिप्पली चित्रकोशाशिलाचन्द्रनेः कुटजखादेरनक्तमालार्कवज्रीपयोलाङ्गलीकम् । गणीगव्यदावीविडङ्गामराद्धमपुन्नाडभण्डीरशब्दच्छदैः । पृथक् पृथक्पलसंमितैर्ब्यामृहाहलेनापि तैलाढकं सार्पणं चतुर्मात्रमग्नौ मृदौ साधयेद्बुद्धिमांस्तदयमपहरति सर्वकुष्ठव्रणस्फोटकण्डूतिद्वूविचर्ची विषादी विसर्पाद्यवातामयानां गणं लेपनात् ” इत्यमृताद्यो गुग्गुलुरित्यस्याग्रे ग. पुस्तकेऽयं ग्रन्थो वर्तते ।

अथ शिलाजतुयोगः-

छिन्नोद्भवाकषायेण सेव्यं शुद्धं शिलाजतु ।

पञ्चकर्मविशुद्धेन वातरक्तप्रशान्तये ॥ ८० ॥

इति शिलाजतुयोगः ।

अथार्केश्वरो रसः-

पलं रसस्य चत्वारि बलेद्वादशमुष्टिभिः ।

ताम्रस्य चाक्रिका देया रसस्योर्ध्वं शरावकम् ॥ ८१ ॥

दत्त्वा निरुध्य तद्भाण्डं पूरयेद्भस्मना दृढम् ।

अग्निं प्रज्वालयेद्यामद्वयं शीतं विचूर्णयेत् ॥ ८२ ॥

पुटेद्वादशधा सूर्यदुग्धेनाऽऽलोडितं पुनः ।

वरापावकनिर्गुण्डीद्रवैस्त्रिस्त्रिविभावयेत् ॥ ८३ ॥

अयमर्केश्वरो वातरक्तमण्डलमुत्तिजित् ।

गुञ्जाद्वयं दक्षीतास्य लवणादि विवर्जयेत् ॥ ८४ ॥

इत्यर्केश्वरो रसः ।

कुलत्थमाषनिष्पावमांसमद्यासवाङ्गनाः ।

तिलताम्बूलघर्माध्वक्षारानस्रानिली त्यजेत् ॥ ८५ ॥

अथ चोपचिनीबाष्पः-

द्विपोत्थरास्नाशकलाम्रयुग्ममम्मस्तुलायां पच पादहीने ।

जलेऽथ संस्वेदय रोगिणं तद्बाष्पैरिदं बिल्वयुगं च पाययेत् ॥ ८६ ॥

कुटीप्रवेशस्य विधिं समाचरेच्छौचान्नपानेषु मजेत्तदम्भः ।

गोधूममक्षयाज्यमधूनि शालीनद्याद्यनप्रावृतदेह एव ॥ ८७ ॥

चतुर्दशाहान्निरुजो बलत्वे सप्ताहमेवं च विधिं निषेवेत् ।

जलोद्धृतं तं शकलौघमद्याच्चूर्णीकृतं कर्षमितं घृतेन ॥ ८८ ॥

अल्पाग्नमश्रुलवणादियोगमम्लं त्यजेन्मासचतुष्टयं च ।

व्यायामवर्जी बलवान्नि यावता तावद्भवेन्मारुतयोजुष्टः ॥ ८९ ॥

अशेषवातोद्भवरोगसंघवातास्रलिङ्गव्रणकुष्ठकाश्यम् ।

जयेच्च धातून्विदधाति वृद्धान्विशेषतः संधिरुजं ग्रहं च ॥ ९० ॥

इति चोपचिनीबाष्पः ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां वातरक्तनिदानचिकित्साकथनं नामैकनव-

तितमस्तरङ्गः ॥ ९१ ॥



अथ द्विनवतितमस्तरङ्गः ।

अथोरुस्तम्भनिदानम्—

शीतोष्णद्रवसंशुष्कगुरुस्निग्धैर्निषेधितैः ।
 जीर्णाजीर्णं तथाऽऽयाससंक्षोभस्वप्नजागरैः ॥ १ ॥
 सश्लेष्मभेदःपवनः साममत्यर्थसंचितम् ।
 अभिभूयेतरं दोषमूर्ख चेत्प्रतिपद्यते ॥ २ ॥
 सक्थ्यस्थीनि प्रपूर्यान्तः श्लेष्मणा स्तिमितेन तु ।
 तदा स्तम्भ्नाति तेनोरु स्तब्धौ शीतावचेतनौ ॥ ३ ॥
 परकीयाविव गुरु स्यातामतिमृशव्यथौ ।
 ध्यानाङ्गमर्दस्तैमित्यतन्द्राछर्द्यरुचिज्वरैः ॥ ४ ॥
 संयुतौ पादसदनकृच्छ्रोद्धरणसुप्तिभिः ।
 तमूरुस्तम्भमित्याहुराढ्यवातं तथाऽपरे ॥ ५ ॥

पूर्वरूपमाह—

प्राग्रूपं तस्य निद्राऽतिध्यानं स्तिमितता ज्वरः ।
 रोमहर्षोऽरुचिश्लेष्मर्दिजङ्घावर्षाः सदनं तथा ॥ ६ ॥
 वातशङ्किभिरज्ञानात्तस्य स्यात्स्नेहनात्पुनः ।
 पादयोः सदनं सुप्तिः कृच्छ्रादुद्धरणं तथा ॥ ७ ॥
 जङ्घोरुग्लानिरत्यर्थं शश्वदानाहवेदने ।
 पदं च व्यथते न्यस्तं शीतस्पर्शं न वेत्ति च ॥ ८ ॥
 संस्थाने पीडने गत्यां चालने चाप्यनीश्वरः ।
 अन्यनेयौ हि संमग्रावूरु पादौ च मन्यते ॥ ९ ॥
 यदा दाहार्तितोदार्तो वेपनः पुरुषो भवेत् ।
 ऊरुस्तम्भस्तदा हन्यात्साधयेदन्यथा नवम् ॥ १० ॥

इत्पूरुस्तम्भनिदानम् ।

अथोरुस्तम्भचिकित्सा—

स्नेहास्राववमनवस्तिकर्म च रेचनम् ।
 वर्जयेदाढ्यवातेषु तैश्च तस्य विरोधतः ॥ ११ ॥
 तस्मादत्र सदा कार्यं स्वेदलङ्घनरूक्षणम् ।
 आममेदःकफाधिक्यान्मा*रुतं परिरक्षयेत् ॥ १२ ॥

* क. 'नयता शमम्' । इति पाठान्तरम् ।



यत्स्यात्कफप्रशमनं न च मारुतकोपनम् ।
 तत्सर्वं सर्वदा कार्यमूरुस्तम्भस्य भेषजम् ॥ १३ ॥
 सर्वो रूक्षक्रमः कार्यस्तत्राऽऽदौ कफनाशनः ।
 पश्चाद्वातविनाशाय कृत्स्नः कार्यः क्रियापथः ॥ १४ ॥
 भोज्याः पुराणश्यामाककोद्रवा मुद्गशालयः ।
 जाङ्गलैरघृतैर्भासैः शाकैश्चालवणैर्हितैः ॥ १५ ॥
 वायसीवास्तुकारिष्टसुनिषण्णकमूलकैः ।
 शाकैरलवणैर्युक्तं जीर्णशाल्योदनं भिषक् ॥ १६ ॥
 रूक्षणाद्वातकोपश्चेन्निद्रानाशार्तिसूचकः ।
 स्नेहस्वेदक्रमस्तत्र कार्यो वातामयापहः ॥ १७ ॥
 प्रतारयेत्प्रतिस्रोतो नदीं शीतजलां शिवाम् ।
 सरश्च विमलं शीतं स्थिरतोये पुनः पुनः ॥ १८ ॥
 तथा विशुष्केऽस्य कफे शान्तिमूरुग्रहो व्रजेत् ।
 शरीरं बलमग्निं च कार्यैषां रक्षता क्रिया ॥ १९ ॥
 सक्षारमूत्रस्वेदांश्च रूक्षान्यस्वेदनानि च ।
 कुर्यादिहेच मूत्राद्यैः करञ्जफलसार्धपैः ॥ २० ॥
 मूलैर्वाऽप्यश्वगन्धाया मूलैरर्कस्य वा भिषक् ।
 पिचुमन्दस्य वा मूलैरथ वा देवदारुणा ॥ २१ ॥
 क्षौद्रसर्धपवल्मीकमृत्तिकासहितैर्भिषक् ।
 गाढमुत्सादनं कुर्याद्भूरुस्तम्भे सवेदने ॥ २२ ॥
 दन्तीद्रवन्तीसुरसासर्धपैश्चापि बुद्धिमान् ।
 तर्कारीसुरसाशिगुबिल्ववत्सकनिम्बकैः ॥ २३ ॥
 पत्रमूलफलैस्तोयैः शृतमुष्णाम्बुसेचनम् ।
 भल्लातकामृताशुण्ठीदारुपथ्यापुनर्नवाः ॥ २४ ॥
 पञ्चमूलीद्वयोन्मिश्रा ऊरुस्तम्भनिवर्हणाः ।
 पिप्पली पिप्पलीमूलं भल्लातकफलानि च ॥ २५ ॥
 कल्कं मधुयुतं पीत्वा ऊरुस्तम्भाद्विमुच्यते ।
 ग्रन्थिकारुष्ककृष्णानां क्वाथं क्षौद्रान्वितं पिबेत् ॥ २६ ॥
 चव्याग्निवारुणीशुण्ठीकल्कं वा मधुसंयुतम् ।
 त्रिफलाचव्यकटुकाग्रन्थिकं मधुना लिहेत् ॥ २७ ॥
 ऊरुस्तम्भविनाशाय पुरं मूत्रेण वा पिबेत् ।
 लिह्याद्वा त्रिफलाचूर्णं क्षौद्रेण कटुकायुतम् ॥ २८ ॥

—

—

—

[The following text is extremely blurry and illegible. It appears to be a list or a series of entries, possibly names or titles, arranged in a column. The text is too pixelated to transcribe accurately.]

सुखाम्बुना पिबेद्वाऽपि चूर्णं षट्चरणं नरः ।
 पिप्पलीवर्धमानं वा माक्षिकेण गुडेन वा ॥ २९ ॥
 ऊरुस्तम्भे प्रशंसन्ति गण्डीरारिष्टमेव वा ।
 शिलाजं गुग्गुलुं वाऽपि पिप्पलीमथ नागरम् ॥ ३० ॥
 ऊरुस्तम्भे पिबेन्मूत्रैर्दशमूलैरसेन वा ।
 त्रिफलापिप्पलीमुस्तं चर्व्यं कटुकरोहिणीम् ॥ ३१ ॥
 लिह्याद्वा मधुना चूर्णमूरुस्तम्भार्दितो नरः ।
 घृतं सौरेश्वरं दद्याद्दूरुस्तम्भे कफोत्तरे ॥ ३२ ॥
 दद्याच्छुण्ठीघृतं वाऽपि वैश्वानरमथापि वा ।
 सैन्धवाद्यं हितं तैलममृताख्योऽपि गुग्गुलुः ॥ ३३ ॥
 कुष्ठं श्रीवेष्टकोदीच्यं सरलं दारुकेसरम् ।
 अश्वगन्धाजगन्धे च तैलं तैः सार्षपं पचेत् ॥ ३४ ॥
 सक्षौद्रं मात्रया तस्माद्दूरुस्तम्भार्दितः पिबेत् ।

इति कुष्ठादितैलम् ।

अथ कट्वरं तैलम्—

पलाभ्यां पिप्पलीमूलं नागरादष्टकट्वरः ॥ ३५ ॥
 तैलप्रस्थः समो दध्ना गृध्रस्यूरुग्रहापहः ।
 अष्टकट्वरतैलेऽत्र तैलं सार्षपमिष्यते ।
 पिप्पलीनागरयोश्चैव प्रत्येकं द्विपलं स्मृतम् ॥ ३६ ॥

इति कट्वरं तैलम् ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यामूरुस्तम्भनिदानचिकित्साकथनं नाम
 द्विनवविततमस्तरङ्गः ॥ ९२ ॥

अथ त्रिनवविततमस्तरङ्गः ।

अथाऽऽमवातनिदानम्—

विरुद्धाहारचेष्टस्य मन्दाग्नेर्निश्चलस्य च ।
 स्निग्धं भुक्तवतो ह्यन्नं व्यायामं वा प्रकुर्वतः ॥ १ ॥
 वायुना प्रेरितो ह्यामः श्लेष्मस्थानं प्रधावति ।
 तेनात्यर्थं विदग्धोऽसौ धमनीभिः प्रपद्यते ॥ २ ॥

वातपित्तकफैर्भूयो दूषितः सोऽन्नजो रसः ।
 स्रोतांस्यभिष्यन्दयति नानावर्णोऽतिपिच्छिलः ॥ ३ ॥
 जनयत्यग्निदौर्बल्यं हृदयस्य च गौरवम् ।
 व्याधीनामाश्रयो ह्येष आमसंज्ञोऽतिदारुणः ॥ ४ ॥

आमस्य लक्षणमाह—

अजीर्णाद्यो रसो जातः संचितो हि क्रमेण वै ।
 आमसंज्ञां स लभते शिरोगात्ररुजाकरः ॥ ५ ॥

आमवातस्य सामान्यलक्षणमाह—

युगपत्कुपितावेतौ त्रिकसंधिप्रवेशकौ ।
 स्तब्धं च कुरुतो गात्रमामवातः स उच्यते ॥ ६ ॥
 मन्यापृष्ठकटीजानुत्रिकसंधीन्प्रकुञ्चयन् ।
 सशब्दः स्तब्धगात्रश्च आमवातः स उच्यते ॥ ७ ॥
 अङ्गमदोऽरुचिस्तृष्णा त्वालस्यं गौरवं ज्वरः ।
 अपाकः शूलताऽङ्गानामामवातस्य लक्षणम् ॥ ८ ॥
 स कष्टः सर्वरोगाणां यदा प्रकुपितो भवेत् ।
 हस्तपादशिरोगुल्फत्रिकजानूरुसंधिषु ॥ ९ ॥
 करोति सरुजं शोथं यत्र दोषः प्रपद्यते ।
 स देशो रुज्यतेऽत्यर्थं व्याविद्ध इव वृश्चिकैः ॥ १० ॥
 जनयेत्सोऽग्निदौर्बल्यं प्रसेकारुचिगौरवम् ।
 उत्साहहानिं वैरस्यं दाहं च बहुमूत्रताम् ॥ ११ ॥
 कुक्षौ कठिनतां शूलं तथा निद्राविपर्ययम् ।
 तृट्छर्दिविभ्रमं मूर्छां हृद्ग्रहं विद्धिबन्धनम् ॥ १२ ॥
 जाड्यान्त्रकूजमानाहं कष्टांश्चान्यानुपद्रवान् ।
 पित्तात्सदाहरागं च सशूलं पवनानुगम् ॥ १३ ॥
 स्तिमितं गुरु कण्डूकं कफदुष्टं तमादिशेत् ।
 एकदोषानुगः साध्यो द्विदोषो याप्य उच्यते ।
 सर्वदेहचरः शोफः स कृच्छ्रः सांनिपातिकः ॥ १४ ॥

इत्यामवातनिदानम् ।

अथैतच्चिकित्सा—

लङ्घनं स्वेदनं तिक्तं दीपनानि कटूनि च ।
 विरेचनं स्नेहनं च वस्तयश्चाऽऽममारुते ॥ १५ ॥

रुक्षस्वेदो विधातव्यो वालुकापुटकैस्तथा ।
 उपनाहाश्च कर्तव्यास्तेऽपि स्नेहविवर्जिताः ॥ १६ ॥
 आमवाताभिभूताय पीडिताय पिपासया ।
 पञ्चकोलेन संसिद्धं पानीयं हितमुच्यते ॥ १७ ॥
 शुष्कमूलकयूषस्तु यूषो वा पाञ्चमूलिकः ।
 रसो वा काञ्जिकं वाऽपि शुण्ठीचूर्णावचूर्णितम् ॥ १८ ॥
 सौवीरं स्विन्नवार्ताकं तथा तिक्तफलानि च ।
 वास्तूकशाकं सारिष्ठं शाकं पौनर्नवं हितम् ॥ १९ ॥
 पटोलं गोक्षुरं चैव वरुणं कारवेल्लकम् ।
 यवान्नं कोरदूषाश्च पुराणाः शालिषष्टिकाः ॥ २० ॥
 लावकानां तथा मांसं हितं तक्रेण संस्कृतम् ।
 हितस्तु यूषः कौलत्थः कालायश्चाणकोऽथ वा ॥ २१ ॥
 रुच्यं दद्याद्यदस्य स्यादामवातहितं च तत् ।

अथ शतपुष्पादिलेपः—

शतपुष्पावचाविश्वाश्वदंष्ट्रावरुणत्वचः ॥ २२ ॥
 पुनर्नवासदेवाह्वासठीमुण्डितिकाः समाः ।
 प्रसारणी च तर्कारी फलं च मदनस्य च ।
 शुक्तकाञ्जिकपिष्टास्तु सुखोष्णा लेपने हिताः ॥ २३ ॥

इति शतपुष्पादिलेपः ।

अथाहिंसादिलेपः—

अहिंसाकेम्बुकामूलशिशुवल्मीकमृच्चयैः ।
 मूत्रपिष्टैश्च कर्तव्य उपनाहोऽनिलामजित् ॥ २४ ॥

इत्यहिंसादिलेपः ।

अथ रास्नादिपञ्चकम्—

आरग्वधस्य पत्राणि भृष्टानि कटुतैलतः ।
 आमवातप्रशान्त्यर्थं खादेद्भक्तावृतानि च ॥ २५ ॥
 शुण्ठीगोक्षुरककाथः प्रातः प्रातर्निषेवितः ।
 आमवाते कटीशूले पाचनं रुक्प्रणाशनम् ॥ २६ ॥
 कटीशूले षिवेत्तैलमेरण्डफलसंभवम् ।
 महौषधगुडूच्योश्च काथं मागधिकायुतम् ॥ २७ ॥
 विशोध्यैरण्डबीजानि पिष्ट्वा क्षीरे विपाचयेत् ।

1. 1. 1.

2. 2. 2.

3. 3. 3.

4. 4. 4.

5. 5. 5.

6. 6. 6.

7. 7. 7.

8. 8. 8.

9. 9. 9.

10. 10. 10.

11. 11. 11.

तत्पायसं कटीशूले गृध्रस्यां परमौषधम् ।
 रास्नागुडूचीभेरण्डदेवदारुमहौषधम् ।
 पिबेत्सर्वाङ्गगे वाते सामे संध्यस्थिमज्जगे ॥ २८ ॥
 इति रास्नादिपञ्चकम् ।

अथ रास्नादिसप्तकम्-

रास्नामृतारग्वधदेवदारुत्रिकण्डकैरण्डपुनर्नवानाम् ।
 क्वाथं पिबेन्नागरचूर्णमिश्रं जङ्घोरुपार्श्वत्रिकपृष्ठशूले ॥ २९ ॥
 इति रास्नादिसप्तकम् ।

अथ महारास्नादिकाथः-

रास्ना वातारिमूलं च वासकः सदुरालमः ।
 शठीदारुबलामुस्तनागरातिविषामयाः ॥ ३० ॥
 श्वदंष्ट्रा व्याधिघातश्च मिशिर्धान्यं पुनर्नवा ।
 अश्वगन्धाऽमृता कृष्णावृद्धदारुः शतावरी ॥ ३१ ॥
 वचा सहचरश्चैव चविका बृहतीद्वयम् ।
 समभागानि सर्वाणि रास्ना तन्निगुणा मता ॥ ३२ ॥
 पिबेत्क्वाथमेतेषामष्टभागावशेषितम् ।
 क्षिप्त्वा नागरचूर्णं च प्रक्षेपोऽत्र यथामलम् ॥ ३३ ॥
 सर्वेषु वातरोगेषु सामेषु च विशेषतः ।
 पक्षाघातेऽर्दिते कम्पे कुब्जे संधिगतेऽनिले ॥ ३४ ॥
 जानुजङ्घास्थिपीडासु गृध्रस्यां च हनुग्रहे ।
 ऊरुस्तम्भे वातरक्ते विश्वाच्यां क्रोष्टुशीर्षके ॥ ३५ ॥
 हृदामये च दुर्नास्त्रि योनिशुक्रामयेषु च ।
 पुंसां मेह्रगते वाते स्त्रीणां वन्ध्यामये तथा ॥ ३६ ॥
 योषितां गर्भदं मुख्यं नास्त्यस्मात्परमौषधम् ।
 महारास्नादिकक्वाथो वेधसाऽयं विनिर्मितः ॥ ३७ ॥
 इति महारास्नादिकाथः ।

अथ चित्रकादिचूर्णम्-

चित्रकं कटुका पाठा कलिङ्गाऽतिविषाऽमृता ।
 देवदारुवचामुस्ता नागराऽतिविषाऽमया ॥ ३८ ॥
 पिबेदुष्णाम्बुना नित्यं चूर्णमाममरुत्प्रणुत ।
 इति चित्रकादिचूर्णम् ।

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

14

अथ पुनर्नवाद्यं चूर्णम्—

पुनर्नवाद्यं शुण्ठीशताह्वावृद्धदारकम् ॥ ३९ ॥

शठीमुण्डितिका वृन्तमारनालेन पाययेत् ।

आमवातं निहन्त्याशु गृध्रसीमुद्धतामपि ॥ ४० ॥

इति पुनर्नवाद्यं चूर्णम् ।

अथ गुडूच्यादिचूर्णम्—

अमृतानागरगोक्षुरमुण्डितिकावरुणकैः कृतं चूर्णम् ।

मस्त्वारनालचूर्णं पीतं सामानिलनाशनं ख्यातम् ॥ ४१ ॥

इति गुडूच्यादिचूर्णम् ।

अथ वैश्वानरं चूर्णम्—

मणिमन्थस्य भागौ द्वौ यवान्यास्तद्वदेव तु ।

मागास्त्रयोऽजमोदाया नागरान्द्रागपञ्चकम् ॥ ४२ ॥

दश द्वौ च हरीतक्याः सूक्ष्मं चूर्णं कृतं शुभम् ।

मस्त्वारनालतक्रेण सर्पिषोष्णोदकेन वा ॥ ४३ ॥

पीतं जयत्यामवातं गुल्मं हृद्द्विस्तजा रुजः ।

प्लीहानं ग्रन्थिशूलं च गुदजानि मरुद्ग्रहम् ॥

वातानुलोमनमिदं चूर्णं वैश्वानराभिधम् ॥ ४४ ॥

इति वैश्वानरं चूर्णम् ।

अथ सिंहनादो गुग्गुलुः—

प्रत्येकं प्रस्थमेकं पुरत्रिकलमपां पाचयेत्सार्धराशौ

तुर्यांशे तत्र पूते पुनरमरवराव्योषमुस्ताग्निविलैः ।

छिन्नोग्रामानकाशोरिपुशबडिन्निवृत्सूतगन्धैः पलार्धैः

साहस्रैर्दन्तिबीजैः कटुजचसुपलैः सिंहनादोऽनिलामे ॥ ४५ ॥

इति सिंहनादो गुग्गुलुः ।

अथ बृहद्रसनपिण्डः—

दद्याद्द्वौतक्रपात्रे वरलशुनतुलां लुञ्चितानां तिलानां

तस्या अर्धं पलांशौल्लिकटुगजकणाधान्यचव्याजमोदैः ।

बाह्लीकाग्निवमेलानिखिलपटुकणामूलयुक्तैश्च सार्धं

कालीराज्यार्धसिद्धाजलधिककुडवैर्जरपञ्चप्रकुञ्चैः(?) ॥ ४६ ॥

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

श्वेतातैलाज्यमध्वष्टपलमथ पृथग्विंशतिं शुक्लविल्वा—
 न्येकीकृत्याऽऽज्यमाण्डे रविदिवसममुं स्थापयेद्धान्यराशौ ॥४७॥
 प्रातः खादेदथैनं तदनु लघु पिबेद्वारि जाषेत मुक्तो
 वातामश्लेष्मपित्तामयखुडभगरुगुल्मदुर्नाममेहान् ॥ ४८ ॥
 इति बृहद्रसनपिण्डः ।

अथैरण्डगुटी—

एरण्डबीजमज्जा समविश्वशर्करासहिता ।
 गुटकीकृता प्रभाते मुक्ता सामानिलं जयति ॥ ४९ ॥
 इत्येरण्डगुटी ।

अथैरण्डतैलम्—

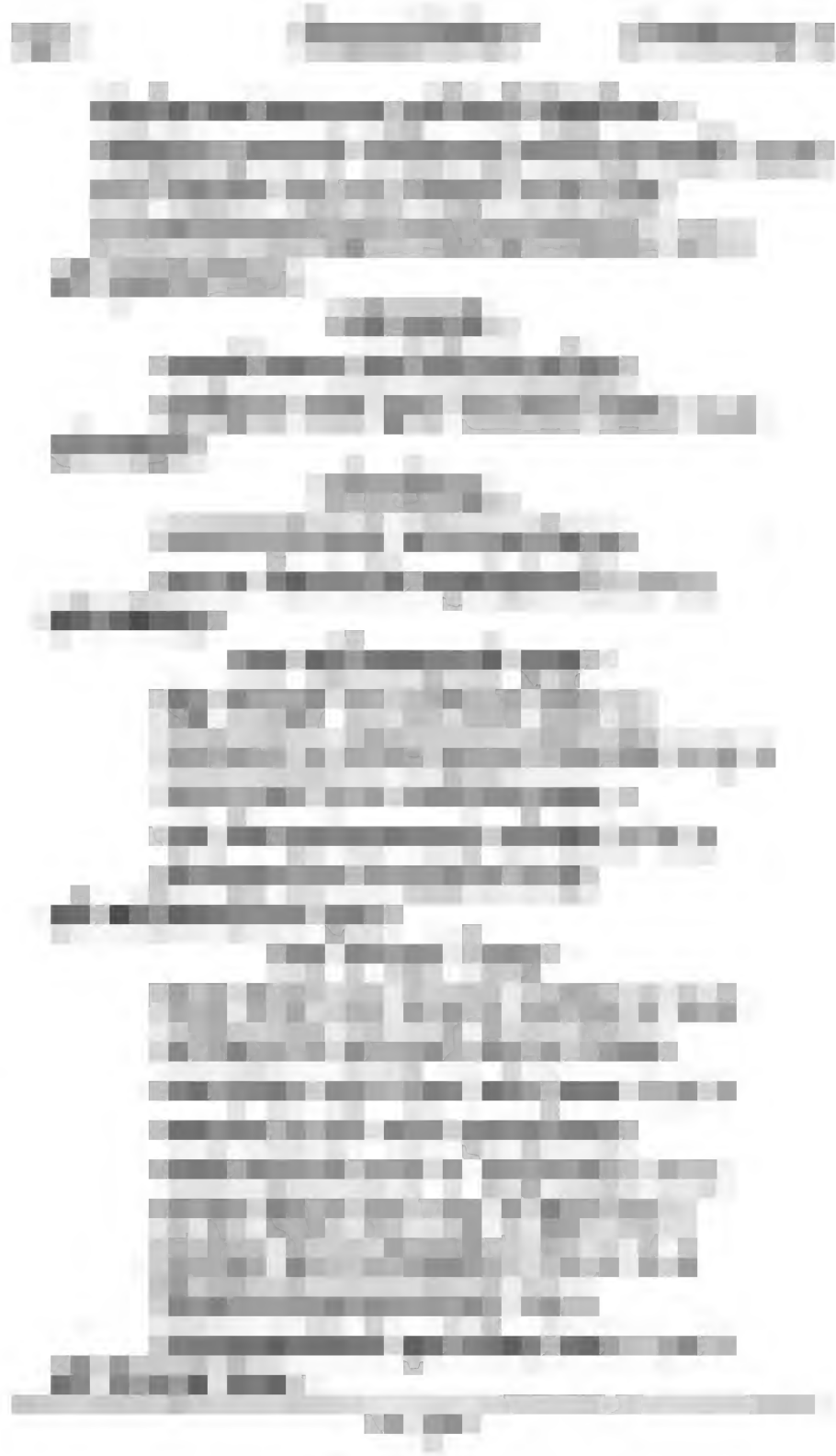
आमवातगजेन्द्राणां शरीरवनचारिणाम् ।
 एक एव निहन्ताऽस्ति रुबूकस्नेहकेसरी ॥ ५० ॥
 इत्येरण्डतैलम् ।

अथ काञ्जिकषट्पलकं घृतम्—

हिङ्गु त्रिकटुकं चव्यं माणिमन्थं तथैव च ।
 कल्कं कृत्वा तु मतिमान्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ५१ ॥
 आरनालाढकं दत्त्वा तत्सर्पिर्जठरापहम् ।
 शूलं विबन्धमानाहमामवातं कटिग्रहम् ॥ ५२ ॥
 नाशयेद्ब्रह्मणीदोषं मन्दाग्नेर्दीपनं परम् ।
 इति काञ्जिकषट्पलकं घृतम् ।

अथ सैन्धवाद्यं तैलम्—

सैन्धवं श्रेयसी रास्ना शतपुष्पा यवानिका ॥ ५३ ॥
 स्वर्जिकामरिचं कुष्ठं शुण्ठी सौवर्चलं विडम् ।
 वचाऽजमोदा जरणं पौष्करं मरिचं कणा ॥ ५४ ॥
 पलमर्धपलं वाऽपि प्रत्येकं सूक्ष्मचूर्णितम् ।
 प्रस्थमेरण्डतैलस्य प्रस्थं च शतपुष्पजम् ॥ ५५ ॥
 काञ्जिकं द्विगुणं दत्त्वा मस्तु च द्विगुणं तथा ।
 एतत्संमृत्य संमारं शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ॥ ५६ ॥
 सिद्धमेतत्प्रयोक्तव्यमामवातहरं परम् ।
 पानाभ्यञ्जनयोर्बस्तौ कुरुतेऽग्निबलं तथा ॥ ५७ ॥
 इति सैन्धवाद्यं तैलम् ।



अथ शुण्ठीखण्डपाकः—

नामरस्य षलान्यष्टौ घृतस्य पलविंशतिम् ।
 क्षीरद्विप्रस्थसंयुक्तां खण्डस्यार्धतुलां न्यसेत् ॥ ५८ ॥
 व्योषत्रिजातकद्रव्यात्प्रत्येकं च पलं पलम् ।
 निद्ध्याच्चूर्णितं तत्र खादेदग्निबलं प्रति ॥ ५९ ॥
 आमवातप्रशमनं बलपुष्टिविवर्धनम् ।
 वर्ण्यमायुष्यमौजस्यं बलीपलितनाशनम् ॥ ६० ॥

इति शुण्ठीखण्डपाकः ।

अथ पञ्चाननवटी—

महाराष्ट्रादिना योमराजगुग्गुलुरप्यलम् ।
 आमवातकटीपृष्ठसंधिशोथरुजां जयेत् ॥ ६१ ॥
 प्रत्येकं पिचुरंशजं च तपनीयष्टङ्कणं सैन्धवं
 तुत्थं तीक्ष्णहलाहलावथ पले वैश्वानरश्रेष्ठयोः ।
 शुद्धो गुग्गुलुरञ्जलिं घृतयुतामेषा द्विमाषा वटी
 सश्रेष्ठाकथनामवातपवनातङ्केभ्यश्चानना ॥ ६२ ॥

इति पञ्चाननवटी ।

अथाजमोदावटी—

द्वीप्यग्रन्थिकणोषणामरमिश्रीसिन्ध्वग्निवेलं समं
 वेल्या दश नागराच्च विजयां* शापं च तुल्यो गुडः ।
 विश्वाचीगरमृधसीगुदकटीपृष्ठास्थिजङ्घाभिदा-
 शोफामानिलपाण्डुतूणियुगुले श्लेष्मानिले सोष्णकः ॥ ६३ ॥

इत्यजमोदावटी ।

दधिमत्स्यगुडक्षीरपोतकीमाषपिष्टकम् ।
 वर्जयेदामवातातो मांसमानूपजं च यत् ॥ ६४ ॥
 अभिष्यन्दिकरा ये च ये चान्ये गुरुपिच्छिलाः ।
 वर्जनीयाः प्रयत्नेन सामवातादितैर्नरैः ॥ ६५ ॥
 हितं यूषं च कौलत्थं कलायचणकस्य च ।
 यवान्नं कोरदूषान्नं पुराणं शालिपट्टिकम् ॥ ६६ ॥

* क. विजया तुम्बरुपिणी हरीतकीत्यर्थः ।



लावकानां तथा मांसं हितं तत्रेण संस्कृतम् ।
 पटोलं गोक्षुरं चैव ज्यूषणं कारवेल्लकम् ।
 वास्तूकं शाकमारीषं शाकं पौनर्नवं हितम् ॥ ६७ ॥
 इति श्रीयोगतरङ्गिण्यामामवातनिदानचिकित्साकथनं नाम
 त्रिनवतितमस्तरङ्गः ॥ ९३ ॥

अथ चतुर्नवतितमस्तरङ्गः ।

अथ शूलनिदानम्-

दोषैः पृथक्समस्तामद्वन्द्वैः शूलोऽष्टधा भवेत् ।
 सर्वेष्वेतेषु शूलेषु प्रायेण पवनः प्रभुः ॥ १ ॥

हेतुमाह-

व्यायामयानादतिभैथुनाच्च प्रजागराच्छीतजलातिपानात् ।
 कलायमुद्गाढकिंकोरकूषादत्यर्थरूक्षादशनाभिघातात् ॥ २ ॥
 कषायतिक्तातिविरूढकान्नविरुद्धवल्लूरकशुष्कशाकात् ।
 विण्मूत्रशुक्रानिलवेगरोधाच्छोकोपवासादतिहास्यभाष्यात् ॥ ३ ॥
 वायुः प्रवृद्धो जनयेद्धि शूलं हृत्पार्श्वपृष्ठत्रिकबस्तिदेशे ।
 जीर्णं प्रदोषे च घनागमे च शीते च कोपं समुपैति गाढम् ॥ ४ ॥
 मुहुर्मुहुश्चोपशमप्रकोपो विद्वातसंस्तम्भनतोदभेदैः ।
 संस्वेदनाभ्यञ्जनमर्दनाद्यैः स्निग्धोष्णभोज्यैश्च शमं प्रयाति ॥ ५ ॥
 क्षारातितीक्ष्णोष्णविदाहितैलनिष्पावपिण्याककुलत्थयूषैः ।
 कट्मलसौवीरसुराविकारैः क्रोधानलायासरविप्रतापैः ॥ ६ ॥
 ग्राम्यातियोगादशनैर्विदग्धैः पित्तं प्रकुप्याऽऽशु करोति शूलम् ।
 वृण्मोहदाहार्तिकरं हि नाभ्यां संस्वेदमूर्च्छाभ्रमशोषयुक्तम् ॥ ७ ॥
 मध्यंदिने कुप्यति चार्धरात्रे निदायकाले ऋतुदात्यये च ।
 शीते च शीतैः समुपैति शान्तिं सुस्वादुशीतैरपि भोजनैश्च ॥ ८ ॥

अनूपवारिजकिलाटपयोविकारै-

माषिस्तुपिष्टकृशरातिलशङ्कुलीभिः ।

अन्वैर्बलासजनकैरपि हेतुभिश्च

श्लेष्मा प्रकोपमुपगम्य करोति शूलम् ॥ ९ ॥

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

14

हृत्प्रासकाससदनारुचिसंप्रसेकै-

रामाशये स्तिमितकोष्ठशिरोगुरुत्वैः ।

भुक्ते सदैव हि रुजं कुरुतेऽतिमात्रं

सूर्योदये च शिशिरे कुसुमागमे च ॥ १० ॥

द्विदोषलक्षणैरेतैर्विद्याच्छूलं द्विदोषजम् ॥ ११ ॥

सर्वेषु दोषेषु च सर्वलिङ्गं विद्यान्दिष्वसर्वभवं हि शूलम् ।

सुकष्टमेन विषवज्जकल्पं विवर्जनीयं प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥ १२ ॥

तत्रान्तरोक्तान्नदोषशूलमाह-

अतिमात्रं यदा भुक्तं पावके मूढतां गते ।

स्थिरीकृतं भवेत्कोष्ठे वायुरावृत्य तिष्ठति ॥ १३ ॥

अविपाकगतं ह्यन्नं शूलं तर्हि करोति च ।

मूर्छाध्मानं विदाहं च हृदि क्लेदविलम्बिकाः ॥ १४ ॥

विषूच्यते छर्द्यति कम्पते च प्रमुह्यति ।

अविपाकाद्भवेच्छूलमन्नदोषसमुद्भवम् ॥ १५ ॥

आटोपहृत्प्रासवमीगुरुत्वस्तैमित्यमानाहकफप्रसेकैः ।

कफस्य लिङ्गेन समानलिङ्गमामोद्भवं शूलमुदाहरन्ति ॥ १६ ॥

बस्तौ मारुतजं शूलं नाभ्यां पित्तभवं वदेत् ।

कफाद्भृत्पार्श्वकुक्षिस्थं सर्वजः सर्वदेहगम् ॥ १७ ॥

निगृह्यमाणस्तं श्लेष्मा कुक्षिपार्श्वव्यवस्थितः ।

आध्मानादोपसंरुद्धः सूचीभिरिव निस्तुदन् ॥ १८ ॥

उच्छ्वसत्यथ वक्त्रेण न चान्नमभिनन्दति ।

न च निद्रामुपैत्येव पार्श्वशूलमिहोच्यते ॥ १९ ॥

प्रकुप्यति यदा कुक्षौ वह्निमाकस्य मारुतः ।

तदाऽस्य भोजनं भुक्तं दोषस्तब्धं प्रपच्यते ॥ २० ॥

मुहुः श्वसिति चात्यर्थं मुहुः शूलेन पीड्यते ।

नैवाऽऽसनेन शयने तिष्ठन्वा लभते सुखम् ॥ २१ ॥

बस्तौ हृत्कण्ठपार्श्वेषु स शूलः कफवातजः ।

कुक्षौ हृन्नाभिमध्ये तु स शूलः कफपित्तजः ॥ २२ ॥

दाहज्वरकरो घोरो विज्ञेयो वातपित्तजः ।

एकदोषानुगः साध्यः कृच्छ्रसाध्यो द्विदोषजः ॥ २३ ॥



सर्वदोषान्वितो धोरस्त्वसाध्यश्चात्युषद्रवः ।
 हृत्कुक्षिवस्तिशूलाश्च आमबातसमुद्भवाः ॥ २४ ॥
 वेदनातितुषामूर्छा आनाहो गौरवारुची ।
 कासः श्वासश्च हिक्का च शूलस्योपद्रवा दश ॥ २५ ॥
 आनाहो गौरवं छर्दिर्नर्वरस्तृष्णा भ्रमोऽरुचिः ।
 कृशत्वं बलहानिश्च वेदनातिप्रवर्तनम् ॥ २६ ॥
 उपद्रवा दशैवैते यस्य शूलेन नास्ति सः ।
 एकदोषोत्थितः साध्यः कृच्छ्रसाध्यो द्विदोषजः ॥
 सर्वदोषोत्थितो धोरस्त्वसाध्यो भूर्युषद्रवः ॥ २७ ॥

इति शूलनिदानम् ।

अथैतच्चिकित्सा—

अथ तिलकल्कस्वेदः—

वमनं लङ्घनं स्वेदः पाचनं फलवर्तयः ।
 क्षारचूर्णानि गुटिकाः शस्यन्ते शूलशान्तये ॥ २८ ॥
 ज्ञात्वा तु वातजं शूलं स्नेहस्वेदैरुपाचरेत् ।
 पायसैः कृशरापिण्डैः स्निग्धैर्वाऽपि सितोत्कटैः ॥ २९ ॥
 आशुकारी हि पवनस्तस्मात्तं त्वरया जयेत् ।
 तस्य शूलाभिपन्नस्य स्वेद एव सुखावहः ॥ ३० ॥
 तुषवारिविनिष्पिष्टतिलकल्कोष्णपोदली ।
 भ्रामिता जठरस्योर्ध्वं मुहुः शूलं विनाशयेत् ॥ ३१ ॥

इति तिलककल्कस्वेदः ।

अथ कार्पासादिस्वेदः—

कार्पासास्थिकुलत्थकातिलयवैरेरण्डमूलातसी-
 वर्षाभूशणबीजकाञ्जिकयुतैरेकीकृतैर्वा पृथक् ।
 स्वेदः स्यादथ कूर्परोदरशिरःस्निग्धानुपादाङ्गुली-
 गुल्फस्कन्धकटीरुजो विजयते निःशेषवप्रातिहा ॥ ३२ ॥

इति कार्पासादिस्वेदः ।

अथ कुलत्थयूषः—

तिलैश्च गुटिकां कृत्वा भ्रामयेज्जठरोपरि ।
 शूलं सुदुस्तरं तेन शान्तिं गच्छति सत्वरम् ॥ ३३ ॥

[illegible]

नाभिलेपाज्जयेच्छूलं मदमः काञ्चिकान्वितः ।

चित्त्वैरण्डतिलैर्वाऽथ पिष्टैर्मलेन पोदली ॥ ३४ ॥

घातात्मकं हन्त्यचिरेण शूलं स्नेहेन युक्तस्तु कुलत्थयूषः ।

ससैन्धवो व्योषयुतः सलावः सहिङ्गुसौवर्चलदाडिमाढ्यः ॥ ३५ ॥

इति कुलत्थादियूषः ।

अथ बलादिकाथः—

बलापुनर्नवैरण्डबृहतीद्वयगोक्षुरैः ।

काथः सहिङ्गुलवणः पीतो वातरुजं जघेत् ॥ ३६ ॥

इति बलादिकाथः ।

अथ करञ्जायं चूर्णम्—

करञ्जसौवर्चलनागराणां सरामठानां समभागिकानाम् ।

चूर्णं कटूष्णेन जलेन पीतं समीरशूलं विनिहन्ति सद्यः ॥ ३७ ॥

इति करञ्जायं चूर्णम् ।

अथैरण्डादिकाथः—

गिलितं हिङ्गुं सधृतं सद्यः शूलं विनाशयेत् ।

करञ्जबीजमज्जा वा भृशं शूलं निकृन्तति ॥ ३८ ॥

विश्वमेरण्डजं मूलं काथयित्वा शृतं पिबेत् ।

हिङ्गुं सौवर्चलोपेतं सद्यः शूलनिवारणम् ॥ ३९ ॥

इत्यैरण्डादिकाथः ।

अथ हिङ्गुवायं चूर्णम्—

शूले निरन्नकोष्ठेऽद्भिरुष्णाभिश्चूर्णिताः पिबेत् ।

हिङ्गुप्रतिविषाव्योषवचासौवर्चलाभयाः ॥ ४० ॥

इति हिङ्गुवायं चूर्णम् ।

इति वातशूलः ।

अथ पित्तशूलः—

गुडशालियवाः क्षीरं सर्पिर्दुग्धं विरेचनम् ।

जाङ्गलानि च मांसानि भेषजं पित्तशूलिनाम् ॥ ४१ ॥

धात्र्या रसं विदार्या वा त्रायन्तीगोस्तनाम्बुना ।

पिबेत्सशर्करं सद्यः पित्तशूलनिवारणम् ॥ ४२ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

वामयेत्पित्तशूलार्तं पटोलेक्षुरसादिभिः ।

पश्चाद्विरेचयेत्सम्यक्पित्तगुल्मविरेचनैः ॥ ४३ ॥

शीतावगाहाः पुलिनाः सवाता

माण्डानि कांस्यानि जलप्लुतानि ।

अन्यानि शस्तानि च शीतलानि

सच्चन्दनार्द्राश्च कराः सुशीताः ॥ ४४ ॥

मणिराजतताम्राणां भाजनानि गुरूणि च ।

तोयेन परिपूर्णानि शूलस्योपरि धारयेत् ॥ ४५ ॥

शतावरीसयट्वाह्वाट्यालकुशगोक्षुरैः ।

गृतं शीतं पिबेत्तोयं सगुडक्षौद्रशर्करम् ॥ ४६ ॥

पित्तशूलार्शदाहघ्नं हिक्कावरवामिच्छिदम् ।

इति शतावर्याद्विक्राथः ।

बृहतीगोक्षुरैरण्डकासेक्षु × × वालिकाः ॥ ४७ ॥

पीताः पित्तमवं शूलं सद्यो हन्युः सुवारुणम् ।

अथ श्लेष्मचूर्णम्—

प्रालिह्यात्पित्तशूलघ्नं धात्रीचूर्णं समाक्षिकम् ।

सगुडां घृतसंमिश्रां भक्षयेद्वा हरीतकीम् ॥ ४८ ॥

इति पित्तशूलः ।

अथ श्लेष्मशूलम्—

त्रिलवणादिचूर्णम्—

संस्वेद्य कोष्णसक्षारसक्तुतकैस्तथाऽपरैः ।

प्रवाम्य कफशूलार्तमथैनमुपवासयेत् ॥ ४९ ॥

शाल्यन्नं जाङ्गलं मांसमरिष्टं कटुकं रसम् ।

मद्यानि जीर्णगोधूमं कफशूले प्रयोजयेत् ॥ ५० ॥

लवणत्रयसंयुक्तं पञ्चकोलं सरामठम् ।

सुखोष्णेनाम्मसा पीतं कफशूलहरं परम् ॥ ५१ ॥

इति त्रिलवणादिचूर्णम् ।

अथ त्रिदोषशूलम्—

शम्बूकचूर्णयोगः—

शङ्खचूर्णं सलवणं सहिङ्गु व्योषसंयुतम् ।

उष्णोदकेन तस्पीतं हन्ति शूलं त्रिदोषजम् ॥ ५२ ॥

इति शम्बूकचूर्णयोगः ।



अथ मण्डूरावलेहः—

गोमूत्रसिद्धं मण्डूरं त्रिफलाचूर्णसंयुतम् ।

विलिहन्मधुसर्पिभ्यां शूलं हन्ति त्रिदोषजम् ॥ ५३ ॥

इति मण्डूरावलेहः ।

अथैरण्डद्वादशकम्—

एरण्डफलमूलानि बृहतीद्वयगोक्षुरम् ।

पर्णिन्यः सहदेवा च सिंहपुच्छीक्षुवालिताः ॥ ५४ ॥

अल्पैरेतैः शृतं तोयं यवक्षारयुतं पिबेत् ।

पृथग्दोषमवं शूलं हन्ति चातित्रिदोषजम् ॥ ५५ ॥

इत्यैरण्डद्वादशकम् ।

अथाऽऽमशूलम्—

अथ चित्रकादिकाथः—

आमशूले क्रिया कार्या कफशूलविनाशिनी ।

सेव्यमामहरं सर्वं यद्यदग्निविबर्धनम् ॥ ५६ ॥

चित्रकग्रन्थिकैरण्डशुठीधान्यजलैः शृतम् ।

सहिष्णुः सैन्धवविडमामशूलहरं परम् ॥ ५७ ॥

इति चित्रकादिकाथः ।

अथैरण्डसप्तकम्—

एरण्डबिल्वबृहतीद्वयमातुलुङ्ग-

पाषाणभिश्चिकटुमूलकृतः कषायः ।

सक्षारहिङ्गुलवणो रुबुतैलमिश्रः

ओण्यूरुमेद्बृहदयस्तनरुक्षु पेयः ॥ ५८ ॥

इत्यैरण्डसप्तकम् ।

अथ द्वन्द्वजशूलम्—

अथ कण्टकार्यादि—

निदिग्धिकाबृहत्यौ च कुशकाशेक्षुवालिताः ।

श्वदंष्ट्रैरण्डमूलं च वारिणा सह पाचयेत् ।

पिबेत्सशर्करक्षौद्रं शूले पित्तानिलात्मके ॥ ५९ ॥

इति कण्टकार्यादि ।



अथ क्षाराम्बुयोगः—

क्षारोदकं पिबेदुष्णं पिप्पलीलवणान्वितम् ।

वातश्लेष्मोद्भवं शूलं कुक्षिशूलं च नाशयेत् ॥ ६० ॥

इति क्षाराम्बुयोगः ।

अथ द्राक्षादिः—

पित्तश्लेष्मोद्भवं शूलं विरेकचमनैर्जयेत् ।

द्राक्षाटरूषयोः काथः पित्तश्लेष्मरुजं जयेत् ॥ ६१ ॥

इति द्राक्षादिः ।

अथ शूले साधारणो विधिः—

अथ तुम्बुर्वाद्यं चूर्णम्—

चूर्णं तुम्बुरुमठत्रिलवणक्षाराजमोदामया-

वेल्लद्यूषणपुष्कराह्वयकृतं कुम्भत्रिभागान्वितम् ।

मन्दोष्णेन जलेन पीतमखिलं शूलं सगुल्मोदरा-

ध्मानाजीर्णविवन्धमामपवनानाहौ च शीघ्रं जयेत् ॥ ६२ ॥

इति तुम्बुर्वाद्यं चूर्णम् ।

अथ द्विक्षाराद्यं चूर्णम्—

विश्वोरुबूकदशमूलयवाम्मसा तु

द्विक्षारहिङ्गुलवणत्रयपौष्कराणाम् ।

चूर्णं पिबेद्द्वयपृष्ठकटिग्रहाम-

पक्काशयार्तिभृशरुग्ज्वरगुल्मशूली ॥ ६३ ॥

इति द्विक्षाराद्यं चूर्णम् ।

अथ रुचकादिचूर्णम्—

चूर्णं समं रुचकहिङ्गुमहौषधानां

शुण्ठ्यम्बुना कफसमीरणसंभवासु ।

हृत्पार्श्वपृष्ठजठरार्तिविषूचिकासु

पेयं तथा यवरसेन च विह्विविबन्धे ॥ ६४ ॥

इति रुचकादिचूर्णम् ।

अथ तैलधारावस्तिः—

अहिमतिलजधारा निष्पतन्ती विदूरा-

वपनयति हि शूलं शूलिनः शूलदेशे ।

THE [REDACTED] [REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

अपि च वररुक्कस्नेहवस्तिस्त्वपाने

झटिति जयति शूलानीति दसप्रतिज्ञा ॥ ६५ ॥

इति तैलधारावस्तिः ।

अथ पथ्यादिचूर्णम्—

पथ्यांशशक्रयवपुष्करमूलयुक्तां

संचूर्ण्य हिङ्गुजटिलातिविषासमेताम् ।

चूर्णं कवोष्णसलिलेन निपीय सद्यः

शूलानि हन्ति पवनामकफोद्भवानि ॥ ६६ ॥

इति पथ्यादिचूर्णम् ।

अथ हिङ्गवाद्या वटी—

हिङ्गु सौवर्चलं पाठां द्वौ क्षारौ लवणत्रयम् ।

चूर्णीकृत्य विधातव्यं भिषजा लशुने रसे ॥ ६७ ॥

कर्षमात्रा वटीः कृत्वा तासामेकां नियोजयेत् ।

हृच्छूले पार्श्वशूले च मन्यास्तम्भे च दारुणे ।

प्रयोज्या कुक्षिशूले वा भिषजा सिद्धिमिच्छता ॥ ६८ ॥

इति हिङ्गवाद्या वटी ।

अथ शूलिघृतम्—

घृताच्चतुर्गुणो देयो मातुलुङ्गरसो दाधि ।

शूष्कमूलककोलाम्लकषायो दाडिमाद्रसः ॥ ६९ ॥

विडङ्गं लवणक्षारं पञ्चकोलयवानिभिः ।

पाठामूलककल्केन सिद्धं शूलिघृतं मतम् ॥ ७० ॥

हृत्पार्श्वशूलं वै श्वासकासहिकास्तथैव च ।

बभ्रुगुल्मप्रमेहाशौवातव्याधींश्च नाशयेत् ॥ ७१ ॥

इति शूलिघृतम् ।

अथ सूर्यप्रभा वटी—

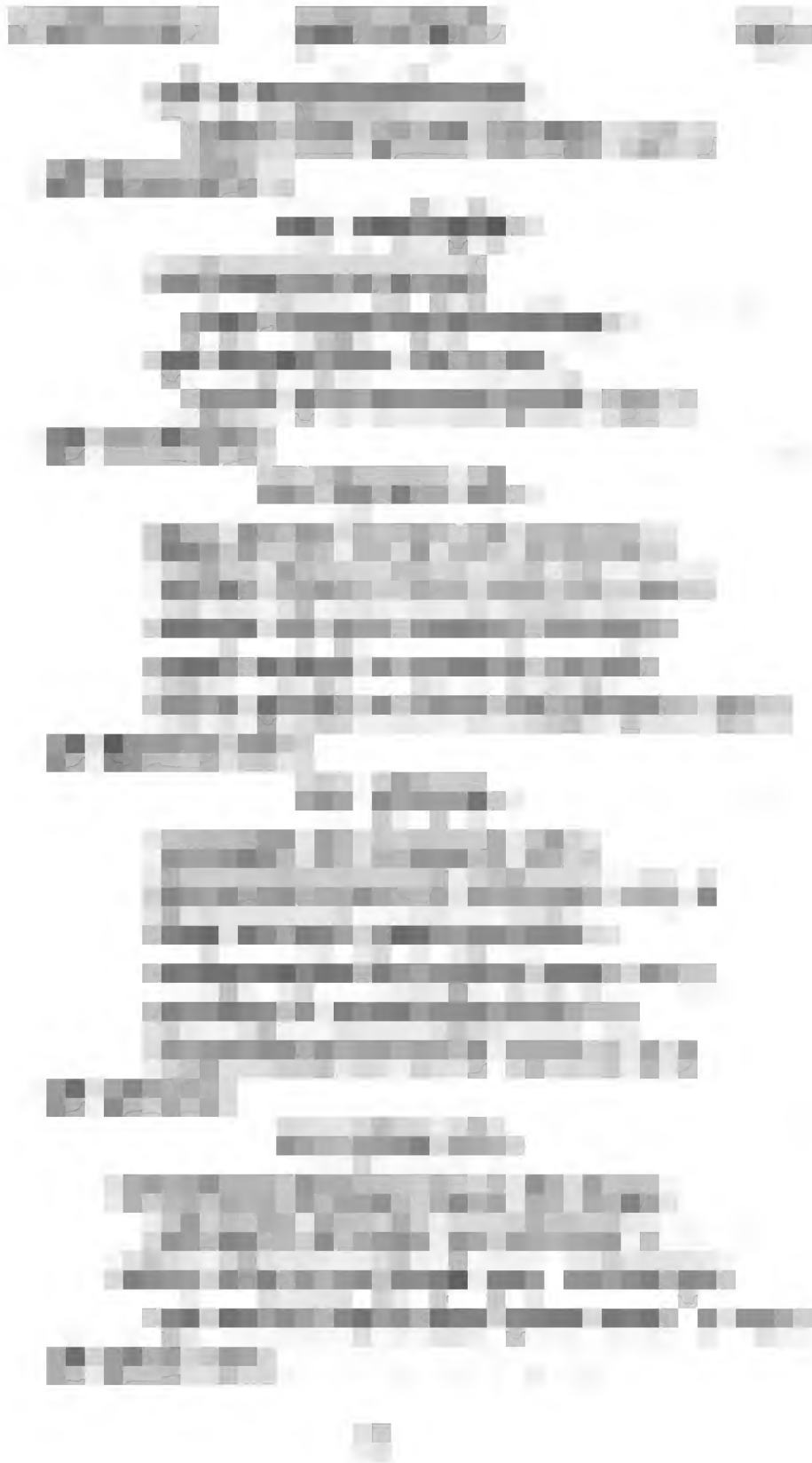
व्योषग्रन्थिवचाग्निहिङ्गुजरणद्वन्द्वं विषं निम्बुक-

द्रावैरार्द्रकजै रसैर्विमृदितं तुल्यं मरीचोपमा ।

कर्तव्या वटिकाऽथ सा दिनमुखे भुक्ता कवोष्णाम्बुना

शूलं त्वष्टविधं निहन्ति सहसा सूर्यप्रभा नामतः ॥ ७२ ॥

इति सूर्यप्रभा वटी ।



अथ हिङ्गवादिचूर्णम्-

हिङ्गवस्त्रिपट्टग्रथद्रुकटुसटीवृक्षाम्लदीप्यालका-
पाठाजाज्यजगन्धमूलहपुषाद्विक्षारसारामया ।
हिध्माध्माजविबन्धवर्ध्मकसनश्वासाग्निसादारुचि-
प्रीहाशोखिलशूलगुल्मगलहृद्दोगाश्वपाण्डुप्रणुत् ॥ ७३ ॥
इति हिङ्गवादिचूर्णम् ।

अथ शूलगजकेसरी रसः-

पलमितमृदुशुल्बं मस्मितं गन्धचूर्णं
वसुमितपलमानं चिञ्चिणीक्षारचूर्णम् ।
त्रितयमिदमभीष्टं क्षारताम्राख्यमेत-
द्धरति सकलशूलं पीतमुष्णोदकेन ॥ ७४ ॥
हिङ्गव्योषौ मधुकरुचकौ चिञ्चिणीक्षारताम्रं
सर्वं चैतन्मसृणमृदितं पीतमुष्णोदकेन ।
पित्तं शूलं शमयति नृणां तीव्रपीडासमेतं
ध्वान्तं मानोरिव समुदयः साधुनामादकं हि ॥ ७५ ॥
रसविषगन्धकर्षक्षारेण सिन्धुपिप्पलीविश्वैः ।
अहिबल्यम्बुनि घृष्टः शूलेमहरिद्विगुञ्जोऽयम् ॥ ७६ ॥
इति शूलगजकेसरी रसः ।

अथाग्निमुखो रसो रसरत्नप्रदीपात्-

रसबलिगगनार्कं वेतसाश्लं विषं स्या-
त्सममिति पृथगेतद्भावेद्यसमेतैः ।
कनकमुजगवल्लीकण्टकारीजयान्द्रिः
कमलसलिलवासामुष्टिरास्त्राम्बुनीरैः ॥ ७७ ॥
अरुणसदृशशकैर्मातुलुङ्गोऽथ योज्यः
पटुगणरसतुल्यो मावयेदार्द्रकान्द्रिः ।
दहनवदनसंस्थो बलमात्रो निहन्ति
प्रबलपवनशूलं तद्विकारांश्च सर्वान् ॥ ७८ ॥
इत्यग्निमुखो रसो रसरत्नप्रदीपात् ।

अथ शूलगजकेसरी-

शुद्धसूतं द्विधा गन्धं यामैकं मर्दयेद्वृद्धम् ।
तयोस्तुल्येषु ताम्रेषु संपुटे तं निरोधयेत् ॥ ७९ ॥



ऊर्ध्वाधो लवणं कृत्वा मृद्भाण्डे धारयेद्भिषक् ।
ततो गजपुटे पक्त्वा स्वाङ्गशीतं समुद्धरेत् ॥ ८० ॥
संपुटं चूर्णयेत्सूक्ष्मं पर्णखण्डे द्विगुञ्जकम् ।
भक्षयेच्छूलपीडातो हिङ्गुशुण्ठीमरीचकम् ॥ ८१ ॥
जीरं वचा च तच्चूर्णं कर्षमुष्णजलैः पिबेत् ।
असाध्यं नाशयेच्छूलं रसः शूलेभकेसरी ॥ ८२ ॥

इति शूलगजकेसरी ।

वेदनातितृषामूर्च्छा आनाहो गौरवारुची ।
कासश्वासौ च हिक्का च शूलस्योपद्रवा नव ॥ ८३ ॥
व्यायामं मैथुनं मद्यं लवणं कटुकानि च ।
वेगरोधं शुचं क्रोधं वर्जयेच्छूलवाञ्छरः ॥ ८४ ॥
इति योगतरङ्गिण्यां शूलनिदानचिकित्साकथनं नाम चतुर्न-
वतितमस्तरङ्गः ॥ ९४ ॥

अथ पञ्चनवतितमस्तरङ्गः ।

अथ परिणामशूलनिदानम्—

स्वैर्निदानैः प्रकुपितो वायुः संनिहितस्तदा ।
कफपित्ते समावृत्य शूलकारी भवेद्दली ॥ १ ॥
मुक्ते जीर्यति यच्छूलं तदेव परिणामजम् ।
तस्य लक्षणमप्येतत्समासेनाभिधीयते ॥ २ ॥
मुक्ते जीर्यति जीर्णेऽन्ने जीर्णे मुक्ते च जीर्यति ।
जीर्णे जीर्यति मुक्ते च दोषैर्नाल्पातिरुक्क्रमात् ॥ ३ ॥

वातजमाह—

साध्मानाटोपविष्णुमूत्रविबन्धारतिवेपनैः ।
स्निग्धोष्णोपशमप्रायं वातिकं तद्वदेद्भिषक् ॥ ४ ॥

पित्तजमाह—

तृष्णादाहारुचिस्वेदकट्वम्ललवणोत्तरम् ।
शूलं शीतशमप्रायं पैत्तिकं लक्षयेद्भिषक् ॥ ५ ॥

कफजमाह—

छर्दिहृत्ताससंमोहस्वल्परुग्दीर्घसंततिः ।

कटुतिक्तोपशान्तौ च शूलं श्लेष्मात्मकं वदेत् ॥ ६ ॥

अथ त्रिदोषजम्—

संसृष्टलक्षणं बुद्ध्वा द्विदोषं परिकल्पयेत् ।

त्रिदोषजमसाध्यं तु क्षीणमांसबलानलम् ॥ ७ ॥

जीर्णं जीर्यत्यजीर्णं वा यच्छूलमुपजायते ।

पथ्यापथ्यप्रयोगेण भोजनाभोजनेन च ॥

न शमं याति नियमात्सोऽन्नद्रव उदाहृतः ॥ ८ ॥

इति परिणामशूलनिदानम् ।

अथैतच्चिकित्सा—

लङ्घनं प्रथमं कुर्याद्विमनं च विरेचनम् ।

वस्तिकर्म परं चात्र पक्तिशूलोपशान्तये ॥ ९ ॥

वातजं स्नेहयोगेन पित्तजं रेचनादिना ।

कफजं वमनाद्यैश्च पक्तिशूलमुपाचरेत् ॥ १० ॥

द्वन्द्वजं तद्वियोगेन तद्वियोगेण सर्वजम् ।

पक्तिशूलोपशान्त्यर्थं तत्र वान्ते विधिर्यथा ॥ ११ ॥

पीत्वा तु क्षीरमाकण्ठं मदनक्वाथसंयुतम् ।

कान्तारकस्य पौण्ड्रस्य कोशकारस्य वा रसम् ॥ १२ ॥

कषायं वाऽथ निम्बस्य कटुतुम्बीरसं वचाम् ।

यथाविधि वमेद्धीमान्पक्तिशूलार्दितो नरः ॥ १३ ॥

विडङ्गं तण्डुलं व्योषं त्रिवृहन्ती सचित्रकम् ।

सर्वाण्येतानि संभृत्य श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत् ॥ १४ ॥

गुडेन मोदकान्कृत्वा भक्षयेत्प्रातरस्थितः ।

उष्णोदकानुपानं तु दद्यादग्निविवर्धनम् ॥ १५ ॥

जयेत्त्रिदोषजं शूलं परिणामसमुद्भवम् ।

इति विडङ्गाद्यो मोदकः ।

अथ नागरादिकल्कः—

नागरतिलगुडकल्कं पयसा संसाध्य यः पुमानद्यात् ।

उग्रं परिणतिशूलं सप्ताहाज्जयति चावश्यम् ॥ १६ ॥

इति नागरादिकल्कः ।

1. The first part of the paper discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions.

2. It then goes on to describe the various methods used to collect and analyze data, including interviews, surveys, and focus groups.

3. The results of the study are presented in a series of tables and graphs, showing the distribution of responses across different categories.

4. Finally, the paper concludes with a discussion of the implications of the findings and suggestions for future research.

अथैरण्डादिभस्मयोगः—

एरण्डवह्निशम्बूकवर्षाभूगोक्षुरं समम् ।

अन्तर्वर्गध्वा पिबेदद्भिरुष्णाभिः पक्तिशूलजित् ॥ १७ ॥

इत्यैरण्डादियोगः ।

अथ शम्बूकभस्मयोगः—

शम्बूकजं भस्मपीतं जलेनोष्णेन तत्क्षणात् ।

पक्तिजं विनिहन्त्येतच्छूलं विष्णुरिवासुरान् ॥ १८ ॥

इति शम्बूकभस्मयोगः ।

अथ शम्बूकादिगुटिका—

शम्बूकं त्र्यूषणं चैव पञ्चैव लवणानि च ।

सर्मांशां गुटिकां कृत्वा कलम्बुकरसेन वै ॥ १९ ॥

प्रातर्मोजनकाले च भक्षयेच्च यथाबलम् ।

शूलाद्विमुच्यते जन्तुः सहसा परिणामजात् ॥ २० ॥

इति शम्बूकादिगुटिका ।

अथ शम्बूकाद्यो मोदकः—

पलानि त्रीणि शम्बूकालोहचूर्णात्पलद्वयम् ।

रसाञ्जनात्पलं चैकं लोहसिंहाणकात्पलम् ॥ २१ ॥

सर्वैः समा शर्करा च मधुना च परिप्लुतम् ।

सर्षपेतत्समाहृत्य मोदकान्कारयेद्विषकृ ॥ २२ ॥

तान्मक्षयेत्पयत्नेन शूले गुल्मे गुदामये ।

विशेषतः पक्तिशूले शोथे पाण्डूदरे भ्रमे ॥ २३ ॥

दुर्नामिकासे कृच्छ्रे च प्रमेहाश्मरिवृद्धिषु ।

अग्निमान्द्ये गुदभ्रंशे पीनसेऽर्धावभेदके ॥ २४ ॥

इति शम्बूकाद्यो मोदकः ।

अथ कृष्णाद्यं लोहम्—

कृष्णामयालोहचूर्णं विलिहन्मधुसर्पिषा ।

परिणाममयं शूलं सद्यो हन्ति सुदारुणम् ॥ २५ ॥

इति कृष्णाद्यं लोहम् ।

THE
JOURNAL
OF
THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
OF GREAT BRITAIN AND IRELAND
VOLUME 10
PART 1
1880
LONDON
PUBLISHED BY THE INSTITUTE
1880

अथ पथ्याद्यं लोहम्—

पथ्या लोहरजः शुण्ठी तच्चूर्णं मधुसर्पिषा ।

परिणामरुजं हन्ति वातपित्तकफात्मिकाम् ॥ २६ ॥

इति पथ्याद्यं लोहम् ।

अथ त्रिफलाद्यं लोहम्—

त्रिफलालोहचूर्णं च यष्टीमधुकमेव च ।

मधुसर्पिर्युतं लीढ्वा शूलं हन्ति त्रिदोषजम् ॥ २७ ॥

इति त्रिफलाद्यं लोहम् ।

अथ चतुःसमो लोहः—

अभ्रं ताम्रं रसो लोहं प्रत्येकं मारितं पलम् ।

सर्वमेतत्समाहृत्य विपचेत्कुशलो मिषकृ ॥ २८ ॥

आग्नेये पलद्वादशके दुग्धे शतपले वरे ।

पक्त्वा तत्र क्षिपेच्चूर्णं सुपूतं घनतां नयेत् ॥ २९ ॥

विडङ्गं त्रिफलावह्नित्रिकटूनां तथैव च ।

क्षिप्त्वा पलोन्मितानेतान्यथा संमिश्रतां नयेत् ॥ ३० ॥

ततः पिष्ट्वा शुभे माण्डे स्थापयेच्च विचक्षणः ।

आत्मनः शोमने घस्त्रे पूजयित्वा रविं गुरुम् ॥ ३१ ॥

घृतेन मधुनाऽऽमर्द्य भक्षयेन्माषकादिकम् ।

अष्टौ माषाः क्रमाद्यावन्मात्रां संस्तम्भयेत्ततः ॥ ३२ ॥

अन्नपानं च दुग्धेन नारीकेलोदकेन वा ।

जीर्णशर्करशाल्यन्नमुद्रमांसरसादयः ॥ ३३ ॥

रसानामविरुद्धानि यान्यन्यान्यपि भक्षयेत् ।

हृच्छूलं पार्श्वशूलं च सामवातं कटिग्रहम् ॥ ३४ ॥

गुल्मशूलं च सर्वत्र यकृत्प्लीहोर्विशेषतः ।

अग्निमान्द्यं क्षयः कुष्ठं श्वासः कासो विचर्चिका ॥ ३५ ॥

अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं च योगेनानेन शाम्यति ।

इति चतुःसमो लोहः ।

अथ सामुद्रायं चूर्णम्—

सामुद्रं सैन्धवं क्षारौ रुचकं रोमकं विडम् ॥ ३६ ॥

दन्ती लोहरजः किट्टं त्रिवृत्सूरणकं समम् ।

दधिगोमूत्रपयसा मन्दपावकपाचितम् ॥ ३७ ॥



तद्यथाग्निबलं चूर्णं पिबेदुष्णेन वारिणा ।
जीर्णाजीर्णे च भुञ्जीत मांसादिघृतसाधितम् ॥ ३८ ॥
नाभिशूलं च हृच्छूलं गुल्मप्लीहकृतं च यत् ।
विद्वध्यष्टालिकातङ्कं श्लेष्मजं वातजं तथा ॥ ३९ ॥
अन्नद्रवं जरत्पित्तमजीर्णं ग्रहणीमपि ।
अन्यान्यपि च शूलानि हन्त्येतन्नात्र संशयः ॥ ४० ॥
परिणामजशूलस्य विशेषेणेदमौषधम् ।

अत्र दन्त्यादीनां प्रत्येकं तच्चूर्णं चतुर्गुणम् ।

इति सामुद्राद्यं चूर्णम् ।

अथ भीममण्डूरवटकः—

यवक्षारकणाशुण्ठीकोलग्रन्थिकचित्रकात् ॥ ४१ ॥
प्रत्येकं पलमादाय प्रस्थं लोहस्य किट्टतः ।
शनैः पचेद्व्यःपात्रे यावद्दर्वीप्रलेपनम् ॥ ४२ ॥
दत्त्वाऽष्टगुणगोमूत्रं किट्टाच्छुद्धाद्विचक्षणैः ।
ततोऽक्षमात्रान्वटकान्योजयेत्सप्तरात्रतः ॥ ४३ ॥
आदिमध्यावसानेषु भोजनस्योचितस्य वै ।
स भीमवटको ह्येष परिणामरुगन्तकः ॥ ४४ ॥

इति भीममण्डूरवटकः ।

अथ शतावरीमण्डूरः—

संशौध्य चूर्णितं कृत्वा मण्डूरस्य पलायकम् ।
शतावरीरसस्याष्टौ दध्नाश्च पयसस्तथा ॥ ४५ ॥
पलान्यादाय चत्वारि तथा गव्यस्य सर्पिषः ।
विपचेत्सर्वमेकस्थं यावत्पिण्डत्वमाप्नुयात् ॥ ४६ ॥
सिद्धं तु मक्षयेन्मध्ये प्रान्ते भुक्तस्य चाग्रतः ।
वातात्मकं पित्तमवं शूलं च परिणामजम् ॥ ४७ ॥
निहन्त्येव हि योगोऽयं मण्डूरस्य न संशयः ।
दुग्धे निर्वापणं कार्यं यद्वा बहुसुतारसे ॥ ४८ ॥
अथ वा चोमयोरेव लोहकिट्टस्य सप्तधा ।
रसो गन्धः शुभः पाके वर्तिः स्याद्यदि मर्दनात् ॥ ४९ ॥

1. Introduction

2. Methodology

3. Results

The first part of the study was a literature review of the existing research on the topic. This was followed by a series of experiments designed to test the hypotheses. The results of the experiments are presented in the following sections. The first experiment was a 2x2 factorial design with two independent variables: Condition and Group. The dependent variable was Performance. The results showed that there was a significant interaction between the two variables.

4. Discussion

5. Conclusion

6. References

The second part of the study was a series of experiments designed to test the hypotheses. The first experiment was a 2x2 factorial design with two independent variables: Condition and Group. The dependent variable was Performance. The results showed that there was a significant interaction between the two variables. The second experiment was a 3x3 factorial design with two independent variables: Condition and Group. The dependent variable was Performance. The results showed that there was a significant interaction between the two variables.

7. Appendix

8. Tables

The third part of the study was a series of experiments designed to test the hypotheses. The first experiment was a 2x2 factorial design with two independent variables: Condition and Group. The dependent variable was Performance. The results showed that there was a significant interaction between the two variables. The second experiment was a 3x3 factorial design with two independent variables: Condition and Group. The dependent variable was Performance. The results showed that there was a significant interaction between the two variables. The third experiment was a 4x4 factorial design with two independent variables: Condition and Group. The dependent variable was Performance. The results showed that there was a significant interaction between the two variables.

तदा पाकं विजानीयान्मण्डूरस्य न संशयः ।

इति शतावरीमण्डूरः ।

अथ तारामण्डूरवटको वृन्दात्—

विडङ्गं चित्रकं चव्यं त्रिफलाऽयूषणानि च ॥ ५० ॥

नवभागानि चैतानि लोहकिङ्कसमानि च ।

गोमूत्रं द्विगुणं दत्त्वा मूत्राद्द्विगुणको गुडः ॥ ५१ ॥

शनेर्मुद्गग्निना पक्त्वा सुसिद्धं पिण्डतां गतम् ।

सिद्धं तु भोजनस्याऽऽदौ मध्ये प्रान्तेऽपि मक्षयेत् ॥ ५२ ॥

योगोऽयं शमयत्याशु शूलं तु परिणामजम् ।

कामलां पाण्डुरोगं च शोथं मेदोनिलार्शसाम् ॥ ५३ ॥

शूलार्तानां कृपाहेतोस्तारया प्रकटीकृतः ।

इति तारामण्डूरवटको वृन्दात् ।

अथ लोहगुग्गुलुः—

त्रिफला मुस्तकं व्षोषं विडङ्गं पौष्करं वचा ॥ ५४ ॥

चित्रकं मधुकं चैव पलांशं श्लक्ष्णचूर्णितम् ।

अयोमस्म पलान्यष्टौ गुग्गुलोस्तावदेव तु ॥ ५५ ॥

सर्पिषा मेलयित्वाऽथ कर्षमात्रं वटीकृतम् ।

अद्यादमुं पिबेत्कोष्णं वारिशूलाद्विमुच्यते ॥ ५६ ॥

जीर्णान्नसंभवात्पाण्डोः कामलाया हलीमकात् ।

इति लोहगुग्गुलुः ।

अन्नद्रव्याख्ये शूले तु न तावत्स्वास्थ्यमुच्यते ॥ ५७ ॥

यावत्कटुकपीताम्लमन्नं न च्छर्दयेद्द्रवम् ।

अन्तमात्रे जरत्पित्ते शूलमाशु विनाशयेत् ॥ ५८ ॥

पित्तान्तं वमनं कृत्वा कफान्तं च विरेचनम् ।

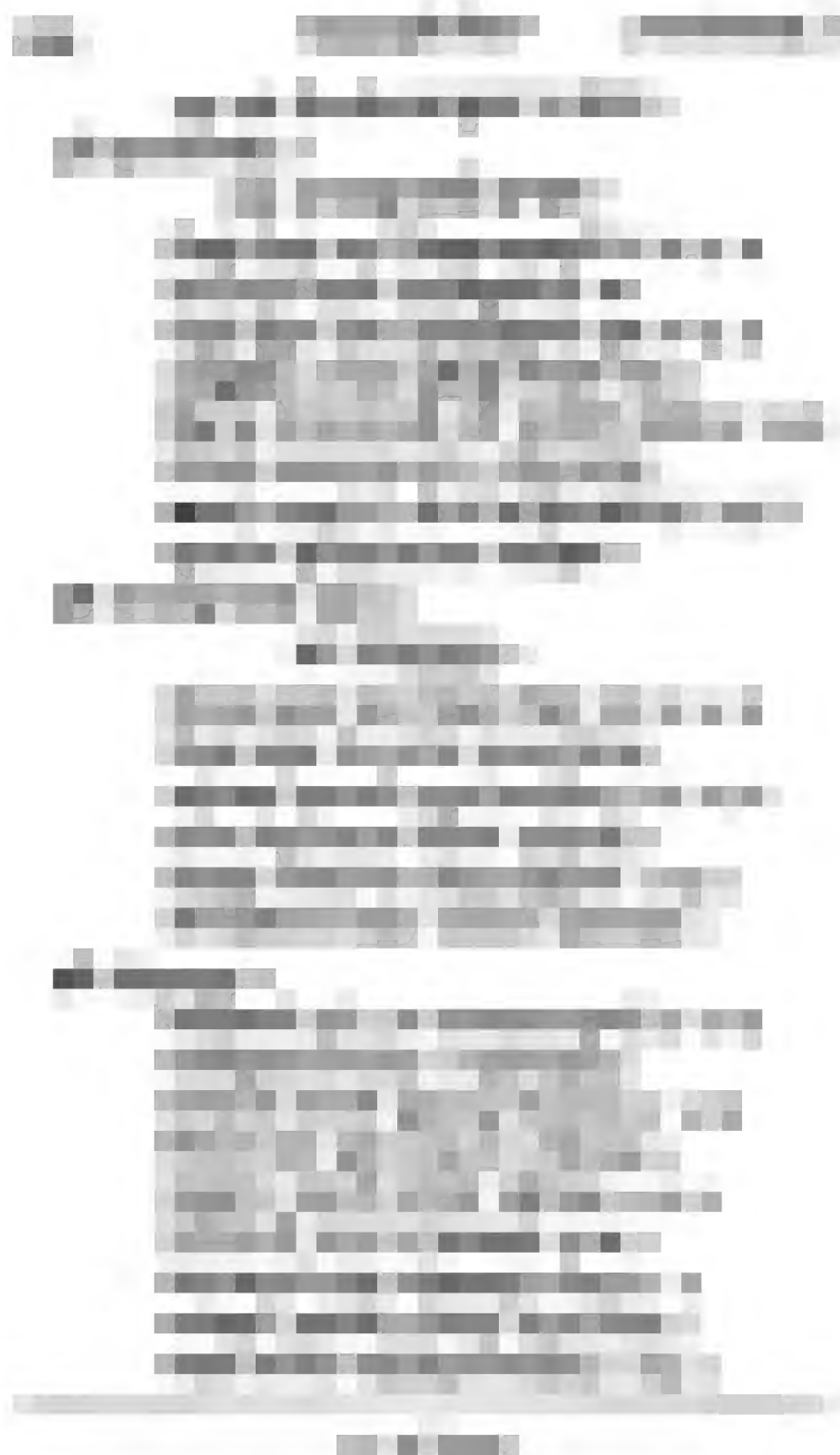
अन्नद्रवे च तत्कार्यं जरत्पित्ते यदीरितम् ॥ ५९ ॥

जरत्पित्तेऽपि तत्पथं प्रोक्तमन्नद्रवे तु यत् ।

आमपक्वाशये शुद्धे गच्छेदन्नद्रवः शमम् ६० ॥

माषोण्डरीं सलवणां सुस्विन्नां तैलपाचिताम् ।

तादृशीं सर्पिषा खादेदन्नद्रवनिपीडितः ॥ ६१ ॥



धात्रीफलमवं चूर्णमथश्चूर्णसमन्वितम् ।
 यष्टीचूर्णेन वा युक्तं लिह्यात्क्षौद्रेण तद्गदे ॥ ६२ ॥
 श्यामाकतण्डुलैः सिद्धं सिद्धं कोद्रवतण्डुलैः ।
 प्रियङ्गुतण्डुलैः सिद्धं पायसं ससितं हितम् ॥ ६३ ॥
 गौडिकं सूरणं कन्दं कूष्माण्डमपि भक्षयेत् ।
 कलाययवसक्तून्वा सक्तून्वा लाजसंभवान् ॥ ६४ ॥

गौडिकं गुडेन संस्कृतम् ।

अथ गुडाद्यं लोहम्—

गोधूममण्डकं तत्र सर्पिषा गुडसंयुतम् ।
 ससितं शीतदुग्धेन परं यत्नं समाचरेत् ॥ ६५ ॥
 अन्नद्रवे जरत्पित्ते वह्निर्मन्दो भवेद्यतः ।
 तस्मादत्रान्नपानानि मात्राहीनेन कारयेत् ॥ ६६ ॥
 कलाययवगोधूमाः श्यामाकाः कोरदूषकाः ।
 राजमाषाश्च माषाश्च कुलत्थाः कङ्कुशालयः ॥ ६७ ॥
 *दधिलुसरसं क्षीरं सर्पिर्गव्यं समाहिषम् ।
 वास्तूकं कारवेहं च कर्कोटकफलानि च ॥ ६८ ॥
 बर्हिणो हरिणा मत्स्या रोहिताद्याः कपिञ्जलाः ।
 एतस्मिन्नामये शस्ता मता मुनिचिकित्सकैः ॥ ६९ ॥
 गुडामलकपथ्यानां चूर्णं प्रत्येकशः पलम् ।
 त्रिपलं लोहकिट्टस्य तत्सर्वं सधुसर्पिषा ॥ ७० ॥
 समालोड्य समश्नीयादक्षमात्रप्रमाणतः ।
 आदिमध्यावसानेषु भोजनस्य निहन्ति तत् ॥ ७१ ॥
 अन्नद्रवं जरत्पित्तं परिणामरुजं तथा ।

इति गुडाद्यं लोहम् ।

अथ त्रिनेत्राख्यो रसः—

टक्कणं शृङ्गबेरं च स्वर्णशुल्बं मृतं रत्नम् ॥ ७२ ॥
 आर्द्रकस्य रसैश्चाऽऽर्द्रं मर्दितं स्रावसंपुटे ।
 रुद्ध्वा पुटे पचेन्मन्दं त्रिनेत्राख्यो रसो भवेत् ॥ ७३ ॥

* क. दध्नः लुप्तः प्रकृतो रसो यस्य तत् । क्षीरदधियुक्तं क्षीरमित्यर्थः ।



100

The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. It highlights the journal's role in providing
 a platform for the dissemination of research findings and
 the advancement of the discipline. The second part of the
 paper focuses on the journal's commitment to diversity and
 inclusion, emphasizing the importance of representing a
 wide range of perspectives and experiences in management
 education research. The third part of the paper discusses the
 journal's efforts to promote the use of its content in the
 classroom, highlighting the importance of staying current
 in the field of management education. The fourth part of
 the paper discusses the journal's commitment to ethical
 research practices, emphasizing the importance of
 maintaining the integrity of the research process. The fifth
 part of the paper discusses the journal's commitment to
 environmental sustainability, highlighting the importance of
 reducing the journal's carbon footprint. The sixth part of the
 paper discusses the journal's commitment to social
 responsibility, emphasizing the importance of using the
 journal's resources to benefit the community. The seventh
 part of the paper discusses the journal's commitment to
 transparency, highlighting the importance of providing
 clear information about the journal's operations. The eighth
 part of the paper discusses the journal's commitment to
 innovation, highlighting the importance of exploring new
 ways to deliver content and engage with readers. The ninth
 part of the paper discusses the journal's commitment to
 collaboration, highlighting the importance of working
 together to advance the field of management education.
 The tenth part of the paper discusses the journal's
 commitment to excellence, highlighting the importance of
 maintaining the highest standards of quality in all aspects
 of the journal's operations.

Age Group	Percentage
18-24	85%
25-34	75%
35-44	65%
45-54	55%
55-64	45%
65-74	35%
75+	25%

100

Abstract



माषैकं मधुसर्पिभ्यां लीढ्वा चूर्णमिदं लिहेत् ।
हिङ्गुसैन्धवजीराणां पक्तिशूलाद्विमुच्यते ॥ ७४ ॥

इति त्रिनेत्राण्यो रसः ।

आनाहो गौरवं छर्दिज्वरस्तृष्णा भ्रमोऽरुचिः ।
कृशत्वं बलहानिश्च वेदनातिप्रवर्तनम् ॥ ७५ ॥
उपद्रवा दशैवेते पक्तिशूलस्य दारुणाः ।
माषादि शिम्बिधान्यानि मद्यानि वनिता हिमम् ॥ ७६ ॥
आतपं सरणिं क्रोधं शुचं संधानमम्लकम् ।
वर्जयेत्पक्तिशूलार्तस्तथाऽजीर्णं तिलानपि ॥ ७७ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां परिणामशूलनिदानचिकित्साकथनं नाम
षष्ठनवतितमस्तरङ्गः ॥ ९९ ॥

अथ षण्णवतितमस्तरङ्गः ।

अथ वेगग्रहनिदानम्—

वातविण्मूत्रजृम्माश्रुक्षवोद्गारवमीन्द्रियैः ।
क्षुत्तृष्णोच्छ्वासनिद्राणां धृत्योदावर्तसंभवः ॥ १ ॥
वातमूत्रपुरीषाणां सङ्गो ध्मानं क्लमो रुजः ।
जठरे वातजाश्चान्ये रोगाः स्युर्वातनिग्रहात् ॥ २ ॥
आटोपशूलौ परिकर्तिका च सङ्गः पुरीषस्य तथोर्ध्ववातः ।
पुरीषमास्यादथ वा निरेति पुरीषवेगेऽभिहते नरस्य ॥ ३ ॥
वस्तिमेहनयोः शूलं मूत्रकृच्छ्रं शिरोरुजा ।
विनामो वङ्क्षणानाहः स्याल्लिङ्गं मूत्रनिग्रहे ॥ ४ ॥
मन्यामलस्तम्भशिरोविकारा जृम्भोपघातात्पवनात्मकाः स्युः ।
तथाऽक्षिनासावदनामयाश्च भवन्ति तीव्राः सह कर्णरोगैः ॥ ५ ॥
आनन्दजं वाऽप्यथ शोकजं वा नेत्रोदकं प्राप्तममुश्चतो हि ।
शिरोगुरुत्वं नयनामयाश्च भवन्ति तीव्राः सह पीनसेन ॥ ६ ॥
मन्यास्तम्भः शिरःशूलमर्दितार्धाविभेदकौ ।
इन्द्रियाणां च दौर्बल्यं क्षवथोः स्याद्विधारणात् ॥ ७ ॥
कण्ठास्यपूर्णत्वमतीव तोदः कूजश्च वायोरथ वाऽप्रवृत्तिः ।
उद्गारवेगेऽभिहते भवन्ति जन्तोर्विकाराः पवनप्रसृताः ॥ ८ ॥

The first part of the paper discusses the importance of the study. It highlights the need for a comprehensive understanding of the subject matter. The second part of the paper describes the methodology used in the study. It details the data collection process and the analysis techniques employed. The third part of the paper presents the results of the study. It shows the findings of the research and discusses their implications. The fourth part of the paper concludes the study. It summarizes the main points and offers suggestions for future research.

CONCLUSION

The study has shown that the proposed method is effective in solving the problem. It has been found that the method can be used to solve a wide range of problems. The results of the study are consistent with the findings of previous research. The study has also identified some limitations of the method. These limitations can be overcome by further research. The study has provided a valuable contribution to the field. It has shown that the proposed method is a promising approach to solving the problem. The study has also provided a detailed description of the methodology used in the study. This description can be used by other researchers to replicate the study. The study has provided a comprehensive understanding of the subject matter. It has highlighted the need for a comprehensive understanding of the subject matter. The study has also provided a detailed description of the methodology used in the study. This description can be used by other researchers to replicate the study. The study has provided a valuable contribution to the field. It has shown that the proposed method is a promising approach to solving the problem. The study has also provided a detailed description of the methodology used in the study. This description can be used by other researchers to replicate the study.

कण्ठूकोठारुचिव्यङ्गशोफपाण्ड्वामयज्वराः ।

कुष्ठहृत्तासवीसर्पाश्छर्दिनिग्रहजा गदाः ॥ ९ ॥

मूत्राशये वै गुदमुष्कयोश्च शोफो रुजा मूत्रविनिग्रहश्च ।

शुक्राश्मरी तत्स्रवणं भवेच्च ते ते विकारा विहते तु शुके ॥ १० ॥

तन्द्राङ्गमर्दावरुचिः श्रमश्च क्षुधोऽभिधातात्कृशता च दृष्टेः ।

कण्ठास्यशोषः श्रवणावरोधस्तृष्णानिरोधान्दृढये व्यथा च ॥ ११ ॥

श्रान्तस्य निःश्वासविनिग्रहेण

हृद्रोगमोहावथ वाऽपि गुल्मः ।

जृम्माऽङ्गमर्दोऽक्षिशिरोभिजाड्यं

निद्राभिघातादथ वाऽपि तन्द्रा ॥ १२ ॥

इति वेगग्रहनिदानम् ।

अथोदावर्तनिदानम्—

वायुः कोष्ठानुगो रूक्षैः कषायकटुतिक्तकैः ।

मोजनैः कुपितः सद्य उदावर्तान्करोति हि ॥ १३ ॥

वातमूत्रपुरीषाणां कफमेदोवहानि वै ।

स्रोतांस्युदावर्तयति पुरीषं चातिवर्तयेत् ॥ १४ ॥

ततो हृद्द्विस्तिशूलार्तो हृत्तासारतिपीडितः ।

वातमूत्रपुरीषाणि कृच्छ्रेण लभते नरः ॥ १५ ॥

कासश्वासप्रतिश्यायदाहमोहतृषाज्वरान् ।

वमिहिक्काशिरोरोगमनःश्रवणविभ्रमान् ।

बहूनन्यांश्च लभते विकारान्वातकोपजान् ॥ १६ ॥

आमं शकृद्वा निचितं क्रमेण भूयो विवृद्धं विगुणानिलेन ।

प्रवर्तमानं न यथास्वमेनं विकारमानाहमुदाहरन्ति ॥ १७ ॥

तस्मिन्मवन्त्यामसमुद्भवे तु तृष्णाप्रतिश्यायशिरोविदाहाः ।

आमाशये शूलमथो गुरुत्वं हेत्स्तम्भ उद्गारविघातनं च ॥ १८ ॥

स्तम्भः कटीपृष्ठपुरीषमूत्रशूलोऽथ मूर्छा शकृतश्च छर्दिः ।

श्वासश्च पक्काशयजे भवन्ति तथाऽलसोक्तानि च लक्षणानि ॥ १९ ॥

तृष्णाछर्द्यदितं क्लिष्टं क्षीणं शूलैरुपद्रुतम् ।

शकृद्भ्रमन्तं मतिमानुदावर्तिनमुत्सृजेत् ॥ २० ॥

इत्युदावर्तनिदानम् ।

The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that proper record-keeping is essential for ensuring the integrity of the financial data and for facilitating the audit process. The document also highlights the need for transparency and accountability in all financial reporting.

The second part of the document provides a detailed overview of the accounting system used by the organization. It describes the various components of the system, including the general ledger, subsidiary ledgers, and the trial balance. The document also explains how the system is used to record and process transactions.

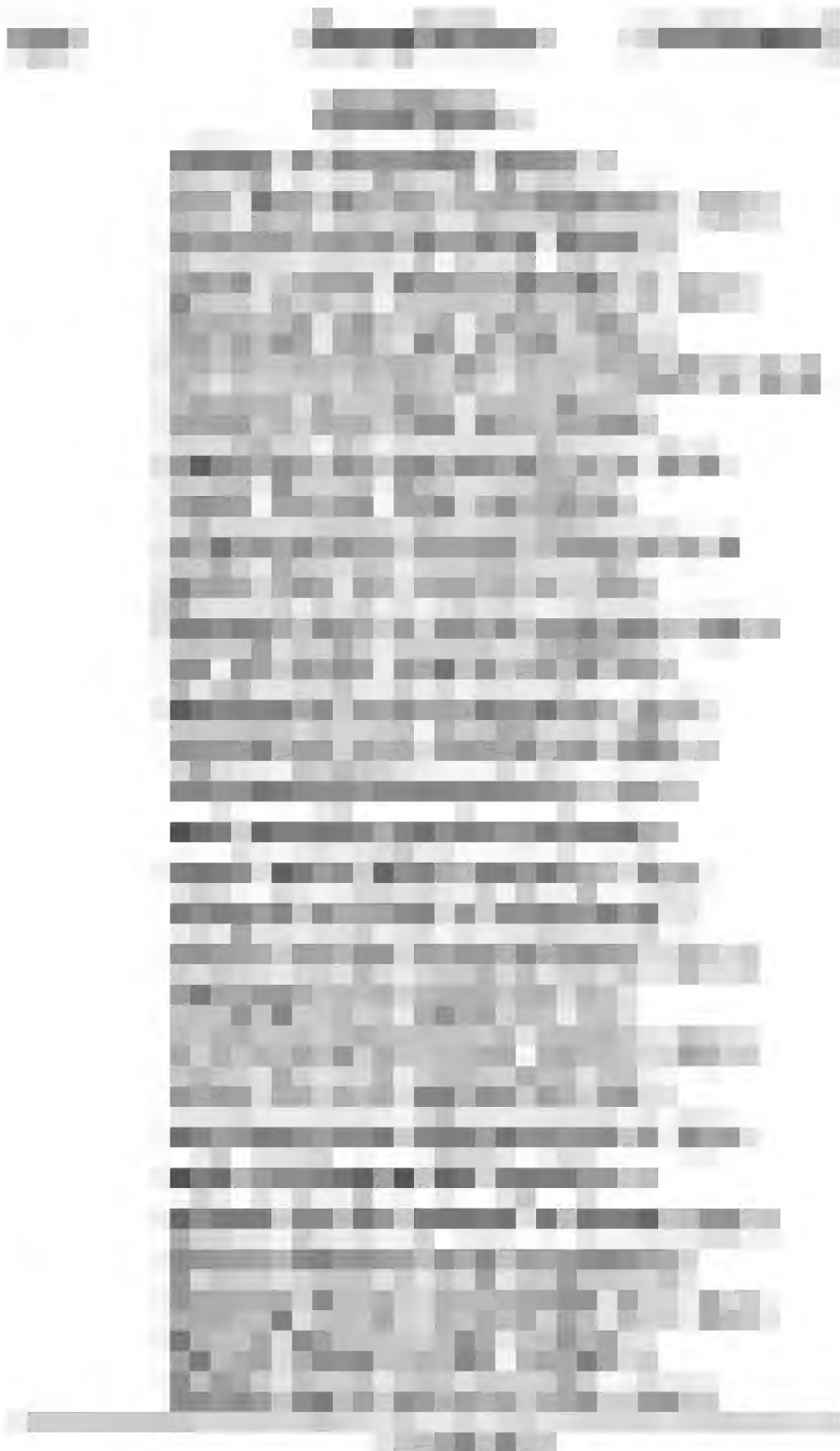
The third part of the document discusses the internal controls that are in place to ensure the accuracy and reliability of the financial data. It describes the various procedures and policies that are followed to prevent errors and fraud, and to ensure that all transactions are properly recorded and processed.

The fourth part of the document provides a detailed overview of the financial statements that are prepared by the organization. It describes the various components of the statements, including the balance sheet, income statement, and cash flow statement. The document also explains how the statements are used to provide information to management and to the public.

The fifth part of the document discusses the various methods and techniques used to analyze the financial data. It describes the various ratios and metrics that are used to evaluate the organization's financial performance, and it explains how these metrics are used to identify trends and to make informed decisions. The document also discusses the various methods used to forecast future financial performance.

अथैतच्चिकित्सा-

सर्वेष्वेतेषु च भिषगुदावर्तेषु कृत्स्नशः ।
 वायोः क्रिया विधातव्या स्वमार्गप्रतिपत्तये ॥ २१ ॥
 आस्थापनं मारुतजे स्निग्धस्विन्नं विशेषतः ।
 पुरीषजे तु कर्तव्यो विधिरानाहिकोदितः ॥ २२ ॥
 सौवर्चलाढ्यां मदिरां मूत्रे त्वमिहते पिबेत् ।
 एलां वाऽप्यथ भस्त्वन्नं क्षीरं वाऽथ वचाम्बु वा ॥ २३ ॥
 एवार्बुबीजं तोयेन पिबेद्वा लवणान्वितम् ।
 पञ्चमूलीशृतं क्षीरं द्राक्षारसमथापि वा ॥ २४ ॥
 यवक्षारं सितायुक्तं पिबेद्वा मृदुचूर्णितम् ।
 बरीकूष्माण्डयोस्तोयं सितायुक्तं पिबेदथ ॥ २५ ॥
 मूषकस्य विशा लेपो बस्तेरुपरि वा चरेत् ।
 किंशुकानां प्रलेपो वा कवोष्णो मूत्ररोधहा ॥ २६ ॥
 अत्र सर्वं प्रयुञ्जीत मूत्रकृच्छ्राश्मरीविधिम् ।
 स्नेहस्वेदैरुदावर्तं जृम्भाजं समुपाचरेत् ॥ २७ ॥
 अश्रुमोक्षोऽश्रुजे कार्यः स्विन्नस्निग्धस्य देहिनः ।
 मरिचाद्यञ्जनैर्धूमैर्निमेषाद्यवलोकनैः ॥ २८ ॥
 क्षवजे क्षवयन्त्रेण घ्राणस्थेनाऽऽनयेत्क्षवम् ।
 उद्गारजे क्रमोपेतं स्नेहिकं धूममाचरेत् ॥ २९ ॥
 मक्षयेदुचकं साद्रं खण्डं वा मथितान्वितम् ।
 वम्याघातं यथादोषं नस्यस्नेहादिभिर्जयेत् ॥ ३० ॥
 बस्तिशुद्धिकरश्चायं चतुर्गुञ्जाजलं पयः ।
 आवारिनाशात्कथितं पीतवन्तं प्रकामतः ॥ ३१ ॥
 रमयेयुः प्रिया नार्यः शुक्रोदावर्तिनं नरम् ।
 अन्नाभ्यङ्गावगाहाश्च मदिराश्चरणायुधाः ॥ ३२ ॥
 शालिः पयोनिरूहाश्च हितं मैथुनमेव च ।
 क्षुद्धिघाते हितं स्निग्धं वृष्यमल्पं च भोजनम् ॥ ३३ ॥
 तृष्णाघाते पिबेन्मन्थं यवागूं स्वादुशीतलाम् ।
 रसेनाद्यात्तु विश्रान्तः श्रमश्वासादितो नरः ॥ ३४ ॥
 निद्राघाते पिबेद्दुग्धं माहिषं रजनीमुखे ।
 तिलतैलेन संमृज्य भूतले शयनं चरेत् ॥ ३५ ॥



उदावर्तिनमभ्यक्तं स्निग्धगात्रमुपाचरेत् ।
 वर्तिकास्थापनस्वेदवस्तिरेचनकर्मणा ॥ ३६ ॥
 हरीतकीयवक्षारपीलूनि तृ (त्रि) वृता तथा ।
 घृतैश्चूर्णं त्विदं पेयं ह्युदावर्तप्रशान्तये ॥ ३७ ॥
 इति हरीतक्यादिचूर्णम् ।

अथ द्विरुत्तरं चूर्णम्—
 हिङ्गुकुष्ठवचास्वर्जिविडं चेति द्विरुत्तरम् ।
 पीतं मद्येन तच्चूर्णमुदावर्तहरं परम् ॥ ३८ ॥
 इति द्विरुत्तरं चूर्णम् ।

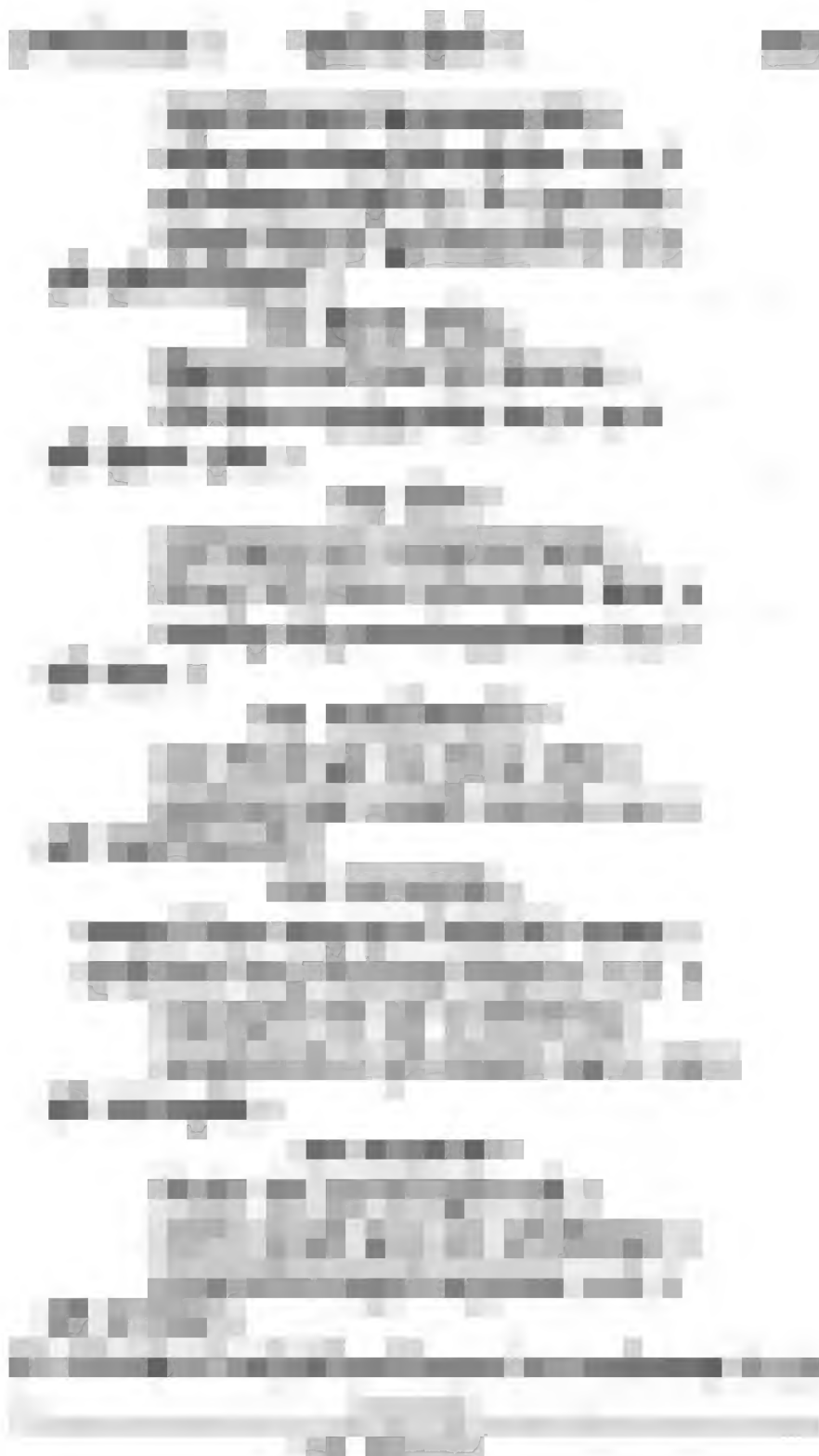
अथ प्रलेपः—
 वल्मीकमुत्करञ्जस्य त्वङ्गमूलफलपल्लवम् ।
 सिद्धार्थं चेति पिष्टानां मूत्रेणाऽऽलेपनं हितम् ॥
 उदावर्तेषु सर्वेषु सम्यग्वातानुलोमनम् ॥ ३९ ॥
 इति प्रलेपः ।

अथ मदनादिफलवर्तिः—
 मदनं पिप्पली कुष्ठं वचा गौराश्च सर्षपाः ।
 गुडक्षीरसमायुक्ता फलवर्तिः प्रशस्यते ॥ ४० ॥
 इति मदनादिफलवर्तिः ।

अथ नाराचचूर्णम्—
 खण्डपलं त्रिवृता सममुपकुल्या कर्षसंमितं श्लक्ष्णम् ।
 प्राग्भोजनस्य समधु विडालपदकं लिहेत्प्राज्ञः ॥ ४१ ॥
 एतद्वाढपुरीषे पित्ते कफे च विनियोज्यम् ।
 स्वादुर्नृपयोग्योऽयं चूर्णं नाराचको नाम्ना ॥ ४२ ॥
 इति नाराचचूर्णम् ।

अथ नाराचरसः—
 जैपालेन समैः सूतव्योषट्कृणगन्धकैः ।
 नाराचः स्याद्रसो ह्यस्य माषः सर्पिःक्षितायुतः ।
 हन्त्युदावर्तमानाहमुदरानाहगुल्मकम् ॥ ४३ ॥
 इति नाराचरसः ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां वेगग्रहोदावर्तनिदानचिकित्साकथनं नाम षण्णवतितमस्तरङ्गः ॥ ९६ ॥



अथ सप्तनवतितमस्तरङ्गः ।

अथाऽऽनाहोपक्रमः—

‘आटोप’ इत्यादि निदानमुदावर्ताधिकारोक्तम् ।

अथ चिकित्सोच्यते—

अथ वचायं चूर्णम्—

वचामयाचित्रकयावशूकान्सपिप्पलीकातिविषान्सकुष्ठान् ।

उष्णाम्बुनाऽऽनाहविमूढवातान्पीत्वा जयेदाशु रसौदनाशी ॥ १ ॥

इति वचायं चूर्णम् ।

रामठधूमविडव्योषगुडमूत्रैर्विपाचिता ।

गुवेऽङ्गुष्ठसमावर्तिर्विधेयाऽऽनाहगूलनुत् ॥ २ ॥

इति फलवर्तिः ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यामानाहचिकित्साकथनं नाम सप्तनवति-

तमस्तरङ्गः ॥ ९७ ॥

अथाष्टनवतितमस्तरङ्गः ।

अथ गुल्मनिदानम्—

दुष्टा वातादयोऽत्यर्थं मिथ्याहारविहारतः ।

कुर्वन्ति पञ्चधा गुल्मं कोष्ठान्ते ग्रन्थिरूपिणम् ॥ १ ॥

तस्य पञ्चविधं स्थानं पार्श्वे हृन्नाभिवस्तयः ।

हृन्नाभ्योरन्तरे ग्रन्थिः संचारी यदि वाऽचलः ॥ २ ॥

वृत्तश्चयोऽपचयवान्स गुल्म इति कीर्त्यते ।

स व्यस्तैर्जायते दोषैः समस्तैरपि चोच्छ्रितैः ।

पुरुषाणां तथा स्त्रीणां ज्ञेयो रक्तेन चापरः ॥ ३ ॥

उद्गारबाहुल्यपुरीषबन्धं तृप्त्यक्षमत्वान्त्रविकूजनानि ।

आटोपमाध्मानमपक्तिशक्तिरासन्नगुल्मस्य वदन्ति चिह्नम् ॥ ४ ॥

अरुचिः कृष्णविण्मूत्रं वाततान्त्रविकूजनम् ।

आनाहश्चोर्ध्ववातत्वं सर्वगुल्मेषु लक्ष्येत् ॥ ५ ॥

रूक्षान्नपानं विषमातिमात्रं विचेष्टनं वेगविनिग्रहश्च ।

शोकोऽमिघातोऽतिमलक्ष्यश्च निरन्नता चानिलगुल्महेतुः ॥ ६ ॥

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

यः स्थानसंस्थानरुजाविकल्पं विद्धवातसङ्गं गलवक्त्रशोषम् ।
 श्यावारुणत्वं शिशिरज्वरं च हृत्कुक्षिपाश्र्वासशिरोरुजं च ॥ ७ ॥
 करोति जीर्णोऽभ्यधिकं प्रकोपं भुक्ते मृदुत्वं समुपैति यश्च ।
 वातात्स गुल्मो न च तत्र रुक्षं कषायतिकं कटु चोपशेते ॥ ८ ॥
 कद्वम्लतीक्ष्णोष्णविदाहिरुक्षक्रोधातिमद्यार्कहुताशसेवा ।
 आमामिघातो रुधिरं च दुष्टं पैत्तस्य गुल्मस्य निमित्तमुक्तम् ॥ ९ ॥
 ज्वरः पिपासा वदनाङ्गरागः शूलं महज्जीर्यति भोजने च ।
 स्वेदो विदाहो व्रणवच्च गुल्मः स्पर्शासहः पैत्तिकगुल्मरूपम् ॥ १० ॥
 शीतं गुरुस्निग्धमचेष्टनं च संपूरणं प्रस्वपनं दिवा च ।
 गुल्मस्य हेतुः कफसंभवस्य सर्वस्तु दृष्टो निचयात्मकस्य ॥ ११ ॥
 स्तैमित्यशीतज्वरगात्रसादहृल्लासकासारुचिगौरवाणि ।
 शैत्यं रुगल्पा कठिनोन्नतत्वं गुल्मस्य रूपाणि कफात्मकस्य ॥ १२ ॥
 निमित्तलिङ्गान्युपलभ्य गुल्मे द्विदोषजे दोषबलाबलं च ।
 व्यामिश्रलिङ्गानपरांस्तु गुल्मौष्ठीनां दिशेदौषधकल्पनार्थम् ॥ १३ ॥
 महारुजं दाहपरीतमश्मवद्घनोन्नतं शीघ्रविदाहि दारुणम् ।
 मनःशरीराग्निबलापहारिणं त्रिदोषजं गुल्ममसाध्यमादिशेत् ॥ १४ ॥
 नवप्रसूताऽहितभोजना या या चाऽऽमगर्भं विसृजेदृतौ वा ।
 वायुर्हि तस्याः परिगृह्य रक्तं करोति गुल्मं सरुजं सदाहम् ॥ १५ ॥
 पैत्तस्य लिङ्गेन समानलिङ्गं विशेषणं चाप्यपरं निबोध ।
 यः स्पन्दते पिण्डित एव नाङ्गैश्चिरात्स शूलः समगर्भलिङ्गः ॥ १६ ॥
 सरौधिरः स्त्रीभव एव गुल्मो मासे व्यतीते दशमे चिकित्स्यः ॥ १७ ॥

श्वासशूलपिपासान्नविद्वेषो ग्रन्थिमूढता ।

जायते दुर्बलत्वं च गुल्मिनो मरणाय वै ॥ १८ ॥

संचितः क्रमशो गुल्मो महावस्तुपरिग्रहः ।

कृतशूलः शिरानद्धो यदा कूर्म इवोन्नतः ॥ १९ ॥

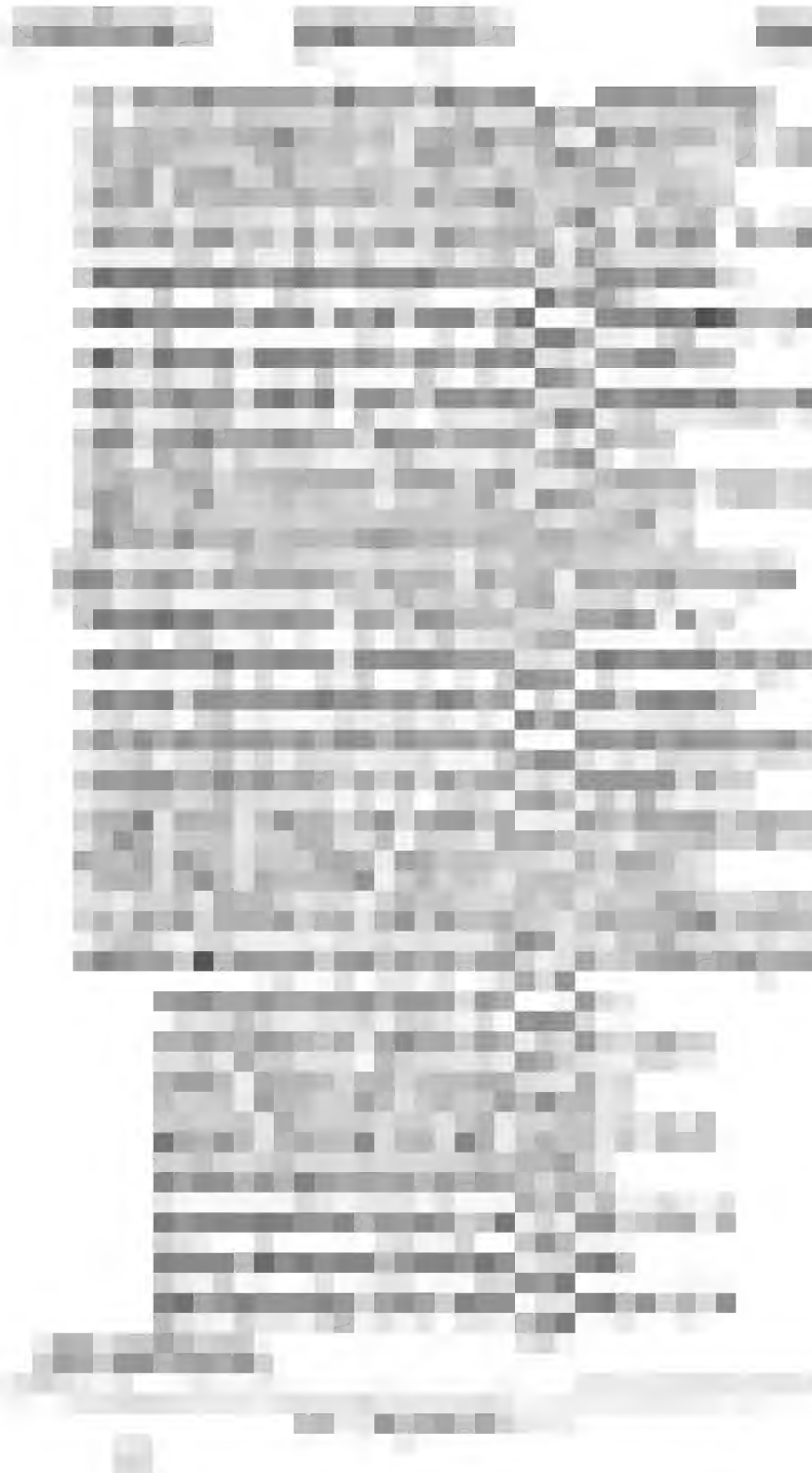
दौर्बल्यारुचिहृल्लासकासच्छर्द्यरुचिज्वरैः ।

तृष्णातन्द्राप्रतिश्यायैर्युज्यते न स सिध्यति ॥ २० ॥

गृहीत्वा संज्वरश्वासं छर्द्यतीसारपीडितम् ।

हृन्नाभिहस्तपादेषु शोथः कर्षति गुल्मिनम् ॥ २१ ॥

इति गुल्मनिदानम् ।



अथ चिकित्सा-

मातुलुङ्गाद्यवलेहः-

प्रागेव वातजे गुल्मे सुस्निग्धं स्वेदितं नरम् ।
रेचितं स्नेहरेकैश्च निरुहैः सानुवासनैः ॥ २२ ॥
उपाचरेद्भिषक्प्राज्ञो मात्राकालविशेषतः ।
मातुलुङ्गरसो हिङ्गु दाडिमं विडसैन्धवम् ।
सुरामण्डेन पातव्यं वातगुल्मप्रशान्तये ॥ २३ ॥

इति मातुलुङ्गाद्यवलेहः ।

अथ नागराद्यवलेहः-

नागरार्धपलं हिङ्गु द्वे पले लुञ्छितस्य च ।
तिलस्यैकं गुडपलं क्षीरेणोष्णेन पाययेत् ॥ २४ ॥
वातगुल्ममुदावर्तं योनिशूलं च नाशयेत् ।

इति नागराद्यवलेहः ।

अथ हिङ्गुपञ्चकचूर्णम्-

हिङ्गुसैन्धववृक्षाम्लराजिकानागरैः समैः ॥ २५ ॥
चूर्णं गुल्मप्रशमनं स्यादेतद्धिङ्गुपञ्चकम् ।

इति हिङ्गुपञ्चकचूर्णम् ।

अथ केतकीक्षारयोगः-

स्वर्जिकाकुष्ठसहितः क्षारः केतकिसंभवः ॥ २६ ॥
पीतस्तैलेन शमयेद्वातगुल्मं सुदारुणम् ।

इति केतकीक्षारयोगः ।

अथ चित्रकायं घृतम्-

वातगुल्मप्रतीकारे प्रकुप्यति यदा कफः ॥ २७ ॥
शस्तमुल्लेखनं तत्र चूर्णाद्याश्च कफापहाः ।
यदि कुप्यति वा पित्तं विरेकस्तत्र भेषजम् ॥ २८ ॥
दोषघ्नैरप्यशान्ते च गुल्मे शोणितमोक्षणम् ।
चित्रकव्योषसिन्धूत्थपृथ्वीकाचव्यदाडिमैः ॥ २९ ॥

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

— 100 —

दीप्यकग्रन्थिकाजाजीहृषाधान्यकैः समैः ।
 दध्यारनालबदरमूलकस्वरसैर्घृतम् ॥ ३० ॥
 पक्त्वा पिबेद्वातगुल्मदौर्बल्याटोपश्चूलनुत् ।
 इति चित्रकाद्यं घृतम् । इति वातगुल्मः ।

अथ पित्तगुल्मः—

पित्तगुल्मे त्रिवृच्चूर्णं पातव्यं त्रिफलाम्बुना ॥ ३१ ॥
 विरेचिताय ससितं कम्पिलं च समाक्षिकम् ।
 द्राक्षाभयारसं गुल्मे पैत्तिके सगुडं पिबेत् ॥ ३२ ॥
 सशर्करं वा विलिहेत्त्रिफलाचूर्णमुत्तमम् ।
 गुरुः कठिनसंस्थानो गुरुर्मांसोत्तराश्रयः ॥ ३३ ॥
 अग्निवर्णस्थिरश्चैव स्नुह्यर्को गुल्महन्मतः ।
 दाहशूलादिसंक्षोभस्वप्ननाशारुचिज्वरैः ॥ ३४ ॥
 विदह्यमानं जानीयाद्गुल्मं तमुपनाहयेत् ।
 क्षितः स्वपाणिना नाभिर्बहिश्चाङ्गेऽल्पवेदनः ॥ ३५ ॥
 श्यावो बस्तिनिभस्तत्र वेधः शोधनरोपणम् ।
 अध ऊर्ध्वं द्विधा वाऽपि स चेद्दोषः प्रपद्यते ॥ ३६ ॥
 द्वादशाहमुपेक्षेत रक्षितव्यो ह्युपद्रवात् ।
 शालिं गोछागदुग्धं च सितया मधुरं हिमम् ॥ ३७ ॥
 द्राक्षां परूषकं धात्रीं खर्जूरं दाडिमं सिताम् ।
 पथ्यार्थं पैत्तिके गुल्मे बलातोयं च पाययेत् ॥ ३८ ॥
 इति पित्तगुल्मः ।

अथ कफगुल्मः—

अथ क्षीरषट्पलकं घृतम्—

स्रोहोपनाहनस्वेदतीक्ष्णसंसनबस्तिभिः ।
 योगैश्च वातगुल्मोक्तैः श्लेष्मगुल्ममुपाचरेत् ॥ ३९ ॥
 तिलैरण्डातसीबीजसर्षपैः परिलिप्य च ।
 श्लेष्मगुल्ममयःपात्रे सुखोष्णैः स्वेदयेद्भिषक् ॥ ४० ॥
 एरण्डार्कदलैर्वाऽथ स्वोष्णं स्वेद्यं मुहुर्मुहुः ।
 पञ्चमूलीशृतं तोयमथ वा जीर्णवारुणीम् ॥ ४१ ॥
 कफगुल्मी पिबेत्काले जीर्णे माध्वीकमेव वा ।
 यवानीचूर्णिकं तक्रं विडेन लवणीकृतम् ॥ ४२ ॥



1000

1000

1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 2680, 26

[illegible][illegible]

1000

1000

100

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

Age Group	Total (%)	Male (%)	Female (%)	Unknown (%)
18-24	15	10	20	5
25-34	25	15	35	10
35-44	35	25	45	20
45-54	45	35	55	30
55-64	55	45	65	40
65+	65	55	75	50

100

[illegible]

Age Group	Total (%)	Male (%)	Female (%)	Unknown (%)
18-24	10	10	10	10
25-34	25	25	25	25
35-44	35	35	35	35
45-54	20	20	20	20
55-64	10	10	10	10
65+	10	10	10	10

1000



श्लेष्मगुल्मे पिबेद्वातमूत्रवर्चोनुलोमनम् ।
 पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः ॥ ४३ ॥
 पलिकैः सयवक्षारैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।
 क्षीरप्रस्थेन तत्सर्पिर्हन्ति गुल्मं कफात्मकम् ॥ ४४ ॥
 ग्रहणीपाण्डुरोगघ्नं प्रीहकासज्वरापहम् ।

इति क्षीरषट्पलकं घृतम् ।

अथ मिश्रकस्नेहः—

त्रिवृतात्रिफलादन्तीदशमूलं पलोन्मितम् ॥ ४५ ॥
 जले चतुर्गुणे पक्त्वा चतुर्भागावशेषिते ।
 सर्पिरेरण्डतैलं च क्षीरं चैकत्र साधयेत् ।
 संसिद्धो मिश्रकः स्नेहः सक्षौद्रः कफगुल्मनुत् ॥ ४६ ॥

इति मिश्रकस्नेहः ।

कुलत्थाञ्जीर्णशालीश्च षष्टिकान्यवजाङ्गलम् ।
 मद्यं तैलं घृतं तक्रं कफगुल्मे प्रयोजयेत् ॥ ४७ ॥
 कटुत्रयं वह्निफलत्रयं च जम्बीरनीरे लवणानि पञ्च ।
 पचेति पिण्डत्वमुपैति यावद्दद्याणमात्रं परिषेवयेत् ॥ ४८ ॥
 कठोरगुल्मस्य विनाशनाय गुर्वन्नपाकाय च दीपनाय ॥ ४९ ॥
 श्लेष्मको बद्धमूलत्वाद्यदि गुल्मो न शाम्यति ।
 तस्य दाहं हृते रक्ते कुर्यादन्ते शरादिभिः ॥ ५० ॥

इति कफगुल्मः ।

अथ संसृष्टगुल्मः—

अथ हिङ्गवादिचूर्णगुटिका—

हिङ्गुत्रिकटुकं पाठां हृषामभयां सटीम् ।
 अजमोदाजगन्धे च तित्तिडीकाम्लवेतसो ॥ ५१ ॥
 दाडिमं पौष्करं धान्यमजाजीचित्रकं वचाम् ।
 द्वौ क्षारौ द्वे च लवणे चव्यं चैकत्र चूर्णयेत् ॥ ५२ ॥
 चूर्णमेतत्प्रयोक्तव्यमन्ने पानेऽप्यनत्ययम् ।
 प्राग्भुक्तस्याथ वा पेयं मद्येनोष्णोदकेन वा ॥ ५३ ॥
 पार्श्वहृद्वस्तिशुलेषु गुल्मे वातकफात्मके ।
 आनाहे मूत्रकृच्छ्रे च शूले च गुदयोनिजे ॥ ५४ ॥

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

DEPARTMENT OF THE HISTORY OF ARTS
AND ARCHITECTURE
AND THE MUSEUM OF ART AND ARCHITECTURE
1100 EAST 58TH STREET
CHICAGO, ILLINOIS 60637

OFFICE OF THE DEAN
1100 EAST 58TH STREET
CHICAGO, ILLINOIS 60637
TEL: 773-936-3333
FAX: 773-936-3334

OFFICE OF THE DEAN
1100 EAST 58TH STREET
CHICAGO, ILLINOIS 60637
TEL: 773-936-3333
FAX: 773-936-3334

OFFICE OF THE DEAN
1100 EAST 58TH STREET
CHICAGO, ILLINOIS 60637
TEL: 773-936-3333
FAX: 773-936-3334

ग्रहण्यशौविकारेषु प्लीहपाण्ड्वामयेषु च ।

उरोविबन्धे हिक्कायां कासे श्वासे गलग्रहे ॥ ५५ ॥

भावितं मातुलुङ्गस्य चूर्णमेतद्रसेन वा ।

बहुशो गुटिकाः कार्या गुल्मधन्यः स्युस्ततोऽधिकाः ॥ ५६ ॥

इति हिङ्गवादिचूर्णगुटिका ।

गुल्मवान्मादिरां मण्डैस्तैलमेरण्डजं पिबेत् ।

ससमीरे कफे तत्र सपित्ते तु पयोन्वितम् ॥ ५७ ॥

इति संसृष्टगुल्मः ।

अथ त्रिदोषगुल्मः—

वरणादिकषायस्तु गुल्मं दोषत्रयोत्थितम् ।

हन्ति हृत्पार्श्वशूलादयं सोपद्रवमसंशयम् ॥ ५८ ॥

इति त्रिदोषगुल्मः ।

अथ सामान्यविधिः—

लङ्घनं दीपनं स्निग्धमुष्णं वातानुलोमनम् ।

बृंहणं च भवेदन्नं तद्धितं सर्वगुल्मिनाम् ॥ ५९ ॥

गुल्मिनामनिलशान्तिरुपायैः सर्वशो विधिवदाचरितव्या ।

मारुते तु विजितेऽन्यमुदीर्णं दोषमल्पमपि कर्म निहन्यात् ॥ ६० ॥

सुखोष्णा जाङ्गलरसाः सुस्निग्धा व्यक्तसैन्धवाः ।

कटुत्रिकसमायुक्ता हिताः पानेषु गुल्मिनाम् ॥ ६१ ॥

कुम्भीपिण्डेष्टिकास्वेदान्कारयेत्कुशलो भिषक् ।

उपनाहाश्च कर्तव्याः सुखोष्णाः शाल्वणादयः ॥ ६२ ॥

गुल्मस्थाने रक्तमोक्षो बाहुमध्ये शिराव्यधः ।

स्वेदोऽनुलोमनं चैव प्रशस्तं सर्वगुल्मिनाम् ॥ ६३ ॥

वल्लूरं मूलकं मत्स्याञ्जुष्कशकानि वैदलम् ।

न खादेद्वालुकं गुल्मी मधुराणि फलानि च ॥ ६४ ॥

वचामयाविडं शुण्ठीहिङ्गुकृष्णाग्निदीपकान् ।

द्वित्रिषट्चतुरेकाष्टपञ्चसप्तपलांशकान् ॥ ६५ ॥

चूर्णयेद्वस्त्रगलितं चूर्णं चैतद्यथाबलम् ।

मधुनोष्णाम्बुना वाऽपि पीतं गुल्मानपोहति ॥ ६६ ॥



शूलाशःश्वासकासघ्नं ग्रहणीदीपनं परम् ।
इति वचाद्यं चूर्णम् ।

अथ हिङ्गवाद्यं घृतम्—

हिङ्गुपुष्करमूलानि तुम्बुरुणि हरीतकीम् ॥ ६७ ॥
इयामाविडं सैधवं च यवक्षारं महौषधम् ।
यवक्राथोदकेनैतद्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥
तेनास्य विद्यते गुल्मः सगूलः सपरिग्रहः ॥ ६८ ॥
इति हिङ्गवाद्यं चूर्णम् ।

अथ सामुद्रादिवर्तिः—

वातवर्चोनिरोधेषु सामुद्राद्रकसर्षपैः ।
कृत्वा पायौ विधातव्या वर्तयो मरिचान्वितैः ॥ ६९ ॥
इति सामुद्रादिवर्तिः ।

अथ नादेयीक्षारः—

नादेयीकुटजार्कशिगुबृहतीसुखित्वमल्लातक-
व्याघ्रीकिंशुकपारिभद्रकजटापामार्गनीपाग्निकान् ।
वासामुष्ककपाटलासलवणान्दग्ध्वा जले पाचितान्
हिङ्गवादिप्रतिवापमेतदुचितं गुल्मोदराक्षीलिषु ॥ ७० ॥
इति नादेयीक्षारः ।

अथ वज्रक्षारः—

क्षीरं वज्रतरुद्भवं दशपलं तावत्पयोऽप्यर्कजं
प्रत्येकं पलपञ्चकं च लवणं क्षारं च पञ्चात्मकम् ।
विंशत्यर्कदलैर्युतं पवितरोः क्षीरैश्चतुर्भिः पलै-
र्मृद्भाण्डे गुरुमार्गतो गजपुटे बह्वौ विपक्रीकृतम् ॥ ७१ ॥
संचूर्णयार्थं कटुत्रयं त्रिपलमप्येकं पलं रामठं
सर्वं वस्त्रपुनीतमेतदमले पात्रे सुखं स्थापयेत् ।
वज्रक्षारं इति प्रणाशयति वै गुल्मानुदग्रान्नृणां
पीतस्तक्रयुतः प्रमातसमये कर्षप्रमाणं क्रमात् ॥ ७२ ॥
मन्दाग्निं सविषूचिकामरुचितामापाण्डुतां क्षीणतां
श्वासं कासमजीर्णशैत्यपवनव्याधीन्बलासोद्भवान् ।

Age Group	Percentage
18-24	10%
25-34	20%
35-44	25%
45-54	20%
55-64	15%
65-74	10%
75-84	5%
85+	5%

■■■■■

100



100

100

(continued)

1000

100

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

[illegible]

100

Age Group	Total (%)	Male (%)	Female (%)	Unknown (%)
18-24	15	10	20	5
25-34	25	15	35	10
35-44	35	25	45	20
45-54	45	35	55	30
55-64	55	45	65	40
65+	65	55	75	50

100

100

Figure 1

100

Table 1

1000

1000

Figure 1

वज्रक्षार इमान्निवार्य भिषजां कीर्तिं विधत्ते परां
मांसं द्रावयति स्फुटं घटिकयोर्द्वन्द्वे किमन्नं पुनः ॥ ७३ ॥
इति वज्रक्षारः ।

अथापरो वज्रक्षारः—

सामुद्रं सैन्धवं काचं यवक्षारं सुवर्चलम् ।
तद्गुणं स्वर्जिकाक्षारं चूर्णमेषां विभावयेत् ॥ ७४ ॥
अर्कक्षीरैः स्नुहिक्षीरैरातपे शोषयेद्भयहम् ।
अर्कपत्राणि लिप्त्वा तैरर्कमूलाभ्युपेक्षितैः ॥ ७५ ॥
नियोज्य हण्डिकामध्ये रुद्ध्वा गजपुटे पचेत् ।
तत्क्षारे चूर्णमानं च त्र्यूषणं त्रैफलं रजः ॥ ७६ ॥
जीरकं रजनीवह्निवभागं समं समम् ।
क्षारार्धमेतद्धं च मेलयित्वा प्रयोजयेत् ॥ ७७ ॥
वज्रक्षारोऽयमुदितः स्वयं देवेन शंभुना ।
सर्वोदरेषु गुल्मेषु शूले शोथे च योजयेत् ॥ ७८ ॥
वाताधिके जलैः कोष्णैर्धृतैः पित्ताधिके हितम् ।
कफे गोमूत्रसंयुक्तं काश्चिकाढ्यं त्रिदोषजे ।
वज्रक्षारममुं वैद्यो मन्दाग्नेर्दीपनं परम् ॥ ७९ ॥

इत्यपरो वज्रक्षारः ।

अथ दाधिकं घृतम्—

कटुत्रयं वह्निफलत्रयं च जम्बीरनीरे लवणानि पञ्च ।
पचेत् पिण्डत्वमुपैति यावद्गुद्याणमानं परिषेवयेत् ॥ ८० ॥
कठोरगुल्मस्य विनाशनाय हितं सदा प्रोक्तमिदं महौषधम् ॥ ८१ ॥
विडदाडिमसिन्धूत्थहुतभृग्व्योषजीरकैः ।
हिङ्गसौवर्चलक्षारचुक्रवृक्षाम्लवेतसैः ॥ ८२ ॥
बीजपूररसोपेतैः सर्पिर्दधिचतुर्गुणम् ।
साधितं दाधिकं नाम्ना गुल्महृत्प्रीहनुत्परम् ॥ ८३ ॥

इति दाधिकं घृतम् ।

अथ रक्तगुल्मचिकित्सा—

शताह्वादिकल्कः—

प्रस्निग्धस्विन्नकोष्ठाया योज्यं स्नेहविरचनम् ।
शताह्वाचिरबिल्वत्वग्दारुमार्गीकणोद्भवः ॥ ८४ ॥

THE
JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE

VOL. LXXV. PART I.
1945.

CONTENTS

PAGE

कल्कः पीतो जयेदुल्मं तिलकाथेन रक्तजम् ॥ ८५ ॥
इति शताह्वादिकल्कः ।

अथ तिलकाथः-

तिलकाथो गुडव्योषहिङ्गुमार्गीयुतो हितः ।
पीतो रक्तभवे गुल्मे नष्टपुष्पेऽपि योषिताम् ॥ ८६ ॥
इति तिलकाथः ।

अथ पलाशक्षारघृतम्-

पलाशक्षारतोयेन सर्पिः सिद्धं पिबेद्वधूः ।
यस्मिन्नवसरे क्षीरतोयसाध्यघृतादिषु ॥ ८७ ॥
फेनोद्गमस्य निर्व्यक्तिर्नष्टदुग्धसमाकृतिः ।
स एव तस्य पाकस्य कालो नेतरलक्षणः ॥ ८८ ॥
अकल्कमेव घृतमेतद्विपक्तव्यम् ।
इति पलाशक्षारघृतम् ।

अथ कल्लाराद्यं घृतम्-

कल्लारमुत्पलं पक्वं कुमुदं मधुयष्टिकाम् ।
पक्त्वाऽम्बुनैत्काथेन जीवनीयोपकल्कितम् ॥ ८९ ॥
घृतं पक्वं नवं पीतं रक्तपित्तास्रगुल्मनुत् ।
दाहतृष्णाज्वरच्छर्दियोनिदोषहरं परम् ॥ ९० ॥
इति कल्लाराद्यं घृतम् ।
उष्णैश्च भेदयेद्भिन्ने चिरमसृग्दरे हितः ।
अतिप्रवृत्तमस्रं तु भिन्ने गुल्मे निवारयेत् ॥ ९१ ॥
रक्तपित्तहरैर्योगैर्वातघ्नैश्च मरुद्गदान् ।

अथ रसाः-

विद्याधररसः-

गन्धकं तालकं ताप्यं सुतताम्रं मनःशिलाम् ॥ ९२ ॥
शुद्धसूतं च तुल्यांशं मर्दयेद्भावेदपि ।
पिप्पल्यास्तु कषायेण वज्रीक्षीरेण च त्रिशः ॥ ९३ ॥
निष्कार्धं मक्षयेत्क्षौद्रे गुल्मप्लीहोदरं जयेत् ।
रसो विद्याधरो नाम्ना गोमूत्रं च पिबेदनु ॥ ९४ ॥
इति विद्याधररसः ।

—

—

—

—

—

—

—

—

अथ वङ्गेश्वरः—

मस्मसृतं वङ्गमस्म प्रत्येकं कल्पयेत्पलम् ।
 गन्धकं मृतताम्रं च प्रत्येकं तु चतुष्पलम् ॥ ९५ ॥
 अर्कक्षीरैर्विनं मर्द्य तत्सर्वं गोलकीकृतम् ।
 संरुध्य मूधरे पच्यात्स्वाङ्गशीतं समुद्धरेत् ॥ ९६ ॥
 एष वङ्गेश्वरो नाम्ना प्लीहगुल्मोदरं जयेत् ।
 द्विगुञ्जं हविषा लीढ्वा निष्कां श्वेतपुनर्नवाम् ॥ ९७ ॥
 गोमूत्रपिष्टां प्रपिबेद्भजनीवातगोजलैः ।

इति वङ्गेश्वरः ।

अथ गुल्मारिः—

सृतं गन्धं कणापथ्यास्तुल्या आरग्वधाम्बुभिः ॥ ९८ ॥
 मर्दयेद्वाज्रिदुग्धैश्च तन्मार्षं मधुना लिहेत् ।
 स्त्रीणां जलोदरं हन्ति पथ्यं शाल्योदनं दधि ।
 चिञ्चाफलरसं चानु पिबेत्संशीलिते रसे ॥ ९९ ॥

इति गुल्मारिः ।

शङ्खद्रावो जयत्याशु पथ्यासैन्धवसंयुतः ।
 दुःसाध्यानपि गुल्मांश्च पृथुलोपद्रवोत्कटान् ॥ १०० ॥
 इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां गुल्मनिदानचिकित्साकथनं नामा-
 ष्टनवतितमस्तरङ्गः ॥ ९८ ॥

अथ नवनवतितमस्तरङ्गः ।

अथ हृद्रोगनिदानम्—

अत्युष्णगुर्वम्लकषायतिक्तश्रमामिघाताध्ययनप्रसङ्गैः ।
 संचिन्तनैर्वेगविधारणैश्च हृदामयः पञ्चविधः प्रदिष्टः ॥ १ ॥
 कूषयित्वा रसं दोषा विगुणा हृदयं गताः ।
 हृदि बाधां प्रकुर्वन्ति हृद्रोगं तं प्रचक्षते ॥ २ ॥
 आयस्यते मारुतजे हृदयं तुद्यते यथा ।
 निर्मथ्यते दीर्यते च स्फोट्यते पात्यतेऽपि च ॥ ३ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

तृष्णोष्मदाहचोषाः स्युः पैत्तिके हृदयक्लमः ।
 धूमायनं च मूर्छा च क्लेदः शोषो मुखस्य च ॥ ४ ॥
 गौरवं कफसंस्त्रावोऽरुचिः स्तम्भोऽग्निमार्दवम् ।
 माधुर्यमपि चाऽऽस्यस्य बलासावतते हृदि ॥ ५ ॥
 विद्यान्निदोषजं वाऽपि सर्वलिङ्गं हृदामयम् ।
 त्रिदोषजे तु हृद्रोगे यो दुरात्मा निषेवते ॥ ६ ॥
 तिलक्षीरगुडादीनि ग्रन्थिस्तस्यैव जायते ।
 मर्मैकदेशे संक्लेदं रसश्चाप्युपगच्छति ॥ ७ ॥
 संक्लेदात्कृमयश्वास्य भवन्त्युपहृतात्मनः ।
 तीव्रार्तितोदं कृमिजं तद्दोषचयसंकटम् ॥ ८ ॥
 उत्क्लेदः षीवनं तोदः शूलं हृलासकस्तमः ।
 अरुचिः श्यावनेत्रत्वं शोषश्च कृमिहृद्गर्जि ॥ ९ ॥
 क्लमः सादो भ्रमः शोषो ज्ञेयास्तेषामुपद्रवाः ।
 कृमिजे कृमिजातीनां श्लैष्मिकाणां च ये मताः ॥ १० ॥

इति हृद्रोगनिदानम् ।

अथ वातहृद्रोगः—

पिप्पल्यादिचूर्णम्—

वातोपसृष्टै हृदये वामयेत्स्निग्धमातुरम् ।
 द्विपञ्चमूलीकाथेन सस्नेहलवणेन वा ॥ ११ ॥
 पिप्पल्येला वचा हिङ्गु यवक्षारोऽथ सैन्धवम् ।
 सौवर्चलमथो शुण्ठी दीप्यश्चेति विचूर्णितम् ॥ १२ ॥
 फलधान्याम्लकौलत्थदधिमद्यासवादिभिः ।
 पाययेच्छुद्धदेहं च वातहृद्रोगशान्तये ॥ १३ ॥

इति पिप्पल्यादिचूर्णम् ।

अथ पुष्करमूलाद्यं चूर्णम्—

सपुष्कराख्यं फलपूरमूलं महौषधं सट्यमया च कल्काः ।
 क्षीराम्लसर्पिलवणैर्विमिश्राः स्युर्वातहृद्रोगहरा नराणाम् ॥ १४ ॥

इति पुष्कराद्यं चूर्णम् ।

इति वातहृद्रोगः ।

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

11. The eleventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

12. The twelfth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

13. The thirteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

14. The fourteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

अथ पित्तहृद्दोगः—

द्राक्षाद्यं चूर्णम्—

श्रीपर्णी मधुकं क्षौद्रं सितागुडजलैर्वमेत् ।
पित्तोपसृष्टे हृदये सिञ्चेत मधुरैः शृतैः ॥
घृतं कषायांश्चारिष्टान्पित्तज्वरविनाशनान् ॥ १५ ॥

शीताः प्रदेहाः परिषेचनं च तथा विरेको हृदि पित्तदुष्टे ।
द्राक्षासिताक्षौद्रपरूषकैः स्याच्छुद्धे च पित्तापहमन्नपानम् ॥ १६ ॥

*हारहुराहरीतक्योस्तुल्यशर्करयो रजः ।
पीतं हिमाम्बुना हन्ति पित्तहृद्दोगमञ्जसा ॥ १७ ॥

इति द्राक्षाद्यं चूर्णम् ।

अर्जुनस्य त्वचा सिद्धं क्षीरं पित्तहृदतिजित् ।
सितया पञ्चमूल्या वा बलया मधुकेन वा ॥ १८ ॥

इति पित्तहृद्दोगः ।

अथ कफहृद्दोगः—

त्रिवृताद्यौ चूर्णकाथौ—

हृद्दोगे कफजे स्विन्नं सुवान्तं लङ्घितं नरम् ।
कफघ्नैर्भेषजैर्युञ्ज्याज्ज्ञात्वा दोषबलाबलम् ॥ १९ ॥
त्रिवृत्सठीबलारास्त्राशुण्ठीपथ्याः सपौष्कराः ।
चूर्णिता वा शृता मूत्रे पातव्याः कफहृद्भेदे ॥ २० ॥

इति त्रिवृताद्यौ चूर्णकाथौ ।

सूक्ष्मैलामागधीमूलं प्रलीढं सर्पिषा सह ।
नाशयत्याशु हृद्दोगं कफजं सपरिग्रहम् ॥ २१ ॥

इति कफहृद्दोगः ।

अथ त्रिदोषहृद्दोगः—

त्रिदोषजे लङ्घनमादितः स्यादन्नं तु सर्वेषु हितं विधेयम् ।
चूर्णानि सर्पिषि च वक्ष्यमाणान्यत्र प्रयोज्यानि भिषग्भिराशु ॥ २२ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

11. The eleventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

12. The twelfth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

अथ कृमिजह्द्रोगः—

हृद्रोगे कृमिजे कार्यं लङ्घनं चाथ तर्पणम् ।
पश्चात्कृमिहरं कर्म कृमिरोगोक्तमाचरेत् ॥ २३ ॥

इति कृमिजह्द्रोगः ।

अथ सामान्यहृदामयप्रतीकारः—

हिङ्गवाद्यं चूर्णम्—

हिङ्गुग्रगन्धाविडविश्वकृष्णाकुष्ठामयाचित्रकयावशूकम् ।
पिबेत्ससौवर्चलपुष्कराद्यं यवाम्भसा शूलहृदामयघ्नम् ॥ २४ ॥
इति हिङ्गवाद्यं चूर्णम् ।

अथ पुष्कराद्यं चूर्णम्—

चूर्णं पुष्करमूलस्य मधुना सह लेहयेत् ।
हृत्तासश्वासकासघ्नं हृदामयहरं परम् ॥ २५ ॥
इति पुष्कराद्यं चूर्णम् ।

अथ ककुभाद्यं चूर्णम्—

घृतेन दुग्धेन गुडाम्भसा वा पिबन्ति चूर्णं ककुमत्वचो ये ।
हृद्रोगजीर्णज्वररक्तपित्तं जित्वा भवेयुश्चिरजीविनस्ते ॥ २६ ॥
इति ककुमाद्यं चूर्णम् ।

अथ दशमूलीकाथः—

दशमूलीकषायस्तु लवणक्षारसंयुतः ।
पीतो निहन्ति सहसा हृदामयमसंशयम् ॥ २७ ॥
इति दशमूलीकाथः ।

अथ वल्लभघृतम्—

शतार्धममयानां तु सौवर्चलपलद्वयम् ।
पचेत्कल्कैर्घृतं प्रस्थं दत्त्वा क्षीरं चतुर्गुणम् ॥
घृतं वल्लभकं नाम्ना श्रेष्ठं हृद्रोगनाशनम् ॥ २८ ॥
इति वल्लभघृतम् ।
पार्थस्य कल्कस्वरसेन सिद्धं शस्तं घृतं सर्वहृदामयेषु ॥ २९ ॥

THE
HISTORY
OF
THE
CITY
OF
NEW-YORK
FROM
THE
FIRST
SETTLEMENT
TO
THE
PRESENT
TIME
BY
J. M. SMITH
OF
THE
NEW-YORK
HISTORICAL
SOCIETY
PUBLISHED
BY
J. M. SMITH
NEW-YORK
1845

अथ त्रिनेत्रो रसः—

रसगन्धाभ्रमस्मानि पार्थवृक्षत्वगम्बुना ।
एकविंशतिधा घर्मे भावितानि विधानतः ॥ ३० ॥
माषमात्रमिदं चूर्णं मधुना सह लेहयेत् ।
वातजं पित्तजं श्लेष्मसंभूतं वा त्रिदोषजम् ॥ ३१ ॥
कृमिजं चापि हृद्रोगं निहन्त्येव न संशयः ।

इति त्रिनेत्रो रसः ।

तैलाम्लतक्रगुर्वन्नकषायश्रममातपम् ॥ ३२ ॥
रोषस्त्रीमर्मचिन्ताश्च भाषां हृद्रोगवांस्त्यजेत् ।
शालिर्मुद्गा यवा मांसं जाङ्गलं मरिचान्वितम् ।
पटोलं कारवेलं च पथ्यं प्रोक्तं हृदामये ॥ ३३ ॥
इति योगतरङ्गिण्यां हृद्रोगनिदानचिकित्साकथनं नामैकोन-
शततमस्तरङ्गः ॥ ९९ ॥

अथ शततमस्तरङ्गः ।

अथ मूत्रकृच्छ्रनिदानम्—

व्यायामतीक्ष्णौषधिरूक्षमद्यप्रसङ्गनृत्यद्रुतपृष्ठयानात् ।
आनूपमत्स्याध्यशनादजीर्णात्स्युर्मूत्रकृच्छ्राणि नृणामिहाद्यौ ॥ १ ॥
दोषैः पृथक्त्रीण्यथ संनिपातात्तुर्यं तथा पञ्चममश्मरीतः ।
षष्ठं विशा सप्तमकं तु शुक्रात्तदष्टमं शल्यजमाहुरार्याः ॥ २ ॥
पृथग्मलाः स्वैः कुपिता निदानैः सर्वेऽथ वा कोपमुपेत्य वस्तौ ।
मूत्रस्य मार्गं परिपीडयन्ति यदा तदा मूत्रयतीह कृच्छ्रात् ॥ ३ ॥
तीव्रा रुजो वङ्क्षणवस्तिमेद्रे स्वल्पं मुहुर्मूत्रयतीह वातात् ।
पीतं सरक्तं सरुजं सदाहं पित्तान्मुहुर्मूत्रयतीह कृच्छ्रात् ॥ ४ ॥
वस्तेः सलिङ्गस्य गुरुत्वशोफौ मूत्रं सपिच्छं कफमूत्रकृच्छ्रे ।
सर्वाणि रूपाणि तु संनिपाताद्भवन्ति तत्कृच्छ्रतमं च कृच्छ्रम् ॥ ५ ॥
वातालिङ्गगुरुत्वं च मूत्रे पिच्छिलता तथा ।
श्वयथुश्च भवेत्कृच्छ्रे स्वल्परुक्कफसंभवे ॥ ६ ॥
मूत्रवाहिषु शल्येन क्षतेष्वभिहतेषु च ।
मूत्रकृच्छ्रं तदाघाताज्जायते भृशदारुणम् ॥ ७ ॥

THE
JOURNAL OF THE



THE
JOURNAL OF THE

ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE

OF GREAT BRITAIN AND IRELAND

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
OF GREAT BRITAIN AND IRELAND
PUBLISHED BY THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
OF GREAT BRITAIN AND IRELAND
1, BEDFORD SQUARE, LONDON, W.C.1
1900

वातकृच्छ्रेण तुल्यानि तस्य रूपाणि निर्दिशेत् ।
 शकृतस्तु प्रतीघाताद्वायुर्विगुणतां गतः ॥ ८ ॥
 आध्मानं वातशूलं च मूत्रकृच्छ्रं करोति च ।
 अश्मरीहेतु तत्पूर्वं मूत्रकृच्छ्रमुदाहरेत् ॥ ९ ॥
 शुक्रदोषैरुपहते मूत्रमार्गे विदारिते ।
 सशुक्रं मूत्रयेत्कृच्छ्राद्वस्तिमेहनशूलवान् ॥ १० ॥
 अश्मरी शर्करा चैव तुल्यसंभवलक्षणे ।
 शर्कराया विशेषं तु शृणु कीर्तयतो मम ॥ ११ ॥
 पच्यमानाऽश्मरी पित्ताच्छोष्यमाणा च वायुना ।
 विमुक्तकफसंधाना क्षरन्ती शर्करा मता ॥ १२ ॥
 हृत्पीडा वेपथुः शूलं कुक्षावग्निश्च दुर्बलः ।
 तथा भवति मूर्छा च मूत्रकृच्छ्रं च दारुणम् ॥ १३ ॥

इति मूत्रकृच्छ्रनिदानम् ।

अथ वातमूत्रकृच्छ्रम्-

अभ्यञ्जनस्नेहनिरुहवस्तिस्वेदोपनाहोत्तरवस्तिसेकान् ।
 स्थिरादिभिर्वातहरैश्च सिद्धान्दद्याद्रसांश्चानिलमूत्रकृच्छ्रे ॥ १४ ॥
 अमृतां नागरं धात्रीं वाजिगन्धां त्रिकण्टकम् ।
 निक्वाथ्य प्रपिबेत्क्वाथं मूत्रकृच्छ्री समीरतः ॥ १५ ॥

इत्यमृतादिक्वाथः । इति वातमूत्रकृच्छ्रम् ।

अथ पित्तजमूत्रकृच्छ्रम्-

अथ तृणपञ्चमूलकाथपयसी-

सेकावगाहाः शिशिराः प्रदेहा ग्रीष्मो विधिर्बस्तिपयोविरेकाः ।
 द्राक्षाविदारीक्षुरसैर्घृतैश्च कृच्छ्रेषु पित्तप्रभवे च कार्याः ॥ १६ ॥
 कुशः काशः शरो दर्भ इक्षुश्चेति तृणोद्भवम् ।
 पित्तकृच्छ्रहरं पञ्चमूलं वस्तिविशोधनम् ॥
 एतत्सिद्धं पयः पीतं मेढ्रगं हन्ति शोणितम् ॥ १७ ॥

इति तृणपञ्चमूलकाथपयसी ।

अथ शतावर्यादिकाथः—

शतावरीकाशकुशश्वदंष्ट्राविदारिशालीक्षुरुसेरुकाणाम् ।

काथं सुशीतं मधुशर्कराभ्यां युक्तं पिबेत्पित्तिकमूत्रकृच्छ्रे ॥ १८ ॥

इति शतावर्यादिकाथः ।

अथ हरीतक्यादिकाथः—

हरीतकीगोक्षुरराजवृक्षपाषाणभिद्धन्वयवासकानाम् ।

काथं पिबेन्माक्षिकसंप्रयुक्तं कृच्छ्रे सदाहे सरुजे विबन्धे ॥ १९ ॥

इति हरीतक्यादिकाथः ।

अथ शतावरीसर्पिःपयसी च—

शतावरीकाशकुशश्वदंष्ट्राविदारिकेश्वामलकल्कसिद्धम् ।

सर्पिः पयो वा सितया विमिश्रं कृच्छ्रेषु पित्तप्रभवेषु योज्यम् ॥ २० ॥

इति शतावरीसर्पिःपयसी च । इति पित्तजमूत्रकृच्छ्रम् ।

अथ श्लेष्मकृच्छ्रम्—

क्षारोष्णतीक्ष्णौषधमग्नपानं स्वेदो यवान्नं वमनं निरूहः ।

तक्रं च तिक्तोषणसिद्धतैलं बस्तिश्च शस्तः कफमूत्रकृच्छ्रे ॥ २१ ॥

मूत्रेण सुरया वाऽपि कदलीस्वरसेन वा ।

कफकृच्छ्रविनाशाय सूक्ष्मां पिष्टां त्रुटिं पिबेत् ॥ २२ ॥

इति श्लेष्मकृच्छ्रम् ।

अथ त्रिदोषकृच्छ्रम्—

बृहत्यादिकाथः—

सर्वं त्रिदोषप्रभवे तु कृच्छ्रे यथामलं कर्म समीक्ष्य कार्यम् ।

तत्राधिके प्राग्वमनं कफे स्यात्पित्ते विरेकः पवने तु बस्तिः ॥ २३ ॥

बृहतीधावनीपाठायष्टीमधुकलिङ्गकान् ।

पक्त्वा काथं पिबेन्मर्त्यो कृच्छ्रे दोषत्रयोद्भवे ॥ २४ ॥

इति बृहत्यादिकाथः ।

गुडेन मिश्रितं दुग्धं कदुष्णं कामतः पिबेत् ।

मूत्रकृच्छ्रेषु सर्वेषु शर्करावातरोगानुत् ॥ २५ ॥

VOL. LXXV. PART 1.
1945.

CONTENTS.

THE ANTHROPOLOGY OF THE
FUTURE.

THE
FUTURE OF
HUMANITY.

THE
FUTURE OF
HUMANITY.

THE
FUTURE OF
HUMANITY.

THE
FUTURE OF
HUMANITY.

THE
FUTURE OF
HUMANITY.

अथाभिघातमूत्रकृच्छ्रम्-

मूत्रकृच्छ्रेऽभिघातोत्थे वातकृच्छ्रक्रिया हिता ।
 तथाऽभिघातजे कुर्यात्सद्यो व्रणचिकित्सितम् ।
 पञ्चवल्कलसुलेपः कवोष्णोऽत्र प्रशस्यते ॥ २६ ॥
 मन्थं पिबेद्वा ससितं च सर्पिः शृतं पयो वाऽर्धसिताज्ययुक्तम् ।
 धात्रीरसं चेश्वरसं पिबेद्वाऽभिघातकृच्छ्रे मधुना विमिश्रम् ॥ २७ ॥

अथ शुक्रविबन्धजं कृच्छ्रम्-

कृच्छ्रे शुक्रविबन्धोत्थे शिलाजतु समाक्षिकम् ।
 रौलाहिङ्गयुतं क्षीरं सर्पिमिश्रं पिबेन्नरः ॥ २८ ॥
 शुक्रदोषविशुद्धयर्थं समदाः प्रमदाः श्रेयेत् ।
 तुणपञ्चकमूलेन सिद्धं सर्पिः पिबेदपि ॥ २९ ॥

अथ शकृद्विघातजं कृच्छ्रम्-

गोक्षुरादिकाथः-

स्वेदचूर्णक्रियाभ्यङ्गवस्तयः स्युः पुरीषजे ।
 कृच्छ्रे तत्र विधिः कार्यः सर्वशुक्रविबन्धजित् ॥ ३० ॥
 काथो गोक्षुरबीजानां यवक्षारयुतः सदा ।
 मूत्रकृच्छ्रं शकृज्जातं पीतः शीघ्रं निवारयेत् ॥ ३१ ॥
 इति गोक्षुरादिकाथः ।

अथाश्मरीजं कृच्छ्रम्-

एलादिकाथः-

अश्मरीजे मूत्रकृच्छ्रे स्वेदाद्या वातजित्क्रियाः ।
 पाषाणभेदकाथस्तु कृच्छ्रमश्मरीजं जयेत् ॥ ३२ ॥
 एलोपकुल्यामधुकाश्मभेदकौन्तीश्वदंष्ट्रावृषकोरुचूकैः ।
 शृतं पिबेदश्मजतु प्रगाढं सशर्करे साश्मरिमूत्रकृच्छ्रे ॥ ३३ ॥
 इत्येलादिकाथः । इत्यश्मरीजं कृच्छ्रम् ।

—

—

—

—

—

—

—

—

अथ सामान्यमूत्रकृच्छ्रविधिः—

अथैलाद्यवलेहः—

कोष्णाखुविट्कल्कलेपो वस्तेरुपरि कृच्छ्रिणः ।
 त्रपुसीबीजलेपो वा धारा वा किंशुकाम्मसः ॥ ३४ ॥
 ध्वजच्छिद्रे चेन्दुदानं दानं वा चटकाविशः ।
 मेघनादशिफालेपः स्वेदो वा कर्कटामिश्रैः ॥ ३५ ॥
 पातो वा कोष्णतैलस्य धारा वा कोष्णवारिणा ।
 नवैते पादिका योगा मूत्रकृच्छ्रहरा मताः ॥ ३६ ॥
 एलाश्ममेदकशिलाजतुपिप्पलीनां
 चूर्णानि तण्डुलजलैर्लिङ्गितानि पीत्वा ।
 यद्वा गुडेन सहितान्यवालिह्य मात्रा-
 मासन्नमृत्युरपि जीवति मूत्रकृच्छ्री ॥ ३७ ॥

इत्यैलाद्यवलेहः ।

अथ गोक्षुराद्यो गुग्गुलुः—

गोकण्टात्प्रसृतीश्चतुर्दश पंचेत्स्वच्छे जले षड्गुणे
 पूतेऽर्धेऽत्र पलानि सप्त तु पुटाहत्वा पचाथ क्षिपेत् ।
 चूर्णं सप्तपलं वरात्रिकटुकाब्दाद्गोक्षुराद्यः पुरः
 स्यादेषोऽश्मरिमेहकृच्छ्रपवनामृदूमूत्रशुक्रार्तिजित् ॥ ३८ ॥

इति गोक्षुराद्यो गुग्गुलुः ।

अथ त्रिकण्टकादिकाथः—

त्रिकण्टकारम्बधर्मकाशदुरालमापर्वतमेदपथ्याः ।
 निम्नन्ति पीता मधुनाऽश्मरीकां संप्राप्तमृत्योरपि मूत्रकृच्छ्रम् ॥ ३९ ॥
 इति त्रिकण्टकादिकाथः ।

अथ लोहभस्मयोगः—

अयोमस्म श्लक्ष्णपिष्टं मधुना सह योजितम् ।
 मूत्रकृच्छ्रं निहन्त्याशु त्रिभिर्लेहैर्न संशयः ॥ ४० ॥
 इति लोहभस्मयोगः ।

सितातुल्यो यवक्षारो भक्षितः सर्वकृच्छ्रनुत् ।
 निदिग्धिकारसो वाऽपि सक्षौद्रः कृच्छ्रनाशनः ॥ ४१ ॥

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

अथ त्रिकण्टकाद्यं घृतम्—

त्रिकण्टकैरण्डकुशाद्यभीरुकर्कारुकेक्षुस्वरसेन सिद्धम् ।
सर्पिर्गुडाधार्शयुतं प्रपेयं कृच्छ्राश्मरीमूत्रविघातहारि ॥ ४२ ॥
इति त्रिकण्टकाद्यं घृतम् ।

अथ रसः—

प्रत्येकं कर्षमात्रं स्यात्सूतं ताम्रं तथाऽश्रकम् ।
द्विगुणं गन्धकं चैव कृत्वा कज्जलिकां शुभाम् ॥ ४३ ॥
मुस्तादाडिमतोयेन केतकीस्तनवारिणा ।
सहदेव्याः कुमार्याश्च पर्पटोशीरयोरपि ॥ ४४ ॥
तालमूल्याः शतावर्षा भावयित्वा दिनं दिनम् ।
तिक्ता गुडूचीसत्त्वं च *पर्पटोशीरमागधि ॥ ४५ ॥
श्रीखण्डं सारिवा चैषां समानं चूर्णकं क्षिपेत् ।
द्राक्षाफलकषायेण सप्तधा परिभावयेत् ॥ ४६ ॥
छायाशुष्कं विधायथ वटी कार्या चणोपमा ।
महाचन्द्रकलानाम्ना रसेन्द्रोऽयं निरूपितः ॥ ४७ ॥
मूत्रकृच्छ्राणि सर्वाणि प्रमेहानपि दुस्तरान् ।
प्रदरं चाम्लपित्तं च दाहं दुःसहमश्मरीम् ॥ ४८ ॥
हन्ति श्रीशंभुना प्रोक्तो रसश्चन्द्रकलाभिधः ।

इति महाचन्द्रकलानामरसः ।

व्यायामं मैथुनं तीक्ष्णं मद्यमातपमामिषम् ॥ ४९ ॥
अध्वानं च विदाह्यन्नं मूत्रकृच्छ्री विवर्जयेत् ।
मुद्गशालियवाजीर्णां गोधूमा अपि शर्करा ॥ ५० ॥
पयश्चाऽऽमलकं सर्पिस्तण्डुलीयं कठिलकम् ।
पटोलं चेति पथ्यं स्यान्मूत्रकृच्छ्रजुषां नृणाम् ॥ ५१ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां मूत्रकृच्छ्रनिदानचिकित्साकथनं नाम
शततमस्तरङ्गः ॥ १०० ॥

* क. 'चन्दनो' इति पाठान्तरम् ।

THE

AMERICAN

REPUBLICAN

OF THE

UNITED STATES

OF THE

अथ मूत्राघातनिदानम्—

जायन्ते कुपितैर्दोषैर्मूत्राघातास्त्रयोदश ।
 प्रायो मूत्रविधाताद्यैर्वातकुण्डलिकादयः ॥ १ ॥
 रौक्ष्याद्वेगविधाताद्वा वायुर्वस्तौ सवेदनः ।
 मूत्रमाविश्य चरति विगुणः कुण्डलीकृतः ॥ २ ॥
 मूत्रमल्पाल्पमथवा सरुजं संप्रवर्तते ।
 वातकुण्डलिकां तां तु व्याधिं विद्यात्सुदारुणाम् ॥ ३ ॥
 आध्मापयन्बस्तिगुदं रुद्ध्वा वायुश्चलोल्लताम् ।
 कुर्यात्तीव्रार्तिमष्ठीलां मूत्रविण्मार्गरोधिनीम् ॥ ४ ॥
 बेगं विधारयेद्यस्तु मूत्रस्याकुशलो नरः ।
 निरुणद्धि मुखं तस्य बस्तेर्बस्तिगतोऽनिलः ॥ ५ ॥
 मूत्रसङ्गो भवेत्तेन बस्तिकुक्षौ रुजाकरः ।
 वातबस्तिः स विज्ञेयो व्याधिः कृच्छ्रप्रसादनः ॥ ६ ॥
 चिरं धारयतो मूत्रं त्वरया न प्रवर्तते ।
 मेहमानस्य मन्दं वा मूत्रातीतः स उच्यते ॥ ७ ॥
 मूत्रवेगे त्वभिहते तदुदावर्तहेतुतः ।

इत्युदावर्तजः ।

अथ वातजः—

अपानः कुपितो वायुरुदरं पूरयेद्मृशम् ॥ ८ ॥
 नाभेरधस्तादाध्मानं जनयेत्तीव्रवेदनम् ।
 तन्मूत्रजठरं विद्यादधोबस्तिनिरोधनम् ॥ ९ ॥
 बस्तौ वाऽप्यथ वा नाले मणौ वा यस्य देहिनः ।
 मूत्रं प्रवृत्तं सज्येत सरक्तं वा प्रवाहतः ॥ १० ॥
 स्रवेच्छनैरल्पमल्पं सरुजं वाऽथ नीरुजम् ।
 विगुणानिलजो व्याधिः स मूत्रोत्सङ्गसंज्ञितः ॥ ११ ॥

अथ पित्तमारुतजः—

रूक्षस्य क्लान्तदेहस्य बस्तिस्थौ पित्तमारुतौ ।
 मूत्रक्षयं सरुदाहं जनयेतां तदाह्वयम् ॥ १२ ॥



अन्तर्बस्तिमुखे वृत्तः स्थिरोऽल्पः सहसा भवेत् ।
 अश्मरीतुल्यरुग्ग्रन्थिर्मूत्रग्रन्थिः स उच्यते ॥ १३ ॥
 मूत्रितश्च स्त्रियं यातो वायुना शुक्रमुद्धतम् ।
 स्थानाच्च्युतं मूत्रयतः प्राक्पश्चाद्वा प्रवर्तते ॥ १४ ॥
 भस्मोदकप्रतीकाशं मूत्रशुक्रं तदुच्यते ।
 व्यायामाध्वातपैः पित्तं बस्तिं प्राप्यानिलान्वितम् ॥ १५ ॥
 बस्तिमेद्रं गुदं चैव प्रदहेत्सावयेदधः ।
 मूत्रं हारिद्रमथ वा सरक्तं रक्तमेव च ॥ १६ ॥
 कृच्छ्रात्पुनः पुनर्जन्तोरुष्णवातं वदन्ति तम् ।

अथ पित्तकफजः—

पित्तं कफो द्वावपि वा संहन्येतेऽनिलेन चेत् ॥ १७ ॥
 कृच्छ्रान्मूत्रं तदा पीतं रक्तं श्वेतं घनं सृजेत् ।
 सदाहं रोचनाशङ्कचूर्णवर्णं भवेच्च तत् ॥ १८ ॥
 शुष्कं समस्तवर्णं वा मूत्रसादं वदन्ति तम् ।
 रुक्षदुर्बलयोर्वातेनोदावर्तं शकृद्यदा ॥ १९ ॥
 मूत्रस्रोतोऽनुपद्येत विट्संसृष्टं तदा नरः ।
 विड्गन्धि मूत्रयेत्कृच्छ्राद्विड्विघातं विनिर्दिशेत् ॥ २० ॥
 द्रुताध्वलद्रुधनायासैरभिघातात्प्रपीडनात् ।
 स्वस्थानाद्बस्तिरुद्वृत्तः स्थूलस्तिष्ठति गर्भवत् ॥ २१ ॥

अथोदरान्तर्गतपार्श्वगमनं दर्शयति—

शूलस्पन्दनदाहार्तो बिन्दुं बिन्दुं स्रवत्यपि ।
 पीडितस्तूत्सृजेद्द्वारां संस्तम्भोद्वेष्टनार्तिमान् ॥ २२ ॥
 बस्तिकुण्डलमाहुस्तं घोरं शस्त्रविषोपमम् ।
 पवनः प्रबलं प्रायो दुर्निवारोऽश्वबुद्धिभिः ॥ २३ ॥
 तस्मिन्पित्तावृते दाहः शूलं मूत्रविवर्णता ।
 श्लेष्मणा गौरवं शोफः स्निग्धं मूत्रं घनं सितम् ॥ २४ ॥
 श्लेष्मरुद्धबिलो बस्तिः पित्तोदीर्णो न सिध्यति ।

उपचितपित्तः—

अभिभ्रान्तबिलः साध्यो न च यः कुण्डलीकृतः ।

कफेन कुण्डलीभूतोऽसाध्यः—

स्याद्वस्तौ कुण्डलीभूते तृणमोहः श्वास एव च ॥ २५ ॥

इति मूत्राघातनिदानम् ।

अथ मूत्राघातचिकित्सा—

नलादिकाथः—

स्नेहस्वेदोपपन्नस्य हितं स्नेहविरेचनम् ।

दद्यादुत्तरबस्तींश्च मूत्राघाते सवेदने ॥ २६ ॥

नलकुशकासेक्षुशिफाकथितं प्रातः सुशीतलं ससितम् ।

पिबतः प्रयाति नियतं मूत्राघातः सवेदनः पुंसः ॥ २७ ॥

इति नलादिकाथः ।

अथ वीरतर्वादिकाथः—

*गोधावन्या मूलकथितं घृततैलगोरसोन्मिश्रम् ।

पीतं विरुद्धमचिराद्भिन्नति मूत्रस्य संघातम् ॥ २८ ॥

पिबेच्छिलाजतुकाथं युक्तं वीरतरादिना ।

तेन प्रशाम्यति क्षिप्रं मूत्राघातः सुदारुणः ॥ २९ ॥

इति वीरतर्वादिकाथः ।

अथ वीरतर्वादिः सुश्रुतात्—

गद्यम्—

वीरतरुसहचरद्वयदर्भवृक्षादनीगुन्द्रानलकुशकाशाश्मभेदाग्निमन्थमोर-
टवसुकवाशीरमल्लूककुरण्टकेन्दीवरकपोतचक्राश्वदंष्ट्राः ।

इति वीरतर्वादिः सुश्रुतात् ।

अथ दशमूलीकाथः—

दशमूलीगृतं पीत्व सशिलाजतुशर्करम् ।

वातकुण्डलिकाष्ठीलावातबस्तेः प्रमुच्यते ॥ ३० ॥

इति दशमूलीकाथः ।

अथ गोक्षुरकाथः—

पीतो गोकण्टककाथः सशिलाजतुकौशिकः ।

मूत्रक्षयान्मूत्रशुकान्मूत्रोत्सङ्गाद्विमुच्यते ॥ ३१ ॥

इति गोक्षुरकाथः ।

अथ शुद्धशिलाजतुयोगः—

सशर्करं च ससितं लीढं शुद्धं शिलाजतु ।

निहन्ति मूत्रजठरं मूत्रातीतं च देहिनः ॥ ३२ ॥

इति शुद्धशिलाजतुयोगः ।

अथ चित्रकायं घृतं चरकात्—

चित्रकं सारिवा चैव बलाकालानुसारिवा ।

द्राक्षाविशालापिप्पल्यस्तथा चित्रफला* भवेत् ॥ ३३ ॥

तथैव मधुकं दद्यात्पुष्टान्यामलकानि च ।

घृताढकं पचेदेतैः कल्कैरक्षसमन्वितैः ॥ ३४ ॥

क्षीरद्रोणे जलद्रोणे तत्सिद्धमवतारयेत् ।

शीतं परिशृतं चैव शर्कराप्रस्थसंयुतम् ॥ ३५ ॥

तुगाक्षीर्या च तत्सर्वं मतिमान्परिमिश्रयेत् ।

ततो मितं पिबेत्काले यथादोषं यथाबलम् ॥ ३६ ॥

मूत्रग्रन्थि मूत्रसादमुष्णवातमसृग्दस्म ।

विद्धिघातं निहन्त्येतद्वस्तिकुण्डलमध्मलम् ॥ ३७ ॥

सर्पिरेतत्प्रयुञ्जाना स्त्री गर्भं लभतेऽचिरात् ।

अस्रदोषे योनिदोषे मूत्रदोषे तथैव च ॥ ३८ ॥

प्रयोक्तव्यमिदं सर्पिश्चित्रकायं सदा बुधैः ।

इति चित्रकायं घृतं चरकात् ।

अथ धान्यगोक्षुरायं घृतम्—

धान्यगोक्षुरककाथकल्कसिद्धं घृतं हितम् ॥ ३९ ॥

मूत्राघातेषु कृच्छ्रेषु शुक्रदोषे च दारुणे ।

इति धान्यगोक्षुरायं घृतम् ।

* क. गोडम्बी ।

अथ स्वगुप्ताद्यं चूर्णम्—

स्त्रीणामतिप्रसङ्गेन शोणितं यस्य सिच्यते ॥ ४० ॥
 मैथुने परमश्वास्य बृंहणीयो विधिर्मतः ।
 ताम्रचूडवसातैलं हितं चोत्तरवस्तिषु ॥ ४१ ॥
 स्वगुप्ताफलमुद्गीकाकृष्णेशुरसितारजः ।
 समानमर्धभागानि क्षीरक्षौद्रघृतानि च ॥ ४२ ॥
 सर्वं सम्यग्विमथ्याक्षमात्रं लीढ्वा पयः पिबेत् ।
 हन्ति शुक्रक्षयोत्थांश्च दोषान्वन्ध्यासुतप्रदम् ॥ ४३ ॥

इति स्वगुप्ताद्यं चूर्णम् ।

अथ क्षौद्रार्धभागं घृतम्—

क्षौद्रार्धभागः कर्तव्यो भागः स्थात्क्षीरसर्पिषोः ।
 शर्करायाश्च चूर्णं च द्राक्षाचूर्णं च तत्समम् ॥ ४४ ॥
 स्वयंगुप्ताफलं चैव तथैवेशुरसस्य च ।
 पिप्पलीनां तथा चूर्णं समभागं प्रदापयेत् ॥ ४५ ॥
 तदैकस्थं समानीय खजेनोन्मथ्य च क्षणम् ।
 तस्य पाणितलं चूर्णं लिहेत्क्षीरं ततः पिबेत् ॥ ४६ ॥
 एतत्सर्पिः प्रयुञ्जानः शुद्धदेहो नरः सदा ।
 शुक्रदोषाञ्जयेत्सर्वान्ये वाऽपि भृशदुर्जयाः ॥ ४७ ॥
 जयेच्छोणितदोषांश्च वन्ध्या स्त्री गर्भमाप्नुयात् ।

इति क्षौद्रार्धभागं घृतम् ।

अश्वरीमूत्रकृच्छ्रेषु भेषजं यत्क्रिया च या ॥ ४८ ॥
 मूत्राघातेषु सर्वेषु कुर्यात्तत्सर्वमादरात् ।
 रसश्चन्द्रकलाख्यस्तु कृच्छ्रघ्नो यः पुरेरितः ।
 मूत्राघातेषु सर्वेषु स प्रयोज्यो विजानता ॥ ४९ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां मूत्राघातनिदानचिकित्साकथनं नामैकाधि-

कशततमस्तरङ्गः ॥ १०१ ॥

अथ अधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथाश्मरीनिदानमाह-

निरुध्य मूत्रमार्गं या यातनां जनयेद्मृशम् ।
कटिबस्तिप्रदेशेषु साऽश्मरीति निगद्यते ॥ १ ॥

तद्भेदानाह-

वातपित्तकफैस्तिस्रश्चतुर्थी शुक्रजा परा ।
प्रायः श्लेष्माश्रयाः सर्वा अश्मर्यः स्युर्यमोपमाः ॥ २ ॥
विशेषयेद्बस्तिगतं सशुक्रं मूत्रं सपित्तं पवनः कफं वा ।
यदा तदाऽश्मर्युपजायते तु क्रमेण पित्तेष्विव रोचना गोः ॥ ३ ॥
नैकदोषाश्रयाः सर्वा अथाऽऽसां पूर्वलक्षणम् ।

पूर्वरूपमाह-

बस्त्याध्मानं तदासन्नदेशेषु परितोऽतिरुक् ॥ ४ ॥
मूत्रे बस्तसगन्धित्वं मूत्रकृच्छ्रं ज्वरोऽरुचिः ।
सामान्यलिङ्गं रुद्धनामिसेवनीबस्तिमूर्धसु ॥ ५ ॥
विशीर्णधारं मूत्रं स्यात्तया मार्गानिरोधतः ।
तद्व्यपायात्सुखं मेहेदच्छं गोमेदकोपमम् ॥ ६ ॥
तत्संक्षोमात्क्षते सास्रमायासाच्चातिरुग्मवेत् ।
तत्र वाताद्मृशं चाऽऽर्तो दन्तान्खादति वेपते ॥ ७ ॥
गृह्णाति मेहनं नाभिं पीडयत्यनिशं कणनू ।
सानिलं मुञ्चति शकृन्मुहुर्मैहति बिन्दुशः ॥ ८ ॥
श्यावारुणाश्मरी चास्य स्याच्चिन्ता कण्टकैरिव ।
पित्तेन दह्यते बस्तिः पच्यमान इवोष्मवान् ॥ ९ ॥
मल्लातकास्थिसंस्थाना रक्तपीता सिताऽश्मरी ।
बस्तिर्निस्तुद्यत इव श्लेष्मणा शीतलो गुरुः ॥ १० ॥
अश्मरी महती सूक्ष्मा मधुवर्णाऽथ वा सिता ।
एता भवन्ति बालानां तेषामेव च भूयसा ॥ ११ ॥
आश्रयोपचयाल्पत्वाद्ब्रह्मणाहरणे सुखाः ।
शुक्राश्मरी तु महतां जायते शुक्रधारणात् ॥ १२ ॥



स्थानारुच्युतममुक्तं हि मुष्कयोरन्तरेऽमिलः ।

शोषयत्युपसंहृत्य शुक्रं तच्छुक्रमश्मरी ॥ १३ ॥

बस्तिरुक्कृच्छ्रमूत्रत्वं मुष्कश्चयथुकारिणी ।

तस्यामुत्पन्नमात्रायां शुक्रमेव विलीयते ॥ १४ ॥

पीडिते त्ववकाशेऽस्मिन्नश्मर्येव च शर्करा ।

अणुशो वायुना भिन्ना सा तस्मिन्ननुलोमगे ॥ १५ ॥

निरेति सह मूत्रेण प्रतिलोमे विवर्धते ।

मूत्रस्रोतःप्रवृत्ता सा सक्ता कुर्यादुपद्रवान् ॥ १६ ॥

दौर्बल्यं सदनं काश्यं कुक्षिशूलमरोचकम् ।

पाण्डुत्वमुष्णवातं च तृष्णां हृत्पीडनं वमिम् ॥ १७ ॥

प्रशूननाभिवृषणं बद्धमूत्ररुजाऽन्वितम् ।

अश्मरीक्षपयत्याशु सिकता शर्करान्विता ॥ १८ ॥

इत्यश्मरीनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

शुण्ठ्यादिकाथः—

वाताश्मरीपूर्वरूपे स्नेहपानं प्रशस्यते ।

शुण्ठ्यग्निमन्थपाषाणमिच्छिगुवरुणक्षुरैः ॥ १९ ॥

अभयारग्वधफलैः काथं कृत्वा विचक्षणः ।

रामठक्षारलवणचूर्णं दत्त्वा पिबेन्नरः ॥ २० ॥

वाताश्मरीं हन्ति कृच्छ्रमान्द्यमग्रेष्व तद्रजः ।

कट्यूरुगुदमेदस्थं वङ्क्षणस्थं च मारुतम् ॥ २१ ॥

इति शुण्ठ्यादिकाथः ।

अथ वरुणकाथः—

वरुणस्य त्वचं श्रेष्ठां शुण्ठीगोक्षुरसंयुताम् ।

काथयित्वा गृतं तस्या यवक्षारगुडान्वितम् ॥ २२ ॥

पीत्वा वाताश्मरीं हन्ति चिस्कालानुबन्धिनीम् ।

इति वरुणकाथः ।

अथ वीरतर्वादिः—

वीरतर्वादिकाथः पूर्वोक्तो वातजाश्मरीम् ॥ २३ ॥

सद्यो हन्ति यवक्षारगुडयुक्तो न संशयः ।

इति वीरतर्वादिः ।

क्षारान्यवागूः पेयाश्च कषायाणि पयांसि च ॥ २४ ॥

मोजनार्थं प्रयोज्यानि वाताश्मरिजुषां नृणाम् ।

अथ पित्ताश्मरी—

अथ पाषाणभेदकाथः—

पीत्वा पाषाणमित्काथं सशिलाजनुशर्करम् ॥ २५ ॥

पित्ताश्मरीं निहन्त्याहु वृत्रमिन्द्राशनिर्यथा ।

इति पाषाणभेदकाथः ।

कुशः काशः शरो गुन्द्रा सेत्कटो मोरटोऽश्ममित् ॥ २६ ॥

दर्भो विदारी वाराही शालिमूलं त्रिकण्टकः ।

मल्लुकः पाटला पाठा पत्तूरोत्थकुरण्टकः ॥ २७ ॥

पुनर्नवा शिरीषश्च कथितास्तेषु साधितम् ।

घृतं शिलाह्वामधुकबीजैरिन्दीवरस्य च ॥ २८ ॥

अपुसेर्वारुकानां च बीजैश्चाऽऽवापितं शुभम् ।

मिनत्ति पित्तसंभूतामश्मरीं क्षिप्रमेव तु ॥ २९ ॥

अथ श्लेष्माश्मरी—

शिङ्वादिः—

काथो निषीतः सक्षारः शिष्टुत्वग्वरुणत्वचोः ।

कफजामश्मरीं हन्ति शक्राशनिरिव क्षुभम् ॥ ३० ॥

इति शिङ्वादिः ।

गद्यम्—

वरुणार्तगलशिष्टुमधुशिष्टुतर्कारीमेषशृङ्गीपूतीकनक्तमालमोरटाग्नि-
मथ्यसैरेयकद्वयबिम्बिबसुकवशीरचित्रकशतावरीबिल्वाजशृङ्गीदर्भवृह-
तीद्वयमिति वरुणादिगणः श्लेष्माश्मरीमपोहति ॥ ३१ ॥

इति गद्यम् ।

काथचूर्णादियोगेन वरुणादिकृतेन च ।

वातश्लेष्माश्मरीशूलगुल्मोदावर्तविद्रधीन् ॥ ३२ ॥

इति श्लेष्माश्मरी ।

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

11. The eleventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

12. The twelfth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

13. The thirteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

14. The fourteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

15. The fifteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

16. The sixteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

17.

18.

19. The nineteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

20. The twentieth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

21. The twenty-first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

22.

23. The twenty-third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

24. The twenty-fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

25. The twenty-fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

26.

27. The twenty-seventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

28. The twenty-eighth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

29. The twenty-ninth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

अथ शुक्राश्मरी—

कूष्माण्डरसः—

शुक्राश्मयां तु सामान्यो विधिरश्मरिनाशनः ।
यवक्षारगुडोन्मिथं रसं पुष्पफलोद्भवम् ।
पिबेन्मूत्रविबन्धनं शर्कराश्मरिनाशनम् ॥ ३३ ॥

इति कूष्माण्डरसः ।

अथ तिलादिकाथः—

कूष्णानिर्गुण्डिकामूलं नारिकेलजलेन वा ।
पिष्ट्वा सम्यक्पिबेत्सद्यः शर्कराश्मरिनाशनम् ॥ ३४ ॥
तिलापामार्गकदलीपलाशयवविल्वजः ।
क्षारः पेयोऽविमूत्रेण शर्कराश्मरिनाशनः ॥ ३५ ॥

इति तिलादिकाथः ।

अथ पाषाणभेदादिकाथः—

पाषाणभिद्वरुणगोक्षुरकोरुबूक-
क्षुद्राद्वैयक्षुरकमूलकृतः कषायः ।
दध्ना युतो जयति मूत्रविबन्धशुक-
मुग्राश्मरीमपि च शर्करया समेताम् ॥ ३६ ॥

इति पाषाणभेदादिकाथः ।

अथ हरिद्रायोगः—

यः पिबेद्रजनीं सम्यक्सगुडं तुषवारिणा ।
तस्याऽऽशु चिररूढाऽपि यात्यस्तं मेदूशर्करा ॥ ३७ ॥

इति हरिद्रायोगः ।

अथ कुटजयोगः—

पिबतः कुटजं दध्ना पथ्यमन्नं च खादतः ।
निपतत्यचिरादस्य निश्चितं मेदूशर्करा ॥ ३८ ॥

इति कुटजयोगः ।



अथ त्रापुसबीजनालिकेरकुसुमयोगः—

त्रापुसबीजं पयसा पीत्वा वा नारिकेरजं कुसुमम् ।

दृढमूत्रशर्करावान्भवति सुखी कतिपयैर्दिवसैः ॥ ३९ ॥

इति त्रापुसबीजनालिकेरकुसुमयोगः ।

अथ वरुणक्वाथकुटजकल्कौ—

पलाशमभेदमधुकोरुबुमूलवासा-

शौण्डी*क्षुरानपि च रेणुकया समेकान् ।

निष्काश्य वारिणि पिबेत्सलिलाजमेनं

कृच्छ्राश्मरीति(!)विरितो मनुजः सुखार्थम् ॥ ४० ॥

तरुणवरुणवल्कक्वाथमापीय मर्त्यः

सगुडमतुलपीडामश्मरीमाशु हन्ति ।

अपि च कुटजमूलं धेनुदध्यम्बुपिष्टं

पिचुमितमवलीढं पातयत्यश्मरीकाम् ॥ ४१ ॥

इति वरुणक्वाथकुटजकल्कौ ।

अथ वरुणाद्यं घृतम्—

वरुणस्य तुलां क्षुण्णां जलद्रोणे विपाचयेत् ।

पादशेषं परिस्त्राव्य घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ४२ ॥

वरुणं कदलीं बिल्वं तृणजं पञ्चमूलकम् ।

अमृतामश्मभेदं च बीजं त्रापुसमेव च ॥ ४३ ॥

शतपर्वतिलक्षारौ पलाशक्षारमेव च ।

यूथिकापञ्चमूलानि लघून्यक्षसमं त्विदम् ॥ ४४ ॥

प्रत्येकं पेषयित्वा तु दद्यात्तु विपचेन्मृदु ।

ततोऽस्य मात्रां प्रपिबेद्देशकालाद्यपेक्षया ॥ ४५ ॥

जीर्णेनानु पिबेत्पिष्टं गुडं जीर्णं तु मस्तुना ।

अश्मरीं शर्करां हन्ति मूत्रकृच्छ्राण्यशेषतः ॥ ४६ ॥

इति वरुणाद्यं घृतम् ।

अथाश्मरीकण्डनो रसः—

पलाशरम्भातिलकारवलीयवाम्लिकाशैखरिकक्षपाणाम् ।

क्षारं समादाय कलाशमस्य रसं च गन्धं वरलोहमस्म ॥ ४७ ॥



द्वयोः समं सर्वमिदं विचूर्ण्य संस्थापयेदश्मरीकण्डनाख्यम् ।

चूर्णं तदक्षप्रमितं प्रलिह्य दध्नाऽनुपेयं वरुत्वगम्भः ॥

मुच्येत मर्त्योऽश्मरिशर्करातो निःसंशयं मृत्युमुखागतोऽपि ॥ ४८ ॥

इत्यश्मरीकण्डनो रसः ।

अथ त्रिविक्रमो रसः—

ताम्रमस्म त्वजाक्षीरैः पाच्यं तुल्यगतद्रवैः ।

तत्ताम्रं शुद्धसूतं च गन्धकं च समं समम् ॥ ४९ ॥

निर्गुण्डयास्तु द्रवैर्मद्यं दिनं तद्गो*लमन्धयेत् ।

यामैकं वालुकायन्त्रे पाच्यं योज्यं द्विगुञ्जकम् ॥ ५० ॥

बीजपूरस्य मूलं तु+ तज्जलं चानुपाययेत् ।

रसस्त्रिविक्रमो नाम माषिकेणाश्मरिप्रणुत् ॥ ५१ ॥

इति त्रिविक्रमो रसः ।

वन्ध्याकर्कोटिकामूलं भक्ष्यं क्षौद्रसितायुतम् ।

अश्मरीं हन्ति नो चित्रं कर्षमात्रं शिवोदितम् ॥ ५२ ॥

एतैरुपायैर्नाऽऽगच्छेदश्मरी या यमोपमा ।

तां स्थानाद्युक्तितो नीत्वा छेद्यस्थाने विचक्षणः ॥ ५३ ॥

शस्त्रवेत्ता समुच्छिद्य शस्त्रेणोक्तेन देहिनः ।

निष्कासयेत्प्रयत्नेन निर्वाति रक्षितस्य च ॥ ५४ ॥

एवं प्रयाति दुःसाध्याऽश्मरी देहक्षयंकरी ।

पथ्यमाह—

मुद्गा यवाश्च गोधूमाः शालग्रः क्षीरसर्पिषी ।

हिलिशः सैन्धवं चेति पथ्यमश्मरिभेदनम् ॥ ५५ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यामश्मरीनिदानचिकित्साकथनं नाम

अथिकशततमस्तरङ्गः ॥ १०२ ॥

* क. °लमाहरोदिति पाठान्तरम् । + क. चेति पाठान्तरम् ।

अथ अधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ प्रमेहनिदानम्—

प्रमेहा विंशतिस्तत्र श्लेष्मतो दश पित्ततः ।

षट् चत्वारोऽनिलात्तेषां क्रमाद्वक्ष्यामि लक्षणम् ॥ १ ॥

आस्यासुखं स्वप्नसुखं दधीनि ग्राम्योदकानूपरसाः पर्याप्ति ।

नवांनपानं गुडवैकृतं च प्रमेहहेतुः कफकृच्छ सर्वम् ॥ २ ॥

मेदश्च मांसं च शरीरजं च क्लेदं कफो वस्तिगतं प्रवृष्य ।

करोति मेहान्समुदीर्णमुष्णैस्तानेव पित्तं परित्वृष्य वाऽपि ॥ ३ ॥

क्षीणेषु दोषेष्ववकृष्य धातून् संवृष्य मेहान्कुरुतेऽनिलश्च ।

साध्याः कफोत्था दश पित्तजाः षड्-

याप्या न साध्याः पवनाच्चतुष्काः ॥ ४ ॥

समाक्रियत्वाद्द्विषमक्रियत्वान्महोत्पत्त्याच्च यथाक्रमं ते ।

कफः सपित्तः पवनश्च दोषा मेदोऽसृशुकाम्बुवसालसीकाः ॥

मज्जारसौजः पिशितं च वृष्याः प्रमेहिणां विंशतिरेव मेहाः ॥ ५ ॥

दन्तादीनां मलाढ्यत्वं प्राग्रूपं पाणिपादयोः ।

दाहश्चिकणता देहे तुट्स्वाद्वास्यं च जायते ॥ ६ ॥

सामान्यं लक्षणं तेषां प्रभूताविलमूत्रता ।

दोषवृष्याविशेषेऽपि तत्संयोगविशेषतः ॥ ७ ॥

मूत्रवर्णादिभेदेन भेदो मेहेषु कथ्यते ।

अच्छं बहुसितं शीतं निर्गन्धमुदकोपमम् ॥ ८ ॥

मेहत्युदकमेहेन किञ्चिच्चाऽऽविलपिच्छिलम् ।

इक्षो रसमिवात्यर्थं मधुरं चेक्षुमेहतः ॥ ९ ॥

सान्द्री भवेत्पर्युषितं सान्द्रमेहेन मेहति ।

सुरामेही सुरातुल्यमुपर्यच्छमधो घनम् ॥ १० ॥

संहृष्टरोमा पिष्टेन पिष्टवद्बहुलं सितम् ।

शुकामं शुक्रमिश्रं वा शुक्रमेही प्रमेहति ॥ ११ ॥

मूर्ताणून्सिकतामेही सिकतारूपिणो मलाम् ।

शीतमेही सुबहुशो मधुरं भृशशीतलम् ॥ १२ ॥

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

शनैः शनैः शनैर्मेही मन्दं मन्दं प्रमेहति ।
 लालातन्तुयुतं मूत्रं लालामेहेन पिच्छिलम् ॥ १३ ॥
 गन्धवर्णरसस्पर्शैः क्षारेण क्षारतोयवत् ।
 मीलमेहेन नीलाभं कालमेही मधीनिमम् ॥ १४ ॥
 हारिद्रमेही कटुकं हरिद्रासंनिभं दहन् ।
 विसं मास्त्रिष्ठमेहेन मस्त्रिष्ठासलिलोपमम् ॥ १५ ॥
 विस्रमुष्णं सलवणं रक्ताभं रक्तमेहतः ।
 वसामेही वसामिश्रं वसाभं मूत्रयेन्मुहुः ॥ १६ ॥
 मज्जामं मज्जामिश्रं वा मज्जामेही मुहुर्मुहुः ।
 कषायं मधुरं रूक्षं क्षौद्रमेहेन मेहति ॥ १७ ॥
 हस्ती मत्त इवाजसं मूत्रं वेगविवर्जितम् ।
 सलसीकं विबेद्धं च हस्तिमेही प्रमेहति ॥ १८ ॥

कफजानाह—

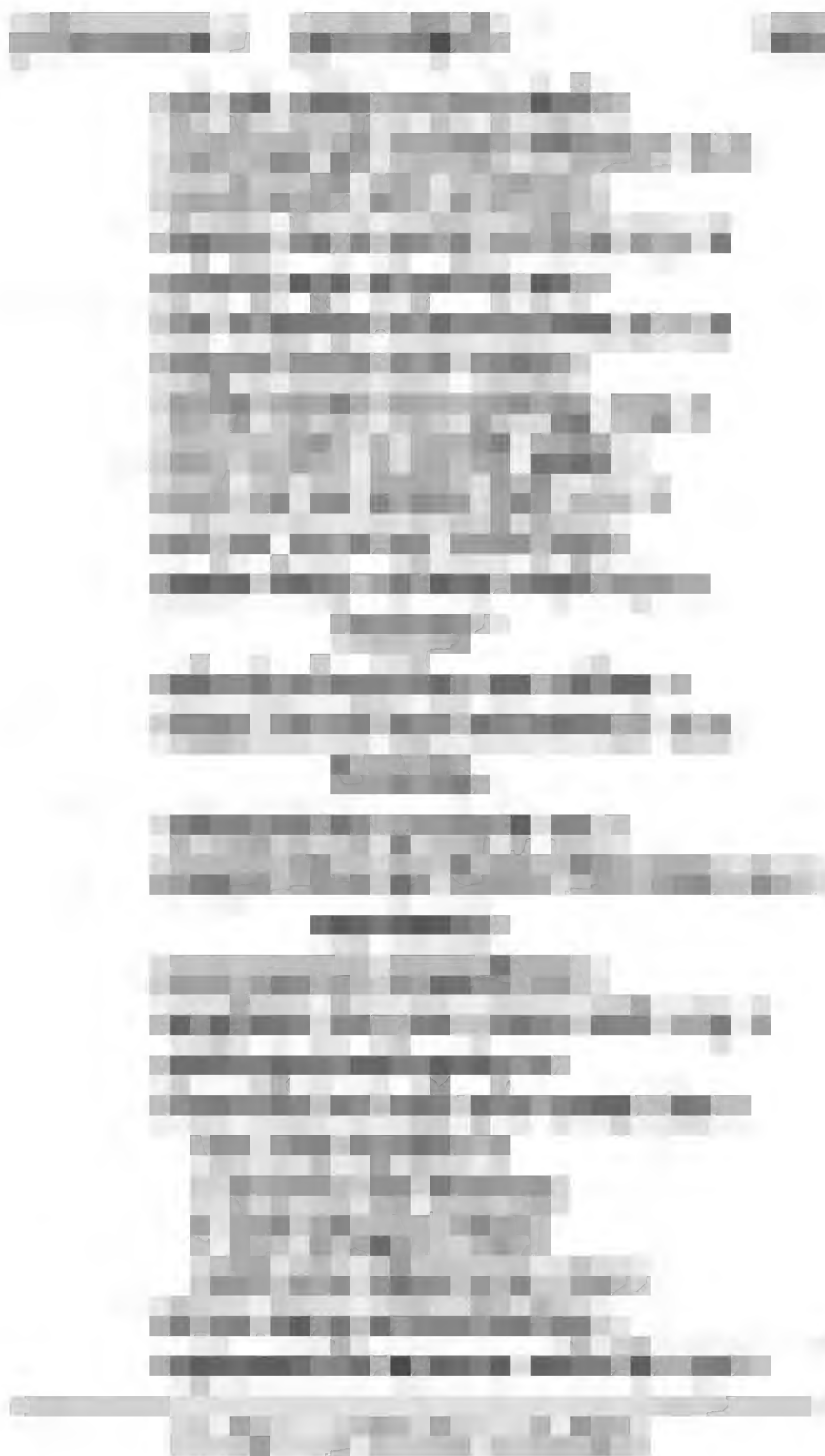
अविपाकोऽरुचिश्छर्दिर्निद्रा कासः सपीनसः ।
 उपद्रवाः प्रजायन्ते मेहानां कफजन्मनाम् ॥ १९ ॥

पित्तजानाह—

वस्तिमेहनैयोस्तोदो मुष्कावदरणं ज्वरः ।
 दाहस्तृष्णाऽम्लिका मूर्च्छा विड्भेदः पित्तजन्मनाम् ॥ २० ॥

असाध्यत्वमाह—

वातजानामुदावर्तः कम्पहृद्बलोलताः ।
 शूलमुन्निद्रता शोषः कासः श्वासश्च जायते ॥ २१ ॥
 यथोक्तोपद्रवारिष्टमतिप्रसृतमेव वा ।
 पिटकापीडितं गाढं प्रमेहो हन्ति मानवम् ॥ २२ ॥
 जातः प्रमेही मधुमेहिना वा
 न साध्यरोगः सहि बीजदोषात् ।
 ये चापि केचित्कुलजा विकारा
 भवन्ति तांश्च प्रवदैदसाध्यान् ॥ २३ ॥
 सर्व एव प्रमेहास्तु कालेनाप्रतिकारिणः ।
 मधुमेहत्वमायान्ति तदाऽसाध्या भवन्ति हि ॥ २४ ॥



कष्टसाध्यत्वमाह—

मधुमेहो मधुसमं जायते स किल द्विधा ।
 कृच्छ्रे धातुक्षयाद्वायौ दोषावृतपथेऽथ वा ॥ २५ ॥
 आवृतो दोषलिङ्गानि सोऽनिमित्तं प्रदर्शयेत् ।
 क्षीणः क्षीणात्पुनः पूर्णो भजते कृच्छ्रसाध्यताम् ॥ २६ ॥

मधुमेहमाह—

मधुरं यच्च सर्वेषु प्रायो मध्विव मेहति ।
 सर्वेऽपि मधुमेहाख्यां माधुर्याच्च तनोरतः ॥ २७ ॥

मेहशुद्धित्वमाह—

प्रमेहिणो यदा मूत्रमनाविलमपिच्छिलम् ।
 विशदं तिक्तकटुकं तदारोग्यं प्रचक्षते ॥ २८ ॥
 तोयेक्षुसान्द्रपिष्टाहसुराशुक्राह्णवालुकाः ।
 लालालवणसीताः स्युः साध्याः श्लेष्मोद्भवा दश ॥ २९ ॥
 क्षारासृङ्गीलमञ्जिष्ठाहरिद्राकृष्णसंज्ञकाः ।
 षडेते पित्तजाः कृच्छ्रसाध्यमेहाः प्रकीर्तिताः ॥ ३० ॥
 मधुसर्पिर्वसाहस्तिसंज्ञानां च चतुष्टयम् ।
 इमे त्वसाध्याश्चत्वारो दाहः स्यात्करपादयोः ॥ ३१ ॥
 मूत्रेषु वृद्धिवैवर्ण्यं नामसादृश्यलक्षणम् ।
 प्रायशः सर्वमेहेषु कीर्तितं चरकादिभिः ॥ ३२ ॥

दश पिटकाः प्रमेहजातास्तासां नामान्याह—

शराविका कच्छपिका जालिनी विनताऽलजी ।
 मसूरिका सर्षपिका पुत्रिणी सविदारिका ॥ ३३ ॥
 विद्रधिश्चेति पिटकाः प्रमेहोपेक्षया दश ।

शराविकामाह—

संधिमर्मसु जायन्ते मांसलेषु च धामसु ॥ ३४ ॥
 अन्तोन्नता मध्यनिम्ना श्यावा क्लेदरुजान्विता ।
 शरावमानसंस्थाना पिटका स्याच्छराविका ॥ ३५ ॥

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

14

15

16

17

18

19

20

21

22

कच्छपिकामाह—

अवगाढार्तिनिस्तोददाहा वस्तुपरिग्रहा ।

श्लक्ष्णा कच्छपपृष्ठाभा पिटका कच्छपी मता ॥ ३६ ॥

जालिनीमाह—

स्तब्धा शिराजालिनीति स्निग्धस्रावा महास्रहा ।

रुजानिस्तोदबहुला सूक्ष्मच्छिद्रा च जालिनी ॥ ३७ ॥

विनतामाह—

अवगाढरुजाक्लेहा पृष्ठे वा जठरेऽपि वा ।

महती पिटका नीला सा बुधैर्विनता स्मृता ॥ ३८ ॥

अलजीमाह—

दहन्ती त्वचमुस्थाने भृशं कष्टा विसर्पिणी ।

रक्तासितातितृट्स्फोटदाहमोहज्वराऽलजी ॥ ३९ ॥

मसूरिकामाह—

मसूराकृतिसंस्थाना विज्ञेया तु मसूरिका ।

सर्षपिकामाह—

सर्षपामानसंस्थाना क्षिप्रपाका महारुजा ॥ ४० ॥

सर्षपा सर्षपातुल्यपिटका परिवारिता ।

पुत्रिणीमाह—

पुत्रिणी महती भूरि सा सूक्ष्मपिटकावृता ॥ ४१ ॥

विदारिकामाह—

विदारी कन्दवद्वृत्ता कठिना च विदारिका ।

विद्रधिकामाह—

विद्रधिर्लक्ष्यतेऽन्यत्र तत्राऽऽद्या पिटका च या ॥ ४२ ॥

विद्रधेर्लक्षणैर्युक्ता ज्ञेया विद्रधिका तु सा ।

पुत्रिणी च विदारी च दुःसहा बहुमेदसः ॥ ४३ ॥

१ ग. °ह सदाहा कूर्मसंस्थाना ज्ञेया कच्छपिका बुधैः । २ ग. °ह जालिनी तीव्रदाहा तु मांसजालसमावृता । ३ ग. °ह रक्ताऽसिता स्फोटयिता दाहणा त्वलजी भवेत् । ४ ग. °ह गौरस-
र्षपसंस्थाना तत्प्रमाणा च सर्षपा । ५ ग. °ह महत्यल्पाचिता ज्ञेया पिटका साऽपि पुत्रिणी ।

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

अथ जन्मजाः पिटकाः—

ये जन्मजाः स्मृता मेहास्तेषामेतास्तु जन्मजाः ।
विना प्रमेहमप्येता जायन्ते दुष्टमेदसः ॥ ४४ ॥
तावच्चैता न लक्ष्यन्ते यावद्वस्तुपरिग्रहः ।

पिटकाया असाध्यत्वमाह—

गुदे हृदि शिरस्यंसे पृष्ठे मर्मसु चोत्थिताः ॥ ४५ ॥
सोपद्रवा दुर्बलाग्नेः पिटकाः परिवर्जयेत् ।

स्त्रियो न प्रमेहन्तीत्याह—

रजःप्रसेकान्नारीणां मासि मासि विबुध्यति ॥ ४६ ॥
कृत्स्नं शरीरं दोषाश्च न प्रमेहन्त्यतः स्त्रियः ।

पिटकानामुपद्रवाः—

मूर्छाछर्दिज्वरश्वासकासवीसर्पगौरवैः ॥ ४७ ॥
उपद्रवैरुपेतो यः प्रमेही चाप्रतिक्रियः ।
तुट्श्वासमांससंकोचमोहहिकामद्वजराः ॥
विसर्पमर्मसंरोधाः पिटकानामुपद्रवाः ॥ ४८ ॥

हारिद्रवणं रुधिरं च मूत्रं विना प्रमेहस्य तु पर्वरूपैः ।
यो मेहपेत्तं न वदेत्प्रमेहं स रक्तपित्तस्य हि विप्रकोपः ॥ ४९ ॥
स्वेदोऽङ्गगन्धः शिथिलत्वमङ्गे शय्यासनस्वप्नसुखाभिषङ्गः ।
हृन्नेत्रजिह्वाभ्रवणोपदेहे घनाङ्गता केशनखातिवृद्धिः ॥ ५० ॥

शीतप्रियत्वं गलतालुशोषो माधुर्यमास्ये करपाददाहः ।
मविष्यतो मेहगणस्य रूपं मूत्रेऽभिधावन्ति पिपीलिकाश्च ॥ ५१ ॥
दृष्ट्वा प्रमेहं मधुरं सपिच्छं मधूपमं स्याद्विविधोपचारः ।
संपूरणाद्वा कफसंभवः स्यात्क्षीणेषु दोषेष्वनिलात्मको वा ॥ ५२ ॥

सपूर्वरूपाः कफपित्तमेहाः

क्रमेण ये वातकृताश्च मेहाः ।

साध्या न ते पित्तकृतास्तु याप्याः

साध्यास्तु मेदो यदि नातिदुष्टम् ॥ ५३ ॥

इति प्रमेहनिदानम् ।

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and activities. It emphasizes that this is crucial for ensuring transparency and accountability in the organization's operations.

2. The second part outlines the specific procedures and protocols that must be followed when handling sensitive information. This includes guidelines on data storage, access control, and the secure disposal of documents.

3. The third section details the roles and responsibilities of various staff members involved in the record-keeping process. It clarifies who is responsible for data entry, verification, and the overall management of the records system.

4. The fourth part addresses the regularity and frequency of audits and reviews. It states that these checks are essential to identify any discrepancies or errors and to ensure that the records remain up-to-date and reliable.

5. The fifth section discusses the importance of training and ongoing education for the staff. It highlights that keeping abreast of the latest technologies and best practices in record management is vital for the organization's success.

6. The sixth part covers the legal and regulatory requirements that govern the handling of records. It ensures that the organization remains compliant with all relevant laws and standards, thereby avoiding potential legal liabilities.

7. The seventh section provides information on the resources and support available to the staff. This includes access to necessary software, hardware, and expert advice to facilitate the efficient management of records.

8. The eighth part discusses the importance of maintaining a clear and organized filing system. It provides tips on how to categorize and label documents to make retrieval and management much easier.

9. The ninth section addresses the issue of data security and the protection of information from unauthorized access or loss. It outlines the necessary measures to safeguard the organization's data against cyber threats and physical damage.

10. The final part of the document summarizes the key points and reiterates the commitment to maintaining high standards of record-keeping. It encourages all staff members to take their responsibilities seriously and to work together to ensure the organization's records are always in good order.

अथ प्रमेहचिकित्सा—

श्यामाककोद्रवोद्दालगोधूमचणकाढकी ।
शालिमुद्गकुलत्थाश्च मेहिनां देहिनां हिताः ॥ ५४ ॥

यवप्रशस्तिमाह—

मेदोघ्ना बद्धमूत्राश्च समाः सर्वेषु धातुषु ।
यवास्तस्मात्प्रशस्यन्ते प्रमेहेषु विशेषतः ॥ ५५ ॥

मेहेषु हितमाह—

तिक्तशार्कं पटोलानि जाङ्गलामिषजा रसाः ।
सैन्धवं मरिचं चैव मेहिनामाहरेद्भिषक् ॥ ५६ ॥

निषेधः—

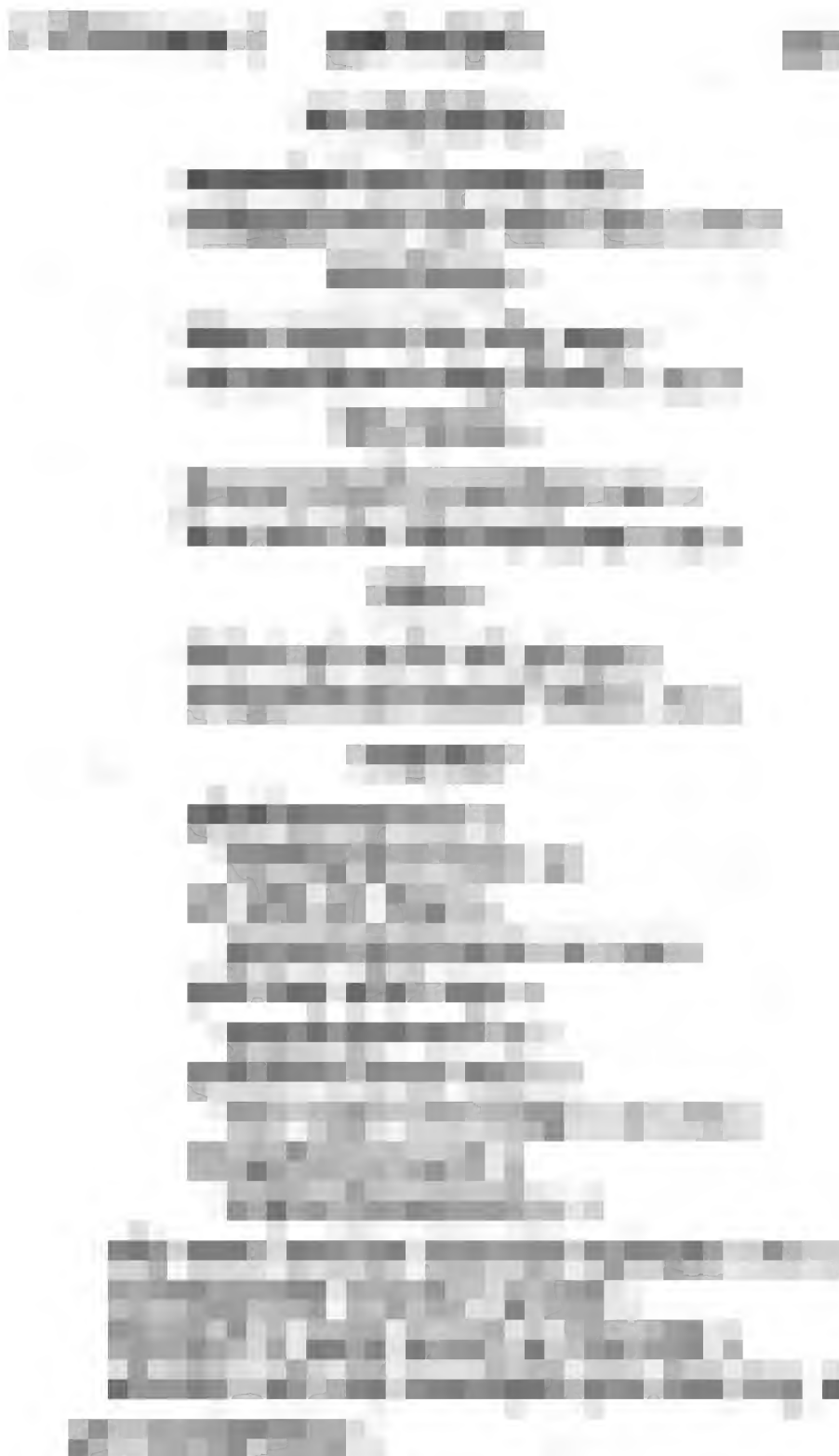
सौवीरकं सुरां तक्रं तैलं क्षीरं घृतं गुडम् ।
अम्लेशुरसपिष्टान्नतोयमांसानि वर्जयेत् ॥ ५७ ॥

उपचारमाह—

हरीतकीकदफलमुस्तलोध १
पाठाविडङ्गार्जुनघन्वयासाः २ ।
उभे हरिद्रे तगरं विडङ्गं ३
कदम्बशालार्जुनदीप्यकाश्च ॥ ४ ॥ ५८ ॥
दार्वा विडङ्गं खदिरो धवश्च ५
सुराहकुठार्जुनचन्दनानि ६ ।
काव्यग्निमन्थौ त्रिफला सपाठा ७
पाठा च मूर्वा च तथाऽश्वदंष्ट्रा ॥ ८ ॥ ५९ ॥
यवान्युशीराण्यभयागुडूची ९
जम्बूशिवाचिप्रकसतपर्णाः १० ।

पादैः कषायाः कफमेहिनां जैर्दशोपदिष्टा मधुसंप्रयुक्ताः ॥ ६० ॥
जलप्रमेहेशुरसप्रमेहे सान्द्रप्रमेहे च सुराप्रमेहे ।
पिष्टप्रमेहेऽपि च शुक्रमेहे क्रमादमी स्युः सिकताप्रमेहे ॥
शीतप्रमेहे च शनैः प्रमेहे लालाप्रमेहेऽपि सुखाय तेषाम् ॥ ६१ ॥

इति कफप्रमेहचिकित्सा ।



अथ पित्तप्रमेहे-

उशीरलोधासुरचन्दनानामुशीरमुस्तामलकामयानाम् ।
 पटोलनिम्बामलकामृतानां मुस्ताभयामुष्ककवृक्षकाणाम् ॥ ६२ ॥
 लोधाम्बुकालीयकधातकीनां विश्वार्जुनानां मिशिसोत्पलानाम् ।
 माञ्जिष्ठहारिद्रकनीलकालक्षारासमेहे क्रमशः कषायाः ॥ ६३ ॥

अथ वातप्रमेहेषु-

अग्निमन्थकषायं तु वसामेहे प्रयोजयेत् ।
 पाठाशिरीषदुस्पर्शमूर्वाकिंशुकतिन्दुकैः ॥ ६४ ॥
 कपित्थेन भिषक्कुर्यात्काथं हस्तिप्रमेहके ।
 पूगारिमेदयोः काथः सक्षौद्रः क्षौद्रमेहहा ॥ ६५ ॥
 छिन्नावह्निकषायेण पाठाकुटजरामठम् ।
 तिक्तां कुष्ठं च संचूर्ण्य सर्पिर्मेहे पिवेन्नरः ॥ ६६ ॥

अथ द्वन्द्वजप्रमेहेषु-

कम्पिलसप्तच्छदशालजानि बैभीतरोहीतककौटजानि ।
 पुष्पाणि दध्मश्च विचूर्णितानि क्षौद्रेण लिह्यात्कफपित्तमेहे ॥ ६७ ॥
 हरीतकीकट्फलमुस्तलोधकुचन्दनोशीरकृतः कषायः ।
 क्षौद्रेण युक्तः कफवातमेहं निहन्ति पीतारजसा च पीतः ॥ ६८ ॥
 विडङ्गरजनीद्वन्द्वखदिरोशीरपूगजः ।
 काथः पीतः प्रगे हन्ति मेहं पित्तानिलोद्भवम् ॥ ६९ ॥

अथ दुष्टरक्तजप्रमेहे-

काथः खर्जूरकाश्मर्यतिन्दुकास्थ्यमृताकृतः ।
 सुहिमः पीतमात्रस्तु सक्षौद्रो रक्तमेहहा ॥ ७० ॥

अथ सामान्यप्रमेहचिकित्सा-

शिवादिकाथः-

शिवापथ्याक्षाम्भोधरकिलिमदावीसुरसुरा-
 कषायं सक्षौद्रं रजनिरजसा चापि मिलितम् ।
 निपीय प्रत्यूषे जयति मनुजो मेहनिवहं
 भृशं मीमं पथ्यप्रभुगिभकदम्बं हरिरिव ॥ ७१ ॥

इति शिवादिकाथः ।

10

11

12

13

14

15

16

17

18

19

20

21

22

23

24

25

26

अथ त्रिफलाद्यं चूर्णम्—

त्रिफलारजःसमानं रजो रजन्याः सितासमानेन ।
मधुना च लीढमेतत्प्रमेहनामापि नाशयति ॥ ७२ ॥
इति त्रिफलाद्यं चूर्णम् ।

अथ कतकयोगः—

अक्षप्रमाणं कतकस्य बीजं तक्रेण पीतं मधुना सहैव ।
कटुप्रमेहान्पिटकाभिधानान्निहन्ति कल्केन युतं च सद्यः ॥ ७३ ॥
इति कतकयोगः ।

अथ त्रिफलादिकाथो योगशतात्—

अश्वत्थबीजं हरिणस्य शृङ्गं तक्रेण पीतं मधुना सहैव ।
प्रमेहजालं सहसैव हन्याद्दशाननं दाशरथी यथैव ॥ ७४ ॥
स्निग्धं वान्तं विरक्तं च निरूढं पाययेद्रसम् ।
धात्र्याः सर्वप्रमेहेषु निशाक्षौद्रसमन्वितम् ॥ ७५ ॥
फलत्रिकं दारुनिशां विशालां
मुस्तां च निष्काथ्य निशांशकल्कम् ।
पिबेत्कषायं मधुसंप्रयुक्तं
सर्वप्रमेहेषु चिरोत्थितेषु ॥ ७६ ॥
इति त्रिफलादिकाथो योगशतात् ।

अथ न्यग्रोधाद्यं चूर्णम्—

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थश्योनाकारग्वधासनम् ।
आम्रं कपित्थं जम्बू च प्रियालं ककुभं धवम् ॥ ७७ ॥
मधूकं मधुकं लोध्रं वरुणं पारिभद्रकम् ।
पटोलं मेषशृङ्गीं च दन्तीं चित्रकमानकम् ॥ ७८ ॥
करञ्जं त्रिफलां शक्रं मल्लातकफलं तथा ।
एतानि समभागानि श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत् ॥ ७९ ॥
न्यग्रोधाद्यमिदं चूर्णं मधुना सह लेहयेत् ।
फलत्रयरसं चानु पिबेन्मूत्रं विशुध्यति ॥ ८० ॥

* क. 'माढकी इति पाठान्तरम् ।



एतेन विंशतिर्मेहा मूत्रकृच्छ्राणि यानि च ।
प्रशमं यान्ति वेगेन पिटका न च जायते ॥ ८१ ॥

इति न्यग्रोधाद्यं चूर्णम् ।

अथाऽऽमलकाद्यवलेहिका—

शिलाजतु नरः पीत्वा प्रातः क्षीरसिताशुतम् ।
मुच्यते सर्वमेहेभ्यस्त्रिसप्तदिवसैर्नरः ॥ ८२ ॥

चूर्णं निशाया मधुना समेतं धात्रीफलानां स्वरसेन मिश्रम् ।
प्रलीढमल्पैर्दिवसैर्निहन्ति प्रमेहसंज्ञानखिलान्विकारान् ॥ ८३ ॥

इत्यामलकाद्यवलेहिका ।

अथ गोक्षुरादिगुटी—

त्रिकण्टत्रिफलातुल्यं गुग्गुलुं कुड्डयेद्भिषक् ।
गोक्षुरक्काथसंयुक्तं गुटिकामस्य कारयेत् ॥ ८४ ॥
दोषकालबलापेक्षी भक्षयेद्वाऽनुलोमिनीम् ।
न चात्र परिहारोऽस्ति कर्म कुर्याद्यथेप्सितम् ॥ ८५ ॥
प्रमेहान्वातरोगांश्च वातशोणितमेव च ।
मूत्राघातं मूत्रदोषं प्रदरं चाऽऽशु नाशयेत् ॥ ८६ ॥

इति गोक्षुरादिगुटी ।

अथ दाडिमाद्यं घृतम्—

दाडिमस्य च बीजानि कृमिघ्नस्य च तण्डुलाः ।
[* रजनी चर्विकाऽजाजी नागरं त्रिफला कण्ठ ॥ ८७ ॥
त्रिकण्टकस्य च फलं यवानी धान्यकं तथा ।
वृक्षाम्लचपलाकोलसिन्धूद्भवसमायुतैः ॥ ८८ ॥
कल्कैरक्षसमैरेभिर्घृतप्रस्थं विषाचयेत् ।]
कृच्छ्रं सुदारुणं चैव हन्यादेतन्न संशयः ॥ ८९ ॥
विवन्धानाहशूलघ्नं कामलाज्वरनाशनम् ।
दाडिमाद्यं घृतं नाम दक्षाभ्यां परिकीर्तितम् ॥ ९० ॥

इति दाडिमाद्यं घृतम् ।

Abstract

[illegible]

100

100

अथ सिंहामृतं घृतम्—

कण्टकार्या गुडूच्याश्च संहरेच्च शतं शतम् ।
 संक्षुद्योलूखले विद्धांश्चतुर्दोणेऽम्भसः पचेत् ॥ ९१ ॥
 तच्च पादावशेषेण घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।
 त्रिकटुत्रिफलारास्त्रा विडङ्गान्वथ चित्रकम् ॥ ९२ ॥
 काश्मर्याणां च मूलानि पूतिकस्थ त्वगेव च ।
 कैलिङ्गमिति सर्वाणि श्लक्ष्णपिष्टानि कारयेत् ॥ ९३ ॥
 अस्य मात्रां पिबेत्प्राज्ञः शालिभिः पयसा हितैः ।
 प्रमेहं मधुमेहं च मूत्रकृच्छ्रं मगंदरम् ॥ ९४ ॥
 आलस्यं चान्त्रवृद्धिं च कुष्ठरोगं विशेषतः ।
 क्षयं चापि निहन्त्येतन्नाम्ना सिंहामृतं घृतम् ॥ ९५ ॥

इति सिंहामृतं घृतम् ।

अथ धन्वन्तरिसर्पिः—

वृक्षमूलं करञ्जौ द्वौ देवदारु हरीतकी ।
 वर्षाभूवरुणं दन्ती चित्रकं सपुनर्नवम् ॥ ९६ ॥
 सुधानिम्बकदम्बाश्च बिल्वं मल्लातकानि च ।
 शठी पुष्करमूलं च पिप्पलीमूलमेव च ॥ ९७ ॥
 पृथग्दशपलान्भागानेतांस्तोयार्मणे पचेत् ।
 यवकोलकुलस्थानां प्रस्थं प्रस्थं विपाचयेत् ॥ ९८ ॥
 तेन पादावशेषेण घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।
 निचुलं त्रिफला मार्गी रोहिषं गजपिप्पली ॥ ९९ ॥
 शृङ्गवेरं विडङ्गानि वचा कम्पिलकं तथा ।
 गर्मेणानेन तत्सिद्धं पाययेच्च यथाबलम् ॥ १०० ॥
 एतद्धान्वन्तरं नाम्ना विख्यातं सर्पिरुत्तमम् ।
 कुष्ठं प्रमेहं गुल्मांश्च श्वयथुं वातशोणितम् ॥ १०१ ॥
 घृहीहोदराणि चाशांसि विद्रधीन्पिष्टकाश्च याः ।
 अपस्मारं तथोन्मादं सर्पिरेतन्नियच्छति ॥ १०२ ॥
 पृथक्तोयार्मणे क्षुण्णं पक्कव्यं च शतं शतम् ।
 शतत्रयाधिकं तोयमुत्सर्गक्रमतो भवेत् ॥ १०३ ॥

इति धन्वन्तरिसर्पिः ।



अथ गुडूचीयोगः—

पीत्वा सक्षौद्रममृतारसं जयति मानवः ।

प्रमेहं विंशतिविधं मृगेन्द्र इव दन्तिनम् ॥ १०४ ॥

इति गुडूचीयोगः ।

अथ शाल्मलीयोगः—

शाल्मलित्वग्रसः क्षौद्ररजनीचूर्णसंयुतः ।

पीतो निहन्ति निखिलान्प्रमेहानल्पवासरैः ॥ १०५ ॥

इति शाल्मलीयोगः ।

अथ त्रिफलादियोगः—

मधुना त्रिफलाचूर्णमथ वाऽश्मजतूद्भवम् ।

लोहजं वाऽभयोत्थं वा लिह्यान्मेहनिवृत्तये ॥ १०६ ॥

इति त्रिफलादियोगः ।

अथ गन्धकयोगः—

गन्धकं गुडसंयुक्तं कर्षं भुक्त्वा पयः पिबेत् ।

विंशतिस्तेन नश्यन्ति प्रमेहपिडका अपि ॥ १०७ ॥

इति गन्धकयोगः ।

अथ गुडूचीयोगः—

सक्षौद्रं रजनीचूर्णममृताया रसं पिबेत् ।

सर्वप्रमेहनाशाय पथ्यमुक्तं च शीलयेत् ॥ १०८ ॥

इति गुडूचीयोगः ।

अथ चन्द्रप्रभा वटी—

अष्टावष्टौ प्रकुञ्चाः पुरागिरिजतुनोर्द्वौ तु लौहात्सिताया-

श्वेतवारः कुम्भदन्तीत्रिसुरभिकतुगा बिल्व एकोऽथ कर्षम् ।

सस्यब्दोग्राहवेल्लत्रिलवणनिशियुक्क्षारयुक्ताप्यभौर्गी-

भूनिम्बातीविषाषट्कटुककरिकणादारुचन्द्रप्रभातैः ॥ १०९ ॥

भुक्त्वा चन्द्रप्रभाख्यामुषसि किल वटीं क्षौद्रसर्पिःसमेतां

हन्यान्मेहान्गुदार्शःक्षयमपि च रजःशुक्रजान्दन्तरोगान् ।

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

पाण्डुं कण्डूं च शूलं कटिरुजमुदरानाहकृच्छ्राणि मूत्रा-
घातप्लीहान्त्रवृध्यर्बुदकसनमहन्मेहनग्रन्थिकुष्ठम् ॥ ११० ॥

इति चन्द्रप्रभा वटी ।

अथ पूगपांसुर्योगरत्नावलितः—

हेमाम्भोधरचन्दनं त्रिकटुकं धात्री प्रियाला कुहू-
लंजालुस्त्रिसुगन्धि जीरकयुगं शृङ्गाटकं वंशजम् ।
जातीकोशलवङ्गधान्यबहुला प्रत्येकमक्षोन्मिताः
पूगस्याष्टपलं विचूर्ण्य च पयः प्रस्थत्रये संपचेत् ॥ १११ ॥
गोसर्पिः कुडवं सितार्धकतुलां धात्रीवरींश्चञ्जलिं
मन्दाग्नौ विपचेद्दिषक्शुभदिने सुस्निग्धमाण्डे क्षिपेत् ।
तं खादेत्तु यथाग्निं वासरमुखे मेहांश्च जीर्णज्वरं
पित्तं साम्लमसृक्मृतिं च गुद्जां वक्त्राक्षिनासासु च ।
मन्दाग्निं च विजित्य पुष्टिमतुलां कुर्याच्च शुक्रप्रदौ
योगो गर्भकरः परो गदहरः स्त्रीणामसृग्दोषजित् ॥ ११२ ॥

इति पूगपांसुर्योगरत्नावलितः ।

अथ बृहत्पूगपाकः—

पच्यात्पूगरजो दशाश्रममलं मार्द्वं कटाहेऽग्निना
भेदेनाष्टगुणे पयस्यपि घृतप्रस्थार्धकेऽस्मिन्घने ।
जातीकोशफले च षट्कटुसटीद्राक्षावरावानरी-
चातुर्जाततुगाब्दधान्यमुसलीदीप्याजयष्टीक्षुरम् ॥ ११३ ॥
अश्माशीतबलात्रयं करिकणामांसीवरीमेथिका-
शृङ्गाटं मिशिजीरवारिविजयागोक्षुरखज्जीरकम् ।
धात्रीशाल्मलिकोलचोरकनकं कुम्भत्रिनेत्राभ्रकं
पृथ्वीकाभयवङ्गदेवकुसुमं दद्यात्पृथक्कार्षिकम् ॥ ११४ ॥
पञ्चाशत्पलखण्डपाकलालितः स्यात्पूगपाकः पृथु-
वृध्यः पाण्ड्यहरः प्रमेहदलनो रेतोविवृद्धिप्रदः ।
पित्ताग्ने प्रदरे क्षये करपदे दाहेऽम्लपित्ते वपु-
दाहे पाण्डुगदे हुताशनहताघतेषु शस्तो मतः ।

इति बृहत्पूगपाकः ।

1. Introduction

The purpose of this study is to investigate the effects of the proposed system on the performance of the participants. The study was conducted in a controlled environment and the results are presented in the following sections.

2. Methodology

The study was conducted in a controlled environment and the results are presented in the following sections. The participants were divided into two groups: the control group and the experimental group. The control group was given the standard system and the experimental group was given the proposed system. The performance of the participants was measured using a series of tasks and the results were compared between the two groups.

3. Results

3.1 Performance

The performance of the participants was measured using a series of tasks and the results were compared between the two groups. The results show that the proposed system significantly improved the performance of the participants compared to the standard system. The improvement was observed in all the tasks and was statistically significant.

4. Conclusion

अथ नागभस्मयोगः—

शुद्धस्य च मृतस्याहिरजो बलमितं लिहेत् ।

सनिशामलकक्षौद्रं सर्वमेहप्रशान्तये ॥ ११५ ॥

इति नागभस्मयोगः ।

अथ वङ्गभस्मयोगः—

शाल्मलित्वग्रसोपेतं सक्षौद्रं रजनीरजः ।

वङ्गभस्म हरेन्मेहान्पञ्चोनन इव द्विपान् ॥ ११६ ॥

इति वङ्गभस्मयोगः ।

अथाभ्रकयोगः—

निश्चन्द्रमभ्रकं भस्म सवरारजनीरजः ।

मधुना लीढमचिरात्प्रमेहविनिवृत्तये ॥ ११७ ॥

इत्यभ्रकयोगः ।

अथ हरिशंकरो रसः—

सूताभ्रमामलजलैः सप्तवारं विभावयेत् ।

हरिशंकरसंज्ञः स्याद्रसः सर्वप्रमेहनुत् ॥ ११८ ॥

इति हरिशंकरो रसः ।

अथ मेघनादो रसः—

सूतं कान्तं गन्धतीक्ष्णं ताप्यं व्योषं फलत्रिकम् ।

शिलाजतु शिलां कोलबीजं रात्रिकपित्थकम् ॥ ११९ ॥

त्रिःसप्तकृत्वो भृङ्गाद्धिर्भावयेन्निष्कसंज्ञकम् ।

मधुना मेघनादोऽयं सर्वमेहान्विनाशयेत् ॥ १२० ॥

महानिम्बस्य बीजानि पेषयेत्तण्डलाम्बुना ।

सघृतान्यचिराद्भ्र*न्युः पानान्मेहांश्चिरोत्थितान् ॥ १२१ ॥

इति मेघनादो रसः ।

अथ बोलबद्धो रसः—

गुडचिकासत्त्वसमो रसेन्द्रो गन्धः समांशो निखिलेन बर्बरः ।

विमर्दयेच्छाल्मलिकामवैर्द्रवैः स्याद्बोलबद्धो मधुयुक्त्रिवलः ॥ १२२ ॥

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

पित्ते तु चाम्ले मधुशर्कराभ्यां मेहे प्रदेयो मधुपिप्पलीभ्याम् ।
 रक्ताशसां नाशकृदेष सूतः पित्ताशसां चैव तु विद्रधेश्च ॥
 रक्तप्रमेहस्य खुडस्य चापि स्त्रीणां गदस्यापि मगंदरस्य ॥ १२३ ॥
 इति बोलबद्धो रसः ।

अथ लघुवङ्गेश्वरः—

रसस्य भस्मना तुल्यं वङ्गभस्म प्रयोजयेत् ।
 अस्य गुञ्जाद्वयं हन्ति मेहान्त्रात्रिमधुप्लुतम् ॥ १२४ ॥

इति लघुवङ्गेश्वरः ।

अथ प्रमेहकुठारो रसः—

एला सकर्पूरसिता सधात्रीजातीफलं गोक्षुरशाल्मलित्वक् ।
 सूतेन्द्रवङ्गायसमस्म चैतत्समर्दयेत्तुल्यलवङ्गनीरैः ॥ १२५ ॥
 ततो भवत्येष रसः प्रमेहकुठारनामा विदितप्रभावः ।
 निष्कार्धमात्रो मधुनाऽवलीढो निहन्ति मेहान्खिलानुदग्रान् ॥ १२६ ॥
 इति प्रमेहकुठारो रसः ।

अथ सर्वेश्वरो रसः—

ताप्यष्टङ्कणहेमतारस्सकं गन्धं यथामामिकं
 ताग्रं विद्रुमशुक्तिजं शिखरिजं द्विघ्नं तथा भागतः ।
 वङ्गायोहिरसेन्द्रभूतिगगनं वैक्रान्तकान्तं त्रिशत्
 तत्समर्दय विभावयेत्त्रिदिवसं यष्टीत्रिजाताम्बुभिः ॥ १२७ ॥
 मुस्तोशीरवरावृषामृतसठीकन्याविदारीवरी-
 नीरैर्गोपयसेक्षुरैश्च मुसलीगोलं पचेद्यामकम् ।
 मन्दाग्नौ च मृङ्गाङ्कवत्पुनरसौ भाव्यस्ततो भावने
 द्वे कस्तूरिमृगाङ्कयोर्मधुकणायुक्तोऽस्य वल्लो जयेत् ॥ १२८ ॥
 मेहाशीग्रहणीज्वरोदरमरुद्व्याधिं रुजं कामलां
 षाण्डूकुष्ठमगंदरं ज्वरगणं कृच्छ्रं च शुक्रक्षयम् ॥ १२९ ॥
 इति सर्वेश्वरो रसः ।

प्रमेहपिटकानां तु प्राक्कार्यं रक्तमोक्षणम् ।

पाटनं तु विपकानां तासां फाने प्रशस्यते ॥ १३० ॥

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that proper record-keeping is essential for the company's financial health and for providing reliable information to stakeholders.

2. The second part of the document outlines the procedures for handling customer inquiries and complaints. It stresses the need for prompt and courteous responses to ensure customer satisfaction and loyalty.

3. The third part of the document details the company's policy on employee conduct and performance. It sets clear expectations for all employees and provides guidelines for addressing any issues that may arise in the workplace.

4. The fourth part of the document describes the company's commitment to environmental sustainability and social responsibility. It outlines the various initiatives and programs in place to minimize the company's carbon footprint and to support the local community.

क्वाथो व्रणघ्नोऽत्र वस्तिर्मूत्रैस्तीक्ष्णैस्तु* मोक्षणम् ।
 व्रणप्रतिक्रिया सर्वा कार्याऽत्रापि भिषग्वरैः ॥ १३१ ॥
 प्रमेहिणो यदा मूत्रमनाविलमपिच्छिलम् ।
 विशदं तिक्तकटुकं तदाऽऽरोग्यं प्रचक्षते ॥ १३२ ॥
 इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां प्रमेहपित्तकानिदानचिकित्साकथनं नाम
 चतुरधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १०३ ॥

अथ चतुरधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ मेदोरोगनिदानम्—

अव्यायामादिवास्वप्रश्लेष्मलाहारसेविनः ।
 मधुरान्नरसात्प्रायः स्नेहान्मेदो विवर्धते ॥ १ ॥
 मेदसाऽऽवृतमार्गत्वात्पुण्यन्त्यन्ये न धातवः ।
 मेदस्तु चीयते यस्मादशक्तः सर्वकर्मसु ॥ २ ॥
 क्षुद्रश्वासतृषामोहस्वप्नकुन्थनसादनैः ।
 युक्तः क्षुत्स्वेददौर्गन्ध्यैरल्पप्राणोऽल्पमैथुनः ॥ ३ ॥

अथ मेदोपक्रमः—

मेदस्तु सर्वभूतानामुदरेष्वस्थिषु स्थितम् ।
 अत एवोदरे वृद्धिः प्रायो मेदस्विनो भवेत् ॥ ४ ॥
 मेदसाऽऽवृतमार्गत्वाद्वायुः कोष्ठे विशेषतः ।
 चरन्संधुक्षयत्यग्निमाहारं शोषयत्यपि ॥ ५ ॥
 तस्मात्स शीघ्रं जरयत्याहारं चापि काङ्क्षति ।
 विकारान्कुरुते घोरान्कांश्चित्कालव्यतिक्रमात् ॥ ६ ॥
 एतावुपद्रवकरौ विशेषादग्निमारुतौ ।
 एतौ हि दहतः स्थूलं वनं दावानलो यथा ॥ ७ ॥
 मेदस्यतीव्रसंवृद्धे सहसैवानिलादयः ।
 विकारान्दारुणान्कृत्वा नाशयन्त्याशु जीवितम् ॥ ८ ॥
 मेदोमांसातिवृद्धत्वाच्चल+स्फिगुदरस्तनः ।
 अयथोपचयोत्साहो नरोऽतिस्थूल उच्यते ॥ ९ ॥

* क. 'विरचनम्' इति पाठान्तरम् । + क. स्थिरगुह ।



[चतुरश्रशततमस्तरङ्गः] बृहद्योगतरङ्गिणी ।

६७३

स्थूलेषु दुस्तरा दुष्टा विसर्पाः सभगंदराः ।

ज्वरातीसारमेहार्शःश्लीपदापचिकामलाः ॥ १० ॥

इति मेदोनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

पुराणाः शालयो मुद्गाः कुलत्थोद्वालकोद्रवाः ।

लेखना बस्तयश्चैव सेव्या मेदस्विना सदा ॥ ११ ॥

मेदोवर्धनमाह—

अस्वप्नं च व्यवायं च व्यायामं चिन्तनानि च ।

स्थौल्यमिच्छन्परित्युक्तं क्रामणानि प्रवर्धयेत् ॥ १२ ॥

श्रमचिन्ताव्यवायाध्वक्षौद्रजागरणप्रियः ।

हन्त्यवश्यमतिस्थौल्यं यवश्यामाकभोजनः ॥ १३ ॥

तस्योपचारः—

प्रातः पिबेत्तुल्यजलं क्षौद्रं स्थौल्यनिवृत्तये ।

वृष्णमन्नस्य मण्डं वा पिबेत्कृशतनुर्भवेत् ॥ १४ ॥

इति मधुयोगः ।

अथ व्योषादिसक्तुप्रयोगः—

चव्यं च जीरकं व्योषं हिङ्गुसौवर्चलानलाः ।

मस्तुना सक्तवः पीता मेदोघ्ना वह्निदीपनाः ॥ १५ ॥

व्योषं विडङ्गं शिग्रूणि त्रिफलां कटुरोहिणीम् ।

बृहत्यौ द्वे हरिद्रे द्वे पाठामतिविषां स्थिराम् ॥ १६ ॥

हिङ्गुकं मधुमूलानि यवानीधान्यचित्रकम् ।

सौवर्चलमजार्जीं च हणुषां चेति चूर्णयेत् ॥ १७ ॥

चूर्णतैलगृतक्षौद्रभागाः स्युर्मानतः क्रमात् ।

सक्तुना षोडशगुणो भागः संतर्पणं पिबेत् ॥ १८ ॥

प्रयोगसारमाख्यातं रोगाः संतर्पणोत्थिताः ।

प्रमेहमूढवातास्रकुष्ठान्यशांसि कामलाः ॥ १९ ॥

प्लीहा पाण्ड्वामयः शोफो मूत्रकृच्छ्रमरोचकः ।

हृदोगो राजयक्ष्मा च कासश्वासगलग्रहाः ॥ २० ॥

1. Introduction

2.

3. Methodology

4. Results

5. Conclusion

6. References

7. Appendix

8. Tables

9. Figures

10. Summary

11. Index

12. Glossary

13. Notes

14. References

कृमयो ग्रहणीदोषाः शैत्यं स्थौल्यमतीव च ।
नराणां दीप्यते बद्धिः स्मृतिर्बुद्धिश्च वर्धते ॥ २१ ॥
इति व्योषादिसक्तुप्रयोगः ।

अथ त्रिफलाद्यं तैलम्—

त्रिफलातिविषामूर्वात्रिवृच्चित्रकवासकैः ।
निम्बार्गवधषड्ग्रन्थासप्तपर्णनिशाद्वयैः ॥ २२ ॥
गुडूर्चिन्द्रासुराकृष्णाकुष्ठसर्पपनागरैः ।
तैलमेभिः समैः पक्वं सुरसादिरसाप्लुतम् ॥ २३ ॥
पानाभ्यञ्जनगण्डूषनस्यबस्तिषु योजितम् ।
स्थूलतालस्यकण्ड्वादीञ्जयेत्कफकृतान्गदान् ॥ २४ ॥
इति त्रिफलाद्यं तैलम् ।

अथ नवकगुग्गुलुः—

व्योषाग्निमुस्तत्रिफलाविडङ्गैर्गुग्गुलुं समम् ।
खादन्सर्वाञ्जयेद्याधीन् मेदःश्लेष्मामवातजान् ॥ २५ ॥
इति नवकगुग्गुलुः ।

अथ हरीतक्यादियोगः—

हरीतकीलोधमरिष्टपत्र-
पूतित्वचो दाडिमवल्कलं च ।
एषोऽङ्गराङ्गः कथितोऽङ्गनानां
जङ्घाकषायश्च नराधिपानाम् ॥ २६ ॥
इति हरीतक्यादियोगः ।

अथ महासुगन्धतैलम्—

चन्दनं कुङ्कुमोशीरं प्रियङ्गुसटिरोचनम् ।
तुरुष्कागरु कस्तूरी कर्पूरो जातिपत्रिका ॥ २७ ॥
जातीकङ्कोलपूगानां लवङ्गस्य फलानि च ।
नलिका नलदं कुष्ठं हरेणुतगरप्लवम् ॥ २८ ॥
नखं व्याघ्रनखं स्पृका वालो दमनकं तथा ।
प्रपौण्डरीकं कर्चूरं समांशैः शाणमात्रकैः ॥ २९ ॥

१ ग. च । नारीणां । २ ग. 'चीन्द्रसु' । ३ क. 'जम्बा' क. । ४ ग. 'द्व्युटि' । ५ ग.
'लकड्ड' । ६ क. 'लोमद' ।



महासुगन्धमित्येतत्तैलप्रस्थेन साधयेत् ।
 प्रस्वेदमलदौर्गन्ध्यकण्डूकुष्ठहरं परम् ॥ ३० ॥
 अनेनाभ्यक्तगात्रस्तु वृद्धः सप्ततिकोऽपि वा ।
 युवा भवति शुक्राढ्यः स्त्रीणामत्यन्तबल्लभः ॥ ३१ ॥
 सुमगो दर्शनीयश्च गच्छेद्यः प्रमदाशतम् ।
 वन्ध्याऽपि लभते गर्भं षण्ढोऽपि पुरुषायते ।
 अपुत्रः पुत्रमाप्नोति जीवेच्च शरदां शतम् ॥ ३२ ॥
 इति महासुगन्धतैलम् ।

अथ बिल्वाद्यौ योगौ—

बिल्वशिवे समभागे लेपान्द्रुजमूलगन्धमपहरतः ।
 परिणततित्तिडीकान्वितपूतिकरञ्जोत्थबीजं वा ॥ ३३ ॥
 इति बिल्वाद्यौ योगौ ।

अथ तिलाद्युद्वर्तनम्—

तिलसर्षपसट्टिदार्वाकुष्ठसमङ्गाभयाब्जलैः ।
 साम्रत्वग्मिल्लैपो मेदोदौर्गन्ध्यनाशनः पुंसाम् ॥ ३४ ॥
 इति तिलाद्युद्वर्तनम् ।

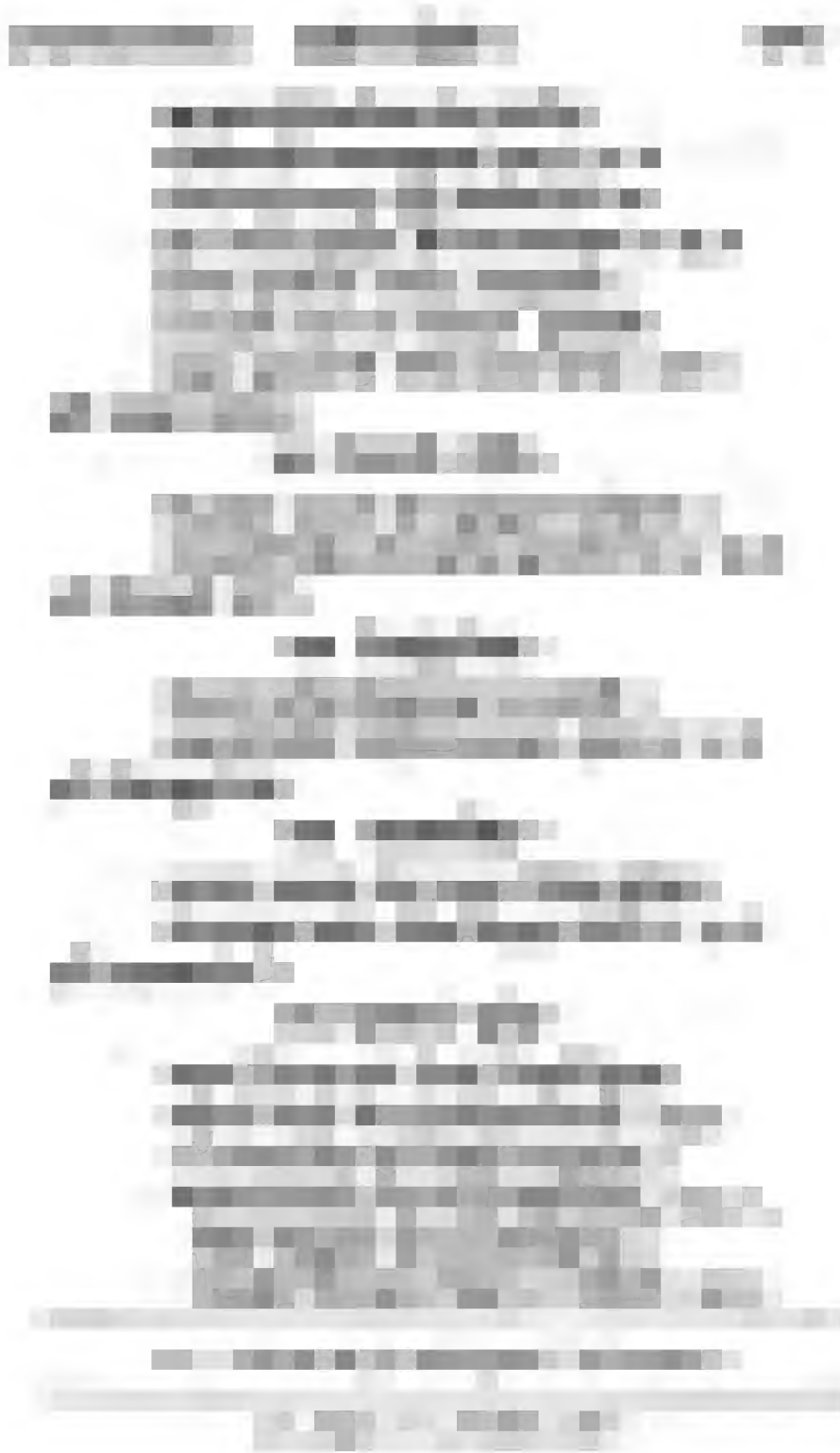
अथ रसभस्मयोगः—

रसभस्म बलमात्रं लीढ्वा मधुना पिबेदनु क्षौद्रम् ।
 कोष्णाम्बुना समेतं स्थौल्यं मेदःकृतं जयति ॥ ३५ ॥
 इति रसभस्मयोगः ।

अथ त्र्यूषणाद्यं चूर्णम्—

त्र्यूषणं त्रिफलाचव्यं चित्रकं विडमौद्भिदम् ।
 बाकूची सैन्धवं चैव सौवर्चलसमन्वितम् ॥ ३६ ॥
 * माषमात्रमिदं चूर्णं लिहेदाज्यमधुप्लुतम् ।
 अतिस्थौल्यमिदं चूर्णं निहन्त्याग्निविवर्धनम् ॥ ३७ ॥
 मेदोघ्नं मेहकुष्ठघ्नं श्लेष्मव्याधिनिबर्हणम् ।
 नाऽऽहारं नियमश्चात्र विहारे वा विधीयते ॥ ३८ ॥

* क. 'अथोभरम समं युक्तं भक्षयेन्मधुसर्पिषा' । इति पाठान्तरम् ।



ऽयूषणाद्यमिदं चूर्णं रसायनमनुत्तमम् ।
इति ऽयूषणाद्यं चूर्णम् ।

अथ मूर्तिः—

सूतं गन्धमयोमस्म समं संमेल्य भावयेत् ॥ ३९ ॥
निर्गुण्डीपत्रतोयेन मुसलीकन्दवारिणा ।
ततः सिद्धममुं माषमात्रं रसमनुत्तमम् ॥ ४० ॥
लीढा क्षौद्रेण चाश्रीयाच्चूर्णमेषां पिचून्मितम् ।
षट्कटुत्रिफलापञ्चलवणावल्गुजस्य तत् ।
मेदःशोथाग्निमान्द्यामवातश्लेष्मगदप्रणुत् ॥ ४१ ॥

इति मूर्तिः ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां मेदोरोगनिदानचिकित्साकथनं नाम चतुर-
धिकशततमस्तरङ्गः ॥ १०४ ॥

अथ पञ्चाधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथोदरनिदानम्—

रोगाः सर्वेऽपि मन्दाग्रौ सुतरामुदराणि च ।
अजीर्णान्मलिनैश्चान्नैर्जायन्ते मलसंचयात् ॥ १ ॥
रूद्ध्वा स्वेदाम्बुवाहीनि दोषाः स्रोतांसि संचिताः ।
प्राणान्ग्यपानान्संदृष्य जनयन्त्युदरं नृणाम् ॥ २ ॥
आध्मानं गममेऽशक्तिर्दौर्बल्यं दुर्बलाग्निता ।
शोफः सदनमङ्गानां सङ्गो वातपुरीषयोः ॥ ३ ॥
दाहस्तन्त्रा च सर्वेषु जठरेषु भवन्ति हि ।

अष्टधोदराणि—

गुर्वसीतं शिराजालैः सदा गुडगुडायते ॥ ४ ॥
पृथक्दोषैः समस्तैश्च प्लीहबद्धक्षतोदकैः ।
संभवन्त्युदराण्यष्टौ तेषां लिङ्गं पृथक्कृणु ॥ ५ ॥

वातोदरमाह—

तत्र वातोदरे शोथः पाणिपद्माभिकुक्षिषु ।
अत्यर्थदोषजनकैर्धिरुद्धाध्यक्षनादिभिः ॥ ६ ॥

[illegible]

कुक्षिपार्श्वोदरकटीपृष्ठरुक्पर्वभेदनम् ।
 शुष्ककासाङ्गमर्दोऽधोगुरुता मलसंग्रहः ॥ ७ ॥
 श्यावारुणत्वगादित्वमकस्माद्वृद्धिहासवत् ।
 सतोदभेदमुदरं तनुकृष्णशिराततम् ॥ ८ ॥
 आध्मातृतिवच्छब्दमाहतं प्रकरोति च ।
 वायुश्चात्र सरुक्शब्दो विचरेत्सर्वतोगतिः ॥ ९ ॥

पित्तोदरमाह—

पित्तोदरे ज्वरो मूर्च्छा दाहस्तृट्कटुकास्थता ।
 भ्रमोऽतिसारपीतत्वं त्वगादावुदरं हरित् ॥ १० ॥
 पीतताम्रशिरानद्धं सस्वेदं सोष्म दह्यते ।
 धूमायति मृदुस्पर्शं क्षिप्रपाकं प्रदूयते ॥ ११ ॥

कफोदरमाह—

श्लेष्मोदरेऽङ्गसदनं स्वापश्चयथुगौरवम् ।
 निद्रोत्कलेशोऽरुचिः श्वासः कासः शुक्लत्वगादिता ॥ १२ ॥
 उदरं स्तिमितं स्निग्धं शुक्रराजीततं महत् ।
 चिराभिवृद्धिकठिनं शीतस्पर्शं गुरु स्थिरम् ॥ १३ ॥

त्रिलिङ्गजठरमाह—

स्त्रियोऽन्नपानं नखरोममूत्रविडार्तवैर्युक्तमसाधुवृत्ताः ।
 यस्मै प्रयच्छन्त्यरयो गरांश्च दुष्टाम्बुदूषीविषसेवनाद्वा ॥ १४ ॥
 तेनाऽऽशु रक्तं कुपिताश्च दोषाः कुर्युः सुघोरं जठरं त्रिलिङ्गम् ।

दूष्योदरमाह—

तच्छीतवाते मृशदुर्दिने च विशेषतः कुप्यति दह्यते च ॥ १५ ॥
 स चाऽऽतुरो मूर्च्छति हि प्रसक्तं पाण्डुः कृशः शुष्यति तृष्णया च ।

प्लीहोदरमाह—

दूष्योदरं कीर्तितमेतदेव प्लीहोदरं कीर्तयतो निबोध ॥ १६ ॥
 विदाह्यभिष्यन्दिरतस्य जन्तोः प्रदुष्टमत्यर्थमसृक्कफश्च ।
 प्लीहाभिवृद्धिं कुरुते प्रवृद्धः प्लीहोत्थमेतज्जठरं प्रवृद्धम् ॥ १७ ॥

THE
JOURNAL
OF THE
ROYAL
ANTHROPOLOGICAL
INSTITUTE
LONDON

1907

THE
JOURNAL
OF THE
ROYAL
ANTHROPOLOGICAL
INSTITUTE
LONDON

1907

THE
JOURNAL
OF THE
ROYAL
ANTHROPOLOGICAL
INSTITUTE
LONDON

1907

THE
JOURNAL
OF THE
ROYAL
ANTHROPOLOGICAL
INSTITUTE
LONDON

1907

THE
JOURNAL
OF THE
ROYAL
ANTHROPOLOGICAL
INSTITUTE
LONDON

1907

THE
JOURNAL
OF THE
ROYAL
ANTHROPOLOGICAL
INSTITUTE
LONDON

1907

तद्वामपार्श्वे परिवृद्धिमेति विशेषतः सीदति चाऽऽतुरोऽत्र ।
मन्दज्वराग्निः कफपित्तलिङ्गैरुपद्रुतः क्षीणबलोऽतिपाण्डुः ॥ १८ ॥

अतिव्यवायकर्माध्वमनव्याधिकर्षणैः ।
वामपार्श्वश्रितः प्लीहश्रयुतः स्थानात्पवर्तते ॥ १९ ॥
सव्यान्यपार्श्वे यकृति प्रदुष्टे ज्ञेयं यकृद्वात्युदरं तदेव ॥ २० ॥
श्वासकासपिपासाश्च वैरस्याध्मानरुग्ज्वरैः ।
पाण्डुत्वमूर्च्छाछर्दिर्भिर्दाहमोहैश्च संयुतम् ॥ २१ ॥
अरुणामं विवर्णं च नीलहारिद्रराजिमत् ।
उदावर्तरुजानाहैर्मोहतुङ्गदाहनज्वरैः ॥
गौरवारुचिकाठिन्यैर्विद्यात्तत्र मलान्क्रमात् ॥ २२ ॥

बद्धोदरमाह—

यस्यान्त्रमन्त्रैरुपलेपिमिवा बालाश्मभिर्वा पिहितं यथावत् ।
संचीयते तस्य मलः सदोषः शनैः शनैः संकरवच्च नाड्याम् ॥ २३ ॥
निरुध्यते तस्य गुदे पुरीषं निरेति कृच्छ्रादपि चाल्पमल्पम् ।
हृन्नाभिमध्ये परिवृद्धिमेति तस्योदरं बद्धगुदं वदन्ति ॥ २४ ॥

क्षतोदरमाह—

शल्यं तथाऽन्नोपहितं यदन्त्रं भुक्तं भिनत्त्यागतमन्यथा वा ।
तस्मात्क्षुतोऽन्त्रात्सलिलप्रकाशः स्रावः स्रवेद्वै गुदतस्तु भूयः ॥ २५ ॥
नाभेरधश्चोदरमेति वृद्धिं निस्तुद्यते दालयति चातिमात्रम् ।
एतत्परिस्राव्युदरं प्रदिष्टं दकोदरं कीर्तयतो निबोध ॥ २६ ॥

उदकोदरमाह—

यः स्नेहपीतोऽप्यनुवासितो वा
वान्तो विरिक्तोऽप्यथ वा निरुद्धः ।
पिबेज्जलं शीतलमाशु तस्य
स्रोतांसि दृष्यन्ति हि तद्वहानि ॥ २७ ॥

स्नेहोपलिप्तेष्वथ वाऽपि तेषूदकोदरं पूर्ववदभ्युपैति ।
स्निग्धं महत्तत्परिवृत्तनाभि समाततं पूर्णमिवाम्बुना च ।
यथा वृत्तिः क्षुभ्यति कम्पते च शब्दायते चाप्युदकोदरं तत् ॥ २८ ॥

1. Introduction

The purpose of this study is to investigate the effects of the proposed system on the performance of the participants.

The study was conducted in a laboratory setting with a sample of 30 participants. The participants were divided into two groups: a control group and an experimental group. The control group used the traditional system, while the experimental group used the proposed system. The results of the study showed that the proposed system significantly improved the performance of the participants compared to the traditional system.

2. Methodology

The study was conducted in a laboratory setting with a sample of 30 participants. The participants were divided into two groups: a control group and an experimental group. The control group used the traditional system, while the experimental group used the proposed system. The results of the study showed that the proposed system significantly improved the performance of the participants compared to the traditional system.

3. Results

The results of the study showed that the proposed system significantly improved the performance of the participants compared to the traditional system. The improvement was statistically significant at the 0.05 level.

4. Conclusion

The study concluded that the proposed system significantly improved the performance of the participants compared to the traditional system. The improvement was statistically significant at the 0.05 level. The study also identified some limitations and suggested areas for future research.

यत्नसाध्यमाह—

जन्मनैवोदरं सर्वं प्रायः कृच्छ्रतमं विदुः ।
बलिनस्तदजाताम्बु यत्नसाध्यं नवोत्थितम् ॥ २९ ॥
पक्षाद्बद्धगुदं तूर्ध्वं सर्वं जातोदकं तथा ।
प्रायो भवत्यभावाय छिद्रान्त्रं चोदरं नृणाम् ॥ ३० ॥

असाध्यत्वमाह—

शूनाक्षं कुटिलोपस्थमुपक्लिन्नतनुत्वचम् ।
बलशोणितमांसाग्निपरिक्षीणं च वर्जयेत् ॥ ३१ ॥
पार्श्वमङ्गान्नविद्वेषशोथातीसारपीडितम् ।
विरिक्तमप्युदरिणं पूर्यमाणं विवर्जयेत् ॥ ३२ ॥

इत्युदरनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

अजातशब्दमरुणमुदरं नातिमारकम् ।
सदा गुडगुडायुक्तं शिराजालगवाक्षितम् ॥ ३३ ॥
नाभिं विष्टभ्य पादौ च वेगं कृत्वा प्रशाम्यति ।
हृद्भक्षणकटीवस्तिगुदे प्रत्येकशूलिनः ॥ ३४ ॥
कर्कशं सृजतो वातं नातिमन्दे च पावके ।
लालया विरसे चाऽऽस्ये मूत्रेऽल्पे संहते बहिः ॥ ३५ ॥
अजातोदकमित्येतैर्युक्तं विज्ञाय लक्षणैः ।
उपक्रमेद्भिषग्दोषबलकालविशेषवित् ॥ ३६ ॥

उपचारमाह—

स्थिरादिसर्पिषः पानं स्नेहस्वेदं विरेचनम् ।
वेष्टनं वाससा ग्लानौ शाल्वणं चोपनाहनम् ॥ ३७ ॥
चित्रं तैलं स्थिराद्यम्बुनिरूहाः सानुवासनाः ।
पयोयूषरसान्नं च योज्यं वातोदरे क्रमात् ॥ ३८ ॥
एरण्डतैलं दशमूलमिश्रं गोमूत्रयुक्तस्त्रिफलारसो वा ।
निहन्ति वातोदरशोथशूलं काथः समूत्रो दशमूलजश्च ॥ ३९ ॥

कुष्ठादिचूर्णम्—

कुष्ठं दन्तीं यवक्षारं व्योषं त्रिलवणं वचाम् ।
अजार्जी दीप्यकं हिङ्गुं स्वर्जिकाचव्यचित्रकम् ॥ ४० ॥
शुण्ठी चोष्णाम्भसा पीत्वा वातोदररुजं जयेत् ॥ ४१ ॥

इति कुष्ठादिचूर्णम् ।

अथ सामुद्रायं चूर्णम्—

दशमूलीकषायेण क्षीरवृत्ति शिलाजतु ।
सद्यो वातोदरी क्षीरमौष्ट्रमाजं च केवलम् ॥ ४२ ॥

सामुद्रसौवर्चलसैन्धवानां क्षारो यवानामजमोदमागः ।
सपिप्पलीचित्रकशृङ्गबेरं हिङ्गुं विडङ्गं च समानि कुर्यात् ॥ ४३ ॥
एतानि चूर्णानि घृतप्लुतानि भुञ्जीत पूर्वं कवलात्पशस्तम् ।
वातोदरं गुल्ममर्जीर्णभुक्तं वातप्रकोपं ग्रहणीं च दुष्टाम् ।
अशांसि दुष्टानि च पाण्डुरोगं भगदरं चापि निहन्ति सद्यः ॥ ४४ ॥

इति सामुद्रायं चूर्णम् ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलं चव्यचित्रकनागरैः ।
सक्षारैरर्धपलिकैर्द्विप्रस्थं सर्पिषः पिबेत् ॥ ४५ ॥
कल्कैर्द्विपञ्चमूलस्य तुलार्धं स्वरसेन च ।
दधिमण्डाढकं दत्त्वा तत्सर्पिर्जठरापहम् ॥ ४६ ॥
श्वयथुं वातविष्टम्भं गुल्माशांसि विनाशयेत् ।

अनघा मात्रया वारद्वयं पाच्यम् ।

अथ दशमूलायं घृतम्—

दशमूलीकषायेण रास्त्रानागरदारुभिः ॥ ४७ ॥
पुनर्नवाभ्यां च घृतं सिद्धं वातोदरापहम् ।

इति दशमूलायं घृतम् ।

इति वातोदरम् ।

अथ पित्तोदरम्—

पित्तोदरे च बालिनं पूर्वमेव विरेचयेत् ॥ ४८ ॥
दुर्बलं त्वनुवास्याऽऽदौ शोधयेत्क्षीरबस्तिना ।
संजातबलकायाग्निं पुनः स्निधं विरेचयेत् ॥ ४९ ॥

Country	Government (%)	Individuals (%)
China	~85	~45
India	~75	~40
Brazil	~80	~45
South Africa	~75	~40

1. *Identify the main idea of the passage.*
 2. *Summarize the main idea in your own words.*
 3. *Identify the supporting details.*
 4. *Summarize the supporting details in your own words.*
 5. *Identify the conclusion.*
 6. *Summarize the conclusion in your own words.*

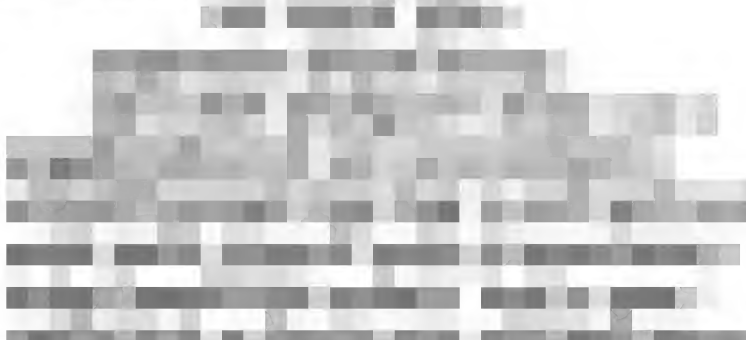


Figure 1

1. **Introduction**
 2. **Methodology**
 3. **Results**
 4. **Discussion**
 5. **Conclusion**
 6. **References**
 7. **Appendix**
 8. **Index**
 9. **Glossary**
 10. **Notes**
 11. **Footnotes**
 12. **Endnotes**
 13. **Supplementary Material**
 14. **Tables**
 15. **Figures**
 16. **Equations**
 17. **Formulas**
 18. **Diagrams**
 19. **Charts**
 20. **Graphs**
 21. **Tables**
 22. **Figures**
 23. **Equations**
 24. **Formulas**
 25. **Diagrams**
 26. **Charts**
 27. **Graphs**
 28. **Tables**
 29. **Figures**
 30. **Equations**
 31. **Formulas**
 32. **Diagrams**
 33. **Charts**
 34. **Graphs**
 35. **Tables**
 36. **Figures**
 37. **Equations**
 38. **Formulas**
 39. **Diagrams**
 40. **Charts**
 41. **Graphs**
 42. **Tables**
 43. **Figures**
 44. **Equations**
 45. **Formulas**
 46. **Diagrams**
 47. **Charts**
 48. **Graphs**
 49. **Tables**
 50. **Figures**
 51. **Equations**
 52. **Formulas**
 53. **Diagrams**
 54. **Charts**
 55. **Graphs**
 56. **Tables**
 57. **Figures**
 58. **Equations**
 59. **Formulas**
 60. **Diagrams**
 61. **Charts**
 62. **Graphs**
 63. **Tables**
 64. **Figures**
 65. **Equations**
 66. **Formulas**
 67. **Diagrams**
 68. **Charts**
 69. **Graphs**
 70. **Tables**
 71. **Figures**
 72. **Equations**
 73. **Formulas**
 74. **Diagrams**
 75. **Charts**
 76. **Graphs**
 77. **Tables**
 78. **Figures**
 79. **Equations**
 80. **Formulas**
 81. **Diagrams**
 82. **Charts**
 83. **Graphs**
 84. **Tables**
 85. **Figures**
 86. **Equations**
 87. **Formulas**
 88. **Diagrams**
 89. **Charts**
 90. **Graphs**
 91. **Tables**
 92. **Figures**
 93. **Equations**
 94. **Formulas**
 95. **Diagrams**
 96. **Charts**
 97. **Graphs**
 98. **Tables**
 99. **Figures**
 100. **Equations**
 101. **Formulas**
 102. **Diagrams**
 103. **Charts**
 104. **Graphs**
 105. **Tables**
 106. **Figures**
 107. **Equations**
 108. **Formulas**
 109. **Diagrams**
 110. **Charts**
 111. **Graphs**
 112. **Tables**
 113. **Figures**
 114. **Equations**
 115. **Formulas**
 116. **Diagrams**
 117. **Charts**
 118. **Graphs**
 119. **Tables**
 120. **Figures**
 121. **Equations**
 122. **Formulas**
 123. **Diagrams**
 124. **Charts**
 125. **Graphs**
 126. **Tables**
 127. **Figures**
 128. **Equations**
 129. **Formulas**
 130. **Diagrams**
 131. **Charts**
 132. **Graphs**
 133. **Tables**
 134. **Figures**
 135. **Equations**
 136. **Formulas**
 137. **Diagrams**
 138. **Charts**
 139. **Graphs**
 140. **Tables**
 141. **Figures**
 142. **Equations**
 143. **Formulas**
 144. **Diagrams**
 145. **Charts**
 146. **Graphs**
 147. **Tables**
 148. **Figures**
 149. **Equations**
 150. **Formulas**
 151. **Diagrams**
 152. **Charts**
 153. **Graphs**
 154. **Tables**
 155. **Figures**
 156. **Equations**
 157. **Formulas**
 158. **Diagrams**
 159. **Charts**
 160. **Graphs**
 161. **Tables**
 162. **Figures**
 163. **Equations**
 164. **Formulas**
 165. **Diagrams**
 166. **Charts**
 167. **Graphs**
 168. **Tables**
 169. **Figures**
 170. **Equations**
 171. **Formulas**
 172. **Diagrams**
 173. **Charts**
 174. **Graphs**
 175. **Tables**
 176. **Figures**
 177. **Equations**
 178. **Formulas**
 179. **Diagrams**
 180. **Charts**
 181. **Graphs**
 182. **Tables**
 183. **Figures**
 184. **Equations**
 185. **Formulas**
 186. **Diagrams**
 187. **Charts**
 188. **Graphs**
 189. **Tables**
 190. **Figures**
 191. **Equations**
 192. **Formulas**
 193. **Diagrams**
 194. **Charts**
 195. **Graphs**
 196. **Tables**
 197. **Figures**
 198. **Equations**
 199. **Formulas**
 200. **Diagrams**
 201. **Charts**
 202. **Graphs**
 203. **Tables**
 204. **Figures**
 205. **Equations**
 206. **Formulas**
 207. **Diagrams**
 208. **Charts**
 209. **Graphs**
 210. **Tables**
 211. **Figures**
 212. **Equations**
 213. **Formulas**
 214. **Diagrams**
 215. **Charts**
 216. **Graphs**
 217. **Tables**
 218. **Figures**
 219. **Equations**
 220. **Formulas**
 221. **Diagrams**
 222. **Charts**
 223. **Graphs**
 224. **Tables**
 225. **Figures**
 226. **Equations**
 227. **Formulas**
 228. **Diagrams**
 229. **Charts**
 230. **Graphs**
 231. **Tables**
 232. **Figures**
 233. **Equations**
 234. **Formulas**
 235. **Diagrams**
 236. **Charts**
 237. **Graphs**
 238. **Tables**
 239. **Figures**
 240. **Equations**
 241. **Formulas**
 242. **Diagrams**
 243. **Charts**
 244. **Graphs**
 245. **Tables**
 246. **Figures**
 247. **Equations**
 248. **Formulas**
 249. **Diagrams**
 250. **Charts**
 251. **Graphs**
 252.

पयसा त्रिवृताकल्केनोरुबूकशृतेन वा ।
 सातलात्रायमाणाभ्यां शृतेनाऽऽरग्वधेन च ॥ ५० ॥
 घृतं पित्तोदरे पेयं मधुरौषधिसाधितम् ।
 स्यात्त्रिवृत्त्रिफलासिद्धं सर्पिष्पानं विशुद्धये ॥ ५१ ॥
 पृश्निपर्णीबिलाव्याघ्रीलाक्षानागरसाधितम् ।
 क्षीरं पित्तोदरं हन्ति जठरं कतिमिर्दिनैः ॥ ५२ ॥

इति पित्तोदरम् ।

अथ श्लेष्मोदरम्—

गद्यम्—

श्लेष्मोदरिणं तु पिप्पल्यादिसिद्धेन सर्पिषा स्नेहयित्वा स्नुहीक्षीरेणा-
 नुलोम्य त्रिकटुकमूत्रतैलप्रगाढेन मुस्तादिक्राथेनास्थापयेदनुवासयेच्च ।
 किट्टसर्षपामलकबीजैश्चोपनाहयेदुदरम् । भोजयेच्चैनं त्रिकटुकप्रगाढेन
 कुलत्थयूषेण पयसा वा स्वेदयेच्चाभीक्षणम् ।

इतिगद्यम् ।

व्योषयुक्तं कुलत्थाम्बु पयो वा भोजने हितम् ।
 गोमूत्रारिष्टपानैश्च चूर्णायस्कृतिभिस्तथा ॥ ५३ ॥
 सक्षीरतैलपानैश्च शमयेत्तु कफोदरम् ।

अथ त्रिदोषजम्—

नागराद्यं यमकम्—

संनिपातोदरे कार्यं एष एव क्रियाविधिः ॥ ५४ ॥
 *हरीतक्यमयाकल्कमावितं मूत्रमम्बु वा ।
 पीतं सर्वोदरप्लीहमेहार्शःकृमिगुल्मनुत् ॥ ५५ ॥
 सप्तलाशङ्खिनीसिद्धं घृतं चात्र विशोधनम् ।
 दन्तीद्रवन्तीफलजं तैलं दूष्योदरी पिबेत् ॥ ५६ ॥
 नागरं त्रिफलाप्रस्थं घृततैलं तथाऽऽढकम् ।
 मस्तुना साधयित्वा तु पिबेत्सर्वोदरापहम् ॥ ५७ ॥
 कफमारुतसंभूते गुल्मे चैव प्रशस्यते ।

इति नागराद्यं यमकम् ।

— — — — —

— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —

— — — — —

— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

दृष्योदरं त्रिलिङ्गमुदरं च ।

अतः परं निगद्यन्ते सामान्या योगसत्तमाः ॥ ५८ ॥

दौषैः कुक्षौ हि संपूर्णे वह्निर्मन्दत्वमृच्छति ।

तस्मान्द्रोज्यानि योज्यानि दीपनानि लघूनि च ॥ ५९ ॥

पश्यमाह—

शालिषष्टिकगोधूमयवनीवारभोजनम् ।

विरेकास्थापनं शस्तं सर्वेषु जठरेषु च ॥ ६० ॥

औदकानूपजं मांसं शालिषष्टिकृतं तिलान् ।

निषेधः—

व्यायामाध्वद्विवास्वप्नं यानं पानं विवर्जयेत् ॥ ६१ ॥

तथाऽम्ललवणोष्णानि विदाहीनि गुरूणि च ।

नाद्यावन्नानि जठरी तोयपानं विवर्जयेत् ॥ ६२ ॥

उद्वराणां मलाढ्यत्वाद्वहुशः शोधनं मतम् ।

क्षीरेणैरण्डजं तैलं पिबेन्मूत्रेण वाऽसकृत ॥ ६३ ॥

ज्योतिष्मत्याः पिबेत्तैलं पयसा वा दिने दिने ।

अथ कङ्कुष्ठचूर्णम्—

कङ्कुष्ठचूर्णमुष्णाम्बु पीतं संरेच्य मानवम् ॥ ६४ ॥

अष्टाभ्योऽप्युदरेभ्यश्च द्रुतं कुर्याद्विनिर्गतम् ।

इति कङ्कुष्ठचूर्णम् ।

अथ चव्यादिः—

स्तुहीपयोमावितानां पिप्पलीनां पयोऽश्रतः ॥ ६५ ॥

सहस्रमुपयुञ्जीत शक्तितो जठरामयी ।

वातोदरी पिबेत्तक्रं पिप्पलीलवणान्विम् ॥ ६६ ॥

शर्करामरिचोपेतं स्वादु पित्तोदरी पिबेत् ।

यवानीहणुषाजाजीव्योषयुक्तं कफोदरी ॥ ६७ ॥

संनिपातोदरी तक्रं त्रिकटुक्षारसैन्धवैः ।

बद्धोदरी तु हणुषादीप्यकाजाजिसैन्धवैः ॥ ६८ ॥

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

14

15

16

पिबेच्छिद्रोदरी तक्रं पिप्पलीक्षौद्रसंयुतम् ।
 ज्यूषणक्षारलवणैर्युक्तं तु सलिलोदरी ॥ ६९ ॥
 शिलाजतूनां मूत्राणां गुग्गुलोन्मैफलस्य च ।
 सुहीक्षीरप्रयोगश्च शमयत्युदरामयम् ॥ ७० ॥
 पूतीकरञ्जबीजं च गवाक्षीमूलकाञ्जिकम् ।
 पिष्टं सुपीतं शमयेज्जलोदरमसंशयम् ॥ ७१ ॥
 सप्ताहं माहिषं मूत्रं पयसा चाम्बुवर्जितम् ।
 पीतमौष्ट्रं पयो मासं श्वयथूदरनाशनम् ॥ ७२ ॥
 यः पिबेत्प्रातरुत्थाय चव्यं चित्रकमिश्रितम् ।
 क्षिप्रं तस्य व्रजत्याशु असाध्यमपि चोदरम् ॥ ७३ ॥
 विशालाशङ्किनीदन्तीत्रिवृञ्चिफलकात्रयम् ।
 निशाविडङ्गकम्पिलं मूत्रेणोदरवान्पिबेत् ॥ ७४ ॥
 पयो वा चव्यदन्त्यग्निविडङ्गं व्योषकलिकतम् ।
 पेयं वा शृङ्गवेराम्बु कषायो दारुवाह्निजः ॥ ७५ ॥
 चव्यविश्वसमुत्थो वा पेयो जठरशान्तये ।
 विडङ्गं चित्रको दन्ती चव्यं व्योषं च तैः पयः ॥ ७६ ॥
 शृतं कोलसमैः पीत्वा प्रवृद्धमुदरं जपेत् ।
 गवाक्षीशङ्किनीदन्तीनीलिनीकल्कसंयुतम् ।
 सर्वोदरविनाशाय गोमूत्रेण तु पाचयेत् ॥ ७७ ॥
 देवदुमं शिशु मसूरकं च गोमूत्रपिष्टामथ वाऽश्वगन्धाम् ।
 पीत्वाऽऽशु हन्यादुदरं प्रवृद्धं कृमीन्सशोफानुदरं च कूष्ठम् ॥ ७८ ॥
 चव्यचित्रकविश्वानां साधितो देवदारुणा ।
 काथस्त्रिवृच्चूर्णयुतो गोमूत्रेणोदराञ्जयेत् ॥ ७९ ॥

इति चव्यादिः ।

अथ बबूलपाकः—

पिप्पलीवर्धमानं वा कल्कोद्दिष्टं प्रयोजयेत् ।
 जठराणां विनाशाय नास्ति तेन समं भुवि ॥ ८० ॥
 सुक्पयसा परिभाविततण्डुलचूर्णं विमिश्रितं यूषे ।
 उदरमुदरं हन्याद्योगोऽयं सप्तरात्रेण ॥ ८१ ॥
 बबूलस्य त्वचं श्रेष्ठां काथयेत्सलिलेन तु ।
 पुनः पचेत्कषायं तु यावत्सान्द्रत्वमागतम् ॥ ८२ ॥

तत्पिबेत्तक्रसंयुक्तं तक्रभोजी मिताशनः ।

निहन्यादाशु योगोऽयं जलोदरमपि ध्रुवम् ॥ ८३ ॥

इति बन्बूलपाकः ।

अथ पटोलायं चूर्णम्—

मूत्राण्यष्टाबुदरिणां सेके पाने च योजयेत् ।

देवदारुपलाशार्कहस्तिपिप्पलिशिगुकैः ॥ ८४ ॥

साश्वगन्धैः सगोमूत्रैः प्रदिह्यादुदरं शनैः ।

पटोलमूलं रजनीं विडङ्गं त्रिफलात्वचः ॥ ८५ ॥

कम्पिल्लकं नीलिनीं च त्रिवृतां चेति चूर्णयेत् ।

षडाद्यान्कार्षिकानन्त्यांस्त्रीश्च द्वित्रिचतुर्गुणान् ॥ ८६ ॥

कृत्वा चूर्णं ततो मुष्टिं गवां मूत्रेण वा पिबेत् ।

विरिक्तो जाङ्गलरसै रेचनं मृदु भोजयेत् ॥ ८७ ॥

मण्डं पेयां च पीत्वा वा सव्योषं षडहं पयः ।

शृतं पिबेत्ततश्चूर्णं पिबेदेवं ततः पुनः ॥ ८८ ॥

हन्ति सर्वोदराण्येतच्चूर्णं जातोदकान्यपि ।

कामलां पाण्डुरोगं च श्वयथुं चापकर्षति ॥ ८९ ॥

अत्र पटोलादेः षड्भागाः कार्षिका अन्येषां कम्पिल्लादीनां द्वित्रि-
चतुर्गुणा भागा ग्रहणीयाः ।

इति पटोलायं चूर्णम् ।

अथ नारायणं चूर्णम्—

यवानी हपुषा धान्यं त्रिफला सोपकुञ्चिका ।

कारवी पिप्पलीमूलमजगन्धा सठी वचा ॥ ९० ॥

शताह्वा जीरके व्योषं स्वर्णक्षीरी सचित्रकम् ।

द्वौ क्षारौ पौष्करं मूलं कुष्ठं लवणपञ्चकम् ॥ ९१ ॥

विडङ्गं च समांशानि दन्तीभागत्रयं तथा ।

त्रिवृद्विशाले द्विगुणे सातला स्याच्चतुर्गुणा ॥ ९२ ॥

एतन्नारायणं नाम चूर्णं रोगगणापहम् ।

एनत्प्राप्य निवर्तन्ते रोगा विष्णुमिवासुराः ॥ ९३ ॥

तस्यानुपानमाह—

तक्केणोदरिभिः पेयो गुल्मिभिर्बदराम्बुना ।

आनद्धवाते सुरया वातरोगे प्रसन्नया ॥ ९४ ॥




Figure 1



दाधिमण्डेन विट्सङ्गे दाडिमाम्बुभिरर्शसि ।
परिकर्तेषु वृक्षाम्लैरुष्णाम्बुभिरजीर्णके ॥ ९५ ॥
भगंदरे पाण्डुरोगे कासे श्वासे गलग्रहे ।
हृद्रोगे ग्रहणीरोगे कुष्ठे मन्दानले ज्वरे ॥ ९६ ॥
दंष्ट्राविषे मूलविषे सगरे कृत्रिमे विषे ।
यथाहं स्निग्धकोष्ठेन पेयमेतद्विरेचनम् ॥ ९७ ॥

इति नारायणं चूर्णम् ।

अथ महाक्षारः—

तिलसर्पपनालानि यवनालं सुधाऽपि च ।
दशमूलमपामार्गो दन्तीचित्रकमाढकी ॥ ९८ ॥
मधूकमृद्वीत्रिफलात्रिवृताकरवीरकम् ।
पुनर्नवा वृश्चिकाली चाककम्पिलनिम्बकम् ॥ ९९ ॥
एषां दश पलान्भागान्युक्त्या दग्ध्वा समावपेत् ।
गोमूत्रेण समायुक्तं सप्तकृत्वस्तु पाचयेत् ॥ १०० ॥
अथात्रेमानि चूर्णानि समावाप्य पुनः पचेत् ।
वचामतिविषां पाठां द्वे हरिद्रे महौषधम् ॥ १०१ ॥
त्रिवृत्कम्पिलकं क्षारं तथैव लवणानि च ।
महौषधं शिगुफलं कुष्ठं भल्लातकानि च ॥ १०२ ॥
पिप्पलीश्च विडङ्गानि त्रिफलां देवदारु च ।
कटुकारोहिणीमुस्तं दन्तीहिङ्गवल्ग्वेतसम् ॥ १०३ ॥
दधिशूक्तारनालानामाढकाढकमावपेत् ।
समसंज्ञेन भागेन सर्पिस्तैलं विपाचयेत् ॥ १०४ ॥
विगतार्चिर्यथा शान्तमथैनमवतारयेत् ।
ततो विडालपदकं पिबेदुष्णेन वारिणा ॥ १०५ ॥
मद्यैरम्लैश्च लाभेन क्षीरैर्मूत्रेण वा पुनः ।
महाक्षार इति ख्यातो जठराणां विनाशनः ॥ १०६ ॥
प्लीहोऽर्शसि च गुल्मानि शूलं च हृदयग्रहम् ।
यक्ष्माणं च प्रमेहं च पाण्डुरोगं भगंदरम् ॥ १०७ ॥
सकृमीन्यहणीदोषान्वन्धोदावर्तकुण्डलान् ।
मूत्रकृच्छ्रमपस्मारं क्षारोऽयं विनिवर्तयेत् ॥ १०८ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

इति महाक्षारः ।

अथ नाराचघृतम्—

स्तुक्क्षीरदन्तीत्रिफलाविडङ्गः सिंहीत्रिवृच्चित्रकमूलकल्कैः ।
घृतं विपक्वं कुडवप्रमाणं तोयेन तस्याक्षसमानकल्कम् ॥ १०९ ॥
पीत्वोष्णभम्भोऽनुपिबेद्विरिक्तो पेयां रसं वा विचरोद्विधिज्ञः ।
नाराचमेतज्जठरामयघ्नं युक्त्योपयुज्यात्समनुप्रदिष्टम् ॥ ११० ॥

इति नाराचघृतम् ।

द्वितीयं नाराचघृतम्—

त्रिफलां चित्रकां दन्तीं बृहतीं कण्टकारिकाम् ।
स्तुहीसार्कविडङ्गानि घृतस्य कुडवं पचेत् ॥ १११ ॥
तस्य मृद्वग्निसिद्धस्य कर्षार्धं पाययेन्नरम् ।
शोथगुल्मोदरानाहप्लीहोदरवृकोदरान् ॥ ११२ ॥
नाशयत्युल्बणानेतान्सर्पिर्नाराचसंज्ञितम् ।

इति द्वितीयं नाराचघृतम् ।

अथ त्रिवृताद्यं घृतम्—

पयस्यष्टगुणे सर्पिः प्रस्थं स्नुक्पयसः पलम् ॥ ११३ ॥
त्रिवृतापलकल्केन सिद्धं जठरगुल्मनुत् ।

इति त्रिवृताद्यं घृतम् ।

अथ बिन्दुघृतम्—

अर्कक्षीरपले द्वे तु स्नुहीक्षीरपलानि षट् ॥ ११४ ॥
पथ्या कम्पिलकं श्यामा शम्ब्याकं गिरिकर्णिका ।
नीलिनी त्रिवृता दन्ती शङ्खिनी चित्रकं तथा ॥ ११५ ॥
एतेषां पलिकैर्मगैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।
अथास्य मलिने कोष्ठे बिन्दुमात्रं प्रदापयेत् ॥ ११६ ॥
यावतोऽस्य पिबेद्विन्दुंस्तावद्वेगान्विरिच्यते ।
कुष्ठं गुल्ममुदावर्तं श्वयथुं समगंदरम् ॥ ११७ ॥
शमयत्युदराण्यष्टौ वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ।
एतद्विन्दुघृतं नाम येनाभ्यक्तो विरिच्यते ॥ ११८ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

2. The second part is a list of the names of the members of the committee.

3. The third part is a list of the names of the members of the committee.

4. The fourth part is a list of the names of the members of the committee.

5. The fifth part is a list of the names of the members of the committee.

6. The sixth part is a list of the names of the members of the committee.

7. The seventh part is a list of the names of the members of the committee.

8. The eighth part is a list of the names of the members of the committee.

9. The ninth part is a list of the names of the members of the committee.

10. The tenth part is a list of the names of the members of the committee.

11. The eleventh part is a list of the names of the members of the committee.

12. The twelfth part is a list of the names of the members of the committee.

13. The thirteenth part is a list of the names of the members of the committee.

14. The fourteenth part is a list of the names of the members of the committee.

स्तुह्यर्कपयसोरत्र पाकस्यानु प्रयत्नतः ।

चतुर्गुणं जलं देयं पाकार्थं बिन्दुसर्पिषि ॥ ११९ ॥

इति बिन्दुघृतम् ।

अथ शालिपर्णीतैलम्—

शालिपर्णी बिदारी च सहदेवी सगोक्षुरा ।

उभे स्थिरे सारिवे च जीवकर्षमकावुभौ ॥ १२० ॥

पर्णिन्यौ सविशाले च रुबुको वृद्धिरेव च ।

कण्डूरा वृश्चिकाली च बलात्रयमथापि वा ॥ १२१ ॥

एषां पलत्रिका मात्रा नामतः कर्षसंयुता ।

पुनर्नवैरण्डयोश्च पलान्यत्र पृथक्पृथक् ॥ १२२ ॥

षोडशांशसमाख्यातं दैशाङ्घ्रेर्द्वाविंशं तथा ।

संक्षुद्य कथितं द्रोणे चतुष्पष्टिमथाऽऽहृतम् ॥ १२३ ॥

दधिकाञ्जिकमूत्राणां प्रस्थं प्रस्थं चतुश्चतुः ।

तैलमेरण्डजं चैव प्रस्थमेकं समाहरेत् ॥ ।

सार्धकर्षप्रमाणं च मात्रां वैद्यस्तु दापयेत् ॥ १२४ ॥

पलाशमुस्ताधवचित्रकाणां स्नुहीद्रवन्तीमदनागर्वधानाम् ।

फलत्रिकस्यापि तथैव दद्यात्क्षारस्य लोघ्रस्य पलं तथैव ।

स्तुह्याः पयश्चैव पलं चतुष्कं सर्वोदरं तैलमिदं निहन्ति ॥ १२५ ॥

इति शालिपर्णीतैलम् । इति सामान्यविधिः ।

अथ ग्रीहचिकित्सा—

ग्रीहा निर्वेदनः श्वेतः कठिनः स्थूल एव च ।

महापरिग्रहः शीतः श्लेष्मसंभव उच्यते ॥ १२६ ॥

सज्वरः सपिपासश्च स्वेदनस्तीव्रवेदनः ।

पीतगात्रो विशेषेण ग्रीहा पैत्तिक उच्यते ॥ १२७ ॥

वातजमाह—

नित्यमाबद्धकोष्ठश्च नित्योदावर्तसंभवः ।

वेदनाभिः परीतश्च ग्रीहा वातिक उच्यते ॥ १२८ ॥



रक्तजमाह—

क्लमैर्विदाहैः संमोहैर्वैवर्ण्यैर्गात्रगौरवैः ।
उत्क्लेदभ्रममूर्च्छाभिर्ज्ञेयं रक्तजलक्षणम् ॥ १२९ ॥

त्रिदोषजमाह—

त्रयाणामपि रूपाणि प्लीहचसाध्ये भवन्ति हि ।
तस्योपचाराः—

स्नेहस्वेदविकारादि विधेयं प्लीहरोगिणे ॥ १३० ॥
दध्ना भुक्तवतो वामबाहुमध्ये* शिरां व्यधेत् ।
भिषक्प्लीहविनाशाय यकृन्नाशाय दक्षिणे ॥ १३१ ॥
प्लीहानं मर्दयेद्वाढं दुष्टरक्तप्रवृत्तये ।
मणिबन्धे समुत्पन्नं वाममङ्गुष्ठमीरितम् ॥ १३२ ॥
दहेच्छिरां शरेणाऽऽशु वैद्यः प्लीहप्रशान्तये ।
विडङ्गाद्यान्ससिन्धूथान्सकून्कृत्वा वचान्वितान् ।
पिबेत्क्षीरेण संचूर्ण्य प्लीहगुल्मोदरापहम् ।

अथ सिन्ध्वादिचूर्णम्—

सिन्धुमगधाग्निचूर्णं शिग्रुशिफाजाजिकारसनिपीतम् ।
प्रबलमपि योगराजः प्लीहानं नाशयत्याशु ॥ १३३ ॥

इति सिन्ध्वादिचूर्णम् ।

अथ द्रवन्तीनागवटी—

तिलैरण्डद्रवन्त्यश्च क्षारो भल्लातकं कणा ।
एषां भागं समं कृत्वा तत्तुल्यं तु गुडं मतम् ॥ १३४ ॥
खादेदग्निबलं मत्वा पावकस्य विवृद्धये ।
जयेत्प्लीहानमत्युग्रं यकृद्गुल्मं तथैव च ॥ १३५ ॥

इति द्रवन्तीनागवटी ।

* क. प्लीहोदरिणः स्निग्धस्विन्नस्य दध्ना भुक्तवतो वामबाहौ कूर्पराम्यन्तरतः कूर्परं भुज-
मध्यं शिरां व्यधेत् । विमर्दयेच्च पाणिना प्लीहानं रुधिरस्पन्दनार्थम् । दधिभोजनं रक्तोत्क्लेशनाय
तदहरेव ।

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

14

15

16

अथ शिगुकाथः—

शोथप्लीहोदरं हन्ति पिप्पलीमरिचान्वितः ।

अम्लवेतससंयुक्तः शिगुकाथः ससैन्धवः ॥ १३६ ॥

इति शिगुकाथः ।

अथ कुष्ठादिचूर्णम्—

कुष्ठं वचा शृङ्गवेरं चित्रकं कौटजं फलम् ।

पाठा चैवाजमोदा च पिप्पल्यः समचूर्णिताः ॥ १३७ ॥

ततो विडालपदकं पिबेदुष्णेन वारिणा ।

प्लीहोदरमुदावर्तं सर्वमेतेन शाम्यति ॥ १३८ ॥

इति कुष्ठादिचूर्णम् ।

अथार्कपत्रक्षारः—

पातव्यो युक्तितः क्षारः क्षीरेणोदधिगुक्तिजः ।

पयसा वा प्रयोक्तव्याः पिप्पल्यः प्लीहशान्तये ॥ १३९ ॥

अर्कपत्रं सलवणं पुटदग्धं सुचूर्णितम् ।

निहन्ति मस्तुना पीतं प्लीहानमतिदारुणम् ॥ १४० ॥

इत्यर्कपत्रक्षारः ।

अथ लघुहिङ्ग्वादिचूर्णम्—

वायुः प्लीहानमुद्धूय कुपितो यस्य तिष्ठति ।

शूलैः परितुदन्पार्श्वं प्लीहा तस्य प्रवर्धते ॥ १४१ ॥

हिङ्गुः त्रिकटुकं कुष्ठं यवक्षारोऽथ सैन्धवम् ।

मातुलुङ्गरसोपेतं प्लीहशूलहरं परम् ॥ १४२ ॥

इति लघुहिङ्ग्वादिचूर्णम् ।

अथ शङ्खनाभिचूर्णम्—

पलाशक्षारतोयेन पिप्पली परिभाविता ।

गुल्मप्लीहार्तिशमनी वह्निदीप्तिकरी मता ॥ १४३ ॥

रसेन जम्बीरफलस्य शङ्खनाभीरजः पीतमवश्यमेव ।

कर्षप्रमाणं शमयेदशेषं प्लीहामयं कूर्मसमानमाशु ॥ १४४ ॥

इति शङ्खनाभिचूर्णम् ।

अथ शरपुङ्खामूलचूर्णम्—

शरपुङ्खामूलकल्कः पीतस्तकेण नाशयत्यचिरात् ।

चिरतरकालसमुत्थं प्लीहानं रूढमवगाढम् ॥ १४५ ॥

इति शरपुङ्खामूलचूर्णम् ।

अथ शाल्मलीपुष्पकाथः—

क्षारं वा विडकृष्णाभ्यां पूतिकस्याम्बु निःशृतम् ।

यकृतप्लीहप्रशान्त्यर्थं पिबेत्प्रातर्यथाबलम् ॥ १४६ ॥

सुस्विन्नं शाल्मलीपुष्पं निशापर्युषितं नरः ।

राजिकाचूर्णसंयुक्तमद्यात्प्लीहोपशान्तये ॥ १४७ ॥

इति शाल्मलीपुष्पकाथः ।

अथ यवान्यादिचूर्णम्—

यवानिकाचित्रकयावशूकषट्प्रग्रन्थदन्तीमगधोद्भवानाम् ।

प्लीहानमेतद्विनिहन्ति चूर्णमुष्णाम्बुना मस्तुसुरासवैर्वा ॥ १४८ ॥

इति यवान्यादिचूर्णम् ।

अथ विडङ्गादिचूर्णम्—

विडङ्गानि यवानीं च चित्रकं चेति तत्समम् ।

द्विगुणं देवदारुं च नागरं सपुनर्नवम् ॥ १४९ ॥

त्रिवृद्धागाश्च चत्वारस्तत्सर्वं कल्कपेषितम् ।

क्षीरेणोष्णेन पातव्यं श्रेष्ठं प्लीहविनाशनम् ॥ १५० ॥

अथ वैतानि चूर्णानि गवां मूत्रेण पाययेत् ।

उदरीभूतमप्येवं प्लीहानं संप्रणाशयेत् ॥ १५० ॥

इति विडङ्गादिचूर्णम् ।

अथ विडङ्गादिक्षारः—

विडङ्गं चित्रकं सक्तून्सघृतं सैन्धवं वचाम् ।

दग्ध्वा कपाले पयसा गुल्मप्लीहापहं पिबेत् ॥ १५१ ॥

इति विडङ्गादिक्षारः ।

अथ भल्लातकमोदकः—

भल्लातकाभयाजाजीमोदको गुडसंयुतः ।

सप्तरात्रान्निहन्त्येष प्लीहानमतिदारुणम् ॥ १५२ ॥

इति भल्लातकमोदकः ।

1. 凡在本市行政区域内从事生产经营活动的法人和其他组织，均应当依法缴纳城市维护建设税。
 2. 城市维护建设税的计税依据为纳税人实际缴纳的增值税、消费税税额。
 3. 城市维护建设税的税率，根据纳税人所在地不同，分别适用：
 (一) 市区：7%
 (二) 郊区、县城、镇：5%
 (三) 农村：3%
 4. 城市维护建设税实行按月申报缴纳。
 5. 纳税人未按规定期限申报缴纳的，税务机关将依法加收滞纳金，并处以罚款。
 6. 本规定自发布之日起施行。

अथाभयामोदकाः—

त्रिपलमभयाफलानां पलत्रयं त्रिकटुकात्पलं मूलात् ।
 दीप्यकचविकाचित्रकविडङ्गवृक्षाम्लसैन्धवार्धपलैः ॥ १५३ ॥
 स्वर्षपत्रैलाकैर्षेस्त्रिभिर्युतं चूर्णितं सूक्ष्मम् ।
 त्रिंशत्पलगुडसहितास्त्वक्षमितास्तस्य मोदकाः कार्याः ॥ १५४ ॥
 अमयावटका नाम्ना फ्रीहाशोर्गुम्लजठरहराः ।
 पाण्डूवामयिकामलिनां मन्दाग्नीनां च सर्वदा शस्ताः ॥ १५५ ॥

इत्थमभयामोदकाः ।

अथ वज्रक्षारः—

सौवर्चलं यवक्षारं सामुद्रं काचसैन्धवम् ।
 टङ्कणं स्वर्जिकाक्षारं तुल्यमेकत्र चूर्णयेत् ॥ १५६ ॥
 अर्कदुग्धैः स्नुहीदुग्धैर्माविषेदातपे ज्वहम् ।
 ऊर्ध्वाधःस्थैः क्रमात्तस्य तत्तुल्यैरर्कपलैः ॥ १५७ ॥
 माण्डे संस्थाप्य मृल्लिते रुद्ध्वा गजपुटे पचेत् ।
 स्वाङ्गशीतं तु संचूर्ण्य चूर्णभेषां तु मेलयेत् ॥ १५८ ॥
 ज्यूषणं सविडङ्गं च राजिकां त्रिफलामपि ।
 चव्यं च हिङ्गुसंभृष्टं तक्रेणाद्याद्यथाबलम् ॥ १५९ ॥
 वज्रक्षाराभिधं चूर्णमुदराणि विनाशयेत् ।
 शोथं गुल्मं तथाऽऽशीलां मन्दाग्निमरुचिं तथा ॥ १६० ॥
 फ्रीहानं यकृद्वाल्याख्यमुदरं च विशेषतः ।

इति वज्रक्षारः ।

अथाग्निमुखं लवणम्—

चित्रकत्रिवृतादन्तीत्रिफलारुचकैः समैः ॥ १६१ ॥
 यावन्त्येतानि चूर्णानि तावन्मात्रं तु सैन्धवम् ।
 मावयित्वा स्नुहीक्षीरैः स्नुक्काण्डे प्रक्षिपेत्ततः ॥ १६२ ॥
 मृत्पङ्केनानुलिप्याथ प्रक्षिपेज्जातवेदसि ।
 सुदग्धं च ततो ज्ञात्वा शनैर्वैद्यः समुद्धरेत् ॥ १६३ ॥

तक्रेण पीतं तच्चूर्णं यकृत्प्लीहोदरापहम् ।
एतदग्निमुखं नाम्ना लवणं वह्निवर्धनम् ॥ १६४ ॥

इत्यग्निमुखं लवणम् ।

अथ चित्रकायं घृतम्—

चित्रकस्य तुलाकाथे घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।
दध्यारनाले द्विगुणे दधिमण्डं चतुर्गुणम् ॥ १६५ ॥
पञ्चकोलकतालीसं क्षारौ च पटुपञ्चकम् ।
यवान्यौ द्वे च जरणे मरिचं चाक्षसंमितम् ॥ १६६ ॥
एतैर्युक्त्या घृतं सिद्धं मात्रया च पिबेत्प्रगे ।
प्लीहशोफोदराशोभं विशेषादग्निदीपनम् ॥ १६७ ॥

इति चित्रकायं घृतम् ।

अथ महारोहीतकं घृतम्—

रोहीतकात्पलशतं संक्षुद्य बदराढकम् ।
साधयित्वा जलद्रोणे चतुर्मागावशेषिते ॥ १६८ ॥
घृतप्रस्थं समावाप्य छागक्षीरं चतुर्गुणम् ।
तस्मिन्द्रव्याणि सर्वाणि प्रदद्यात्कार्षिकाणि च ॥ १६९ ॥
व्योषं फलत्रिकं हिङ्गुं यवानीं तुम्बुरुं विडम् ।
अजार्जीं कृष्णलवणं दाडिमं देवदारु च ॥ १७० ॥
पुनर्नवां विशालां च यवक्षारं सपौष्करम् ।
विडङ्गं चित्रकं चैव हपुषां कारवीं तथा ॥ १७१ ॥
एतैर्घृतं विपक्रं तु विदध्याद्दृढमाजने ।
पाययेन्निपलां मात्रां रसयूषपयोम्बुभिः ॥ १७२ ॥
यकृत्प्लीहोदरं शूलमग्निमान्द्यं च नाशयेत् ।

इति महारोहीतकं घृतम् ।

इति प्लीहोदरम् ।

अथ यकृद्दाल्युदरम्—

पिप्पलीघृतम्—

उदावर्तरुजानाहैर्मोहतुङ्गदहनज्वरैः ॥ १७३ ॥
गौरवारुचिकाठिन्यैर्विद्यात्तत्र मलान्क्रमात् ।
प्लीहोद्विष्टाः क्रियाः सर्वा यकृद्दाल्युदरेऽपि च ॥ १७४ ॥



कर्तव्या अथ सव्यान्यबाहौ रक्तविमोक्षणम् ।
 प्लीहायाः पृष्ठदेशे तु रुधिरं स्रावयेद्बुधः ॥ १७५ ॥
 ससैन्धवार्कदुग्धं च तस्मिन्देशे विनिक्षिपेत् ।
 प्लीहस्य पृष्ठे रुधिरं निःसार्यार्कपयोन्वितम् ॥ १७६ ॥
 मर्दयेद्विधिनैवं च गुल्मे कुर्याद्विशेषतः ।
 सैन्धवाज्येन लिप्तानि स्विन्नान्यर्कदलानि च ॥ १७७ ॥
 तद्रसं पाययेत्प्लीहे×××रससिन्धोः ।
 पिप्पलीकल्कसंयुक्तं घृतं क्षीरचतुर्गुणम् ॥ १७८ ॥
 पक्त्वा पिबेद्यथाबहि यकृद्वात्युदरापहम् ।

इति पिप्पलीघृतम् ।

अथ बद्धगुदप्रतीकारः—

स्विन्ने बद्धोदरे योज्यो वस्तिस्तीक्ष्णैस्तु भेषजैः ॥ १७९ ॥
 सतैललवणैश्चापि निरुहश्चानुवासनम् ।
 उदावर्तहरं सर्वं प्रकर्तव्यं चिकित्सितम् ॥ १८० ॥
 वर्तयो विविधाश्चात्र पायौ शस्ताः प्रकीर्तिताः ।
 तीक्ष्णं विरेचनं चात्र शस्यते तु विशेषतः ॥ १८१ ॥
 वातहन्ता विधिः सर्वो विधातव्यो विजानता ।

अथ क्षतोदरवृकोदरप्रतीकारः—

छिद्राम्बुबद्धसंज्ञेषु जठरेषु प्रयोगवित् ॥ १८२ ॥
 लब्धानुज्ञो भिषक्कुर्यात्पाटनव्यधनक्रियाम् ।
 तथा जातोदकं सर्वमुदरं व्यधयेद्भिषक् ॥ १८३ ॥
 ज्ञातींश्च सुहृदो दारान्ब्राह्मणान्नृपतीन्गुरुन् ।
 अनुज्ञाप्य भिषक्कर्म विद्ध्यात्संशयोऽत्र यत् ॥ १८४ ॥
 सुवेष्टितमधो नाभेर्वामतश्चतुरङ्गलात् ।
 अङ्गुल्युदरमात्रं तु ब्रीहिवक्त्रेण भेदयेत् ॥ १८५ ॥
 नाडीमुमयतो द्वारं संयोज्यापहरेज्जलम् ।
 न चैकस्मिन्दिने सर्वं दोषं त्वपहरेत्तथा ॥ १८६ ॥
 कासश्वासौ ज्वरस्तृष्णा गात्रमङ्गः सवेपथुः ।
 अतीसारश्च सुतरां पूर्यते जठरं ततः ॥ १८७ ॥
 तृतीयपञ्चमाद्येषु दिवसेष्वल्पशः पुनः ।
 स्रावयेदुदकं तैललवणाभ्यां दृहेद्वृणम् ॥ १८८ ॥

बध्नीयाच्च सुते सेकरक्ते च स भिषग्वरः ।
 संयोजयेद्वाढतरं कौशेयाविकचर्मभिः ॥ १८९ ॥
 जलोदरेऽम्बु विस्राव्यं जातं जातं विरेचनैः ।
 विरिक्तजठराध्मानं स्नेहाद्यैर्बस्तिभिर्जयेत् ॥ १९० ॥
 निःसृते लङ्घितः पेयामस्नेहलवणां पिबेत् ।
 अतः परं तु षण्मासान्क्षीरवृत्तिर्भवेन्नरः ॥ १९१ ॥
 त्रीन्मासान्पयसा पेयं पिबेत्त्रींश्चापि योजयेत् ।
 सकोरदूषयामाकं पयसा लवणं लघु ॥ १९२ ॥
 नरः संवत्सरेणैवं जयेदाशु जलोदरम् ।
 बद्धोदरं चैवमेव दुःसाध्यौ तौ मदौ यतः ॥ १९३ ॥

इति जलोदरे जठरे जठरवेधप्रकारः ।

अथ हरीतक्यादिकाथः—

हरीतकीनागरदेवदारुपुनर्नवाच्छिन्नरुहाकषायः ।
 सगुग्गुलुर्मूत्रयुतः प्रपेयः शोफक्षताम्बूदरपाण्डुहन्ता ॥ १९४ ॥
 इति हरीतक्यादिकाथः ।

अथ बृहत्पुनर्नवादिः—

पुनर्नवानिम्बपटोलशुण्ठीतिक्तामृतादार्व्यमयाकषायः ।
 सर्वाङ्गशोफोदरकासशूलश्वासान्वितं पाण्डुगदं निहन्ति ॥ १९५ ॥
 इति बृहत्पुनर्नवादिः ।

अथ लघुपुनर्नवादिकाथः—

पुनर्नवादार्व्यमयागुडूचीं पिबेत्समूत्रां महिषाक्षयुक्ताम् ।
 त्वग्दोषशोफोदरपाण्डुरोगस्थौल्यप्रसेकोर्ध्वकफामयेषु ॥ १९६ ॥
 इति लघुपुनर्नवादिकाथः ।

अथ रसाः—

वङ्गेश्वरो रसः—

वङ्गपारदयोर्भस्म प्रत्येकं पलमात्रया ।
 गन्धकं सूतताम्रं च प्रत्येकं तु चतुष्पलम् ॥ १९७ ॥
 अर्कक्षीरैर्दिनं मय्यं सर्वं तद्गोलकीकृतम् ।
 रुद्ध्वा तं मूधरे पच्यात्पुटेनैकेन चोद्धरेत् ॥ १९८ ॥



एष वङ्गेश्वरो नाम्ना पृहिगुल्मोदरं जयेत् ।
साज्यं गुञ्जाद्वयं लीढ्वा निष्कां श्वेतपुनर्नवाम् ॥ १९९ ॥
गोमूत्रेण पिबेच्चानु रजनीं वा गवां जलैः ।

इति वङ्गेश्वरो रसः ।

अथोदरारिः—

पारदं शिखितुथं च जैपालं पिप्पलीसमम् ॥ २०० ॥
आरग्वधफलान्मज्जां वज्रीक्षीरेण मर्दयेत् ।
भाषमात्रां वटीं खादेत्स्त्रीणां हन्ति जलोदरम् ॥ २०१ ॥
चित्राफलरसं चानुपथ्यं दध्योदनं हितम् ।

इत्युदरारिः ।

अथ जलोदरारिः—

पिप्पलीमरिचं ताम्रं *काञ्चनीचूर्णसंयुतम् ॥ २०२ ॥
स्तुहीक्षीरैर्दिनं मर्द्यं तुल्यं जैपालबीजकम् ।
निष्कं मुक्तं विरेकेण सत्यं हन्ति जलोदरम् ॥ २०३ ॥

इति जलोदरारिः ।

अथ चण्डभास्करो रसः—

हरबीजामृतं गन्धं प्रत्येकं निष्कमेव च ।
टङ्कणं दशनिष्कं तु जैपालं विंशतिस्तथा ॥ २०४ ॥
सर्वं खल्वे विनिक्षिप्य निर्गुण्डीरसमर्दितम् ।
मुद्गप्रमाणवटकान्गुडमिश्रं तु भक्षयेत् ॥ २०५ ॥
पाण्डुशोफोदरार्शश्च गुल्मप्लीहयकृत्कृमीन् ।
पुराणज्वरमेहांश्च मूत्रकृच्छ्राश्मरीत्रणान् ॥ २०६ ॥
सर्वव्याधींश्च हरति रसोऽयं चण्डभास्करः ।

इति चण्डभास्करो रसः ।

अथेच्छाभेदी रसः—

शुण्ठी मरिचसंयुक्ता रसगन्धकटङ्कणाः ॥ २०७ ॥
जैपालत्रिगुणाः प्रोक्ताः सर्व एकत्र मर्दिताः ।
इच्छाभेदी रसो ह्यस्य द्विगुञ्जां ससितां पिबेत् ॥ २०८ ॥

1. **Introduction**
 2. **Methodology**
 3. **Results**
 4. **Discussion**
 5. **Conclusion**
 6. **References**
 7. **Appendix**
 8. **Figure 1**
 9. **Figure 2**
 10. **Figure 3**
 11. **Figure 4**
 12. **Figure 5**
 13. **Figure 6**
 14. **Figure 7**
 15. **Figure 8**
 16. **Figure 9**
 17. **Figure 10**
 18. **Figure 11**
 19. **Figure 12**
 20. **Figure 13**
 21. **Figure 14**
 22. **Figure 15**
 23. **Figure 16**
 24. **Figure 17**
 25. **Figure 18**
 26. **Figure 19**
 27. **Figure 20**
 28. **Figure 21**
 29. **Figure 22**
 30. **Figure 23**
 31. **Figure 24**
 32. **Figure 25**
 33. **Figure 26**
 34. **Figure 27**
 35. **Figure 28**
 36. **Figure 29**
 37. **Figure 30**
 38. **Figure 31**
 39. **Figure 32**
 40. **Figure 33**
 41. **Figure 34**
 42. **Figure 35**
 43. **Figure 36**
 44. **Figure 37**
 45. **Figure 38**
 46. **Figure 39**
 47. **Figure 40**
 48. **Figure 41**
 49. **Figure 42**
 50. **Figure 43**
 51. **Figure 44**
 52. **Figure 45**
 53. **Figure 46**
 54. **Figure 47**
 55. **Figure 48**
 56. **Figure 49**
 57. **Figure 50**
 58. **Figure 51**
 59. **Figure 52**
 60. **Figure 53**
 61. **Figure 54**
 62. **Figure 55**
 63. **Figure 56**
 64. **Figure 57**
 65. **Figure 58**
 66. **Figure 59**
 67. **Figure 60**
 68. **Figure 61**
 69. **Figure 62**
 70. **Figure 63**
 71. **Figure 64**
 72. **Figure 65**
 73. **Figure 66**
 74. **Figure 67**
 75. **Figure 68**
 76. **Figure 69**
 77. **Figure 70**
 78. **Figure 71**
 79. **Figure 72**
 80. **Figure 73**
 81. **Figure 74**
 82. **Figure 75**
 83. **Figure 76**
 84. **Figure 77**
 85. **Figure 78**
 86. **Figure 79**
 87. **Figure 80**
 88. **Figure 81**
 89. **Figure 82**
 90. **Figure 83**
 91. **Figure 84**
 92. **Figure 85**
 93. **Figure 86**
 94. **Figure 87**
 95. **Figure 88**
 96. **Figure 89**
 97. **Figure 90**
 98. **Figure 91**
 99. **Figure 92**
 100. **Figure 93**
 101. **Figure 94**
 102. **Figure 95**
 103. **Figure 96**
 104. **Figure 97**
 105. **Figure 98**
 106. **Figure 99**
 107. **Figure 100**
 108. **Figure 101**
 109. **Figure 102**
 110. **Figure 103**
 111. **Figure 104**
 112. **Figure 105**
 113. **Figure 106**
 114. **Figure 107**
 115. **Figure 108**
 116. **Figure 109**
 117. **Figure 110**
 118. **Figure 111**
 119. **Figure 112**
 120. **Figure 113**
 121. **Figure 114**
 122. **Figure 115**
 123. **Figure 116**
 124. **Figure 117**
 125. **Figure 118**
 126. **Figure 119**
 127. **Figure 120**
 128. **Figure 121**
 129. **Figure 122**
 130. **Figure 123**
 131. **Figure 124**
 132. **Figure 125**
 133. **Figure 126**
 134. **Figure 127**
 135. **Figure 128**
 136. **Figure 129**
 137. **Figure 130**
 138. **Figure 131**
 139. **Figure 132**
 140. **Figure 133**
 141. **Figure 134**
 142. **Figure 135**
 143. **Figure 136**
 144. **Figure 137**
 145. **Figure 138**
 146. **Figure 139**
 147. **Figure 140**
 148. **Figure 141**
 149. **Figure 142**
 150. **Figure 143**
 151. **Figure 144**
 152. **Figure 145**
 153. **Figure 146**
 154. **Figure 147**
 155. **Figure 148**
 156. **Figure 149**
 157. **Figure 150**
 158. **Figure 151**
 159. **Figure 152**
 160. **Figure 153**
 161. **Figure 154**
 162. **Figure 155**
 163. **Figure 156**
 164. **Figure 157**
 165. **Figure 158**
 166. **Figure 159**
 167. **Figure 160**
 168. **Figure 161**
 169. **Figure 162**
 170. **Figure 163**
 171. **Figure 164**
 172. **Figure 165**
 173. **Figure 166**
 174. **Figure 167**
 175. **Figure 168**
 176. **Figure 169**
 177. **Figure 170**
 178. **Figure 171**
 179. **Figure 172**
 180. **Figure 173**
 181. **Figure 174**
 182. **Figure 175**
 183. **Figure 176**
 184. **Figure 177**
 185. **Figure 178**
 186. **Figure 179**
 187. **Figure 180**
 188. **Figure 181**
 189. **Figure 182**
 190. **Figure 183**
 191. **Figure 184**
 192. **Figure 185**
 193. **Figure 186**
 194. **Figure 187**
 195. **Figure 188**
 196. **Figure 189**
 197. **Figure 190**
 198. **Figure 191**
 199. **Figure 192**
 200. **Figure 193**
 201. **Figure 194**
 202. **Figure 195**
 203. **Figure 196**
 204. **Figure 197**
 205. **Figure 198**
 206. **Figure 199**
 207. **Figure 200**
 208. **Figure 201**
 209. **Figure 202**
 210. **Figure 203**
 211. **Figure 204**
 212. **Figure 205**
 213. **Figure 206**
 214. **Figure 207**
 215. **Figure 208**
 216. **Figure 209**
 217. **Figure 210</**

यावच्च चुलुकाः पीतास्तावद्देगैर्विरिच्यते ।
तक्रौदनं च दातव्यं पथ्यमत्र विजानता ॥ २०२ ॥

इतीच्छाभेदी रसः ।

अथ नाराचो रसः-

भृष्टटङ्कणतुल्यं तु मारिचं च रसं समम् ।
गन्धकं पिप्पली शुण्ठी द्वौ द्वौ भागौ विचूर्णयेत् ॥ २१० ॥
सर्वतुल्यं क्षिपेद्वन्तीबीजं सर्वमकल्मषम् ।
द्विगुञ्जं रेचनं चैतदुदराणि व्यपोहति ॥ २११ ॥

इति नाराचो रसः ।

अथ जलोदरारिरसः-

रसेन गन्धं द्विगुणं शिलां च निशां च बीजं जयपालकानाम् ।
फलत्रयञ्ज्यूषणचित्रकं च सर्वं विचूर्णयथ विभावयेच्च ॥ २१२ ॥
दन्तीस्नुहीभृङ्गरसेन सप्तवारान्हि निष्कार्धमिदं ददीत ।
जाते धिरके च ददीत चाम्लं सतक्रशीतं शिशिरं त्यजेच्च ॥ २१३ ॥
जाते बले तं च पुनर्ददीत तक्त्रेण रोगः समुपैति शान्तिम् ॥ २१४ ॥

इति जलोदरारिरसः ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यामुदररोगनिदानचिकित्साकथनं नाम षष्ठा-
धिकशततमस्तरङ्गः ॥ १०५ ॥

अथ षष्ठाधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ शोथनिदानम्-

पित्तरक्तकफान्वायुदुष्टो दुष्टान् बहिः शिराः ।
नीत्वा रुद्धगतिस्तैर्हि कुर्यात्त्वङ्मांससंश्रयम् ॥ १ ॥
उत्सेधं संहतं शोफं तमाहुर्निचयादतः ।
सर्वं हेतुविशेषैस्तु रूपभेदान्नवात्मकम् ॥ २ ॥
दोषैः पृथग्द्वयैः सर्वैरभिघाताद्विषादपि ।
तत्पूर्वरूपं द्रवथुः शिरायामोऽङ्गगौरवम् ॥ ३ ॥



हेतुमाह—

शुद्धयामयामक्तकृशाबलानां(?) क्षाराम्लतीक्ष्णोष्णगुरूपसेवा ।
दध्याममृच्छाकविरोधिदुष्टगरोपसृष्टान्ननिषेवणं च ॥ ४ ॥
अर्शास्यचेष्टा न च देहशुद्धिर्मर्मापघातो विषमा प्रसूतिः ।
मिथ्योपचारः परिकर्मणां च निजश्च हेतुः श्वयथोः प्रदिष्टः ॥ ५ ॥

सामान्यलिङ्गमाह—

सगौरवं स्यादनवस्थितत्वं सोत्सेधमूष्माऽथ शिरातनुत्वम् ।
सलोमहर्षश्च विवर्णता च सामान्यलिङ्गं श्वयथोः प्रदिष्टम् ॥ ६ ॥

वातजमाह—

चलस्तनुत्वक्पुरुषोऽरुणोऽसितः सुषुप्तिहर्षार्तियुतो निमित्ततः ।
प्रशाम्पति प्रोन्नमति प्रपीडितो दिवा बली च श्वयथुः समीरणात् ॥ ७ ॥

पित्तजमाह—

मृदुः सगन्धोऽसितपीतरागवान्भ्रमज्वरस्वेदतृषामदान्वितः ।
य उष्यते स्पर्शरुगक्षिरागकृत्स पित्तशोथो भृशदाहपाकवान् ॥ ८ ॥

कफजमाह—

गुरुस्थिरः पाण्डुररोचकान्वितः
प्रसेकनिद्राषमिवाह्निमान्यकृत् ।
स कृच्छ्रजन्मप्रशमो निपीडितो
न चोन्नमेद्रात्रिबली कफात्मकः ॥ ९ ॥

द्वन्द्वजमाह—

निदानाकृतिसंसर्गाच्छ्वयथुः स्याद्विदोषजः ।

संनिपातजमाह—

सर्वाकृतिः संनिपाताच्छोथो व्यामिश्रलक्षणः ॥ १० ॥

अभिघातादिना प्रकारमाह—

अभिघातेन शस्त्रादिच्छेदभेदक्षतादिभिः ।
हिमानिलोदध्यनिलैर्भस्मातकपिकच्छुजैः ॥ ११ ॥
रसैः श्लैश्च संस्पर्शाच्छ्वयथुः स्नाद्विसर्पवत् ।
भृशोष्मा लोहिताकारः प्रायशः पित्तलक्षणः ॥ १२ ॥

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

विषजशोथमाह—

विषजः सविषप्राणिपरिसर्पणमूत्रणात् ।
 वृष्टादन्तनखाघातादविषप्राणिनामपि ॥ १३ ॥
 विषमूत्रशुक्रोपहतमलवद्वस्त्रसंकरात् ।
 विषवृक्षानिलस्पृशाद्वरयोगावचूर्णनात् ॥ १४ ॥
 मृदुश्चलोऽवलम्बी च शीघ्रो दाहरुजाकरः ।

सर्वदेहगशोथमाह—

दोषाः श्वयथुमूर्ध्वं हि कुर्वन्त्यामाशयस्थिताः ॥ १५ ॥
 पक्वाशयस्था मध्ये च वर्चस्थानगतास्त्वधः ।
 कृत्स्नं देहमनुप्राप्ताः कुर्युस्ते सर्वदेहगम् ॥ १६ ॥

कष्टत्वमाह—

यो मध्यदेशे श्वयथुः स कष्टः सर्वगश्च यः ।

अर्धाङ्गशोथमाह—

अर्धाङ्गेऽरिष्टभूतः स्याद्यश्चोर्ध्वं परिसर्पति ॥ १७ ॥

असाध्यत्वमाह—

श्वासः पिपासा छर्दिश्च दौर्बल्यं ज्वर एव च ।
 यस्य चान्ने रुचिर्नास्ति शोथिनं परिवर्जयेत् ॥ १८ ॥
 ऊर्ध्वगामी नरं पद्भ्यामधोगामी मुखात्त्रियम् ।
 उभयोर्बस्ति संजातः शोथो हन्ति न संशयः ॥ १९ ॥
 अनन्योपद्रवकृतः शोथः पादसमुत्थितः ।
 पुरुषं हन्ति नारीं तु मुखजो गुह्यजो द्वयम् ॥ २० ॥
 नवोऽनुपद्रवः शोथः साध्योऽसाध्यः पुरोदितः ।
 छर्दिश्वासोऽरुचिस्तृष्णा ज्वरोऽतीसार एव च ॥ २१ ॥
 सप्तकोऽयं स दौर्बल्यशोथोपद्रवसंग्रहः ।

आमान्वितशोफमाह—

क्षुन्नाशहृदयाशुद्धितन्द्राजठरगौरवैः ॥ २२ ॥
 दोषाप्रवृत्तिसत्त्वाद्यैर्व्याधिमामान्वितं वदेत् ।

इति शोथनिदानम् ।

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

14

15

16

17

18

19

20

21

22

23

24

25

26

27

28

29

30

31

32

अथैतच्चिकित्सा—

निदानदोषातिविपर्ययक्रमैरुपाचरेत्तं बलकालदोषवित् ।
 अथाऽऽमजं लङ्घनपाचनक्रमैर्विशोधनैरुल्बणदोषमादितः ॥ २३ ॥
 शिरोगतं शीर्षविरेचनैरधोविरेचनैरूर्ध्वमधस्तथोर्ध्वम् ।
 उपाचरेत्स्नेहमवं विरूक्षणैः स्नेहस्तु रूक्षेण विरूक्ष्यते ध्रुवम् ॥ २४ ॥
 विबद्धबह्वानिलजे विरूहणं घृतं तु पित्तानिलजे सतिक्तकम् ।
 शोथे तु मूर्छावति दाहकर्षिते विशोधिनीयं तु समूत्रमिष्यते ।
 कफोत्थितं क्षारककृष्णसंयुतैः समूत्रतक्रैस्तु च युक्तिभिर्हरेत् ॥ २५ ॥
 शोथे वातोत्थिते पूर्वं मासार्धं त्रिवृतं पिबेत् ।
 तैलमेरण्डजं वाऽपि मलबन्धेऽपि तन्मतम् ॥ २६ ॥
 शाल्यन्नं पयसा युक्तं रसैर्वाऽपि प्रयोजयेत् ।
 स्वेदाभ्यङ्गांश्च वातघ्नान्सेकान्लेपांश्च कल्पितात् ॥ २७ ॥

धातजशोथचिकित्सा—

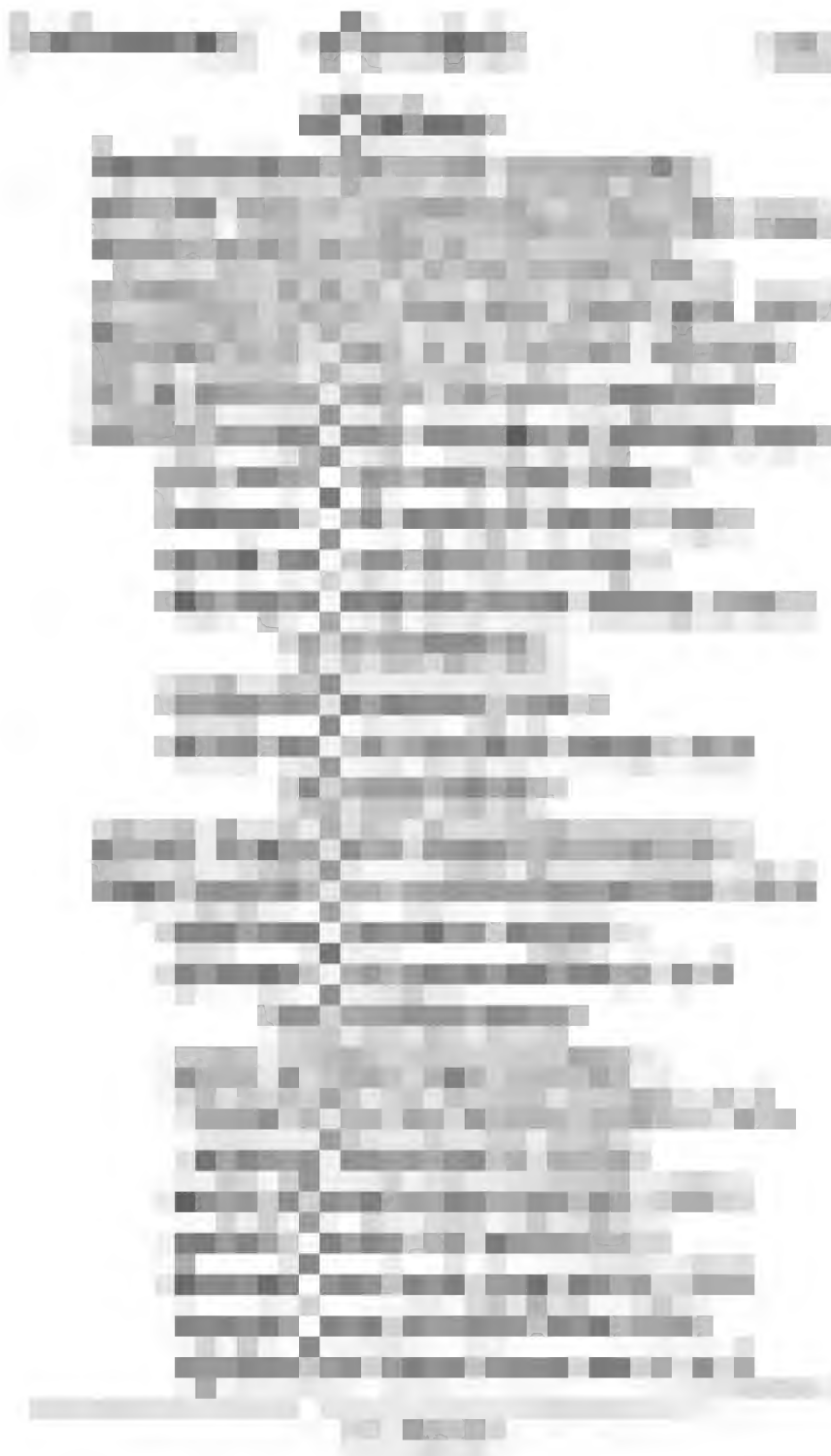
शुण्ठीपुनर्नवैरण्डपञ्चमूलघृतं जलम् ।
 चातिके श्वयथौ पेयं भक्तपाकेऽपि तन्मतम् ॥ २८ ॥

पित्तजशोथचिकित्सा—

क्षीराशनं पित्तकृतेऽतिशोथे त्रिवृद्धूचीत्रिफलाकषायम् ।
 पिबेद्भुवां मूत्रविमिश्रितं वा फलत्रिकक्षौद्रमथाक्षमात्रम् ॥ २९ ॥
 पटोलत्रिफलारिष्टदार्ढाक्राथः सगुग्गुलुः ।
 हरेत्पित्तकृतं शोथं तृष्णाज्वरसमन्वितम् ॥ ३० ॥

कफजशोथचिकित्सामाह—

कफोत्थे तु पिबेत्तैलं सिद्धमारग्वधादिना ।
 मन्देऽग्नौ स्तिमिते कोष्ठे स्रोतोरोधेऽरुचावपि ॥ ३१ ॥
 क्षारमूत्रासवारिष्टचूर्णतक्राणि योजयेत् ।
 कफोत्थे सिकताकृष्णाशिग्रुत्वगतसीयुतैः ॥ ३२ ॥
 पुराणैरपि पिण्याकैः पिष्टैः सुरभिवारिणा ।
 लेपनाच्छलेष्मजठरं हन्यते तु मुहुः क्रमात् ॥ ३३ ॥
 वह्निघनुरूपः स्वरसः सर्षपतैलेन मिश्रितः पीतः ।
 पक्कजपत्रसमुत्थः शोफानां नाशनः परमः ॥ ३४ ॥



पुनर्नवाविश्वत्रिवृद्धूचीशम्याकपथ्यासुरदारुकल्कः ।
 शोफे कफोत्थेऽक्षसमं समूत्रं क्वाथं पिबेद्वाऽप्यथ चूर्णमेषाम् ॥ ३५ ॥
 पुनर्नवामृतादारुदशमूलरसाढके ।
 आर्द्रकस्य रसप्रस्थे गुडस्य च तुलां पचेत् ॥ ३६ ॥
 तत्सिद्धं व्योषपत्रैलात्वक्पत्रैः कार्षिकैः पृथक् ।
 चूर्णीकृतैर्लिहेच्छीते मधुनः कुडवं क्षिपेत् ॥ ३७ ॥
 लेहः पौनर्नवो नाम श्लेष्मशोफनिषूदनः ।
 श्वासकासारुचिहरो बलपुष्ट्यग्निवर्धनः ॥ ३८ ॥

इति पुनर्नवावलेहः ।

अथ पथ्यादिकाथः—

मिश्रे मिश्रक्रमं कुर्यात्सर्वजे सर्वमेव तु ॥ ३९ ॥
 पिप्पल्यजाजी गजपिप्पली च निदिग्धिका नागरचित्रकौ च ।
 रजन्ययःपिप्पलिमूलपाठामुस्तं च चूर्णं सुखतोयपीतम् ॥ ४० ॥
 हन्याञ्चिदोषं विषजं सशोफं कल्कश्च भूनिम्बमहौषधाभ्याम् ।
 रसस्तथैवाऽऽर्द्रकनागरस्य पेयोऽथ जीर्णे पयसाऽन्नमद्यात् ॥ ४१ ॥
 शिलाह्वयं वा त्रिफलारसेन हन्याञ्चिदोषं श्वयथुं प्रसह्य ।
 तक्रं पिबेद्वा गुरुभिन्नवर्चाः सव्योषसौवर्चलमाक्षिकं च ॥
 विद्ध्वातसङ्गे पयसा रसैर्वा प्रागुष्णमद्यादुरुबृकतैलम् ॥ ४२ ॥
 बिल्वपत्ररसः पीतः सोषणः श्वयथौ त्रिजे ।
 विट्सङ्गे चैव दुर्नाम्नि विदध्यात्कामलासु च ॥ ४३ ॥
 शोफे चाऽऽगन्तुजे कुर्यात्सेकलेपादि शीतलम् ।
 स्थिरीकृतं चूर्णपयो महिषीनवनीतयुक् ॥ ४४ ॥
 भल्लातककृतं शोथं निहन्त्येव न संशयः ।
 भल्लातजं जयेच्छोफं सतिला कृष्णमृत्तिका ॥ ४५ ॥
 यष्टीदुग्धतिलैर्लेपो नवनीतेन संयुतः ।
 शोफमारुष्करं हन्ति चूर्णं शालदलस्य वा ॥ ४६ ॥
 पथ्यामृतामार्गिपुनर्नवाग्निदावीनिशादारुमहौषधानाम् ।
 क्वाथं निपीयोदरपाणिपादवक्त्राश्रितं हन्त्यचिरेण शोफम् ॥ ४७ ॥
 इति पथ्यादिकाथः ।

अथ गुडाद्यं चूर्णम्—

पुनर्नवामूलकविश्वदारुच्छिन्नोद्भवाचित्रकमूलसिद्धाः ।
 रसा यवाग्वश्च पथांसि यूषाः शोफे प्रदेया दशमूलगर्भाः ॥ ४८ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

कृष्णाग्निविश्वघनजीरककण्टकारी-

पाठानिशाकरिकणामगधाजटानाम् ।

चूर्णं कवोष्णसलिलेन विलोड्य पीतं

नातः परं श्वयथुरोगहरं नराणाम् ॥ ४८ ॥

आर्द्रकं सगुडं खादेऽप्यकुशार्धविवर्धितम् ।

यावत्पञ्चपलं मुद्गक्षीरयूषरसाशनः ॥ ४९ ॥

श्वयथुं गुल्ममुदरं कासं श्वासमरोचकम् ।

पीनसं पाण्डुदुर्नामहृद्रोगं च विनाशयेत् ॥ ५० ॥

गुडार्द्रकं वा गुडनागरं वा गुडामयां वा गुडपिप्पलीं वा ।

कर्षाभिवृद्ध्या त्रिपलप्रमाणं खादेन्नरः पक्षमथापि मासम् ॥ ५१ ॥

शोफप्रतिश्रयायगलास्यरोगान्सश्वासकासारुचिपीनसादीन् ।

जीर्णज्वरार्शोग्रहणीविकारान्हन्यात्तथाऽन्यान्कफवातरोगान् ॥ ५२ ॥

आर्द्रकस्वरसः पीतः पुराणगुडमिश्रितः ।

अजाक्षीराशिनां शीघ्रं सर्वशोफहरो भवेत् ॥ ५३ ॥

भूनिम्बविश्वकल्कं जग्ध्वा पीतः पुनर्नवाक्काथः ।

अपहरति नियतमाशु श्वयथुं सर्वाङ्गजं नृणाम् ॥ ५४ ॥

विश्वं गुडेन तुल्यं वृश्चीकरसानुपानमभ्यस्तम् ।

प्राणिहन्ति सर्वशोफं घनघृन्दं चण्डवायुरिव ॥ ५५ ॥

गुडपिप्पलिशुण्ठीनां चूर्णं श्वयथुनाशनम् ।

आमाजीर्णप्रशमनं शूलघ्नं बस्तिशोधनम् ॥ ५६ ॥

गुडात्पलत्रयं ग्राह्यं शृङ्गवेरं पलत्रयम् ।

शृङ्गवेरसमा कृष्णा लोहविट्किट्टयोः पलम् ॥ ५७ ॥

चूर्णमेतत्समुद्दिष्टं सर्वश्वयथुनाशनम् ।

इति गुडाद्यं चूर्णम् ।

अथ पुनर्नवाद्यं चूर्णम्-

पुनर्नवादाढ्यसृतापाठाविश्वं श्वदंष्ट्रिका ॥ ५८ ॥

रजन्यौ द्वे बृहत्सौ द्वे पिप्पल्यश्चित्रकं वृषः ।

समभागानि संचूर्ण्य गवां सूत्रेण वा पिबेत् ॥ ५९ ॥

* क. पलार्धप्रमाणं विवर्धितम् । + क. लोहविट्भस्मनः पलमिति वङ्गक्षेत्रे ।

बहुप्रकारं श्वयथुं सर्वगात्रावसारिणम् ।

हन्ति चाऽऽशूदराण्यष्टौ व्रणांश्चैवोद्धतानपि ॥ ६० ॥

इति पुनर्नवाद्यं चूर्णम् ।

अथ गोमूत्रमण्डूरः—

गोमूत्रसिद्धं मण्डूरं सुरभीरसभावितम् ।

माणकार्दककन्दानां रसैश्चापि विभावयेत् ॥ ६१ ॥

त्रिफलाकटुचव्यानां चूर्णं पाणितलद्वयम् ।

क्षिपेत्सुसिद्धपाके तु मधुनश्च पलद्वयम् ॥

निहन्ति सर्वजं शोथं सर्वाङ्गं च विशेषतः ॥ ६२ ॥

अत्र गोमूत्रसिद्धं लोहमलं संचूर्ण्य माणकार्दकरसैरातपे परिभाव्य
त्रिफलादिचूर्णं द्विगुणमूत्रेण पक्तव्यम् ।

इति गोमूत्रमण्डूरः ।

अथ पुनर्नवाद्यं घृतम्—

पुनर्नवापत्ररसालमूलं संक्षुद्य तोयार्मणशेषसिद्धम् ।

चतुर्थभागेन घृतेन पक्वं प्रस्थं तु तत्कल्कपलाष्टकेन ॥ ६३ ॥

संसंवितं वातबलासरोगान्सर्वांश्च शोफानतिदुस्तरांश्च ।

गुल्मोदरप्लीहगुदोद्धवांश्च निहन्ति वह्निं कुरुतेऽपि पुंसाम् ॥ ६४ ॥

इति पुनर्नवाद्यं घृतम् ।

अथ शुष्कमूलकायं तैलम्—

शुष्कमूलकवर्षाभूदारुसामहौषधैः ।

पक्वमभ्यञ्जने तैलं समूलं शोफनाशनम् ॥ ६५ ॥

इति शुष्कमूलकायं तैलम् ।

अथ पञ्चमूलायं तैलम्—

पञ्चमूलं सलवणं सरलं देवदारु च ।

हस्तिकर्णपलाशस्य फलानि निचुलस्य च ॥ ६६ ॥

पलाशं काकनासा च गुडूची देवपुष्पकम् ।

अहिंसा श्रेयसी हिंसा कृष्णगन्धा पुनर्नवा ॥ ६७ ॥

कायस्था च वयस्था च दारुको जटिला जटा ।

अलम्बुधो रुबूकं च प्रपुन्नाटं सनागरम् ॥ ६८ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

[पडधिकशततमस्तरङ्गः] बृहद्योगतरङ्गिणी ।

७०७

शिथुगोधा वरी मार्गी तर्कारी पौष्करी जटा ।

एतैः सिद्धं यथालाभं तैलमभ्यञ्जनैस्त्रिभिः ॥ ६९ ॥

निहन्त्युदीर्णं श्वयथुं जन्तोर्वातकफात्मकम् ॥ ७० ॥

इति पञ्चमूलाद्यं तैलम् ।

अथ कंसहरीतकी ।

द्विपञ्चमूलस्य पचेत्कषाये कंसे मयानां च शतं गुडाञ्च ।

लेहे सुसिद्धे च विनीय चूर्णं व्योषं त्रिसौगन्ध्यमुपस्थिते च ॥ ७१ ॥

प्रस्थार्धमात्रं मधुनः सुशीते किञ्चिच्च चूर्णादपि यावशूकात् ।

एकामयां प्राश्य ततश्च लेहाच्छुक्तिं निहन्ति श्वयथुं प्रवृद्धम् ॥ ७२ ॥

कासज्वरारोचकमेहगुल्मप्लीहन्निदोषोदरपाण्डुरोगान् ।

काश्यामवातानमृगम्लपित्तं वैवर्ण्यमूत्रानिलशुक्रदोषान् ॥ ७३ ॥

दशमूलकस्यापि कंसम् ।

किञ्चिच्च कर्षपर्यायः शुक्तिरर्धपलं मता ।

सान्निध्यान्मधुनो मानं व्योषादेर्मिलितस्य च ॥ ७४ ॥

दशमूलीहरीतक्या तुल्या कंसहरीतकी ।

मानं तेनात्र तत्रस्थं चरके प्राह जैजटः ॥ ७५ ॥

इति कंसहरीतकी ।

अथ दशमूलहरीतकी—

दशमूलकषायस्य कंसे पथ्याशतं गुडात् ।

तुलां पचेद्घने तत्र व्योषक्षारचतुष्पलम् ॥ ७६ ॥

त्रिजातं तु सुवर्णांशं प्रस्थार्धं मधुनो हिमे ।

दशमूलहरीतक्यः शोफान्घ्नन्ति सुदुस्तरान् ॥ ७७ ॥

इति दशमूलहरीतकी ।

अथ श्वयथुघाती रसः—

रसगन्धकलोहकणात्रिवृता-

मरिचामरदारुनिशात्रिफलम् ।

दलितं मृदु गोः सलिलेन पिबे-

दनुरूपममुं श्वयथूदरघ्नम् ॥ ७८ ॥

इति श्वयथुघाती रसः ।

1. Introduction

2. Background

3. Methodology

The first part of the study focuses on the analysis of the data collected from the survey. The data is then used to identify the main factors influencing the results.

4. Results and Discussion

5. Conclusion

The results of the study show that there is a significant correlation between the variables. This suggests that the factors identified in the study are indeed influential in the outcome.

6. References

The study is based on the following references:

7. Appendix

8. Acknowledgements

The authors would like to thank the following individuals for their assistance in the study:

9. Contact Information

10. Declaration of Interest

The authors declare that they have no conflict of interest.

11. Summary

निषेधः—

स्त्रीतैलघृतमद्यानि गुर्वम्ललवणानि च ।
जाङ्गलं च दिवास्वापं शोफवान्वर्जयेज्जनः ॥ ७९ ॥
इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां शोफनिदानचिकित्साकथनं नाम
षडधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १०६ ॥

अथ सप्ताधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथान्त्रवृद्धिकुरण्डवध्रोगनिदानम्—

*कुद्धस्तूर्ध्वगतिर्वायुः शोफशूलकरश्चरन् ।
मुष्कौ वङ्क्षणतः प्राप्य फलकोशाभिवाहिनीः ॥ १ ॥
प्रपीड्य धमनीर्वृद्धिं करोति फलकोशयोः ।
दोषास्रमेदोमूत्रान्त्रैः सवृद्धिः सप्तधा गदः ॥ २ ॥
मूत्रान्त्रजावप्यनिलाद्धेतुभेदस्तु केवलः ।
वातपूर्णहतिस्पर्शो रूक्षो वातादहेतुरुक् ॥ ३ ॥
पक्वोदुम्बरसंकाशः पित्ताद्वाहोष्मपाकवान् ।
कफाच्छीतो गुरुः स्निग्धः कण्डूमान्कठिनोऽल्परुक् ॥ ४ ॥
कृष्णस्फोटावृतः पित्तवृद्धिलिङ्गस्तु रक्तजः ।
कफवन्मेदसा वृद्धिर्मृदुस्तालफलोपमः ॥ ५ ॥
मूत्रधारणशीलस्य मूत्रजः स तु गच्छतः ।
अम्भोभिः पूर्णवृतिवत्क्षोभं याति सरुद्धमृदुः ॥ ६ ॥
मूत्रकृच्छ्रमधस्ताच्च वलयन्फलकोशयोः ।
वातकोपिभिराहारैः शीततोयावगाहनैः ॥ ७ ॥
धारणैरणभाराध्वविषमाङ्गप्रवर्तनैः ।
क्षोभणैः क्षोभितोऽन्यैश्च क्षुद्रान्त्रावयवं यदा ॥ ८ ॥
पवनो विगुणीकृत्य स्वनिवेशाद्धो नयेत् ।
कुर्याद्वङ्क्षणसंधिस्थं ग्रन्थ्याभं श्वयथुं तदा ॥ ९ ॥
उपेक्षमाणस्य च मुष्कवृद्धिमाध्मानरुक्स्तम्भवती स वायुः ।
प्रपीडितोऽन्तःस्वनवान्प्रयाति प्रध्मापयन्नेति पुनः प्रमुक्तः ॥ १० ॥

* क. कुद्धोऽनूर्ध्वे इति पाठान्तरम् ।

१ ग. विस्थो प्र ।



यस्यान्त्रावयवैः श्लेष्मा मुष्कयोर्याति संचयात् ।
 अन्त्रवृद्धिरसाध्योऽयं वातवृद्धिसमाकृतिः ॥ ११ ॥
 रूक्षकृष्णारुणः शीतस्तन्तुजालसमावृतः ।
 अत्यभिष्यन्दिर्गुर्वामसेवनान्निचयं गतः ॥ १२ ॥
 करोति वृद्धिवच्छोथं दोषो वङ्गक्षणसंधिषु ।
 ज्वरशूलाङ्गसादाढ्यं तं ब्रध्नमिति निर्दिशेत् ॥ १३ ॥

इत्यन्त्रवृद्धिकुरण्डब्रध्ननिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

वेगाघातं पृष्ठयानं व्यायामं मैथुनं तथा ।
 बहुभोजनमध्वानमुपवासं गुरूणि च ॥ १४ ॥
 वातलानि तथाऽन्नानि वर्जयेदन्त्रवृद्धिमान् ।
 वातान्त्रवृद्धौ त्रिवृतां पीत्वा मूत्रेण गोः सुखी ॥ १५ ॥
 गुग्गुलुं रुबुतैलं वा गोमूत्रेण पिबेन्नरः ।
 वाताण्डवृद्धिं हन्त्याशु चिरकालानुवर्तिनीम् ॥ १६ ॥
 सक्षीरं वा पिबेत्तैलं यासमेरण्डसंभवम् ।
 तेन वाताण्डवृद्धेः स्यादशेषेण विनाशनम् ॥ १७ ॥
 चन्दनं मधुकं पद्ममुशीरं नीलमुत्पलम् ।
 क्षीरपिष्टैः प्रदेहः स्यात्पित्तवृद्धिरुजापहः ॥ १८ ॥

इति चन्दनाविलेपः ।

अथ षडूषणगुग्गुलुः—

पञ्चवल्कलकल्केन सघृतेन प्रलेपनम् ।
 पानं वा तत्कषायस्य पित्तवृद्धौ प्रशस्यते ॥ १९ ॥
 कफवृद्धौ मूत्रपिष्टैरुष्णवीर्यैः प्रलेपनम् ।
 पातव्यो मूत्रसंयुक्तः कषार्यैः पीतदारुणः ॥ २० ॥
 त्रिकटुत्रिफलाक्वाथं सक्षारलवणं पिबेत् ।
 कफवातात्मकोपघ्नं विरेकात्कफवृद्धिजित् ॥ २१ ॥
 गोमुत्रैस्त्रिफलाक्वाथं पिबेत्पातरतन्द्रितः ।
 कफवातोद्भवं हन्ति श्वयथुं वृषणोत्थितम् ॥ २२ ॥

१ ग. °योर्वर्तितः? । २ क. °लपवाक्षितः । ३ ग. °गुर्वम्लशुष्कपुल्याभिशासनात् । क° ।
 ४ ग. °यः पित्तदा° ।

अविदाहि च भैषज्यं कर्तव्यं रक्तपैत्तिके ।
 सर्वं पित्तहरं कार्यं रक्तजे रक्तमोक्षणम् ॥ २३ ॥
 अण्डवृद्धिगदे शीतं लेपनं सर्वमिष्यते ।
 पाको रक्ष्यः प्रयत्नेन रक्तमोक्षो मुहुर्मुहुः ॥ २४ ॥
 त्रिवृतां प्रपिबेत्क्षौद्रशर्करासहितां मुहुः ।
 पित्तग्रन्थिक्रमं कुर्यादामे पक्वे च रक्तजे ॥ २५ ॥
 स्विन्नां मेदःसमुत्थां तां लेपयेत्सुरसादिना ।
 शिरो विरेचयेद्द्रव्यैः सुखोष्णैर्मूत्रसंयुतैः ॥ २६ ॥
 षडूषणं क्षौद्रसमं गुग्गुलुं गव्यसर्पिषा ।
 युतं संकुट्य भुञ्जीत यथाग्निं दिवसानने ॥ २७ ॥
 कटुतिक्तकषायाशी मेदोवृद्धिप्रणाशनम् ।

इति षडूषणगुग्गुलुः ।

अथ वैद्यविलासात्—

संस्वेद्य मूत्रप्रभवां वस्त्रखण्डेन वेष्टयेत् ॥ २८ ॥
 सीबन्यां पार्श्वतोऽधस्ताद्विधेद्वीहिमुखेन तु ।
 मुष्ककोशमगच्छन्त्यामन्त्रवृद्धौ विचक्षणः ॥ २९ ॥
 वातवृद्धिक्रमं कुर्याद्वाहस्तत्राग्निना हितः ।
 शङ्खस्योपरि कर्णान्ते त्यक्त्वा सीवनिमादरात् ॥
 व्यत्यासाद्वा शिरां विधेदन्त्रवृद्धिनिवृत्तये ॥ ३० ॥
 प्राज्ञैरुर्ध्वं चाङ्गुलीनां चतुष्कं दाह्यं पादे तत्र नाडीत्रयं च ।
 तद्वृद्धस्ते या प्रसिद्धा कनिष्ठा दाह्यं तस्याः पर्वमध्ये ह चान्ते ॥ ३१ ॥
 वामे वृद्धिर्यदा यत्र तदा दाह्यं च दक्षिणे ।
 दक्षिणे च यदा जाता तदा वामे प्रकीर्तितम् ॥ ३२ ॥
 नाशयेदन्त्रवृद्धिं च चतुर्धा वातसंभवाम् ।
 मासमात्रप्रयोगेण निरतं पथ्यसेवनात् ॥ ३३ ॥

इति वैद्यविलासात् ।

अथ रास्नादिकाथः—

तैलमेरण्डजं पीत्वा बलासिद्धं पयोन्वितम् ।
 आध्मानशूलोपचितामन्त्रवृद्धिं जयेन्नरः ॥ ३४ ॥

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

रास्नायष्ट्यमृतैरण्डबलागोक्षुरसाधितः ।

काथोऽन्त्रवृद्धिं हन्त्याशु रुबुतैलेन मिश्रितः ॥ ३५ ॥

इति रास्नादिकाथः ।

अथ मांस्यादिघृतम्—

शम्बूकोदरनिहितं गेव्यं सप्ताहमातपे सर्पिः ।

स्थितमपहरति कुरण्डं सैन्धवचूर्णान्वितं लेपात् ॥ ३६ ॥

ससैन्धवघृताभ्यक्तं ताम्रभाजनमातपे ।

प्रतप्तमूर्णया घृतं तन्मलं समुपाहरेत् ॥ ३७ ॥

अक्षयेत्तेन कोरण्डमामजं तमहर्निशम् ।

घवृद्धस्तेन कोरण्डो नास्तीत्याह पुनर्वसुः ॥ ३८ ॥

मांसीकुष्ठं पत्रकैला रास्ना शृङ्गी च चित्रकम् ।

क्रिमिघ्नमश्वगन्धा च शैलेयं कटुरोहिणी ॥ ३९ ॥

सैन्धवं तगरं चैव कटुजातिविषे समैः ।

एतैश्च कार्ष्णिकैः कल्कैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ४० ॥

वृषमुण्डितिकैरण्डनिम्बपत्रमवं रसम् ।

कण्टकार्याश्चापि दुग्धं प्रस्थं प्रस्थं विनिक्षिपेत् ॥ ४१ ॥

सिद्धमेतद्घृतं पीतमन्त्रवृद्धिमपोहति ।

वातवृद्धिं पित्तवृद्धिं मेदोवृद्धिमथापि वा ॥ ४२ ॥

मूत्रवृद्धिं च हन्त्येतत्सर्पिराशु न संशयः ।

इति मांस्यादिघृतम् ।

अथ बिल्वायं चूर्णम्—

तैलं नारायणं योज्यं पानाभ्यञ्जनवस्तिषु ॥ ४३ ॥

गोमूत्रैरण्डतैलाभ्यां रसगन्धककज्जलीम् ।

पीत्वा निहन्ति सहसा वृद्धिं वृषणसंभवाम् ॥ ४४ ॥

भृष्टश्चैरण्डतैलेन कल्कः पथ्यासमुद्भवः ।

कृष्णासैन्धवसंयुक्तो बभ्रुरोगहरः परः ॥ ४५ ॥

मूलं बिल्वकपित्थयोररलुकस्याग्नेर्बृहत्पौर्ण्योः

इयामापूतिकरञ्जशिशुकतरोर्विश्वौषधारुक्करम् ।

Age Group	Male (%)	Female (%)
18-24	~15	~15
25-34	~25	~25
35-44	~35	~35
45-54	~45	~45
55-64	~55	~55
65-74	~65	~65
75-84	~75	~75
85+	~85	~85

1. The first step is to identify the problem or question that needs to be answered. This involves understanding the context and the specific requirements of the task.

1. The first step is to identify the problem or question that needs to be answered. This involves understanding the context and the specific requirements of the task.

1. **Introduction**
 2. **Background**
 3. **Methodology**
 4. **Results**
 5. **Conclusion**
 6. **References**

1000

Figure 1

Age Group	Percentage of Respondents
18-24	~85%
25-34	~75%
35-44	~70%
45-54	~65%
55-64	~60%
65-74	~55%
75+	~50%

1000

100

Age Group	Percentage
18-24	10
25-34	25
35-44	40
45-54	55
55-64	70
65+	85

कृष्णाग्रन्थिकुबेरपञ्चलघणक्षाराजमोदान्वितं

पीतं काञ्चिककोष्णतोयमथितैश्चूर्णीकृतं वर्ध्मजित् ॥ ४६ ॥

इति बिल्वाद्यं चूर्णम् ।

सद्यो मृतस्य काकस्य मलेन परिलेपनात् ।

वर्ध्मरोगः प्रयात्याशु रविणेव तमश्चयः ॥

पक्वेऽत्र दारणं कृत्वा प्रकर्तव्या व्रणक्रिया ॥ ४७ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यामण्डवृद्धिषध्मनिदानचिकित्साकथनं

नाम सप्ताधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १०७ ॥

अष्टाधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ गलगण्डनिदानम्—

निबद्धः श्वयथुर्यस्य मुष्कवलम्बते गले ।

महान्वा यदि वा ह्रस्वो गलगण्डं तमादिशेत् ॥ १ ॥

घातः कफश्चापि गले प्रवृद्धौ मध्ये तु संसृत्य तथैव मेदः ।

कुर्वन्ति गण्डं क्रमशः स्वालिङ्गैः समन्वितं तं गलगण्डमाहुः ॥ २ ॥

तोदान्वितः कृष्णशिरावनद्धः श्यावारुणो वा पवनात्मकस्तु ।

इति वातजः ।

अथ पित्तजः—

पारुष्यशुक्तश्चिरवृद्धिपाको यदृच्छया पाकमिधात्कदाचित् ॥ ३ ॥

वैरस्यमास्यस्य च तस्य जन्तोर्भवेत्तथा तालुगले च शोषः ।

अथ कफजः—

स्थिरः सवर्णो गुरुरग्रकण्डूः शीतो महान्श्चापि कफात्मकस्तु ॥ ४ ॥

अथ क्षयवृद्धियुक्तमाह—

चिरामिवृद्धिं भजते चिराद्वा प्रपच्यते मन्दरुजं कदाचित् ।

माधुर्यमास्यस्य च तस्य जन्तोर्भवेत्तथा तालुगले प्रशोषः ॥ ५ ॥

स्निग्धो गुरुः पाण्डुरनिष्ठगन्धो मेदोभवस्त्वल्परुजोऽतिकण्डूः ।

प्रलम्बतेऽलाञ्छुवदल्पमूलो देहानुरूपक्षयवृद्धियुक्तः ॥ ६ ॥

स्निग्धास्यता तस्य भवेच्च जन्तोर्गलेन शब्दं कुरुते च नित्यम् ।

कृच्छ्राच्छ्वसन्तं मृदुसर्वगात्रं संवत्सरातीतमरोचकार्तम् ॥ ७ ॥

[illegible]

1. The first part of the document is a title page. It contains the title "The Role of the State in the Development of the Economy" and the author's name "John Doe".

2. The second part of the document is an abstract. It provides a brief summary of the main findings of the study.

3. The third part of the document is the introduction. It discusses the importance of the state in the development of the economy and the objectives of the study.

4. The fourth part of the document is the literature review. It examines the existing research on the role of the state in the development of the economy.

5. The fifth part of the document is the methodology. It describes the research methods used in the study.

6. The sixth part of the document is the results and discussion. It presents the findings of the study and discusses their implications.

7. The seventh part of the document is the conclusion. It summarizes the main findings of the study and provides recommendations for future research.

8. The eighth part of the document is the references. It lists the sources used in the study.

9. The ninth part of the document is the appendix. It contains additional information related to the study.

10. The tenth part of the document is the index. It provides a list of the topics covered in the document.

[अष्टाधिकशततमस्तरङ्गः] बृहद्योगतरङ्गिणी ।

७१३

क्षीणं च वैद्यो गलगण्डयुक्तं भिन्नस्वरं चापि विवर्जयेत्तु ॥ ८ ॥
इति गलगण्डनिदानम् ।

अथ गण्डमालापचीनिदानम्—

कर्कन्धुकोलामलकप्रमाणैः कक्षां समन्यागलवङ्क्षणेष्ु ।
मेदःकफाभ्यां चिरमन्दपाकैः स्याद्गण्डमाला बहुभिस्तु गण्डैः ।
ते ग्रन्थयः केचिद्वासपाकाः स्रवन्ति नश्यन्ति भवन्ति चान्ये ॥ ९ ॥
कालानुबन्धं चिरमादधाति सैवापचीति प्रवदन्ति केचित् ।
साध्या स्मृता पीनसकासंशूलैश्वासज्वरच्छर्दियुता त्वसाध्या ॥ १० ॥
इति गण्डमालापचीनिदानम् ।

अथ ग्रन्थिनिदानम्—

वातादयो मांसमसृक्प्रदुष्टाः संदूष्य मेदश्च तथा शिराश्च ।
वृत्तोन्नतं विशथितं तु शोथं कुर्वन्त्यतो ग्रन्थिरिति प्रदिष्टः ॥ ११ ॥
आयस्यते वृश्चति तुद्यते च प्रत्यस्यते मथ्यति भिद्यते च ।
कृष्णो मृदुर्बस्तिरिवाऽऽततश्च भिन्नः स्रवेच्चानिलतोऽसृगच्छम् ॥ १२ ॥
दंढह्यते धूष्यति चूष्यते च पापच्यते प्रज्वलतीव चापि ।
रक्तः स पीतोऽप्यथ वाऽपि पित्ताद्भिन्नः स्रवेद्दुष्टमतीव चासम् ॥ १३ ॥
शीतो विवर्णोऽल्परुजोऽतिकण्डुः पाषाणवत्संहननोपपन्नः ।
चिराभिवृद्धिश्च कफप्रकोपाद्भिन्नः स्रवेच्छुक्लघनं च पूयम् ॥ १४ ॥
शरीरवृद्धिक्षयवृद्धिहानिः स्निग्धो महान्कण्डुयुतोऽरुजश्च ।
मेदःकृतो गच्छति चात्र भिन्ने पिण्याकसर्पिःप्रतिमं च मेदः ॥ १५ ॥
व्यायामजातैरबलस्य तैस्तैराक्षिप्य वायुस्तु शिराप्रतानम् ।
संकुच्य संपीड्य विशुष्य चापि ग्रन्थिं करोत्युन्नतमाशु वृत्तम् ॥ १६ ॥
ग्रन्थिः शिराजः स तु कृच्छ्रसाध्यो भवेद्यदि स्यात्सरुजश्चलश्च ।
अरुक्स एवाप्यचलो महान्श्च मर्मोत्थितश्चापि विवर्जनीयः ॥ १७ ॥

इति ग्रन्थिनिदानम् ।

अथार्बुदापचीनिदानम्—

गात्रप्रदेशे कचिदेव दोषाः संमूर्छिता मांसमसृक् प्रदूष्य ।
वृत्तं स्थिरं मन्दरुजं महान्तमनल्पमूलं चिरवृद्धिपाकम् ॥ १८ ॥

१ ग. 'सपाश्वशू' । २ ग. 'लकास' । ३ ग. प्रप्रश्यते ।



त्रिमल्लमट्टविरचिता— [अष्टाधिकशततमस्तरङ्गः]

कुर्वन्ति मांसोच्छ्रयमत्यगाढं तदर्बुदं शास्त्रविदो वदन्ति ।
वातेन पित्तेन कफेन वाऽपि रक्तेन मांसेन च भेदसा च ॥ १९ ॥
संजायते तस्य च लक्षणानि ग्रन्थेः समानानि सदा भवन्ति ।
दोषाः प्रदुष्टा रुधिरं शिरास्तु संकुच्य संपीड्य ततस्त्वपाकम् ॥ २० ॥
सास्त्रावमुन्नह्यति मांसपिण्डं मांसाङ्कुरैराचितमाशु वृद्धिम् ।
कुर्वन्त्यजसं रुधिरप्रवृद्धिमसाध्यमेतद्गुधिरात्मकं तत् ॥ २१ ॥
रक्तक्षयोपद्रवपीडितत्वात्पाण्डुर्भवेदर्बुदपीडितस्तु ।
मुष्टिप्रहारादिभिरिदितेऽङ्गे मांसं प्रदुष्टं जनयेत्तु शोथम् ॥ २२ ॥
अवेदनं स्निग्धमनैन्यवर्णमपाकमश्मोपममप्रचाल्यम् ।
प्रदुष्टमांसस्य नरस्य गाढमेतद्भवेन्मांसपरायणस्य ॥ २३ ॥
मांसार्बुदं त्वेतदसाध्यमुक्तं साध्येष्वपीमानि विवर्जयेत्तु ।
संप्रसृतं मर्मणि यच्च जातं स्रोतःसु वा यच्च भवेदचाल्यम् ॥ २४ ॥
यज्जायतेऽन्यत्खलु पूर्वजाते ज्ञेयं तदध्यर्बुदमर्बुदज्ञैः ।
यद्द्विजातं युगपत्कमाद्वा द्विर्बुदं तच्च भवेदसाध्यम् ॥ २५ ॥
न पाकमायान्ति कफाधिकत्वान्मेदोबहुत्वाच्च विशेषतस्तु ।
दोषस्थिरत्वाद्ग्रथनाच्च तेषां सर्वार्बुदान्येव निसर्गतस्तु ॥ २६ ॥
ते गलगण्डगण्डमालाग्रन्थ्यर्बुदापचीनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

स्वेद्योऽनिलोत्थो गलगण्ड आदौ नाड्यानिलग्नौषधपत्रपिण्डैः ।
स्वेदोपहानौ कफसंभवेऽपि कृत्वा क्रमं श्लेष्महरं विदध्यात् ॥ २७ ॥

हितार्थमाह—

यवमुद्गपटोलानि कटुरूक्षं च भोजनम् ।
छादं सरक्तमुक्तिं च गलगण्डे प्रयोजयेत् ॥ २८ ॥

तस्योपचारमाह—

निचुलं शिग्रुबीजानि दशमूलमथापि वा ।
आलेपनं वातगण्डे सुखोष्णं संप्रशस्यते ॥ २९ ॥
तण्डुलोदकपिष्टेन मूलेन परिलेपितः ।
हस्तिकर्णपलाशस्य गलगण्डः प्रशाम्यति ॥ ३० ॥

1. Introduction

The purpose of this study is to investigate the effects of the proposed system on the performance of the participants. The study was conducted in a laboratory setting with a sample of 30 participants. The participants were divided into two groups: a control group and an experimental group. The control group used the traditional system, while the experimental group used the proposed system. The results of the study showed that the proposed system significantly improved the performance of the participants compared to the traditional system.

The study was conducted in a laboratory setting with a sample of 30 participants. The participants were divided into two groups: a control group and an experimental group. The control group used the traditional system, while the experimental group used the proposed system. The results of the study showed that the proposed system significantly improved the performance of the participants compared to the traditional system.

The study was conducted in a laboratory setting with a sample of 30 participants.

The participants were divided into two groups: a control group and an experimental group.

The control group used the traditional system, while the experimental group used the proposed system.

The results of the study showed that the proposed system significantly improved the performance of the participants compared to the traditional system.

The study was conducted in a laboratory setting with a sample of 30 participants.

The participants were divided into two groups: a control group and an experimental group. The control group used the traditional system, while the experimental group used the proposed system. The results of the study showed that the proposed system significantly improved the performance of the participants compared to the traditional system.

The study was conducted in a laboratory setting with a sample of 30 participants.

देवदारुविशाले च कफगण्डे प्रलेपनम् ।
 छर्दनं शीर्षरेकश्च सवैरेचनिको हितः ॥ ३१ ॥
 मेदःसमुत्थेऽत्र यथोपदिष्टां विध्येच्छिरां स्निग्धतनोर्नरस्य ।
 श्यामासुधालोहपुरीषदन्तीरसाञ्जनैश्चापि हितः प्रलेपः ॥ ३२ ॥
 सर्षपाञ्शतबीजानि शिशुबीजातसीयवान् ।
 मूलकस्य च बीजानि तक्केणाम्लेन पेषयेत् ॥ ३३ ॥
 गण्डानि ग्रन्थयश्चैव गण्डमालाः सुदारुणाः ।
 आलेपादेव नश्यन्ति विलयं यान्ति वाऽचिरात् ॥ ३४ ॥
 जीर्णकर्कारुकरसो विडसैन्धवसंयुतः ।
 नस्येन हन्ति नचिराद्गलगण्डं न संशयः ॥ ३५ ॥
 जलकुम्भीजलं भस्म पक्वं गोमूत्रगालितम् ।
 पिबेत्क्षौद्रेण तक्राशी गलगण्डोपशान्तये ॥ ३६ ॥
 महिषीमूत्रविमिश्रं लोहमलं संस्थितं घटे मासम् ।
 अन्तर्धूमविदग्धं मधुना गलगण्डनाशनं लीढम् ॥ ३७ ॥
 सूर्यावर्तरसोनाभ्यां गलगण्डोपनाशनम् ।
 स्फोटाम्बावैः शमं याति गलगण्डो न संशयः ॥ ३८ ॥
 गण्डगोपालिकां पिष्ट्वा तत्र लेपं प्रकल्पयेत् ।
 अवश्यं नश्यति क्षिप्रं गलगण्डगदोऽमुना ॥ ३९ ॥
 प्रलेपस्त्वनुभूतोऽयं बहुधा बहुभिर्जनैः ।

‘ गण्डगु आरि ’ इति प्रसिद्धाऽऽम्रवाटिकायां सुलभा कौटविशेषो
 भवति ।

जिह्वाधः पार्श्वयोर्मूलाच्छिरा द्वादश कीर्तिताः ॥ ४० ॥
 तासां स्थूलतरे कृष्णे छिन्द्यात्ते च शनैः शनैः ।
 बडिशेनैव संगृह्य कुशपत्रेण बुद्धिमान् ॥ ४१ ॥
 सुते रक्ते व्रणे तस्मिन्दद्यात्सगुडमार्द्रकम् ।
 भोजनं चानभिष्यन्दि यूषः कौलत्थ इष्यते ॥ ४२ ॥
 नस्यं विरेचनं धूमं वमनं च प्रयोजयेत् ।
 गण्डमालाप्रशान्त्यर्थं यवमुद्रादिभोजनम् ॥ ४३ ॥
 कर्णयुग्मबहिःसंधिमध्याभ्याशे स्थितं च यत् ।
 उपर्युपरि तच्छिन्द्याद्गलगण्डे शिरात्रयम् ॥ ४४ ॥



प्रियङ्गुयष्टीमदनं सकुष्ठं सचन्दनं निम्बु समागधीकम् ।
 कल्कं विनिक्षिप्य विपाच्य तैलं चतुर्गुणं नस्याविधिप्रयुक्तम् ।
 साखोटकल्कस्वरसेन सिद्धं हन्यात्पवृद्धान्गलगण्डरोगान् ॥४५॥
 इति साखोटकतैलम् ।

अथामृताद्यं तैलम्—

तैलं पिबेद्वाऽमृतवल्लिनिम्बहिंसाह्वयावृक्षकपिप्पलीभिः ।
 सिद्धं बलाभ्यां च सदेवदारु हिताय नित्यं गलगण्डरोगे ॥४६॥
 वृक्षकोऽत्र तूणिः । उक्तं च निघण्टे—
 'तूणिस्तूणी कपीतश्च नन्दीवृक्षोऽथ वृक्षकः' इति ।
 इत्यमृताद्यं तैलम् ।

अथ तुम्बीतैलम्—

विष्टङ्गक्षारसिन्धूगारास्नाग्निव्योषदारुभिः ।
 कटुतुम्बीफलरसे कटुतैलं विपाचितम् ॥ ४७ ॥
 चिरोत्थमपि नस्येन गलगण्डं विनाशयेत् ।
 इति तुम्बीतैलम् ।

अथ गण्डमालायाम्—

माक्षिकाढ्यः सकृत्पीतः *क्षारो वरुणमूलजः ॥ ४८ ॥
 गण्डमालां निहन्त्याशु चिरकालानुबन्धिनीम् ।
 काञ्चनारत्वचः काथः शुण्ठीचूर्णेन संयुतः ॥ ४९ ॥
 माक्षिकाढ्यः सकृत्पीतः काथो वरुणमूलकः ।
 गण्डमालां हरत्याशु चिरकालानुबन्धिनीम् ॥ ५० ॥
 पलमर्धपलं वाऽपि पिष्ट्वा तण्डुलवारिणा ।
 काञ्चनारत्वचं पीत्वा गण्डमालां व्यपोहति ॥ ५१ ॥
 पिष्ट्वा ज्येष्ठाम्बुना पेयाः काञ्चनारत्वचः शुभाः ।
 विश्वभेषजसंयुक्ता गलगण्डापहाः पराः ॥ ५२ ॥
 अलम्बुषादलोद्भूतात्स्वरसाह्वे पले पिबेत् ।
 अपच्य गण्डमालायाः कामलायाश्च नाशनः ॥ ५३ ॥
 नवकार्पासिकामूलं तण्डुलैः सह योजितम् ।
 पक्त्वा पूपलिकां खादेदपचीनाशनाय च ॥ ५४ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

11. The eleventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

आरग्वधशिफां क्षिप्रं सम्यक्तण्डुलवारिणा ।
 पिष्ट्वा नस्यप्रलेपाभ्यां गण्डमालां समुद्धरेत् ॥ ५५ ॥
 सौमाञ्जनं देवदारु काञ्चिकेन तु पेषितम् ।
 कोष्णं प्रलेपतो हन्यादपचीमतिदुस्तराम् ॥ ५६ ॥
 गण्डमालामयार्तानां नस्यकर्मणि योजयेत् ।
 निर्गुण्ड्यास्तु शिफां सम्यग्वारिणा परिपेषिताम् ॥
 निष्पीड्य तद्रसान्नस्यं गण्डमालापचीहरम् ॥ ५७ ॥
 कोशातकीनां स्वरसेन नस्यं तुम्ब्यास्तु वा पिप्पलिसंयुतेन ।
 तैलेन वाऽरिष्टमवेन कुर्याद्वचोपकुल्ये सह माक्षिकेण ॥ ५८ ॥

अथ ग्रन्थिचिकित्सा—

शस्त्रकर्म—

ग्रन्थिष्वामेषु कुर्वीत भिषक्शोथप्रतिक्रियाम् ।
 पक्वानापाद्य संशोध्य रोपयेद्व्रणमेषजैः ॥ ५९ ॥
 ग्रन्थिर्न यो नश्यति भेषजेन निष्काश्य तं शस्त्रचिकित्सितेन ।
 जात्यादिपक्वेन घृतेन वैद्यो व्रणेन चान्येन च संचिकित्सेत् ॥ ६० ॥
 ग्रन्थीनुद्धृत्य पश्चात्तु व्रणोक्तं क्रममाचरेत् ।
 शिराग्रन्थिं विहायान्ये शेषे शस्त्रं प्रयुज्यते ॥ ६१ ॥

इति शस्त्रकर्म ।

हिंसा सरोहिण्यमृताऽथ भार्गी श्योनाकबिल्वागरुकृष्णगन्धाः ।
 गोमूत्रपिष्टाः सह तालपत्र्या ग्रन्थौ विधेयोऽनिलजे प्रलेपः ॥ ६२ ॥
 जलायुकाः पित्तकृते हितास्तु क्षीरोदकाभ्यां परिषेचनं च ।
 काकोलिर्वर्गस्य तु शीतलानि पिबेत्कषायाणि सशर्कराणि ॥ ६३ ॥
 द्राक्षारसेनेक्षुरसेन चापि चूर्णं पिबेद्वाऽपि हरीतकीनाम् ।
 मधूकजम्ब्वर्जुनवेतसानां त्वग्निमः प्रदेहानवचारयेच्च ॥ ६४ ॥
 हृतेषु दोषेषु यथानुपूर्वं ग्रन्थौ भिषक्श्लेष्मसमुत्थितेषु ।
 स्विन्नस्य विम्लापनमेव कार्यमङ्गुष्ठवेण्या दृषदः सुतैश्च ॥ ६५ ॥
 विकटतारग्वधकाकणन्तीकाकादनीतापसवृक्षमूलैः ।
 आलेपयेदेणमलाम्बुभार्गीकरञ्जकालामदनैश्च विद्वान् ॥ ६६ ॥

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. This is essential for ensuring the integrity of the financial data and for providing a clear audit trail. The second part of the document outlines the procedures for handling discrepancies and resolving them in a timely manner. The third part of the document provides a detailed overview of the accounting system and the roles of the various personnel involved in its operation.

2. The following table provides a summary of the key findings of the audit. It shows the number of errors identified in each category and the total number of errors. The table also includes a column for the percentage of errors that have been corrected.

Table 1: Summary of Audit Findings

Table 1: Summary of Audit Findings

Error Category	Number of Errors	Percentage Corrected
Arithmetic Errors	15	100%
Transposition Errors	10	80%
Recording Errors	25	90%
Posting Errors	12	75%
Other Errors	8	60%
Total	70	82%

3. The audit also identified several areas where the accounting system could be improved. These include the need for more frequent reconciliations, the implementation of a more robust internal control system, and the need for more comprehensive training for the accounting personnel. The audit also found that the accounting system is not fully compliant with the relevant accounting standards and regulations. This is a serious issue that needs to be addressed as soon as possible. The audit also found that the accounting system is not fully compliant with the relevant accounting standards and regulations. This is a serious issue that needs to be addressed as soon as possible.

दन्ती चित्रकमूलत्वक्सुधाऽर्कपयसी गुडः ।

मल्लतकास्थि कासीसं लेपो भिन्द्याच्छिलामपि ॥ ६७ ॥

ग्रन्थीनमर्मप्रभवानपक्वानुद्धृत्य चाग्निं विदधीत वैद्यः ।

क्षौरेण चैतान्प्रतिसारयेत्तु संलिरुय शस्त्रेण यथोपदेशम् ॥ ६८ ॥

अथार्बुदचिकित्सा—

ग्रन्थ्यर्बुदानां च यतो विशेषः प्रदेशहेत्वाकृतिदोषदूष्यैः ।

ततश्चिकित्सेद्भिषगर्बुदानि विधानविद्वन्थिचिकित्सितेन ॥ ६९ ॥

वातार्बुदे चाप्युपनाहनानि स्निग्धैश्च मांसैरथ वेसवारैः ।

स्वेदं विदध्यात्कुशलस्तु नाड्याः शृङ्गेण रक्तं बहुशो हरेच्च ॥ ७० ॥

मेहोपनाहा मृद्वस्तु पथ्याः पित्तार्बुदे कायविरचनं च ।

निर्घृष्य चोदुम्बरशाकगोजीपत्रैर्भृशं क्षौद्रयुतैः प्रलिम्पेत् ॥

श्लक्ष्णीकृतैः सर्जरसप्रियङ्गुपतङ्गलोधार्जुनयष्टिकाह्वैः ॥ ७१ ॥

लेपनं शङ्खचूर्णेन सह मूलकमस्मना ।

कफार्बुदापहं कुर्याद्ग्रन्थ्यादिषु विशेषतः ॥ ७२ ॥

निष्पावपिण्याककुलत्थकल्कैर्मांसप्रगाढैर्दधिमादितैश्च ।

लेपं विदध्यात्किमयो यथाऽत्र मुञ्चन्त्यपत्यान्यथ मक्षिका वा ॥ ७३ ॥

अल्पावशिष्टं कृमिमिः प्रजग्धं लिखेत्ततोऽग्निं विदधीत पश्चात् ।

यदल्पमूलं त्रपुताम्रसीसैः संवेष्ट्य पत्रैरथ वाऽऽयसैर्वा ॥ ७४ ॥

क्षाराग्निशस्त्राण्यवचारयेच्च मुहुर्मुहुः प्राणमवेक्ष्यमाणः ।

यदृच्छया चोपगता विपाकं पाकक्रमेणोपचरेद्यथोक्तम् ॥ ७५ ॥

सशेषदोषाणि हि योऽर्बुदानि करोति तस्याऽऽशु पुनर्भवन्ति ।

तस्मादशेषाणि समुद्धरेत्तु हन्युः सशेषाणि यथा विषाणि ॥ ७६ ॥

गन्धशिलाविश्वौषधविडङ्गगजभस्मभिः समैश्चूर्णम् ।

कृकलासरक्तयुक्तं लेपात्सद्योऽर्बुदध्वंसि ॥ ७७ ॥

उपोदकारसाभ्यक्तास्तत्पत्रपरिवेष्टिताः ।

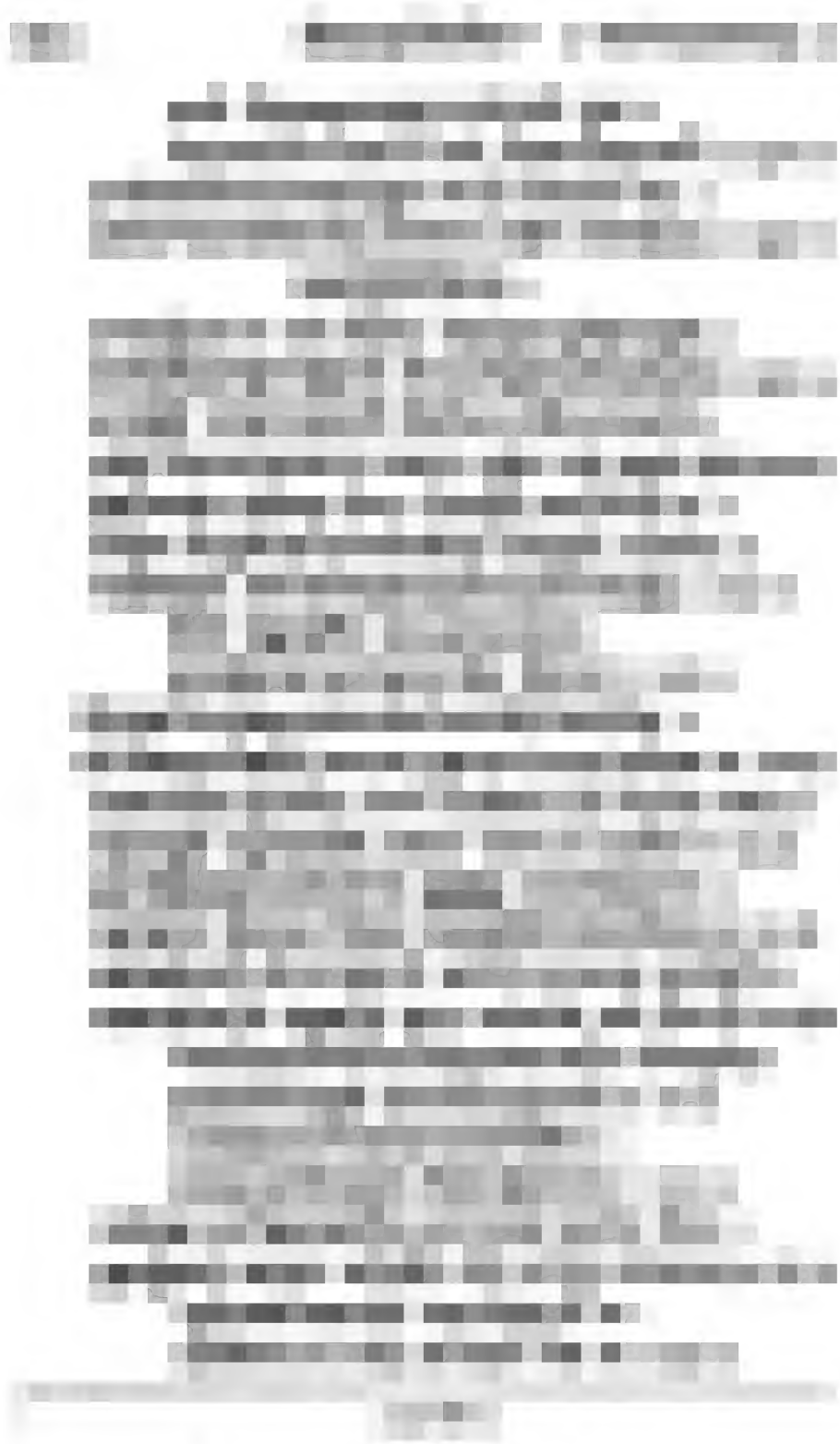
प्रणश्यन्त्याचिरान्नणः पिट्कार्बुदजातयः ॥ ७८ ॥

उपोदका काञ्जिकतक्रपिटः तयोपनाहो लवणेन मिश्रः ।

दुष्टार्बुदानां प्रशमाय कश्चिद्दिने दिने रात्रिषु मर्मजानाम् ॥ ७९ ॥

सुहीगण्डीरकास्वेदो नाशयेदर्बुदानि च ।

लवणेनाथ वा स्वेदः सीसकेन तथैव च ॥ ८१ ॥



हरिद्रालोध्रपत्तङ्गगृहधूममनःशिलाः ।
 मधुप्रगाढो लेपोऽयं मेदोर्बुदहरः परः ॥ ८१ ॥
 मूलकस्य कृतः क्षारो हरिद्रायास्तथैव च ।
 शङ्खचूर्णेन संयुक्तो लेपः सिद्धोऽर्बुदापहः ॥ ८२ ॥
 शिग्रमूलकयोर्बीजं *रक्षोघ्नं +सुरसा ×यवम् ।
 तत्रेणाभ्वरिपुं पिष्ट्वा लिम्पेदर्बुदशान्तये ॥ ८३ ॥
 एतामेव क्रियां कुर्यादशेषां शर्कराबुदे ।
 सर्षपारिष्टपत्राणि दग्ध्वा भल्लातकैः सह ।
 छागमूत्रेण संपिष्टमपचीघ्नं प्रलेपनम् ॥ ८४ ॥
 पाण्डिण प्रति द्वादश चाङ्गुलानि
 भित्त्वेन्द्रवस्तिं परिवर्ज्य सम्यक् ।
 विदार्य मत्स्याण्डनिभानि वैद्यो
 निकृष्य जालान्यनलं विदध्यात् ॥ ८५ ॥
 मणिबन्धोपरिष्ठाद्वा कुर्याद्विखात्रयं भिषक् ।
 अङ्गुल्यन्तरितं सम्यगपचीनां प्रशान्तये ॥ ८६ ॥

इति शस्त्रदाहकर्म ।

अथ शाखोटकबिल्वतैलम्—

गण्डमालापहं तैलं सिद्धं शाखोटकत्वचा ।
 बिल्वाश्वमारनिर्गुण्डीसाधितं चापि नावनम् ॥ ८७ ॥

इति शाखोटकबिल्वतैलम् ।

अथ काञ्चनारगुग्गुलुः—

पलानां दशकं ग्राह्यं काञ्चनारत्वचो बुधैः ।
 षट्पलत्रिफला ग्राह्या व्योषं ग्राह्यं पलत्रयम् ॥ ८८ ॥
 पलैकं वरुणस्यापि त्वगेलापत्रकं तथा ।
 कर्षकर्षमितं ग्राह्यं सर्वाण्येकत्र चूर्णयेत् ॥ ८९ ॥
 सर्वचूर्णमिदं यावत्तावन्मात्रस्तु गुग्गुलुः ।
 संमर्द्य गुटिकाः कार्याः शाणमात्रास्ततो बुधः ॥ ९० ॥
 एकैकां मक्षयेत्प्रातः प्रातर्धीमान्सदा नरः ।
 गण्डमालां जयेदुग्रामपचीमर्बुदानि च ॥ ९१ ॥

ग्रन्थीन्वणान्सगुल्मांश्च कुष्ठानि च मगंदरम् ।
 अनुपाने प्रयोक्तव्यः काथो मुण्डिनिकामवः ॥ ९२ ॥
 काथः खदिरसारस्य काथः कोष्णोऽमयामवः ।

इति काश्चनारगुगुलुः ।

अथ निर्गुण्डीतैलम्—

निम्बाश्वमारनिर्गुण्डीसाधितं चापि नावनम् ॥ ९३ ॥
 निर्गुण्डीस्वरसेनाथ लाङ्गलीमूलकलितम् ।
 तैलं नस्येन हन्त्याशु गण्डमालां सुदुस्तराम् ॥ ९४ ॥

इति निर्गुण्डीतैलम् ।

अथ छुच्छुन्दरीतैलम्—

छुच्छुन्दर्या विपकं तु क्षणात्तैलं वरं ध्रुवम् ।
 अभ्यङ्गान्नाशयेच्छृणां गण्डमालां सुदारुणाम् ॥ ९५ ॥

इति छुच्छुन्दरीतैलम् ।

अथ गुञ्जातैलम्—

गुञ्जामूलफलैस्तैलं तोयं द्विगुणितं पचेत् ।
 तस्याभ्यङ्गेन शमयेद्गण्डमालां सुदारुणाम् ॥ ९६ ॥

इति गुञ्जातैलम् ।

अथ चन्दनादितैलम्—

चन्दनं सामया लाक्षा वचा कटुकरोहिणी ।
 एतत्तैलं शृतं पीतं समूलामपचीं जयेत् ॥ ९७ ॥

इति चन्दनादितैलम् ।

अथ व्योषायं तैलम्—

व्योषं विडङ्गं मधुकं सैन्धवं देवदारु च ।
 तैलमेभिः शृतं नस्यात्कृच्छ्रामप्यपचीं हरेत् ॥ ९८ ॥

इति व्योषायं तैलम् ।

अथ चक्रमर्दतैलम्—

चक्रमर्दकमूलस्य कल्कं दत्त्वा विपाचयेत् ।
 केशराजरसे तैलं कटुकं मृदुनाऽग्निना ॥ ९९ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

2. The second part of the document is a list of the names of the members of the committee.

3. The third part of the document is a list of the names of the members of the committee.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the members of the committee.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

11. The eleventh part of the document is a list of the names of the members of the committee.

12. The twelfth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

13. The thirteenth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

14. The fourteenth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

15. The fifteenth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

16. The sixteenth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

17. The seventeenth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

पाकशेषे विनिक्षिप्य सिन्दूरमवतारयेत् ।
एतत्तैलं निहन्त्याशु गण्डमालां सुदारुणाम् ॥ १०० ॥
इति चक्रमर्दतैलम् ।

निषेधः—

गुरुपिष्टान्नमम्लं च श्लेष्मलं च दधीनि च ।
ऐक्षवं वैदलं चैव गण्डमालादितस्त्यजेत् ॥ १०१ ॥

अथ गण्डमालाकण्डनो रसः—

कर्षं सूतं शुद्धमस्य गन्धकं त्वर्धमुत्तमम् ।
सार्धकर्षं ताम्रमस्म सूतं किट्टं त्रिकर्षकम् ॥ १०२ ॥
व्योषं षट्कर्षतुलितमक्षार्धं सैन्धवं सितम् ।
काञ्चनारत्वचश्चूर्णं पलत्रयमितं क्षिपेत् ॥ १०३ ॥
पलत्रयं गुग्गुलोश्च शुद्धस्य समुपाहरेत् ।
एतद्युक्त्या तु संमेल्य सुरभीसर्पिषा दृढम् ॥ १०४ ॥
गण्डमालाकण्डनोऽयं रसो माषत्रयात्मकः ।
मुक्तो निहन्ति गण्डानि गण्डमालां च दारुणाम् ॥ १०५ ॥

इति गण्डमालाकण्डनो रसः ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां गलगण्डगण्डमालाबुदापचीरोगनिदानचिकित्साकथनं
नामाष्टाधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १०८ ॥

अथ नवाधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ श्लीपदनिदानम्—

यः सज्वरो बद्धक्षणजो मृशार्तिः शोथो नृणां पादगतः क्रमेण ।
तच्छ्लीपदं स्यात्करकर्णनेत्रशिश्नोष्ठनासास्वपि केचिदाहुः ॥ १ ॥

वातजमाह—

वातजं कृष्णरूक्षं तु स्फुटितं तीव्रवेदनम् ।
अनिमित्तरुजं तस्य बहुशो ज्वर एव च ॥ २ ॥

पित्तजमाह—

पित्तजं पीतसंकाशं दाहज्वरयुतं मृदु ।

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

श्लेष्मजमाह—

श्लैष्मिकं स्निग्धवर्णं च श्वेतं पाण्डु गुरु स्थिरम् ॥ ३ ॥

असाध्यत्वमाह—

बल्मीकमिव संजातं कण्टकैरुपचीयते ।

तं त्यजेद्वत्सरातीतं महत्त्वं च विशेषतः ॥ ४ ॥

त्रीण्यप्येतानि जानीयाच्छ्लीपदानि कफोच्छ्रयात् ।

गुरुत्वं च महत्त्वं च यस्मान्नास्ति विना कफात् ॥ ५ ॥

देशदोषजमाह—

पुराणोदकभूयिष्ठाः सर्वर्तुषु च शीतलाः ।

ये देशास्तेषु जायन्ते श्लीपदानि विशेषतः ॥ ६ ॥

निषेधः—

यच्छ्लेष्मलाहारविहारजातं पुंसः प्रकृत्या च कफात्मकस्य ।

सास्त्रावमत्युन्नतसर्वलिङ्गं सकण्डुरं श्लेष्मयुतं विवर्ज्यम् ॥ ७ ॥

दोषा मांसाश्रयाः पादौ कालेनाऽऽश्रित्य कुर्वते ।

शनैः शनैर्घनं शोथं श्लीपदं तत्प्रचक्षते ॥ ८ ॥

पाणिना सोष्ठकर्णेषु वदन्त्यन्ये तु पादवत् ।

श्लीपदं जायते तच्च देशेऽनूपे मृशं मृशम् ॥ ९ ॥

इति श्लीपदनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

लङ्घनालेपनस्वेदरेचनै रक्तमोक्षणैः ।

प्रायः श्लेष्महरैरुष्णैः श्लीपदं समुपाचरेत् ॥ १० ॥

संपिष्टमारनालेन रूपिकामूलवल्कलैः ।

प्रलेपाच्छ्लीपदं हन्ति बद्धमूलमपि द्रुतम् ॥ ११ ॥

पिण्डारकतरुसंभववन्दशिफा जयति सर्पिषा पीता ।

श्लीपदमुग्रं नियतं बद्ध्वा सूत्रेण जङ्घायाम् ॥ १२ ॥

हितश्च लेपने नित्यं चित्रको देवदारु च ।

सिद्धार्थशिगुकल्को वा सुखोष्णो मूत्रपेषितः ॥ १३ ॥

स्नेहस्वेदोपनाहाश्च श्लीपदेऽनिलजे मिषक् ।

कृत्वा गुल्फोपरि शिरां विध्येत्तु चतुरङ्गुले ॥ १४ ॥

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —

गुल्फस्याधः शिरां विध्येच्छलीपदे पित्तसंभवे ।
 पित्तघ्नीं च क्रियां कुर्यात्पित्तार्बुदविसर्पवत् ॥ १५ ॥
 मञ्जिष्ठां मधुकं रास्त्रामहिष्ठां सपुनर्नवाम् ।
 पिष्ट्वाऽऽरनालैर्लेपोऽयं पित्तश्लीपदशान्तये ॥ १६ ॥
 शिरां सुविदितां विध्येदङ्गुष्ठे श्लेष्मश्लीपदे ।
 मधुयुक्तानि चाभीक्ष्णं कषायाणि पिबेन्नरः ॥ १७ ॥
 पिबेद्वाऽप्यमयाकल्कं मूत्रेणान्यतमेन वा ।
 गुडूचीं वा पिबेदेवं नागरं देवदारु च ॥ १८ ॥
 पिबेत्सर्षपतैलेन श्लीपदानां निवृत्तये ।
 पूतीकरञ्जच्छदजरसं वाऽपि यथाबलम् ॥ १९ ॥
 अनेनैव विधानेन पुत्रजीवकजं रसम् ।
 प्रयुञ्जीत भिषक्प्राज्ञः कालसात्म्यं यथाबलम् ॥ २० ॥

अनेन मूलस्वरसं पिबेद्वा तैलेन तुल्यं सितसर्षपाणाम् ।
 मूत्रेण पथ्यामरदारुविश्वं सगुग्गुलं श्लीपदिभिर्निषेव्यम् ॥ २१ ॥

काञ्जिकेन पिबेच्चूर्णं वृद्धदारुकसंभवम् ।
 रजनीं गुडसंयुक्तां गोमूत्रेण पिबेन्नरः ।
 वर्षोत्थं श्लीपदं हन्ति ददुं कुष्ठं विशेषतः ॥ २२ ॥
 गन्धर्वतैलमृष्टां हरीतकीं गोजलेन यः पिबति ।
 श्लीपदबन्धनमुक्तो भवत्यसौ सप्तरात्रेण ॥ २३ ॥

इति गोमूत्रहरीतकी ।

अथ वृद्धदारुकं चूर्णम्—

धान्याम्लं तैलसंयुक्तं कफवाताविनाशनम् ।
 दीपनं चाऽऽमदोषघ्नमेतच्छ्लीपदनाशनम् ॥ २४ ॥
 त्रिकटुं त्रिफलां चव्यं दार्वीवरुणगोक्षुरम् ।
 अलंबुषां गुडूचीं च समभागानि चूर्णयेत् ॥ २५ ॥
 सर्वेषां चूर्णमाहृत्य वृद्धदारुस्य तत्समम् ।
 काञ्जिकेन तु तत्पेयमक्षमात्रप्रमाणतः ॥ २६ ॥
 जीर्णे चापरिहारं स्याद्भोजनं सार्वकामिकम् ।
 नाशयेच्छ्लीपदं स्थौल्यमामवातं च दारुणम् ॥ २७ ॥

कुष्ठगुल्मारुचिहरं वातश्लेष्मरुजापहम् ।

इति वृद्धदारुकं चूर्णम् ।

अथ पिप्पल्याद्यं चूर्णम्-

पिप्पलीत्रिफलादारुनागरं सपुनर्नवम् ॥ २८ ॥

मागैर्द्विपलिकैरेषां तत्समं वृद्धदारुकम् ।

काञ्जिकेन पिबेच्चूर्णं कर्षमात्रं प्रमाणतः ॥ २९ ॥

जीर्णे चापरिहारं स्याद्भोजनं सार्वकामिकम् ।

श्लीपदं वातरोगांश्च हन्यात्प्लीहानमेव च ॥ ३० ॥

अग्निं च कुरुते घोरं मस्मकं च नियच्छति ।

इति पिप्पल्याद्यं चूर्णम् ।

अथ कृष्णाद्यो मोदकः-

कृष्णाचित्रकदन्तीनां कर्षमर्धपलं पलम् ॥ ३१ ॥

विंशतिश्च हरीतक्यो गुडस्य तु पलद्वयम् ।

मधुना मोदकं खादेच्छ्लीपदं हन्ति दुस्तरम् ॥ ३२ ॥

इति कृष्णाद्यो मोदकः ।

अथ सौरेश्वरं घृतम्-

सुरसाग्रन्थिकव्योषविडङ्गानि वचां सटीम् ।

पाठैलाहपुषाश्यामादेवदारुवरायुतैः ॥ ३३ ॥

सपञ्चलवणक्षारैः कार्षिकैर्विपचेद्घृतम् ।

प्रस्थं तदंशैर्धान्याम्लदशमूलाम्बुमस्तुभिः ॥ ३४ ॥

त्र्यक्षं पिबेत्ततो मासं श्लीपदं हन्ति दुस्तरम् ।

वृद्ध्यर्शोग्रहणीरोगं गलगण्डार्बुदापचीः ॥ ३५ ॥

घृतं सौरेश्वरं नाम श्लीपदक्रिमिकोष्ठनुत् ।

इति सौरेश्वरं घृतम् ।

अथ विडङ्गाद्यं तैलम्-

विडङ्गमारिचार्केषु नागरं चित्रकं तथा ॥ ३६ ॥

मद्गदार्बुदकाख्ये च सर्वेषु लवणेषु च ।

तैलं पक्वं पिबेद्वाऽपि श्लीपदानां निवृत्तये ॥ ३७ ॥

इति विडङ्गाद्यं तैलम् ।

1. Introduction

2. Background

3. Methodology

4. Results

5. Conclusion

6. References

7. Appendix

8. Index

9. Summary

यवान्नं कटुतैलं तु कूर्ममांसं तु योजयेत् ।
श्लीपदानां प्रशान्त्यर्थं मासान्ते दाहमग्निना ॥ ३८ ॥
इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां श्लीपदनिदानचिकित्साकथनं नाम नवा-
धिकशततमस्तरङ्गः ॥ १०९ ॥

अथ दशाधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ विद्रधिनिदानम्—

त्वग्रक्तमांसमेदांसि प्रदूष्यास्थिसमाश्रिताः ।
दोषाः शोथं शनैर्घोरं जनयन्त्युच्छ्रिता भृशम् ॥ १ ॥
महाशूलरुजावन्तं वृत्तं वाऽप्यथ वाऽऽपतम् ।
स विद्रधिरिति ख्यातो विज्ञेयः षड्विधश्च सः ॥ २ ॥
पृथग्दोषैः समस्तैश्च शोणितेन क्षतेन च ।
षण्णामपि हि तेषां तु लक्षणं संप्रचक्षते ॥ ३ ॥

वातजमाह—

कृष्णोऽरुणो वा विषमो मृशमत्यर्थवेदनः ।
चिरोत्थानप्रपाकश्च विद्रधिर्वातसंभवः ॥ ४ ॥

पित्तजमाह—

पकोदुम्बरसंकाशः श्यावो वा ज्वरदाहवान् ।
क्षिप्रोत्थानप्रपाकश्च विद्रधिः पित्तसंभवः ॥ ५ ॥

कफजमाह—

शरावसदृशः पाण्डुः शीतः स्निग्धोऽल्पवेदनः ।
चिरोत्थानप्रपाकश्च विद्रधिः कफसंभवः ॥ ६ ॥

संनिपातजमाह—

तनुपीतसिताश्चैषा मात्राश्च क्रमशः स्मृताः ।
नानावर्णरुजास्रावो घाटालो विषमो महान् ॥ ७ ॥
विषमं पच्यते वाऽपि विद्रधिः सांनिपातिकः ।

आगन्तुविद्रधिमाह—

तैस्तैर्मावैरभिहर्तुं क्षते वाऽप्यपकारिणः ॥ ८ ॥

THE
JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
LONDON

THE
JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
LONDON

THE
JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
LONDON

THE
JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
LONDON

THE
JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
LONDON

THE
JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
LONDON

THE
JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
LONDON

THE
JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
LONDON

क्षतोष्मा वायुविक्षिप्तः सरक्तं पित्तमीरयेत् ।
ज्वरस्तृष्णा च दाहश्च जायते तस्य देहिनः ॥ ९ ॥
आगन्तुविद्रधिर्दोषैः पित्तविद्रधिलक्षणः ।

रक्तजमाह—

कृष्णस्फोटावृतः श्यावस्तीव्रदाहरुजाज्वरः ॥ १० ॥
पित्तविद्रधिलिङ्गस्तु रक्तविद्रधिरुच्यते ।
उक्ता विद्रधयो ह्येते तेष्वसाध्यस्तु सर्वजः ॥ ११ ॥
शस्त्राग्निवच्छीघ्रघाती यम्भीरो गुल्मवदघनः ।
गुर्वसात्प्यविरुद्धान्नशुष्कसंक्लिन्नमोजनात् ॥ १२ ॥
आभ्यन्तरानतश्चोर्ध्वं विद्रधीन्संप्रचक्षते ।
अतिव्यवायव्यायामवेगाघाताद्विदाहिभिः ॥ १३ ॥
पृथक्संभूय वा दोषाः कुपितां ग्रन्थिरूपिणम् ।
वल्मीकवत्समुन्नद्धमन्तः कुर्वन्ति विद्रधिम् ॥ १४ ॥
गुदे वस्तिमुखे नाभ्यां कुक्षौ वङ्क्षणयोस्तथा ।
वृक्कयोः प्लीहि यकृति हृदि वा क्लोन्नि वाऽप्यथ ॥ १५ ॥
एषामुक्तानि लिङ्गानि बाह्यविद्रधिलक्षणैः ।

तत्राधिष्ठानविशेषेण विद्रधिमाह—

अधिष्ठानविशेषेण लिङ्गं शृणु विशेषतः ॥ १६ ॥
गुदे वातनिरोधस्तु वस्तौ कृच्छाल्पमूत्रता ।
नाभ्यां हिक्का तथाऽऽटोपः कुक्षौ मारुतकोपनम् ॥ १७ ॥
कटिपृष्ठग्रहस्तीव्रो वङ्क्षणोत्थे तु विद्रधौ ।
वृक्कयोः पार्श्वसंकोचः प्लीहि श्वासावरोधनम् ॥ १८ ॥
सर्वाङ्गग्रहस्तीव्रो हृदि कासश्च जायते ।
श्वासो यकृति हिक्का च क्लोन्नि पेपीयते पयः ॥ १९ ॥
आमो वा यदि वा पक्को महत्त्वाद्यदि चेतारः ।
सर्वो मेर्मस्थितत्वाच्च विद्रधिः कष्ट उच्यते ॥ २० ॥

साध्यासाध्यत्वमाह—

नाभेरुपरिजाः पक्का यान्त्यूर्ध्वमितरे त्वधः ।
अधः सुतेषु जीवेत्तु सुतेषूर्ध्वं न जीवति ॥ २१ ॥

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

हृन्नामिबस्तिवर्ज्या ये तेषु मिन्नेषु बाह्यतः ।
जीवेत्कदाचित्पुरुषो नेतरेषु कदाचन ॥ २२ ॥
साध्या विद्रधयः पञ्च विवर्ज्यः सांनिपातिकः ।
आमपक्कविद्रधत्वं तेषां शोफवदादिशेत् ॥ २३ ॥
आध्मानं बद्धमिस्पृष्टं छर्दिहिकातृषान्वितम् ।
रुजाश्वाससमायुक्तं विद्रधिर्नाशयेन्नरम् ॥ २४ ॥
हृन्नामिबस्तिजः पक्को वर्ज्यो यश्च त्रिदोषजः ।
असाध्यो मर्मजो ज्ञेयः पक्कोऽपक्कश्च विद्रधिः ॥ २५ ॥
संनिपातोत्थितोऽप्येवं पक्क एव तु बस्तिजः ।
मुष्टिप्रमाणो गुल्मस्तु विद्रधिस्तु ततः परम् ॥ २६ ॥
गुल्मस्तिष्ठति दोषेषु विद्रधिर्मांसशोणिते ।
विद्रधिः पच्यते तस्माद्गुल्मश्चापि न पच्यते ॥ २७ ॥

इति विद्रधिनिदानम् ।

अथ स्तनविद्रधिनिदानम्—

एवमेव स्तनशिरा विकृताः प्राप्य योषिताम् ।
सूतानां गर्भिणीनां च संभवेच्छ्वयथुर्वनः ॥ २८ ॥
स्तने सदुग्धे वाऽदुग्धे बाह्यविद्रधिलक्षणः ।
नाडीनां सूक्ष्मवक्त्रत्वात्कन्यानां न स जायते ॥ २९ ॥

इति स्तनविद्रधिनिदानम् ।

अथ विद्रधिचिकित्सितं व्याख्यास्यामः—

रसालफलतुल्यो यः शोफो बाह्योऽथ वाऽऽन्तरः ।
पृथुदाहो रुजानाहकारको विद्रधिः स्मृतः ॥ ३० ॥

क्रियामाह—

जलौकापातनं शस्तं सर्वस्मिन्नेव विद्रधौ ।
मृदुर्विरेको लघ्वन्नं स्वेदः पित्तोत्तरं विना ॥ ३१ ॥
अपक्के विद्रधौ युक्त्याद्गणशोथवदौषधम् ।
वातघ्नमूलकलैश्च वसातैलघृतप्लुतैः ॥ ३२ ॥
सुखोष्णो बहलो लेपः प्रयोज्यो वातविद्रधौ ।

अपक्कविद्रधिः—

स्वेदोपनाहाः कर्तव्याः शिथुमूलसमान्विताः ॥ ३३ ॥

यवगोधूममुद्वैश्च स्विन्नपिष्टैः प्रलेपयेत् ।
विलीयते क्षणेनैवमपक्वश्चैव विद्रधिः ॥ ३४ ॥

वातजविद्रधावाह—

पुनर्नवादारुविश्वदशमूलाभयाम्मसा ।
गुग्गुलुं रुबुतैलं वा पिबेन्मारुतविद्रधौ ॥ ३५ ॥

पित्तजविद्रधावाह—

पैत्तिके शर्करालाजमधुकैः सारिवायुतैः ।
प्रदिह्यात्क्षीरपिष्टैर्वा पयसोशीरचन्दनैः ॥ ३६ ॥
पिबेद्वा त्रिफलाक्राथं त्रिवृत्कल्काक्षसंयुतम् ।
पञ्चवल्कलकल्केन घृतमिश्रेण लेपनम् ॥ ३७ ॥
हृदिकासिकतालोहगोशकृत्तुषपांशुभिः ।
गोमूत्रपिष्टैः सततं स्वेदयेच्छ्लेष्मविद्रधिम् ॥ ३८ ॥

परिषेकमाह—

दशमूलकषायेण सस्नेहलवणेन च ।
शोफं व्रणं वा कोष्णेन समूलं परिषेचयेत् ॥ ३९ ॥
पित्तविद्रधिवत्सर्वा क्रिया निरवशेषतः ।
विद्रध्योः कुशलः कुर्याद्रक्तागन्तुनिमित्तयोः ॥ ४० ॥
रक्तचन्दनमस्त्रिष्ठानिशामधुकैरैकैः ।
क्षीरेण विद्रधौ लेपो रक्तागन्तुनिमित्तके ॥ ४१ ॥
कृष्णाऽजाजी विशाला च धामार्गवफलं तथा ।
पीता ह्येते निहन्त्याशु विद्रधीन्कोष्ठसंभवान् ॥ ४२ ॥

धामार्गवफलं कोशातकीफलम् ।

श्वेतवर्षाभुवो मूलं मूलं वरुणकस्य च ।
जलेन कथितं पीतमन्तर्विद्रधिहृत्परम् ॥ ४३ ॥
सौमाञ्जनकनिर्यूहो हिङ्गुसैन्धवसंयुतः ।
अचिराद्विद्रधिं हन्ति प्रातः प्रातर्निषेवितः ॥ ४४ ॥
शिथुमूलं जले धौतं हृषत्पिष्टं प्रगालयेत् ।
तद्रसं मधुना पीत्वा हन्त्यन्तर्विद्रधिं नरः ॥ ४५ ॥

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that proper record-keeping is essential for the transparency and accountability of the organization. This section also outlines the specific procedures for recording and verifying financial data.

2. The second part of the document addresses the role of the audit committee in overseeing the financial reporting process. It details the committee's responsibilities, including reviewing the financial statements, assessing the effectiveness of internal controls, and ensuring compliance with applicable laws and regulations. The committee's findings and recommendations are presented in this section.

3. The third part of the document provides a detailed overview of the internal control system. It describes the various controls implemented to mitigate risks and ensure the reliability of financial information. This includes controls over the revenue cycle, the procurement process, and the management of assets. The document also discusses the ongoing monitoring and evaluation of the internal control system.

4. The fourth part of the document discusses the results of the audit and the actions taken to address any identified deficiencies. It provides a clear and concise summary of the audit findings, highlighting areas of strength and areas for improvement. The actions taken to address these findings are also outlined, along with the timeline for implementation.

5. The fifth part of the document provides a summary of the key findings and conclusions of the audit. It reiterates the importance of maintaining high standards of financial reporting and internal control. The document concludes with a statement of confidence in the organization's financial reporting process and a commitment to continuous improvement.

वरुणादिगणकाथमपक्वेऽभ्यन्तरोत्थिते ।
 ऊषकादिप्रतीवापं पिबेत्संशमनाय वै ॥ ४६ ॥
 शमयति मानकमूलं क्षौद्रयुतं तण्डुलाम्मसा पीतम् ।
 अन्तर्भूतं विद्रधिमुद्धतमाश्वेव मनुजस्य ॥ ४७ ॥
 अपक्वे चैतदुद्दिष्टं पक्वे तु व्रणवत्क्रिया ।
 प्रियङ्गुधातकीलोर्ध्वं कट्फलं तिनिसत्वचा ॥
 एतैस्तैलं विपक्तव्यं विद्रधौ व्रणरोपणम् ॥ ४८ ॥
 इति प्रियङ्गुवाद्यं तैलम् ।

अथ वरुणकाथः—

कासीससैन्धवशिलाजतुहिङ्गुचूर्ण-
 मिश्रीकृतो वरुणवल्कलजः कषायः ।
 अभ्यन्तरोत्थितमपक्रमतिप्रमाणं
 नृणामयं जयति विद्रधिमुग्रशोफम् ॥ ४९ ॥
 इति वरुणकाथः ।

अथ हरीतक्यादिचूर्णम्—

हरीतकीसैन्धवधातकीनां रजो घृतक्षौद्रयुतं प्रयुक्तम् ।
 निहन्ति सद्यो ध्रुवमेव पुंसामन्तर्भवं विद्रधिमुग्ररूपम् ॥ ५० ॥
 इति हरीतक्यादिचूर्णम् ।

अथ वरुणादिघृतम्—

सिद्धं वरुणादिगणे विधिना तत्कल्कपाचितं सर्पिः ।
 अन्तर्विद्रधिमुग्रं मस्तकशूलं हुताशमान्द्यं च ॥ ५१ ॥
 गुल्मानपि पञ्चविधान्नाशयतीदं यथाऽम्बु वायुसुखम् ।
 एतत्पातः प्रपिबेद्भोजनसमये निशास्येऽपि ॥ ५२ ॥
 इति वरुणादिघृतम् ।

अथ कज्जलीयोगः—

वरुणादिकषायेण रसगन्धककज्जली ।
 मुक्ता निहन्ति माषैका बाह्यमन्तश्च विद्रधिम् ॥ ५३ ॥
 इति कज्जलीयोगः ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां विद्रधिरोगनिदानचिकित्साकथने नाम
 दशाधिकशततमस्तरङ्गः ॥ ११० ॥



अथैकादशाधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ व्रणशोथनिदानम्—

एकदोषोत्थितः शोथो व्रणानां पूर्वलक्षणम् ।
 षड्विधः स्यात्पृथग्दोषै रक्तजागन्तुजौ तथा ॥ १ ॥
 शोथाः षड्विधं विज्ञेयाः प्रागुक्तैः शोथलक्षणैः ।
 विशेषः कथ्यते चैषां पक्कापक्कादिनिश्चये ।

रक्तागन्तुव्रणमाह—

विषमं पच्यते वातात्पित्तोत्थश्चाचिरंचिरात् ।
 कफजः पित्तजः शोथो रक्तागन्तुसमुद्भवौ ॥ ३ ॥

आमव्रणमाह—

मन्दोष्मताऽल्पशोथत्वं काठिन्यं त्वक्सवर्णता ।
 मन्दवेदनता चैव शोथानामामलक्षणम् ॥ ४ ॥

पच्यमानस्य व्रणमाह—

दह्यते दहनेनेव क्षारेणेवावपच्यते ।
 पिपीलिकागणेनेव भिद्यते दृश्यतेऽथ वा ॥ ५ ॥
 छिद्यते चैव शस्त्रेण दण्डेनेवावताड्यते ।
 पीड्यते पाणिना चान्तः सूचीभिरिव तुद्यते ॥ ६ ॥
 शोषश्चोषो विवर्णः स्यादङ्गुल्येवावताड्यते ।
 आसने शयने स्थाने शान्तिं वृश्चिकविन्द्ववत् ॥ ७ ॥
 न गच्छेदाततः शोथो भवेदाध्मातवस्तिवत् ।
 ज्वरस्तृष्णाऽरुचिश्चैव पच्यमानस्य लक्षणम् ॥ ८ ॥

शोफानां पक्कलक्षणमाह—

वेदनोपशमः शोथो लोहितोऽल्पो न चोन्नतः ।
 प्रादुर्भावो वलीनां च तोदः कण्डूर्मुहुर्मुहुः ॥ ९ ॥
 उपद्रवाणां प्रशमो निम्नता स्फुटनं त्वचः ।
 वस्ताबिवाम्बुसंचारः स्याच्छोथेऽङ्गुलिपीडिते ॥ १० ॥

2

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been named in the proceedings.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been named in the proceedings.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been named in the proceedings.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been named in the proceedings.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been named in the proceedings.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been named in the proceedings.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the persons who have been named in the proceedings.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the persons who have been named in the proceedings.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the persons who have been named in the proceedings.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the persons who have been named in the proceedings.

11. The eleventh part of the document is a list of the names of the persons who have been named in the proceedings.

12. The twelfth part of the document is a list of the names of the persons who have been named in the proceedings.

13. The thirteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been named in the proceedings.

14. The fourteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been named in the proceedings.

पूयश्च पीडयत्येकमन्तमन्ते च पीडिते ।

भक्ताकाङ्क्षा भवेच्चैव शोथानां पक्कलक्षणम् ॥ ११ ॥

रक्तपाकमाह—

कफजेषु च शोफेषु गम्भीरं पाकमेत्यसृक् ।

पक्कलिङ्गे ततः स्पष्टं यतः स्याच्छीतशोफता ॥ १२ ॥

त्वक्सावर्ण्यं रुजोऽल्पत्वं घनस्पर्शत्वमश्मवत् ।

रक्तपाकमिति ब्रूयात्तं प्राज्ञो मुक्तसंशयः ॥ १३ ॥

नर्तेऽनिलाद्बुद्धुन विना च पित्तं पाकः कफं वाऽपि विना न पूयः ।

तस्माद्धि सर्वे परिपाककाले गच्छन्ति शोथास्त्रिभिरेव दोषैः ॥ १४ ॥

यच्छिनत्स्याममज्ञानाद्यश्च पक्कमुपेक्षते ।

श्वपचाविव मन्तव्यौ तावन्निश्चयकारिणौ ॥ १५ ॥

कालान्तरेणाभ्युदितं तु पित्तं कृत्वा वशौ वातकफौ प्रसह्य ।

पचत्यतः शोणितमेष पाको मतोऽपरेषां विदुषां द्वितीयः ॥ १६ ॥

कक्षं समासाद्य यथैव वह्निर्वातिरेतः संदहति प्रसह्य ।

तथैव पूयोऽप्यविनिःसृतो हि मांसं शिराः स्नायु च खादतीह ॥ १७ ॥

आमं विदह्यमानं च सम्यक्पक्कस्य लक्षणम् ।

जानीयात्स भवेद्वैद्यः शेषास्तस्करवृत्तयः ॥ १८ ॥

इति व्रणशोथनिदानम् ।

वातव्रणमाह—

द्विधा व्रणः परिज्ञेयः शरीरागन्तुभेदतः ।

दोषैराद्यस्तयोरन्यः शस्त्रादिक्षतसंभवः ॥ १९ ॥

स्तब्धः कठिनसंस्पर्शो मन्दस्त्रावो महारुजः ।

तुद्यते स्फुरति श्यावो व्रणो मारुतसंभवः ॥ २० ॥

पित्तजमाह—

तृष्णामोहज्वरक्लेददाहदुःखावदारणैः ।

व्रणं पित्तकृतं विद्याद्गन्धस्रावैश्च पूतिकैः ॥ २१ ॥

कफजमाह—

बहुपिच्छो गुरुः स्निग्धः स्तिमितो मन्दवेदनः ।

पाण्डुवर्णोऽल्पसंक्लेदश्चिरपाकी कफव्रणः ॥ २२ ॥

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

रक्तजमाह—

रक्तो रक्तं स्रवेद्रक्तो द्वित्रिजः स्यात्तदन्वयः ।
 त्वङ्मांसजः सुखे देशे तरुणस्यानुपद्रवः ॥ २३ ॥
 धीमतोऽभिनवः काले सुखे साध्यः सुखव्रणः ।
 गुणैरन्यतमैर्हीनस्ततः कृच्छ्रो व्रणः स्मृतः ॥ २४ ॥
 सर्वैर्विहीनो विज्ञेयस्त्वसाध्यो भूर्युपद्रवः ।

दुष्टव्रणालिङ्गमाह—

पूतिपूयोऽतिदुष्टासृक्स्त्राव्युत्सङ्गी चिरस्थितिः ॥ २५ ॥
 संरम्भदाहश्वयशुकण्डवादिभिरुपद्रुतः ।
 दुष्टव्रणोऽतिगन्धादिः शुद्धलिङ्गविपर्ययः ॥ २६ ॥

शुद्धव्रणलक्षणमाह—

जिह्वातैलाभोऽतिमृदुः स्निग्धो विगतवेदनः ।
 किञ्चिदुन्नतमध्यो वा श्यावोष्ठो पिटकः स्मृतः ॥ २७ ॥
 सुव्यवस्थो निरास्त्रावी शुद्धो व्रण इति स्मृतः ।

बद्धव्रणप्रशस्तिमाह—

व्रणः शुध्यति बन्धेन मृदुत्वं चोपगच्छति ॥ २८ ॥
 रोहत्यपि च निःसङ्गस्तस्माद्बद्धः प्रशस्यते ।

व्रणरोहणमाह—

कपोतवर्णप्रतिमा यस्यान्ताः क्लेदवर्जिताः ॥ २९ ॥
 स्थिराश्च पिटकावन्तो रोहतीति तमादिशेत् ।

सम्यग्रूढमाह—

रूढवर्त्मानिमग्रन्धिमशूनमरुजं व्रणम् ॥ ३० ॥
 त्वक्सवर्णं समतलं सम्यग्रूढं विनिर्दिशेत् ।

व्रणाशयमाह—

त्वगामिषशिरास्त्रायुमज्जास्थीनि व्रणाशयः ॥ ३१ ॥
 कोष्ठो मर्म च तान्यष्टौ दुःसाध्यान्युत्तरोत्तरम् ।



साध्यासाध्यत्वमाह—

सुसाध्यः सत्त्वमांसाग्निवयोबलवति व्रणः ॥ ३२ ॥
वृत्तो दीर्घस्तु पिटकश्चतुरस्राकृतिश्च यः ।
तथा स्फिक्पायुमेद्वेषु पृष्ठान्तर्वक्त्रगण्डगः ॥ ३३ ॥
कृच्छ्रसाध्योऽक्षिदशननासिकापाङ्गनाभिषु ।
सेवनीजठरश्रोत्रपार्श्वकक्षस्तनेषु च ॥ ३४ ॥
फेनपूयानिलवहः शल्यवात्रक्तनिर्गमः ।
भगंदरोऽन्तर्वदनस्तथा कट्यस्थिसंश्रितः ॥ ३५ ॥
दोषप्रकोपाद्यायामादभिघातादजीर्णतः ।
हर्षात्कोधान्द्रयाच्चापि व्रणो रूढोऽपि दीर्यते ॥ ३६ ॥
कुठिनां विषेजुष्टानां शोषिणां मधुमेहिनाम् ।
व्रणाः कृच्छ्रेण सिध्यन्ति येषां च स्युर्व्रणे व्रणाः ॥ ३७ ॥
नैव सिध्यन्ति वीसर्पज्वरातीसारकासिनाम् ।
पिपासूनामनिद्राणां श्वासिनामविपाकिनाम् ॥ ३८ ॥
मित्रे शिरःकपाले च मस्तुलुङ्गस्य दर्शनम् ।
स्नायुच्छेदाच्छिराच्छेदाद्गाम्भीर्यात्कृमिभक्षणात् ॥ ३९ ॥
अस्थिभेदात्सशल्यत्वात्सविषत्वादतर्कितात् ।
मिथ्याबन्धादतिस्नेहाद्रौक्ष्याद्रोमादिघट्टनात् ॥ ४० ॥
क्षोमादशुन्द्रकोष्ठत्वात्सौहित्यादतिकर्षणात् ।
व्रणो मिथ्योपचाराच्च नैव साध्योऽपि सिध्यति ॥ ४१ ॥
वसां मेदोऽथ मज्जानं मस्तुलुङ्गं च यः स्रवेत् ।
आगन्तुजो व्रणः सिध्येन्न सिध्येद्दोषसंभवः ॥ ४२ ॥
मद्यागुर्वाज्यसुमनःपद्मचन्दनचम्पकैः ।
सगन्धा दिव्यगन्धाश्च मुमूर्षूणां व्रणाः स्मृताः ॥ ४३ ॥
ये च मर्मसु संभूता भवन्त्यत्यर्थवेदनाः ।
दह्यन्ते चान्तराऽत्यर्थं बहिः शीताश्च ये व्रणाः ॥ ४४ ॥
दह्यन्तै बहिरत्यर्थं भवन्त्यन्तश्च शीतलाः ।
प्राणमांसक्षयश्वासकासारोचकपीडिताः ॥ ४५ ॥
प्रवृद्धपूयरुधिरा व्रणा येषां च मर्मसु ।
क्रियाभिः सम्यगारब्धा न सिध्यन्ति च ये व्रणाः ॥ ४६ ॥



वर्जयेदेव तान्वैद्यः संरक्षन्नात्मनो यशः ।
इति व्रणनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

विम्लापनम्—

आदौ विम्लापनं कुर्याद्वितीयमवसेचनम् ॥ ४७ ॥
तृतीयमुपनाहं च चतुर्थी पाटनक्रिया ।
पञ्चमं शोधनं चैव षष्ठं रोपणमिष्यते ॥ ४८ ॥
एते क्रमा व्रणस्योक्ताः सप्तमं वैकृतापहम् ।
अभ्यज्य स्वेदयित्वा तु वेणुनाड्या शनैः शनैः ॥ ४९ ॥
विम्लापनार्थं गृह्णीयात्तलेनाङ्गुष्ठकेन वा ।

इति विम्लापनम् ।

अथावसेचनम्—

रक्तावसेचनं कुर्यादादावेव विचक्षणः ॥ ५० ॥
शोथे महति संरब्धे वेदनावति वा व्रणे ।
यो न याति शमं लेपस्वेदसेकापतर्पणैः ॥ ५१ ॥
सोऽपि नाशं व्रजत्याशु शोथः शोणितमोक्षणात् ।
एकतश्च क्रियाः सर्वा रक्तमोक्षणमेकतः ॥ ५२ ॥
रक्तं हि विक्रियां याति तन्मोक्षे याति विक्रिया ।
विवर्णे कटिने श्यावे व्रणे चात्यन्तवेदने ॥ ५३ ॥
सविषे च विशेषेण जलौकाभिः पदैरपि ।

इत्यवसेचनम् ।

अथ वातजशोथे लेपमाह—

मातुलङ्गाग्निमन्थौ च सुरदारुमहौषधम् ॥ ५४ ॥
अहिंसा चैव रास्ना च लेपः स्याद्वातशोथहा ।
कल्कः काञ्जिकसंपिष्टः स्निग्धः शाखोटकत्वचः ॥ ५५ ॥
सुपर्ण इव नागानां वातशोथविनाशनः ।

पित्तजशोथे लेपमाह—

दूर्वा च नलमूलं च मधुकं चन्दनं तथा ॥ ५६ ॥

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

शीतलश्च गणैः सर्वैः प्रलेपः पित्तशोथजित् ।

शोथनिर्वापणलेपमाह—

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षवेतसवल्कलैः ॥ ५७ ॥

ससर्पिष्कैः प्रलेपः स्याच्छोथनिर्वापणः परः ।

श्लेष्मजशोथे लेपमाह—

अजगन्धाऽश्वगन्धा च मञ्जिष्ठा सरलस्तथा ॥ ५८ ॥

एकैषिकाऽजगृङ्गी च प्रलेपः श्लेष्मशोथहा ।

कफवातकृतशोथे कोष्णलेपमाह—

पुनर्नवादारुशिष्टुदशमूलमहौषधैः ॥ ५९ ॥

कफवातकृते शोथे लेपः कोष्णो विधीयते ।

कृष्णा पुराणपिण्याकं शिष्टुत्वक्सिकता शिवा ॥ ६० ॥

मूत्रपिष्टः सुखोष्णोऽयं प्रलेपः श्लेष्मशोथहा ।

अथ बृहन्न्यग्रोधादिलेपः—

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षवेतससेलुभिः ॥ ६१ ॥

चन्दनद्वयमञ्जिष्ठायष्टीसूरणगैरिकैः ।

शतधौतघृतोन्मिश्रैर्लेपो रक्तप्रसादनः ॥ ६२ ॥

दाहपाकरुजास्त्रावशोफनिर्वापणः परः ।

आगन्तुजे रक्तजे च एष लेपोऽतिपूजितः ॥ ६३ ॥

इति बृहन्न्यग्रोधादिलेपः ।

न रात्रौ लेपनं दद्याद्दत्तं च पतितं तथा ।

न च पर्युषितं शुष्यमाणं तन्नैव धारयेत् ॥ ६४ ॥

शुष्यमाणमुपेक्षेत प्रदेहं पीडनं प्रति ।

न चापि मुखमालिम्पेत्तेन दोषः प्रसिच्यते ॥ ६५ ॥

तमसा पिहितो ह्यूष्मा रोमकूपमुखे स्थितः ।

विना लेपेन निर्याति रात्रौ नाऽऽलेपयेद्दत्तः ॥ ६६ ॥

रात्रावपि प्रलेपस्तु विधातव्यो विचक्षणैः ।

अपाकिशोथे गम्भीरे रक्तपित्तसमुद्भवे ॥ ६७ ॥

अथोपनाहः—

न प्रशाम्यति यः शोफः प्रलेपादिविधानतः ।
 द्रव्याणि पाचनीयानि दद्यात्तत्रोपनाहने ॥ ६८ ॥
 शणमूलकशिग्रूणां फलानि तिलसर्षपाः ।
 अतसी सक्तवः किण्वमुष्णद्रव्यं च पाचनम् ॥ ६९ ॥
 सतिलाः सातसीबीजा दध्यम्लं सक्तुपिण्डिकाः ।
 सकिण्वकुष्ठलवणाः शस्ताः स्यादुपनाहने ॥ ७० ॥
 तैलेन सर्पिषा वाऽथ पित्ताभ्यां सक्तुपिण्डिकाः ।
 सुखोष्णः शोथपाकार्थमुपनाहः प्रशस्यते ॥ ७१ ॥
 कटुतैलान्वितैर्लेपः सर्पनिर्मोकमस्मभिः ।
 चयः शाम्यति गण्डस्य प्रकोपः स्फुटति द्रुतम् ॥ ७२ ॥
 दण्डोत्पलकमूलेन पिडिकाः संप्रलेपिताः ।
 तण्डुलोदकपिष्टेन नाशमायान्त्यसंशयम् ॥ ७३ ॥

इत्युपनाहः ।

अन्तः पूयेष्ववक्त्रेषु तथैवोत्सङ्गवत्स्वपि ।
 गतिमत्सु च रोगेषु भेदनं प्राप्तमिष्यते ॥ ७४ ॥
 रोगे व्यधनसाध्ये तु यथादेशप्रमाणतः ।
 शस्त्रं विधाय दौषास्तु स्रावयेत्कथितं यथा ॥ ७५ ॥

कचिच्छस्त्रनिक्षेपापवादमाह—

बालवृद्धासहक्षीणभीरूणां योषितामपि ।
 व्रणेषु मर्मजातेषु पक्वदोषेषु दारणम् ॥ ७६ ॥
 चिरिबिल्वो नलो दन्ती चित्रको हयमारकः ।
 कपोतकङ्कगृध्राणां मललेपेन दारणम् ॥ ७७ ॥
 क्षारद्रव्याणि यावन्ति क्षारो वा दारणं परम् ।

पाचनभेदनम्—

हस्तिदन्तो जले घृष्टो बिन्दुमात्रप्रलेपनात् ॥ ७८ ॥
 अत्यर्थकठिने शोथे कथितो भेदनः परः ।
 यवगोधूमचूर्णं च सक्षारं दारणं पृथक् ॥ ७९ ॥



हरिद्रामस्मचूर्णाभ्यां प्रलेपो दारणः परः ।
अजबिदक्षारमुद्भ्यां च प्रलेपो व्रणदारणः ॥ ८० ॥

इति पाटनम् ।

ततः प्रक्षालने काथः पटोलीनिम्बपत्रजः ।
अविशुद्धे विशुद्धे तु न्यग्रोधादित्वगुद्भवः ॥ ८१ ॥
पञ्चमूलीद्वयं वाते न्यग्रोधादिश्च पैत्तिके ।
आरग्वधादिको योज्यः कफजे सर्वकर्मसु ॥ ८२ ॥

अथ शोधनरोपणविधी मिलितौ लिख्येते—

अपेतपूतिमांसानां मांसस्थानामरोहताम् ।
कल्कः संरोपणः कार्यस्तिलाज्यमधुनाऽन्वितः ॥ ८३ ॥
निम्बपत्रमधुभ्यां तु युक्तः संशोधनः स्मृतः ।
पूर्वाभ्यां सर्पिषा वाऽपि युक्तश्चाप्युपरोपणः ॥ ८४ ॥
निम्बपत्रतिलैः कल्को मधुना व्रणशोधनः ।

रोपणमाह—

रोपणः सर्पिषा युक्तो यवकल्केऽप्ययं विधिः ॥ ८५ ॥

वर्तिमाह—

निम्बपत्रघृतक्षौद्रदार्वीमधुकसंयुता ।
वर्तिस्तिलानां कल्को वा शोधयेद्रोपयेद्व्रणम् ॥ ८६ ॥

दुष्टव्रणस्य लेपमाह—

निम्बपत्रं तिला दन्तीत्रिवृत्सैन्धवमाक्षिकम् ।
दुष्टव्रणप्रशमने लेपः शोधनकेसरी ॥ ८७ ॥
एकं वा सारिवामूलं सर्वव्रणविशोधनम् ।
सप्तदलदुग्धकल्कः शमयति दुष्टव्रणं प्रलेपेन ।
मधुयुक्ता शरपुङ्खा सर्वव्रणरोपणी कथिता ॥ ८८ ॥
व्रणान्विशोधयेद्वर्त्या सूक्ष्मास्यान्संधिमर्मजान् ।
अमयान्निवृतादन्तीलाङ्गलीमधुसैन्धवैः ॥ ८९ ॥

पञ्चवल्कलचूर्णैर्वा शुक्तिचूर्णसमायुतैः ।

धातकीलोध्रचूर्णैर्वा तथा रोहन्ति ते व्रणाः ॥ ९० ॥

सुषवीपत्रधत्तूरकर्णमोटकुठेरकाः ।

पृथगेते प्रलेपेन गम्भीरव्रणरोपणाः ॥ ९१ ॥

अथाग्निदग्धप्रतीकारः—

पित्तविद्रधिबत्सर्वं शमनं लेपनादिकम् ।

अग्निदग्धे प्रयुञ्जीत व्रणे सम्यग्भिषग्वरः ॥ ९२ ॥

अथ यवादिधूपः—

वाताभिभूतान्सास्त्रावान्धूपयेदुग्रवेदनान् ।

यवाज्यभूर्जमदनश्रीवेष्टकसुराह्वयैः ॥ ९३ ॥

श्रीवासगुग्गुल्वगरुशालनिर्यासधूपिताः ।

काठिनत्वं व्रणा यान्ति नश्यन्त्यास्त्राववेदनाः ॥ ९४ ॥

इति यवादिधूपः ।

अथ त्रिफलागुग्गुलुः—

निम्बपत्रवचाहिङ्गुसर्पिलवणसैन्धवैः ।

धूपनं कृमिरक्षोघ्नं व्रणकण्डूरुजापहम् ॥ ९५ ॥

निम्बशम्याकजात्यर्कसप्तपर्णाश्वमारकाः ।

कृमिघ्ना मूत्रसंयुक्ताः सेकालेपनधावनैः ॥ ९६ ॥

प्रच्छाद्य मांसपेश्या वा कृमीनपहरेद्व्रणात् ।

करञ्जारिष्टनिर्गुण्डीरसो हन्याद्व्रणक्रिमीन् ॥

लशुनेनाथ वा दद्यालेपनं कृमिनाशनम् ॥ ९७ ॥

ये क्लेदपाकस्रुतिगन्धवन्तो व्रणा महान्तः सरुजः सशोथाः ।

प्रयान्ति ते गुग्गुलुमिश्रितेन पीतेन शान्तिं त्रिफलाश्रितेन ॥ ९८ ॥

इति त्रिफलागुग्गुलुः ।

अथ गुग्गुलुवटकः—

त्रिफलाचूर्णसंयुक्तो गुग्गुलुवटकीकृतः ।

निषेवितो विबन्धघ्नो व्रणशोधनरोपणः ॥ ९९ ॥

इति गुग्गुलुवटकः ।

1. The first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

2. The second part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the chairperson.

3. The third part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the secretary.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the treasurer.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the clerk.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant clerk.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant treasurer.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant secretary.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant chairperson.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant chairperson.

11. The eleventh part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant chairperson.

12. The twelfth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant chairperson.

13. The thirteenth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant chairperson.

14. The fourteenth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant chairperson.

अथ विडङ्गादिगुग्गुलुः—

विडङ्गत्रिफलाव्योषचूर्णं गुग्गुलुना समम् ।
सर्पिषा वटिकां कृत्वा खादेद्वा हितभोजनः ।
दुष्टव्रणापचीमेहकुष्ठनाडीविशोधनः ॥ १०० ॥

इति विडङ्गादिगुग्गुलुः ।

अथामृताद्यो गुग्गुलुः—

अमृतापटोलमूलं त्रिकटुत्रिफलाक्रिमिग्नानाम् ।
समभागानां चूर्णं कृत्वा तत्तुल्यगुग्गुलुर्योज्यः ॥ १ ॥
प्रतिवासरमेकैकां गुटिकां खादेद्धाक्षपरिमाणाम् ।
जेतुं व्रणवातास्रं गुल्मोदरपाण्डुशोथादीन् ॥ २ ॥

इत्यमृताद्यो गुग्गुलुः ।

अथ जात्यादिघृतं तैलं वा—

जातीनिम्बपटोलपत्रकटुकादावीनिशासारिवा-
मञ्जिष्ठामयसिक्थतुत्थमधुकैर्नक्ताह्वबीजैः शृतम् ।
सर्पिः सिद्धमनेन सूक्ष्मवदना मर्माश्रिताः स्राविणो
गम्भीराः सरुजो व्रणाः सगतिकाः शुष्यन्ति रोहन्ति च ॥ ३ ॥

इति जात्यादिघृतं तैलं वा ।

अथ स्वर्जिकाद्यं घृतम्—

स्वर्जिका च यवक्षारकम्पिलं च हरेणुका ।
टक्कणं श्वेतखदिरं तुत्थचूर्णं च गोघृतैः ॥ ४ ॥
सर्वं समांशं संचूर्ण्य मर्दयेत्प्रहरं दृढम् ।
स्वर्जिकाद्यमिदं सर्पिः सर्वव्रणहरं परम् ॥ ५ ॥
रोपणं कृमिकण्डूघ्नं सवर्णकरणं परम् ।

इति स्वर्जिकाद्यं घृतम् ।

अथ पारदादिमलहरः—

रसगन्धकयोश्चूर्णं तत्समं मूर्द्धशङ्खकम् ॥ ६ ॥
सर्वतुल्यं तु कम्पिलं किञ्चित्तुत्थसमन्वितम् ।
सर्वं संमेलयेद्दत्त्वा घृतं सर्वचतुर्गुणम् ॥ ७ ॥

पिचुप्लुतं प्रदातव्यं दुष्टव्रणविशोधनम् ।
 नाडीव्रणहरं चैव सर्वव्रणनिषूदनम् ॥ ८ ॥
 ये व्रणा न प्रशाम्यन्ति मेषजानां शतेन च ।
 अनेन ते प्रशाम्यन्ति सर्पिषा स्वल्पकालतः ॥ ९ ॥

इति पारदादिमलहरः ।

अथ पारदादिर्मलहरः—

रसगन्धकसिन्दूरराक्षाकम्पिलमूर्डकम् ।
 तुत्थं खदिरकं चूर्णं सर्वं घृतचतुर्गुणम् ॥ १० ॥
 युक्त्या संमेल्य पिचुना व्रणे देयं विजानता ।
 सर्वव्रणप्रशमनं घृतमेतन्न संशयः ॥ ११ ॥

इति पारदादिर्मलहरः ।

अथ मनःशिलादिलेपः—

मनःशिला समञ्जिष्ठा सलाक्षा रजनीद्वयम् ।
 प्रलेपः सघृतक्षौद्रस्त्वग्बिभृक्षुद्धिकरः परः ॥ १२ ॥

इति मनःशिलादिलेपः ।

अयोरजः सकासीसं त्रिफलाकुसुमानि च ।
 प्रलेपः कुरुते *दिव्यः सद्य एव नवत्वचम् ॥ १३ ॥
 इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां व्रणशोधव्रणनिदानचिकित्साकथनं
 नामैकादशाधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १११ ॥

अथ द्वादशाधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ सद्योव्रणनिदानम्—

नानाधारामुखैः शस्त्रैर्नानास्थाननिपातितैः ।
 भवन्ति नानाकृतयो व्रणास्तांस्तान्निबोध मे ॥ १ ॥
 छिन्नं भिन्नं तथा विद्धं क्षतं पिञ्चितमेव च ।
 घृष्टमाहुस्तथा षष्ठं तेषां वक्ष्यामि लक्षणम् ॥ २ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

The names are as follows: John A. Smith, James B. Jones, William C. Brown, Charles D. White, and Thomas E. Black.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

The names are as follows: John A. Smith, James B. Jones, William C. Brown, Charles D. White, and Thomas E. Black.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

The names are as follows: John A. Smith, James B. Jones, William C. Brown, Charles D. White, and Thomas E. Black.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

The names are as follows: John A. Smith, James B. Jones, William C. Brown, Charles D. White, and Thomas E. Black.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

The names are as follows: John A. Smith, James B. Jones, William C. Brown, Charles D. White, and Thomas E. Black.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

The names are as follows: John A. Smith, James B. Jones, William C. Brown, Charles D. White, and Thomas E. Black.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

The names are as follows: John A. Smith, James B. Jones, William C. Brown, Charles D. White, and Thomas E. Black.

छिन्नलक्षणमाह—

तिर्यक्छिन्नो ऋजुर्वाऽपि यो व्रणस्त्वाचतो भवेत् ।
गात्रस्य पातनं तद्धि छिन्नमित्यभिधीयते ॥ ३ ॥

भिन्नलक्षणमाह—

शक्तिकुन्तेषु खड्गाग्रविषाणैराशयो हतः ।
यत्किञ्चित्प्रसवेत्तद्धि भिन्नलक्षणमुच्यते ॥ ४ ॥

तस्य कोष्ठमाह—

स्थानान्यामाग्निपक्वानां मूत्रस्य रुधिरस्य च ।
हृदुण्डुकः फुफ्फुसश्च कोष्ठ इत्यभिधीयते ॥ ५ ॥
तस्मिन्भिन्ने रक्तपूर्णे ज्वरो दाहश्च जायते ।
मूत्रमार्गगुदास्येभ्यो रक्तं घ्राणाच्च गच्छति ॥ ६ ॥
मूर्च्छाश्वासतृषाध्मानमभक्तच्छन्द एव च ।
विण्मूत्रवातसङ्गश्च स्वेदास्रावोऽक्षिरक्तता ॥ ७ ॥
लोहगन्धित्वमास्यस्य गात्रदौर्गन्ध्यमेव च ।
हृच्छूलं पार्श्वयोश्चापि विशेषं चात्र मे शृणु ॥ ८ ॥
आमाशयस्थे रुधिरे रुधिरं छर्दयत्यपि ।
आध्मानमतिमात्रं च शूलं च भृशदारुणम् ॥ ९ ॥
पक्काशयगतं वाऽपि रुजा गौरवमेव च ।
अधःक्राये विशेषेण शीतता च भवेदिह ॥ १० ॥
अभिन्नेऽप्याशयेऽन्त्राणां स्वैः सूक्ष्मैरन्त्रपूरणम् ।
पिहितास्ये घटे यद्वल्लक्ष्यते तत्र गौरवम् ॥ ११ ॥

विच्छलक्षणमाह—

सूक्ष्मास्यशल्याभिहतं यदङ्गं त्वाशयं विना ।
उत्तुण्डितं निर्गतं वा तद्विच्छमिति निर्दिशेत् ॥ १२ ॥

क्षतलक्षणमाह—

नातिच्छिन्नं नातिभिन्नमुभयोर्लक्षणान्वितम् ।
विषमं व्रणमङ्गे यत्तत्क्षतं त्विति निर्दिशेत् ॥ १३ ॥

पिचितमाह—

प्रहारपीडनाभ्यां तु यदङ्गं पृथुतां गतम् ।
सास्थि तत्पिचितं विद्यान्मज्जारक्तपरिप्लुतम् ॥ १४ ॥



घृष्टलक्षणमाह—

घर्षणादभिघाताद्वा यदङ्गं विगतत्वचम् ।

उषास्त्रावान्वितं यत्तु घृष्टं तदभिधीयते ॥ १५ ॥

सशल्यं सरुजं व्रणमाह—

इयावं सशोथं पिटकान्वितं च मुहुर्मुहुः शोणितवाहिनं च ।

मृदूद्रतं बुद्बुदतुल्यमांसं व्रणं सशल्यं सरुजं वदन्ति ॥ १६ ॥

शल्योपद्रवमाह—

त्वचोऽतीत्य शिरादीनि भित्त्वा वा परिहृत्य च ।

कोष्ठे प्रतिष्ठितं शल्यं कुर्यादुक्तानुपद्रवान् ॥ १७ ॥

असाध्यत्वमाह—

तत्रान्तर्लोहितं पाण्डुशीतपादकराननम् ।

शीतोच्छ्वासं रक्तेनेत्रमानन्दं च विवर्जयेत् ॥ १८ ॥

वातकृता रुज आह—

भ्रमः प्रलापः पतनं प्रमोहो विचेष्टनं ग्लानिरथोष्णता च ।

सस्ताङ्गता मूर्च्छनमूर्ध्ववातस्तीव्रा रुजो वातकृताश्च तास्ताः ॥ १९ ॥

सामान्यमर्मलिङ्गमाह—

मांसोदकामं रुधिरं च गच्छेत्सर्वोन्द्रियार्थोपरमस्तथैव ।

दशार्धसंख्येष्वथ विक्षतेषु सामान्यतो मर्मसु लिङ्गमुक्तम् ॥ २० ॥

सुरेन्द्रगोपप्रतिभं प्रभूक्तं

रक्तं स्रवेत्तक्षतजश्च वायुः ।

करोति रोगान्विविधान्यथोक्ता-

ञ्जिरासु छिन्नास्वथ वा क्षतासु ॥ २१ ॥

स्नायुविद्धत्वमाह—

कौब्जं शरीरावयवावसादः क्रियास्वशक्तिस्तुमुला रुजश्च ।

चिराद्ब्रणो रोहति यस्य चापि तं स्नायुविद्धं पुरुषं व्यवस्येत् ॥ २२ ॥

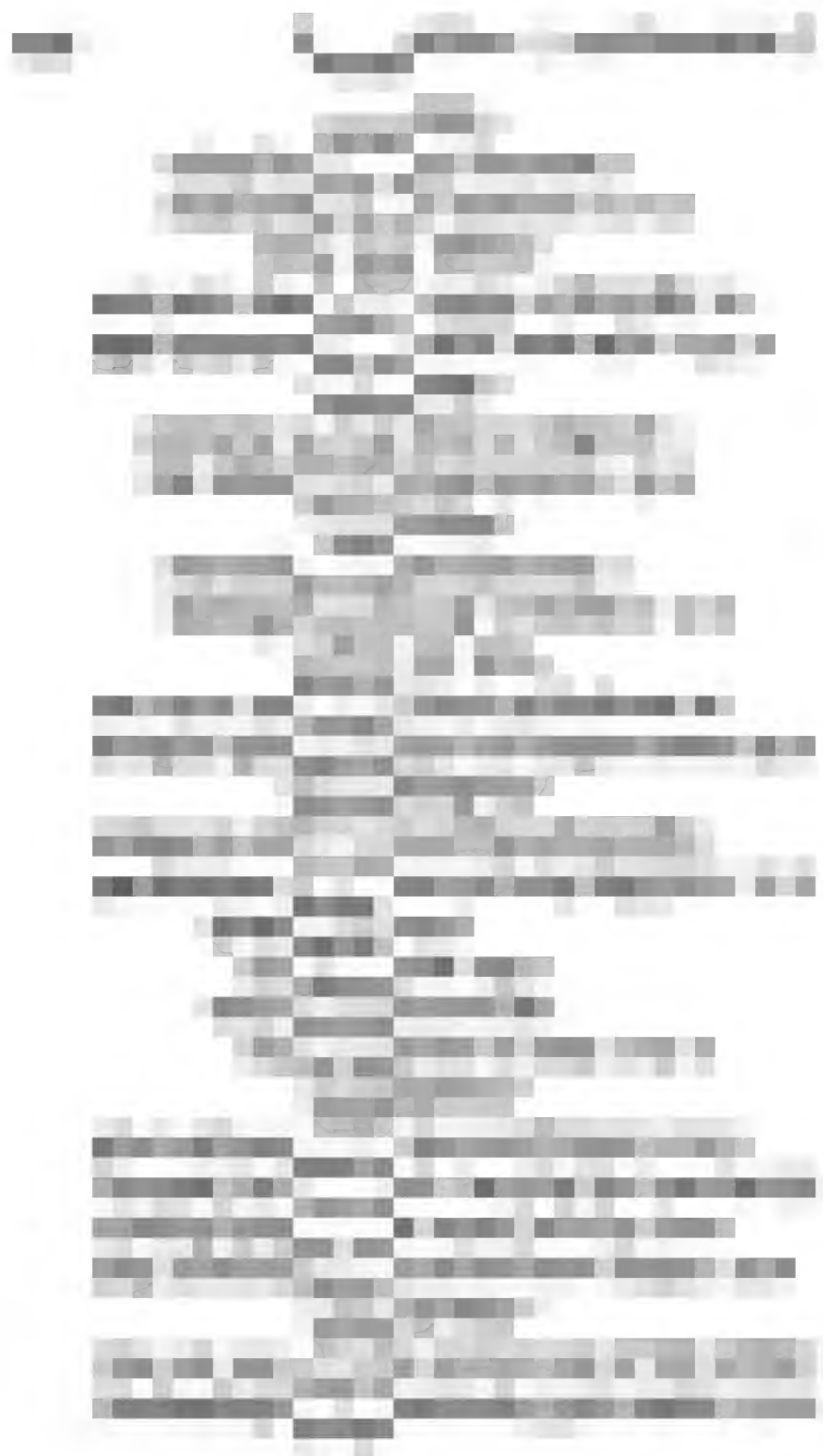
शोथातिवृद्धिस्तुमुला रुजश्च बलक्षयः सर्वत एव शोथः ।

क्षतेषु संधिष्वचलाचलेषु स्यात्सर्वकर्मोपरमश्च लिङ्गम् ॥ २३ ॥

अस्थिविद्धत्वमाह—

घोरा रुजो यस्य निशादिनेषु सर्वास्ववस्थासु च नैति शान्तिम् ।

मिषग्विपश्चिद्विदितार्थसूत्रस्तमस्थिविद्धं पुरुषं व्यवस्येत् ॥ २४ ॥



यथास्वमेतानि विभावयेच्च
लिङ्गानि मर्मस्वपि ताडितेषु ।
पाण्डुर्विवर्णं स्पृशितं न वेत्ति
यो मांसमर्मस्वभिताडितः स्यात् ॥ २५ ॥

उपद्रवानाह—

विसर्पः पक्षघातश्च शिरास्तम्भोऽपतानकः ।
मोहोन्मादव्रणरुजो ज्वरस्तृष्णा हनुग्रहः ॥ २६ ॥
कासश्छर्दिर्तीसारो हिक्का श्वासः सवेपथुः ।
षोडशोपद्रवा ज्ञेया व्रणानां व्रणवित्तमैः ॥ २७ ॥

इति सद्योव्रणनिदानम् ।

अथ तच्चिकित्सा—

बुद्ध्वोऽऽगन्तुव्रणं वेद्यो घृतक्षौद्रसमन्विताम् ।
शीतां क्रियां खरेदाशु रक्तपित्तोष्मनाशिनीम् ॥ २८ ॥
कुद्धे सद्योव्रणे गुड्यादूर्ध्वं चाधश्च शोधनम् ।
लङ्घनं च बलं ज्ञात्वा भोजनं चास्रमोक्षणम् ॥ २९ ॥
घृष्टे विदलिते चैव सुतरामिष्यते विधिः ।
तयोरल्पं स्रवत्यस्रं पाकस्तेनाऽऽशु जायते ॥ ३० ॥
छिन्ने मिन्ने तथा विद्धे क्षते चासृगतिस्रवेत् ।
रक्तक्षयात्तत्र रुजः करोति पवनो भृशम् ॥ ३१ ॥
स्नेहपानपरीषेकलेपस्वेदोपनाहनम् ।
कुर्वीत स्नेहवस्ति च मारुतघ्नौषधैः शृतैः ॥ ३२ ॥
अतिनिःसृतरक्तस्तु कटुष्णं शोणितं पिबेत् ।

उक्तं च ग्रन्थान्तरे—

छिन्ने मिन्ने तथा विद्धे क्षते सद्यो मिषग्वरः ॥ ३३ ॥
पट्टसूत्रेण संसीव्य निर्घातभवनस्थितः ।
क्लिन्नाया वाजिमूत्रेण नरमूत्रेण वा शनैः ॥ ३४ ॥
लोम्बिकां रचयित्वाऽऽशु शमितायाः कवोष्णया ।
तया संस्वेदयेत्सद्योव्रणं व्रणविशारदः ॥ ३५ ॥

1. The first part of the document is a letter from the President of the United States to the Congress, dated January 3, 1862.

2. The second part is a report from the Secretary of the Treasury, dated January 3, 1862.

3. The third part is a report from the Secretary of the Interior, dated January 3, 1862.

4. The fourth part is a report from the Secretary of the Navy, dated January 3, 1862.

5. The fifth part is a report from the Secretary of the War, dated January 3, 1862.

6. The sixth part is a report from the Secretary of the State, dated January 3, 1862.

7. The seventh part is a report from the Secretary of the Army, dated January 3, 1862.

8. The eighth part is a report from the Secretary of the Navy, dated January 3, 1862.

9. The ninth part is a report from the Secretary of the War, dated January 3, 1862.

10. The tenth part is a report from the Secretary of the State, dated January 3, 1862.

मुहुर्मुहुर्दुःखं न प्राप्नोति व्रणी नरः ।
 अथ वा दीप्यलवणपोटल्या स्वेदयेन्मुहुः ॥ ३६ ॥
 संतप्य वा तप्तलोहपात्रसंयोगतः क्रमात् ।
 दुष्टरक्तं स्थितं चापि शृङ्गालाब्वादिभिर्हरेत् ॥ ३७ ॥
 सद्यः क्षतव्रणे वैद्यः समूलं परिषेचयेत् ।
 यष्टीमधुकमिश्रेण नातिशीतेन सर्पिषा ॥ ३८ ॥
 कषायमधुराः शीताः क्रियाः सर्वस्तु योजयेत् ।
 सद्योव्रणानीं सप्ताहात्पश्चात्पूर्वोक्तमाचरेत् ॥ ३९ ॥
 चिकित्सितं तु तत्सर्वं सामान्यव्रणनाशनम् ।
 आमाशयस्थे रुधिरे वमनं पथ्यमुच्यते ॥ ४० ॥
 पक्वाशयस्थे देयं च विरेचनमसंशयम् ।
 काथो वंशत्वगेरण्डश्वदंष्ट्राश्मभिदाकृतः ॥ ४१ ॥
 हिङ्गुसैन्धवसंयुक्तः कोष्ठस्थं स्त्रावयेदसृक् ।

इति वंशत्वगादिकाथः ।

अथ गौरादिघृतम्—

यवकोलकुलस्थानां निःस्नेहेन रसेन च ॥ ४२ ॥
 सुस्त्रीतान्नं यवागूं वा पिबेत्सैन्धवसंयुताम् ।
 गौरां हरिद्रां मञ्जिष्ठां मांसीं मधुकमेव च ॥ ४३ ॥
 प्रपौण्डरीकं ह्रीविरं नतं मुस्तं सचन्दनम् ।
 जातीनिम्बपटोलं च करञ्जं कटुरोहिणीम् ॥ ४४ ॥
 मधूच्छिष्टं मधूकं च महामेदां तथैव च ।
 पञ्चवल्कलतोयेन घृतं प्रस्थं विपाचयेत् ॥ ४५ ॥
 एतद्गौरादिकं सर्पिः सर्वव्रणविशोधनम् ।
 आगन्तुकाश्च सहजाः सुचिरोत्थाश्च ये व्रणाः ॥ ४६ ॥
 नाडीव्रणश्च विषमो नश्यत्येव न संशयः ।

इति गौराद्यं घृतम् ।

अथ तिक्तादिघृतम्—

तिक्तासिक्थनिशायष्टीनक्ताह्वफलपल्लवैः ॥ ४७ ॥

पटोलमालतीनिम्बपत्रैर्वर्ण्यं शृतं घृतम् ।
इति तिक्तादिघृतम् ।

अथ जात्यादितैलम्—

जातीनिम्बपटोलानां नक्तमालस्य पल्लवान् ॥ ४८ ॥
सिक्थकं मधुकं कुष्ठं द्वे निशे कदुरोहिणीम् ।
मस्त्रिंशं पद्मकं लोध्रमभयां नीलमुत्पलम् ॥ ४९ ॥
तुत्थकं सारिवां बीजं नक्तमालस्य च क्षिपेत् ।
एतानि समभागानि पिष्ट्वा तैलं विपाचयेत् ॥ ५० ॥
विषव्रणसमुत्पत्तौ स्फोटेषु च सकच्छुषं ।
कण्डूवीसर्परागेषु कीटदष्टेषु सर्वथा ॥ ५१ ॥
सद्यः शस्त्रप्रहारेषु दग्धविद्धक्षतेषु च ।
नखदन्तक्षते देहे दुष्टमांसावघर्षणे ।
अक्षणार्थमिदं तैलं हितं शोधनरोपणम् ॥ ५२ ॥

इति जात्यादितैलम् ।

अथ विपरीतमल्लतैलम्—

सिन्दूरकुष्ठविषहिङ्गुरसोनचित्र-
बाणाङ्घ्रिलाङ्गलिककल्कविपकृतैलम् ।
प्रासादमन्त्रयुतहुंकृततुत्थफेन-
क्लिन्नव्रणप्रशमनो विपरीतमल्लः ॥ ५३ ॥
खड्गामिघातगुरुगण्डमहोपदंश-
नाडीव्रणव्रणविचर्चिककुष्ठपामाः ।
एतन्निहन्ति विपरीतकमल्लनाम
तैलं यथेष्टशयनाशनभोजनस्य ॥ ५४ ॥

इति विपरीतमल्लतैलम् ।

अथ दूर्वादितैलम्—

दूर्वास्वरससंसिद्धं तैलं कम्पिलकेन वा ।
दार्वात्विचश्च कल्केन प्रधानं व्रणरोपणम् ॥ ५५ ॥

इति दूर्वादितैलम् ।

अथ सप्तविंशतिको गुग्गुलुः-

त्रिकटुत्रिफलीमुस्तविडङ्गामृतचित्रकम् ।
 पटोलं पिप्पलीमूलं हृषुषां सुरदारु च ॥ ५६ ॥
 तुम्बरुः पुष्करं चव्यं विशाला रजनीद्वयम् ।
 विडं सौवर्चलं क्षारः सैन्धवं गजपिप्पली ॥ ५७ ॥
 यावन्त्येतानि सर्वाणि तावद्विगुणगुग्गुलुः ।
 कोलप्रमाणां वटिकां मक्षयेन्मधुना सह ॥ ५८ ॥
 कासं श्वासं तथा शोफमर्शांसि च मगंदरम् ।
 हृच्छूलं पार्श्वशूलं च कुक्षिबस्तिगुदे रुजम् ॥ ५९ ॥
 अश्वरीं मूत्रकृच्छ्रं च अन्त्रवृद्धिं तथा कृमीन् ।
 चिरज्वरोपसृष्टानां क्षतोपहतचेतसाम् ॥ ६० ॥
 आनाहं च तथोन्मादं कुष्ठान्यष्टोदराणि च ।
 नाडीं दुष्टव्रणान्सर्वान्प्रमेहाञ्जलीपदं तथा ॥ ६१ ॥
 सप्तविंशतिको नाम गुग्गुलुः प्रथितो महान् ।
 धन्वन्तरिकृतो ह्येष सर्वरोगनिषूदनः ॥ ६२ ॥

इति सप्तविंशतिको गुग्गुलुः ।

अण्णे श्वयथुरायासात्स च रागश्च जागरात् ।
 सौ च रुक्च दिवास्वापात्ते च मृत्युश्च मैथुनात् ॥ ६३ ॥
 अम्लं दधि च शाकं च मांसमानूपवारिजम् ।
 क्षीरं गुरूणि चान्नानि व्रणिनः परिवर्जयेत् ॥ ६४ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां सद्योव्रणनिदानचिकित्साकथनं नाम द्वादशाधि-
 कशततमस्तरङ्गः ॥ ११२ ॥

अथ त्रयोदशाधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथाग्निदग्धव्रणनिदानम्-

अग्निदग्धो द्विविधः साक्षाद्दग्धः परम्परादग्धश्च स प्रत्येकं चतुर्धा
 प्लुष्टं दुर्दग्धं सम्यग्दग्धमतिदग्धं चेति । तत्र विवर्णमतिमात्रं प्लुष्ट्यते
 तत्प्लुष्टम् । यत्रोत्तिष्ठन्ति स्फोटास्तीव्रदाहवेदनास्तद्दुर्दग्धम् । सम्य-
 ग्दग्धमनवगाढं तालफलवर्णं पूर्वलक्षणयुक्तं च । अतिदग्धं तु दग्धं

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

च्युतमांसविलम्बि शोषणं शिरास्नायुसंध्यस्थिव्यापादनमतिवेदनाज्वर-
दाहपिपासामूर्च्छाद्युपद्रवयुक्तं भवति । इति प्लुष्टादिभेदेन वह्निदग्धश्च-
तुर्धा व्रणो भवति । तत्र—

प्लुष्टस्याग्निप्रतपनं कार्यमुष्णं तथौषधम् ।
सम्यक् स्विन्ने शरीरे तु स्विन्नं भवति शोमनम् ॥ १ ॥
प्रकृत्या सलिलं शीतं स्कन्दयत्यतिशोषणम् ।
तस्मात्सुखयति ह्युष्णं न तु शीतं कदाचन ॥ २ ॥
शीतामुष्णां च दुर्दग्धे क्रियां कुर्यात्ततः पुनः ।
घृतालेपनसेकादि शीतमेवास्य कारयेत् ॥ ३ ॥
अतिदग्धे विशीर्णानि मांसान्युद्धृत्य शीतलाम् ।
क्रियां कुर्यात्ततः पश्चाच्छालितण्डुलकण्डनैः ॥ ४ ॥
चूर्णेर्वा चूर्णितैः सम्यगतिदग्धं च चूर्णयेत् ।
तिन्दुक्यास्तु कषायैर्वा घृतमिश्रैः प्रलेपयेत् ॥ ५ ॥
सम्यग्दग्धे तुगाक्षीरीप्लक्षचन्दनगैरिकैः ।
सामृतैः सर्पिषा युक्तैरालेपं कारयेद्भिषक् ॥ ६ ॥
षष्ठ्याकर्मजीरकमधुसिक्थकसर्जमिश्रितं लेपात् ।
गन्धं घृतमपहरति च दग्धव्रणपाकमाश्वेव ॥ ७ ॥
अन्तर्धूमकुठारको दहनजं लेपान्निहन्ति व्रणं
बोधिक्षोणिजशुष्कवल्कलमवं चूर्णं तथा गुण्डनात् ।
अभ्यङ्गाद्विनिहन्ति तैलमखिलं गण्डूपदैः साधितं
पिष्ट्वा शाल्मलिमूलकैर्जलगतालेपात्तथा वालुका(?) ॥ ८ ॥
मधूच्छिष्टं समधुकं लोभ्रं सर्जरसं तथा ।
मञ्जिष्ठां चन्दनं मूर्वां पिष्ट्वा सर्पिर्विपाचयेत् ॥ ९ ॥
सर्वेषामग्निदग्धानामेतद्रोपणमुत्तमम् ।

अथ सिक्थकादिघृतम्—

सिद्धं कषायकल्काभ्यां पटोल्याः कटुतैलकम् ॥ १० ॥
व्रणदग्धरुजास्रावदाहविस्फोटनाशनम् ।

अथ लाङ्गलीकं घृतम्—

उभे हरिद्रे मञ्जिष्ठा मधुकं लोभ्रकटफलम् ॥ ११ ॥
कम्पिलकमुभे मेदे लाङ्गलीमूलमेव च ।
पिप्पली त्रिफला चैत्र निम्बपत्रं च कार्ष्णिकैः ॥ १२ ॥

1. The first part of the document is a letter from the President of the United States to the Congress, dated January 3, 1862. It is a very important document, as it contains the President's views on the state of the Union and the progress of the war. The President discusses the military situation, the economy, and the political climate. He also mentions the recent death of General Grant and the appointment of General Sherman to command the Western Army.

2. The second part of the document is a report from the Secretary of the War Department, dated January 10, 1862. It provides a detailed account of the military operations in the West, including the Battle of Fort Sumner and the capture of Fort Tule. The report also discusses the progress of the construction of the Pacific Railroad and the state of the frontier.

3. The third part of the document is a report from the Secretary of the Navy, dated January 15, 1862. It discusses the state of the Navy and the progress of the construction of new ships. The report also mentions the recent capture of the Confederate ship, the *Albatross*, and the appointment of Admiral Farragut to command the Gulf Fleet.

4. The fourth part of the document is a report from the Secretary of the Interior, dated January 20, 1862. It discusses the state of the public lands and the progress of the construction of the Pacific Railroad. The report also mentions the recent discovery of gold in California and the appointment of General Sherman to command the Western Army.

5. The fifth part of the document is a report from the Secretary of the Treasury, dated January 25, 1862. It discusses the state of the Treasury and the progress of the construction of the Pacific Railroad. The report also mentions the recent discovery of gold in California and the appointment of General Sherman to command the Western Army.

पेष्यैरेतैर्घृतं प्रस्थं पाचयेद्विगुणं पयः ।
 दत्त्वा पलद्वयं सिक्थं सिद्धे पूतेऽत्र दापयेत् ॥ १३ ॥
 लाङ्गलीकं घृतं नाम्ना व्रणानां रोपणं परम् ।
 अग्निदग्धे विसर्पे च लूताकीदव्रणेषु च ॥ १४ ॥
 चिरोत्थेष्वप्यहृद्येषु नाडीभर्मव्रणेषु च ।
 हितमेतत्समाख्यातं लाङ्गलीकमिदं घृतम् ॥ १५ ॥

इति लाङ्गलीकं घृतम् ।

अथ चन्दनाद्यं यमकम्—

चन्दनं वटशृङ्गाश्च मञ्जिष्ठा मधुकं तथा ।
 प्रपौण्डरीकं दूर्वा च पतङ्गं धातकी तथा ॥ १६ ॥
 एतैस्तैलं विपक्तव्यं गव्यक्षीरसमायुतम् ।
 अग्निदग्धे व्रणे श्रेष्ठं ब्रक्षणाद्दोषणं परम् ॥ १७ ॥

इति चन्दनाद्यं यमकम् ।

अग्निदग्धे व्रणे देयं धातकीचूर्णमुत्तमम् ।
 अतसीतैलसंमिश्रं वह्निदग्धव्रणापहम् ॥ १८ ॥
 अन्तर्धूमविदग्धं त्रिफलाचूर्णं विमिश्रितं तैलैः ।
 क्षौमैः शीघ्रं शमयत्यग्निव्रणमाशु लेपेन ॥ १९ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यामग्निदग्धव्रणनिदानचिकित्साकथनं नाम त्रयोदश-
 धिकशततमस्तरङ्गः ॥ ११३ ॥

अथ चतुर्दशाधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ भग्ननिदानम्—

भग्नं समासाद्विविधं हुताशकाण्डे च संधावपि तत्र संधौ ।
 उत्पिष्टविश्लिष्टविवर्तितं च तिर्यक्च विक्षिप्तमधश्च षष्ठम् ॥ १ ॥
 प्रसारणाकुञ्चनवर्तनेषु रुक्स्पर्शविद्वेषणमेतदुक्तम् ।
 सामान्यतः संधिगतस्य लिङ्गमुत्पिष्टसंधेः श्वयथुः समन्तात् ॥ २ ॥
 विशेषतो रात्रिभवा रुजश्च विश्लिष्टजे तौ च रुजा च नित्यम् ।
 विवर्तिते पार्श्वरुजश्च तीव्रास्तिर्यग्गते तीव्ररुजो भवन्ति ॥ ३ ॥

क्षितेऽतिशूलं विषमं च सक्थोः क्षिते त्वधोरुग्विघटश्च संधेः ।
 काण्डे त्वधः कर्कटकाश्वकर्णं विचूर्णितं पिचितमस्थिछलिः ॥४॥
 काण्डेषु भग्नं ह्यतिपातितं च मज्जागतं च स्फुटितं च वक्त्रम् ।
 छिन्नं द्विधा द्वादशधाऽपि काण्डे सस्ताङ्गता शोथरुजातिवृद्धिः॥
 संपीड्यमाने भवतीह शब्दः स्पर्शासहः स्यन्दनतोदभेदाः ।
 सर्वास्ववस्थासु न शर्मलामो भग्नस्य काण्डे खलु चिह्नमेतत् ।
 भग्नं तु काण्डे बहुधा प्रयाति समासतो नामभिरेव तुल्यम् ॥ ६ ॥
 अल्पाशिनोऽनात्मवतो जन्तोर्वातात्मकस्य वा ।

उपद्रवैर्वा जुष्टस्य भग्नं कृच्छ्रेण सिध्यति ।
 भिन्नं कपाले कट्यां च संधिमुक्तं तथा च्युतम् ।
 जघनं प्रतिपिष्टं च वर्जयेत्तु विचक्षणः ॥ ८ ॥
 असंश्लिष्टकपालं च ललाटे चूर्णितं च यत् ।
 भग्नं स्तनान्तरे शङ्खे पृष्ठे मूर्धनि वर्जयेत् ॥ ९ ॥
 सम्यक्संधितमप्यस्थिगुर्निक्षेपनिबन्धनात् ।
 संक्षोभाद्वाऽपि यद्गच्छेद्विक्रियां तच्च वर्जयेत् ॥ १० ॥
 तरुणास्थीनि नस्यन्ते भिद्यन्ते नलकानि तु ।
 कपालानि विभिद्यन्ते स्फुटन्ति रुचकानि तु ॥ ११ ॥

इति भग्ननिदानम् ।

अथ भग्नचिकित्सा—

भग्नान्युपाचरेद्धीमान्तेकालेपनबन्धनैः ।
 शीतलैरेव विविधैः प्रयोगैश्च समीरितैः ॥ १२ ॥
 तत्रातिशिथिले बन्धे संधिस्थैर्यं न जायते ।
 गाढेनापि त्वगादीनां शोफो रुक्पाक एव च ॥ १३ ॥
 तस्मात्साधारणं बन्धं भग्ने शंसन्ति तद्विदः ।
 आदौ भग्नं विदित्वा तु सेचयेच्छीतलाम्बुना ॥ १४ ॥
 पङ्केनाऽऽलेपनं कार्यं बन्धनं च कुशान्वितम् ।
 अवनामितमुन्नस्येदुन्नतं न च पीडयेत् ॥ १५ ॥
 क्षिप्तं द्विधाऽपि च स्थाने संस्थाप्य विधिमाचरेत् ।
 आलेपनार्थं मञ्जिष्ठा मधुकं चाऽऽम्लपेषितम् ॥ १६ ॥

1. Introduction

The purpose of this study is to investigate the effects of the proposed system on the performance of the participants. The study was conducted in a laboratory setting with a sample of 30 participants. The participants were divided into two groups: a control group and an experimental group. The control group used the traditional system, while the experimental group used the proposed system. The results of the study are presented in the following sections.

The study was conducted in a laboratory setting with a sample of 30 participants. The participants were divided into two groups: a control group and an experimental group. The control group used the traditional system, while the experimental group used the proposed system. The results of the study are presented in the following sections.

2. Methodology

2.1 Participants

The participants were recruited from a local university and were divided into two groups: a control group and an experimental group. The control group used the traditional system, while the experimental group used the proposed system. The results of the study are presented in the following sections.

2.2 Procedure

शतधौतघृतोन्मिश्रं शालिपिष्टं च लेपनम् ।
 न्यग्रोधादिकषायं तु शीतलं परिषेचने ॥ १६ ॥
 पञ्चमूलीविषकं तु क्षीरं दद्यात्सवेदने ।
 मूलं मृगालच्छिन्नायाः पीत्वा मांसरसेन तु ॥ १७ ॥
 चूर्णीं कृत्वा तु सप्ताहादस्थिमङ्गमपोहति ।
 आमाचूर्णं मधुयुतमस्थिमङ्गे ज्वहं पिबेत् ॥ १८ ॥
 पीत्वा चास्थिमवं सम्यग्ब्रजसारनिभं दृढम् ।
 अविदाहिभिरन्नैश्च पिष्टकैः समुपाचरेत् ॥ २९ ॥
 मांसं मांसरसं क्षीरं सर्पिर्युषं च मुद्गजम् ।
 बृंहणं चान्नपानं च संधिमग्नय दपयेत् ॥ २१ ॥
 गृष्टिक्षीरं ससर्पिष्कं मधुरौषधिसाधितम् ।
 शीतलं लाक्षया युक्तं प्रातर्भग्ने पिबेन्नरः ॥ २२ ॥
 सघृतं चास्थिसंधानं लाक्षागोधूमभर्जनम् ।
 संधिमुक्तेऽस्थिमङ्गे च पिबेत्क्षीरेण मानवः ॥ २३ ॥
 रसोनमधुलाक्षाज्यसिताकलकं समश्नतः ।
 छिन्नभिन्नच्युतास्त्रां च संधानमचिराद्भवेत् ॥ २४ ॥
 लेपात्पिष्टकलवणैरम्लीकाफलरसाभ्यां वा ।
 सद्योऽभिघातजनिताङ्गरुजाश्वयथवः प्रशाम्यन्ति ॥ २५ ॥
 धात्रीमेदातिलैर्लेपः पिष्टैरम्बुभिरेव वा ।
 अस्थिमङ्गे संधिमङ्गे घृताक्तेऽतिप्रपूजितः ॥ २६ ॥
 क्षीरं सलाक्षामधुकं ससर्पिः स्याज्जीवनीयं च पिबेत्सुखार्थम् ।
 भग्ने पिबेद्बलकलमर्जुनस्य गोधूमभर्जं समधु प्रशस्तम् ॥ २७ ॥

अथ लाक्षागुग्गुलुः—

*लाक्षमस्थिसंहृत्कुमाश्वगन्धाश्चूर्णिकृता नागबलापुरश्च ।
 संमग्नमुक्तास्थिरुजं निहन्यादङ्गानि कुर्यात्कुलिशोपमानि ॥ २८ ॥
 इति लाक्षागुग्गुलुः ।

अथाऽऽभाद्यो गुग्गुलुः—

आमाफलत्रिकव्योषैः सर्वैरभिः समीकृतैः ।
 तुल्यो गुग्गुलुराजोऽयं मग्नसंधिप्रसाधकः ॥ २९ ॥
 इत्याभाद्यो गुग्गुलुः ।

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

11. The eleventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

12. The twelfth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

13. The thirteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

14. The fourteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

15. The fifteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

16. The sixteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

17. The seventeenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

18. The eighteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

19. The nineteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

अथ गोधूमयोगः—

सव्रणस्य तु मग्नस्य व्रणं सर्पिमधूत्तमैः ।
परिषिच्य कषायैश्च शेषं मग्नं वदाचरेत् ॥ ३० ॥
वातव्याधिविनिर्दिष्टान्नेहानन्नापि योजयेत् ।
वह्निजं भस्म मधुना पातव्यं हितभोजिना ॥ ३१ ॥
संधिमङ्गेऽस्थिमङ्गे च विशेषेण प्रशस्यते ।
ईषद्विदग्धगोधूमचूर्णं पीतं समाक्षिकम् ।
कटिसंधिषु मग्नैषु मग्नैष्वस्थिषु पूजितम् ॥ ३२ ॥

इति गोधूमयोगः ।

अथ बोलयोगः—

नृमधुसमुत्थं बोलं लीढं क्षौद्रेण मात्रया बुद्ध्या ।
अस्थिस्रायुशिरासंध्याशयमग्नानि संधयति ॥ ३३ ॥

इति बोलयोगः ।

निषेधः—

लवणं कटुकं क्षारं साम्लं मैथुनमातपम् ।
व्यायामं च न सेवेत मग्नो रूक्षान्नमेव च ॥ ३४ ॥
बालानां तरुणानां च मग्नान्याशु भवन्ति वै ।
समीचीर्षं तु वृद्धानां मग्नानां न विशेषतः ॥ ३५ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां भग्ननिदानचिकित्साकथनं नाम चतुर्दशो-

धिकशततमस्तरङ्गः ॥ ११४ ॥

अथ पञ्चदशाधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ नाडीव्रणनिदानम्—

यः शोथमाममतिपक्वमुपेक्षतेऽज्ञो
यो वा व्रणं प्रचुरपूयमसाधुवृत्तः ।
अभ्यन्तरं प्रविशति प्रविदार्य तस्य
स्थानानि पूर्वविहितानि ततः सपूयः ॥ १ ॥



तस्यातिमात्रगमनाद्गतिरिष्यते तु
 नाडीव यद्वहति तेन मता तु नाडी ।
 दोषैस्त्रिभिर्भवति सा पृथगेकशश्च
 संमूर्छितैरपि च शल्यनिमित्ततोऽन्या ॥ २ ॥
 तत्रानिलात्परुषसूक्ष्ममुखी सशूला
 फेनानुविद्धमधिकं भ्रवति क्षपासु ।
 पित्ताच्च तृड्ज्वरकरी परिदाहयुक्ता
 पीतं स्रवत्यधिकमुष्णमहःसु चापि ॥ ३ ॥
 ज्ञेया कफाद्बहुघनाऽर्जुनपिच्छिलास्रा
 स्तब्धा सकण्डुररुजा रजनीप्रवृद्धा ।
 दाहज्वरश्चसनमूर्छनवक्त्रशोषा
 यस्यां भवन्त्यभिहितानि च लक्षणानि ॥ ४ ॥
 तामादिशोत्पवनपित्तकफप्रकोषा-
 द्घोरां गतिं त्वमुहरामिव कालरात्रिम् ।
 नष्टं कथंचिदनुमात्रमुदीरितेषु
 स्थानेषु शल्यमचिरेण गतिं करोति ॥ ५ ॥
 सा फेनिलं मथितमुष्णमसृग्विमिश्रं
 स्रावं करोति सहसा सरुजं च नित्यम् ।
 नाडी त्रिदोषप्रभवा न सिध्ये-
 च्छेषाश्चतस्रः खलु यत्नसाध्याः ॥ ६ ॥
 इति नाडीव्रणनिदानम् ।

अथ नाडीव्रणचिकित्सा—

नाडीनां गतिमन्विष्य शस्त्रेणोत्कृत्य कर्मवित् ।
 सर्वं व्रणक्रमं कुर्याच्छोधनारोपणादिकम् ॥ ७ ॥
 नाडीं वातकृतां साधु पाटितां लेखयेद्विषक् ।
 प्रत्यक्पुष्पीफलयुतैस्तिलैः पिष्टैः प्रलेपयेत् ॥ ८ ॥
 पैत्तिकीं तिलमस्त्रिष्ठानागदन्तीनिशाह्वयैः ।
 श्लैष्मिकीं तिलयष्ट्याह्निकुम्भारिष्टसैन्धवैः ॥ ९ ॥
 शल्यजां तिलमस्त्रिष्ठामध्वाज्यैर्लेपयेन्मुहुः ।
 आरग्वधनिशाकालाचूर्णाज्यक्षीरसंयुता ।
 सूत्रवर्तिव्रणे योज्या शोधनी गतिनाशिनी ॥ १० ॥

the first of these is the fact that the
the second is the fact that the
the third is the fact that the

the fourth is the fact that the
the fifth is the fact that the
the sixth is the fact that the
the seventh is the fact that the
the eighth is the fact that the

the ninth is the fact that the
the tenth is the fact that the
the eleventh is the fact that the
the twelfth is the fact that the
the thirteenth is the fact that the
the fourteenth is the fact that the
the fifteenth is the fact that the
the sixteenth is the fact that the
the seventeenth is the fact that the
the eighteenth is the fact that the
the nineteenth is the fact that the
the twentieth is the fact that the

घोण्टाफलत्वद्भ्रदनाफलानि

पूगस्य च त्वग्लशुनं च मुख्यम् ।

सुहृर्कदुग्धेन सहैष कल्को

वर्तीकृतो हन्त्यचिरेण नाडीम् ॥ ११ ॥

सुहृर्कदुग्धदार्वाभिर्वर्तितं कृत्वा प्रपूरयेत् ।

एष सर्वशरीरस्थां नाडीं हन्यात्प्रयोगराद् ॥ १२ ॥

नाड्याः शस्त्रेण वदनं बृहत्कृत्वा प्रवेशयेत् ।

कुशलो वास्तिविधिना तैलं जात्यादिसाधितम् ॥ १३ ॥

एवमन्यच्च यत्तैलं घृतं वा स्वरसं तथा ।

नाड्या अभ्यन्तरे वैद्यो लघुहस्तः प्रवेशयेत् ॥ १४ ॥

कर्पूरकरसैस्तैलं सिद्धार्थकभवं भिषक् ।

पचेत्सिन्दूरकल्केन नाडीदुष्टव्रणापहम् ॥ १५ ॥

गुग्गुलुत्रिफलाव्योषैः समाशैराज्यपेषितम् ।

अक्षप्रमाणां गुटिकां खादेच्छीताम्बुना नरः ॥ १६ ॥

नाडीदुष्टव्रणं शूलमुदावर्तं भगंदरम् ।

गुल्मं च गुदजान्हन्यात्पक्षिरादपन्नगानिव ॥ १७ ॥

इति सप्ताङ्गो गुग्गुलुः ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां नाडीव्रणनिदानचिकित्साकथनं नाम

पञ्चदशाधिकशततमस्तरङ्गः ॥ ११५ ॥

अथ षोडशाधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ भगंदरनिदानम्—

गुदस्य द्यङ्गुले क्षेत्रे पार्श्वतः पिटकार्तिकम् ।

भिन्नो भगंदरो ज्ञेयः स च पञ्चविधो मतः ॥ १ ॥

पञ्चविधत्वमाह—

वातपित्तकफैस्त्रेधा चतुर्थः संनिपाततः ।

उन्मार्गगः पञ्चमः स्यादेव पञ्चविधो मतः ॥ २ ॥

दोषैः पृथग्युतैः सर्वैरागन्तुः सोऽष्टधा स्मृतः ।

अपक्वं पिटकामाहुः पाकप्राप्तं भगंदरम् ॥ ३ ॥

1. Introduction

2.

3. Methodology

4. Results and Discussion

5. Conclusion

6. References

7. Appendix

8. Notes

9. Tables

10. Figures

11. Supplementary Materials

12. Correspondence

13. Author Contributions

14. Conflicts of Interest

15. Acknowledgments

16. References

17. References

18. References

19. References

20. References

21. References

22. References

23. References

24. References

25. References

पूर्वरूपमाह—

कटीकपालनिस्तोददाहकण्डूरुजादयः ।
भवन्ति पूर्वरूपाणि भविष्यति भगंदरे ॥ ४ ॥

भोजः—

भगं परिसमन्ताच्च गुदं वस्ति तथैव च ।
भगवद्धारयेद्यस्मात्तस्मादेष भगंदरः ॥ ५ ॥
गूढमूलां सुसंस्पर्मां रुगाढ्यां रूढकोपनीम् ।
भगंदरकरीं विद्यात्पिटकां नत्वतोऽन्यथा ॥ ६ ॥
तत्र श्यावारुणा तोदभेदस्फुरणरुक्करी ।
पिटका मारुतात्पित्तादुष्टग्रीवावदुत्थिता ॥ ७ ॥
रागिणी तनुरूमाढ्या ज्वरधूमायनान्विता ।
स्थिरा स्निग्धा महामूला पाण्डुः कण्डुमती कफात् ॥ ८ ॥
श्यावा ताम्रा सदाहैषा घोररुग्वातपित्तजा ॥ ९ ॥
पाण्डुरा किंचिदाश्यावा कृच्छ्रपाका कफानिलात् ।
पादाङ्गुष्ठसमा सर्वेर्दोषैर्नानाविधव्यथा ॥ १० ॥
शूलारोचकतृददाहज्वरच्छर्दिरुपकुताः ।
व्रणतां यान्ति ताः पक्ताः प्रमादादक्रियावताम् ॥ ११ ॥

शतपोनकं दोषमाह—

कषायरूक्षैस्त्वतिकोपितोऽनिलस्त्वपानदेशे पिटकां करोति ।
उपेक्षणात्पाकमुपैति दारुणं रुजं च भिन्नारुणफेनहीनम् ॥ १२ ॥
तत्राऽऽगमो मूत्रपुरीषरेतसं व्रणैरनेकैः शतैपोनकं वदेत् ।

उष्ट्रशिरोधरं दोषमाह—

प्रकोपनैः पित्तमतीव कोपितं करोति रक्तां पिटकां गुदागताम् ॥ १३ ॥
तदाऽऽशुपाकां हिमपूयवाहिनीं भगंदरं तूष्ट्रशिरोधरं वदेत् ॥ १४ ॥

परिस्राविणमाह—

कण्डूयनो घनस्रावी कठिनो मन्दवेदनः ।
श्वेतावमासः कफजः परिस्रावी भगंदरः ॥ १५ ॥

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

शम्बूकावर्तकमाह—

बहुव्रणरुजास्त्रावी पिटका गोस्तनोपमा ।

शम्बूकावर्तवन्नाडी शम्बूकावर्तको मतः ॥ १६ ॥

उन्मार्गिणमाह—

क्षताद्गतिः पायुगता विवर्धते ह्युपेक्षणात्स्युः क्रमयो विदार्थते ।

प्रकुर्वते मार्गमनेकधा मुखैर्व्रणैस्तमुन्मार्गि भगंदरं वदेत् ॥ १७ ॥

असाध्यत्वमाह—

घोराः सपिटका दुःखाः सर्व एव भगंदराः ।

तेष्वसाध्यस्त्रिदोषोत्थः क्षतजश्च विशेषतः ॥ १८ ॥

वातमूत्रपुरीषाणि क्रमयः शुक्रमेव च ।

भगंदराः स्रवन्तस्तु नाशयन्त्याशु मानवम् ॥ १९ ॥

इति भगंदरनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

गुदपिटकायामादौ कुर्याद्रक्तावसेचनं मतिमान् ।

*जलसदनाभिरशेषं सा पाकं न प्रयाति यथा ॥ २० ॥

अपानमार्गपिटकां दहेत्स्वर्णशलाकया ।

अग्निप्रतप्तया पश्चात्कुर्यादग्निव्रणक्रियाम् ॥ २१ ॥

लेपमाह—

वटपत्रेष्टिकाशुण्ठीगुडूच्यः सपुनर्नवाः ।

सुपिष्टाः पिटकावस्थे लेपः शस्तो भगंदरे ॥ २२ ॥

भिन्नक्रियामाह—

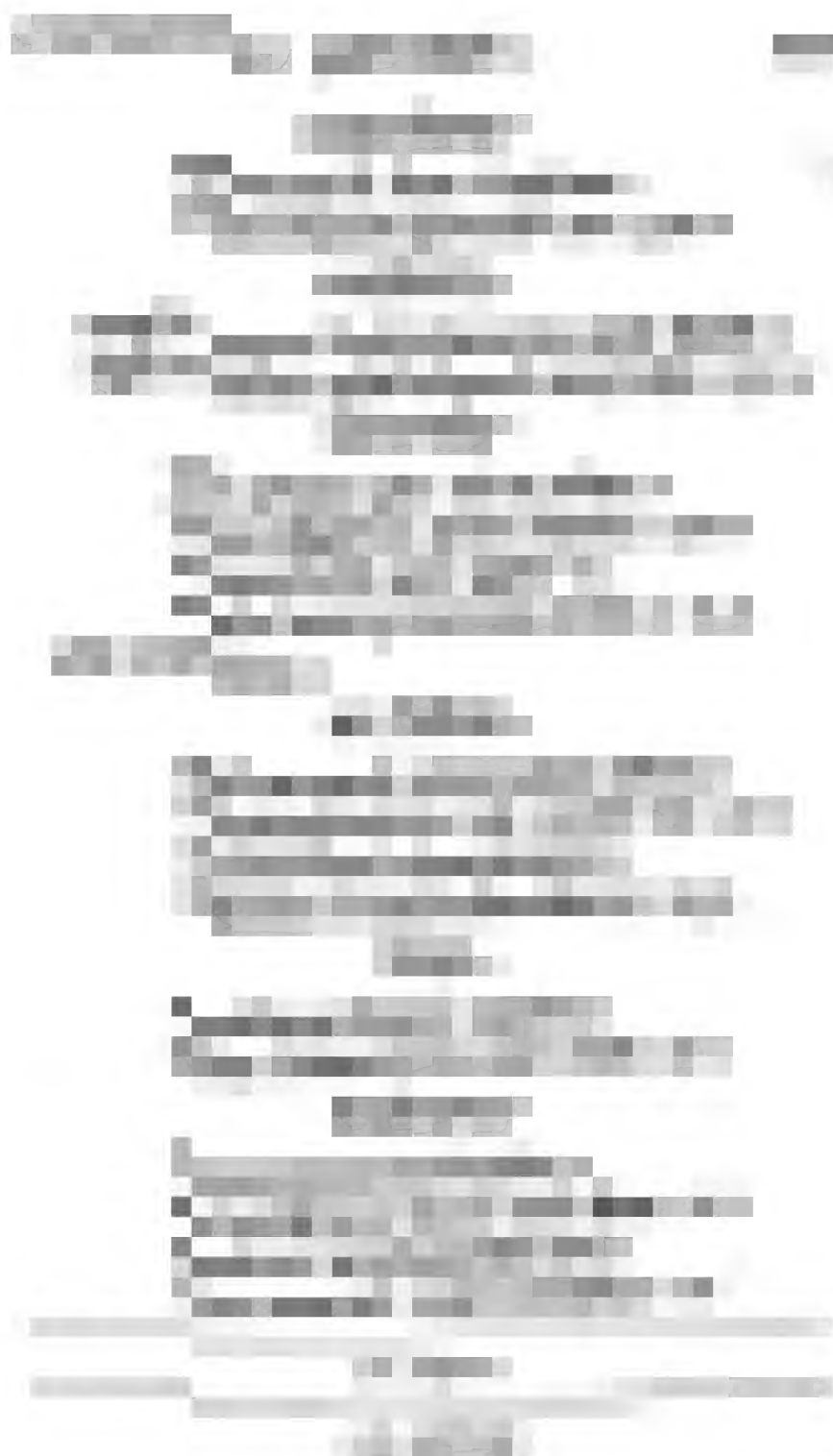
पिटकानामपक्वानामपतर्पणपूर्वकम् ।

कर्म कुर्याद्विरेकान्तं भिन्नानां वक्ष्यते क्रिया ॥ २३ ॥

एषणापादनं क्षारवह्निदाहादिकं क्रमम् ।

विधाय व्रणवत्कार्यं यथादोषं यथाक्रमम् ॥ २४ ॥

* क. जलूकाभिः ।



लेपमाह—

तिलत्रिवृन्नागदन्तीमञ्जिष्ठाज्यैः ससैन्धवैः ।
 सक्षौद्रैश्च प्रलेपोऽयं भगंदरकुलान्तकृतः ॥ ६ ॥
 रसाञ्जनं हरिद्रे द्वे मञ्जिष्ठानिम्बपल्लवाः ।
 त्रिवृत्तेजोवती दन्ती कल्को नाडीवणापहः ॥ ७ ॥
 स्नुह्यर्कदुग्धदार्वाभिर्वर्ति कृत्वा विचक्षणः ।
 भगंदरगतिं ज्ञात्वा दद्याददुष्टविशोधनीम् ॥ ८ ॥
 एषा सर्वशरीरस्थां नाडीं हन्यान्न संशयः ॥ ९ ॥
 तिलामयालोध्रमरिष्टपत्रं निशा वचा कुष्ठमगारधूमः ।
 भगंदरे नाड्युपदंशयोश्च दुष्टव्रणे शोधनरोपणोऽयम् ॥ १० ॥
 खरुधिरसमेतं भूलतायाः शरीरं
 दृषादि सहितमस्त्रा सारमेयस्य पिष्टम् ।
 भवति समुपलेपादाशुभागंदरीणा-
 मयमधिकतराणामापदां नाशहेतुः ॥ २९ ॥
 *सुमनावटपत्राणि गुडूची विश्वमेषजम् ।
 सैन्धवं तक्रसंपिष्टं लेपाद्भवन्ति भगंदरम् ॥ ३० ॥
 निशार्कक्षीरसिन्धूत्थपुराश्वहननच्छदैः ।
 सिद्धमभ्यञ्जने तैलं भगंदरहरं परम् ॥ ३१ ॥
 इति निशादितैलम् ।

अथ सिक्थकघृतम्—

सिक्थकं तथा शङ्खजीरकं शीर्षितैलकं सर्जखादिरौ ।
 गोघृतं व्रणे साधितं त्विदं सिद्धिदं भवेत्क्षतरोगनाशनम् ॥ ३२ ॥
 इति सिक्थकघृतम् ।

अथ बिडालास्थिलेपः—

त्रिफलारससंयुक्तं बिडालास्थि प्रलेपनात् ।
 भगंदरं निहन्त्याशु दुष्टव्रणहरं परम् ॥ ३३ ॥
 इति बिडालास्थिलेपः ।

* क. जातिस्तस्याः पत्रम् ।

1. The first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

2. The second part is a list of the names of the members of the committee.

3. The third part is a list of the names of the members of the committee.

4. The fourth part is a list of the names of the members of the committee.

5. The fifth part is a list of the names of the members of the committee.

6. The sixth part is a list of the names of the members of the committee.

7. The seventh part is a list of the names of the members of the committee.

अथ नवकार्षिको गुग्गुलुः—

त्रिफलापुरकृष्णानां त्रिपञ्चकांशयोजिता गुटिका ।

कुष्ठमगंदरनाडीदुष्टव्रणशोधिनी कथिता ॥ ३४ ॥

इति नवकार्षिको गुग्गुलुः ।

अथ जम्बूकप्रकारः—

जम्बूकस्याऽऽमिषं भुक्त्वा प्रकारैर्व्यञ्जनादिभिः ।

अजीर्णवर्जा मांसेन मुच्यते तु भगंदरात् ॥ ३५ ॥

दुष्टात्पञ्चविधात्कुष्ठादष्टादशविधादपि ।

इति जम्बूकप्रकारः ।

अथ विष्यन्दनं तैलम्—

चित्रकार्को त्रिवृत्पाठे मलयूहयमारकौ ॥ ३६ ॥

स्नुही वचां लाङ्गलीं च हस्तितालं मेनःशिलाम् ।

ज्योतिष्मतीं च संहृत्य तैलं धीरो विपाचयेत् ॥ ३७ ॥

एतद्विष्यन्दनं नाम तैलं दद्याद्भगंदरे ।

दुष्टे पञ्चप्रकारेऽपि दूरनाडीगतेऽपि च ॥ ३८ ॥

शोधनं रोपणं चैव सुवर्णकरणं तथा ।

इति विष्यन्दनं तैलम् ।

अथ करवीराद्यं तैलम्—

करवीरनिशादन्तीलाङ्गलीलवणाग्निभिः ॥ ३९ ॥

मातुलुङ्गार्कवत्साह्वैः पक्वं तैलं भगंदरे ।

इति करवीराद्यं तैलम् ।

अथ रूपराजरसः—

रसेन्द्रभागद्वितयं म्लेच्छक्षारं चतुर्गुणम् ॥ ४० ॥

काकजङ्घारसैर्मर्द्यं खल्वे दिवसपञ्चकम् ।

ताम्रसंपुटके रुद्ध्वा सच्छिद्रे हण्डिकान्तरे ॥ ४१ ॥

निवेश्य बालुकां दत्त्वा देयोऽग्निः प्रहराष्टकम् ।

स्वाङ्गशीतं समुद्धृत्य मधुटङ्कणसंयुतम् ॥ ४२ ॥

Circumstance	Justified (%)	Not justified (%)
Self-defense	85	15
To protect others	75	25
To protect property	65	35
To protect the community	55	45
To protect the environment	55	45

1. **Introduction**
 2. **Methodology**
 3. **Results**
 4. **Discussion**
 5. **Conclusion**
 6. **References**
 7. **Appendix**
 8. **Figure 1**
 9. **Figure 2**
 10. **Figure 3**
 11. **Figure 4**
 12. **Figure 5**
 13. **Figure 6**
 14. **Figure 7**
 15. **Figure 8**
 16. **Figure 9**
 17. **Figure 10**
 18. **Figure 11**
 19. **Figure 12**
 20. **Figure 13**
 21. **Figure 14**
 22. **Figure 15**
 23. **Figure 16**
 24. **Figure 17**
 25. **Figure 18**
 26. **Figure 19**
 27. **Figure 20**
 28. **Figure 21**
 29. **Figure 22**
 30. **Figure 23**
 31. **Figure 24**
 32. **Figure 25**
 33. **Figure 26**
 34. **Figure 27**
 35. **Figure 28**
 36. **Figure 29**
 37. **Figure 30**
 38. **Figure 31**
 39. **Figure 32**
 40. **Figure 33**
 41. **Figure 34**
 42. **Figure 35**
 43. **Figure 36**
 44. **Figure 37**
 45. **Figure 38**
 46. **Figure 39**
 47. **Figure 40**
 48. **Figure 41**
 49. **Figure 42**
 50. **Figure 43**
 51. **Figure 44**
 52. **Figure 45**
 53. **Figure 46**
 54. **Figure 47**
 55. **Figure 48**
 56. **Figure 49**
 57. **Figure 50**
 58. **Figure 51**
 59. **Figure 52**
 60. **Figure 53**
 61. **Figure 54**
 62. **Figure 55**
 63. **Figure 56**
 64. **Figure 57**
 65. **Figure 58**
 66. **Figure 59**
 67. **Figure 60**
 68. **Figure 61**
 69. **Figure 62**
 70. **Figure 63**
 71. **Figure 64**
 72. **Figure 65**
 73. **Figure 66**
 74. **Figure 67**
 75. **Figure 68**
 76. **Figure 69**
 77. **Figure 70**
 78. **Figure 71**
 79. **Figure 72**
 80. **Figure 73**
 81. **Figure 74**
 82. **Figure 75**
 83. **Figure 76**
 84. **Figure 77**
 85. **Figure 78**
 86. **Figure 79**
 87. **Figure 80**
 88. **Figure 81**
 89. **Figure 82**
 90. **Figure 83**
 91. **Figure 84**
 92. **Figure 85**
 93. **Figure 86**
 94. **Figure 87**
 95. **Figure 88**
 96. **Figure 89**
 97. **Figure 90**
 98. **Figure 91**
 99. **Figure 92**
 100. **Figure 93**
 101. **Figure 94**
 102. **Figure 95**
 103. **Figure 96**
 104. **Figure 97**
 105. **Figure 98**
 106. **Figure 99**
 107. **Figure 100**
 108. **Figure 101**
 109. **Figure 102**
 110. **Figure 103**
 111. **Figure 104**
 112. **Figure 105**
 113. **Figure 106**
 114. **Figure 107**
 115. **Figure 108**
 116. **Figure 109**
 117. **Figure 110**
 118. **Figure 111**
 119. **Figure 112**
 120. **Figure 113**
 121. **Figure 114**
 122. **Figure 115**
 123. **Figure 116**
 124. **Figure 117**
 125. **Figure 118**
 126. **Figure 119**
 127. **Figure 120**
 128. **Figure 121**
 129. **Figure 122**
 130. **Figure 123**
 131. **Figure 124**
 132. **Figure 125**
 133. **Figure 126**
 134. **Figure 127**
 135. **Figure 128**
 136. **Figure 129**
 137. **Figure 130**
 138. **Figure 131**
 139. **Figure 132**
 140. **Figure 133**
 141. **Figure 134**
 142. **Figure 135**
 143. **Figure 136**
 144. **Figure 137**
 145. **Figure 138**
 146. **Figure 139**
 147. **Figure 140**
 148. **Figure 141**
 149. **Figure 142**
 150. **Figure 143**
 151. **Figure 144**
 152. **Figure 145**
 153. **Figure 146**
 154. **Figure 147**
 155. **Figure 148**
 156. **Figure 149**
 157. **Figure 150**
 158. **Figure 151**
 159. **Figure 152**
 160. **Figure 153**
 161. **Figure 154**
 162. **Figure 155**
 163. **Figure 156**
 164. **Figure 157**
 165. **Figure 158**
 166. **Figure 159**
 167. **Figure 160**
 168. **Figure 161**
 169. **Figure 162**
 170. **Figure 163**
 171. **Figure 164**
 172. **Figure 165**
 173. **Figure 166**
 174. **Figure 167**
 175. **Figure 168**
 176. **Figure 169**
 177. **Figure 170**
 178. **Figure 171**
 179. **Figure 172**
 180. **Figure 173**
 181. **Figure 174**
 182. **Figure 175**
 183. **Figure 176**
 184. **Figure 177**
 185. **Figure 178**
 186. **Figure 179**
 187. **Figure 180**
 188. **Figure 181**
 189. **Figure 182**
 190. **Figure 183**
 191. **Figure 184**
 192. **Figure 185**
 193. **Figure 186**
 194. **Figure 187**
 195. **Figure 188**
 196. **Figure 189**
 197. **Figure 190**
 198. **Figure 191**
 199. **Figure 192**
 200. **Figure 193**
 201. **Figure 194**
 202. **Figure 195**
 203. **Figure 196**
 204. **Figure 197**
 205. **Figure 198**
 206. **Figure 199**
 207. **Figure 200**
 208. **Figure 201**
 209. **Figure 202**
 210. **Figure 203**
 211. **Figure 204**
 212. **Figure 205**
 213. **Figure 206**
 214. **Figure 207**
 215. **Figure 208**
 216. **Figure 209**
 217. **Figure 210</**

1. The first step is to identify the problem or question that needs to be answered. This involves understanding the context and the specific requirements of the task.

[illegible]

1000

The following table shows the results of the regression analysis for the dependent variable "Attitude towards the environment" (Table 1). The independent variables are "Age", "Gender", "Education", "Income", "Occupation", "Marital status", "Religion", "Political affiliation", "Social media usage", and "Environmental awareness". The table includes the coefficient, standard error, t-statistic, and p-value for each variable.

धमेन्मूषागतं तावद्यावद्भ्रमति तारवत् ।
 रूपराजरसः सोऽयं भगंदरकुलान्तकः ॥ ४३ ॥
 बलमात्रममुं लीढ्वा मधुना सह पथ्यमुक् ।
 त्रिफलायाः पिबेत्कार्थं पश्चात्पथ्यं हितं चरेत् ॥ ४४ ॥
 मुक्तः स्वल्पैरहोभिः स्याद्भगंदरमहागदात् ।

इति रूपराजरसः ।

अथ त्रिनेत्रो रसः—

मागो रसस्य गन्धस्य द्वौ कन्याद्धिर्विमर्दयेत् ॥ ४५ ॥
 कृत्वा गोलं ताम्रपात्रं तावत्तस्योपरि क्षिपेत् ।
 मस्मनाऽऽपूर्य तद्भाण्डं वह्निं कुर्याद्विनं तले ॥ ४६ ॥
 शीतमुद्धृत्य जम्बीरवारा तं सप्तधा पुटेत् ।
 गुञ्जाऽस्य मधुसर्पिभ्यां हन्ति सद्यो भगंदरम् ॥ ४७ ॥
 तालमूलीं सलशुनां पिबेदनु सकाञ्जिकाम् ।

इति त्रिनेत्रो रसः ।

शस्त्रक्रियाऽपि कथिता शस्त्रसाध्ये भगंदरे ॥ ४८ ॥
 सा च तेनैव कर्तव्या शस्त्रशास्त्रविदैव या ।
 व्यायामं मैथुनं युद्धं पृष्ठयानं गुरूणि च ॥
 रूढघ्नोऽपि यत्नेन वर्जयेद्दत्सरं नरः ॥ ४९ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां भगंदरनिदानचिकित्साकथनं नाम

षोडशाधिकशततमस्तरङ्गः ॥ ११६ ॥

अथ सप्तदशाधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथोपदंशनिदानम्—

हस्ताभिघातान्नखदन्तघातादधावनाद्रत्युपसेवनाद्वा ।
 योनिप्रदोषाच्च भवन्ति शिश्वे पञ्चोपदंशा विविधापचारैः ॥ १ ॥

पञ्चप्रकारानाह—

वातेन पित्तेन च शोणितेन कफेन दोषैरखिलैः सरोषैः ।
 पञ्चोपदंशाः कफवातलिङ्गव्रणास्थिमद्गन्धश्चयथुप्रदाः स्युः ॥ २ ॥

वातजमाह—

सतोदभेदस्फुरणैः सकृष्णैः स्फोटैर्व्यवस्येत्पवनोपदंशम् ।

पित्तजमाह—

पीतैर्बहुक्लेदयुतैः सदाहैः पित्तेन रक्तात्पिशितावभासैः ॥ ३ ॥

कफजमाह—

सकण्डुरैः शोथयुतैर्महद्भिः श्लेष्मैर्वणैः स्रावयुतैः कफेन ।

असाध्यत्वमाह—

नानाविधास्रावरुजोपपन्नमसाध्यमाहुस्त्रिमलोपदंशम् ॥ ४ ॥

विशीर्णमांसं कृमिभिः प्रजग्धं मुष्कावशेषं परिवर्जयेत्तु ।

संजातमात्रे न करोति मूढः क्रियां नरो यो विषयेषु सक्तः ।

कालेन शोथक्रिमिदाहपाकैर्विशीर्णशिशो म्रियते स तेन ॥ ५ ॥

लिङ्गाशोरोगमाह—

अङ्कुरैरिव संजातैरुपर्युपरि संस्थितैः ।

क्रमेण जायते वर्तिस्ताम्रचूडशिखोपमा ॥ ६ ॥

कोशस्याभ्यन्तरे संधौ पर्वसंधिगतापि वा ।

अवेदना पिच्छिलाऽपि दुश्चिकित्स्या त्रिदोषजा ॥ ७ ॥

लिङ्गवर्तिरिति ख्याता लिङ्गार्श इति चापरे ।

स्त्रीपुंसयोर्दारुणोपदंशमाह—

मेहसंधौ व्रणाः केचित्केचित्सर्वाश्रयास्तथा ॥ ८ ॥

कुलत्थाकृतयः केचित्केचित्पद्मदलोपमाः ।

रुजादाहार्तिशोथाः स्युस्तृष्णादाहसमन्विताः ।

स्त्रीणां पुंसां च जायन्त उपदंशास्तु दारुणाः ॥ ९ ॥

इत्युपदंशनिदानम् ।

अथोपदंशचिकित्सा—

स्निग्धस्विन्नस्य तेष्वद्वा दौ ध्वजमध्ये शिराव्यधः ।

जलौकापातनं वा स्याद्वृध्वधिशोधनं तथा ॥ १० ॥



सद्योऽपहृतेरक्तस्य रुक्शोफावुपशाम्यतः ।

पाको रक्ष्यः प्रपत्नेन शिश्रक्षयकरो हि सः ॥ ११ ॥

अथोपचारः—

पटोलनिम्बत्रिफलागुडूचीक्राथं पिबेद्वा खदिरासनाभ्याम् ।

सगुग्गुलुं वा त्रिफलायुतं वा सर्वोपदेशापहरः प्रयोगः ॥ १२ ॥

वातजमाह—

सपौण्डरीकं मधुकं रास्नाकुष्ठपुनर्नवाः ।

सरलादारुमद्राख्यैर्लेपो वातोपदेशहः ॥ १३ ॥

पित्तजमाह—

गेरिकाञ्जनमञ्जिष्ठामधुकोशीरपञ्चकैः ।

सचन्दनोत्पलैः स्निग्धैर्लेपः पित्तोपदेशहः ॥ १४ ॥

पित्तास्रजमाह—

निम्बार्जुनाश्वत्थकदम्बशालजम्बूवटोदुम्बरवेतसाद्भिः ।

प्रक्षालनालेपघृतानि कुर्याच्चूर्णं च पित्तास्रमवोपदेशे ॥ १५ ॥

कफजमाह—

शालाजकर्णाश्वकर्णधवत्वग्भिः कफोत्थितम् ।

सुरापिष्टाभिरुष्णाभिः सतैलाभिः प्रलेपयेत् ॥ १६ ॥

प्रक्षालने योगमाह—

त्रिफलायाः कषायेण भृङ्गराजरसेन च ।

व्रणप्रक्षालनं कुर्यादुपदेशप्रशान्तये ॥ १७ ॥

बन्धूलदलचूर्णेन दाडिमत्वग्भवेन वा ।

गुण्डनं त्रस्थिचूर्णेन उपदेशहरं परम् ॥ १८ ॥

दहेत्कटाहे त्रिफलां तां मर्षी मधुसंयुताम् ।

उपदेशे प्रलेपोऽयं सद्यो रोपयति व्रणम् ॥ १९ ॥

जयाजात्यश्वमारार्कशम्याकानां दलैः पृथक् ।

कृतं प्रक्षालने क्राथं मेदूपाके प्रयोजयेत् ॥ २० ॥

बन्धूकदलचूर्णेन रजसा दाडिमत्वचः ।

मुद्रणं तद्व्रणे कुर्याल्लेपं पूगफलेन वा ॥ २१ ॥

10

11

12

13

14

15

16

17

18

19

20

21

22

अथ भूनिम्बादिघृतम्—

भूनिम्बनिम्बत्रिफलापटोलकरञ्जधात्रीखादिरासनानाम् ।
कषायकल्कैः शृतमाज्यमाशु सर्वोपदंशापहरं प्रदिष्टम् ॥ २२ ॥
इति भूनिम्बादिघृतम् ।

अथ करञ्जाद्यं घृतम्—

करञ्जनिम्बार्जुनशालजम्बूवटादिभिः कल्ककषायसिद्धम् ।
सर्पिर्निहन्यादुपदंशदोषं सदाहपाकं सुतिरागयुक्तम् ॥ २३ ॥
इति करञ्जाद्यं घृतम्

अथाऽऽगारधूमाद्यं तैलम्—

आगारधूमो रजनी सुराकिण्वं च तैस्त्रिभिः ।
मागोत्तरैः पचेत्तैलं कण्डूशोथरुजापहम् ॥ २४ ॥
शोधनं रोपणं चैव सुवर्णकरणं तथा ।
इत्यागारधूमाद्यं तैलम् ।

अथ पारदाद्यं सर्पिः—

पारदं गन्धकं तालं सिन्दूरं च मनःशिलाम् ॥ २५ ॥
ताम्रपात्रे तु सघृते ताम्रेणैव विमर्दयेत् ।
घर्मे दिनैकं मृदितमेतत्कण्डूपदंशजित् ॥ २६ ॥
इति पारदाद्यं सर्पिः ।

अथोपदंशगजकेसरी रसः—

लवङ्गं पारदं शुद्धं मरिचं करहाटकम् ।
जन्तुघ्नं मस्तकीं चैव प्रत्येकं कर्षसंमितम् ॥ २७ ॥
चतुष्कर्षं जवानीं च गुडं तद्वद्विनिक्षिपेत् ।
भल्लातकानां च शुभां विंशतिं द्विगुणां बुधः ॥ २८ ॥
चूर्णयित्वा तु तत्सर्वं गुटिकां कारयेद्भिषक् ।
कर्षमात्रां ततः खादैदेकां प्रातर्हि मानवः ॥ २९ ॥
ताम्बूलं भक्षयेत्पश्चात्पथ्यं दुग्धौदनं हितम् ।
सप्ताहान्मुच्यते जन्तुः फिरङ्गाख्योपदंशतः ॥ ३० ॥
संधिशोफास्थिशोफास्थिशूलसंधिरुजोऽपि च ।
उपदंशेमसिंहाख्यो रसोऽसौ शंभुनेरितः ॥ ३१ ॥

सोपदंशनृणां चैव कुठिनां च सुखाय वै ।
इत्युपदंशगजकेसरी रसः ।

अथोपदंशभकेसरी—

रस आकारकरमो लवंगं मरिचं तथा ॥ ३२ ॥
विडङ्गं मस्तकी चैव प्रत्येकं त्रिलवं मतम् ।
अरुण्कराणां दातव्या द्विगुणा त्वेकविंशतिः ॥ ३३ ॥
दीप्यस्य द्वादश लवा गुडस्यापि तथा मताः ।
युक्त्या संमेल्य गुटिकां खादेत्कर्षद्वयोन्मिताम् ॥ ३४ ॥
पथ्यं दुग्धौदनं रम्यं ताम्बूलं परिषेवयेत् ।
घसाणामेकविंशत्या मुच्यते तूपदंशतः ॥ ३५ ॥

इत्युपदंशभकेसरी ।

अथोपदंशान्धसूर्यः—

शङ्खोपलं कोलमितं पलत्रिकं क्षुद्रारसं निम्बुरसं तथैव ।
लौहे कटाहे विनिधाय सर्वं संघृण्य सत्वक्षिपचुमन्दजेन ॥ ३७ ॥
वण्डेन यावद्धि घनी भवेच्च सिद्धो भवेन्मुद्गनिभां च मात्राम् ।
दद्यात्किरङ्गामयके भिषग्भिः स्वेच्छं विधेयं किल पथ्यमस्य ।
तैलाम्लवर्ज्यं निखिलवणघ्नं घृतानुपानैरुपदंशसूर्यः ॥ ३७ ॥
इत्युपदंशान्धसूर्यः ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यामुपदंशनिदानचिकित्साकथनं नाम
सप्तदशाधिकशततमस्तरङ्गः ॥ ११७ ॥

अथोपदंशान्धसूर्यः ।

अथ रतिदोषसूतसेवननिदानम्—

वेश्यारतिर्महत्पापं नानावीर्यं पतन्ति च(?) ।
नानाधातु पृथग्भेदं बहुरतिसमाश्रितम् ॥ १ ॥
तत्कथं योनिलिङ्गं च रतिव्रणसमुद्भवम् ।
केशमुत्पाद्य पक्ष्म द्वे भ्रुवोर्द्वे केशनाशनम् ॥ २ ॥
सूतस्य सेवनान्नित्यं सूतदोषसमाश्रयात् ।
विदाहश्चाङ्गदाहश्च लिङ्गदाहः शिरोभ्रमः ॥ ३ ॥
इति रतिदोषनिदानम् ।

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

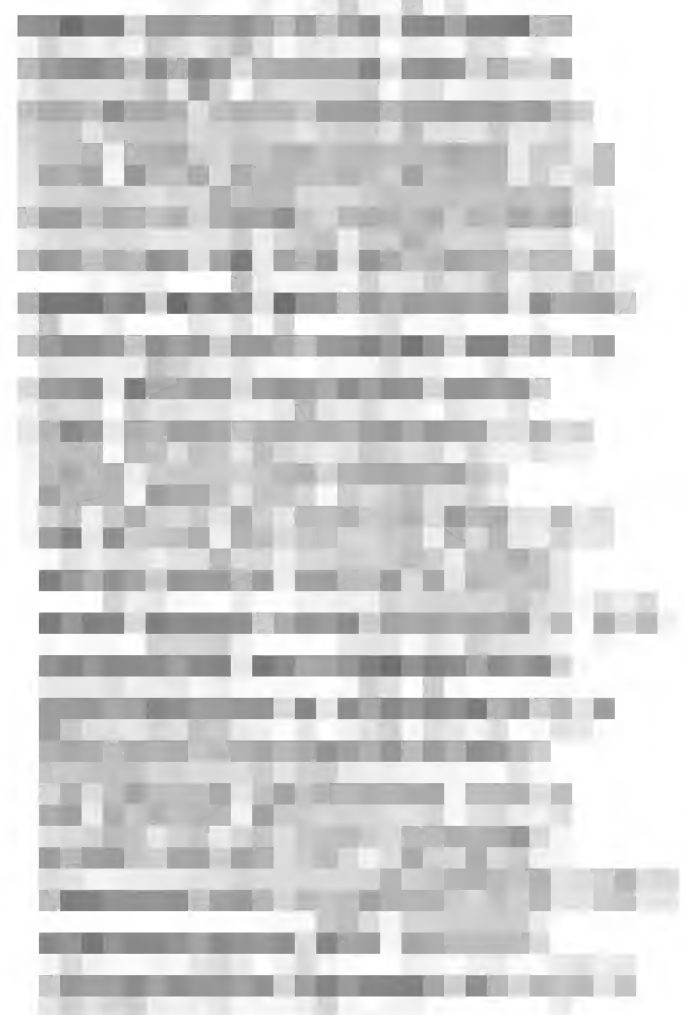
8. The eighth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

अथ चिकित्सा—

कतकस्य दलोद्भूतं जले तैलं तिलोद्भवम् ।
रतिव्रणं हरेच्छ्रेष्ठं पानमात्रान्न संशयः ॥ ४ ॥
तथा निम्बस्य पत्राणां चर्वणाद्व्रणनाशनम् ।
गन्धकं शोधितं सम्यक्त्रिफलापुरसंयुतम् ॥ ५ ॥
मध्वाज्याभ्यां लिहेन्नित्यं त्वग्दोषव्रणनाशनम् ।
पारदं गन्धकं वङ्गं प्रत्येकं युग्मनिष्ककम् ॥ ६ ॥
क्षुश्लक्षणां कज्जलीं कृत्वा द्रव्याणीमानि दापयेत् ।
पोस्तकं तुलसी दीप्यं नागवल्लीदलं तथा ॥ ७ ॥
प्रत्येकं सप्तनिष्कं स्याद्वटकान्सप्त कारयेत् ।
एकैकं सप्तदिवसं धूमयोगाद्विनाशयेत् ॥ ८ ॥
रतिव्रणं शुक्रगतं मर्मगं चातिदुस्तरम् ।
तक्रं दधि घृतं चैव भोजयेत्परमं हितम् ॥ ९ ॥
रसं वङ्गं मेलयित्वा श्लक्ष्णचूर्णं तु कारयेत् ।
गन्धकं बोलतुथं च लाक्षा चामृतमस्तकी ॥ १० ॥
अपामार्गोत्थितं भस्म अहिफेनसमन्वितम् ।
तुलसीरससंघृष्टमथ वा चाहिवल्लिजम् ॥ ११ ॥
निष्कमात्रेण वटकान्धूमयोगेन योजयेत् ।
सर्वं रतिव्रणहरं पूर्ववत्पथ्ययोगतः ॥ १२ ॥
मस्तकीं दरदं तुथं रजनीं च पृथक्पृथक् ।
निष्कप्रमाणं समर्थं नागवल्लीदलान्वितान् ॥ १३ ॥
वटकान्सप्त कृत्वाऽथ दिनैकं धूमयोगतः ।
क्षीरान्नपथ्ययोगेन लिङ्गव्रणहराः पराः ॥ १४ ॥

अथ रसकर्पूरः—

नवभागो भवेत्सूतः फटकी दशभागिका ।
पटोरेकादशं प्रोक्तं खट्वाश्च द्वादशं क्रमात् ॥ १५ ॥
सिन्धोस्त्रयोदशं भागं जम्बीराम्लेन मर्दयेत् ।
पातनायन्त्रयोगेन यामकं तु चतुष्टयम् ॥ १६ ॥
गुञ्जामात्रं तु दातव्यं लवणाम्लविवर्जितम् ।
सर्ववातोद्भवात्रोगान्त्रणयोगान्नशेषतः ॥ १७ ॥



निहन्ति सप्तरात्रेण योगोऽयममृतोपमः ।

अथ तालकभस्म—

तालकं मर्दयेत्सम्यक्कृताम्बुलीपर्णवारिणा ॥ १८ ॥

त्रिदिनं मस्तुनाऽऽमर्द्य दिनैकं पयसा रवेः ।

तद्गोलं माण्डमध्यस्थं किंशुकक्षारसंयुतम् ॥ १९ ॥

त्रिदिनं पाचयेत्सम्यङ् मन्दमध्यहठाग्निना ।

तालमस्म समाकृष्य तण्डुलद्वयमात्रकम् ॥ २० ॥

आकलं जातिपत्रं च लवङ्गं जातिकाफलम् ।

संयोज्य सर्पिषा जग्ध्वा सर्ववातकुलान्तकः ॥ २१ ॥

वातरक्तं तथा कुष्ठं ग्रहणीं च भगंदरम् ।

सर्वव्रणान्निहन्त्याशु नाम्ना तालेश्वरो रसः ॥ २२ ॥

इति रसरत्नाकरात् ।

अथान्यो रसकर्पूरः—

सैन्धवं च तवसारटङ्कणं कर्षमात्रफटकेन योजितम् ।

शुद्धपारदपलैकमात्रकं चित्रमूलरसमर्दितं दिनम् ॥ २३ ॥

काचकूप्यरसपूर्य(?) बुद्धिमाल्लोणवालुकसयन्त्रमध्यगम् ।

पाचयेत्पचति वासरार्धकं पूर्णचन्द्रसदृशं तु कर्पूरम् ॥ २४ ॥

बलमात्रमपि मक्ष्य(?) रोगिणां शूलवातगजमुग्धकेसरी ।

सर्वरोगहितयोगमुत्तमं तैलमम्लपटुजान्विवर्जयेत् ॥

स्नेहयुक्तघृतभोज्यभेषजं पुत्रमित्रगुरुणा सुगोपितम् ॥ २५ ॥

गन्धकं नवनीतेन वर्तिना घृतमाहरेत् ।

तद्घृतं सेवयेन्नित्यं सूतदोषेषु पूजितम् ॥ २६ ॥

सूतदाहे तालदाहे कूष्माण्डरससेवनम् ।

तथा कुमारीं रम्भाया योजयेत्सूतदोषनुत् ॥ २७ ॥

तथा त्रिम्बस्य तैलेन पानलेपनयोगतः ।

अथ गन्धकरसायनम्—

गन्धं पलशतं ग्राह्यं सूक्ष्मचूर्णं च कारयेत् ॥ २८ ॥

माण्डगर्भे क्षीरपूर्णं तन्मुखे वल्लबन्धनम् ।

गन्धं तस्योपरि क्षिप्त्वा ततो माण्डमधोमुखम् ॥ २९ ॥

1. Introduction

2. Background

3. Methodology

4. Results

5. Discussion

6. Conclusion

7. References

8. Appendix

9. Index

तत्संधिवन्धनं कृत्वा तदूर्ध्वं वह्निदीपनम् ।
यामार्धं पुटसंयुक्तं स्वाङ्गशीतलमाहरेत् ॥ ३० ॥
तद्गन्धं चूर्णितं कृत्वा अजाक्षीरेण भावयेत् ।
इक्षुदण्डरसश्चैव अमृता मधु गोक्षुरम् ॥ ३१ ॥
वाराही मधुकं कुष्ठं मृङ्गराजं हरिप्रिया ।
एकैकस्वरसेनैव भावयेद्दशवासरम् ॥ ३२ ॥
घर्मयेद्भावयेन्नित्यममृतीकरणं यथा ।
पिप्पलीं पिप्पलीमूलं लवङ्गं नागकेशरम् ॥ ३३ ॥
त्रिफलां पद्मकं बीजं समांशं च विनिक्षिपेत् ।
शर्करामधुसंयुक्तं माषमात्रं च सेवयेत् ॥ ३४ ॥
शाल्यञ्च च सगोधूमं घृतं क्षीरं सशर्करम् ।
सेवयेन्नित्यं कृष्णां च वलीपलितनाशनम् ॥ ३५ ॥
जरां तु नाशयेत्पुंसां षण्ढत्वं वह्निमान्द्यताम् ।
कुष्ठानां च दशाष्टानां वाताशीतिनिवारणम् ॥ ३६ ॥
विंशतिं च प्रमेहाणां मूत्रकृच्छ्राणि षोडश ।
मणराजं गण्डमालां गुदकीलं भगंदरम् ॥ ३७ ॥
गुल्मप्लीहविकारघ्नं रजोदोषं हलीमकम् ।
स्तम्भनं वृष्यमायुष्यं सर्वामयनिवारणम् ॥ ३८ ॥
शुक्रमेहादिदोषाणां नाशनं परमं मतम् ।
वेहं सुवर्णवर्णाभं दिव्यत्वं च न संशयः ।
सर्वभूतहितं गोप्यं गन्धकाख्यं रसायनम् ॥ ३९ ॥

इति गन्धकरसायनम् ।

अथान्यद्वन्धकरसायनम्—

शुद्धो बलिर्गोपयसा विभाव्यस्ततश्चतुर्जातगुडचिकान्धिः ।
पथ्याक्षधात्र्यौषधमृङ्गराजैर्भाव्योऽष्टवारं पृथगार्द्रकेण ॥ ४० ॥
सिद्धे सितां योजय तुल्यमागां रसायनं गन्धकपूर्वकं स्यात् ।
माषद्वयं सेवितमाशु कुर्याद्वीर्यस्य वृद्धिं दृढदेहवह्निम् ॥ ४१ ॥
कण्डूं सपामां रसदोषमुग्रं कुष्ठप्रमेहानुपदंशरोगान् ।
घातं विषूचीं ग्रहणीमजीर्णं रोगानुपानेन विनाशनं स्यात् ॥ ४२ ॥
समस्तगदभञ्जनं मृगदृशां मनोरञ्जनं
सहेमरससंयुतं भजति यो नरो वत्सरम् ।

न तस्य यमराड्मयं भवति वत्सराणां शतं
 बलं भवति कामिनीप्रबलदर्पविद्रावणम् ॥ ४३ ॥
 एतद्रसायनवरं खलु गन्धकारुण्यं
 संसेवितं सुविधिना मनुजेन नित्यम् ॥ ४४ ॥

इति गन्धकरसायनम् ।

अथ सिन्दूररसः—

चतुष्पलं तु गन्धस्य पारदं च चतुष्पलम् ।
 पलैकं हरितालं च तालकार्धं मनःशिला ॥ ४५ ॥
 तालार्धं टङ्कणं शुद्धं नवसारं तदर्धकम् ।
 सर्वं निक्षिप्य खल्वे च मर्दयेत्कज्जलीकृतम् ॥ ४६ ॥
 शाकवृक्षस्य पत्राणां रक्तवर्णं द्रवं हरेत् ।
 तद्वैर्मर्दयेत्सम्यक्काचकूप्यां विनिक्षिपेत् ॥ ४७ ॥
 खटिकया मुखमाच्छाद्य वज्रमृत्तिकया तथा ।
 कूपिकां लेपयेत्सप्त शोषयेदातपे खरे ॥ ४८ ॥
 बालुकायन्त्रमध्ये तु कूपिकां तां विनिक्षिपेत् ।
 चुल्लिकायां विनिक्षिप्य वह्निं प्रज्वालयेत्ततः ॥ ४९ ॥
 यामं षोडशमात्रं तु दीप्तमध्यखराग्निना ।
 स्वाङ्गशीतलमादाय खल्वमध्ये विनिक्षिपेत् ॥ ५० ॥
 तत्सिन्दूरसमं द्रव्यं षोडशांशं विनिक्षिपेत् ।
 मर्दयेत्पूर्ववद्द्रव्यं काचकूप्यां विनिक्षिपेत् ॥ ५१ ॥
 एवं सप्तविधं कृत्वा क्षिप्त्वा कूप्यां विपाचयेत् ।
 स्वाङ्गशीतलमादाय उदयार्कसमो रसः ॥ ५२ ॥
 सिन्दूरं सूक्ष्मलं चूर्णं नागदन्तकरण्डके ।
 तत्सिन्दूरं निषेवेत गुञ्जामात्रप्रमाणतः ॥ ५३ ॥
 शर्करामधुपिप्पल्या प्रातरुत्थाय सेवयेत् ।
 क्षयानेकादश हन्ति संनिपातांश्चयोदश ॥ ५४ ॥
 आमवातं च शूलं च नाशयेन्नात्र संशयः ।
 पाण्डुं पञ्चविधं चैव कामलात्रयनाशनम् ॥ ५५ ॥
 महोदरानष्टपञ्च भुलमानामपि पञ्च च ।
 अरोचकं पञ्चकासं पञ्चश्वासं जडं हरेत् ॥ ५६ ॥

1. Introduction

The purpose of this study is to investigate the effects of the proposed system on the performance of the participants. The study was conducted in a laboratory setting with a sample of 20 participants.

2. Method

2.1 Participants

The participants were recruited from a local university and were assigned to two groups: the control group and the experimental group. The control group consisted of 10 participants who used the standard system, while the experimental group consisted of 10 participants who used the proposed system. The participants were trained for one week before the experiment. The experiment was conducted in a laboratory setting with a sample of 20 participants. The participants were assigned to two groups: the control group and the experimental group. The control group consisted of 10 participants who used the standard system, while the experimental group consisted of 10 participants who used the proposed system. The participants were trained for one week before the experiment.

The experiment was conducted in a laboratory setting with a sample of 20 participants. The participants were assigned to two groups: the control group and the experimental group. The control group consisted of 10 participants who used the standard system, while the experimental group consisted of 10 participants who used the proposed system. The participants were trained for one week before the experiment. The experiment was conducted in a laboratory setting with a sample of 20 participants. The participants were assigned to two groups: the control group and the experimental group. The control group consisted of 10 participants who used the standard system, while the experimental group consisted of 10 participants who used the proposed system. The participants were trained for one week before the experiment.

स्थिरायुः कार्यसिद्धिश्च मेध्यं चाऽऽशु शुभप्रदम् ।

अनुपानविशेषेण सर्वरोगनिवारणम् ॥ ५७ ॥

इति धन्वन्तरिप्रोक्तं सिन्दूरं लोकपूजितम् ।

इति सिन्दूररसः ।

अथ वीरविक्रमो रसः—

पारदं च पलान्वष्टौ गन्धकं तालकं शिला ॥ ५८ ॥

त्रितयं पारदं साम्यं मर्दितं सूक्ष्मचूर्णितम् ।

काचकूप्यां च पूर्णेन वालुकायन्त्रपाचितम् ॥ ५९ ॥

त्रिदिनं तमहोरात्रं पाकशुद्धं विचक्षणः ।

स्वाङ्गशीतलमादाय एकवारं सुपूजयेत् ॥ ६० ॥

गुञ्जामात्रं प्रयोक्तव्यं शर्कराव्योषजीरकम् ।

लवङ्गं धान्यकं चाऽऽर्द्रं निर्गुण्डी ग्रन्थिकं वरा ॥ ६१ ॥

तथा पत्रं नागवल्लीगुडूचीमाक्षिकं गुडम् ।

अनुपानं सदा सेवेद्विषमं सांनिपातिकम् ॥ ६२ ॥

रतिदोषं महाशीतं व्रणं नानाविधं हरेत् ।

वीरविक्रमनामाऽयं काश्यपेन हि भाषितः ॥ ६३ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां रतिदोषसूतसेवनदोषनिदानचिकित्साकथनं

नामाष्टाधिकशततमस्तरङ्गः ॥ ११८ ॥

अथैकोनविंशत्यधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ शुक्रदोषनिदानम्—

अक्रमाच्छेफसो वृद्धिं योऽभिवाञ्छति मूढधीः ।

व्याधयस्तस्य जायन्ते दश चाष्टौ च शूकजाः ॥ १ ॥

सार्षपिकामाह—

गौरसर्षपसंस्थाना शूकदुर्मग्नहेतुका ।

पिटका श्लेष्मवाताभ्यां ज्ञेया सार्षपिका तु सा ॥ २ ॥

अलजीमाह—

कठिना विषमैरन्तर्वायुनाऽष्ठीलिका भवेत् ।

शूकैस्तु विषमैर्मुग्नैः पिटकाऽष्ठीलिका भवेत् ॥ ३ ॥

शूकैर्यत्पूरितं शश्वद्धृथितं नाम तत्कफात् ।
कुम्भिका रक्तपित्तोत्था जाम्बवास्थिनिर्भाऽसृजा ॥ ४ ॥
तुल्यजां त्वलजीं विद्याद्यथा प्रोक्ता विचक्षणैः ।

पुष्करिकामाह—

मृदितं पीडितं यक्षु संनद्धं वातकोपतः ॥ ५ ॥
पाणिभ्यां भृशसंमूढे संमूढा पिटका मवेत् ।
दीर्घा बह्व्यश्च पिटका दीर्यन्ते मध्यतस्तु याः ॥ ६ ॥
सोऽवमन्थः कफासृग्भ्यां वेदनारोमहर्षकृत् ।
पिटकाभिश्चिता या च पित्तशोणितसंभवा ॥ ७ ॥
पद्मकर्णिकसंस्थाना ज्ञेया पुष्करिका तु सा ।

शतपोनकमाह—

स्पर्शहानिं तु जनयेच्छोणितं शूकदूषितम् ॥ ८ ॥
मुद्गमाषोपमा रक्ता रक्तपित्तोद्भवा च या ।
व्याधिरेषोत्तमा नाम शूकाजीर्णनिमित्तजा ॥ ९ ॥
छिद्रैरण्मुखैर्लिङ्गं चितं यस्य समन्ततः ।
वातशोणितजो व्याधिः स ज्ञेयः शतपोनकः ॥ १० ॥

शोणितार्बुदमाह—

वातपित्तकृतो ज्ञेयस्त्वक्पाको ज्वरदाहवान् ।
कृष्णैः स्फोटैः सरक्ताभिः पिटकाभिर्निपीडितम् ॥ ११ ॥
यस्य बास्तिरुजश्चोग्रा ज्ञेयं तच्छोणितार्बुदम् ।

मांसपाकमाह—

मांसदोषेण जानीयादर्बुदं मांससंभवम् ॥ १२ ॥
शीर्यन्ते यस्य मांसानि यस्य सर्वाश्च वेदनाः ।
विद्यात्तं मांसपाकं तु सर्वदोषकृतं भिषक् ॥ १३ ॥

तिलकालकानाह—

विद्वधिं संनिपातेन यथोक्तमभिनिर्दिशेत् ।
कृष्णानि चित्राण्यथ वा शूकानि सविषाणि च ॥ १४ ॥
यानि तानि पचन्त्याशु मेढ्रं निरवशेषतः ।

— [REDACTED] —

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

— [REDACTED] —

कालानि भूत्वा मांसानि शीर्यन्ते यस्य देहिनः ॥ १५ ॥

संनिपातसमुत्थांश्च तान्विद्यात्तिलकालकान् ।

असाध्यत्वमाह—

तत्र मांसारुदं यच्च मांसपाकश्च यः स्मृतः ॥ १६ ॥

विद्राधिश्च न सिध्येत ये च स्थुस्तिलकालकाः ।

इति शूकदोषनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

हितं च सर्पिषः पामं पथ्यं चापि विरेचनम् ॥ १७ ॥

हितः शोणितमोक्षश्च शूकरोगेषु देहिनाम् ।

अन्यः—

शूकदोषेषु सर्वेषु विषघ्नीं कारयेत्क्रियाम् ॥ १८ ॥

जलौकाभिर्हरेद्रक्तं रेचयेत्तु भोजयेत् ।

गुग्गुलुं पाययेच्चापि त्रिफलाक्राथसंयुतम् ॥ १९ ॥

क्षीरेण लेपसेकांश्च शीतानेव हि कारयेत् ।

उल्लिख्य सार्षपीं तालपत्रेणाथ प्रलेपयेत् ॥ २० ॥

तिन्दुकत्रिफलालोघ्रैर्मूत्रपरिपेषितैः ।

क्रियेयमवमन्थेऽपि रक्तं शौध्यं तथोभयोः ॥ २१ ॥

अष्ठीलायां हृते रक्ते श्लेष्मग्रन्थिक्रियां चरेत् ।

कुम्भिकायां हरेद्रक्तं पक्वायां शोधिते व्रणे ॥ २२ ॥

तिन्दुकत्रिफलालोघ्रैर्लेपस्तैलं च रोपणम् ।

अलज्यां हृतरक्तायां पूर्व एव क्रियाक्रमः ॥ २३ ॥

स्वेदयेद्ब्रूथितं शश्वन्नाडीस्वेदेन बुद्धिमान् ।

सुखोष्णैरुपनाहैश्च व्रणोक्तैरुपनाहयेत् ॥ २४ ॥

उत्तमाख्यां तु पिटकां संस्वेद्य बडिशोद्धृताम् ।

कल्कचूर्णैः कषायाणां क्षौद्रयुक्तैरुपाचरेत् ॥ २५ ॥

क्रमः पित्तविसर्पोक्तः पुष्करीमूढयोर्हितः ।

त्वक्पाके स्पर्शहानौ च सेवयेन्मृदितं पुनः ॥ २६ ॥

बलातैलेन कोष्णेन मधुरैश्चापनाहयेत् ।

रसक्रिया विधातव्योल्लिखिते शतपोनके ॥ २७ ॥

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and activities. It emphasizes that proper record-keeping is essential for transparency and accountability, particularly in financial matters. The text outlines various methods for organizing and storing data, including digital databases and physical filing systems. It also mentions the need for regular audits and reviews to ensure the integrity of the information.

2. The second part of the document focuses on the role of technology in modern record management. It highlights how digital tools can streamline processes, reduce errors, and improve accessibility. Specific examples are provided, such as the use of cloud storage for secure data backup and the implementation of automated backup schedules. The text also addresses potential security risks associated with digital storage and offers recommendations for mitigating these risks through strong password policies and access controls.

3. The third part of the document discusses the legal and regulatory requirements for record-keeping. It references relevant laws and regulations that govern the retention and disposal of records. The text explains the importance of understanding these requirements to avoid legal penalties and ensure compliance. It also provides guidance on how to develop a record retention policy that aligns with organizational needs and legal obligations.

4. The fourth part of the document addresses the challenges of managing large volumes of data. It discusses the importance of data quality and the need for regular data cleaning and deduplication. The text also touches on the issue of data privacy and the importance of implementing measures to protect sensitive information. Finally, it concludes by emphasizing the ongoing nature of record management and the need for continuous improvement and adaptation to changing circumstances.

पृथक्पण्यदिभिः सिद्धं तैलं देयमनन्तरम् ।
 रक्तविद्रधिवत्सर्वा क्रिया शोणितजेऽर्बुदे ॥ २८ ॥
 मांसार्बुदे प्रकुर्वीत क्रियां सद्योव्रणोदिताम् ।
 त्रिफलागुग्गुलुं चापि विशेषेणावचारयेत् ॥ २९ ॥
 मांसपाके वटाद्यस्य गणस्य विधिवत्कृतैः ।
 कषायचूर्णकलकैश्च सेकोद्धूलनलेपनम् ॥ ३० ॥
 विद्रधौ विधिवत्कार्यं रक्तविद्रधिभेषजम् ।
 वरणादिकषायस्य पानप्रक्षालने हिते ॥ ३१ ॥
 तिलकालं समुल्लिख्य क्षुरेण लघुपाणिना ।
 भिषजा चाथ कर्तव्या सद्योव्रणविधीरिता ॥ ३३ ॥
 मांसार्बुदं मांसपाकं विद्रधिं तिलकालकम् ।
 प्रत्याख्याय प्रकुर्वीत भिषक्तेषां प्रतिक्रियाम् ॥ ३३ ॥
 दार्वा*सुरसयष्ट्याह्वैर्गृहधूमनिशायुतैः ।
 संपक्वं तैलमभ्यङ्गान्मेढ्ररोगं विनाशयेत् ॥ ३४ ॥

अथ रसाञ्जनलेपः-

रसाञ्जनं साह्वयमेकमेव प्रलेपमात्रेण नयेत्प्रशान्तिम् ।
 सपूतिपूयव्रणशोथकण्डूशूलान्वितं सर्वमनङ्गरोगम् ॥ ३५ ॥
 साह्वयमित्यनङ्गरोगस्य विशेषणम् ।

इति रसाञ्जनलेपः ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां शूकदोषनिदानचिकित्साकथनं नामैकोनविंशत्य-
 धिकशततमस्तरङ्गः ॥ ११९ ॥

अथ विशत्यधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथकुष्ठनिदानम्-

विरोधीन्यन्नपानानि द्रवस्निग्धगुरूणि च ।
 भजतामागतां छर्दिं वेगांश्चान्यान्प्रनिघ्नताम् ॥ १ ॥
 व्यायाममतिसंतापमतिभुक्त्वा निषेविणाम् ।
 अजीर्णाध्यशिनां चैव पञ्चकर्मापचारिणाम् ॥ २ ॥



शीतोष्णं लघुमाहारं कर्म त्यक्त्वा निषेविणाम् ।
 घर्मश्रमभयार्तानां द्रुतं शीताम्बुसेविनाम् ॥ ३ ॥
 नवान्नदधिमत्स्यातिलवणाम्लनिषेविणाम् ।
 माषमूलकपिष्टान्नतिलक्षीरगुडाशिनाम् ॥ ४ ॥
 व्यवायं चाप्यजीर्णेऽन्ने निद्रां च भजतां दिवा ।
 विप्रान्गुरुन्धर्षयतां पाप्म कर्म च कुर्वताम् ॥ ५ ॥
 पाप्मभिः कर्मभिः सद्यः प्राक्तनैश्चेरिता मलाः ।
 वातादयस्त्रयो दोषास्त्वग्रक्तं मांसमम्बु च ॥ ६ ॥
 दूषयन्ति स कुष्ठानां सप्तको द्रव्यसंग्रहः ।
 त्वचः कुर्वन्ति वैवर्ण्यं दुष्टाः कुष्ठमुशन्ति तत् ॥ ७ ॥
 अतः कुष्ठानि जायन्ते सप्त चैकादशैव तु ।
 कुष्ठानि सप्तधा दोषैः पृथग्द्वन्द्वैः समागतैः ॥ ८ ॥
 सर्वेष्वपि त्रिदोषेषु व्यपदेशोऽधिकत्वतः ।
 अतिश्लक्ष्णखरस्पर्शः स्वेदास्वेदौ विवर्णता ॥ ९ ॥
 बाहः कण्डूस्त्वचि स्वापस्तोदः कोष्ठोन्नतिः श्रमः ।
 घणानामधिकं शूलं शीघ्रोत्पत्तिः स्थिरा स्थितिः ॥ १० ॥
 रुढानामतिरूक्षत्वं निमित्तेऽल्पेऽपि कोपनम् ।
 रोमहर्षोऽमृजः काष्ण्यं कुष्ठलक्षणमग्रजम् ॥ ११ ॥

विषमकुष्ठमाह—

कृष्णारुणं कपालाभं यद्रूक्षं परुषं तनु ।
 कपालं तोदबहुलं तत्कुष्ठं विषमं स्मृतम् ॥ १२ ॥

औदुम्बरं कुष्ठमाह—

रुग्दाहरागकण्डूभिः परीतं रोमपिञ्जरम् ।
 उदुम्बरफलाभासं कुष्ठमौदुम्बरं वदेत् ॥ १३ ॥

मण्डलाख्यं कुष्ठमाह—

श्वेतं रक्तं स्थिरं स्त्यानं स्निग्धमुत्सन्नमण्डलम् ।
 कृच्छ्रमन्योन्यसंयुक्तं कुष्ठं मण्डलमुच्यते ॥ १४ ॥

कक्षजिह्वाख्यं कुष्ठमाह—

कर्कशं रक्तपर्यन्तमन्तःश्यावं सवेदनम् ।
 यद्वक्षजिह्वासंस्थानमूक्षजिह्वं तदुच्यते ॥ १५ ॥

The first part of the paper discusses the importance of the research and the objectives of the study. It then presents a literature review of the existing research on the topic. The second part of the paper describes the methodology used in the study, including the data collection and analysis techniques. The third part of the paper presents the results of the study, and the fourth part discusses the conclusions and implications of the findings.

पुण्डरीककुष्ठमाह—

श्वेतं सरक्तपर्यन्तं पुण्डरीकदलोपमम् ।
रक्तान्तं दाहकण्डूवाढ्यं चितं पद्ममिवांशुभिः ॥ १६ ॥
सोत्सेधं च सरागं च पुण्डरीकं प्रचक्षते ।

काकणं कुष्ठमाह—

श्वेतं ताम्रं च तद्रूपं रजोघृष्टं विमुञ्चति ॥ १७ ॥
प्रायश्चोरासि तत्सिध्ममलाबुकुसुमोपमम् ।
पूर्वं रक्तं च कृष्णं च काकणन्तीफलोपमम् ॥ १८ ॥
सदाहमस्पर्शसहं सपाकं तीव्रवेदनम् ।
त्रिदोषलिङ्गं तत्कुष्ठं काकणं नैव सिध्यति ॥ १९ ॥

चर्मरूपं कुष्ठमाह—

अस्वेदनं महावस्तु यन्मत्स्यशकलौपमम् ।
तदेव कुष्ठं चर्मरूपं बहलं हस्तिचर्मवत् ॥ २० ॥

किटिभं कुष्ठमाह—

श्यावं किणखरस्पर्शं परुषं किटिभं मतम् ।

अलसककुष्ठमाह—

वैपादिकं पाणिपादस्फुटनं तीव्रवेदनम् ॥ २१ ॥
रक्तैरलसकं कुष्ठं गण्डैः कण्डूयनैश्चितम् ।

चर्मदलारूपं कुष्ठमाह—

सकण्डूरागपिटकाददूमण्डलमुद्गतम् ॥ २२ ॥
रक्तं सशोथं कण्डूमत्सस्फोटं दलयत्यपि ।
तच्चर्मदलमाख्यातमस्पर्शसहमुच्यते ॥ २३ ॥

कच्छुकुष्ठमाह—

सूक्ष्मा बह्वयः पिटकाः साववत्यः
पामेत्युक्ताः कण्डुमत्यः सदाहाः ।
सैव स्फोटैस्तीव्रदाहैरुपेता
ज्ञेया प्राणयोः कच्छुरुग्रा स्फिजोश्च ॥ २४ ॥

स्फोटकुष्ठमाह—

स्फोटाः श्यावारुणामासा विस्फोटाः स्युस्तनुत्वचः ।

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

शतारुराह—

रक्तं श्यावं सदाहार्ति शतारुः स्याद्वहुवणम् ॥ २५ ॥

विचर्चिकामाह—

सकण्डूपिटका श्यावा बहुस्रावा विचर्चिका ।

श्वित्रमाह—

पाण्डुरं श्वित्रमित्युक्तं सस्रावं कण्डुरान्वितम् ॥ २६ ॥

अनग्निदग्धजं साध्यं श्वित्रं वर्ज्यमतोऽन्यथा ।

कुष्ठकण्डूभेदविशेषमाह—

खरं श्यावारुणं रूक्षं वातकुष्ठं सवेदनम् ॥ २७ ॥

पित्तात्प्रकुपितं दाहरागास्रावान्वितं मतम् ।

कफात्क्लेदघनं स्निग्धं सकण्डूशैत्यगौरवम् ॥ २८ ॥

द्विलिङ्गं द्वन्द्वजं कुष्ठं त्रिलिङ्गं सानिपातिकम् ।

त्वक्स्थे वैवर्ण्यमङ्गेषु कुष्ठे रौक्ष्यं च जायते ॥ २९ ॥

त्वक्स्वापो रोमहर्षश्च स्वेदस्यातिप्रवर्तनम् ।

कण्डूर्विपूयकश्चैव कुष्ठे शोणितसंश्रये ॥ ३० ॥

मांसवृत्तमाह—

बाहुल्यं वक्त्रशोषश्च कार्कश्यं पिटकोद्गमः ।

तोदस्फोटस्थिरत्वं च कुष्ठे मांससमाश्रिते ॥ ३१ ॥

मेदवृत्तमाह—

कौण्यं गतिक्षयोऽङ्गानां संभेदः क्षतसर्पणम् ।

मेदस्थानगते लिङ्गं प्रागुक्तानि तथैव च ॥ ३२ ॥

मज्जावृत्तमाह—

नासाभङ्गोऽक्षिरागश्च क्षतेषु क्रिमिसंभवः ।

स्वरोपधातश्च भवेदस्थिमज्जासमाश्रिते ॥ ३३ ॥

दम्पत्योः कुष्ठबाहुल्याद्दुष्टशोणितशुक्रयोः ।

यदपत्न्यं तयोर्जातं ज्ञेयं तदपि कुष्ठितम् ॥ ३४ ॥

साध्यं त्वग्रक्तमांसस्थं वातश्लेष्माधिकं च यत् ।

मेदसि द्वन्द्वजं याप्यं वर्ज्यं मज्जास्थिसंश्रितम् ॥ ३५ ॥

असाध्यत्वमाह—

कृमिकृदाहमन्दाग्निसंयुक्तं च त्रिदोषजम् ।
प्रमिन्नं प्रसृताङ्गं च रक्तनेत्रं हतस्वरम् ॥ ३६ ॥
पञ्चकर्मगुणातीतं कुष्ठं हन्तीह कुष्ठिनम् ।

दोषाश्रितकुष्ठमाह—

वातेन कुष्ठं कापालं पित्तादौदुम्बरं कफात् ॥ ३७ ॥
मण्डलाख्यं विवर्ची च ऋक्षाख्यं वातपित्तजम् ।
चर्मैककुष्ठं किटिभं सिध्मालसविपादिकाः ॥ ३८ ॥
वातश्लेष्मोद्भवाः श्लेष्मपित्ताद्दृशतारुणी ।

सप्तधामहाकुष्ठमाह—

पुण्डरीकं सविस्फोटं पामा चर्मदलं तथा ॥ ३९ ॥
सर्वेषां कारणं पूर्वं त्रिकं दद्रु सकाकणम् ।
पुण्डरीकसृक्षजिह्वं महाकुष्ठानि सप्त तु ॥ ४० ॥

कुष्ठभेदवर्णमाह—

कुष्ठैकसंभवं श्वित्रं किलासं वारुणं च यत् ।
निर्विष्टमपरिस्रावि त्रिधातूद्भवसंश्रयम् ॥ ४१ ॥
वातादूक्षारुणं पित्तात्ताम्रं कमलपत्रवत् ।
सदाहं लोमविध्वंसि कफाच्छ्वेतं घनं गुरु ॥ ४२ ॥
सकण्डुरं क्रमाद्रक्तं मांसमेदस्सु चाऽऽदिशेत् ।
वर्णेन चेदमुभयं कृच्छ्रं तच्चोत्तरोत्तरम् ॥ ४३ ॥

तन्मध्ये वर्जनमाह—

अशुक्लोमबहुलमसंसृष्टमथो नवम् ।
अनाग्निदग्धजं साध्यं श्वित्रं वर्ज्यमतोऽन्यथा ॥ ४४ ॥

विशेषवर्जनमाह—

गुह्यपाणितलोष्ठेषु जातमप्यचिरंतनम् ।
वर्जनीयं विशेषेण किलासं सिद्धिमिच्छता ॥ ४५ ॥
स्पर्शैकाहारशय्याविसेवनात्प्रायशो गदाः ।
सर्वे संचारिणो नेत्रत्वग्बिकारा विशेषतः ॥ ४६ ॥

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

14

15

प्रसङ्गाद्वात्रसंस्पर्शान्निश्वासात्सहमोजमात् ।
 सहशय्यासनाच्चापि वस्त्रमाल्यानुलेपनात् ॥ ४७ ॥
 कुष्ठं ज्वरश्च शोषश्च नेत्राभिष्यन्द एव च ।
 औपसर्गिकरोगाश्च संक्रामन्ति नरान्नरम् ॥ ४८ ॥
 इति कुष्ठनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

वातोत्तरेषु सर्पिर्वमनं श्लेष्मोत्तरेषु कोष्ठेषु ।
 पित्तोत्तरेषु मोक्षो रक्तस्य विरेचनं विहितम् ॥ ४९ ॥
 सर्पिर्महानीलमुशन्ति वाते पित्ते महातिक्तकमेव तज्ज्ञाः ।
 तैलं तु शैरीषमुशन्ति कुष्ठे श्लेष्मात्मकेऽभ्यञ्जनपानयोगे ॥ ५० ॥

रक्तस्त्रावमाह—

प्रच्छन्नैर्वा जलौकाभिः शृङ्गचलाबुशिराव्यधैः ।
 स्निग्धस्य मोक्षयेत्कुष्ठे दुष्टं रक्तं पुनः पुनः ॥ ५१ ॥

तस्य क्रियामाह—

क्षुते रक्ते हृते दोषे स्नेहैः संशमितेऽनिले ।
 रसायनानि प्राशाश्च प्रशस्ताः कुष्ठिनां मताः ॥ ५२ ॥

तस्योपचारः—

वचावासापटोलानां निम्बस्य फलिनीत्वचः ।
 कषायो मधुना पीतो बान्तिकृन्मदनान्वितः ॥ ५३ ॥

इति वमने पञ्चकषायः ।

विरेचनं प्रयोक्तव्यं त्रिवृद्धन्तीफलत्रिकैः ।
 षष्ठे मासे शिरामोक्षं प्रतिमासे विरेचनम् ॥ ५४ ॥
 प्रतिपक्षे च वमनं कुष्ठे लेपं त्र्यहे चरेत् ।

लेपमाह—

पथ्याकरञ्जसिद्धार्थनिशावल्गुजसैन्धवैः ॥ ५५ ॥
 विडङ्गसहितैः पिष्टैर्लेपो मूत्रेण कुष्ठजित् ।
 एलाकुष्ठविडङ्गानि शताह्वा चित्रकं बला ॥ ५६ ॥
 दन्ती रसाञ्जनं चेति लेपः कुष्ठविनाशनः ।

THE [REDACTED] [REDACTED] [REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

अथ सोमराजीबाकूचीचूर्णम्—

सोमराजीभवं चूर्णं शृङ्गबेररसाञ्जनम् ।

उद्धर्तनमिव हन्ति कुष्ठं रोगकृदास्पदम् ॥ ५७ ॥

इति सोमराजीबाकूचीचूर्णम् ।

तस्य प्रदेहमाह—

मनःशिलाले मरिचानि तैलमाकं पयः कुष्ठहरः प्रदेहः ।

करञ्जबीजैडगजं सकुष्ठं गोमूत्रपिष्टं च परः प्रदेहः ॥ ५८ ॥

लेपमाह—

धात्रीस्तुहीसर्जरसचक्रमर्दतुषोदकैः ।

कच्छूददूहरो लेपः कण्डुत्वग्दोषनाशनः ॥ ५९ ॥

शृगालकर्कटीमूलं हविषा ब्रह्मचारिणा ।

निपीतं शमयत्याशु कुष्ठरोगमसंशयम् ॥ ६० ॥

पर्णानि पिष्ट्वा चतुरङ्गुलस्य तक्रेण पर्णान्यथ काकमाच्याः ।

तैलसगात्रस्य नरस्य कुष्ठान्युन्मूलयेदश्वरिपुच्छदैर्वा ॥ ६१ ॥

एडगजकुष्ठसैन्धवसौवीरकसर्षपैः क्रिमिघ्नैश्च ।

क्रिमिसिध्मदद्गुमण्डलकुष्ठानां नाशनो लेपः ॥ ६२ ॥

त्रिफलामुस्तपिण्डीतदार्वाशङ्खाकवत्सकाः ।

सिद्धार्थः कुष्ठमुच्चायं स्नानपानप्रलेपनैः ॥ ६३ ॥

गुञ्जाचित्रकशङ्खभस्मरजनीदूर्वाभयालाङ्गली-

स्तुक्सिन्धूत्थकुमारिकाजलधराकक्षीरधूमेजैः ॥

ददूघ्नैडगजाविडङ्गमरिचक्षौद्रैश्च खारीयुतैः

कायं वै गजचर्मददुरकसाकण्डूघ्नमुद्धर्तनम् ॥ ६४ ॥

कासमर्दकमूलानि सौवीरेण तु पेषयेत् ।

ददूकिटिभकुष्ठानि जथेदेतत्प्रलेपनात् ॥ ६५ ॥

धीजानि वा सर्षपमूलकानां लाक्षारजन्यौ प्रपुञ्जादबीजम् ।

श्रीवेष्टकं व्योषविडङ्गकुष्ठं पिष्ट्वा च मूत्रेण विलेपनं स्यात् ॥

ददूणि सिध्मं किटिभानि पामां कपालकुष्ठं विषमं च हन्युः ॥ ६६ ॥

आरग्वधस्य पत्राणि आरनालेन पेषयेत् ।

ददूकिटिभकुष्ठानि हन्ति सिध्ममसंशयम् ॥ ६७ ॥

THE
HISTORY
OF
THE
CITY
OF
NEW-YORK
FROM
THE
FIRST
SETTLEMENT
TO
THE
PRESENT
TIME
BY
J. C. HEATON
OF
NEW-YORK
IN TWO VOLUMES
VOL. II
NEW-YORK
PUBLISHED BY
J. C. HEATON
1853

प्रपुन्नाटस्य बीजानि धात्री सर्जरसः स्नुही ।
 सौवीरपिष्टं दद्रूणामेतदुद्धर्तनं परम् ॥ ६८ ॥
 दूर्वाभयासैन्धवचक्रमर्दकुठेरकाः काञ्जिकतक्रपिष्टाः ।
 त्रिभिः प्रलेपैरपि बद्धमूलं दद्रूं च कण्डूं च विनाशयन्ति ॥ ६९ ॥
 शिखरीरसेन पिष्टं मूलकबीजं प्रलेपतः सिध्मम् ।
 क्षारेण कदल्या वा रजनीमिश्रेण नाशयति ॥ ७० ॥

अथ केसरषष्ठयोगः—

कुष्ठं मूलकबीजं प्रियङ्गवः सर्षपा दुरालम्भा ।
 एतत्केसरषष्ठं निहन्ति चिरकालजं सिध्मम् ॥ ७१ ॥

इति केसरषष्ठयोगः ।

अथ प्रपुन्नाटादिलेपः—

गन्धपाषाणमिश्रेण यवक्षारेण लेपितम् ।
 सिध्मं नाशमुपैत्याशु कटुतैलयुतेन च ॥ ७२ ॥
 कासमर्दकबीजानि मूलकानां तथैव च ।
 गन्धपाषाणमिश्राणि सिध्मानां परमौषधम् ॥ ७३ ॥
 बीजं मूलकजं निम्बपत्राणि सितसर्षपान् ।
 गृहधूमं च संपिष्य जलेनाङ्गं प्रलेपयेत् ॥ ७४ ॥
 उद्धर्त्य नवनीतेन क्षालयेदुष्णवारिणा ।
 त्र्यहादनेन सिध्मानि शाम्यन्त्याशु शरीरिणाम् ॥ ७५ ॥
 लाक्षा श्रीवेष्टकं कुष्ठं हरिद्रे गौरसर्षपाः ।
 व्योषं मूलकबीजानि प्रपुन्नाटफलानि च ॥ ७६ ॥
 एतान्यम्लप्रपिष्टानि कुष्ठेषूद्धर्तनं परम् ।
 सिध्मानां किटिमानां च दद्रूणां च विशेषतः ॥ ७७ ॥
 प्रपुन्नाटार्कदुग्धानि दन्तीजन्तुघ्नसैन्धवैः ।
 गृहधूमनिशायुग्मसिंहीफलविषैः समैः ॥ ७८ ॥
 लेपः समस्तकुष्ठघ्नः सुतिवैषण्यनाशनः ।

इति प्रपुन्नाटादिलेपः ।

अथ स्वादिरोदकम्—

प्रलेपोद्धर्तनस्नानपानभोजनकर्मसु ॥ ७९ ॥



शीतलं खादिरं वारि सर्वत्वग्दोषनाशनम् ।
 दह्यमानाच्छुतः कुम्भे समूलात्खादिराद्रसः ।
 साज्यधात्रीरसक्षौद्रो हन्यात्कुष्ठं रसायनः ॥ ८० ॥

इति खादिरोदकम् ।

अथ खदिराष्टकक्राथः—

निम्बपत्रशतं पिष्ट्वा निम्बामलकमेव च ।
 विडङ्गबाकुचीकल्कं पिबेद्वा कुष्ठनाशनम् ॥ ८१ ॥
 श्वेतकरवीरमूलं कुटजकरञ्जत्वचो दाव्याः ।
 सुमनःप्रवालयुक्तो लेपः कुष्ठापहः सिद्धः ॥ ८२ ॥
 खदिरत्रिफलानिम्बपटोलामृतवासकैः ।
 अष्टकोऽयं जयेत्कुष्ठकण्डूविस्फोटकानि च ।
 विसर्पणामाकिटिभरोमान्तिकमसूरिकाः ॥ ८३ ॥

इति खदिराष्टकक्राथः ।

अथ नवकषायः—

त्रिफलानिम्बपटोलं मञ्जिष्ठा रोहिणी वचा रजनी ।
 एष कषायोऽभ्यस्तो निहन्ति कफपित्तजं कुष्ठम् ॥ ८४ ॥

इति नवकषायः ।

अथ लघुमञ्जिष्ठादिक्राथः—

मञ्जिष्ठा त्रिफला तिक्ता वचा दारुनिशाऽमृता ।
 निम्बश्रैषां कृतः क्राथः सर्वकुष्ठानि नाशयेत् ॥ ८५ ॥

इति लघुमञ्जिष्ठादिक्राथः ।

अथ सामान्यमञ्जिष्ठादिकषायः—

मञ्जिष्ठा कुटजाऽमृता घनवचा शुण्ठी हरिद्राद्वयं
 क्षुद्रारिष्टपटोलकुष्ठकटुकाभार्गीविडङ्गाश्लिकम् ।
 मूर्वादारुकलिङ्गभृङ्गमगधात्रायन्तिपाठावरी-
 गायत्रीत्रिफलाकिरातकमहानिम्बोषणारग्वधम् ॥ ८६ ॥
 श्यामावल्गुजचन्दनं वरुणकं पूतीकशाखोटकं
 वासापर्पटसारिवाप्रतिविषानन्ताविशालाजलम् ।

Figure 1: Experimental design. The diagram illustrates the sequence of events in the experiment. It starts with a 'Stimulus' (a word) being presented. This is followed by a 'Response' (a button press). The response is then followed by a 'Feedback' (a light or sound). The diagram is divided into two main sections: 'Stimulus' and 'Response'. The 'Stimulus' section shows a word 'Stimulus' being presented. The 'Response' section shows a button being pressed. The 'Feedback' section shows a light or sound being presented. The diagram is labeled 'Figure 1' and 'Experimental design'.

100

The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. The second part of the paper discusses the
 importance of the *Journal of Management Education* in the
 field of management education.

[illegible]

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

100

Age Group	Percentage
18-24	22%
25-34	28%
35-44	18%
45-54	15%
55-64	12%
65-74	8%
75-84	5%
85+	2%

The following table shows the results of the regression analysis for the dependent variable "Number of children in the household" (N = 1,000). The independent variables are "Age of the head of household" and "Gender of the head of household". The results are presented in the following table:

मञ्जिष्ठादिभिर्म कषायविधिना नित्यं पुमान्यः पिबेत्
त्वग्दोषाद्यचिरेण यान्ति निलयं कुष्ठानि चाष्टादश ॥८७॥

इति सामान्यमञ्जिष्ठादिकषायः ।

अथ मध्यममञ्जिष्ठादिकषायः—

मञ्जिष्ठा बाकुची चक्रमर्दत्वक्पिचुमन्दकः ।
हरीतकी हरिद्रा च धात्री वासा शतावरी ॥ ८८ ॥
बला नागबला यष्टी मधुकं क्षुरकोऽपि च ।
पटोलस्य लतोशीरं गुडूची रक्तचन्दनम् ॥ ८९ ॥
मञ्जिष्ठादिरयं काथः कुष्ठानां नाशनः परः ।
वातरक्तस्य संहर्ता कण्डूमण्डलखण्डनः ॥ ९० ॥

इति मध्यममञ्जिष्ठादिकषायः ।

बृहंस्तु वातरक्ते द्रष्टव्यः ।

अथ वृद्धमञ्जिष्ठादिकषायः—

मञ्जिष्ठा त्रिफला प्रियङ्गुमृता ब्राह्मी वचा पौष्करं
मृङ्गाख्यस्त्रिकटुः किरातकविषानिर्गुण्डिकारग्वधाः ।
त्रायन्ती खदिरं कटुत्वचवृकीपीताद्वयं रोहिणीं
तिक्तापर्पटवासकेन्द्रफलनीनन्ताविशालागदम् ॥ १०० ॥
एरण्डं पिचुमन्दचित्रकवरीभार्गमलेन्दीसटी
पित्तवानीधवमूलपाडलत्रिवृत्तेजस्विनीवालकम् ।
दन्तीमूलपलाशचन्दनयुगं मुण्डी विडङ्गं त्वचौ
अर्कयोररणी(?)करञ्जधवयोः पर्णानि मूलानि च ॥ १ ॥
क्षुद्राह्वाद्रयदारु++जलदाकह्लारकं कोलक-
मेभिः सिद्धमिमं पटोलसहितं काथं चतुष्पष्टिकम् ।
अष्टांशेन विपाचयेच्च मतिमान्पक्त्वाऽल्पमृद्धाजने
पीत्वा हन्ति खडं सपित्तपवनं कुष्ठानि चाष्टादश ॥ २ ॥

इति वृद्धमञ्जिष्ठादिकषायः ।

अथ गुडूच्यादिकाथः—

छिन्नामूर्वाविशालातिविषवृकिशिखीभीरुशिग्र्वग्निमन्थो-
ग्राचातुर्जातरास्त्रात्रिकटुकचविका द्वे क्षपे पञ्चकाष्ठम् ।

गोपीपञ्चाङ्गुलालावृषजलजलदारग्वधाः शक्रबित्वो
ब्राह्मी बाकूचिदूर्वाभरखादिरशताह्वाश्वगन्धाजमोदाः ॥ ३ ॥

शोथघ्नीजीवनीद्राविडसटिजटिला धन्वयासस्त्रिकण्टु-
भूनिम्बो निम्बबिम्बीसुरसुमनबलाचक्रमर्दाः पटोली ।
निर्गुण्डी पर्पटो मार्कवजरणशमीतालिसं चन्दने द्वे
पद्मं मञ्जिष्ठीनीलीत्रिफलकृमिहरं सारिणीसिन्धुकुष्ठम् ॥ ४ ॥
लोध्रं पूती मधूकं शिखरिजलरुहं सर्वमेतत्समांशं
कृत्वा काथो हि सेव्यः सकलतनुगतं रक्तवातं खुडं च ।
उत्तानं चावगाढं पवनकफभवं पित्तरोगं ह्युददं
कुष्ठं चाष्टादशाख्यं व्रणकृमिजठरं शोफशूलज्वरांश्च ॥ ५ ॥
दद्रुं कण्डू च शोफं प्रदरगदजरार्शः प्रमेहान्निहन्स्ती-
हाभ्यासादस्य मर्त्यो वलितपलितविहीनो गुडूच्यादियोगः ॥ ६ ॥
इतिगुडूच्यादिकाथः ।

अथ शुण्ठ्यादिमहाकषायः—

शुठी निम्बकिराततिक्तककणाः पाठा हरिद्राद्वयं
त्रायन्ती त्रिफलाऽमृताऽब्दकटुका वासा वचा बाकुची ।
मञ्जिष्ठाऽतिविषा दुरालभमहानिम्बाग्निषड्ग्रन्थिका
व्याधिघ्ना गजचिर्मटा सकुटजा मार्गी समुस्ता यवाः ॥ ७ ॥
मूर्वा चैव पटोलपत्रसहिता रक्तं तथा चन्दनं
श्यामा पर्पटसारिवा कृमिहरा गायत्रिकासंयुता ।
गोमूत्रेण महाकषायमरुणोऽद्भूते पिबेद्यः पुमान् ।
तस्याष्टादश यान्ति नाशमचिरात्कुष्ठानि दुष्टान्यपि ॥ ८ ॥

इति शुण्ठ्यादिमहाकषायः ।

अथ धतूरकादितैलम्—

तिलाज्यत्रिफलाक्षौद्रव्योषभल्लातशर्कराः ।
वृष्याः सप्तमको मेध्यः कुष्ठहा कामचारिणः ॥ ९ ॥
छिन्नायाः स्वरसं चापि सेवमानो यथाबलम् ।
जीर्णे घृते न भुञ्जीत मुद्गयूषौदनैर्नरः ।
अपि पूतिशरीरोऽपि दिव्यरूपी भवेद्भुवम् ॥ १० ॥

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

100

इन्द्रासनपत्ररजो मधुना सितयाऽथ सर्पिषा सहितम् ।

खादेदशेषकुष्ठक्षयकरमस्मात्परं नास्ति ॥ ११ ॥

दहति पतितमात्रं कुष्ठजातीरशेषाः

कुलिशमिव सरोषाच्छक्रहस्ताद्विमुक्तम् ॥ १२ ॥

चक्राङ्गुलीजं स्नुक्षीरभावितं मूत्रसंयुतम् ।

रवितप्तं सकिण्वं च लेपनं किटिभापहम् ॥ १३ ॥

पिप्पलीपूतिकायस्थाकुष्ठगोपितचित्रकैः ।

लेपं सम्यक्प्रशंसन्ति किटिमघ्नं चिकित्सकाः ॥ १४ ॥

गोमूत्रवारिसंपिष्टैः शिलाकासीसतुत्थकैः ।

लेपः किटिमवीसर्पकुष्ठनाशाय पूजितः ॥ १५ ॥

राजिकागुडयुक्तेन सैन्धवेन प्रलेपितम् ।

विडालचर्मणा बद्धं नाशं चर्मदलं व्रजेत् ॥ १६ ॥

शैलेयकम्पिलकयटिसाहसौराष्ट्रिकासर्जरसोपलानि ।

शिला च चूर्णो नवनीतयुक्तः कुष्ठे स्रवत्यभ्याधिकः प्रदिष्टः ॥ १७ ॥

धत्तूरबीजकल्केन माणकक्षारवारिणा ।

कटुतैलं विपक्वं तु द्रुतं हन्याद्विपादिकाम् ॥ १८ ॥

इति धत्तूरकादितैलम् ।

आवल्गुजं कासमर्दं चक्रमर्दं निशायुतम् ।

माणिमन्थेन तुल्यांशं रक्तकाञ्चिकपेषितम् ।

कच्छूं कण्डूं जयत्युग्रां सिद्ध एष प्रयोगराट् ॥ १९ ॥

कोमलसिंहास्यदलं सनिशं सुरभीजलेन संपिष्टम् ।

दिवसत्रयेण नियतं शमयति कच्छूं विलेपनतः ॥ २० ॥

हरिद्राकल्कसंयुक्तं गोमूत्रस्य पलद्वयम् ।

पिबेन्नरः कामचारी कच्छूपामाविनाशनम् ॥ २१ ॥

गन्धपाषाणचूर्णं तु कटुतैलेन योजितम् ।

लेपनादथ पानाद्वा कच्छूपामाविनाशनम् ॥ २२ ॥

अथ सिन्दूराय तैलम्—

सिन्दूरगुग्गुलुरसाञ्जनसिक्थतुथैः

कल्कीकृतैः कटुकतैलमिदं सुपक्वम् ।

कच्छूं स्रवत्पिष्टकिकामथ वाऽपि शुष्का-
मभ्यञ्जनेन सकृदुद्धरति प्रसह्य ॥ २३ ॥

इति सिन्दूराद्यं तैलम् ।

अथ बृहत्सिन्दूराद्यं तैलम्—

सिन्दूरं चन्दनं मांसीं विडङ्गं रजनीद्वयम् ।
प्रियङ्गु पद्मकं कुष्ठं मञ्जिष्ठां खदिरं वचाम् ॥ २४ ॥
जात्यकं त्रिवृतां निम्बं करञ्जं विषमेव च ।
कृष्णाचित्रकलोध्रं च प्रपुञ्जादं च संहरेत् ॥ २५ ॥
श्लक्ष्णपिष्टानि सर्वाणि योजयेत्तैलमात्रया ।
अभ्यङ्गेन प्रयोज्यं तद्दर्णकृत्कुष्ठनाशनम् ॥ २६ ॥
पामां विचर्चिकां कच्छूं विसर्पं विषमेव च ।
रक्तपित्तोत्थितान्हन्ति रोगानेवंविधान्बहून् ।
सिन्दूराद्यमिदं तैलमश्विभ्यां निर्मितं पुरो ॥ २७ ॥

इति बृहत्सिन्दूराद्यं तैलम् ।

अथ निशादिप्रलेपः—

निशासुधारग्वधकाकमाचीपत्रैः सदावीं प्रपुञ्जादबीजैः ।
तक्रेण पिष्टैः कटुतैलमिश्रैः पामादिषूद्वर्तनमेतदिष्टम् ॥ २८ ॥

इति निशादिप्रलेपः ।

अथ जीरकतैलम्—

गोशकृत्सिन्धुसंयुक्तं रजनीमाक्षिकेण तु ।
पिष्ट्वा प्रलेपनं योज्यं पामाकच्छूविनाशनम् ॥ २९ ॥
सैन्धवं चक्रमर्दं च सर्षपं पिप्पलीं तथा ।
सेचयेदारनालेन पामाकण्डूविनाशनम् ॥ ३० ॥
मांसीचन्दनशम्याककरञ्जारिष्टसर्षपम् ।
यष्टीकुटजदावींभिर्हन्ति कण्डूमयं गणः ॥ ३१ ॥
जीरकस्य पलं पिष्ट्वा सिन्दूरार्धपलं तथा ।
कटुतैलं पचेदाभ्यां सद्यः पामाहरं परम् ॥ ३२ ॥
वृद्धवैद्योपदेशेन पाच्यं तैलं पलायकम् ।

इति जीरकतैलम् ।

1. The first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

2. The second part of the document is a list of the names of the members of the committee.

3. The third part of the document is a list of the names of the members of the committee.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the members of the committee.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

11. The eleventh part of the document is a list of the names of the members of the committee.

12. The twelfth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

अथार्कतैलम्—

अर्कपत्ररसे पक्वं रजनीकल्कसंयुतम् ।

कटुतैलं हरेत्तूर्णं मासात्कच्छूं विचर्चिकाम् ॥ ३३ ॥

इत्यर्कतैलम् ।

अथ त्रिफलागुटिका—

त्रिफलारुष्करलोहैः सावल्गुजभृङ्गलाङ्गलीव्योषैः ।

सगुडैर्वराहकन्दैः पलिकैरेकत्र संमिश्रैः ॥ ३४ ॥

गुटिकां प्रकल्प्य खादेदकैकामक्षसंमितां प्रातः ।

कुष्ठं दद्रुकिलासं जित्वा वर्षेण सर्वथा पलितम् ।

जीवति वर्षशतं वै दीप्तहुताशो युवेव सोत्साहः ॥ ३५ ॥

इति त्रिफलागुटिका ।

अथ शशाङ्कलेखादिलेहः—

शशाङ्कलेखा सविडङ्गसारा सपिप्पलीका सहृताशमूला ।

सायोमला सामलका सतैला सर्वाणि कुष्ठानि निहन्ति लीढा ॥ ३६ ॥

इति शशाङ्कलेखादिलेहः ।

अथ त्रिफलामोदकः—

त्रैफलस्य तु चूर्णस्य पलानि दशपञ्च च ।

सप्त चैव विडङ्गानां लोहचूर्णं पलद्वयम् ॥ ३७ ॥

शतं भल्लातकानां च पलानि दश बाकुची ।

शिलाजतु पले द्वे तु द्वे पले गुग्गुलोस्तथा ॥ ३८ ॥

पलं पुष्करमूलस्य पलार्धं पलमेव च ।

सचित्रकं समरिचं पिप्पली विश्वभेषजम् ॥ ३९ ॥

त्वक्पत्रं कुङ्कुमं मुस्ता कार्षिकानुपकल्पयेत् ।

यावन्त्येतानि चूर्णानि तावत्खण्डं प्रदापयेत् ॥ ४० ॥

पलिकान्मोदकान्कृत्वा प्रातरुत्थाय नित्यशः ।

एकैकं भक्षयेत्प्राज्ञो यथेष्टं चात्र भोजनम् ॥ ४१ ॥

कुष्ठान्यष्टादशानीह ग्रीहगुल्मभगंदरान् ।

अशीतिं वातजान् रोगांश्चत्वारिंशच्च पित्तजान् ॥ ४२ ॥

विंशतिं श्लैष्मिकांश्चापि संमृष्टान्सांनिपातिकान् ।
 शालाक्यगतरोगांश्च शिरोक्षिभूगतांस्तथा ॥ ४३ ॥
 कण्ठतालुगतांश्चैव जिह्वायामुपजिह्वकम् ।
 ऊर्ध्वजघ्नगते रोगे मुक्तस्योपरि शीलयेत् ॥ ४४ ॥
 शारीरे दापयेत्पूर्वमौदरे मध्यभोजने ।
 निर्दिष्टरोगाञ्जमयेत्क्रियमाणं रसायनम् ॥ ४५ ॥

इति त्रिफलामोदकः ।

अथ पञ्चनिम्बचूर्णम्—

पिचुमन्दफलं पुष्पं त्वक्पत्रं मूलमेव च ।
 पञ्चैतानि सुसूक्ष्माणि समचूर्णानि कारयेत् ॥ ४६ ॥
 अष्टभागावशेषेण खदिरासनवारिणा ।
 भावयित्वा तु संयोज्य द्रव्याण्येतानि दापयेत् ॥ ४७ ॥
 चित्रकोप्यविडङ्गानि व्याधिघातकशर्करान् ।
 मल्लतकहरीतक्यौ शुण्ठ्यामलकगोक्षुरान् ॥ ४८ ॥
 चक्रमर्दकबाकूच्यौ पिप्पलीं मरिचं निशाम् ।
 लोहचूर्णसमायुक्तं समभागं प्रमाणतः ॥ ४९ ॥
 भावयेद्भृङ्गराजेन पुनः शुष्काणि कारयेत् ।
 निम्बार्धचूर्णमेतेषामेकीकृत्य निधापयेत् ॥ ५० ॥
 बिडालपदमात्रं तु सर्पिषा पयसाऽपि वा ।
 प्रातः प्रातर्निषेवेत खदिरासनवारिणा ॥ ५१ ॥
 परिहारो न चान्योऽस्ति पञ्चनिम्बेऽवतिष्ठति ।
 मासमात्रप्रयोगेण कुष्ठं हन्ति रसायनम् ॥ ५२ ॥
 त्वग्दोषं नीलिकाव्यङ्गं तथैव तिलकालकान् ।
 अष्टादशविधं कुष्ठं सप्त चैव महाक्षयान् ॥ ५३ ॥
 सर्वव्याधिविनिर्मुक्तो जीवेद्द्वर्षशतं सुखी ।

इति पञ्चनिम्बचूर्णम् ।

अथ सर्वाङ्गसुन्दरी गुटिका—

मल्लतकसहस्रैकं त्रिफलावारिणि क्षिपेत् ॥ ५४ ॥

—

—

—

—

—

—

द्रोणमात्रे पचेत्तावद्यावत्पादावशेषितम् ।
 शर्कराया दश पलान्येकं बाकूचिकापलम् ॥ ५५ ॥
 तथैवात्रैव देयानि पलानि दश गुग्गुलोः ।
 खदिरारिष्टमस्त्रिषाबीजकं चेन्द्रवारुणी ॥ ५६ ॥
 चित्रकं द्वे हरिद्रे च देवदारु हरीतकी ।
 मार्गी वचेति सर्वेषां प्रत्येकं च पलार्धकम् ॥ ५७ ॥
 प्रक्षिप्य गुटिका कार्या नाम्ना सर्वाङ्गसुन्दरी ।
 प्रत्यहं मक्षयेत्कुष्ठं त्वेतां बदरमात्रया ॥ ५८ ॥
 सर्वाण्येवोऽग्रकुष्ठानि शीघ्रमेव व्यपोहति ।

इति सर्वाङ्गसुन्दरी गुटिका ।

अथैकविंशतिको गुग्गुलुः—

चित्रकं त्रिफला व्योषमजाजी कारवी वचा ॥ ५९ ॥
 सैन्धवातिविषे कुष्ठं चव्यैलायावशूकजम् ।
 विडङ्गान्यजमोदा च मुस्तान्यमरदारु च ॥ ६० ॥
 यावन्त्येतानि सर्वाणि तावन्मात्रं च गुग्गुलुम् ।
 संकुट्य सर्पिषा सार्धं गुटिकां कारयेद्भिषक् ॥ ६१ ॥
 प्रातर्भोजनकाले वा मक्षयेत्तु यथाबलम् ।
 हन्यष्टादश कुष्ठानि कृमिदुष्टव्रणानपि ॥ ६२ ॥
 ग्रहण्यर्शोविकारांश्च मुखामयगलग्रहान् ।
 गृध्रसीमथ मग्नं च गुल्मं चापि नियच्छति ।
 व्याधीन्कुष्ठगतांश्चान्याञ्जयेद्विष्णुरिवासुरान् ॥ ६३ ॥

इत्येकविंशतिको गुग्गुलुः ।

अथ तिक्तषट्पलकं घृतम्—

निम्बपटोलं दावीं दुरालमां तिक्तरोहिणीं त्रिफलाम् ।
 कुर्यादध्रपलांशान्पटकं त्रायमाणं च ॥ ६४ ॥
 सलिलाढकसिद्धानां रसेऽष्टमागस्थिते क्षिपेत्पूते ।
 चन्दनकिराततिक्तकमागधिकात्रायमाणं च ॥ ६५ ॥
 मुस्तं वत्सकबीजं कल्कीकृत्यार्धकार्षिकान्मागान् ।
 नव सर्पिषश्च षट्पलमेतत्सिद्धं घृतं पेयम् ॥ ६६ ॥

THE

1

THE

THE

THE

THE

THE

THE

THE

कुष्ठज्वरगुल्मार्शोग्रहणीपाण्ड्वामयान्हन्ति ।

पामाविसर्पपिटकाकण्डूगण्डव्रणान्सिद्धम् ॥ ६७ ॥

इति तिक्तषट्पलकं घृतम् ।

अथ पञ्चतिक्तकं घृतम्—

निम्बं पटोलं व्याघ्रीं च गुडूचीं वासकं तथा ।

कुर्याद्द्विपलान्भागानैकैकस्य सुकुट्टितान् ॥ ६८ ॥

जलद्रोणे विपक्तव्यं यावत्पादावशेषितम् ।

घृतप्रस्थं पचेत्तेन त्रिफलागर्भसंयुतम् ॥ ६९ ॥

पञ्चतिक्तमिदं ख्यातं सर्पिः कुष्ठविनाशनम् ।

अशीतिं वातजान् रोगांश्चत्वारिंशच्च पैत्तिकान् ॥ ७० ॥

विंशतिं श्लैष्मिकांश्चैव पानादेवापकर्षति ।

बुधव्रणक्रिमीनर्शः पञ्च कासांश्च नाशयेत् ॥ ७१ ॥

इति पञ्चतिक्तकं घृतम् ।

अथ तिक्तकं घृतम्—

त्रिफलाद्विनिशावासायासपर्पटकूलकान् ।

त्रायन्तीकटुकानिम्बान्प्रत्येकं द्विपलोन्मितान् ॥ ७२ ॥

क्वाथयित्वा जलद्रोणे पादशेषस्थितेन तु ।

घृतप्रस्थं पचेद्दृक्षैः पिप्पलीघनचन्दनैः ॥ ७३ ॥

त्रायन्तीशक्रभूनिम्बास्तत्पीतं तिक्तकं घृतम् ।

हन्ति कुष्ठज्वराशांसि श्वयथुं ग्रहणीगदम् ।

पाण्डुरोगं विसर्पं च प्लीहानमपि शस्यते ॥ ७४ ॥

इति तिक्तकं घृतम् ।

अथ महातिक्तकं घृतम्—

सप्तच्छदं प्रतिविषां शम्याकं तिक्तरोहिणीं पाठाम् ।

मुस्तमुशीरं त्रिफलां पटोलपिचुमन्दपर्पटकम् ॥ ७५ ॥

धन्वयवासकचन्दनमुपकुल्यां पद्मकरजन्यौ च ।

षडग्रन्थां सविशालां शतावरीं सारिवे चोमे ॥ ७६ ॥

वत्सकबीजं वासां मूर्वामृतां किराततिक्तं च ।

कल्कान्कुर्यान्मतिमान्यष्ट्याह्वं त्रायमाणं च ॥ ७७ ॥

कल्कस्य चतुर्भागो जलमष्टगुणं रसोऽमृतफलानाम् ।

द्विगुणो घृतात्प्रदेयस्तत्सर्पिः पाययेत्सिद्धम् ॥ ७८ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the people who were present at the meeting.

2. The second part of the document is a list of the topics that were discussed during the meeting.

3. The third part of the document is a list of the actions that were taken during the meeting.

4. The fourth part of the document is a list of the people who were responsible for carrying out the actions.

5. The fifth part of the document is a list of the people who were responsible for monitoring the progress of the actions.

कुष्ठानि रक्तपित्तं प्रबलान्यशांसि रक्तवाहीनि ।
वीसर्पं रक्तोत्थं वातासृक्पाण्डुरोगं च ॥ ७८ ॥
विस्फोटकान्सपामानुन्मादान्कामलां ज्वरं कण्डूम् ।
हृद्रोगगुल्मपिडका असृग्दरं गण्डमालां च ॥ १८० ॥
हन्यादेतत्सद्यः पीतं काले यथाबलं सर्पिः ।
योगशतैरप्यजितान्महाविकारान्महातिक्तम् ॥ ८१ ॥

इति महातिक्तकं घृतम् ।

अथ महाखादिरं घृतम्—

खदिरस्य तुलाः पञ्च शिंशपासनयोस्तुले ।
तुलार्धाः सर्व एवैते करञ्जारिष्टवेतसाः ॥ ८२ ॥
पर्पटः कुटजश्चैव वृषः कृमिहरस्तथा ।
हरिद्रे कृतमालश्च गुडूची त्रिफला त्रिवृत् ॥ ८३ ॥
सप्तपर्णश्च संक्षुण्णो दशद्रोणे तु वारिणः ।
अष्टमागावशेषं तु कषायमवतारयेत् ॥ ८४ ॥
धात्रीरसं च तुल्यांशं सर्पिषश्चाऽऽढकं पचेत् ।
महातिक्तककल्कैस्तु यथोक्तैः पलसंमितैः ॥ ८५ ॥
निहन्ति सर्वकुष्ठानि पानाभ्यङ्गनिषेवणात् ।
महाखादिरमित्येतत्परं कुष्ठविकारनुत् ॥ ८६ ॥

इति महाखादिरं घृतम् ।

अथ गुग्गुलुपञ्चतिक्तकं घृतम्—

निम्बामृतावृषपटोलनिदिग्धिकानां
मागान्पृथग्दशपलान्विपचेद्घटेऽपाम् ।
अष्टावशेषितरसेन सुनिःसृतेन
प्रस्थं घृतस्य विपचेत्पिचुभागकल्कैः ॥ ८७ ॥
पाठाविडङ्गसुरदारुगजोपकुल्या-
द्विक्षारनागरनिशामिशिचव्यकुष्ठैः ।
तेजोवतीमरिचवत्सकदीपकाग्नि-
रोहिण्यपुष्करवचाकणमूलयुक्तैः ॥ ८८ ॥
मञ्जिष्ठाऽतिविषया वरया यवान्या
संशुद्धगुग्गुलुपलैरपि पञ्चसंख्यैः ।



The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. The second part of the paper discusses the importance
 of the *Journal of Management Education* in the field of
 management education. The third part of the paper discusses the
 importance of the *Journal of Management Education* in the
 field of management education. The fourth part of the paper
 discusses the importance of the *Journal of Management Education*
 in the field of management education. The fifth part of the
 paper discusses the importance of the *Journal of Management Education*
 in the field of management education. The sixth part of the
 paper discusses the importance of the *Journal of Management Education*
 in the field of management education. The seventh part of the
 paper discusses the importance of the *Journal of Management Education*
 in the field of management education. The eighth part of the
 paper discusses the importance of the *Journal of Management Education*
 in the field of management education. The ninth part of the
 paper discusses the importance of the *Journal of Management Education*
 in the field of management education. The tenth part of the
 paper discusses the importance of the *Journal of Management Education*
 in the field of management education.

100

The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. It then presents a review of the journal's
 content, highlighting the quality and diversity of the
 articles. The second part of the paper discusses the
 journal's impact on the field of management education,
 including its role in advancing research and practice.
 The paper concludes with a discussion of the journal's
 future and its potential to continue to make a
 significant contribution to the field.



The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. It then presents a review of the journal's
 content, highlighting the quality and diversity of the
 articles. The second part of the paper discusses the
 journal's impact on the field of management education,
 including its role in advancing research and practice.
 The paper concludes with a discussion of the journal's
 future and its potential to continue to make a
 significant contribution to the field.

तत्सेवितं च विधिवत्प्रबलं समीरं
 संध्यस्थिमज्जगतमप्यथ कुष्ठमीहक ॥ ८९ ॥
 नाडीवर्णाबुदभगंदरगण्डमाला
 जन्मूर्ध्वसर्वगदशुल्मगुदोत्थमेहान् ।
 यक्ष्मारुचिश्चसनपीनसकासशोफ-
 हृत्पाण्डुरोगमदविद्रधिवातरक्तम् ॥ १९० ॥
 इति गुग्गुलुपञ्चतित्तकं घृतम् ।

अथ वज्रतैलम्—

वासागुडूचीत्रिफलापटोलकरञ्जनिम्बार्जुनकृष्णवेत्रम् ।
 तत्काथकलकेन घृतं विपक्वं तद्वज्रकं कुष्ठहरं प्रदिष्टम् ॥ ९१ ॥
 विशीर्णकर्णाङ्गुलिहस्तपादः किम्यदितो मग्नगलोऽपि मर्त्याः ।
 पौराणिकीं कान्तिमवाप्स्य जीवेद्व्याहतो वर्षशतं च कुष्ठी ॥ ९२ ॥
 इति वज्रतैलम् ।

अथ तृणतैलम्—

मञ्जिष्ठाशुशुभ्रश्चक्रमर्दारिग्वधपल्लवैः ।
 तृणकस्वरसे सिद्धं तैलं कुष्ठहरं कटु ॥ ९३ ॥
 इति तृणतैलम् ।

अथ वज्रतैलम्—

सप्तपर्णकरञ्जार्कमालतीकरवीरजम् ।
 मूलं सुहीशिरीषाभ्यां चित्रकास्फोटयोरपि ॥ ९४ ॥
 करञ्जबीजं त्रिफलां त्रिकटुं रजनीद्वयम् ।
 सिद्धार्थकविडङ्गं च प्रपुष्पाटं च संहरेत् ॥ ९५ ॥
 मूत्रपिष्टैः पचेत्तैलमेभिः कुष्ठविनाशनम् ।
 अभ्यङ्गाद्वज्रकं नाम नाडीदुष्टवणापहम् ॥ ९६ ॥
 इति वज्रतैलम् ।

अथ लघुमरिचायं तैलम्—

मरिचालशिलावार्कपयोश्चारिजटात्रिवृत् ।
 शकृद्भस्मविशालारुङ्निशायुग्दारुचन्दनैः ॥ ९७ ॥
 कटुतैलं पचेत्प्रस्थं द्यक्षैर्विषपलान्वितैः ।
 सगौमूत्रं तदभ्यङ्गाद्वज्रकं त्रिजिह्वाविनाशकम् ॥ ९८ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

2. The second part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the chairperson.

3. The third part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the secretary.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the treasurer.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the clerk.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant clerk.

सर्वेष्वपि च कुष्ठेषु तैलमेतत्प्रयुज्यते ।

इति लघुमरिचाद्यं तैलम् ।

अथ बृहन्मरिचाद्यं तैलम्—

मरिचं त्रिवृता दन्ती क्षीरमाकं शकृद्रसः ॥ १९ ॥
 देवदारु हरिद्रे द्वे मांसी कुष्ठं कुचन्दनम् ।
 विशाला करवीरं च हरितालं मनःशिला ॥ २०० ॥
 चित्रको लाङ्गलाख्या च विडङ्गं चक्रमर्दकः ।
 शिरीषः कुटजो निम्बः सप्तपर्णः सुही स्मृता ॥ १ ॥
 शम्पाको नक्तमालोऽब्दः खदिरः पिप्पली वचा ।
 ज्योतिष्मती च पलिका विषस्य द्विपलं भवेत् ॥ २ ॥
 आढकं कटुतैलस्य गोमूत्रं तु चतुर्गुणम् ।
 मृत्पात्रे लोहपात्रे वा शनैर्मृद्वाग्निना पचेत् ॥ ३ ॥
 पक्त्वा तैलवरं ह्येतन्म्रक्षयेत्कौष्ठिकान्वणान् ।
 पामाविचर्चिकाकण्डूदरविस्फोटकानि च ॥ ४ ॥
 बलयः पलितं छाया नीलीं व्यङ्गं तथैव च ।
 अभ्यङ्गेन प्रणश्यन्ति सौकुमार्यं च जायते ॥ ५ ॥
 प्रथमे वयसि स्त्रीणां नस्यं यासां तु दीयते ।
 परामपि जरां प्राप्य स्तना यान्ति न विक्रियाम् ॥ ६ ॥
 बलीवर्दस्तुरङ्गो वा गजो वा वायुपीडितः ।
 त्रिभिरभ्यञ्जनैर्गाढं भवेन्मारुतविक्रमः ॥ ७ ॥

इति बृहन्मरिचाद्यं तैलम् ।

अथ सर्षपादिचूर्णम्—

सर्षपकरञ्जरजनीदारुनिशादारुमाञ्जिष्ठाः ।
 त्रिफला सटीपट्टिरश्वेतामूर्वाप्रियङ्गूमाः ॥ ८ ॥
 त्रिकटुत्रिगन्धकेसरलाक्षाश्चैषां कृतं रजः श्लक्ष्णम् ।
 उद्धूलनेन रक्तजपित्तजवातोत्थितं वाऽपि ।
 निस्तोदभेदपीडाकम्पस्फुटनं विनाशयति ॥ ९ ॥

इति सर्षपादिचूर्णम् ।

THE

NEW

EDITION

OF

THE

NEW

EDITION

OF

THE

NEW

EDITION

OF

THE

NEW

EDITION

OF

THE

NEW

EDITION

OF

THE

NEW

EDITION

OF

THE

NEW

EDITION

OF

THE

अथ विषतैलम्—

नक्तमालं हरिद्रे द्वे अर्कं तगरमेव च ।
 करवीरवचाकुष्ठमास्फोतारक्तचन्दनम् ॥ १० ॥
 मालती सप्तपर्णी च मञ्जिष्ठा सिन्दुवारकाः ।
 एषामर्धपलान्भागान्विषस्य द्विपलं भवेत् ॥ ११ ॥
 चतुर्गुणे गवां मूत्रे तैलप्रस्थं विपाचयेत् ।
 श्वित्रविस्फोटकिटिभकीटलूताविचर्चिकाः ॥ १२ ॥
 कण्डूकच्छूविकाराश्च ये व्रणा विषदूषिताः ।
 विषतैलमिदं नाम्ना सर्वव्रणविशोधनम् ॥ १३ ॥

इति विषतैलम् ।

अथ प्रक्रिया—

शुद्धसूतं पलमितं सैन्धवं च पलोन्मितम् ।
 शुद्धतालकमुष्टिं च पलार्धं शुक्तिजं रजः ॥ १४ ॥
 द्रोणपुष्पीरसे तालं घस्रं संस्थाप्य चोद्धरेत् ।
 ततो विमर्दयेत्सर्वं खल्वे कूष्माण्डजद्रवैः ॥ १५ ॥
 शुक्तिकां संपुटे दत्त्वा वस्त्रैः पलाशभस्मनि ।
 संस्थाप्य संपुटं युक्त्या सूत्रबद्धं गुरुक्त्या ॥ १६ ॥
 समस्मवस्त्रं संवेष्ट्य तत्संवेष्ट्य मृदस्वरैः ।
 पलाशभस्मनि स्थाप्य स्वल्पहण्डीगतेऽथ तम् ॥ १७ ॥
 संमुञ्च्य शुष्कं विपचेद्गर्ते गजमिते भिषक् ।
 स्वाङ्गशीतं समुद्धृत्य संपुटे सौषधं दृढम् ॥ १८ ॥
 कूष्माण्डवारिणा खल्वे संमर्द्यापूपिकां चरेत् ।
 पुनरेवंप्रकारेण पुटद्वंद्वं समाचरेत् ॥ १९ ॥
 महातालेश्वरो नाम्ना रसः कुष्ठान्तकृद्भवेत् ।
 आर्द्रकद्रवसंयुक्तं दद्याद्बुधोन्मितं रसम् ॥ २० ॥
 दिनत्रयं ततो गुञ्जाद्वयं वा रक्तिकात्रयम् ।
 षष्टिकामक्तमार्देण सह पथ्यं समाचरेत् ॥ २१ ॥
 यदि स्थातुं न शक्नोति तदा दुग्धौदनं चरेत् ।
 गलत्कुष्ठानि सर्वाणि हृतघ्राणाङ्गुलीनि च ॥ २२ ॥



अष्टादशापि नश्यन्ति मण्डलान्नात्र संशयः ।

इति महातालकेश्वरो रसः ।

अथान्यो महातालकेश्वरो रसः—

तालं ताप्यशिलासूतं शुद्धं सैन्धवटङ्कणम् ॥ २३ ॥

समांशं चूर्णयेत्खल्वे सूताद्विगुणगन्धकम् ।

गन्धतुल्यं मृतं ताम्रं जम्बीरैर्दिनपञ्चकम् ॥ २४ ॥

मर्दितं षट्पुटेः पाच्यं मूधरे संपुटोदरे ।

पुटे पुटे द्वैर्मर्द्यं सर्वमेतत्तु षट्पलम् ॥ २५ ॥

द्विपलं मारितं ताम्रं लोहमस्म चतुष्पलम् ।

जम्बीराम्लेन तत्सर्वं दिनं मर्द्यं पुटेष्टु ॥ २६ ॥

त्रिंशदंशं विषं चास्य क्षिप्त्वा तस्य विचूर्णयेत् ।

माहिषाज्येन संमिश्रं निष्कार्धं भक्षयेत्सदा ॥ २७ ॥

मध्वाज्यैर्वाकुचीचूर्णं कर्षमात्रं लिहेदनु ।

सर्वं कुष्ठं निहन्त्याशु महातालेश्वरो रसः ॥ २८ ॥

इति महातालेश्वरो रसः ।

अथ भल्लातकावलेहः—

निम्बगोपारुणाकट्वी*त्रायन्तीत्रिफलाघनम् ।

पर्पटावल्गुजानन्तावचाखदिरचन्दनम् ॥ २९ ॥

पाठाशुण्ठीसटीमार्गीवासाभूनिम्बवत्सकम् ।

श्यामेन्द्रवारुणीमूर्वाविडङ्गानि विषानलम् ॥ ३० ॥

हस्तिकर्णामृताब्दाह्वपटोलं रजनीद्वयम् ।

कृष्णारग्वधसप्ताह्वं शिरीषं चोच्चटाफलम् ॥ ३१ ॥

मञ्जिष्ठा लाङ्गली रास्ना नक्तमालः पुनर्नवा ।

दन्तीबीजकसारश्च भृङ्गराजकुरण्टकम् ॥ ३२ ॥

एषां द्विपलिकान्मागाञ्जलद्रोणे विपाचयेत् ।

अष्टमागावशिष्टं च कषायमवतारयेत् ॥ ३३ ॥

भल्लातकसहस्राणि क्षिपेच्छिच्चाऽर्मणैऽम्मसि ।

चतुर्मागावशिष्टं तु कषायमवतारयेत् ॥ ३४ ॥

* क. मृद्वी ।

१ ग. 'धानिल' ।

तौ कषायौ समादाय वस्त्रपूतौ तु कारयेत् ।
 एकीकृत्य कषायौ तौ पुनरग्रावधिभ्रयेत् ॥ ३५ ॥
 गुडस्यैकतुलां दत्त्वा लेहवत्साधयेद्भिषक् ।
 मल्लतकसहस्रस्य तत्र बीजानि दापयेत् ॥ ३६ ॥
 त्रिकटुं त्रिफलां मुस्तं विडङ्गं चित्रकं तथा ।
 चन्दनं सैन्धवं कुष्ठं दीप्यकं च पलं पलम् ॥ ३७ ॥
 चातुर्जातं च सञ्चूर्ण्य घृतभाण्डे निधापयेत् ।
 सौगन्धिकस्य दातव्यं चूर्णं पलचतुष्टयम् ॥ ३८ ॥
 महामल्लतको ह्येष महादेवेन निर्मितः ।
 प्राणिनां तु हितार्थाय नाशयेच्छीघ्रमेव तु ॥ ३९ ॥
 श्वित्रमौदुम्बरं ददुमृष्यजिह्वं सकाकणम् ।
 पुण्डरीकं च चर्मस्थं विस्फोटं रक्तमण्डलम् ॥ ४० ॥
 कृच्छ्रं कापालिकं कुष्ठं पामां चापि विपादिकाम् ।
 अशांसि षट्प्रकाराणि श्वासं कासं भगंदरम् ॥ ४१ ॥
 अनुपानेन दातव्यं छिन्नातोयेन तं भिषक् ।
 भोजनेन सदा योज्यमुष्णं चाम्लं विशेषतः ॥ ४२ ॥
 अन्यान्यपि च कुष्ठानि नाशयेन्नात्र संशयः ।

इति मल्लतकावलेहः ।

अथ कुष्ठकुठारः—

शुद्धसूतसमो गन्धो मृतायस्तान्नगुग्गुलुः ॥ ४३ ॥
 त्रिफला च महानिम्बाश्चित्रकश्च शिलाजतु ।
 इत्येतच्चूर्णितं कुर्यात्प्रत्येकं पलसंमितम् ॥ ४४ ॥
 चतुष्पष्टिः करञ्जस्य बीजचूर्णपलानि वै ।
 तावद्द्वयं मृतं तान्नं मध्वाज्याभ्यां विलोडयेत् ॥ ४५ ॥
 क्षिग्धे भाण्डे स्थितं खादेद्विनिष्कं सर्वकुष्ठनुत् ।
 रसः कुष्ठकुठारोऽयं गलत्कुष्ठनिवारणः ॥ ४६ ॥

इति कुष्ठकुठारः ।

अथाष्टादशविधकुष्ठचिकित्सा—

शालिकोद्वगोधूमयवमुद्गादयो हिताः ।
 पुराणाः कुष्ठिते तिक्तशाकजाङ्गलसंयुताः ॥ ४७ ॥

नीचलोमनखो नित्यं नित्यमौषधतत्परः ।

योषिन्मांससुरावर्जी कुष्ठी कुष्ठमपोहति ॥ ४८ ॥

इत्यष्टादशविधकुष्ठचिकित्सा ।

अथ श्वित्राण्याह—

श्वित्रिणो हृतदोषस्य हृतरक्तस्य वाऽसकृत् ।

खदिराम्बुयवान्नानां तृप्तस्य मलयूरसः ।

सगुडः शस्यते पाने यवागूमण्डभोजनः ॥ ४९ ॥

खदिरामलककषायं बाकुचिबीजान्वितं पिबेन्नित्यम् ।

शङ्खेन्दुकुन्दधवलं श्वित्रं हन्तीह तच्छीघ्रम् ॥ ५० ॥

बिभीतकत्वङ्मलयूजटानां काथेन पीतं गुडसंयुतेन ।

आवल्गुजं बीजमपाकरोति श्वित्राणि कुष्ठान्यपि पुण्डरीकम् ॥ ५१ ॥

इति बिभीतकादिकाथः ।

अथ स्वल्पनीलीवृतम्—

भेचकमलयूवल्कलकलितरुफलवल्कयोः कृतः काथः ।

गुडबाकुचीरजोयुक्पीतः श्वित्राणि नाशयति ॥ ५२ ॥

मार्कवपत्रं खादेद्भृष्टं तैलेन लोहपात्रस्थम् ।

बीजकशृतं च दुग्धं तदनु पिबेच्छीघ्रनाशाय ॥ ५३ ॥

वायस्यैडगजाकुष्ठकृष्णाभिर्गुटिकाः कृताः ।

वस्तमूत्रेण संपिष्टा घ्नन्ति श्वित्राणि लेपतः ॥ ५४ ॥

चित्रकगुञ्जावल्कलमलयूवल्कं प्रपिष्टमिममूत्रेण ।

लेपाद्घ्नन्ति श्वित्रं कतिचिद्दहोमिश्रिरस्थमपि ॥ ५५ ॥

शिलापामार्गमस्मापि लेपाच्छीघ्रं विनाशयेत् ।

किं पुनर्यदि युज्येत धनंजयजटात्वचा ॥ ५६ ॥

कुडवो बल्गुजबीजाद्भरितालचतुर्थभागसंमिश्रः ।

मूत्रेण गवां पिष्टः सुवर्णकरणः परं श्वित्रे ॥ ५७ ॥

त्रिफलां नीलिनीपत्रं लोहचूर्णं रसाञ्जनम् ।

श्वेतगुञ्जां दन्तिदन्तमस्म तुत्थं च मार्कवम् ॥ ५८ ॥

मेषीदुग्धेन संपिष्य स्थापयेद्लोहमाजने ।

दिनमेकं ततो लिम्पेन्मुहुः श्वित्रेष्वनुक्रमात् ।

श्वित्राण्यनेन लेपेन निजवर्णं त्यजन्ति हि ॥ ५९ ॥

सायोरजःकृष्णतिलाञ्जनानि सावल्गुजान्यामलकानि जग्ध्वा ।
 पिष्टानि मृङ्गस्य सकृद्रसेन हन्युः किलासं परि घृष्टलेपात् ॥ ६० ॥
 वराया आढकप्रस्थौ द्वावयोरजसो मतौ ।
 वायसीकाकमाच्योस्तु द्वे तुले शङ्खिनी तुला ॥ ६१ ॥
 द्विद्रोणेऽपां पचेदेतत्पादभागावशेषितम् ।
 पचेत्तेन घृतं प्रस्थं कषायेण भिषग्वरः ॥ ६२ ॥
 अरुणां वत्सकफलं ज्यूषणं देवदारु च ।
 निदिग्धिकां मृङ्गराजं पारावतपदीमपि ॥ ६३ ॥
 पिष्ट्वा क्षिपेद्जामूत्रे कल्कमेनमतन्द्रितम् ।
 नीलकं नाम विख्यातं घृतं श्वित्रनिषूदनम् ॥ ६४ ॥
 श्वित्राणि रञ्जयत्येतत्पानाभ्यञ्जनयोजितम् ।
 इति स्वल्पनीलीघृतम् ।

अथ महानीलघृतम्—

आरग्वधं वायसी च सुरसा मदयन्तिका ॥ ६५ ॥
 एकैकस्य तुलाऽऽदेया त्रैफलं चाऽऽढकत्रयम् ।
 दन्ती दारुहरिद्रा च कुटजं वरुणत्वचः ॥ ६६ ॥
 चित्रकश्चार्कमूलं च काकमाची निदिग्धिका ।
 एषां दशपलान्भागान्श्चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत् ॥ ६७ ॥
 अष्टभागावशिष्टं तु पूतं पुनरधिश्रयेत् ।
 दधि सर्पिश्च दुग्धं च गोमूत्रं च शकृद्रसम् ॥ ६८ ॥
 एकैकमाढकं दद्यात्प्रत्येकं वस्त्रगालितम् ।
 अवल्गुजं त्रिकटुकं नक्तमालफलानि च ॥ ६९ ॥
 त्रिफला चित्रको दन्ती मुस्तं कटुकरोहिणी ।
 पिचुमन्दश्च शिगुश्च तथेङ्गुदिफलानि च ॥ ७० ॥
 किराततिक्तकं श्यामा नीलिनी नीलमुत्पलम् ।
 कल्कैरेतैर्घृतं सिद्धं पाययेच्छ्वित्ररोगिणम् ॥ ७१ ॥
 महानीलमिति ख्यातमेतच्छ्वित्रापहं परम् ।
 भगंदरं तथाऽर्शांसि कुष्ठान्यष्टादशैव तु ॥ ७२ ॥
 अथर्वविहितो योगो ब्रह्मदण्ड इवाऽऽहितः ।
 श्वित्रिणां श्वित्ररोगेषु पानाभ्यञ्जनतः स्मृतः ॥ ७३ ॥

इति महानीलघृतम् ।



अथ ज्योतिष्मतीतैलम्—

मयूरकक्षारजले सप्तकृत्वः परिश्रुते ।

सिद्धं ज्योतिष्मतीतैलमभ्यङ्गाच्छिब्रनाशनम् ॥ ७४ ॥

इति ज्योतिष्मतीतैलम् ।

अथ श्वित्रेभसिंहो रसः—

शुद्धसूतबालिकज्जलं शुभं बल्युगममवलिह्य सर्पिषा ।

वायसीशशिकलाबिभीतकक्षौद्रमक्षमितमैक्षवान्वितम् ।

शीलयेदनु पयः पिबेदिमं श्वित्रदन्तिहरिरीरितो रसः ॥ ७५ ॥

इति श्वित्रेभसिंहो रसः ।

अथ शशिलेखा वटी—

शुद्धसूतं समं गन्धं तुल्यं च मृतताम्रकम् ।

मर्दितं बाकुचीक्वाथैर्दिनैकं वटकीकृतम् ॥ ७६ ॥

निष्कमात्रां सदा खादेच्छिब्रघ्नीं शशिलेखिकाम् ।

बाकुचीतैलकर्षेकं सक्षौद्रमनु पाययेत् ॥ ७७ ॥

इति शशिलेखा वटी ।

अथ श्वेतारिः—

शुद्धसूतसमं गन्धं त्रिफलां भृङ्गराजकम् ।

गुञ्जां मल्लातकं कृष्णां निम्बबीजं समं पृथक् ॥ ७८ ॥

मर्दयेद्भृङ्गजद्रावैर्दिनमेकं निरन्तरम् ।

वायसीत्वग्रसैर्देया भावनाश्चैकविंशतिः ॥ ७९ ॥

बाकुचीबीजनिर्घृहैस्तावत्तिस्रः प्रकल्पयेत् ।

ततः सिद्धो भवेदेष श्वेतारिर्नामतो रसः ।

मध्वाज्यैर्निष्कमात्रं तं खादेच्छिब्रविनाशनम् ॥ ८० ॥

इति श्वेतारिः ।

अथ कुष्ठाद्युपदेशादौ तालादिलेपनम्—

तालं सूतबली शिला च तुवरीसिक्थं वचा धूपकं

मुद्गदारं सुरशङ्खजीरसकं गैरीकसिन्दूरकम् ।

पूगं माहिषशृङ्गकं द्विरजनी निम्बं वरा माक्षिकं

भृष्टं तुत्यमिदं समांशमखिलं चूर्णद्विभागं घृतम् ॥ ८१ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

पात्रे ताम्रमये निधाय सकलं ताम्रेण संघर्षयेद्
 यामैकं हरितालेपनमिदं सर्वान्वणान्नाशयेत् ।
 पूयं स्रावयुतं कृमींश्च पिटकां सर्वोपदंशव्रणा-
 न्नाडीकुष्ठभगंदरान्मुनिदिनात्सर्वान्गदान्नाशयेत् ॥ ८२ ॥
 इति कुष्ठाद्युपदंशादौ तालादिलेपनम् ।

अथ तालकभस्म रसरत्नप्रदीपात्—
 तले काञ्चिकदेवपुष्पकवराकाथे तु दोलाभिधे
 यन्त्रे तालकशोधनं निगदितं तं दालकं भावयेत् ।
 वारान्विंशति पिप्पलोत्थसालिलैः खल्वे निधायाऽऽतपे
 बद्ध्वा गोलमथास्य पिप्पलजयामूत्यर्धपूर्णं न्यसेत् ॥ ८३ ॥
 भाण्डे तत्र पुनर्विभूतिभरणं कृत्वा शरावं मुखे
 दत्त्वाऽग्नौ विपचेद्ब्रजाह्वयपुटे वन्यैः सहस्रोपलैः ।
 एवं यामचतुष्टयेन विशदं स्याद्भस्म सर्वं गदे
 योग्यं कुष्ठखुडोपदंशपवने नाडीव्रणे शस्यते ॥ ८३ ॥
 इति तालकभस्म रसरत्नप्रदीपात् ।

अथ तालकभूतिक्रिया माधवेनानुभूता—
 शुद्धं पत्राख्यतालं द्विपलपरिमितं मित्रदुग्धैर्दिनैकं
 संमर्द्य खल्वमध्ये दृढतरगुटिकां भस्ममूषघृतां च (?) ।
 कृत्वा भस्माविलैस्त्रिः परिमितवसनैर्लेपितां तां च मूषां
 विच्छे मृत्खर्परेश्चतथजभासितयुगप्रस्थमात्रं विधेयम् ॥ ८४ ॥
 तस्मिन्मूषां च धृत्वा तदुपरि भासितं प्रस्थयुग्मं दृढं च
 चुह्यामारोप्य पश्चाद्बटुककुभपतीन्पूजयेद्योगसिद्धये ।
 कुर्यादश्वत्थकाष्ठैर्विधिवदथ कृशानुस्त्रियामं च पश्चा-
 द्छुद्धोऽभूत्तालकेशो हिमकरधवलः सर्वरोगेषु योज्यः ॥ ८५ ॥
 गुञ्जैकं वाऽर्धगुञ्जं निखिलगदहरेणानुपानेन दद्यात्
 कुष्ठं मेहोपदंशान्पवनकसनकं रक्तपित्तं खुडं च ।
 पाण्डुं शोफं ज्वरादीन्व्रणमखिलमजीर्णं निहन्ति क्रमेण
 क्षाराम्लं वातवर्ज्यं वलिपलितविहीनो भवेत्सेव्यमानः ॥ ८६ ॥
 इति तालभूतिक्रिया माधवेनानुभूता ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां कुष्ठनिदानचिकित्साकथनं नाम विंशत्यधिक-
 शततमस्तरङ्गः ॥ १२० ॥

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and activities. It emphasizes that this is crucial for ensuring transparency and accountability in the organization's operations.

2. The second part outlines the specific procedures for recording and reporting data. It details the steps involved in data collection, analysis, and the frequency of reporting to the relevant stakeholders.

3. The third part addresses the challenges associated with data management and provides strategies to overcome them. It highlights the need for robust security measures to protect sensitive information from unauthorized access.

4. The fourth part discusses the role of technology in enhancing data management processes. It explores various software solutions and tools that can streamline data collection, storage, and analysis, thereby improving efficiency and accuracy.

5. The fifth part concludes by summarizing the key points and reiterating the commitment to maintaining high standards of data integrity and security. It also mentions the ongoing nature of these efforts and the willingness to adapt to new challenges as they arise.

अथोदृद्शीतपित्तकोठनिदानम्—

शीतमारुतसंस्पर्शात्प्रदुष्टौ कफमारुतौ ।
 पित्तेन सह संभूय बहिरन्तर्विसर्पतः ॥ १ ॥
 पिपासारुचिहृत्लासदेहसादाङ्गगौस्वम् ।
 रक्तलोचनता तेषां पूर्वरूपस्य लक्षणम् ॥ २ ॥
 वरटीदंशसंस्थानः शोथः संजायते बहिः ।
 सकण्डूतोदबहुलश्छर्दिज्वरविदाहवान् ॥ ३ ॥
 उदृदमिति तं प्राहुः शीतपित्तमथापरे ।
 वाताधिकं शीतपित्तमुदृदं तु कफाधिकम् ॥ ४ ॥
 सोत्सङ्गैश्च सरागैश्च कण्डूमन्त्रिश्च मण्डलैः ।
 शैशिरः कफजो व्याधिरुदृदः परिकीर्तितः ॥ ५ ॥
 असम्यग्बमनोदीर्णपित्तश्लेष्मविनिग्रहैः ।
 मण्डलानि सकण्डूनि रागवन्ति बहूनि च ॥ ६ ॥
 उत्कोठः सानुबन्धस्तु कोठ इत्यभिधीयते ।

इत्युदृद्शीतपित्तकोठनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

शीतपित्ते तु वमनं पटोलारिष्टवासकैः ॥ ७ ॥
 त्रिफलापुरकृष्णाभिविरेश्वात्र शस्यते ।
 अभ्यङ्गः कटुतैलेन सेकश्चोष्णेन वारिणा ॥ ८ ॥
 त्रिफलां क्षौद्रसंयुक्तां खादेद्वा नवकार्षिकीम् ।
 आर्द्रकस्य रसः पेयः पुराणगुडमिश्रितः ॥ ९ ॥
 शीतपित्तापहः श्रेष्ठो वह्निमान्द्यविनाशकः ।
 सिद्धार्थरजनीकल्कं प्रपुञ्जाटतिलैः सह ॥ १० ॥
 कटुतैलेन संमिश्रमेतदुद्वर्तनं हितम् ।
 यः सर्पिःसैन्धवाम्यक्तदेह आरक्तकं बली ॥ ११ ॥
 शयीत तस्य शाम्यन्ति शीतपित्तादयो गदाः ।
 सगुडं दीप्यकं यस्तु किञ्चित्कटुकतैलकम् ॥ १२ ॥



भक्षयेत्तस्य नश्यन्ति सोदर्दाः कोठसंज्ञकाः ।
 सिद्धार्थरजनीकुष्ठप्रपुन्नाटतिलैः सह ॥ १३ ॥
 कटुतैलेन संमिश्रमेतदुद्धर्तनं हितम् ।
 शीतपित्त उद्वेदं च तथोत्कोष्ठाभिधे गदे ॥ १४ ॥

इति सिद्धार्थककाथः ।

अथाऽऽर्द्रकखण्डम्—

घृतगैरिकसिन्धूत्थकुसुमकुसुमैः समैः ।
 उद्धर्तनं प्रशंसन्ति कोठोदर्दादिनाशने ॥ १५ ॥
 क्रिमिद्वुहरः कार्यः शीतपित्तेऽखिलक्रमः ।
 घृतं पीत्वा महातिक्तं शोणितं मोक्षयेत्तथा ॥ १६ ॥
 म्लिग्धस्विन्नस्य संशुद्धिमादौ कोठे समाचरेत् ।
 ततः कुष्ठहरः सर्वो विधेयो विधिरादरात् ॥ १७ ॥

निम्बस्य पत्राणि सदा घृतेन धात्रीविमिश्राणि नरः प्रयुज्यात् ॥
 विस्फोटकोठक्रिमिशीतपित्तं कण्डूं सपित्तं च कफं च हन्यात् ॥ १८ ॥

आर्द्रकं प्रस्थमेकं स्याद्गोघृतं कुडवद्वयम् ।
 गोदुग्धं प्रस्थयुगुलं तदर्धा शर्करा मता ॥ १९ ॥
 पिप्पलीपिप्पलीमूलमरिचं विश्वभेषजम् ।
 चित्रकं च बिडङ्गं च मुस्तकं नागकेसरम् ॥ २० ॥
 त्वगेलापत्रकर्चूरं प्रत्येकं पलमात्रकम् ।
 विधाय पाकं विधिवत्खादेदेतत्पलोन्मितम् ॥ २१ ॥
 इदमार्द्रकखण्डाख्यं प्रातर्भुक्ते व्यपोहति ।
 शीतपित्तमुद्वेदं च शीतमुत्कोठ एव च ॥ २२ ॥
 यक्ष्माणं रक्तपित्तं च कासश्वासमरोचकम् ।
 वातगुल्ममुदावर्तं शोथकण्डूकृमीनपि ॥ २३ ॥
 दीपयेदुदरे वह्निं बलवीर्यं विवर्धयेत् ।
 वपुः पुष्टं प्रकुरुते तस्मात्सेव्यमिदं सदा ॥ २४ ॥

इत्यार्द्रकखण्डम् ।

अथ ताम्रयोगः—

शुद्धं पारदगन्धकाभिकलितं युक्त्या हतं यः पुमा-
 नद्यात्ताम्रमनूतनं शशिकलाक्षौद्रान्वितं पथ्यमुक् ।

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

कोठोदर्दकशीतपित्तजरुजो नश्यन्त्यवश्यं दिनै-
रल्पैरस्य नरस्य यान्ति विलयं कुष्ठानि चाष्टादश ॥ २५ ॥
इति ताम्रयोगः ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यामुदर्दशीतपित्तकोठनिदानचिकित्साकथनं
नामैकविंशत्यधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १२९ ॥

अथ द्वाविंशत्यधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथाम्लपित्तनिदानम्—

विरुद्धदुष्टाम्लविदाहिपित्तप्रकोपिपानान्नभुजो विदग्धम् ।
पित्तं स्वदेहोपचितं पुरा यत्तदम्लपित्तं प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥ १ ॥
अविपाककृमोत्क्लेदतिकांम्लोद्गारगौरवैः ।
हृत्कण्ठदाहारुचिभिरम्लपित्तं वदेद्विषक् ॥ २ ॥

पित्तजमाह—

तृड्दाहमूर्छाभ्रममोहकारि प्रयात्यधो वा विविधप्रकारम् ।
हृल्लासकोठानलसादहर्षस्वेदाङ्गपीतत्वकरं कदाचित् ॥ ३ ॥
वान्तं हरित्पीतकनीलकृष्णमारुक्तरक्ताभमतीव चाम्लम् ।
मांसोदकामं त्वतिपिच्छलामं श्लेष्मानुयातं विविधं रसेन ॥ ४ ॥
भुक्ते विदग्धेऽप्यथ वाऽप्यभुक्ते करोति तिकांम्लवमिं कदाचित् ।
उद्गारमेवंविधमेव कण्ठहृत्कुक्षिदाहं शिरसो रुजां वा ॥ ५ ॥
करचरणदाहमौष्ण्यं महतीमरुचिं ज्वरं च कफपित्तम् ।
जनयति कण्ठमण्डलपिटकांचितगात्ररोगचयम् ॥ ६ ॥
रोगोऽयमम्लपित्ताख्यो यत्नात्संसाध्यते नवः ।
चिरोत्थितो भवेद्याप्यः कष्टसाध्यः स कस्यचित् ॥ ७ ॥
सानिलं सानिलकफं सकफं तच्च लक्षयेत् ।
दोषलिङ्गेन मतिमान्मिषड्योहकरं हि तत् ॥ ८ ॥

वातजमाह—

कम्पप्रलापमूर्छाचिमिचिमिगात्रावसादशूलानि ।
तमसो दर्शनविभ्रमप्रमोहहर्षाः समीरयुते ॥ ९ ॥



कफजमाह—

कफनिष्ठीवनगौरवजडतारुचिशीतसाद्वमिलेपाः ।
दहनबलसादकण्डूनिद्राश्चिह्नं कफानुगते ।

वातकफजमाह—

उभयमिदमेव चिह्नं मारुतकफसंभवे भवत्यम्ले ॥ १० ॥

कफपित्तजमाह—

तिक्ताम्लकटुकोद्गारवामिहृत्कण्ठदाहकृत् ।
भ्रमो मूर्च्छाऽरुचिश्छर्दिरालस्यं च शिरोरुजा ॥ ११ ॥
प्रसेको मुखमाधुर्यं श्लेष्मपित्तस्य लक्षणम् ।
इत्यम्लपित्तनिदानम् ।

अथैतच्चिकित्सा—

अम्लपित्ते तु वमनं पटोलारिष्टवासकैः ॥ १२ ॥
कारयेन्मर्दनं क्षौद्रैः सिन्धुयुक्तैस्ततो मिषक् ।
विरेचनं त्रिवृच्चूर्णं मधुधात्रीफलद्रवैः ॥ १३ ॥
सम्यग्वान्तविरिक्तस्य सुस्निग्धस्यानुवासनम् ।
आस्थापनं चिरोत्थेऽत्र देयं दोषाद्यपेक्षया ॥ १४ ॥
तिक्तभूयिष्ठमाहारं पानं चापि प्रयोजयेत् ।

पथ्यमाह—

यवगोधूमचणकमकुष्ठकमसूरकाः ॥ १५ ॥
मुद्गाढकीयवाः पथ्याः क्षीरं च ससितं नवम् ।
पुराणशालिलाजानां सक्तून्समधुशर्करान् ॥ १६ ॥
घोलं पीत्वाऽम्लपित्तार्तः पिबेत्तद्गोगशान्तये ।
पूतीकरञ्जशुङ्गानि घृतभृष्टानि भक्षयेत् ॥ १७ ॥
एणमांसरसं वाऽपि सह मक्तेन भक्षयेत् ।
बिदग्धे भोजने कार्यं वमनं कोष्णवारिणा ॥ १८ ॥
अन्नं संमूर्छितं तस्य सुखं निह्नियते यतः ।
ऊर्ध्वगं वमनैर्विद्वानधोगं रेचनैर्हरेत् ॥ १९ ॥

1. The first part of the document is a letter from the President of the United States to the Congress, dated January 3, 1801.

2. The second part is a report from the Secretary of the Treasury, dated January 10, 1801.

3. The third part is a report from the Secretary of the Navy, dated January 10, 1801.

4. The fourth part is a report from the Secretary of the War, dated January 10, 1801.

5. The fifth part is a report from the Secretary of the Interior, dated January 10, 1801.

6. The sixth part is a report from the Secretary of the State, dated January 10, 1801.

7. The seventh part is a report from the Secretary of the War, dated January 10, 1801.

8. The eighth part is a report from the Secretary of the Navy, dated January 10, 1801.

9. The ninth part is a report from the Secretary of the State, dated January 10, 1801.

10. The tenth part is a report from the Secretary of the War, dated January 10, 1801.

11. The eleventh part is a report from the Secretary of the Navy, dated January 10, 1801.

कृतवमनविरेकस्यापि दोषोपशान्ति-
 भवति न यदि कार्यो रक्तमोक्षोऽस्य युक्त्या ।
 कृतशिशिरविलेपस्याम्लपित्तघ्नमक्षयौ-
 दनसमुदिततृप्तेर्वातरक्षा च कार्या ॥ २० ॥
 चित्रकैरण्डमूलानि यवाश्च सयवासकाः ।
 जलेन कथितं पीतं कोष्ठदाहाम्लपित्तजित् ॥ २१ ॥

इति चित्रकादिकाथः ।

अथ द्राक्षादिगुटी—

द्राक्षापथ्ये समे कृत्वा तथोस्तुल्यां सितां क्षिपेत् ।
 संकुट्याक्षद्वयमितां तत्पिण्डीं रचयेद्भिषक् ॥ २२ ॥
 तां खादेदम्लपित्तार्तो हृत्कण्ठदहनापहाम् ।
 तृणमूर्च्छाभ्रममन्दाग्निनाशिनीमामवातहाम् ॥ २३ ॥

इति द्राक्षादिगुटी ।

अथाविपत्तिकरं चूर्णम्—

एलावरात्रिकदुमुस्तविडङ्गपत्रै-
 स्तुल्यं लवङ्गमखिलं द्विगुणत्रिधारम् ।
 चूर्णीकृतं सकलतुल्यसितं तदम्ल-
 पित्तोदरघ्नमविपत्तिकरं नराणाम् ॥ २४ ॥

इत्यविपत्तिकरं चूर्णम् ।

अथैलादिचूर्णम्—

एलातुगाव्योषशिवाभयानां
 त्वग्ग्रन्थिपाटीरदलाम्लकानाम् ।
 चूर्णं सितातुल्यमपाकरोति
 प्रौढाम्लपित्तं दिवसास्यमुक्तम् ॥ २५ ॥

इत्यैलादिचूर्णम् ।

अथाभयाद्यवलेहः—

अभयापिप्पलीद्राक्षासिताधन्वयवासकम् ।
 मधुना कण्ठहृद्दाहमूर्च्छाश्लेष्माम्लपित्तनुत् ॥ २६ ॥

इत्यभयाद्यवलेहः ।

अथ यवादिकाथः—

निस्तुषयववृषधात्रीकाथितं सलिलं त्रिगन्धमधुसहितम् ।
वृत्ततरमभिहरति वमिं संजनितामम्लपित्तेन ॥ २७ ॥
इति यवादिकाथः ।

अथ गुडूच्यादिः—

गुडूचीचित्रकारिष्टपटोलैः काथितं पिबेत् ।
क्षौद्रयुक्तं निहन्त्येतच्छर्दिं पित्ताम्लसंभवाम् ॥ २८ ॥
इति गुडूच्यादिः ।

अथ दशाङ्गकाथः—

वासामृतापर्पटकनिम्बभूनिम्बमार्कवैः ।
त्रिफलाकुलकैः काथः सक्षौद्रश्चाम्लपित्ताहा ॥ २९ ॥
इति दशाङ्गकाथः ।

अथ पटोलादिकषायः—

पटोलधात्रीयवपिप्पलीनां काथं पिबेत्क्षौद्रयुतं सुशीतम् ।
स ह्यम्लपित्तं विनिहन्ति शीघ्रमग्नेर्बलं बाहुबलं च दद्यात् ॥ ३० ॥
इति पटोलादिकषायः ।

अथ त्रिकटुकाद्यं चूर्णं लेहश्च—

त्रिकटुकसकण्टकारीपर्पटकारिष्टकुटजबीजानाम् ।
सौराष्ट्रिकापटोलीत्रायन्तीदारुमूर्वाणाम् ।
तिक्तामृणालमलयजकलिङ्गकैलाकिराततिक्तानाम् ।
सवचातिविषाकेसरदीप्यकमधुशिग्रुबीजानाम् ॥ ३२ ॥
चूर्णं पटवृष्टमिदं पीतं शिशिरेण वारिणा प्रातः ।
क्षौद्रेण चाथ लीढं प्रायेणाधोगतं हन्ति ।
अतिविषममम्लपित्तं पथ्यमुजो वासरैः कौश्वित् ॥ ३३ ॥
इति त्रिकटुकाद्यं चूर्णं लेहश्च ।

अथ पिप्पलीघृतम्—

अधोगतेऽम्लपित्ते तु पैत्तिकग्रहणीविधिः ।
पाचनं दीपनीयं च वीक्ष्य वीक्ष्यावचारयेत् ॥ ३४ ॥
ज्वलन्तमिव चाऽऽत्मानं मन्यते योऽम्लपित्तवान् ।
तस्य संशोधनं पथ्यं न शान्तिः शोधनं विना ॥ ३५ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

2. The second part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of chairman.

3. The third part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of secretary.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of treasurer.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of member-at-large.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of member-at-large.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of member-at-large.

अचिरोत्थे चिरोत्थे वा वमनं तत्र कारयेत् ।
 सवाते सविवन्धेऽस्मिन्निहता कंसहरीतकी ॥ ३६ ॥
 अम्लपित्ते प्रयोक्तव्यः कफपित्तहरो विधिः ।
 गुडकूष्माण्डकं चैव तथा खण्डामलक्यपि ॥ ३७ ॥
 गुडक्षीरकणासिद्धं सर्पिरत्र प्रयोजयेत् ।
 पिप्पलीकाथकलकाभ्यां घृतं सिद्धं मधुप्लुतम् ॥ ३८ ॥
 अम्लपित्तविनाशाय प्रातरुत्थाय ना पिबेत् ।

इति पिप्पलीघृतम् ।

अथ शतावरीघृतम्—

शतावरीमूलकल्कं घृतप्रस्थं पयः समम् ॥ ३९ ॥
 पचेन्मृद्वग्निना सम्यक्क्षीरं दत्त्वा चतुर्गुणम् ।
 नाशयेद्म्लपित्तं च वातपित्तोत्थितान्गदान् ॥ ४० ॥
 रक्तपित्तं तृषं मूर्च्छां श्वासं संतापमेव च ।
 पेयोऽन्नेन्दीवरीमूलरसो वैद्यैर्निगद्यते ॥ ४१ ॥

इति शतावरीघृतम् ।

अथ द्राक्षाद्यं घृतम्—

द्राक्षामृताशकपटोलपत्रैः सोशीरधात्रीघनचन्दनैश्च ।
 त्रायन्तिकापद्मकिरातधान्यैः कल्कैः पचेत्सर्पिरूपेतमेभिः ॥ ४२ ॥
 भुञ्जीत मात्रां सह भोजनेन द्राक्षाघृतस्यास्य पलप्रमाणाम् ।
 बलासपित्तं ग्रहणीं प्रवृद्धां कासाग्निसादज्वरमम्लपित्तम् ।
 सर्वं निहन्याद्घृतमेतदाशु सम्यक्प्रयुक्तं ह्यमृतोपमं च ॥ ४३ ॥

इति द्राक्षादिघृतम् ।

अथ नारिकेलखण्डपाको योगरत्नावलितः—

कुडवपरिमितं स्यान्नारिकेलं सुपिष्टं
 पलपरिमितसर्पिःपाचितं तुल्यखण्डम् ।
 निजपयसि तदेतत्प्रस्थमात्रे विपक्वं
 गुडवदथ सुशीते शाणमात्रं क्षिपेच्च ॥ ४४ ॥
 धान्याकपिप्पलिपयोदतुगाद्विजीरैः
 साकं त्रिजातमिमकेसरवद्विचूर्णम् ।

हन्त्यम्लपित्तमरुचिं क्षयमस्रपित्तं

शूलं वमिं सकलपौरुषकारि पुंसाम् ॥ ४५ ॥

इति नारिकेलखण्डपाको योगरत्नावलितः ।

अथ खण्डपिप्पल्यवलेहो योगरत्नावल्याः—

पिप्पल्याः कुडवं चूर्णं घृतस्य कुडवद्वयम् ।

पलषोडशकं खण्डाच्छतावर्याः पलाष्टकम् ॥ ४६ ॥

शिवायाः स्वरसस्यापि पलषोडशकं मतम् ।

क्षीरप्रस्थद्वये साध्ये लेहीभूतेऽत्र निक्षिपेत् ॥ ४७ ॥

त्रिजातकाभयाजाजीधान्यमुस्तशिवातुगाः ।

एतेषां कार्षिकं चूर्णं कर्षार्धं कृष्णजीरकम् ॥ ४८ ॥

नागरं नागकं जातीफलं समरिचं हिमम् ।

दत्त्वा पलत्रयं क्षौद्रं स्निग्धभाण्डे विनिक्षिपेत् ॥ ४९ ॥

प्रातर्यथाबलं लिह्यादम्लपित्तप्रशान्तये ।

हृल्लासारोचकच्छर्दिपिपासादाहनाशनम् ॥ ५० ॥

शूलहृद्रोगशमनं हृद्यं चेदं रसायनम् ।

इति खण्डपिप्पल्यवलेहो योगरत्नावल्याः ।

अथ रसामृतम्—

त्रिकटुत्रिकलामुस्ताविडङ्गदहनाः समाः ॥ ५१ ॥

एतेषां चूर्णितानां च प्रत्येकं तु पलं भवेत् ।

कर्षद्वयं गन्धकस्य रसस्य कवलग्रहः ॥ ५२ ॥

बिडालपदमात्रं तु लिह्यात्समधुसर्पिषा ।

शीतोदकं चानुपिबेत् क्रमाद्वर्षं पयोऽपि वा ॥ ५३ ॥

अम्लपित्तं चाग्निमान्द्यं परिणामरुजं तथा ।

कामलां पाण्डुरोगं च हन्यादेतन्न संशयः ॥ ५४ ॥

इति रसामृतम् ।

अथ लीलाविलासो रसः—

रसो बलिव्योम रविश्च लोहं धात्र्यक्षनीरैस्त्रिदिनं विमर्द्य ।

तदुत्पमृष्टं मृदु मार्कवेन संमर्दयेदस्य च वलयुग्मम् ।

हन्त्यम्लपित्तं मधुनाऽवलीढं लीलाविलासो रसरज एषः ॥ ५५ ॥

इति लीलाविलासो रसः ।

1. Introduction

The purpose of this study is to investigate the effects of the proposed system on the performance of the participants. The study was conducted in a laboratory setting with a sample of 20 participants.

The participants were divided into two groups: a control group and an experimental group. The control group used the traditional system, while the experimental group used the proposed system. The participants performed a series of tasks, and their performance was measured in terms of time, accuracy, and satisfaction. The results of the study are presented in the following sections.

2. Methodology

The study was conducted in a laboratory setting with a sample of 20 participants. The participants were divided into two groups: a control group and an experimental group. The control group used the traditional system, while the experimental group used the proposed system. The participants performed a series of tasks, and their performance was measured in terms of time, accuracy, and satisfaction.

3. Results

The results of the study are presented in the following sections. The first section presents the results of the time measurement, the second section presents the results of the accuracy measurement, and the third section presents the results of the satisfaction measurement.

अथ धात्रीलोहम्—

धात्रीचूर्णस्याष्टौ पलानि चत्वारि लोहचूर्णस्य ।
यष्टीमधुकरजसो द्विपलं दद्यात्पटाद्गलितम् ॥ ५६ ॥
अमृताक्राथेनैतच्चूर्णं माव्यं त्रिसप्तधा युक्त्या ।
चण्डातपेषु शुष्कं भूयः पिष्ट्वा नवे घटे स्थाप्यम् ॥ ५७ ॥
सर्पिर्मधुसंयुक्तं भक्तादौ मध्यतस्ततोऽन्ते च ।
अनीनपि वारान्खादेत्यथ्यं दोषानुबन्धेन ॥ ५८ ॥
भक्तस्याऽऽदौ शमयति दोषान्पित्तानिलोत्थितानाशु ।
मध्येऽन्ते विष्टम्भं जयति नृणां दह्यते नान्नम् ॥ ५९ ॥
पानान्नकृतान्दोषान्भक्तान्ते शीलितं जयति ।
एवं जीर्यति चान्ने शूलं नृणां सुकष्टमपि हन्ति ॥ ६० ॥
हरति च सहसा युक्तो योगोऽयमाशु तज्जरत्पित्तम् ।
चक्षुष्यः पलितघ्नः कफपित्तसमुद्भवाञ्जयेद्रोगान् ।
रक्तं प्रसाधयति च पाण्डुत्वं कामलां जयति ॥ ६१ ॥

इति धात्रीलोहम् ।

अथ वृषपुष्पादिचूर्णम्—

वृषपुष्पं करञ्जस्य पलवस्त्रिफलत्वचः ।
चूर्णमेतद्रसैर्माव्यं धात्र्यास्तद्वच्च फाणितैः ॥ ६२ ॥
कौटजैश्च मधून्मिश्रं पाययेत्तण्डुलाम्बुना ।
पित्तश्लेष्महरं नान्यदितः श्रेष्ठं रसायनम् ॥ ६३ ॥

इति वृषपुष्पादिचूर्णम् ।

अथ गुडाद्यो मोदकः—

गुडापिप्पलिपथ्याभिस्तुल्याभिर्मोदकः कृतः ।
पित्तश्लेष्महरः प्रोक्तो मन्दाग्नित्वं च नाशयेत् ॥ ६४ ॥

इति गुडाद्यो मोदकः ।

अथ खण्डकूष्माण्डकावलेहः—

पाठापटोलदलचन्दनधान्यधात्री-
वासावराङ्गदलनागकणामयाभिः ।

लेहः सिताज्यमधुभिः शिलया च पिण्डी
 हन्त्यम्लपित्तमरुचिज्वरदाहशोषान् ॥ ६५ ॥
 हन्त्यम्लपित्तवमनारुचिदाहमोह-
 खालित्यमेहतिमिरत्रणशुक्रदोषान् ।
 भुक्त्वा नरः सततमामलकीरसेन
 वृद्धोऽप्यनेन हि भवेत्तरुणी रिरंसुः ॥ ६६ ॥
 कूष्माण्डस्य रसो ग्राह्यः पलानां शतमात्रकम् ।
 रसतुल्यं गवां क्षीरं धात्रीचूर्णं पलाष्टकम् ॥ ६७ ॥
 धात्रीतुल्या सिता योज्या गव्यमाज्यं पलद्वयम् ।
 मन्दाग्निना पचेत्सर्वं यावद्भवति पिण्डितम् ॥ ६८ ॥
 पलाधं पलमेकं वा प्रत्यहं भक्षयेद्विदम् ।
 खण्डकूष्माण्डकं स्वातमम्लपित्तापहं परम् ॥ ६९ ॥

इति खण्डकूष्माण्डकावलेहः ।

अथ नारिकेलखण्डपाकः—

कुडवं नारिकेलस्य सूक्ष्मं दृषदि पेषितम् ।
 शुभ्रखण्डस्य कुडवं सर्वमेतच्चतुर्गुणम् ॥ ७० ॥
 आलोड्य नारिकेलस्य जले मृद्वाग्निना पचेत् ।
 नारिकेलजलालाभे गव्ये पयसि तत्पचेत् ॥ ७१ ॥
 पलमात्रस्तदर्धोऽपि भक्षितः प्रत्यहं नरैः ।
 नारिकेलकखण्डोऽयं पुंस्त्वनिद्राबलप्रदः ॥ ७२ ॥
 अम्लपित्तं रक्तपित्तं शूलं च परिणामजम् ।
 क्षयं क्षपयति क्षिप्रं शुष्कं दावानलो यथा ॥ ७३ ॥
 (पलमात्रगव्यघृतेन नारिकेलस्य भर्जनं कर्तव्यमिति संप्रदायः)
 इति नारिकेलखण्डपाकः ।

अथ बृहन्नारिकेलपाकः—

प्रस्थं तु नारिकेलस्य सूक्ष्मं दृषदि पेषितम् ।
 निष्कुलीकृतकूष्माण्डखण्डानामर्धमाढकम् ॥ ७४ ॥
 तद्वयं भर्जयेद्गव्ये घृते तु कुडवोन्मिते ।
 ततस्तत्र क्षिपेच्छुद्धं गोदुग्धं चाऽऽढकोन्मितम् ॥ ७५ ॥
 तत्रैव निक्षिपेद्गव्ये सितां प्रस्थद्वयोन्मिताम् ।
 पचेत्सर्वाणि चैकत्र मृदुना वह्निना भिषक् ॥ ७६ ॥

[illegible]

सुपक्वे शीतले तत्र चूर्णीकृत्य विनिक्षिपेत् ।
 सूक्ष्मैलां धान्यकं धात्रीं पर्पटं जलदं जलम् ॥ ७७ ॥
 उशीरं चन्दनं द्राक्षां शृङ्गाटं च कसेरुकम् ।
 त्वक्पत्रकं सकर्चूरं कर्षयुग्मं पृथक्पृथक् ॥ ७८ ॥
 सर्वं समिश्रयेद्भक्षेद्भाजने सुन्मये नवे ।
 पलमात्रमिदं प्रातर्भक्षयेद्वा यथाबलम् ॥ ७९ ॥
 एतन्निषेवितं हन्ति रोगानेतान्न संशयः ।
 अम्लपित्तज्वरं पित्तं रक्तपित्तमरोचकम् ॥ ८० ॥
 वातरक्तं तृषां दाहं पाण्डुरोगं सकामलाम् ।
 क्षयं क्षपयते क्षिप्रं शूलं च परिणामजम् ॥ ८१ ॥
 नारिकेलकखण्डोऽयमश्विभ्यां भाषितः पुरा ।
 वर्णदो बृंहणो वृष्यः पुंस्त्वनिद्राबलप्रदः ॥ ८२ ॥
 इति बृहन्नारिकेलपाकः ।

पित्तश्लेष्मकरं सर्वं वर्जयेदम्लपित्तवान् ।
 विशेषान्माषदध्यम्लक्षारतीक्ष्णसुरात्ययम् (?) ॥ ८३ ॥
 इति श्रीयोगतरङ्गिण्यामम्लपित्तनिदानचिकित्साकथनं नाम द्वाविंशत्य-
 धिकशततमस्तरङ्गः ॥ १२२ ॥

अथ त्रयोविंशत्यधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ विसर्पनिदानम्—

लघुणाम्लकटूष्णादिसेवनाद्दोषकोपतः ।
 विसर्पः सप्तधा ज्ञेयः सर्वतः परिसर्पणात् ॥ १ ॥
 वातिकः पैतिकश्चैव कफजः सांनिपातिकः ।
 चत्वार एते वीसर्पा वक्ष्यन्ते द्वंद्वजास्त्रयः ॥ २ ॥
 आग्नेयो वातपित्ताभ्यां ग्रन्थ्याख्यः कफवातजः ।
 यस्तु कर्दमको घोरः स पित्तकफसंभवः ॥ ३ ॥
 रक्तं लसीका त्वङ्मांसं दूष्यं दोषास्त्रयो मलाः ।
 विसर्पाणां समुत्पत्तौ विज्ञेयाः सप्त धातवः ॥ ४ ॥

वातजमाह—

तत्र वातात्परीसर्पो वातज्वरसमव्यथः ।
 शोफस्फुरणनिस्तोदभेदायामार्तिहर्षवान् ॥ ५ ॥

THE

THE

THE

THE

THE

THE

पित्तजमाह—

पित्ताद्द्रुतगतिः पित्तज्वरलिङ्गोऽतिलोहितः ।

कफजमाह—

कफात्कण्डूयनः स्निग्धः कफज्वरसमानरुक् ॥ ६ ॥

संनिपातजमाह—

संनिपातसमुत्थश्च सर्वलिङ्गसमन्वितः ।

वातपित्तविसर्पमाह—

वातपित्तविसर्पस्तु ज्वरातीसारतृद्भ्रमैः ॥ ७ ॥

अस्थिमेदाग्निसदनतमकारोचकैर्युतः ।

करोति सर्वमङ्गं च दीप्ताङ्गारावकीर्णवत् ॥ ८ ॥

यं यं देशं विसर्पश्च विसर्पति भवेत्स च ।

शान्तागारासितो(?) नीलो रक्तो वाऽऽशूपचीयते ॥ ९ ॥

अग्निदग्ध इव स्फोटैः शीघ्रं गत्वा द्रुतं स च ।

मर्मानुसारी वीसर्पः स्याद्वातोऽतिबलस्ततः ॥ १० ॥

व्यथेताङ्गं हरेत्संज्ञां निद्रां च श्वासमीरयेत् ।

हिक्कां च स गतोऽवस्थामीदृशीं लभते न ना ॥ ११ ॥

क्वचिच्छर्मास्तिग्रस्तो भूमिशय्यासनादिषु ।

चेष्टमानस्ततः क्लिष्टो मनोदेहश्चमोद्भवाम् ॥ १२ ॥

दुष्प्रबोधोऽश्नुते निद्रां सोऽग्निवीसर्प उच्यते ।

ग्रन्थ्याख्यमाह—

कफेन रुद्धः पवनो भित्त्वा तं बहुधा कफम् ॥ १३ ॥

रक्तं वा वृद्धरक्तस्य त्वक्शिरास्त्रायुर्मांसगम् ।

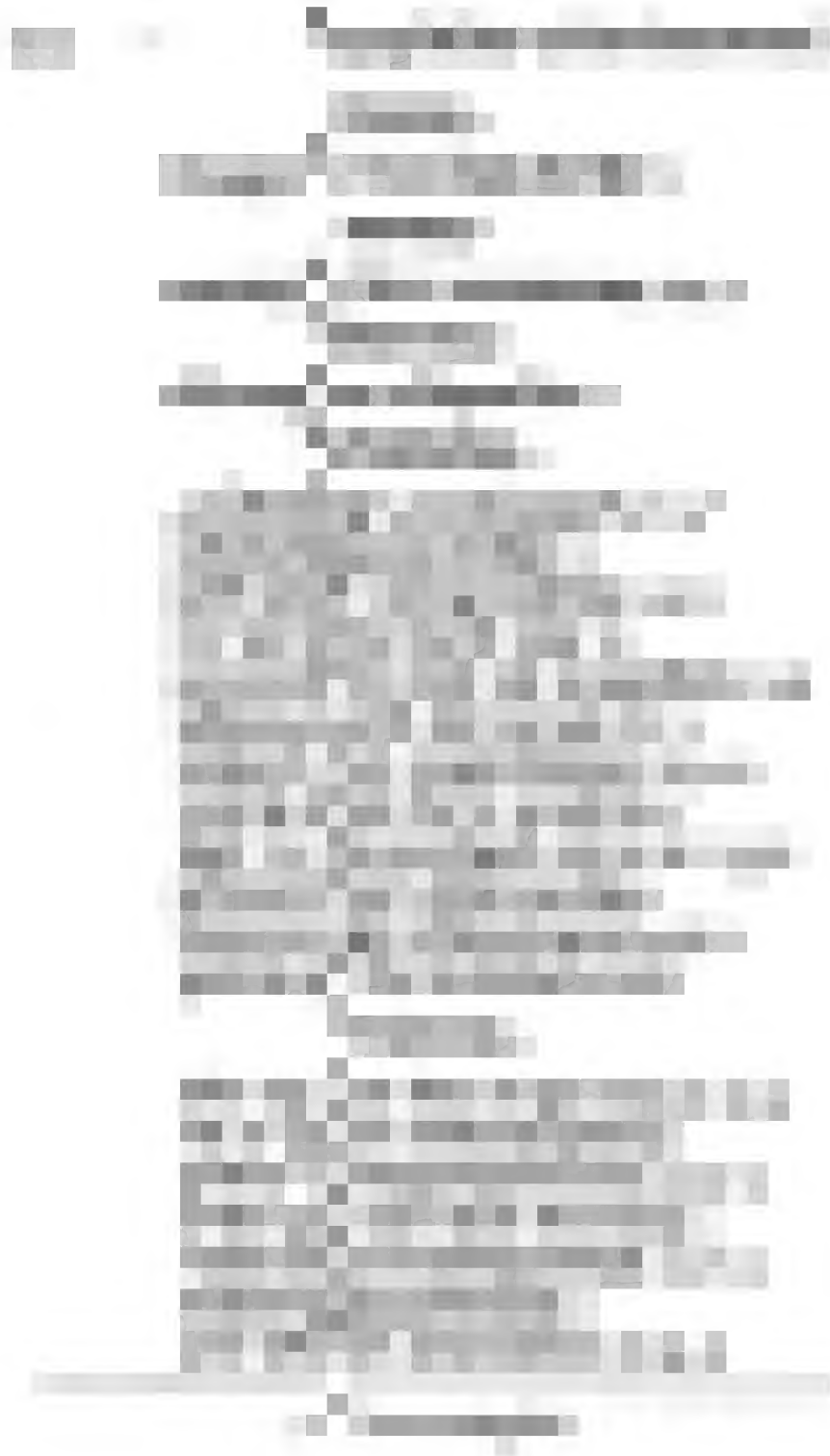
दूषयित्वा च दीर्घाणुवृत्तस्थूलखरात्मनाम् ॥ १४ ॥

ग्रन्थीनां कुरुते मालां रक्तानां तीव्ररुग्ज्वराम् ।

श्वासकासातिसारास्यशोषहिक्कावमिभ्रमैः ॥ १५ ॥

मोहवैवर्ण्यमूर्छाङ्गमङ्गाग्निसदनैर्युतः ।

इत्ययं ग्रन्थिवीसर्पः कफमारुतकोपजः ॥ १६ ॥



कर्दमाख्यमाह—

कफपित्ताज्ज्वरस्तम्भो निद्रा तन्द्रा शिरोरुजा ।
 अङ्गावसादविक्षेपप्रलापारोचकभ्रमाः ॥ १७ ॥
 मूर्च्छाग्निहानिर्भेदोऽस्त्वां पिपासेन्द्रियगौरवम् ।
 आमोपवेशनं लेपः स्रोतसां च विसर्पति ॥ १८ ॥
 प्रायेणाऽऽमाशये गृह्णन्नैकदेशं न चातिरुक् ।
 पित्तैरवकीर्णोऽतिपीतलोहितपाण्डुरैः ॥ १९ ॥
 स्निग्धोऽसितो मेचकामो मलिनः शोथवान्गुरुः ।
 गम्भीरपाकः प्राज्योष्मा स्पृष्टः क्लिन्नोऽवदीर्यते ॥ २० ॥
 पक्ववच्छीर्णमांसश्च स्फुटस्नायुशिरागणः ।
 शवगन्धी सवीसर्पः कर्दमाख्यमुशन्ति तम् ॥ २१ ॥

तस्योपद्रवाः—

बाह्यहेतोः क्षतात्कुन्धः सरक्तं पित्तमीरयेत् ।
 विसर्पं मारुतः कुर्यात्कुलत्थसदृशैश्चितम् ॥ २२ ॥
 स्फोटैः शोफज्वररुजादाहाढ्यं श्यावलोहितम् ।
 ज्वरातिसारवमथुतृणमांसदरणकुमाः ।
 अरोचकाविपाकौ च विसर्पाणामुपद्रवाः ॥ २३ ॥

सिद्धासिद्धमाह—

सिध्यन्ति वातकफपित्तकृता विसर्पाः
 सर्वात्मकः क्षतकृतश्च न सिद्धिमेति ।
 पित्तात्मकोऽञ्जनवपुश्च भवेदसाध्यः
 कृच्छ्राश्च मर्मसु भवन्ति हि सर्व एव ॥ २४ ॥

इति विसर्पनिदानम् ।

अथैतच्चिकित्सा—

पूर्वमेव विसर्पेषु कुर्यात्क्षुधनरुक्षणे ।
 विरेकवमनालेपसेचनासृग्विमोक्षणैः ॥ २५ ॥
 उपाचरेद्यथादोषं विसर्पानविदाहिभिः ।
 पटोलपिचुमन्दाभ्यां पिप्पल्या मदने न वा ॥ २६ ॥
 विसर्पे वमनं शस्तं तथा चेन्द्रयवैः सह ।
 त्रिफलारससंयुक्तं सर्पिस्त्रिवृतया सह ॥ २७ ॥

1. The first step is to identify the problem or question that needs to be answered. This involves understanding the context and the specific requirements of the task.

प्रयोक्तव्यं विरेकार्थं विसर्पज्वरनाशनम् ।

राम्नां नीलोत्पलं दारु चन्दनं मधुकं बलाम् ।

पिष्ट्वाऽऽज्यक्षीरवाँलेपो वातवीसर्पनाशनः ॥ २८ ॥

इति राम्नादिलेपः ।

अथ पटोलादिकाथः—

कुष्ठं शताह्वा सुरदारु मुस्ता वाराहिकुस्तुम्बुरु कृष्णगन्धा ।

वातेऽर्कवंशार्तगलाश्च योज्याः सेकेषु लेपेषु तथा घृतेषु ॥ २९ ॥

प्रपौण्डरीकमञ्जिष्ठापद्मकोशीरचन्दनैः ।

सयष्टीन्दीवरैः पैत्ते क्षीराद्यैश्च प्रलेपनम् ॥ ३० ॥

कसेरुशृङ्गाटकपद्मगुन्द्राः सशैबलाः सोत्पलकर्दमाश्च ।

वस्त्रान्तराः पित्तकृते विसर्पे लेपा विधेयाः सघृताः सुशीताः ॥ ३१ ॥

कनीचः पञ्चमूलस्य यववल्कलकस्य वा ।

कषायः पित्तवीसर्पे पाने सेकेऽपि शस्यते ॥ ३२ ॥

श्लैष्मिकेऽत्र वमिः कार्या पूर्वं रेचनकं ततः ।

मदनं मधुकं निम्बं वत्सकस्य फलानि च ॥ ३३ ॥

एतैर्वामिर्विधातव्या विसर्पे कफसंभवे ।

गायत्रीसप्तपर्णाब्दवासारग्वधदारुभिः ॥ ३४ ॥

कुटन्नटैर्भवेलेपो विसर्पे श्लेष्मसंभवे ।

त्रिफलापद्मकोशीरसमङ्गाकरवीरकम् ॥ ३५ ॥

नलमूलमनन्ता च लेपः श्लेष्मविसर्पहा ।

मुस्तारिष्टपटोलानां काथः श्लेष्मविसर्पहा ।

धात्रीपटोलमुद्गानामथ वा घृतसंयुतः ॥ ३६ ॥

कुलकवृषकिरातारिष्टतिकाक्षपथ्या-

मलकमलयजानां कौशिकाढ्यः कषायः ।

सकलगदसमुत्थं हन्ति वीसर्पमुग्रं

ज्वरवामितनुदाहभ्रान्तिवृणारुजामिः ॥ ३७ ॥

इति पटोलादिकाथः ।

अथ त्रायमाणादिकाथः—

त्रायन्तिनिम्बवृन्दाकुण्डलिधात्रीपटोलकटुकामिः ।

काथः सकणाक्षौद्रस्त्रिदोषवीसर्पदर्पहा काथितः ॥ ३८ ॥

इति त्रायमाणादिकाथः ।

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

अथ दशाङ्गलेपः—

सर्पिषा शतधौतेन कृतो लेपो मुहुर्मुहुः ।
 निहन्ति सर्ववीसर्पं सर्पं पतगराडिव ॥ ३९ ॥
 शिरीषयष्टीनतचन्दनैलामांसीहरिद्राद्वयकुष्ठवालैः ।
 लेपो दशाङ्गः सघृतः प्रयोज्यो वीसर्पकुष्ठव्रणशोथहारी ॥ ४० ॥
 इति दशाङ्गलेपः ।

अथ मांस्यादिलेपः—

मांसी सर्जरसो लोधं मधुकं सहरेणुकम् ।
 मूर्वा नीलोत्पलं पद्मं शिरीषकुसुमानि च ।
 एतैः प्रदेहः कथितो वह्निवीसर्पनाशनः ॥ ४१ ॥
 इति मांस्यादिलेपः ।

अथ त्रायमाणादिकाथः—

शतधौतघृतविमिश्रः कल्कस्त्वक्पञ्चकस्य लेपेन ।
 बहुदाहकलितमुच्चैरग्निसर्पं विनाशयति ॥ ४२ ॥
 न्यग्रोधपादो गुन्द्रा च कदलीगर्भ एव च ।
 एतैर्ग्रन्थिविसर्पघ्नो लेपो धौताज्यसंयुतः ॥ ४३ ॥
 शतधौतघृतोन्मिश्रः शिरीषत्वग्रजःकृतः ।
 लेपः शमयति क्षिप्रं विसर्पं कर्दमाभिधम् ।
 त्रिदोषघ्नीं क्रियां कुर्याद्विसर्पे द्वंद्वसंभवे ॥ ४४ ॥
 त्रायमाणपटोलपर्पटकच्छुराकटुरोहिणीः
 षावकेन लघीयसा परिपाच्य साधुशृतं हितम् ।
 हन्ति सर्वविसर्पजालमुपद्रवौघसमायुतं
 द्वंद्वजं विषजं च त्वं पुरसंयुतं गुणवत्तरम् ॥ ४५ ॥
 इति त्रायमाणादिकाथः ।

अथ गुडूच्यादिकाथः—

अमृतवृषपटोलं निम्बवल्कैरुपेतं
 त्रिफलखदिरसारो व्याधिघातश्च तुल्यम् ।
 कथितमिदमशेषं गुग्गुलोष्टङ्कयुक्तं
 हरति विषविसर्पान्कुटमष्टादशापि ॥ ४६ ॥
 इति गुडूच्यादिकाथः ।



अथ वृषाद्यं घृतम्—

वृषखदिरपटोलनिम्बपत्रत्वग्मृतामलकीकषायकल्कैः ।
घृतमभिनवमेतदाशु पक्वं जयति विसर्पमदास्रकुष्ठगुल्मान् ॥ ४७ ॥
इति वृषाद्यं घृतम् ।

अथ गौराद्यं सर्पिः—

द्वे हरिद्रे स्थिरा मूर्वा सारिवा चन्दनद्वयम् ।
मधुकं मधुपर्णी च पद्मकं पद्मकेसरम् ॥ ४८ ॥
उशीरमुत्पलं मेदा त्रिफला पञ्चवल्कलम् ।
कल्कैरक्षसमैरेभिर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ४९ ॥
विषवीसर्पविस्फोटकीटलूतावणापहम् ।
गौराद्यमिति विख्यातं सर्पिः श्लेष्ममरुत्प्रणुत् ॥ ५० ॥
इति गौराद्यं सर्पिः ।

अथ करञ्जाद्यं तैलम्—

करञ्जसप्तच्छदलाङ्गुलीकास्तुह्यकदुग्धानलमृङ्गराजैः ।
तैलं निशामूत्रविषैर्विपक्वं विसर्पविस्फोटविचर्चिकाघ्नम् ॥ ५१ ॥
इति करञ्जाद्यं तैलम् ।
कुष्ठेषु ये रसा यानि सर्पाणि कथनानि च ।
चूर्णादीन्यपि सर्वाणि विसर्पेष्वपि तान्यलम् ॥ ५२ ॥
कुष्ठामयस्फोटमसूरिकोक्तचिकित्सयाऽप्याशु हरेद्विसर्पान् ।
सर्वान्विपक्वान्परिशोध्य धीमान्ब्रणक्रमेणोपचरेद्यथोक्तम् ॥ ५३ ॥
इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां विसर्पनिदानचिकित्साकथनं नाम त्रयोविंशत्यधि-
कशततमस्तरङ्गः ॥ १२३ ॥

अथ चतुर्विंशत्यधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ स्नायुकनिदानम्—

शाखासु कुपितो दोषः शोथं कृत्वा विसर्पवत् ।
मिनत्ति तत्क्षते तत्र सोष्मा मांसं विशोष्य च ॥ १ ॥
कुर्यात्तन्तुनिभं जीवं तनुवृत्तं सितद्युतिम् ।
बहिः शनैः क्षताद्याति छेदात्कोपमुपैति सः ॥ २ ॥



तत्पाताच्छोफशान्तिः स्यात्पुनः स्थानान्तरे भवेत् ।
 स स्नायुक इति ख्यातः क्रिया चात्र विसर्पवत् ॥ ३ ॥
 वातेन श्यावरूक्षः सरुगथ दहनान्नीलपीतः सदाहः
 पित्तेऽथ श्लेष्मणः स्यात्पृथुगरिमयुतोऽथ द्विदोषे द्विलिङ्गः ।
 रक्तेनाऽऽरक्तकान्तिः समधिकदहनोऽथाखिलैः सर्वलिङ्गो
 रोगोऽसावष्टधेत्थं मुनिभिरभिहितः स्नायुकस्तन्तुकीटः ॥ ४ ॥
 बाह्वोर्यदि प्रमादेन जङ्घयोऽस्तुत्यति क्वचित् ।
 संकोचं खञ्जतां वाऽपि च्छिन्नस्तन्तुः करोत्यसौ ॥ ५ ॥
 इति स्नायुकनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

अथातिविषायं चूर्णम्—

अहिस्नामूलगोमूत्रकल्कालेपस्तु वातजे ।
 पञ्चवल्कलकल्केन हितो लेपोऽत्र पित्तजे ॥ ६ ॥
 श्लेष्मजे स्नायुके लेपः प्रशस्तः काञ्चनारजः ।
 तद्वाभ्यां द्वंद्वजे लेपः सर्वैस्तैः सर्वजे हितः ॥ ७ ॥
 रक्तजे स्नायुके लेपो वटप्लक्षत्वचो हितः ।
 विसर्पोक्ताः क्रियाः सर्वाः स्नायुके तु हिता मताः ॥ ८ ॥
 विशेषः कथ्यते कोऽपि स्नायुके शीघ्रसौख्यकृत् ।
 स्नेहस्वेदप्रलेपादि कर्म कुर्याद्यथाबलम् ॥ ९ ॥
 बम्बूलबीजं गोमूत्रपिष्टं हन्ति प्रलेपनात् ।
 स्नायुकानि समस्तानि सशोथानि रुजन्ति च ॥ १० ॥
 गव्यं सर्पिस्त्र्यहं पीत्वा निर्गुण्डीस्वरसं त्र्यहम् ।
 पिबन्स्नायुकमत्युग्रं निहन्त्येव न संशयः ॥ ११ ॥
 मूलं सुषव्या हिमवारिपिष्टं पानादिना तन्तुगदं प्रचण्डम् ।
 शान्तिं नयेत्सव्रणमाशु पुंसां गन्धर्वगन्धेन घृतेन पीत्वा ॥ १२ ॥
 सौमाञ्जनमूलदलैर्लेपः काञ्जिकसंयुतैः ।
 हन्ति स्नायुकमत्युग्रं विसर्पमपि दुःसहम् ॥ १३ ॥
 टक्कणं हिङ्गुनेपालगुडमर्कपयोन्वितम् ।
 त्रिदिनं बन्धयेत्पिण्डं स्नायुकं हन्ति निश्चयः ॥ १४ ॥

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

अतिविषमुस्तकमार्गीविश्वौषधपिप्पलीविभीतकानाम् ।

चूर्णं तन्तुकृमिघ्नं पुंसामुष्णेन वारिणा पीतम् ॥ १५ ॥

इत्यतिविषाद्यं चूर्णम् ।

अथ शिशुमूलादिलेपः—

शिशुमूलदलैः पिष्टैः काञ्चिकेन ससैन्धवैः ।

लेपः स्नायुकुरोगाणां शमनः परमः स्मृतः ॥ १६ ॥

इति शिशुमूलादिलेपः ।

अहिंसामूलकल्कस्य प्रलेपः स्नायुकं जयेत् ।

पारावतपुरीषस्य मधुना कल्कितस्य च ।

गिलिता गुटिका हन्ति स्नायुकामयमुद्धतम् ॥ १७ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां स्नायुकनिदानचिकित्साकथनं नाम चतुर्विंशत्यधि-

कशततमस्तरङ्गः ॥ १२४ ॥

अथ पञ्चविंशत्यधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ विस्फोटनिदानम्—

कटुम्लतीक्ष्णोष्णविदाहिरूक्षक्षारैरजीर्णाध्यशनातपैश्च ।

तथर्तुदोषेण विपर्ययेण कुप्यन्ति दोषाः पवनादयस्तु ॥ १ ॥

त्वचमाश्रित्य ये रक्तमांसास्थीनि प्रदूष्य च ।

घोरान्कुर्वन्ति विस्फोटान्सर्वाञ्ज्वरपुरःसरान् ॥ २ ॥

अग्निदग्धनिभाः स्फोटाः सज्वरा रक्तपित्तजाः ।

क्वचित्सर्वत्र वा देहे विस्फोटा इति संस्मृताः ॥ ३ ॥

अष्टधात्वमाह—

दोषैः पृथग्द्वयैः सर्वैरथ वाऽपि च तेऽष्टधा ।

वातजलक्षणमाह—

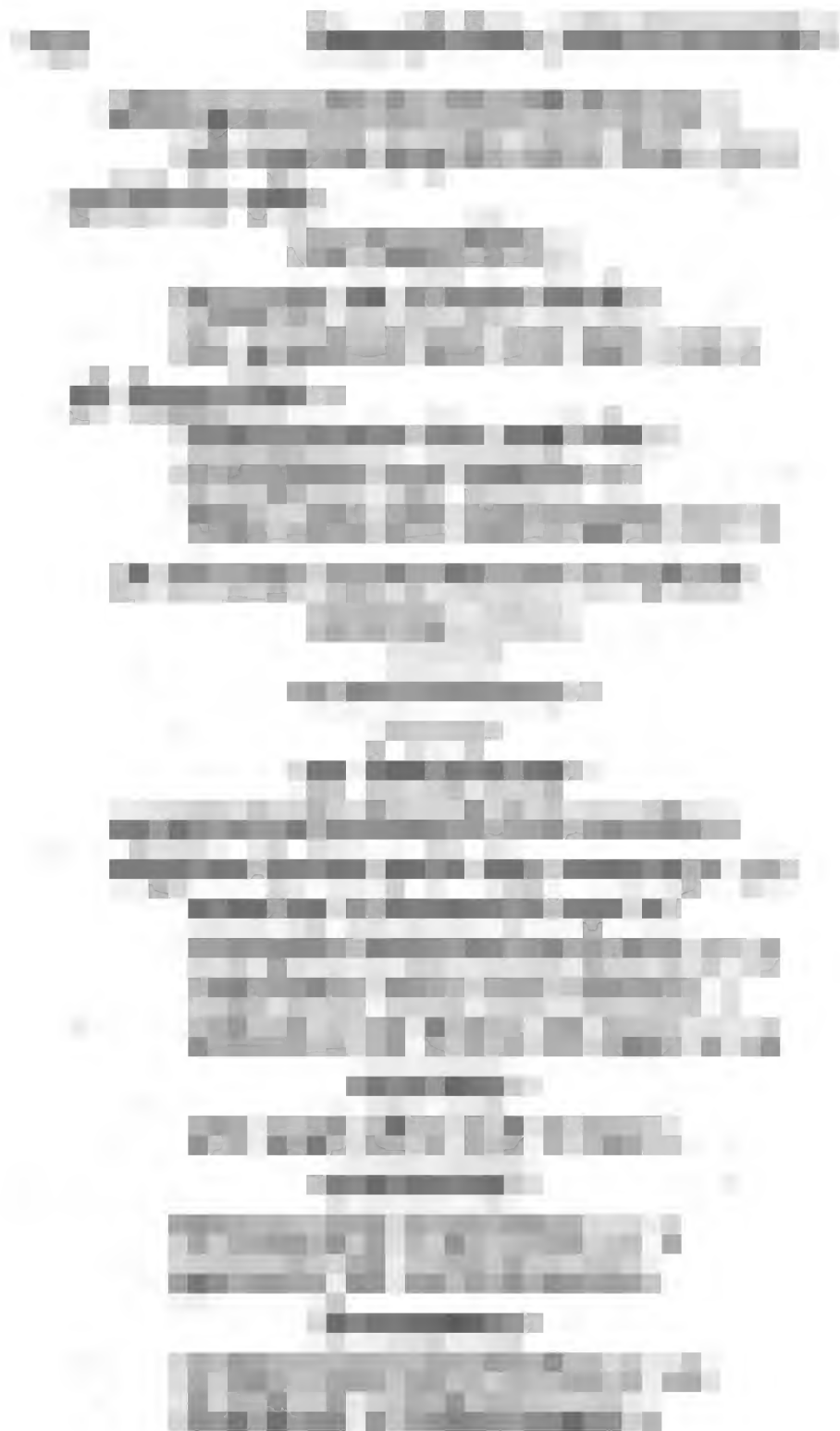
शिरोरुक्कशूलभूयिष्ठं ज्वरतृट्पर्वभेदनम् ॥ ४ ॥

सुकृष्णवर्णता चेति वातविस्फोटलक्षणम् ।

पित्तजलक्षणमाह—

ज्वरदाहरुजासावपाकतृष्णाभिरान्वितम् ॥ ५ ॥

पीतलोहितवर्णं च पित्तविस्फोटलक्षणम् ।



कफजलक्षणमाह—

छर्द्यरोचकजाड्यानि कण्डूकाठिन्यपाण्डुताः ॥ ६ ॥
अवेदनश्चिरात्पाकः स विस्फोटः कफात्मकः ।

कफपित्तजलक्षणमाह—

कण्डूदाहो ज्वरश्छर्दिरेतैस्तु कफपैत्तिकः ॥ ७ ॥

वातपित्तजलक्षणमाह—

वातपित्तकृतो यस्तु कुरुते तीव्रवेदनाम् ।

कफवातजलक्षणमाह—

कण्डूस्तैमित्यगुरुभिर्जानीयात्कफवातिकम् ॥ ८ ॥

त्रिदोषजलक्षणमाह—

मध्ये निम्नोन्नतोऽन्ते च कठिनोऽल्पप्रपाकतः ।
दाहरागतृषामोहछर्दिमूर्छारुजो ज्वरः ॥ ९ ॥
प्रलापो वेपथुस्तन्द्रा सोऽसाध्यस्तु त्रिदोषजः ।

पित्तहेतुजमाह—

रक्ता रक्तसमुत्थानां गुञ्जाविट्ठमसंनिभाः ॥ १० ॥
वेदितव्यास्तु रक्तेन पैत्तिकेन तु हेतुना ।

असाध्यत्वमाह—

न ते सिद्धिं समायान्ति सिद्धैर्योगवैरपि ॥ ११ ॥
एकदोषोत्थितः साध्यः कृच्छ्रसाध्यो द्विदोषजः ।
सर्वरूपान्वितो घोरस्त्वसाध्यो भूर्युपद्रवः ॥

तस्योपद्रवाः—

तृट्कासमांससंकोचदाहहिकामदक्षयाः ।
विसर्पविस्फोटकृतास्त्वसाध्याः स्युरुपद्रवाः ॥ १३ ॥
हिक्रा श्वासोऽरुचिस्तृष्णा चाङ्गमर्दो हृदि व्यथा ।
विसर्पज्वरहृल्लासा विस्फोटानामुपद्रवाः ॥ १४ ॥

इति विस्फोटनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

द्विपञ्चमूलादिकाथः—

तत्राऽऽदौ लङ्घनं कार्यं वमनं पश्यमोजनम् ।
यथादोषबलं वीक्ष्य प्रोक्तं युक्तं च रेचनम् ॥ १५ ॥
क्षुधिते लङ्घयिते वान्ते जीर्णशालिग्रवादिभिः ।
मुद्गाढकीमसूराणां रसैर्वा विश्वसंयुतैः ॥ १६ ॥
सुनिषण्णकवेत्राग्रतण्डुलीयककेम्बुकैः ।
कुलकामीरुकरैभिः सपर्पटकतीनसैः ॥ १७ ॥
कारवेलैश्च कुसुमैर्निम्बपल्लवबिल्वजैः ।
तिक्तयूषसमायुक्तैर्मोजनं संप्रयोजयेत् ॥ १८ ॥
द्विपञ्चमूलीं राक्षां च दार्युशीरं दुरालमाम् ।
सामृतं धान्यकं मुस्तं काथयित्वा शृतं पिबेत् ॥ १९ ॥
विस्फोटं वातसंभूतं निहन्येतन्न संशयः ।

इति द्विपञ्चमूलादिकाथः ।

अथ द्राक्षादिकाथः—

द्राक्षाकाश्मर्यखर्जूरपटोलारिष्टचन्दनैः ॥ २० ॥
लाजाकुलकदुस्पर्शैः काथः शर्करया युतः ।
विस्फोटं पित्तजं हन्ति सोपद्रवमसंशयम् ॥ २१ ॥

इति द्राक्षादिकाथः ।

अथ भूनिम्बादिकाथः—

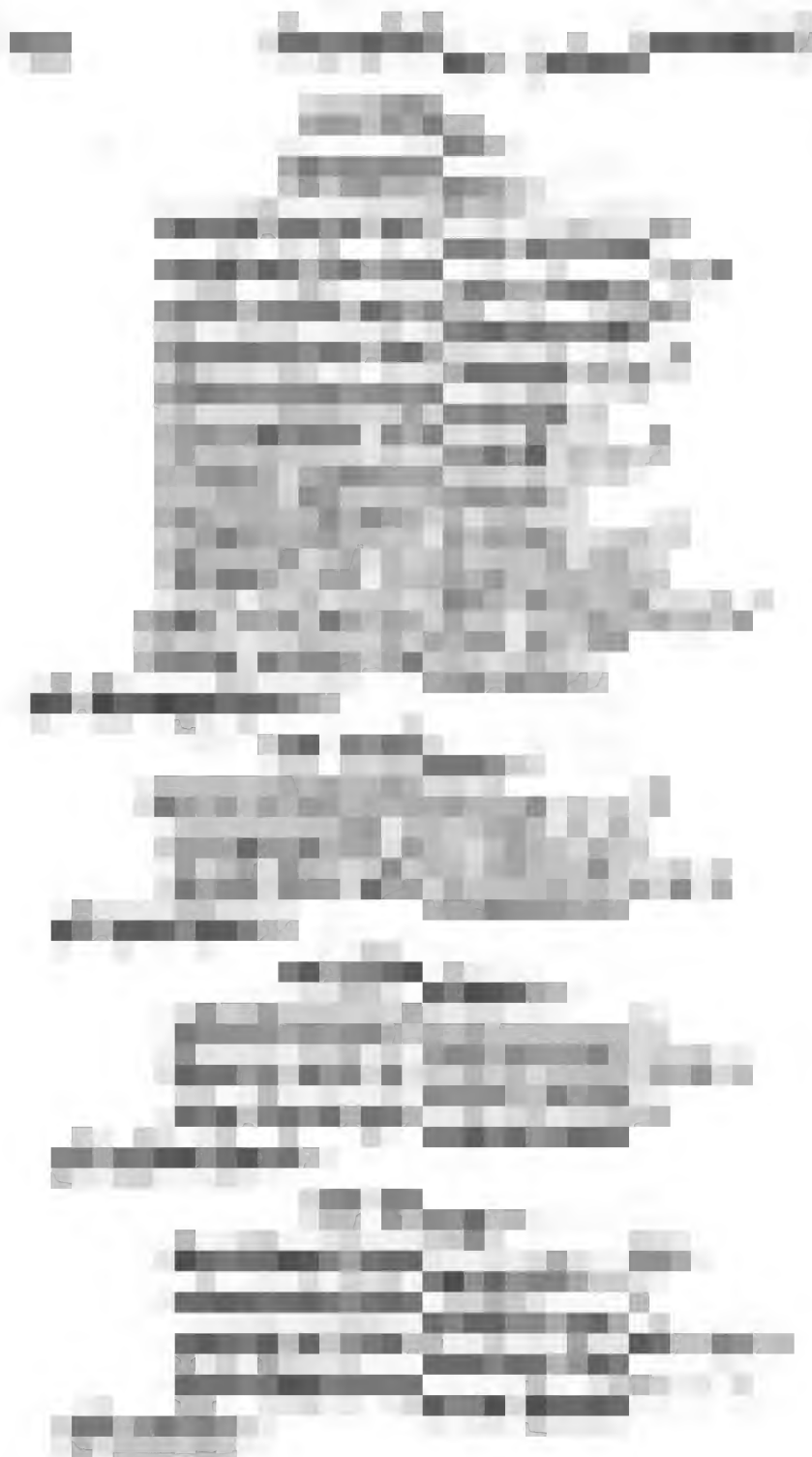
भूनिम्बनिम्बवासाश्च त्रिफलेन्द्रयवासकाः ।
पिचुमन्दः पटोली च काथमेषां सशर्करम् ॥ २२ ॥
पीत्वा विमुच्यते नूनं कफविस्फोटकाग्नरः ।

इति भूनिम्बादिकाथः ।

अथ द्वादशाङ्गः—

किराततिक्तकारिष्टयष्ट्याह्वाम्बुदपपटैः ॥ २३ ॥
पटोलवासकोशीरत्रिफलाकौटजैः शृतम् ।
द्वादशाङ्गं नरः पीत्वा विस्फोटिभ्यो विमुच्यते ॥ २४ ॥
द्वंद्वजेभ्यस्त्रिदोषोत्थाद्रक्तजाच्च हिताशनः ।

इति द्वादशाङ्गः ।



अथामृतादिकाथः—

अमृतवृषपटोलं मुस्तकं सप्तपर्णं
खदिरमसितवेत्रं निम्बपत्रं हरिद्रे ।
शृतमिति सविसर्पाः कुष्ठविस्फोटकण्डू-
रणयति मसूरीः शीतपित्तं ज्वरं च ॥ २५ ॥

इत्यमृतादिकाथः ।

अथ दशाङ्गलेपः—

कपीतनकृतीकरात्रियुग्मं मांसीनतैलामधुवारिशितैः ।
लेपः ससर्पिः प्रणुदत्यवश्यं विस्फोटदाहज्वरकान्विसर्पान् ॥ २६ ॥
इति दशाङ्गलेपः ।

अथ कम्पिलाद्यं तैलम्—

कम्पिलकं विडङ्गानि बत्सकं त्रिफलां बलाम् ।
पटोलं पित्तुमन्दं च लोध्रमुस्तप्रियङ्गुकम् ॥ २७ ॥
धातकीं खदिरं सर्जमेलामगुरुचन्दनम् ।
पिष्ट्वा साध्यं भवेत्तैलं तत्परं व्रणरोपणम् ॥ २८ ॥
इति कपिलाद्यं तैलम् ।

अथ पञ्चतित्तकं घृतम्—

पटोलसप्तच्छदनिम्बवासाफलत्रयच्छिन्नरुहाविपक्वम् ।
तत्पञ्चतित्ताभिधमाज्यमत्ति त्रिदोषविस्फोटविसर्पकण्डूः ॥ २९ ॥
इति पञ्चतित्तकं घृतम् ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां विस्फोटनिदानचिकित्साकथनं नाम पञ्चविंशत्य-
धिकशततमस्तरङ्गः ॥ १२९ ॥

अथ षड्विंशत्यधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ मसूरिकानिदानम्—

कटुम्ललवणक्षारविरुद्धाध्यशनाशनैः ।
दुष्टनिष्पावशाकाद्यैः प्रदुष्टैः पवनोदकैः ॥ १ ॥
कुन्धग्रहेक्षणाद्वाऽपि देशे दोषाः समुद्धताः ।
जनयन्ति शरीरेऽस्मिन् दुष्टरक्तेन संयुताः ॥ २ ॥



मसूराकृतिसंस्थानाः पिटकाः स्युर्मसूरिकाः ।
तत्प्राग्रूपं ज्वरः कण्डूर्गात्रमङ्गोऽरुचिर्भ्रमः ॥ ३ ॥
त्वचि शोथः सवैवर्ण्यं नेत्ररोगास्तथैव च ।

वातमसूरिका आह—

स्फोटाः कृष्णारुणा रूक्षास्तीव्रवेदनयाऽन्विताः ॥ ४ ॥
कठिनाश्चिरपाकाश्च भवन्त्यनिलसंभवाः ।

पित्तजा आह—

संध्यस्थिपर्वणां मेदः कासकम्पारतिभ्रमाः ॥ ५ ॥
शोथस्ताल्वोष्ठजिह्वानां तृष्णा चारुचिसंयुता ।
रक्ताः पीतासिताः स्फोटाः सदाहास्तीव्रवेदनाः ॥ ६ ॥
मुदवोऽचिरपाकाश्च पित्तकोपसमुद्भवाः ।

रक्तपित्तजा आह—

विद्रुमेदश्चाङ्गमर्दश्च दाहस्तृष्णाऽरुचिस्तथा ॥ ७ ॥
मुखपाकोऽक्षिरोगश्च ज्वरस्तीव्रः सुदारुणः ।
रक्तजायां भवन्त्येते विकाराः पित्तलक्षणाः ॥ ८ ॥

कफजा आह—

कफप्रसेकस्तैमित्यं शिरोरुग्गात्रगौरवम् ।
हृल्लासश्चारुचिर्निद्रा तन्द्रालस्यसमन्विता ॥ ९ ॥
श्वेताः स्निग्धा भृशं स्थूलाः कण्डूरा मन्दवेदनाः ।
मसूरिकाः कफोत्थाश्च चिरपाकाः प्रकीर्तिताः ॥ १० ॥

त्रिदोषजा आह—

नीलाश्चिपिटविस्तीर्णा मध्ये निम्ना महारुजाः ।
प्रभूताश्चिरपाकाश्च पूतिस्रावाश्चिदोषजाः ॥ ११ ॥

चर्मसंज्ञिता आह—

कण्ठरोधोऽरुचिस्तन्द्रा प्रलापारतिसंयुताः ।
दुश्चिकित्स्याः समुद्दिष्टाः पिटकाश्चर्मसंज्ञिताः ॥ १२ ॥

कफपित्तजा आह—

रोमकूपोन्नतिसमा रागिण्यः कफपित्तजाः ।
कासारोचकसंयुक्ता रोमान्त्यो(?) ज्वरपूर्विकाः ॥ १३ ॥

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

त्वग्गता आह—

तोयबुद्बुदसंकाशास्त्वग्गतास्तु मसूरिकाः ।

रसगता आह—

स्वल्पदोषाः प्रजायन्ते भिन्नास्तोयं स्रवन्ति च ॥ १४ ॥

रक्तगता आह—

रक्तस्था लोहिताकाराः शीघ्रपाकास्तनुत्वचः ।

साध्या नात्यर्थदुष्टाश्च भिन्ना रक्तं स्रवन्ति च ॥ १५ ॥

मांसगता आह—

मांसस्थाः कठिनाः स्निग्धाश्चिरपाकास्तनुत्वचः ।

गात्रशूलोऽरतिः कण्डूस्तृषाज्वरसमन्विताः ॥ १६ ॥

मेदोगता आह—

मेदोजा मण्डलाकारा मुद्वः किञ्चिदुन्नताः ।

घोरज्वरपरीताश्च स्थूलाः स्निग्धाः सवेदनाः ॥ १७ ॥

संभोहारतिसंतापाः कश्चिदाभ्यो विनिस्तरेत् ।

क्षुब्धा गात्रसमा रूक्षाश्चिपिटाः किञ्चिदुन्नताः ॥ १८ ॥

मज्जागता आह—

मज्जोत्था मृशसंमोहवेदनारतिसंयुताः ।

छिन्दन्ति मर्मधामानि प्राणानाशु हरन्ति च ॥ १९ ॥

भ्रमरेणेव विद्भानि कुर्वन्त्यस्थीनि सर्वतः ।

शुक्रगता आह—

पक्वाभाः पिटकाः स्निग्धाः श्लक्ष्णाश्चात्यर्थवेदनाः ॥ २० ॥

स्तैमित्यारतिसंमोहदाहोन्मादसमन्विताः ।

शुक्रजायां मसूर्यां तु लक्षणानि भवन्ति हि ॥ २१ ॥

सदोषा आह—

निर्दिष्टं केवलं चिह्नं दृश्यते तु न जीवति ।

दोषमिश्राश्च सप्तैता द्रष्टव्या दोषलक्षणैः ॥ २२ ॥

साध्यासाध्यत्वमाह—

त्वग्गता रक्तजाश्चैव पित्तजाः श्लेष्मजास्तथा ।

श्लेष्मपित्तकृताश्चैव सुखसाध्या मसूरिकाः ॥ २३ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

2. The second part of the document is a list of the names of the members of the committee.

3. The third part of the document is a list of the names of the members of the committee.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the members of the committee.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

एता विनाऽपि क्रियया प्रशाम्यन्ति शरीरिणाम् ।
 वातजा वातपित्तोत्थाः श्लेष्मवातकृताश्च याः ॥ २४ ॥
 कृच्छ्रसाध्यतमास्तास्तु यत्नादेता उपाचरेत् ।
 अतोऽन्यास्तु विनिर्दिष्टा यास्तु सम्यक्क्रियां विना ॥ २५ ॥
 न सिद्धिर्जायतेर्नृणां स्तवं नाम्नामुपाचरेत् ।
 असाध्याः संनिपातोत्थास्तासां वक्ष्यामि लक्षणम् ॥ २६ ॥
 प्रवालसदृशाः काश्चित्काश्चिज्जम्बूफलोपमाः ।
 लोहजालनिभाः काश्चिदतसीफलसंनिभाः ॥ २७ ॥
 आसां बहुविधा वर्णा जायन्ते दोषभेदतः ।
 कासहिक्राप्रमेहाश्च ज्वरस्तीव्रः सुदारुणः ॥ २८ ॥
 प्रलापश्चारुचिर्मूर्छा तृष्णा दाहोऽतिघूर्णता ।
 मुखेन प्रसवेद्रक्तं तथा घ्राणेन चक्षुषा ॥ २९ ॥
 कण्ठे तुर्धुरकं कृत्वा श्वसन्नत्यर्थदारुणम् ।
 मसूरिकामिभूतस्य यस्यैतानि भिषग्वरः ॥ ३० ॥
 लक्षणानीह दृश्यन्ते न दद्यात्तत्र भेषजम् ।
 मसूरिकाभिभूतो यो भृशं घ्राणेन निश्वसेत् ॥ ३१ ॥
 स भृशं त्यजति घ्राणं तृष्णातो वायुदूषितः ।
 मसूरिकान्ते शोफः स्यात्कूर्परे मणिवन्धके ॥ ३२ ॥
 तथाऽसफलके वाऽपि दुश्चिकित्स्यः सुदारुणः ।

कोद्रवाकारमाह—

कफमारुतसंभूतः कोद्रवो नामतो गदः ॥ ३३ ॥
 अपाकः कोद्रवाकारः सूचिनिस्तोदकारकः ।
 जलशूक इवाङ्गेषु विध्यतीव विशेषतः ॥ ३४ ॥
 सप्ताहाद्वादशाहाद्वा ततः स्वस्थो नरो भवेत् ।

इति मसूरिकानिदानम् ।

अथैतच्चिकित्सा—

मसूरिकायां कुष्ठोक्ता लेपनादिक्रिया हिता ॥ ३५ ॥
 पित्तश्लेष्मविसर्पोक्ता क्रिया वा संप्रशस्यते ।

अथ वेणुत्वगादिधूपः—

वेणुत्वक्सुरसा लाक्षा कार्पासास्थिमयूरकाः ॥ ३६ ॥

The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. It then presents a review of the journal's
 content, highlighting the quality and relevance of the
 articles. The second part of the paper discusses the
 journal's impact on the field of management education,
 including its role in advancing research and practice.
 The paper concludes with a discussion of the journal's
 future and its potential to continue to make a
 significant contribution to the field.

The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. It highlights the journal's role in providing
 a platform for the dissemination of research findings and
 the advancement of the discipline. The second part of the
 paper focuses on the journal's commitment to diversity and
 inclusion, emphasizing the need for a more equitable and
 inclusive research agenda. The third part of the paper
 discusses the journal's efforts to promote the use of
 research in management education, highlighting the
 importance of evidence-based practice. The fourth part of
 the paper discusses the journal's commitment to
 transparency and accountability, emphasizing the need for
 open access and the sharing of research data. The fifth
 part of the paper discusses the journal's commitment to
 the future of management education, highlighting the
 need for innovation and the development of new
 research paradigms. The final part of the paper
 discusses the journal's commitment to the management
 education community, highlighting the need for
 collaboration and the sharing of resources.

The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. It then presents a review of the journal's
 content, highlighting the quality and diversity of the
 articles. The second part of the paper discusses the
 journal's impact on the field of management education,
 including its role in advancing research and practice.
 The paper concludes with a discussion of the journal's
 future and its potential to continue to make a
 significant contribution to the field.

यवपिष्टं विषं सर्पिर्वचा ब्राह्मी सुवर्चला ।
 धूपनार्थं यथालामं धूपमेनं प्रयोजयेत् ॥ ३७ ॥
 आदावयं प्रयोक्तव्यो वश्यन्त्यस्मान्मसूरिकाः ।
 न गृह्णन्ति विषं केचिद्यथालामश्रुतेरिह ॥ ३८ ॥
 इति वेणुत्वगादिधूपः ।

अथ वानर्यादिकाथः—

श्वेतचन्दनकल्काढ्यं हि*लमोचीमवं रसम् ।
 पिबेन्मसूरिकारम्भे केवलं पारदान्वितम् ॥ ३९ ॥
 सर्वासां वमनं पूर्वं पटोलारिष्टश्वासकैः ।
 कषायैश्च वचावत्सयश्चाह्वफलकल्कितैः ॥ ४० ॥
 सक्षौद्रं पाययेद्ब्राह्मीरसं वा हेलमोचिकम् ।
 वान्तस्य रेचनं देयं शमनं त्वबले नरि ॥ ४१ ॥
 उमाभ्यां हृतदोषस्य विशुष्यन्ति मसूरिकाः ।
 निर्विकाराः स्वल्पपूयाः पच्यन्ते चाल्पवेदनाः ॥ ४२ ॥
 वानरीबीजजनितं कथितं पर्युषितमुत्तमे दिवसे ।
 चैत्रस्य पापरोगो न भवति पिबतां क्वचिन्नृणाम् ॥ ४३ ॥
 इति वानर्यादिकाथः ।

अथ बृहत्पटोलादिकाथः—

नारीणां वामपादस्थं नराणामपसव्यगम् ।
 पापरोगमयं बन्धाच्छिवास्थि विनिवारयेत् ॥ ४४ ॥
 चैत्रासितभूतदिने रक्तपताकान्विता स्नुही भवने ।
 धवलितकलशे न्यस्ता पादरुजं दूरतो धत्ते ॥ ४५ ॥
 पटोलं सारिवा मुस्तं पाठा कटुकरोहिणी ।
 खदिरः पिचुमन्दश्च बला धात्री विकङ्कतः ॥ ४६ ॥
 एषां कषायः पानाच्च हन्ति वातमसूरिकाम् ।
 इति बृहत्पटोलादिकाथः ।

अथ निम्बादिकाथः—

न्यग्रोधप्लक्ष्मस्त्रिष्ठशिरीषोदुम्बरत्वचाम् ॥ ४७ ॥

* क, वास्तूकं हिलमोचिका शाकमेदः ।

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
LONDON
PUBLISHED BY THE INSTITUTE
11, BEDFORD SQUARE, LONDON, W.C.1

1906

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
LONDON
PUBLISHED BY THE INSTITUTE
11, BEDFORD SQUARE, LONDON, W.C.1
1906

1906

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
LONDON
PUBLISHED BY THE INSTITUTE
11, BEDFORD SQUARE, LONDON, W.C.1
1906

1906

1906

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
LONDON

ससर्पिष्कं मसूर्यां तु वातजायां प्रलेपनम् ।
 एतस्यां शोधनं नैव कार्यं वैद्येन जानता ॥ ४८ ॥
 तत्राऽऽदौ तर्पणं कार्यं लाजचूर्णेः सशर्करैः ।
 आदावेव मसूर्यां तु पित्तजायां प्रयोजयेत् ॥ ४९ ॥
 निम्बादिक्रथितं तेन प्रशाम्यति मसूरिका ।

तद्यथा—

निम्बः पर्पटकं पाठा पटोलं चन्दनद्वयम् ॥ ५० ॥
 वासा दुरालमा धात्री सेव्यं कटुकरोहिणी ।
 एतेषां क्रथितं शीतं सितया मधुरीकृतम् ॥ ५१ ॥
 मसूरिकां पित्तकृतां हन्ति रक्तोत्तरामपि ।

इति निम्बादिक्रथः ।

अथ द्राक्षादिक्रथः—

द्राक्षाकाश्मर्यखर्जूरपटोलारिष्टवासकैः ॥ ५२ ॥
 लाजामलकदुस्पर्शैः क्रथितं शर्करान्वितम् ।
 मसूरिकां पित्तकृतां रक्तजां च विनाशयेत् ॥ ५३ ॥

इति द्राक्षादिक्रथः ।

अथ पञ्चमूलादिक्रथः—

शिरीषोदुम्बराश्वत्थशेलुन्यग्रोधवल्कलैः ।
 प्रलेपः सघृतः शीतं व्रणवीसर्पदाहहा ॥ ५४ ॥
 खदिरारिष्टपत्रैश्च शिरीषोदुम्बरत्वचा ।
 कुर्याल्लेपं कफोत्थायां मसूर्यां भिषगुत्तमः ॥ ५५ ॥
 वृषपत्ररसं दद्यात्पानार्थं मधुसंयुतम् ।
 कफजायां मसूर्यां तु कठिनायां विशेषतः ॥ ५६ ॥
 बृहतः पञ्चमूलस्य वृषपत्रयुतस्य च ।
 कषायः शमयेत्पीतः कफोत्थां तु मसूरिकाम् ॥ ५७ ॥

इति पञ्चमूलादिक्रथः ।

अथ दुरालभादिक्रथः—

दुरालभा पर्पटकं पटोलं कटुरोहिणी ।
 पिबेन्मसूर्यामिन्नेषां क्रथं पित्तकफात्मनि ॥ ५८ ॥

इति दुरालभादिक्रथः ।

一、
二、
三、
四、
五、
六、
七、
八、
九、
十、

अथ गुडूच्यादिः—

गुडूचीपर्पटानन्ताकटुकाक्थितं पिबेत् ।

वातपित्तमसूर्यां तु घोरोपद्रवमाजि च ॥ ५९ ॥

इति गुडूच्यादिः ।

अथ नागरादिः—

नागरमुस्तगुडूचीधान्यकभार्गीवृषैः कृतः काथः ।

वातश्लेष्ममसूरीदूरी कुरुतेऽनुपानतः सत्यम् ॥ ६० ॥

इति नागरादिः ।

अथ निम्बादिकाथः—

निम्बः पर्पटकं पाठा पटोलं कटुरोहिणी ।

वासा दुरालभा धात्री ससेव्यं चन्दनद्वयम् ॥ ६१ ॥

एष निम्बादिकः ख्यातः काथः शर्करयाऽन्वितः ।

मसूरीं सर्वजां हन्ति सर्वोपद्रवसंयुताम् ॥ ६२ ॥

इति निम्बादिकाथः ।

अथ काञ्चनारादिः—

काञ्चनारत्वचः काथस्ताप्यचूर्णविचूर्णितः ।

निर्गत्यान्तः प्रविष्टां तु मसूरीं बाह्यतो नयेत् ॥ ६३ ॥

इति काञ्चनारादिः ।

अथ पटोलादिः—

पटोलकुण्डलीमुस्तावृषधन्वयवासकैः ।

भूनिम्बनिम्बकटुकापर्पटैश्च शृतं जलम् ॥ ६४ ॥

मसूरीः शमयेदामाः पक्काश्चैव विशोधयेत् ।

नातः परतरं किञ्चिच्छीतलाज्वरशान्तये ॥ ६५ ॥

इति पटोलादिः ।

अथ खदिराष्टकम्—

खदिरत्रिफलारिष्टपटोलामृतवासकैः ।

काथोऽष्टमागो जयति रोमान्तिकमसूरिकाः ।

कुष्ठविस्फोटवीसर्पकण्डवादीनपि पानतः ॥ ६६ ॥

इति खदिराष्टकम् ।

一、總論

（一）研究之目的
（二）研究之範圍
（三）研究之方法

（四）研究之經過
（五）研究之結果

（六）研究之結論
（七）研究之建議
（八）研究之附註

（九）研究之參考文獻
（十）研究之謝辭
（十一）研究之摘要

（十二）研究之目錄
（十三）研究之索引
（十四）研究之附錄

（十五）研究之結論
（十六）研究之建議
（十七）研究之附註

अथ पटोलादिकाथः—

पटोलमूलारुणतण्डुलीयकं तथैव धात्रीखदिरेण संयुतम् ।
पिबेज्जलं सुकथितं सुशीतलं मसूरिकारोगविनाशनं परम् ॥ ६७ ॥
इति पटोलादिकाथः ।

अथ शिरीषादिचूर्णम्—

शिरीषोदुम्बराश्वत्थवटप्लक्षत्वचां रजः ।
उद्धूलनेन जयति मसूरीक्लेदमुल्बणम् ॥ ६८ ॥
इति शिरीषादिचूर्णम् ।

अथ निम्बादिधावनम्—

निम्बातिमुक्तकास्फोताबिम्बीवितसवलकलम् ।
शृतशीतं प्रयोक्तव्यं मसूरीव्रणधावने ॥ ६९ ॥
इति निम्बादिधावनम् ।

अथाञ्जनम्—

शम्बूकमांसं स्वरसेन नेत्रे समञ्जयेत्तेन मसूरिकाभ्यः ।
न जायते तत्र भयं भवन्ति नैताः प्रजातास्तु शमं प्रयान्ति ॥ ७० ॥
इत्यञ्जनम् ।

अथ मसूरीधूपनम्—

रालाहिङ्गुरसोनैश्च धूपयेत्ता मसूरिकाः ।
कृमयो न पतन्त्यत्र जाताः शाम्यन्ति ते लघु ॥ ७१ ॥
इति मसूरीधूपनम् ।

आर्द्रकस्य रसं दद्याद्हरदेन समन्वितम् ।
कफप्रकोपे घुर्घुरके मसूर्या कण्ठरोधने ॥ ७२ ॥
अतिक्लेदे प्रदातव्यमारण्योपलभस्मकम् ।
यथादोषं प्रदातव्यं पथ्यमत्र विचक्षणैः ॥ ७३ ॥
कुर्याद्व्रणविधानं च मसूर्या तैलवर्जितम् ।
तथा शोणितसंसृष्टाः काश्चिच्छोणितमोक्षणैः ॥ ७४ ॥
काश्चिद्विनाऽपि क्रियया सिध्यन्त्याशु मसूरिकाः ।
काश्चिक्क्रियाकलापेन न सिध्यन्ति मसूरिकाः ॥ ७५ ॥
कृष्णाः कृष्णतराः काश्चिद्यत्नात्सिध्यन्ति वा न वा ।
स्तवपाठैः सिद्धमन्त्रैर्जपैर्ग्रहविधानतः ॥ ७६ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

2. The second part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the chairperson.

3. The third part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the secretary.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the treasurer.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the clerk.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant clerk.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant treasurer.

शीतलाराधनैश्चण्डीपाठैश्चैता उपाचरेत् ।

अयमेव विधिः कार्यः कोद्रवाख्यामयेऽपि च ॥ ७७ ॥

अथ मसूरिकाभेदस्य शीतलाया अधिकारः—

देव्या शीतलया क्रान्ता मसूर्यैव हि शीतला ।

ज्वर एवं यथाभूताधिष्ठितो विषमज्वरः ॥ ७८ ॥

सा च सप्तविधा ख्याता तासां भेदान्प्रचक्षमहे ।

ज्वरपूर्वा बृहत्स्फोटैः शीतला बृहती भवेत् ॥ ७९ ॥

सप्ताहान्निःसरत्येषा सप्ताहात्पूर्णतां व्रजेत् ।

ततस्तृतीये सप्ताहे शुष्यति स्खलति त्वचम् ॥ ८० ॥

तासां मध्ये यदा काश्चित्पाकं गत्वा स्रवन्ति च ।

तत्रावधूलनं कुर्याद्वनगोमयमस्मना ॥ ८१ ॥

निम्बसत्पत्रशाखाभिर्मक्षिकामपसारयेत् ।

जलं च शीतलं दद्याज्ज्वरेऽपि न तु तद्भवैत् ॥ ८२ ॥

स्थापयेत्तं स्थले पूते रम्ये रहसि शीतले ।

माशुचिः संस्पृशेत्तं तु न च तस्यान्तिकं व्रजेत् ॥ ८३ ॥

बहवो भिषजो नात्र भेषजं योजयन्ति हि ।

केचित्प्रयोजयन्त्येव मर्तं तेषामथ ब्रुवे ॥ ८४ ॥

ये शीतलेन सलिलेन विपिष्य सम्यक्

चिञ्चाजबीजसहितां रजनीं पिबन्ति ।

तेषां भवन्ति न कदाचिदपीह देहे

पीडाकरा जगति शीतलिकाविकाराः ॥ ८५ ॥

मोक्षारसेन सहितं सितचन्दनं ये

वासारसेन मधुर्कं मधुकेन वाऽथ ।

आदौ पिबन्ति सुमनास्वरसेन मिश्रं

ते माऽऽप्नुवन्ति भुवि शीतलिकाविकारान् ॥ ८६ ॥

बध्नीयान्निम्बपत्राणि परितो भवनान्तरे ।

कदाचिदपि नो कार्यमुच्छिष्टस्य प्रवेशनम् ॥ ८७ ॥

स्फोटेष्वधिकदाहेषु रक्षारेणूत्करो हितः ।

तेन ते शोषमायान्ति प्रपाकं न भजन्ति च ॥ ८८ ॥

रक्षारेणूत्करः शुष्कगोमयभस्मचूर्णप्रक्षेपः ।

चन्दनं वासवो वस्तं गुडूची द्राक्षया सह ।

The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that proper record-keeping is essential for the transparency and accountability of the organization. The document then outlines the specific procedures for recording transactions, including the use of standardized forms and the requirement for double-checking entries. It also mentions the importance of regular audits to ensure the accuracy of the records.

The second part of the document focuses on the financial management of the organization. It discusses the various sources of funding and the methods for allocating resources. The document highlights the need for careful budgeting and the importance of monitoring expenses to ensure that the organization remains within its financial limits. It also mentions the importance of maintaining a reserve fund to cover any unexpected costs.

The third part of the document deals with the human resources of the organization. It discusses the recruitment process and the importance of selecting qualified individuals for each position. The document also mentions the importance of providing ongoing training and development opportunities for all employees. It emphasizes that a well-trained and motivated workforce is essential for the success of the organization.

The final part of the document discusses the overall goals and objectives of the organization. It outlines the long-term vision and the specific targets for the next year. The document also mentions the importance of regular communication and reporting to keep all stakeholders informed of the organization's progress. It concludes by stating that the organization is committed to achieving its goals and providing the best possible service to its clients.

एषां शीतकषायस्तु शीतलाज्वरमाशनः ॥ ८९ ॥
 जघहोमोपहारैश्च दानैः स्वस्त्ययनार्चनैः ॥
 विप्रगोशंभुगौरीणां पूजनैस्ताः शमं नयेत् ॥ ९० ॥
 स्तोत्रं च शीतलादेव्याः पठेच्छीतलिनोऽन्तिके ।
 बाह्मणः श्रद्धया युक्तस्तेन शाम्यन्ति शीतलाः ॥ ९१ ॥
 अभ्यङ्गधौताम्बरधारणानि श्मश्रुक्रियामङ्गललेपकृत्यम् ।
 वाद्यारवादीनि च तद्गदार्तगेहे प्रशस्तानि वदन्ति सन्तः ॥ ९२ ॥

अथ शीतलाष्टकम्—

स्कन्द उवाच—

मगवन्देवदेवेश शीतलायाः स्तवं शुभम् ।
 वक्तुमर्हस्यशेषेण विस्फोटकमयापहम् ॥ ९३ ॥

ईश्वर उवाच—

वन्देऽहं शीतलां देवीं रासमस्थां दिगम्बराम् ।
 मार्जनीकलशोपेतां शूर्पालंकृतमस्तकाम् ॥ ९४ ॥
 वन्देऽहं शीतलां देवीं सर्वरोगभयापहाम् ।
 यामासाद्य निवर्तेत विस्फोटकभयं महत् ॥ ९५ ॥
 शीतले शीतले चेति यो ब्रूयाद्वाहपीडितः ।
 विस्फोटकभयं घोरं क्षिप्रं तस्य प्रणश्यति ॥ ९६ ॥
 यस्त्वामुदकमध्ये तु धृत्वा संपूजयेन्नरः ।
 विस्फोटकभयं घोरं कुले तस्य न जायते ॥ ९७ ॥
 शीतले ज्वरदग्धस्य पूतिगन्धगतस्य च ।
 प्रनष्टचक्षुषः पुंसस्त्वामाहुर्जीवनौषधम् ॥ ९८ ॥
 शीतले तनुजान् रोगान्मृणां हरसि दुस्तरान् ।
 विस्फोटकविशीर्णानां त्वमेकाऽमृतवर्षिणी ॥ ९९ ॥
 गलगण्डग्रहा रोगा ये चान्ये दारुणा नृणाम् ।
 त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यान्ति संक्षयम् ॥ १०० ॥
 न मन्त्रो नौषधं किञ्चित्पापरोगस्य विद्यते ।
 त्वमेका शीतले त्रासि नान्यां पश्यामि देवताम् ॥ १०१ ॥
 मृणालतन्तुसदृशीं नाभिहन्मध्यसंस्थिताम् ।
 यस्त्वां विचिन्तयेद्देवि तस्य मृत्युर्न जायते ॥ १०२ ॥

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that proper record-keeping is essential for the transparency and accountability of the organization. This section also outlines the specific procedures for recording and verifying financial data.

2. The second part of the document addresses the challenges associated with managing large volumes of data. It highlights the need for efficient data management systems and the importance of regular data audits to ensure the integrity and accuracy of the information. This section also discusses the role of technology in streamlining data management processes.

3. The third part of the document focuses on the importance of communication and collaboration among all stakeholders. It stresses that effective communication is crucial for the successful implementation of any project or initiative. This section also outlines the specific communication protocols and the roles and responsibilities of each stakeholder.

4. The fourth part of the document discusses the importance of risk management. It emphasizes that identifying and assessing potential risks is essential for the successful completion of any project. This section also outlines the specific risk management procedures and the roles and responsibilities of each stakeholder.

5. The fifth part of the document addresses the importance of monitoring and evaluation. It stresses that regular monitoring and evaluation are crucial for the successful implementation of any project. This section also outlines the specific monitoring and evaluation procedures and the roles and responsibilities of each stakeholder.

6. The sixth part of the document focuses on the importance of documentation. It emphasizes that proper documentation is essential for the transparency and accountability of the organization. This section also outlines the specific documentation procedures and the roles and responsibilities of each stakeholder.

7. The seventh part of the document discusses the importance of training and development. It stresses that regular training and development are crucial for the successful implementation of any project. This section also outlines the specific training and development procedures and the roles and responsibilities of each stakeholder.

8. The eighth part of the document addresses the importance of compliance. It emphasizes that regular compliance audits are essential for the successful implementation of any project. This section also outlines the specific compliance procedures and the roles and responsibilities of each stakeholder.

9. The ninth part of the document focuses on the importance of communication and collaboration. It stresses that effective communication is crucial for the successful implementation of any project. This section also outlines the specific communication protocols and the roles and responsibilities of each stakeholder.

10. The tenth part of the document discusses the importance of risk management. It emphasizes that identifying and assessing potential risks is essential for the successful completion of any project. This section also outlines the specific risk management procedures and the roles and responsibilities of each stakeholder.

[सप्तविंशत्यधिकशततमस्तरङ्गः] बृहद्योगतरङ्गिणी ।

८२७

अष्टकं शीतलाक्षेया यः पठेन्मानवः सदा ।

विस्फोटकभयं घोरं कुले तस्य न जायते ॥ ३ ॥

श्रोतव्यं पठितव्यं च नरैर्मक्तिसमन्वितैः ।

उपसर्गविनाशाय परं स्वस्त्ययनं महत् ॥ ४ ॥

शीतलाष्टकमेतद्धि न देयं यस्य कस्यचित् ।

किंतु तस्मै प्रदातव्यं भक्तिश्रद्धान्वितो हि यः ॥ १०५ ॥

इति श्रीस्कन्दपुराणे काशीखण्डे शीतलाष्टकस्तोत्रं संपूर्णम् ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां मसूरिकाशीतलानिदानचिकित्साकथनं नाम

षड्विंशत्यधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १२६ ॥

अथ सप्तविंशत्यधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ क्षुद्ररोगनिदानम्—

तत्राऽऽदावजगल्लिकामाह—

स्निग्धा सवर्णा ग्रथिता नीरुजा मुद्रसंनिभा ।

पिटका कफवातोत्था बालानामजगल्लिका ॥ १ ॥

यवप्रख्यामाह—

यवाकारा सुकठिना ग्रथिता मांससंभिता ।

पिटका श्लेष्मवाताभ्यां यवप्रख्येति सा स्मृता ॥ २ ॥

अन्धालजीमाह—

घनाभवक्त्रां पिटकामुन्नतां परिमण्डलाम् ।

अन्धालजीमल्पमूयां तां विद्यत्कफवातजाम् ॥ ३ ॥

विवृतामाह—

विवृतास्यां महादाहां पक्वोदुम्बरसंनिभाम् ।

मुमण्डलां पित्तकृतां विवृतां नाम तां विदुः ॥ ४ ॥

कच्छपिकामाह—

ग्रन्थयः पञ्च वा षड्वा दारुणाः कच्छपोन्नताः ।

कफानिलाभ्यां पिटका ज्ञेया कच्छपिका बुधैः ॥ ५ ॥

वल्मीकमाह—

ग्रीवांसकक्षाकरपाददेशे संधौ गले वा त्रिभिरेव दोषैः ।
ग्रन्थिः स वल्मीकवदक्रियाणां जातः क्रमेणैव गतः स पाकम् ॥ ६ ॥
मुखैरनेकैः स्फुटितोदवद्भिर्विसर्पवत्सर्पति चोन्नताग्रैः ।
वल्मीकमाहुर्मिषजो विकारं निष्प्रत्यनीकं चिरजं विशेषात् ॥ ७ ॥

इन्द्रवृद्धामाह—

पद्मकर्णिकवन्मध्ये पिटकाभिः समाचिताम् ।
इन्द्रवृद्धां तु तां विद्याद्वातपित्तोत्थितां मिषक् ॥ ८ ॥

गर्दभिकामाह—

मण्डलाकृतिमुत्सन्नां सरक्तां पिटकाचिताम् ।
रुजाकरीं गर्दभिकां तां विद्याद्वातपित्तजाम् ॥ ९ ॥

पाषाणगर्दभमाह—

वातश्लेष्मसमुद्भूतः श्वयथुर्हनुसंधिजः ।
स्थिरो मन्दरुजः सिग्धो ज्ञेयः पाषाणगर्दभः ॥ १० ॥

पनसिकामाह—

कर्णस्याभ्यन्तरे जातां पिटकामुग्रवेदनाम् ।
स्थिरां पनसिकां तां तु विद्याद्वातकफोत्थिताम् ॥ ११ ॥

जालगर्दभमाह—

विसर्पवत्सर्पति यः शोफस्तनुरपाकवान् ।
दाहज्वरकरः पित्तात्स ज्ञेयो जालगर्दभः ॥ १२ ॥

इरिवेल्लिकामाह—

पिटकामुत्तमाङ्गस्थां वृत्तामुग्ररुजाकरीम् ।
सर्वात्मिकां सर्वलिङ्गां जानीयादिरिवेल्लिकाम् ॥ १३ ॥

कक्षामाह—

बाहुपार्श्वासकक्षेषु कृष्णस्फोटां सवेदनाम् ।
पित्तप्रकोपसंभूतां कक्षामिति विनिर्दिशेत् ॥ १४ ॥



गन्धनामाह—

एकामेतादृशीं दृष्ट्वा पिटकां स्फोटसंनिमाम् ।
त्वग्गतां पित्तकोपेन गन्धनामां प्रचक्षते ॥ १५ ॥

अग्निरोहिणीमाह—

कक्षाभागेषु ये स्फोटा जायन्ते मांसदारणाः ।
अन्तर्दाहज्वरकरा दीप्तपावकसंनिमाः ॥ १६ ॥
सप्ताहाद्द्वादशाहाद्वा पक्षाद्वा घ्नन्ति मानवम् ।
तामग्निरोहिणीं विद्यादसाध्यां संनिपाततः ॥ १७ ॥

चिष्पमाह—

नखमांसमधिष्ठाय वातपित्तं च देहिनाम् ।
कुरुते दाहपाकौ तु तं व्याधिं चिष्पमादिशेत् ॥ १८ ॥

कुनखमाह—

तदेवाल्पतरैर्दोषैः कुनखं परुषं वदेत् ।
अभिघातात्पदुष्टो यो नखो रूक्षोऽसितः खरः ॥ १९ ॥
भवेत्तं कुनखं विद्यात्कुलीरमिति संज्ञितम् ।

अनुशयीमाह—

गम्भीरामल्पसंरम्भां सवर्णां मुपरिस्थिताम् ॥ २० ॥
पादस्यानुशयीं तां तु विद्यादन्तःप्रपाकिनीम् ।

विदारिकामाह—

विदारीकन्दवद्वृत्ता कक्षावङ्गक्षणसंधिषु ॥ २१ ॥
विदारिका भवेद्रक्ता सर्वजा सर्वलक्षणा ।

शर्करार्बुदमाह—

प्राप्य मांसशिरास्त्रायुश्लेष्ममेदोऽनिलस्तथा ॥ २२ ॥
ग्रंथिं कुर्वत्यसौ भिन्नो मधुसर्पिर्वसानिम्बम् ।
स्रवत्यास्रावमनिलस्तत्र वृद्धिं गतः पुनः ॥ २३ ॥
मांसं विशोष्य ग्रथितः शर्करां जनयत्यतः ।
दुर्गन्धिं क्लिन्नमत्यर्थं नानावर्णं ततः शिराः ॥ २४ ॥
सृजन्ति रक्तं सहसा तं विद्याच्छर्करार्बुदम् ।



पाददारीमाह—

परिक्रमणशीलस्य वायुरत्यर्थरूक्षयोः ॥ २५ ॥

पादयोः कुरुते दारीं सरुजां तलसंभिताम् ।

कदरमाह—

शर्करोन्मथिते पादे क्षते वा कण्टकादिभिः ॥ २६ ॥

ग्रन्थिः कीलवदुत्सन्नो जायते कदरं तु तत् ।

अलसमाह—

क्लिन्नाङ्गुल्यन्तरो पादौ कण्डूदाहरुजान्वितौ ॥ २७ ॥

दुष्टकर्मसंस्पर्शादलसं तं विभावयेत् ।

इन्द्रलुप्तमाह—

रोमकूपानुगं पित्तं वातेन सह मूर्छितम् ॥ २८ ॥

प्रख्यावयति रोमाणि ततः श्लेष्मा सशोणितः ।

रुणद्धि रोपकूपांस्तु ततोऽन्येषामसंभवः ॥ २९ ॥

तदिन्द्रलुप्तं खालित्यं रुज्येति च विभावयेत् ।

दारुणकमाह—

दारुणा कण्डुरा रूक्षा केशभूमिः प्रपुट्यते ॥ ३० ॥

कफमारुतकोपेन विद्याद्दारुणकं तु तत् ।

अरूषिकामाह—

अरूषि बहुवक्त्राणि बहुक्लेदीनि मूर्धनि ॥ ३१ ॥

कफासृक्क्रिमिकोपेन नृणां विद्यादरूषिकाम् ।

पलितमाह—

क्रोधशोकभ्रमकृतः शरीरोष्मा शिरोगतः ॥ ३२ ॥

पित्तं च केशान्पचति पलितं तेन जायते ।

मुखदूषिकामाह—

शाल्मलीकण्टकप्रख्याः कफमारुतरक्तजाः ॥ ३३ ॥

जायन्ते पिटका यूनां विज्ञेया मुखदूषिकाः ।

पद्मिनीकण्टकमाह—

कण्टकैराचितं वृत्तं मण्डलं पाण्डु कण्डुरम् ॥ ३४ ॥

पद्मिनीकण्टकप्रख्यैस्तदाख्यं कफवातजम् ।

■

जतुमणिमाह—

सममुच्छन्नमरुजं मण्डलं कफरक्तजम् ॥ ३५ ॥
सहजं लक्ष्म चैकेषां लक्ष्यो जतुमणिस्तु सः ।

मशमाह—

अवेदनं स्थिरं चैव यस्मिन्गात्रे तु दृश्यते ॥ ३६ ॥
माषवत्कृष्णमुत्सन्नमनिलान्मशमादिशेत् ।

तिलकालकानाह—

नीलानि तिलमात्राणि नीरुजानि समानि च ॥ ३७ ॥
वातपित्तकफौद्रेकात्तान्विद्यात्तिलकालकान् ।

न्यच्छमाह—

महद्वा यदि वाऽत्यल्पं श्यामं वा यदि वा सितम् ॥ ३८ ॥
नीरुजं मण्डलं गात्रे न्यच्छमित्यभिधीयते ।

व्यङ्गमाह—

क्रोधायासप्रकुपितो वायुः पित्तेन संयुतः ॥ ३९ ॥
मुखमागत्य सहसा मण्डलं विसृजत्यतः ।
नीरुजं तनुकं श्यावं मुखे व्यङ्गं तमादिशेत् ॥ ४० ॥

नीलिकामाह—

कृष्णामेवंगुणां गात्रे मुखे वा नीलिकां विदुः ।

पाण्डुत्वमाह—

वायुनोदीरितः श्लेष्मा त्वर्चं प्राप्य विशुष्यति ॥ ४१ ॥
ततस्त्वग्जायते पाण्डुः क्रमेण च विचेतना ।

प्रसुप्तिमाह—

अल्पकण्डूरतिक्रैदा सा प्रसुप्तिः प्रकीर्तिता ॥ ४२ ॥

विषर्तिकामाह—

परुषं परुषस्पर्शं व्यङ्गं श्यावं च मारुतात् ।
पित्तात्ताम्रं तथाऽऽनीलं श्वेतान्तं कण्डुमत्कफात् ॥ ४३ ॥
रक्ताद्रक्ततमात्ताम्रं शेषं चिमिचिमायते ।
मर्दनात्पीडनाद्वाऽपि तथैवाप्यभिधाततः ॥ ४४ ॥

मेढ्रचर्म यदा वायुर्मजते सर्वतश्चरन् ।
 तदा वातोपसृष्टत्वाच्चर्म तत्परिवर्तते ॥ ४५ ॥
 मणेरधस्तात्कोशस्तु ग्रन्थिरूपेण लम्बते ।
 सवेदनं सदाहं च पाकं च व्रजति क्वचित् ॥ ४६ ॥
 विवर्तिकेति तां विद्यात्सरुजां वातसंभवाम् ।
 सकण्डूः कठिना वाऽपि सैव श्लेष्मसंमन्विता ॥ ४७ ॥

अवपाटिकामाह—

अल्पीयसीं यदा हर्षाद्द्विगुणं च्छेत्स्त्रियं नरः ।
 हस्ताभिघातादपि वा चर्मण्युद्वर्तिते बलात् ॥ ४८ ॥
 मर्दानात्पीडनाद्वाऽपि शुक्रवेगविघाततः ।
 यस्याश्च पाट्यते चर्म तां विद्याद्बपाटिकाम् ॥ ४९ ॥

निरुद्धप्रकशमाह—

वातोपसृष्टे मेढ्रे वै चर्म संश्रयते मणिम् ।
 मणिश्चर्मोपनद्धस्तु मूत्रस्रोतो रुणद्धि च ॥ ५० ॥
 निरुद्धप्रकशे तस्मिन्मन्दधारमवेदनम् ।
 मूत्रं प्रवर्तते जन्तोर्मणिर्विव्रियते न च ॥ ५१ ॥
 निरुद्धप्रकशं विद्यात्सरुजं वातसंभवम् ।

रुद्धगुदमाह—

वेगसंधारणाद्वायुर्विहतो गुदसंश्रितः ॥ ५२ ॥
 निरुणद्धि महत्स्रोतः सूक्ष्मद्वारं करोति च ।
 मार्गस्य सौक्ष्म्यात्कृच्छ्रेण पुरीषं तस्य गच्छति ॥ ५३ ॥
 संनिरुद्धगुदं व्याधिमेनं विद्यात्सुदुस्तरम् ।

अहिपूतनमाह—

शकृन्मूत्रसमायुक्तेऽधौतेऽपाने शिशोर्मवेत् ॥ ५४ ॥
 स्विन्ने वा स्नाप्यमाने वा कण्डू रक्तकफोद्भवा ।
 कण्डूयनात्ततः क्षिप्रं स्फोटस्त्रावश्च जायते ॥ ५५ ॥
 एकीभूतं व्रणैर्घोरं तं विद्यादहिपूतनम् ।

वृषणकच्छमाह—

ज्ञानोत्सादनहीनस्य मलो वृषणसंस्थितः ॥ ५६ ॥

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

यदा प्रकृियते स्वेदात्कण्डूं स जनयेत्ततः ।
कण्डूयनात्ततः क्षिप्रं स्फोटस्त्रावश्च जायते ॥ ५७ ॥
प्राहुर्वृषणकच्छूं तां श्लेष्मरक्तप्रकोपजाम् ।

गुदभ्रंशमाह—

प्रवाहणातिसाराभ्यां निर्गच्छति गुदो बहिः ॥ ५८ ॥
रूक्षदुर्बलदेहस्य तं गुदभ्रंशमादिशेत् ।

सूकरदंष्ट्रकमाह—

सदाहो रक्तपर्यन्तस्त्वक्पाकी तीव्रवेदनः ॥ ५९ ॥
कण्डूमाञ्ज्वरकारी च शोथः सूकरदंष्ट्रकः ।

इति क्षुद्ररोगनिदानम् ।

अथ क्षुद्ररोगचिकित्सा—

तत्राजगलिकामामां जलौकाभिरुपाचरेत् ॥ ६० ॥
शुक्तिसौराष्ट्रिकाक्षारकल्कैश्चाऽऽलेपयेन्मुहुः ।
श्लेष्मविद्रधिकल्केन जयेच्चानुशयीं भिषक् ॥ ६१ ॥
विवृतामिन्द्रवृद्धां च गर्दभं जालगर्दभम् ।
इरिवेलीं गन्धनामां जयेत्पित्तविसर्पवत् ॥ ६२ ॥
मधुरौषधसिद्धेन सर्पिषा नाशयेद्द्वणम् ।
नीलीपटोलयोर्मूलं जलपिष्टं प्रलेपयेत् ॥ ६३ ॥
पिप्पलीलेपनाद्भ्रन्ति जालगर्दभजां रुजाम् ।
रक्तावसेकैर्बहुभिः स्वेदनैरपतर्पणैः ॥ ६४ ॥
जयेद्विदारिकां लेपैः शिशुदेवद्रुमोद्भवैः ।
पनसिकां कच्छपिकामनेन विधिना जयेत् ॥ ६५ ॥
साधयेत्कठिनानन्याञ्जशोथान्दोषसमन्वितान् ।
अन्धालजीं कच्छपिकां तथा पाषाणगर्दभम् ॥ ६६ ॥
सुरदारुशिलाकुष्ठैः स्वेदयित्वा प्रलेपयेत् ।
कफमारुतशोथघ्नो लेपः पाषाणगर्दभे ॥ ६७ ॥
शस्त्रेणोत्कृत्य बल्मीकं क्षाराग्निभ्यां प्रसाधयेत् ।
मनःशिलालमलातसृक्षमैलागुरुचन्दनैः ॥ ६८ ॥
जातीपल्लवकल्कैश्च निम्बतैलं विपाचयेत् ।
बल्मीकं नाशयेत्तद्वि बहुच्छिद्रं बहुद्रवम् ॥ ६९ ॥

पाददारीषु तु शिरां व्यधयेत्तलशोधनीम् ।
 स्नेहस्वेदोपपन्नौ तु पादौ चाऽऽलेपयेन्मुहुः ॥ ७० ॥
 मधूच्छिष्टवसामज्जाघृत*क्षारैर्विमिश्रितैः ।
 ससर्जसिन्धूद्भवयोश्चूर्णं मधुघृतप्लुतम् ।
 निर्मथ्य कटुतैलाक्तं हितं पादप्रमार्जनम् ॥ ७१ ॥

अथोपोदकाद्यं तैलम्—

उपोदकासर्षपनिम्बमोचकर्कारुकैर्वारुकभस्मतोये ।
 तैलं विपक्वं लवणेन युक्तं तत्पाददारीं विनिहन्ति लेपात् ॥ ७२ ॥
 इत्युपोदकाद्यं तैलम् ।

अथ चाङ्गेरीघृतम्—

अलसेऽम्लैश्चिरं सिक्तौ चरणौ परिलेपयेत् ।
 पटोलारिष्टकासीसत्रिफलाभिर्मुहुर्मुहुः ॥ ७३ ॥
 करञ्जबीजं रजनी कासीसं मधुकं मधु ।
 रोचना हरितालं च लेपोऽयमलसे हितः ॥ ७४ ॥
 लाक्षामयारसो लेपः कार्यं वा रक्तमोक्षणम् ।
 बृहतीरससिद्धेन तैलैनाभ्यज्य बुद्धिमान् ॥ ७५ ॥
 शिलारोचनकासीसचूर्णैर्वा प्रतिसारयेत् ।
 दहेत्कदरमुदधृत्य तैलेन दहनेन वा ॥ ७६ ॥
 चिप्पमुष्णाम्बुना स्विन्नमुदधृत्याभ्यज्य तं व्रणम् ।
 दत्त्वा सार्जरसं चूर्णं बद्ध्वा व्रणवदाचरेत् ॥ ७७ ॥
 स्वरसेन हरिद्रायाः पात्रे कृष्णायसेऽभयाम् ।
 घृष्ट्वा तज्जेन कल्केन लिम्पेच्चिष्णं पुनः पुनः ॥ ७८ ॥
 निम्बोदकेन वमनं पद्मिनीकण्टके हितम् ।
 निम्बोदके कृतं सर्पिः सक्षौद्रं पानमिष्यते ॥ ७९ ॥
 निम्बारगवधकल्कैर्वा मुहुरुद्वर्तनं हितम् ।
 अहिपूतनके धात्र्याः पूर्वं स्तन्यं विशोधयेत् ॥ ८० ॥
 त्रिफलाखादिरक्ताथैर्व्रणानां धावनं सदा ।
 करञ्जत्रिफलाकल्कैः सर्पिः सिद्धं शिशोर्हितम् ॥ ८१ ॥

* यवक्षारः ।

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

रसाञ्जनं विशेषेण पानलेपनयोर्हितम् ।
 गुदभ्रंशो गुदं स्नेहैरभ्यज्याऽऽशु प्रवेशयेत् ॥ ८२ ॥
 प्रविष्टं स्वेदयेच्चापि बद्धं *गोपनया भृशम् ।
 कोमलं पाङ्गिनीपत्रं यः खादेच्छर्करान्वितम् ॥ ८३ ॥
 एतन्निश्चित्य निर्दिष्टं न तस्य गुदनिर्गमः ।
 वृक्षाम्लानलचाङ्गेरीविश्वपाठायवाग्रजम् ॥ ८४ ॥
 तत्केण शीलयेत्पायुभ्रंशार्तोऽनलदीपनम् ।
 गुदं च गव्यपयसा भ्रक्षयेद्विशङ्कितः ॥ ८५ ॥
 दुष्प्रवेशो गुदभ्रंशो विशत्याशु न संशयः ।
 मूषकाणां वसाभिर्वा गुदे सम्यक्प्रलेपनम् ॥ ८६ ॥
 सुस्विन्नमूषिकामांसेनाथ वा स्वेदयेद्गुदम् ।
 चाङ्गेरीकोलदध्यम्लनागरक्षारसंयुतम् ॥ ८७ ॥
 घृतमुत्कथितं पेयं गुदभ्रंशरुजापहम् ।

इति चाङ्गेरीघृतम् ।

अथ हरिद्रादिलेपस्तैलम्—

क्षीरे महत्पञ्चमूलं मूषिकामन्त्रवर्जिताम् ॥ ८८ ॥
 पक्त्वा तस्मिन्पचेत्तैलं वातघ्नौषधसंयुतम् ।
 गुदभ्रंशमिदं तैलं पानाभ्यङ्गाच्छर्मं नयेत् ॥ ८९ ॥
 स्वेदोपनाहौ परिकर्तिकायां कृत्वा समभ्यज्य घृतेन पश्चात् ।
 प्रवेशयेच्चर्मं शनैः प्रवृष्टे मांसैः सुखोष्णैरुपनाहयेत्तत् ॥ ९० ॥
 स्नेहस्वेदैस्तथैवैनां चिकित्सेद्वधपाटिकाम् ।
 चर्मकीलं जतुमणिं मशकांस्तिलकालकान् ॥ ९१ ॥
 उद्धृत्य शस्त्रेण दहेत्क्षाराग्निभ्यामशेषतः ।
 यौवने पिडकान्यच्छनीलिकाव्यङ्गशर्कराः ॥ ९२ ॥
 शिरावेधैः प्रलेपैश्च जयेदभ्यञ्जनैस्तथा ।
 लोभ्रधान्यवचालेपस्तारुण्यपिटकापहः ॥ ९३ ॥
 तद्वद्गोरोचनायुक्तं मरिचं मुखलेपनात् ।
 सिद्धार्थकवचालोभ्रसैन्धवैश्च प्रलेपनम् ॥ ९४ ॥
 वमनं च निहन्त्याशु पिटकां यौवनोद्भवाम् ।
 जातीफलं चन्दनं च मरिचं सह पेयितम् ॥ ९५ ॥

1. The first part of the paper discusses the importance of the study.

2. The second part of the paper discusses the methodology used.

3. The third part of the paper discusses the results of the study.

4. The fourth part of the paper discusses the conclusions of the study.

5. The fifth part of the paper discusses the implications of the study.

6. The sixth part of the paper discusses the limitations of the study.

7. The seventh part of the paper discusses the future research.

8. The eighth part of the paper discusses the acknowledgments.

9. The ninth part of the paper discusses the references.

10. The tenth part of the paper discusses the appendices.

मुखलेपेन हन्त्याशु पिटकां यौवनोद्भवाम् ।
 व्यङ्गेषु चार्जुनत्वक्च मञ्जिष्ठावृषमाक्षिकैः ॥ ९६ ॥
 लेपः सनवनीतो वा श्वेताश्वखुरजा मषी ।
 रक्तचन्दनमञ्जिष्ठाकुष्ठलोध्रं प्रियङ्गवः ॥ ९७ ॥
 वटाङ्कुरा मसूराश्च व्यङ्गान्ना मुखकान्तिदाः ।
 व्यङ्गानां लेपनं शस्तं रुधिराण्य शशस्य वा ॥ ९८ ॥
 वरुणस्य कषायेण मुखमाक्षाल्य लेपयेत् ।
 तेनैव दधिभिश्चेण पिटकानीलशान्तये ॥ ९९ ॥
 केवलान्पयसा पिष्ट्वा तीक्ष्णाञ्जालमलिकण्टकान् ।
 आलिप्तं त्र्यहमेतेन भवेत्पद्मोपमं मुखम् ॥ १०० ॥
 मसूरैः सर्पिषा पिष्टैर्लिप्तमास्थं पयोन्वितैः ।
 सप्तरात्रेण भवति पुण्डरीकदलप्रभम् ॥ १ ॥
 मातुलुङ्गजटासर्पिःशिलागोशकृतो रसः ।
 मुखकान्तिकरो लेपः पिडकातिलकालजित् ॥ २ ॥
 कालीयकोत्पलामयदधिसरबदरास्थिमध्यफलनीभिः ।
 लिप्तं भवति हि वदनं शशिप्रभं सप्तरात्रेण ॥ ३ ॥
 रक्षोघ्नशर्वरीद्वयमञ्जिष्ठागैरिकाज्यवस्तपयः ।
 सिद्धेन लिप्तमाननमिन्दुवदेतेन कल्केन ॥ ४ ॥
 परिणतदधिशरपुङ्खैः कुवलयदलकुष्ठचन्दनोशीरैः ।
 मुखकमलकान्तिकारी भृकुटीतिलकालकाञ्चयति ॥ ५ ॥
 हरिद्राद्वययष्ट्याह्वकालीयककुचन्दनम् ।
 प्रपौण्डरीकमञ्जिष्ठापद्मपद्मककुङ्कुमैः ॥ ६ ॥
 कपित्थतिन्दुकप्लक्षवटपत्रैः पयोन्वितैः ।
 लेपयेत्कल्कितैरेतैस्तैलं वाऽभ्यञ्जने पचेत् ॥ ७ ॥
 पिटकां नीलिकां व्यङ्गांस्तिलकान्मुखदूषकान् ।

इति हरिद्रादिलेपस्तैलम् ।

अथ कनकतैलम्—

मधुकस्य कषायेण तैलस्य कुडवं पचेत् ॥ ८ ॥
 कल्कैः प्रियङ्गुमञ्जिष्ठाचन्दनोत्पलकेसरैः ।
 कनकं नाम तत्तैलं मुखकान्तिकरं परम् ॥ ९ ॥
 अतीव नीलिकाव्यङ्गशोधनं परमार्चितम् ।

इति कनकतैलम् ।



अथ मञ्जिष्ठाद्यं तैलम्—

मञ्जिष्ठा मधुकं लाक्षा मातुलुङ्गं सयष्टिकम् ॥ ११० ॥
 कर्षप्रमाणैरेतैस्तु तैलस्य कुडवं तथा ।
 आजं पयस्तु द्विगुणं शनैर्मुद्गमिना पचेत् ॥ ११ ॥
 नीलिकापिडकाव्यङ्गानभ्यङ्गादेव नाशयेत् ।
 मुखं प्रसादोपचितं वलीपलितवर्जितम् ॥ १२ ॥
 सप्तरात्रप्रयोगेण भवेत्कनकसंनिभम् ।

इति मञ्जिष्ठाद्यं तैलम् ।

अथ कुङ्कुमाद्यं तैलम्—

कुङ्कुमं चन्दनं लाक्षा मञ्जिष्ठा मधुयष्टिका ॥ १३ ॥
 कालीयकमुशीरं च पद्मकं नीलमुत्पलम् ।
 न्यग्रोधपादाः पृक्षस्य शृङ्गाः पद्मस्य केशरम् ॥ १४ ॥
 द्विपञ्चमूलैः सहितैः कषायैः पलिकैः पृथक् ।
 जलाढकं विपक्तव्यं पादशेषमथोद्धरेत् ॥ १५ ॥
 मञ्जिष्ठा मधुकं लाक्षा पत्राङ्गं मधुयष्टिका ।
 कर्षप्रमाणैरेतैस्तु तैलस्य कुडवं पचेत् ॥ १६ ॥
 अजाक्षीरं तद्विगुणं शनैर्मुद्गमिना पचेत् ।
 सम्यक्पक्वं परं ह्येतन्मुखवर्णप्रसाधनम् ॥ १७ ॥
 नीलिकापिडकाव्यङ्गानभ्यङ्गादेव नाशयेत् ।
 सप्तरात्रप्रयोगेण भवेत्कनकसंनिभम् ॥ १८ ॥
 कुङ्कुमाद्यमिदं तैलमश्विभ्यां निर्मितं पुरा ।

इति कुङ्कुमाद्यं तैलम् ।

अथापरं कुङ्कुमाद्यं तैलम्—

कुङ्कुमं किंशुकं लाक्षा मञ्जिष्ठा रक्तचन्दनम् ॥ १९ ॥
 कालीयकं पद्मकं च मातुलुङ्गस्य केशरम् ।
 कुसुमं मधुयष्टी च फलिनी मदयन्तिका ॥ २० ॥
 निशे द्वे रोचना पद्ममुत्पलं च मनःशिला ।
 काकोल्यादिसमायुक्तैरभिरक्षसमैर्भिषक् ॥ २१ ॥
 लाक्षारसपयोभ्यां च तैलप्रस्थं विपाचयेत् ।
 कुङ्कुमाद्यमिदं तैलसम्यङ्गात्काञ्चनोपमम् ॥ २२ ॥

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

PHILOSOPHY DEPARTMENT

PHILOSOPHY 101
Lecture Notes
Fall 2023

Section 101A

Professor [Name]

These notes are a summary of the lectures and readings for the course. They are intended to provide a general overview of the topics covered and are not intended to be a substitute for the actual lectures or readings. The notes are organized into sections corresponding to the lectures and readings, and each section includes a brief summary of the main points discussed.

Section 101B

Professor [Name]

These notes are a summary of the lectures and readings for the course. They are intended to provide a general overview of the topics covered and are not intended to be a substitute for the actual lectures or readings. The notes are organized into sections corresponding to the lectures and readings, and each section includes a brief summary of the main points discussed.

करोति वदनं सद्यः पुष्टिलावण्यकान्तिदम् ।
सौभाग्यलक्ष्मीजननं वशीकरणमुत्तमम् ॥ २३ ॥

इति कुङ्कुमाद्यं तैलम् ।

अथ हरिद्राद्यं तैलम्—

अरुंधिकायां रुधिरैऽवसिक्ते
शिराव्यधेनाथ जलौकसा वा ।
निम्बाम्बुसिक्ते शिरसि प्रलेपो
देयोऽश्ववर्चोरससैन्धवाभ्याम् ॥ २४ ॥
पुराणमपि पिण्याकं पुरीषं कुक्कुटस्य च ।
मूत्रपिष्टप्रलेपोऽयं शीघ्रं हन्यादरुंधिकाम् ॥ २५ ॥
हरिद्राद्वयमञ्जिष्ठा त्रिफलारिष्टचन्दनैः ।
एतत्तैलमरुंधीणां सिद्धमभ्यञ्जने हितम् ॥ २६ ॥

इति हरिद्राद्यं तैलम् ।

अथ विषतैलम्—

दारुणे तु शिरां विध्येन्निग्धस्विन्नां ललाटजाम् ॥
अवपीडशिरोबस्तीनभ्यङ्गांश्चावचारयेत् ॥ २७ ॥
कोद्रवाणां तृणक्षारपानीयं परिधावने ।
कार्यं दारुणके मूर्ध्नि प्रलेपो मधुसंयुतः ॥ २८ ॥
प्रियालबीजमधुककुष्ठमिश्रैः ससैन्धवैः ।
काञ्जिकैस्तत्र सप्ताहं लेपो दारुणकापहः ॥ २९ ॥
मालतीकरवीराग्निनक्तमालविपाचितम् ।
तैलमभ्यञ्जने शस्तमिन्द्रलुप्तापहं परम् ॥ ३० ॥
इदं हि त्वरितं हन्ति दारुणं नियतं नृणाम् ।
स्नुहीपयः पयोऽर्कस्य मार्कवं लाङ्गलीं विषम् ॥ ३१ ॥
मूत्रमाजं सगोमूत्रं रक्तिकां सेन्द्रवारुणीम् ।
सिद्धार्थकं तीक्ष्णतैलं गर्भं दत्त्वा विपाचयेत् ॥ ३२ ॥
वाह्निना मृदुना पक्वं तैलं खालित्यनाशनम् ।
कूर्मपृष्ठसमानाऽपि रूक्षाया लोमतस्करी ॥ ३३ ॥
दग्धा साऽनेन जायेत ऋक्षशावीव लोमशा ।

इति विषतैलम् ।

1. The first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

2. The second part of the document is a list of the names of the members of the committee.

3. The third part of the document is a list of the names of the members of the committee.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the members of the committee.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

अथ गुञ्जातैलम्—

त्रिफलायोरजोमांसीमार्कवोत्पलसारिवैः ॥ ३४ ॥
 ससैन्धवैः पचेत्तैलमभ्यङ्गादत्यसीं जयेत् ।
 चित्रकं दन्तिनीमूलं कोशातकिसमन्वितम् ॥ ३५ ॥
 कल्कं पिष्ट्वा पचेत्तैलं केशशत्रुविनाशनम् ।
 गुञ्जाफलैः पचेत्तैलं मृङ्गराजरसेन तु ।
 कण्डूदारुणहृत्कुष्ठकपालव्याधिनाशनम् ॥ ३६ ॥

इति गुञ्जातैलम् ।

अथ मृङ्गराजतैलम्—

मृङ्गराजत्रिफलोत्पलसारि लोहपुरीषसमन्वितवारि ।
 तैलमिदं पच दाारुणहारि कुञ्चितकेशबनस्थिरकारि ॥ ३७ ॥
 इति मृङ्गराजतैलम् ।

अथ प्रपौण्डरीकायं तैलम्—

प्रपौण्डरीकमधुकपिप्पलीचन्दनोत्पलैः ।
 कार्ष्णिकैस्तैलकुडवैस्तैर्द्विरामलकीरसः ॥ ३८ ॥
 साध्यः सप्रतिमर्शः स्यात्सर्वशीर्षगदापहः ।
 इति प्रपौण्डरीकायं तैलम् ।

अथ चन्दनायं तैलम्—

इन्द्रलुप्ते शिरां विद्ध्वा शिलाकासीसतुत्थकैः ॥ ३९ ॥
 लेपयेत्परितः कल्कैस्तैलमभ्यञ्जने हितम् ।
 कुटन्नटशिखीजातीकरञ्जकरवीरकैः ॥ ४० ॥
 अवगाढपदं वाऽपि प्रच्छयित्वा पुनः पुनः ।
 गुञ्जाफलैश्चिरं लिम्पेत्केशभूमिं समन्ततः ।
 इन्द्रलुप्तापहो लेपो मधुना बृहतीरसः ॥ ४१ ॥
 बृहतीरसफलपिष्टं गुञ्जाफलमूलमिन्द्रलुप्तस्य ।
 कनकविघृष्टस्य ततो दातव्यं प्रच्छित्तस्य सदा ॥ ४२ ॥
 मधुकेन्द्रीवरमूर्वातिलाज्यगोक्षीरमृङ्गलेपेन ।
 अचिरान्भवन्ति केशा घनदृढमूलायता मृदवः ॥ ४३ ॥
 वटावरोहकोशिन्योश्चूर्णेनाऽऽदित्यपाचितम् ।
 गुडूचीस्वरसे तैलमभ्यङ्गात्केशरोहणम् ॥ ४४ ॥

चन्दनं मधुकं मूर्वा त्रिफला नीलमुत्पलम् ।
 कान्ता वटावरोहश्च गुडूची विषमेव च ॥ ४५ ॥
 लोहचूर्णं तथा केशी सारिवे द्वे तथैव च ।
 मार्कवस्वरसेनैव तैलं मृद्वग्निना पचेत् ॥ ४६ ॥
 शिरःसु पतिताः केशा जायन्ते कुञ्चिता घनाः ।
 दृढमूला मृजाद्याश्च तथा भ्रमरसंनिमाः ॥ ४७ ॥
 नस्येनाकालपलितं निहन्यात्तैलमुत्तमम् ।

इति चन्दनाद्यं तैलम् ।

अथ कृष्णीकरणम्—

तैलं सयष्टीमधुकक्षीरधात्रीफलैः शृतम् ॥ ४८ ॥
 नस्ये दत्तं जनयति केशाञ्जमश्रूणि वाऽप्यथ ।
 हस्तिदन्तमर्षीं कृत्वा दावीस्वरसमाविताम् ॥ ४९ ॥
 लोमान्येतेन जायन्ते हस्तपादतलेष्वपि ।
 कर्षं एको हरीतक्या द्विकर्षामलकं तथा ॥ ५० ॥
 ताम्रचूर्णं कर्षमात्रं सर्वमेकत्र कारयेत् ।
 वस्त्रपूतं कृतं पश्चादम्लतक्रेण पेषयेत् ॥ ५१ ॥
 मर्दयेन्निदिनं यावत्पश्चात्केशेषु लेपयेत् ।
 सप्ताहात्परतो नित्यं त्रिवारान्ते प्रयत्नतः ॥ ५२ ॥
 उक्तानुक्तेषु लेपेषु वेष्टेतैरण्डपत्रकैः ।
 कुर्याद्वात्रौ दिवा स्नानं युक्तिरेषा प्रशस्यते ॥ ५३ ॥
 त्रिफला नीलिनीपत्रं लोहं मृङ्गरजः समम् ।
 अविमूत्रेण संयुक्तं कृष्णीकरणमुत्तमम् ॥ ५४ ॥
 त्रिफलाचूर्णसंयुक्तं लोहचूर्णं विनिक्षिपेत् ।
 ईषत्पके नारिकेले मृङ्गराजरसान्विते ॥ ५५ ॥
 मासमेकं तु निक्षिप्य सम्यग्गतात्समुद्धरेत् ।
 ततः शिरो मुण्डयित्वा लेपं दद्याद्भिषग्वरः ॥ ५६ ॥
 संवेष्ट्य कदलीपत्रैर्मोचयेत्सप्तमे दिने ।
 क्षालयेत्त्रिफलाक्राथैः क्षीरमांसरसाशिनः ॥ ५७ ॥
 कपालरञ्जनं चैतत्कृष्णीकरणमुत्तमम् ।

इति कृष्णीकरणम् ।

[Illegible text]

[illegible]

The first part of the paper discusses the importance of the research and the objectives of the study. It then presents a literature review of the existing research on the topic. The second part of the paper describes the methodology used in the study, including the data collection and analysis techniques. The third part of the paper presents the results of the study, and the fourth part discusses the conclusions and implications of the findings.

100

अथ पटोलघृतम्—

उत्पलं पयसा सार्धं मासं भूमौ निधापयेत् ।
 केशानां कृष्णकरणं स्नेहनं च विधीयते ॥ ५८ ॥
 लोहमलामलकैः सजपाकुसुमैर्नरः सदास्नायी ।
 पलितानीह न पश्यति गङ्गास्नायीव नरकाणि ॥ ५९ ॥
 निम्बस्य बीजानि विभावितानि
 भृङ्गस्य तोयेन तथाऽसनस्य ।
 तैलं तु तेषां विनिहन्ति नस्यं
 दुग्धान्नभोक्तुः पलितं समूलम् ॥ ६० ॥
 निम्बस्य तैलं प्रकृतिस्थमेवं
 नस्यं विधेयं विधिना यथावत् ।
 मासेन गोक्षीरभुजो नरस्य
 चिरात्प्रभूतं पलितं निहन्ति ॥ ६१ ॥
 क्षीरात्समार्कवरसाद्विप्रस्थे मधुकोत्पले ।
 तैलस्य कुडवं पक्वं तन्नस्यं पलितापहम् ॥ ६२ ॥
 कासीसरोचनातुथहरितालरसाञ्जनैः ।
 अम्लपिष्टैः प्रलेपोऽयं मुष्ककच्छ्राहिपूतने ॥ ६३ ॥
 पटोलपत्रत्रिफलारसाञ्जनविपाचितम् ।
 पीतं घृतं नाशयति कृच्छ्रमप्यहिपूतनम् ॥ ६४ ॥

इति पटोलघृतम् ।

रजनीमार्कवमूलं पिष्टं शीतेन वारिणा तुल्यम् ।
 हन्ति विसर्पं लेपाद्वराहदशनाह्वयं घोरम् ॥ ६५ ॥
 वचालोध्रमुशीरं च सर्पिः सर्जरसं तथा ।
 गैरिकं मधुकं सिक्थमजाक्षीरेण पेषयेत् ॥ ६६ ॥
 कर्णौ तेन प्रवर्धेते नारीणां च पयोधरौ ।
 मुखं चन्द्रोषमं कुर्यात्पादौ पद्मदलोपमौ ॥ ६७ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां क्षुद्ररोगनिदानचिकित्साकथनं नाम सप्तविंशत्यधि-
 कशततमस्तरङ्गः ॥ १२७ ॥

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

1968

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO
THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

अथाष्टाविंशत्यधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ मुखरोगनिदानम् ।

मत्स्यमाहिषवाराहपिशिताभ्रकमूलकम् ।
 माषसूपदधिक्षीरशुक्तेशुरसफाणितम् ॥ १ ॥
 अवाक्शय्यां च *भजतो दन्तधावनवर्षणात् ।
 धूमच्छर्दनगण्डूषानुचितं च शिराव्यधम् ॥ २ ॥
 क्रुद्धाः श्लेष्मोल्बणा दोषाः कुर्वन्त्यन्तर्मुखे गदान् ।
 मुखरोगाः पञ्चषष्टिः सप्तस्वायतनेषु च ॥ ३ ॥
 तत्र त्वायतनान्योष्ठौ दन्ता दन्तासनं तथा ।
 तालु कण्ठश्च जिह्वा च तथा सर्वश्च संमतः ॥ ४ ॥
 आनूपपिशितक्षीरदधिमाषादिसेवनात् ।
 मुखमध्ये गदान्कुर्युः क्रुद्धा दोषाः कफोल्बणाः ॥ ५ ॥

वातजमाह—

तत्र खण्डोष्ठ इत्युक्तौ वातेनौष्ठौ द्विधाकृतः ।
 कर्कशौ पुरुषौ स्तब्धौ संप्राप्तानिलवेदनौ ॥ ६ ॥
 दालयेते परिपाठ्येते चौष्ठौ मारुतकोपतः ।

पित्तजमाह—

चीयेते पिटकाभिश्च सरुजाभिः समन्ततः ॥ ७ ॥
 सदाहपाकपिटकौ पीताभासौ च पित्ततः ।

कफजमाह—

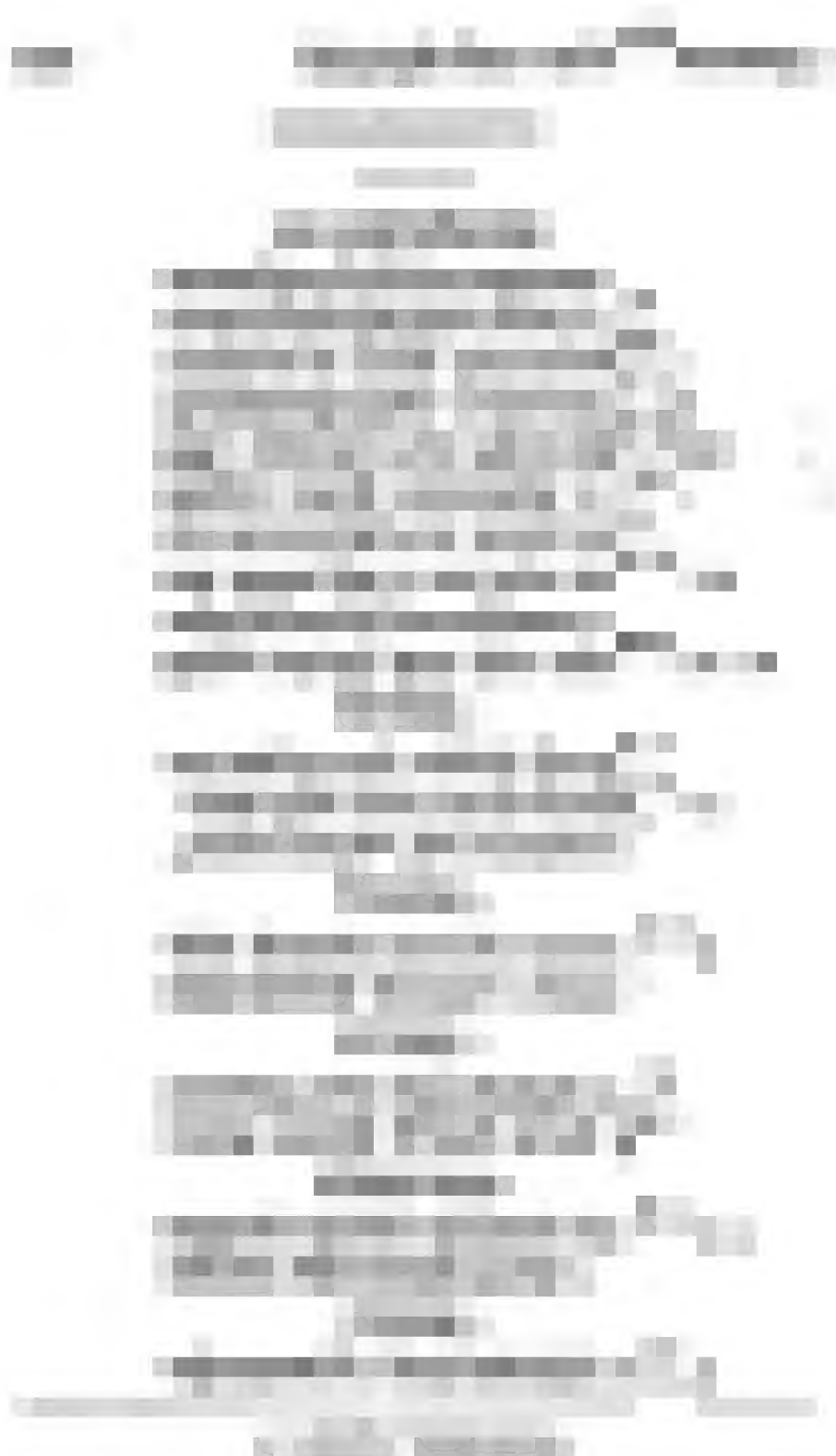
सवर्णाभिस्तु चीयेते पिटकाभिरवेदनौ ॥ ८ ॥
 भवतस्तु कफादोष्ठौ पिच्छिलौ शीतलौ गुरु ।

संनिपातजमाह—

सकृत्कृष्णौ सकृत्पीतौ सकृच्छ्वेतौ तथैव च ॥ ९ ॥
 संनिपातेन विज्ञेयावनेकपिटकाचितौ ।

रक्तजमाह—

खर्जूरफलवर्णाभिः पिटकाभिर्निपीडितौ ॥ १० ॥



रक्तोपसृष्टौ रुधिरं स्रवन्तौ शोणितप्रभौ ।
मांसदुष्टौ गुरुस्थूलौ मांसपिण्डवदुन्नतौ ॥ ११ ॥
जन्तवश्चात्र मूर्च्छन्ति नरस्योभयतोमुखात् ।
सर्पिर्मण्डप्रतीकाशौ भेदसा कण्डुरौ मृदू ॥ १२ ॥
स्वच्छं स्फटिकसंकाशं संस्त्रावं स्रवतो भृशम् ।
तयोर्ब्रणो न संरोहेन्मृदुत्वं नोपगच्छति ॥ १३ ॥
अ(ओ)ष्ठौ पर्यवदीर्येते पाट्येते चाभिघाततः ।
ग्रथितौ च पुनः स्यातां कण्डुलौ दशनच्छदौ ॥ १४ ॥
जलबुद्बुदवद्वातं कफादोष्ठे जलार्बुदम् ।

इत्योष्ठरोगनिदानम् ।

अथाष्टौ दन्तमूलजाः—

शीतादव्याधिमाह—

शोणितं दन्तवेष्टेभ्यो यस्याकस्मात्प्रवर्तते ॥ १५ ॥
दुर्गन्धीनि सकृष्णानि प्रक्लेदीनि मृदूनि च ।
दन्तमांसानि शीर्यन्ते पचन्ति च परस्परम् ॥ १६ ॥
शीतादो नाम स व्याधिः कफशोणितसंभवः ।

दन्तपुष्पुटकमाह—

दन्तयोस्त्रिषु वा शोथो बदरास्थिनिमोऽतिरूक् ॥ १७ ॥
दन्तपुष्पुटको नाम स व्याधिः कफरक्तजः ।

दन्तवेष्टमाह—

स्रवन्ति पूयं रुधिरं चला दन्ता भवन्ति च ॥ १८ ॥
दन्तवेष्टः स विज्ञेयो दुष्टशोणितसंभवः ।

लालास्राविणमाह—

श्वयथुर्दन्तमूलेषु रुजावान्कफरक्तजः ॥ १९ ॥
लालास्रावी स विज्ञेयः सौषिरो नाम नामतः ।

महासौषिरमाह—

दन्ताश्चलन्ति वेष्टेभ्यस्तालु चाप्यवदीर्यते ॥ २० ॥
यस्मिन्स सर्वजो व्याधिर्महासौषिरसंज्ञितः ।

परिदरमाह—

दन्तमांसानि शीर्यन्ते यस्मिन्धीवति चाप्यसृक् ॥ २१ ॥
पित्तासृक्कफजो व्याधिर्ज्ञेयः परिदरो हि सः ।

अपकुशमाह—

वेष्टेषु दाहः पाकश्च ताभ्यां दन्ताश्चलन्ति च ॥ २२ ॥
अभ्याघातात्प्रस्रवन्ति शोणितं मन्दवेदनाः ।
आध्मायन्ते स्फुटे रक्ते मुखं पूति च जायते ॥ २३ ॥
यस्मिन्सोऽपकुशो नाम पित्तरक्तकृतो गदः ।

विदर्भमाह—

घृष्टेषु दन्तमांसेषु संरम्भो जायते महान् ॥ २४ ॥
भवन्ति दन्ताश्च चलाः स विदर्भोऽभिघातजः ।

इत्यष्टौ दन्तमूलजाः ।

अथ दन्तवेष्टगताः—

खलिवर्धनमाह—

मारुतेनाधिको दन्तो जायते तीव्रवेदनः ॥ २५ ॥
वर्धनः स मतो व्याधिर्जाते रुक्च प्रशाम्यति ।
दन्ताधिकोऽधिदन्ताख्यः स चोक्तः खलिवर्धनः ॥ २६ ॥

करालमाह—

शनैः शनैः प्रकुपितो वायुर्दन्तसमाश्रितः ।
करालान्विकटान्दन्तान्करालो न स सिध्यति ॥ २७ ॥

अधिमांसकमाह—

हनव्ये पश्चिमे दन्ते महाशोथो मारुजः ।
लालास्रावी कफकृतो विज्ञेयः सोऽधिमांसकः ॥ २८ ॥
दन्तान्ते कीलवच्छोथो हनुकर्णरुजाकरः ।
दन्तमूलगता नाड्यः पञ्च ज्ञेया यथेरिताः ॥ २९ ॥

इति दन्तवेष्टगताः ।

अथ दन्तरोगनिदानम्—

दन्तविद्रधिमाह—

दन्तमांसमलैः सास्त्रैर्बाह्यजः श्वयथुर्महान् ।
सदाहरुकृस्त्रवेद्भिन्नः पूयासं दन्तविद्रधिः ॥ ३० ॥

— [REDACTED] —

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]

[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]
[REDACTED]

दालनमाह—

दीर्यमाणेष्विव रुजा भृशं दन्तेषु जायते ।
दालनो नाम स व्याधिः सदागतिनिमित्तजः ॥ ३१ ॥

क्रिमिदन्तकमाह—

सशूलं दन्तमाश्रित्य दोषैरुत्बणमारुतैः ।
शोषिते मज्जसुषिरे दन्ते निर्मलपूरिते ॥ ३२ ॥
पूतित्वात्कृमयः सूक्ष्मा जायन्ते जायते ततः ।
कृष्णच्छिद्रश्चलस्रावी ससंरम्भो महारुजः ॥ ३३ ॥
अनिमित्तरुजो वातात्स ज्ञेयः क्रिमिदन्तकः ।

भञ्जनकमाह—

वक्त्रं वक्रं भवेद्यस्य दन्तभङ्गश्च जायते ॥ ३४ ॥
कफवातकृतो व्याधिः स भञ्जनकसंज्ञकः ।

दन्तहर्षमाह—

शीतरूक्षत्ववाताम्लस्पर्शमक्षाक्षमा द्विजाः ॥ ३५ ॥
भवन्त्यम्लाशनेनैव सरुजाश्चलिता इव ।
पित्तमारुतकोपेन दन्तहर्षः स नामतः ॥ ३६ ॥

दन्तशर्करामाह—

मलो दन्तगतो यस्तु कफमारुतशोषितः ।
शर्करेव खरस्पर्शा ज्ञेया सा दन्तशर्करा ॥ ३७ ॥

कपालिकामाह—

कपालेष्विव दीर्यत्सु दन्तानां सैव शर्करा ।
कपालिकेति पठिता ज्ञेया दन्तविनाशिनी ॥ ३८ ॥

श्यावदन्तकमाह—

योऽसृङ्मिश्रेण पित्तेन दग्धो दन्तस्त्वशेषतः ।
श्यावतां नीलतां वाऽपि गतः स श्यावदन्तकः ॥ ३९ ॥

हनुमोक्षमाह—

वातेन तैस्तैर्भावैश्च हनुसंधिर्विसंहतः ।
हनुमोक्ष इति ज्ञेयो व्याधिरर्दितलक्षणः ॥ ४० ॥

इति दन्तरोगनिदानम् ।

100

100

100

100

100

100

100

100

100

अथ जिह्वागताः-

वातजामाह-

जिह्वाऽनिलेन स्फुटिता प्रसुप्ता भवेच्च शाकच्छदनप्रकाशा ।

पित्तजामाह-

पित्तात्सदाहैरुपचीयते च दीर्घैः सरक्तैरथ कण्ठकैश्च ॥ ४१ ॥

कफजामाह-

कफेन गुर्वी बहलान्विता वा मांसोच्छ्रयैः शाल्मलिकण्ठकाद्यैः ।

अधोगतो यः श्वयथुः प्रगाढः सोऽलाससंज्ञः कफरक्तमूर्तिः ॥ ४२ ॥

जिह्वां स तु स्तम्भयति प्रवृद्धो

मूले च जिह्वा भृशमेति पाकम् ।

जिह्वाग्ररूपः श्वयथुः स जिह्वा-

मुन्नम्य जातः कफरक्तमूलः ।

लालाकरः कण्ठुयुतः सचोषः

सा तूपजिह्वा पठिता भिषग्भिः ॥ ४३ ॥

इति जिह्वागताः ।

अथ तालुगताः-

कण्ठशुण्डीमाह-

श्लेष्मासृग्भ्यां तालुमूलात्प्रवृद्धो

दीर्घः शोथो ध्मातवस्तिप्रकाशः ।

तृष्णाकासश्वासकृत्तं वदन्ति

व्याधिं वैद्याः कण्ठशुण्डीति नाम्ना ॥ ४४ ॥

तुण्डिकेरीमाह-

शोथः शूलस्तोददाहप्रपाकी प्रागुक्ताभ्यां तुण्डिकेरी मता तु ।

ध्रुपमाह-

शोथस्तब्धो लोहितस्तालुदेशे ज्ञेयो रक्तात्स ध्रुपो रुग्णश्च ॥ ४५ ॥

कच्छपमाह-

कूर्मोत्सन्नो वेदनः शीघ्रजन्मा रोगो ज्ञेयः कच्छपः श्लेष्मणा तु ।

अर्बुदमाह-

— [REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[अष्टाविंशत्यधिकशततमस्तरङ्गः] बृहद्योगतरङ्गिणी ।

८४७

पद्माकारं तालुमध्ये तु शोथं विद्याद्रक्तादुर्बुदं प्रोक्तलिङ्गम् ॥४६॥

मांससंघातमाह—

दुष्टं मांसं नीरुजं तालुमध्ये कफात्स्थूलं मांससंघातमाहुः ।

पुष्पुटमाह—

अरुक्थिरः कोलनिमः कफेन मेदोयुक्तः पुष्पुटस्तालुदेशे ॥ ४७ ॥

तालुपाकमाह—

शोथोऽत्यर्थं दीर्यते तालुमध्यं

श्वासश्चोग्रस्तालुशोषोऽनिलोत्थः ।

पित्तं कुर्यात्पाकमत्यर्थघोरं

तालुन्येवं तालुपाकं वदन्ति ॥ ४८ ॥

इति तालुगताः ।

अथ कण्ठगताः—

रोहिणीमाह—

गलेऽनिलः पित्तकफौ तु मूर्छितौ

प्रदूष्य मांसं च तथैव शोणितम् ।

गलोपसंरोधकरैस्तथाऽङ्कुरै-

निहन्त्यमून्व्याधिरियं हि रोहिणी ॥ ४९ ॥

जिह्वासमन्ताद्भृशवेदनास्तु मांसाङ्कुराः कण्ठनिरोधनाः स्युः ।

सा रोहिणी वातकृता प्रदिष्टा वातात्मकोपद्रवगाढयुक्ता ॥ ५० ॥

क्षिप्रोद्गमा क्षिप्रविदाहपाका तीव्रज्वरा पित्तनिमित्तजा स्यात् ।

स्रोतोनिरोधिन्यचलोन्नता च स्थिराङ्कुरा या कफसंभवा सा ॥ ५१ ॥

गम्भीरपाकिन्यनिवार्यवीर्या त्रिदोषलिङ्गाञ्चितयोत्थिता तु ।

स्फोटैश्चिता पित्तसमानलिङ्गा

साध्या प्रदिष्टा रुधिरात्मिका तु ॥ ५२ ॥

साऽऽद्या त्रिदोषजा हन्ति त्र्यहात्कफसमुद्भवा ।

पञ्चाहात्पित्तसंभूता सप्ताहात्पवनोत्थिता ॥ ५३ ॥

कण्ठशालूकमाह—

कोलास्थिमात्रः कफसंभवो यो ग्रन्थिर्गले कण्ठकशूकभूतः ।

खरः स्थिरः शस्त्रनिपातसाध्यस्तं कण्ठशालूकमिति ब्रुवन्ति ॥ ५४ ॥

THE
HISTORY
OF
THE
CITY
OF
NEW-YORK
FROM
THE
FIRST
SETTLEMENT
TO
THE
PRESENT
TIME
BY
J. C. HEATON
NEW-YORK
PUBLISHED BY
J. C. HEATON
1853

अधिजिह्वाह—

जिह्वाग्ररूपः श्वयथुः कफात्तु जिह्वोपरिष्ठादपि रक्तमिश्रात् ।
ज्ञेयोऽधिजिह्वः खलु रोग एष विकर्षयेद्दागतपाकमेनम् ॥ ५५ ॥

बलयमाह—

बलास एवाऽऽयतमुन्नतं च ग्रन्थिं करोत्यन्नगतिं निवार्य ।
तं सर्वथैवाप्रतिवार्यवीर्यं विवर्जनीयं बलयं वदन्ति ॥ ५६ ॥

बलाससंज्ञकमाह—

गलोपरोधं कुरुतः प्रवृद्धौ श्लेष्मानिलौ श्वासरुजोपपन्नम् ।
मर्मच्छिदं दुस्तरमेनमाहुर्बलाससंज्ञं निपुणा विकारम् ॥ ५७ ॥

एकवृन्दमाह—

वृत्तोन्नतोऽन्तःश्वयथुः सदाहः सकण्डुरोऽपाक्यमृदुर्गुरुश्च ।
नास्त्रैकवृन्दः परिकीर्त्यतेऽसौ व्याधिर्बलासक्षतजप्रसूतः ॥ ५८ ॥

वृन्दमाह—

समुन्नतं वृत्तममन्ददाहं तीव्रज्वरं वृन्दमुदाहरन्ति ।
तच्चापि पित्तक्षतजप्रकोपाज्ज्ञेयं सतोदं पवनात्मकं तु ॥ ५९ ॥

शतघ्नीमाह—

वर्तिर्घना कण्ठनिरोधिनी या चिताऽतिमात्रं पिशितप्ररोहैः ।
अनेकरुक्प्राणहरी त्रिदोषाज्ज्ञेया शतघ्नी तु शतघ्निरूपा ॥ ६० ॥

गिलायुमाह—

ग्रन्थिर्गले त्वामलकास्थिमात्रः
स्थिरोऽल्परुग्ग्यः कफरक्तमूर्तिः ।
संलक्ष्यते सक्तमिवाशनं च
स शस्त्रसाध्यस्तु गिलायुसंज्ञः ॥ ६१ ॥

गलविद्रधिमाह—

सर्वं गलं व्याप्य समुत्थितो यः
शोथो रुजो यत्र वसन्ति सर्वाः ।
स सर्वदोषो गलविद्रधिस्तु
तस्यैव तुल्यः खलु सर्वजस्य ॥ ६२ ॥

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

गलौघमाह—

शोथो महानन्नजलावरोधी तीव्रज्वरो वायुगतेर्निहन्ता ।
कफेन जातो रुधिरान्वितेन गले गलौघस्त्वभिधीयते सः ॥६३॥

स्वरघ्नमाह—

यस्ताम्यमानः श्वसिति प्रसक्तं भिन्नस्वरः शुष्कविमुक्तकण्ठः ।
कफोपादिग्धेष्वनिलायनेषु ज्ञेयः सतोदः श्वसनात्स्वरघ्नः ॥ ६४ ॥

मांसतानमाह—

प्रतानवान्यः श्वयथुः सुकष्टो गलोपरोधं कुरुते क्रमेण ।
स मांसतानः कथितोऽवलम्बी प्राणप्रणुत्सर्वकृतो विकारः ॥ ६५ ॥

विदारीमाह—

सदाहतोदः श्वयथुः सताम्रमन्तर्गले पूतिविशीर्णमांसम् ।
पित्तेन विद्याद्वदने विदारीं पार्श्वे विशेषात्स तु येन शेते ॥ ६६ ॥
इति कण्ठगताः ।

अथ सर्वमुखरोगनिदानम्—

स्फोटैः सतोदैर्वदनं समन्ताद्यस्याऽऽचितं सर्वसरः स वातात् ।
रक्तैः सदाहैः पित्तैः सपीतैर्यस्याऽऽचितं चापि स पित्तकोपात् ॥६७॥
अवेदनैः कण्डुयुतैः सवर्णैर्यस्याऽऽचितं चापि स वै कफेन ।
रक्तेन पित्तोदित एक एव कैश्चित्पदिष्टो मुखपाकरोगः ॥ ६८ ॥
ओष्ठप्रकोपे वर्ज्याः स्युर्मांसरक्तत्रिदोषजाः ।
दन्तमूले तु वर्ज्यौ तु त्रिलिङ्गगतिसौषिरौ ॥ ६९ ॥

असाध्यानाह—

दन्तेषु च न सिध्यन्ति श्यावदालनमञ्जनाः ।
जिह्वागतेष्वलासस्तु तालव्येष्वर्बुदं तथा ॥ ७० ॥
स्वरघ्नो बलयो वृन्दो बलासः सविदारिकः ।
गलौघो मांसतानश्च शतघ्नी रोहिणी गले ॥ ७१ ॥
असाध्याः कीर्तिता ह्येते रोगा नव दशैव तु ।
तेषु चापि क्रियां वैद्यः प्रत्याख्याय समाचरेत् ॥ ७२ ॥
इति सर्वमुखरोगनिदानम् ।

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

1968

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

ओष्ठरोगोपक्रमः—

स्नेहांस्तथोष्णान्परिषेकलेपान्घृतस्य पानं रसभोजनं च ।
 अभ्यञ्जनस्वेदनलेपनं तदोष्ठे विदध्यात्पवनाभिभूते ॥ ७३ ॥
 तैलं घृतं सर्जरसं ससिक्थं रास्नागुडं सैन्धवगैरिकं च ।
 पक्त्वा समांशं दशनच्छदानां त्वग्भेदहन्तुं व्रणरोपणं च ॥ ७४ ॥
 रालं मधूच्छिष्टगुडेन पक्वं तैलं घृतं वा विनिहन्ति लेषात् ।
 त्वक्तोदपारुष्यरुजोऽधरस्य पूयास्रसंस्त्रावमपि प्रसह्य ॥ ७५ ॥
 वेधं शिराणां वमनं विरेकं तिक्तस्य पानं रसभोजनं च ।
 शीतान्प्रदेहान्परिषेचनं च पित्तोपसृष्टेष्वधरेषु कुर्यात् ॥ ७६ ॥
 रक्तपित्तोपघातोत्थाञ्जलौकाभिरुपाचरेत् ।
 ओष्ठामयानत्र हिता पित्तविद्रधिसत्क्रिया ॥ ७७ ॥
 शिरोविरेचनं धूमः स्वेदः कवलधारणम् ।
 हृते रक्ते प्रयोक्तव्यमोष्ठपाके कफात्मके ॥ ७८ ॥
 त्रिदोषजे वाऽप्यथ दुष्टमांससमुद्भवेऽप्योष्ठगदे प्रशस्ता ।
 रक्तस्रुतिश्चानु हितः प्रलेपस्त्वक्पञ्चकस्यातिमृदूकृतस्य ॥ ७९ ॥
 प्रियङ्गुत्रिफलालोधचूर्णं पक्वेऽधरे हितम् ।
 प्रक्षिप्ते शीर्णमांसे च किं वा श्रेष्ठमधूकजम् ॥ ८० ॥

हृत्पुष्ठरोगोपक्रमः ।

अथ दन्तरोगोपक्रमः—

शीतादेऽस्रस्रुतिं कृत्वा कुर्याद्गुण्डूषधारणम् ।
 शुण्ठीपपटकक्राथैः कवोष्णैश्च मुहुर्मुहुः ॥ ८१ ॥
 दन्तमूलसमुत्थेषु दन्तोत्थेषु गदेषु च ।
 रक्तमोक्षं प्रशंसन्ति जलौकालाबुशृङ्गकैः ॥ ८२ ॥
 दन्तपुष्पुटके शस्ता सदा कफहरी क्रिया ।
 दन्तवेष्टे विधिः कार्यो रक्तपित्तनिवर्हणः ॥ ८३ ॥
 वैदर्भेऽपकुशे चैव तथा परिदरे गदे ।
 सौषिरद्वितये रक्तस्रुतेः पश्चात्प्रशस्यते ॥ ८४ ॥
 मुस्तांप्रियङ्गुत्रिफलावासालोधपुनर्नवाः ।
 निष्काथ्य तत्कषायेण कोष्णेनाऽऽस्ये विधारणम् ॥ ८५ ॥

कारस्करस्थूलजीरकुष्ठशुण्ठीकुटन्नटैः ।
 मूत्रपिष्टैर्बहिलैः शस्तः शोथरुजापहः ॥ ८३ ॥
 दन्तरोगेषु सर्वेषु शस्तो वातहरो विधिः ।
 षक्तैलं कषोष्णं च शस्तं कवलधारणे ॥ ८७ ॥
 कुष्ठं दावीं लोधमब्धं समङ्गा
 पाठा तित्ता तेजनी पीतिका च ।
 एषां चूर्णं घृष्टमाशु द्विजानां
 रक्तस्रावं हन्ति कण्डूं रुजं च ॥ ८८ ॥

इति कुष्ठादिचूर्णम् ।

अथ जातीपत्रादिचूर्णम्—

जातीपत्रपुनर्नवागजकणाकोरण्टकुष्ठं वचा
 शुण्ठी दीप्यहरीतकीति च समं श्लक्ष्णं भृशं चूर्णयेत् ।
 तच्चूर्णं वदने धृतं विजयते दौर्गन्ध्यदन्तव्यथां
 चाञ्जल्यं त्वमतिव्रणश्चयथुरुक्कण्डूकुम्भिव्यापदः ॥ ८९ ॥

इति जातीपत्रादिचूर्णम् ।

अथ कणाद्यं चूर्णम्—

कणासिन्धूत्थजस्त्रचूर्णं तूर्णं व्यपोहति ।
 वर्षणादन्तचाञ्जल्यव्यथाशोथास्रसंस्रवान् ॥ ९० ॥

इति कणाद्यं चूर्णम् ।

अथ जीरकादिचूर्णम्—

जरणलवणपथ्याशात्मलीकण्टकाना-
 मनुदिनमनुघृष्टं दन्तमूलेषु चूर्णम् ।
 व्रणदरणरुगस्रस्रावचाञ्जल्यशोथा-
 नपनयति विवस्वानन्धकारानिवाऽऽशु ॥ ९१ ॥

इति जीरकादिचूर्णम् ।

अथ भद्रमुस्तादिर्गुटी—

भद्रमुस्ताभयाव्योषविडङ्गारिष्टपल्लवैः ।
 गोमूत्रपिष्टैर्गुटिकां छायाशुष्कां प्रकल्पयेत् ॥ ९२ ॥
 तां निधाय मुखे स्वप्याच्चलदन्तातुरो नरः ।
 नातः परतरं किञ्चिच्चलदन्तस्य भेषजम् ॥ ९३ ॥

इति भद्रमुस्तादिर्गुटी ।

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that proper record-keeping is essential for ensuring the integrity and transparency of the financial system. This section also outlines the various methods used to collect and analyze data, highlighting the role of technology in modern accounting practices.

2. The second part of the document focuses on the challenges faced by organizations in implementing effective internal controls. It identifies common weaknesses, such as inadequate segregation of duties and insufficient oversight, and provides recommendations for strengthening these controls. The text also discusses the importance of regular audits and the role of external auditors in providing independent verification of the financial statements.

3. The third part of the document addresses the issue of financial reporting and the impact of accounting standards. It explains how these standards are developed and how they influence the way companies present their financial information. This section also discusses the importance of disclosing relevant information to investors and other stakeholders, and the role of the accounting profession in ensuring the reliability of the financial data.

4. The fourth part of the document discusses the role of accounting in decision-making and the importance of providing timely and accurate information to management. It highlights the various ways in which accounting data is used to analyze performance, identify trends, and make strategic decisions. This section also discusses the importance of maintaining a strong relationship between the accounting department and other parts of the organization.

5. The fifth part of the document discusses the future of accounting and the impact of emerging technologies. It explores the potential of artificial intelligence, blockchain, and other innovative solutions to transform the accounting profession. This section also discusses the importance of ongoing education and professional development for accountants to stay current in a rapidly changing field.

अथ दशमूल्यादितैलघृते-

दशमूलीकषायेण तैलं वा घृतमेव वा ।

विपक्वं केवलं शस्तं सक्षौद्रं दन्तचालने ॥ ९४ ॥

कराले दन्तहर्षे च कापाल्यां सौषिरद्वये ।

गण्डूषधारणाल्लेपात्पानान्नस्याच्च शस्यते ॥ ९५ ॥

इति दशमूल्यादितैलघृते ।

अथ लोघ्राद्यं तैलम्-

नाडीव्रणहरं कर्म दन्तनाडीषु कारयेत् ।

यद्दन्तमधि जायेत नाडीदन्तं तमुद्धरेत् ॥ ९६ ॥

छित्त्वा मांसानि शस्त्रेण यद्यन्यः स्यान्न चोपरि ।

उद्धृते तूत्तरे दन्ते शोणितं संभवत्यति ॥ ९७ ॥

रक्ताभियोगात्पूर्वोक्ता घोरा रोगा भवन्ति हि ।

चलमप्युत्तरं दन्तमतो नापहरेद्भिषक् ॥ ९८ ॥

शोधयित्वा हरेच्चापि क्षारेण ज्वलनेन वा ।

गतिं हिनस्ति हन्वास्थि दशने समुपस्थितम् ॥ ९९ ॥

तस्मात्समूलं दशनमुद्धरेद्भग्नमस्थि च ।

लोध्रखादिरमज्जिष्ठायष्ट्याह्वैश्चापि साधितम् ॥ १०० ॥

तैलं संशोधनं हन्याद्दन्तनाडीगतिं क्रमात् ।

इति लोघ्राद्यं तैलम् ।

अथ सहचरकाथः-

कोष्णं सहचरकाथं खदिरक्षौद्रसंयुतम् ।

धृत्वाऽऽस्येन मुहुर्हन्ति तद्यथाशोथविद्रधीन् ॥ १ ॥

इति सहचरकाथः ।

अथ सहाचराद्यं तैलम्-

तुलां धृतां नीलसहाचरस्य द्रोणाम्भसा संश्रपयेद्यथावत् ।

पूत्वा चतुर्मागशृतेऽत्र तैलं पचेच्छनैरर्धपलप्रमाणैः ॥ २ ॥

कल्कैरनन्ताखदिरारिमेदजम्बुअयष्टीमधुकोत्पलानाम् ।

तसैलमास्येन धृतं कवोष्णं स्थैर्यं द्विजानां विदधाति सद्यः ॥ ३ ॥

इति सहाचराद्यं तैलम् ।

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

फलान्यम्लानि शीताम्बु रुक्षान्नं दन्तधावनम् ।
तथाऽतिकठिनं मक्ष्यं दन्तरोगे विवर्जयेत् ॥ ४ ॥

इति दन्तरोगोपक्रमः ।

अथ जिह्वारोगोपक्रमः—

जिह्वागतविकाराणां शस्तं शोणितमोक्षणम् ।
ततोऽमृताकणानिम्बकटुकाकवलो हितः ॥ ५ ॥
काश्चनारत्वचः काथः प्रातरास्ये धृतः सुखः ।
कुर्यात्सखदिरो जिह्वादरणोन्मूलनं मुहुः ॥ ६ ॥
नवे जिह्वालसेऽप्येवं तं तु शस्त्रेण न स्पृशेत् ।
उन्नम्य जिह्वामाकृष्टां बडिशेनाधिजिह्विकाम् ॥ ७ ॥
छेदयेन्मण्डलाग्रेण तीक्ष्णोष्णैर्घर्षणादिना ।

इति वाग्महात् ।

उपजिह्वां समुल्लिख्य क्षारेण प्रतिसारयेत् ॥ ८ ॥
शिरोविरेकगण्डूषधूमैरेनामुपाचरेत् ।
व्योषक्षारामयावाह्निचूर्णमेतत्प्रसारणम् ॥ ९ ॥
उपजिह्वाप्रशान्त्यर्थं तैलं वा तैः प्रशस्यते ।

इति जिह्वारोगोपक्रमः ।

अथ तालुरोगोपक्रमः—

युक्त्यात्कफहरं शुण्ड्यां रसगण्डूषधारणे ॥ ११० ॥
कुष्ठोषणवचासिन्धुकणापाठाप्लवैः समैः ।
सक्षौद्रैर्भिषजा कार्यं गलशुण्ड्याः प्रघर्षणम् ॥ ११ ॥
छेदयेद्युक्तितो वृद्धां सुभिषग्गलशुण्डिकाम् ।
मण्डलाग्रेण जिह्वाया उपरिष्ठात्प्रलम्बिनीम् ॥ १२ ॥
अत्यादानात्स्रवेद्रक्तं सनिमित्तान्म्रियेत वा ।
हीनादानान्द्रवेच्छोथो लालास्रावो भ्रमस्तथा ॥ १३ ॥
तस्माद्वैद्यः प्रयत्नेन तां छित्त्वेन क्रमं चरेत् ।
सक्षौद्रैर्व्योषासिन्धूथैस्तद्व्रणं प्रतिसारयेत् ॥ १४ ॥
गलशुण्डी शमं याति वज्रीक्षीरविलेपिता ।
तुण्डिकेर्या ध्रुवे कूर्मे संघाते तालुपुण्ड्रे ॥ १५ ॥

1. Introduction

2. Method

3. Results

4. Discussion

5. Conclusion

6. References

7. Appendix

8. Tables

9. Figures

10. Summary

11. Abstract

एष एव विधिः कार्यो विशेषः शस्त्रकर्मणि ।

तालुपाके तु कर्तव्यं विधानं पित्तनाशनम् ॥ १६ ॥

इति तालुरोगोपक्रमः ।

अथ गलरोगोपक्रमः—

साध्यानां रोहिणीनां तु हितं शोणितमोक्षणम् ।

छर्दनं धूमपानं च गण्डूषो नस्यकर्म च ॥ १७ ॥

तथाऽन्तर्बाह्यतः स्विन्नां वातरोगिणिकां लिखेत् ।

अङ्गुल्यग्रेण शस्त्रेण नखाग्रेणाथ वा भिषक् ॥ १८ ॥

वातजां तां गते रक्ते लवणैः प्रतिसारयेत् ।

सुखोष्णान्स्नेहकवलान्पञ्चमूलाम्बुनाऽथ वा ॥ १९ ॥

कृत्वा मुहूर्तं स्थित्वाऽथ वातघ्नं पथ्यमाचरेत् ।

विस्राव्य पित्तसंभूतां सिताक्षौद्रप्रियङ्गुभिः ॥ २० ॥

घर्षयेत्प्रपत्तङ्गैः कवलः कथितैर्हितः ।

उपाचरेदेवमेवं प्रत्याख्यायास्रसंभकाम् ॥ २१ ॥

अङ्गारधूमकटुभिः कफजां प्रतिसारयेत् ।

श्वेताविडङ्गदार्वाणु तैलं सिद्धं ससैन्धवम् ॥ २२ ॥

नस्यकर्मणि दातव्यं कवलं तु कफोच्छ्रये ।

विस्राव्य कण्ठशालूकं साधयेत्तुण्डिकेरिवत् ॥ २३ ॥

एककालं यवान्नं च भुञ्जीत स्निग्धमल्पशः ।

उपजिह्वकवचापि साधयेदधिजिह्वकम् ॥ २४ ॥

उन्नम्य जिह्वामाकृष्य बडिशेनाधिजिह्वकम् ।

छेदयेन्मण्डलाग्रेण तीक्ष्णोष्णैरौषधैः पुनः ॥ २५ ॥

घर्षयेदेकवृन्दं तु विस्राव्याथ विघर्षयेत् ।

गिलायुं चापि शस्त्रेण साधयेत्तैश्च घर्षयेत् ॥ २६ ॥

अमर्मजं सुपक्वं च छेदयेद्गुलविद्रधिम् ।

कण्ठरोगेष्वसृङ्गोक्षस्तीक्ष्णैर्नस्यादिकर्म च ॥ २७ ॥

पाने काथो हितो निम्बदार्वान्द्रजशिवाकृतः ।

हरीतकीकषायो वा हितोऽत्र क्षौद्रसंयुतः ॥ २८ ॥

पाठा रसाञ्जनं मूर्वा तेजोह्वेति सुचूर्णितम् ।

क्षौद्रयुक्तं प्रदातव्यं कण्ठरोगे भिषङ्मतम् ॥ २९ ॥

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and activities. It emphasizes the need for transparency and accountability in financial reporting.

2. The second part of the document outlines the various methods and techniques used to collect and analyze data. It includes a detailed description of the experimental procedures and the statistical analysis performed.

3. The third part of the document presents the results of the study. It includes a series of tables and graphs that illustrate the findings of the research. The data shows a clear trend of increasing activity over time.

4. The fourth part of the document discusses the implications of the findings. It suggests that the results have significant implications for the field of study and may lead to further research in this area.

5. The fifth part of the document concludes the study. It summarizes the key findings and provides a final statement on the importance of the research.

The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and activities. It emphasizes the need for transparency and accountability in financial reporting. The second part of the document outlines the various methods and techniques used to collect and analyze data. It includes a detailed description of the experimental procedures and the statistical analysis performed. The third part of the document presents the results of the study. It includes a series of tables and graphs that illustrate the findings of the research. The data shows a clear trend of increasing activity over time. The fourth part of the document discusses the implications of the findings. It suggests that the results have significant implications for the field of study and may lead to further research in this area. The fifth part of the document concludes the study. It summarizes the key findings and provides a final statement on the importance of the research.

[अष्टाविंशत्यधिकशततमस्तरङ्गः] बृहद्योगतरङ्गिणी ।

८५५

गृहधूमो यवक्षारः पाठाव्योषरसाञ्जनम् ।

तेजोह्वात्रिफलालोघं चित्रकश्चेति चूर्णकम् ॥ १३० ॥

सक्षौद्रं धारयेदास्ये गलरोगहरं परम् ।

कालकं नाम तच्चूर्णं दन्तास्यगलरोगनुत् ॥ ३१ ॥

इति कालकं चूर्णम् ।

अथ पीतकं चूर्णम्—

मनःशिला यवक्षारो हरितालं ससैन्धवम् ।

दार्वात्वक्चेति संचूर्ण्य माक्षिकेण समन्वितम् ॥ ३२ ॥

मूर्छितं घृतमण्डेन कण्ठरोगेषु धारयेत् ।

मुखरोगेषु च श्रेष्ठं पीतकं नामतः स्मृतम् ॥ ३३ ॥

इति पीतकं चूर्णम् ।

अथ तेजोवत्यादिगुटिका—

तेजोवतीं दारुनिशां सकृष्णां यवाग्रजं ताक्ष्यगिरिं च पाठाम् ।

क्षौद्रेण कुर्याद्गुटिकां मुखेन तां धारयेत्सर्वगलामयघ्नीम् ॥ ३४ ॥

इति तेजोवत्यादिगुटिका ।

इति गलरोगोपक्रमः ।

अथ सर्वमुखपाकचिकित्सा—

घातसर्वसरं तूर्णं लवणैः प्रतिसारयेत् ।

तैलं घातहरैः सिद्धं हितं कबलनस्ययोः ॥ ३५ ॥

पित्तात्मके सर्वसरे कार्यः पित्तहरो विधिः ।

प्रतिसारणगङ्गूषधूमाः संशोधनानि च ॥ ३६ ॥

कफात्मके सर्वसरे क्रमं कुर्यात्कफापहम् ।

इति सर्वोपक्रमः ।

अथ पञ्चपल्लवकषायः—

मुखपाके शिरावेधः शिरःकायविरेचनम् ॥ ३७ ॥

घृतमूत्रमधुक्षीरैर्धूमैश्च कवलग्रहः ।

मुखपाकहरं मूयो जातीपत्रस्य चर्वणम् ॥ ३८ ॥

जातीपत्रामृताद्राक्षायसदार्वाफलत्रिकैः ।

क्राथः क्षौद्रयुतः शीतो गण्डूषान्मुखपाकजित् ॥ ३९ ॥

一、

二、

三、

四、

五、

六、

कृष्णजीरककुष्ठेन्द्रयवचर्वणसञ्चयात् ।

मुखपाकव्रणक्लेददौर्गन्ध्यमुपशाम्यति ॥ १४० ॥

पटोलनिम्बजम्बवाञ्जमालतीनां तु पल्लवैः ।

कृतः काथः प्रयोक्तव्यो मुखपाकस्य धावने ॥ ४१ ॥

इति पञ्चपल्लवकषायः ।

अथ सप्तच्छदादिकाथः—

सप्तच्छदोशीरपटोलमुस्ताहरीतकीतिक्तकरोहिणीभिः ।

यष्ट्याह्वराजद्रुमचन्दनैश्च काथं पिबेत्पाकहरं मुखस्य ॥ ४२ ॥

इति सप्तच्छदादिकाथः ।

अथ पटोलादिकाथः—

पटोलशुण्ठीत्रिफलाविशाला-

त्रायन्तितिकाह्वनिशामृतानाम् ।

पीतः कषायो मधुना निहन्ति

मुखे स्थितश्चाऽऽस्यगदानशेषान् ॥ ४३ ॥

इति पटोलादिकाथः ।

अथ खदिरादिगुटिका—

खदिरस्य तुलां तोयद्रोणे पक्त्वाऽष्टशेषिते ।

जातीकोशेन्दुयूपाङ्गचातुर्जातमृगाण्डजैः ॥ ४४ ॥

पृथक्कर्षमितैः पिष्टैर्मेलयित्वा चणोपमाम् ।

गुटीं कृत्वा मुखे धृत्वा तां निहन्त्यखिलान्गदान् ।

जिह्वौष्ठदन्तवदनगलतालुसमुद्भवान् ॥ ४५ ॥

इति खदिरादिगुटिका ।

कुष्ठैलवालुकैला समधुकधान्याकयष्टिमधुकबला ।

हरति मुखपूतिगन्धं रसोनमदिरातिगन्धं च ॥ ४६ ॥

ताम्बूलमध्यस्थितचूर्णकेन दग्धं मुखं यस्य भवेत्कथंचित् ।

तैलेन गण्डूषमसौ विदध्यादम्लारनालेन पुनः पुनर्वा ॥ ४७ ॥

जातीदलैलामधुमातुलुङ्गपत्रैः सलाजैर्युतपिप्पलीकैः ।


कृतोऽवलेहः कुरुते नराणां कण्ठे ध्वनिं किन्नरनादतुल्यम् ॥ ४८ ॥

100

[REDACTED]
 [REDACTED]
 [REDACTED]
 [REDACTED]
 [REDACTED]
 [REDACTED]

Figure 1.

[REDACTED]
 [REDACTED]
 [REDACTED]
 [REDACTED]
 [REDACTED]
 [REDACTED]



The following table shows the results of the regression analysis for the dependent variable "Perceived Organizational Support" (POS). The independent variables are "Organizational Commitment" (OC) and "Organizational Identification" (OI). The table includes the regression coefficients (B), standard errors (SE), t-statistics, and p-values for each variable.

Variable	B	SE	t	p
OC	0.15	0.02	7.50	0.000
OI	0.10	0.03	3.00	0.002
Constant	1.50	0.10	15.00	0.000

The regression equation is: $POS = 0.15OC + 0.10OI + 1.50$. The adjusted R-squared value is 0.85.

[एकोनविंशदधिकशततमस्तरङ्गः] बृहद्योगतरङ्गिणी ।

८५७

प्रियङ्गुकाश्मीरककोलमज्जाह्रीबेरकैश्चन्दनभागयुक्तैः ।

षिष्टैः प्रलेपो विहितो मुखस्य द्युतिं शशाङ्कादधिकां विधत्ते ॥ १४९ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां मुखरोगनिदानचिकित्साकथनं नामाष्टा-

विंशत्यधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १२८ ॥

अथैकोनविंशदधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ कर्णरोगनिदानम्—

समीरणः श्रोत्रगतोऽन्यथा चरन्

समन्ततः शूलमतीव कर्णयोः ।

करोति दोषैश्च यथास्वमावृतः

स कर्णशूलः कथितो दुराचरः ॥ १ ॥

कर्णनादमाह—

कर्णश्रोत्रस्थिते वाते शृणोति विविधान्स्वरान् ।

भैरीमृदङ्गशङ्खानां कर्णनादः स उच्यते ॥ २ ॥

बाधिर्यमाह—

यदा शब्दवहं वायुः श्रोत्रमावृत्य तिष्ठति ।

शुद्धश्लेष्मान्वितो वाऽपि बाधिर्यं तेन जायते ॥ ३ ॥

कर्णक्ष्वेडमाह—

वायुः पित्तादिभिर्युक्तो वेणुघोषोपमस्वनम् ।

करोति कर्णयोः क्ष्वेडं कर्णक्ष्वेडः स कीर्तितः ॥ ४ ॥

कर्णसंस्त्रावमाह—

शिरोमिघातादथ वा निमज्जतो जलप्रपाकादथ वाऽपि विद्रधेः ।

स्रवेद्धि पूयं श्रवणोऽनिलादितः स कर्णसंस्त्राव इति प्रदिष्टः ॥ ५ ॥

कर्णगूथकमाह—

मारुतः कफसंयुक्तः कर्णकण्ठं करोति च ।

पित्तोपशोषितः श्लेष्मा जायते कर्णगूथकः ॥ ६ ॥



कर्णप्रतिनाहमाह—

स कर्णगूथो द्रवतो यदा गतो विलापितो घ्राणमुखं प्रपद्यते ।
तदा स कर्णप्रतिनाहसंज्ञितो भवेद्विकारः शिरसोऽर्धभेदकृत् ॥७॥

क्रिमिकर्ममाह—

यदा तु मूर्च्छन्त्यथ वाऽपि जन्तवः
सृजन्त्यपत्यान्यथ वाऽपि मक्षिकाः ।
तदञ्जनत्वाच्छ्रवणो *निरुध्यते
मिषगिरुक्तः क्रिमिकर्ण इत्ययम् ॥ ८ ॥

कर्णगतकीटलक्षणमाह—

पतङ्गाः शतपद्यश्च कर्णस्रोतः प्रविश्य हि ।
अरतिं व्याकुलत्वं च भृशं कुर्वन्ति वेदनाम् ॥ ९ ॥
कर्णो निस्तुद्यते यस्य तथा फुरफुरायते ।
कीटे चरति रुक्तीव्रा निष्पन्दे मन्दवेदना ॥ १० ॥

क्षताभिघातजमाह—

क्षताभिघातप्रभवस्तु विद्रधिर्भवेत्तथा दौषकृतः परः पुनः ।
सरक्तपीतारुणमस्रमास्रवेत्प्रतोदधूमायनदाहचोषवान् ॥ ११ ॥

पूतिकर्णकमाह—

कर्णपाकस्तु पित्तेन कौथविकृदकृद्भवेत् ।
कर्णविद्रधिपाकाद्वा जायते चाम्बुपूरणात् ॥ १२ ॥
पूयं स्रवति वा पूतिं स ज्ञेयः पूतिकर्णकः ।
कर्णशोथार्बुदाशांसि जानीयादुक्तलक्षणैः ॥ १३ ॥

वातादिजन्यस्रावमाह—

नादोऽतिरुक्ककर्णमलस्य शोषः
स्रावस्तनुश्चाऽऽस्रवणं च वातात् ।
शोथः सरागो दरणं विदाहः
सपित्तपूतिस्रवणं च पित्तात् ॥ १४ ॥

* क. रुच्यत इति पाटान्तरम् ।



वैश्रुत्यकण्डूस्थिरशोथयुक्त-

स्निग्धः स्रुतिः श्लेष्ममर्वा च नीरुक् ।

सर्वाणि रूपाणि तु संनिपातात्-

प्रावश्च तत्राधिकदोषवर्णः ॥ १५ ॥

अथ कर्णपालिगताः-

परिपोटकमाह-

शौकुमार्याच्चिरोत्सृष्टे सहसामिप्रवर्धिते ।

कर्णपाल्यां भवेच्छोथः सरुजः परिपोटवान् ॥ १६ ॥

कृष्णारुणानिभस्तब्धः स वातात्परिपोटकः ।

उत्पातमाह-

गुर्वाभरणसंयोगात्ताडनाद्वर्षणादपि ॥ १७ ॥

शोथः पाल्यां भवेच्छयावो दाहपाकरुजान्वितः ।

रक्तो वा रक्तपित्ताभ्यामुत्पातः स गदो मतः ॥ १८ ॥

उन्मन्थकमाह-

कर्णं बलाद्वर्धयतः पाल्यां वायुः प्रकुप्यति ।

कफं संगृह्य कुरुते शोफं स्तब्धं सवेदनम् ॥ १९ ॥

उन्मन्थकः स विज्ञेयो विकारः कफवातजः ।

दुर्विद्धे दोषमाह-

संवर्ध्यमाने दुर्विद्धे कण्डूदाहरुजान्वितः ॥ २० ॥

शोफो भवति पाकश्च त्रिदोषो दुःखवर्धनः ।

परिलेहिनमाह-

कफासृक्कृमयः कुन्द्वाः सर्पपामा विसर्पिणः ॥ २१ ॥

कुर्वन्ति पाल्यां पिटकाः कण्डूदाहरुजान्विताः ।

कफासृक्कमिसंभूताः सविसर्पास्तु ताः क्रमात् ॥ २२ ॥

लिहेयुः सकलां पालिं परिलेहीति स स्मृतः ।

इति कर्णरोगनिदानम् ।

अथ कर्णरोगचिकित्सा-

कर्णशूले कर्णनादे बाधिर्ये क्षेड एव च ॥ २३ ॥

चतुर्णामपि रोगाणां सामान्यं भेषजं विदुः ।
स्निग्धं वातहरैः स्नेहैः स्विन्नं चापि विरेचयेत् ॥ २४ ॥
भुक्तोपरि हितं सर्पिर्बस्तिकर्म च पूजितम् ।

अथ खल्लतैलम्—

अश्वत्थपत्रखल्लं तु विधाय बहुपत्रकम् ॥ २५ ॥
अङ्गारपूर्णं तैलाक्तं विदध्याच्छ्रवणोपरि ।
तत्तैलं स्रवते तस्मात्खल्लादङ्गारतापितात् ॥ २६ ॥
तत्प्राप्तं श्रवणस्रोतः सद्यो गृह्णाति वेदनाम् ।

इति खल्लतैलम् ।

अथ हिङ्गवायं तैलम्—

शृङ्गवेररसं क्षौद्रं सैन्धवं तैलमेव च ।
कटुष्णं कर्णयोर्धार्यं कर्णपीडापहं परम् ॥ २७ ॥
अर्कस्य पत्रं परिणामपीतं घृतेन लिप्तं शिखिना च तप्तम् ।
आपीड्य तोयं श्रवणे निषिक्तं निहन्ति शूलं बहुवेदनं च ॥ २८ ॥
हुतभुजि परितप्ताकिंचिदाज्येन लिप्तात्
करतलपरिपिष्टाद्वृद्धसेहुण्डपत्रात् ।
गलितममलमरुमः श्रोत्रयोर्न्यस्तमस्तं
गमयति पृथुपीडां शूलमप्यञ्जसैव ॥ २९ ॥
तीव्रशूलातुरे कर्णे सशब्दे क्लेदवाहिनि ।
छागमूत्रं प्रशंसन्ति कोष्णं सैन्धवसंयुतम् ॥ ३० ॥
हिङ्गुतुम्बुरुशुण्ठीभिः सिद्धं तैलं तु सार्पपम् ।
कर्णशूले प्रणादे वा बाधिर्येऽपि हितं मतम् ॥ ३१ ॥

इति हिङ्गवायं तैलम् ।

अथापामार्गतैलम्—

अपामार्गक्षारजले तत्कृतकल्केन साधितं तिलजम् ।
अपहरति कर्णनादं बाधिर्यं चापि पूरणतः ॥ ३२ ॥
इत्यपामार्गतैलम् ।

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

11. The eleventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

12. The twelfth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

13. The thirteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

14. The fourteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

अथ भूलतातैलम्—

सिद्धं भूलतया तैलं सार्धपं मन्दवह्निना ।

तस्य पूरणमात्रेण कर्णनाडी प्रशाम्यति ॥ ३३ ॥

इति भूलतातैलम् ।

अथ शम्बूकतैलम्—

शम्बूकस्य तु मांसेन कटुतैलं विपाचितम् ।

तस्य पूरणमात्रेण कर्णनाडी प्रशाम्यति ॥ ३४ ॥

इति शम्बूकतैलम् ।

अथ चत्वारि तैलानि—

आर्द्रकसूर्यावर्तकसौमाञ्जनमूलकस्वरसाः ।

मधुतैलसैन्धवयुताः पृथगुक्ताः कर्णशूलहराः ॥ ३५ ॥

तैलं काश्चिकबीजपूरकरसक्षौद्रैः समूत्रैः शृतं

स्यात्क्षौद्रार्द्रकशिगुमूलकदलीकन्दद्रवैर्वा समम् ।

शुण्ठीतुम्बुरुहिङ्गुभिः शृतमपि स्यात्कर्णशूलापहं

सिद्धं बिल्वगरेण साजपयसा मूत्रेण बाधिर्यजित् ॥ ३६ ॥

इति चत्वारि तैलानि ।

अथ क्षारतैलम्—

हिङ्गवद्दारुमिसिमूलकमस्मभूर्ज-

त्वक्क्षारसिन्धुरुचकोद्भिदशिगुविश्वैः ।

सस्वर्जिकाविडवचाञ्जनमातुलुङ्गै-

रम्भारसैः समधु सूक्तमिदं विपक्वम् ॥ ३७ ॥

तैलं प्रसिद्धमिति तच्छ्रवणामयघ्नं

कर्णप्रणादबधिरत्वहरं नराणाम् ।

भ्रूमस्तकश्रवणशङ्कुलिकान्तराल-

शूलापहं चरकसुश्रुतपूजितं च ॥ ३८ ॥

इति क्षारतैलम् ।

अथ मधुसूक्तम्—

जम्बीराणां फलरसः प्रस्थैकः कुडवोन्मितम् ।

माक्षिकं तत्र दातव्यं पिप्पली च पलोन्मिता ॥ ३९ ॥



घृतमाण्डे विधायैतद्धान्यराशौ विधारयेत् ।

मासेन तज्जातरसं मधुसूक्तं प्रजायते ॥ ४० ॥

इति मधुसूक्तम् ।

अथ दीपिका तैलम्—

महतः पञ्चमूलस्य काण्डान्यष्टाङ्गुलानि च ।

क्षौमेणाऽऽवेष्ट्य संसिच्य तैलेनाऽऽदीपयेत्ततः ॥ ४१ ॥

यत्तैलं चयवते तेभ्यः सुखोष्णं तत्प्रयोजयेत् ।

करोति दीपिकातैलं सद्यो गृह्णाति वेदनाम् ॥ ४२ ॥

इति दीपिकातैलम् ।

अथ समुद्रफेनचूर्णम्—

समुद्रफेनचूर्णं तु न्यस्तं श्रवणसंज्ञवे ।

पूयसर्वं व्रणं सान्द्रं हन्ति ध्वान्तमिवांशुमान् ॥ ४३ ॥

इति समुद्रफेनचूर्णम् ।

अथ विषयोगः—

गोमूत्रेण विषं घृष्ट्वा सशूले श्रवणे क्षिपेत् ।

सद्य एव स्रवः शूलः कण्डूः पीडा च शाम्यति ॥ ४४ ॥

इति विषयोगः ।

अथ रास्नाद्यो गुग्गुलुः—

रुजः स्यान्मार्दवं यावत्तावत्संस्थापयेद्द्रवम् ।

अवेदनेऽत्र मात्राणां तैलाद्यं स्थापयेच्छतम् ॥ ४५ ॥

दक्षजानुकुरावर्तो निमेषोन्मेष एव वा ।

लब्धाक्षरद्वयोच्चारो यावन्मात्रामितिस्त्विदम् ॥ ४६ ॥

रास्नामृतैरण्डमुराह्वविश्वं तुल्यं पुरेणोपविमृष्य खादेत् ।

वातामये कर्णाशिरोगदे च नाडीव्रणे चापि मगदरे च ॥ ४७ ॥

इति रास्नाद्यो गुग्गुलुः ।

अथ पञ्चकषायः—

कर्णप्रक्षालने शस्तं कवोष्णं सुरभीजलम् ।

पथ्यामलकमस्त्रिठालोधतिन्दुकवाश्च वा ॥ ४८ ॥

इति पञ्चकषायः ।

[illegible]

अथ कुष्ठाद्यं तैलम्—

जातीपत्ररसे तैलं विपक्वं पूतिकर्णजित् ।
किंवा रसाञ्जनं नारीस्तन्यघृष्टं तदर्थकृत् ॥ ४९ ॥
कुष्ठहिङ्गुवचादारुशताह्वाविश्वसैन्धवैः ।
पूतिकर्णापहं तैलं बस्तमूत्रेण साधितम् ॥ ५० ॥

इति कुष्ठाद्यं तैलम् ।

अथ गन्धकतैलम्—

चूर्णेन गन्धकशिलारजनीभवेन
वस्वशकेन कटुतैलपलाष्टकं च ।
धतूरपत्ररसतुल्यमिदं विपक्वं
नाडीं जयेच्चिरमवामपि कर्णजाताम् ॥ ५१ ॥

इति गन्धकतैलम् ।

अथ कर्णकृमौ योगत्रयम्—

वार्ताकधूमस्नेहो वा सार्धपोऽप्यथ तालुकम् ।
गोमूत्रपिष्टं श्रवासि निहितं किमिनुद्भवेत् ॥ ५२ ॥

इति कर्णकृमौ योगत्रयम् ।

अथ कृमिकर्णे योगचतुष्टयम्—

सूर्यावर्तकस्वरसं रसं वा सिन्दुवारिजम् ।
लाङ्गलीमूलतोयं वा ज्यूषणं वाऽपि चूर्णितम् ॥ ५३ ॥
एते योगास्तु चत्वारः पूरणात्कृमिकर्णके ।
कृमीन्निर्मूलयन्त्याशु शतपद्यस्रपादिकान् ॥ ५४ ॥

इति कृमिकर्णे योगचतुष्टयम् ।

अथ कृमिकर्णयोगः—

हलिरविमक्ते एकीकृत्य बुधो गालयेद्दृढं क्षुण्णे ।
वसनेन तद्वसेन श्रवणे परिपूरयेद्भृशं युक्त्या ॥ ५५ ॥
कर्णजलौका नियतं कृमिकीटपिपीलिकास्तथाऽन्येऽपि ।
निपतन्ति निरवशेषाः कारणडाश्चापि मुण्डस्थाः ॥ ५६ ॥

इति कृमिकर्णयोगः ।

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting department in ensuring the integrity of the financial statements. It also highlights the need for transparency and accountability in the reporting process.

2. The second part of the document outlines the various methods used to collect and analyze financial data, including the use of spreadsheets, databases, and specialized software. It also discusses the importance of regular audits and the role of external auditors in providing an independent assessment of the company's financial health.

3. The third part of the document focuses on the importance of budgeting and forecasting in the management of the company's financial resources. It discusses the various factors that can affect the company's financial performance and the need for a flexible and realistic budget that can be adjusted as circumstances change.

4. The fourth part of the document discusses the importance of risk management in the financial management of the company. It outlines the various risks that the company faces, including market risk, credit risk, and operational risk, and discusses the various strategies that can be used to mitigate these risks.

5. The fifth part of the document discusses the importance of financial reporting and the role of the accounting department in ensuring that the company's financial statements are accurate and complete. It also discusses the various requirements for financial reporting and the need for transparency and accountability in the reporting process.

6. The sixth part of the document discusses the importance of financial planning and the role of the accounting department in ensuring that the company's financial resources are managed effectively. It outlines the various factors that can affect the company's financial performance and the need for a flexible and realistic financial plan that can be adjusted as circumstances change.

7. The seventh part of the document discusses the importance of financial control and the role of the accounting department in ensuring that the company's financial resources are used efficiently and effectively. It outlines the various methods used to monitor and control the company's financial resources and the need for regular audits and the role of external auditors in providing an independent assessment of the company's financial health.

8. The eighth part of the document discusses the importance of financial management and the role of the accounting department in ensuring that the company's financial resources are managed effectively. It outlines the various factors that can affect the company's financial performance and the need for a flexible and realistic financial management plan that can be adjusted as circumstances change.

9. The ninth part of the document discusses the importance of financial reporting and the role of the accounting department in ensuring that the company's financial statements are accurate and complete. It also discusses the various requirements for financial reporting and the need for transparency and accountability in the reporting process.

10. The tenth part of the document discusses the importance of financial planning and the role of the accounting department in ensuring that the company's financial resources are managed effectively. It outlines the various factors that can affect the company's financial performance and the need for a flexible and realistic financial plan that can be adjusted as circumstances change.

अथ कर्णमलहरणोपायः—

प्रक्षेद्य धीमांस्तैलेन प्रविलाप्य च शोधनैः ।

कर्णगूथं तु मतिमान्मिषगजह्याच्छलाकया ॥ ५७ ॥

इति कर्णमलहरणोपायः ।

अथ कर्णप्रतीनाहे क्रियामाह—

अथ कर्णप्रतीनाहे स्नेहस्वेदौ प्रयोजयेत् ।

ततो विरिक्तशिरसः क्रियां प्रोक्तां समाचरेत् ॥ ५८ ॥

निषेधमाह—

बाधिर्यं बालवृद्धोत्थं सहजं चापि वर्जयेत् ।

स्नानं शीताम्बुपानं च मेथुनं चापि वर्जयेत् ॥ ५९ ॥

इति कर्णरोगचिकित्सा ।

अथ कर्णपालिरोगचिकित्सा—

अथ शतावरीतैलम्—

पालीसंशोषणे कुर्याद्वातकर्णरुजः क्रियाम् ।

स्वेदयेद्यत्नतस्तां तु स्विन्नां संवर्धयेच्छनैः ॥ ६० ॥

माहिषनवनीतयुतं सप्ताहं धान्यराशिपर्युषितम् ।

नवमुसलिकन्दचूर्णं वृद्धिकरं कर्णपालीनाम् ॥ ६१ ॥

शतावरीवाजिगन्धापयस्यैरण्डबीजकैः ।

तैलं विपक्वं सक्षीरं पालीनां पुष्टिकृत्परम् ॥ ६२ ॥

इति शतावरीतैलम् ।

अथ जीवनीयतैलम्—

नीत्वाऽस्तं परिपोटं च चन्द्रिकां च प्रयत्नतः ।

कल्केन जीवनीयेन तैलं पयसि पाचयेत् ॥ ६३ ॥

आनूपमांसक्राथेन पालिपोषणवर्धनम् ।

इति जीवनीयतैलम् ।

अथ जीवन्त्यायं तैलम्—

शीतैर्लेपैर्जलौकाभिः कर्णोत्पातमुपाचरेत् ॥ ६४ ॥

जीवन्त्या चाश्वगन्धार्कबाकूचीबीजसैन्धवैः ।

हलिनीसुरसाभ्यां च गोधाकङ्कवसान्वितम् ॥ ६५ ॥

— [REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

पक्वं तैलं तदभ्यङ्गादुन्मन्थं नाशयेद्ध्रुवम् ।

इति जीवन्त्याद्यं तैलम् ।

दुःखवर्धनकं सिक्त्वा जम्बाम्राश्वत्थपत्रजैः ॥ ६६ ॥

क्राथैस्तैलेन सुस्निग्धं तच्चूर्णैश्चावधूलयेत् ।

बहुशो गोमयैस्तप्तं स्वेदितं परिलेपितम् ॥ ६७ ॥

घनसारैः समालिम्पेदजामूत्रेण कल्कितैः ।

कर्णपालयामया येऽन्ये यथास्वं तानुपाचरेत् ॥ ६८ ॥

इति कर्णपालिचिकित्सा ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां कर्णरोगनिदानचिकित्साकथनं नामैकोन-

त्रिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १२९ ॥

अथ त्रिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ नासारोगोपक्रमः—

आनह्यते यस्य विशुष्यते च प्रक्लिद्यते धूप्यति चैव नासा ।

न वेत्ति यो गन्धरसांश्च जन्तुर्जुष्टं व्यवस्येत्तमपीनसेन ॥ १ ॥

तं चानिलश्लेष्मभवं विकारं ब्रूयात्प्रतिश्यायसमानलिङ्गम् ।

पूतिनासमाह—

दोषैर्विदग्धैर्गलतालुमूले संमूर्छितो यस्य समीरणस्तु ॥ २ ॥

निरेति पूतिर्मुखनासिकाभ्यां तं पूतिनासं प्रवदन्ति रोगम् ।

नासिकापाकमाह—

घ्राणाश्रितं पित्तमरुंषि कुर्याद्यस्मिन्विकारे बलवांश्च पाकः ॥ ३ ॥

तं नासिकापाकमिति व्यवस्येद्विकृद्कोथावपि चातिमात्रम् ।

पूयरक्तमाह—

दोषैर्विदग्धैरथ वाऽपि जन्तोर्ललाटदेशेऽभिहतस्य तैस्तैः ॥ ४ ॥

नासा स्रवेत्पूयमसृग्विमिश्रं तं पूयरक्तं प्रवदन्ति रोगम् ।

क्षवथुमाह—

घ्राणाश्रिते मर्मणि संप्रदुष्टो यस्यानिलो नासिकाया निरेति ॥ ५ ॥

कफानुयातो बहुशोऽतिशब्दस्तं रोगमाहुः क्षवथुं विधिज्ञाः ।

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

क्षवथुभेदमाह—

तीक्ष्णोपयोगादतिजिघ्रतो वा भावात्कटूनर्कनिरीक्षणाद्वा ॥ ६ ॥
सूत्रादिभिर्वा तरुणास्थिमर्मण्युद्घाटितेऽन्यः क्षवथुर्निरेति ।

भ्रंशशुमाह—

प्रभ्रश्यते नासिकयैव यस्य सान्द्रो विदग्धो लवणः कफस्तु ॥ ७ ॥
प्राक्संचितो मूर्धनि पित्ततप्ते तं भ्रंशशुं रोगमुदाहरन्ति ।

दीप्तमाह—

घ्राणे भृशं दाहसमन्विते तु विनिःसरेद्भूम इवेह वायुः ॥ ८ ॥
नासा प्रदीप्ते च यस्य जन्तोर्व्याधिं तु तं दीप्तमुदाहरन्ति ।

प्रतीनाहमाह—

उच्छ्वासमार्गं तु कफः सवातो रुन्ध्यात्प्रतीनाहमुदाहरेत्तम् ॥ ९ ॥

स्रावमाह—

घ्राणाद्घनः पीतसितस्तनुर्वा दोषः सवेत्स्रावमुदाहरेत्तम् ।

नासापरिशोषमाह—

घ्राणाश्रिते स्रोतसि मारुतेन गाढं प्रतप्ते परिशोषिते च ।
कृच्छ्राच्छ्वसेदूर्ध्वमधश्च जन्तुर्यस्मिन्स नासापरिशोष *उक्तः ॥ १० ॥

आमपीनसमाह—

शिरोगुरुत्वमरुचिर्नासाम्रावस्तनुस्वरः ।
क्षामः शीवत्यतोऽभीक्ष्णमामपीनसलक्षणम् ॥ ११ ॥
आमलिङ्गान्वितः श्लेष्मा घनः खेषु निमज्जति ।
स्वरवर्णविशुद्धिश्च परिपक्वस्य लक्षणम् ॥ १२ ॥

प्रतिश्यायमाह—

संधारणाजीर्णरजोतिमाष्यक्रोधतुवैषम्यशिरोमितापैः ।
प्रजागरातिस्वपनाम्बुशीतैरवश्यया मैथुनबाष्पशोकैः ॥ १३ ॥

* उक्त इत्यस्यायं अयं ग्रन्थो ग. पुस्तके—सर्वात्मकार्बुदमाह—

दोषैस्त्रिभिस्तैः पृथगेकश्च कृपालथाशीसि तथैव शोषम् ।

सालाक्यसिद्धं तमवेक्ष्य वाऽपि सर्वात्मकं सप्तधमर्बुदं स्यात् ॥ १ ॥

मूल एवास्याऽऽवश्यकत्वेऽप्यशुद्धत्वात्प्रत्यन्तराभावाच्चाधो निर्दिष्टः ।

1. The first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

2. The second part of the document is a list of the names of the members of the committee.

3. The third part of the document is a list of the names of the members of the committee.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the members of the committee.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

संस्त्यानदोषे शिरसि प्रवृद्धो वायुः प्रतिश्यायमुदीरयेत्तु ।

पूर्वरूपमाह—

चयं गता मूर्ध्नि तु मारुतादयः

पृथक् समस्ताश्च तथैव शोणितम् ॥ १४ ॥

प्रकुप्यमाना विविधैः प्रकोपनैस्ततः प्रतिश्यायकरा भवन्ति हि ।

क्षवप्रवृत्तिः शिरसोऽतिपूर्णता तथाऽङ्गमर्दः परिहृष्टरोमता ।

उपद्रवाश्चाप्यपरे पृथग्विधा नृणां प्रतिश्यायपुरःसराः स्मृताः ॥ १५ ॥

वातजप्रतिश्यायमाह—

आनद्धा पिहिता नासा तनुस्त्रावप्रसेकिनी ।

गलताल्वोष्ठशोषश्च निस्तोदः शङ्खयोस्तदा ॥ १६ ॥

भवेत्स्वरोपघातश्च प्रतिश्यायेऽनिलात्मके ।

पित्तजप्रतिश्यायमाह—

उष्णः सपीतकः स्त्रावो घ्राणात्स्रवति पैत्तिके ॥ १७ ॥

कृशोऽतिपाण्डुः संतप्तो भवेदुष्णाभिपीडितः ।

सधूममग्निं सहसा वमतीव स मानवः ॥ १८ ॥

कफजप्रतिश्यायमाह—

घ्राणात्कफकृते श्वेतः कफश्चेतः प्रवर्तते ।

शुक्लावभासः शूनाक्षो भवेदुरुशिरा नरः ॥ १९ ॥

संनिपातजप्रतिश्यायमाह—

गलताल्वोष्ठशिरसां कण्डूभिरतिपीडितः ।

भूत्वा भूत्वा प्रतिश्यायो योऽकस्मात्संप्रवर्तते ॥ २० ॥

संपक्रो वाऽप्यपक्रो वा स सर्वप्रभवः स्मृतः ।

लिङ्गानि चैव सर्वेषां पीनसानां च सर्वजे ॥ २१ ॥

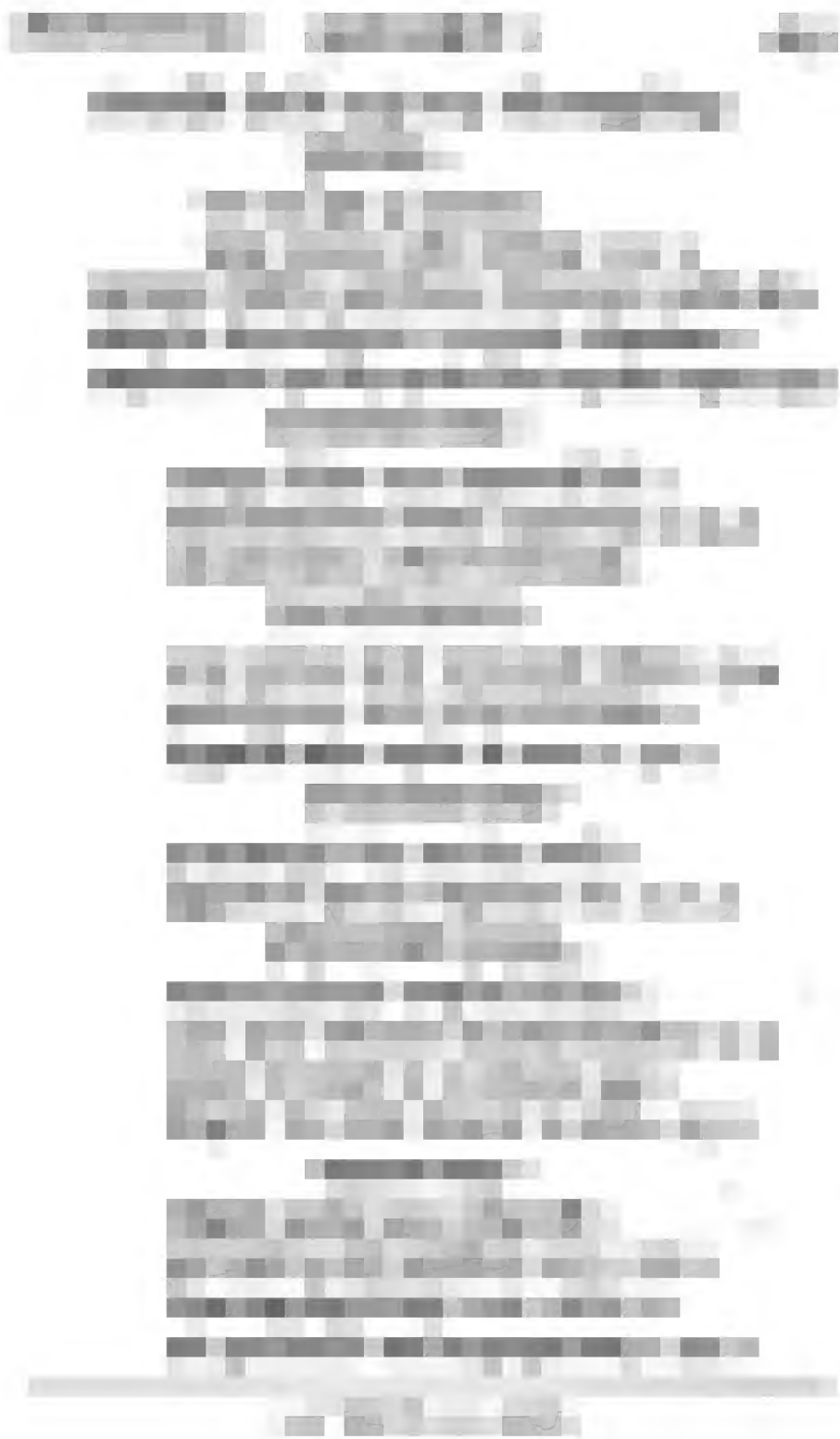
कष्टसाध्यत्वमाह—

प्रक्लिद्यते पुनर्नासा पुनश्च परिशुष्यति ।

पुनरानह्यते वाऽपि पुनर्विन्नियते तथा ॥ २२ ॥

निश्वासश्चातिदुर्गन्धिर्नरो गन्धं न वेत्ति च ।

एवं दुष्टप्रतिश्यायं जानीयात्कृच्छ्रसाधनम् ॥ २३ ॥



असाध्यत्वमाह—

रक्तजे तु प्रतिश्याये रक्तस्रावः प्रवर्तते ।
 ताम्राक्षश्च भवेज्जन्तुरोघातप्रपीडितः ॥ २४ ॥
 दुर्गन्धोच्छ्वासवदनो नरो गन्धान्न वेत्ति सः ।
 सर्व एव प्रतिश्याया नरस्याप्रतिकारिणः ॥ २५ ॥
 दुष्टतां यान्ति कालेन तदाऽसाध्या भवन्ति च ।
 मूर्च्छन्ति चात्र कृमयः श्वेताः स्निग्धास्तथाऽणवः ॥ २६ ॥
 कृमिजो यः शिरोरोगस्तुल्यं तेनास्य लक्षणम् ।
 बाधिर्यमान्ध्यमूकत्वं घोरांश्च नयनामयान् ॥ २७ ॥
 शोषाग्निसादकासादीन्वृद्धाः कुर्वन्ति पीनसाः ।
 अर्बुदं सप्तधा शोथाश्चत्वारोऽर्शश्चतुर्विधम् ॥ २८ ॥
 चतुर्विधं रक्तपित्तमुक्तं घ्राणेऽपि तद्विदुः ।

इति नासारोगनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

सर्वेषु पीनसेष्वादौ निवातागारगो भवेत् ॥ २९ ॥
 शिरसोऽभ्यञ्जनं स्वेदनस्य कट्वम्लभोजनैः ।
 घृतपानैश्च वमनैर्यथा सम्यक्समाचरेत् ॥ ३० ॥
 पञ्चमूलीशृतं क्षीरं किं वा स्याच्चित्रकोऽभया ।
 सर्पिर्गुडो विडङ्गश्च यूषः पीनसशान्तये ॥ ३१ ॥

अथ गुडायो योगः—

गुडमरिचविमिश्रं पीतमाशु प्रकामं
 हरति दधि नराणां पीनसं दुर्निवारम् ।
 यदि तु सघृतमन्नं श्लक्ष्णगोधूमचूर्णैः
 कृतमुपहरतेऽसौ तत्कुतोऽस्यावकाशः ॥ ३२ ॥

इति गुडायो योगः ।

अथ मरिचादियोगः—

सर्वेषु सर्वकालं पीनसरोगेषु जातमात्रेषु ।
 मरिचगुडेन च दध्ना भुञ्जीत नरः सुखं लभते ॥ ३३ ॥
 इति मरिचादियोगः ।

अथ चित्रकादिगुटी—

कटुत्रिकं चित्रकतिचिडीकं तालीसपत्रं चविकाम्लसंज्ञम् ।

विचूर्णितं जीरकचूर्णयुक्तमेलात्वचातत्सुरभीकृतं च ।

मिश्रं पुराणेन गुडेन दद्यात्तत्पीनसानां परिपाचनार्थम् ॥ ३४

इति चित्रकादिगुटी ।

अथ कटूफलादिचूर्णं काथश्च—

कटूफलं शृङ्गवेरं च पिप्पली मरिचानि च ।

सटी पुष्करमूलं च भार्गी मधुरसा वरा ॥ ३५ ॥

अभया कृष्णलवणं शुङ्गी कर्कटकस्य च ।

एतच्चूर्णं वरं प्रोक्तं काथो वा मूत्रमूर्च्छितः ॥ ३६ ॥

पीनसे स्वरभेदे च तमके सहलीमके ।

संनिपातेऽनिलकफे कासे श्वासे च शस्यते ॥ ३७ ॥

इति कटूफलादिचूर्णं काथश्च ।

अथ पाठाद्यं तैलम्—

अपीनसे पूतिनस्ये च जन्तोः स्नेहस्वेदौ छर्दनं संसनं च ।

हितं मवेल्लघु तीक्ष्णं च मुक्तमुष्णं तोयं धूमपानं च कार्यम् ॥ ३८

कफघ्नमन्नं वार्ताकं कुलत्थादकिमुद्रजाः ।

यूषाः ससैन्धववयोषाः शस्ताश्चोष्णास्त्वपीनसे ॥ ३९ ॥

कलिङ्गहिङ्गुमरिचलाक्षासुरसकटूफलैः ।

कृष्णोग्राशिगुजन्तुघ्नैरवपीडस्तु पीनसे ॥ ४० ॥

पाठाद्विरजनीमूर्वापिप्पलीजातिपल्लवैः ।

दन्त्या च तैलं सिद्धं स्यान्न स्यात्सम्यगपीनसे ॥ ४१ ॥

इति पाठाद्यं तैलम् ।

अथ सर्जादिकषायो घृतं च—

सर्जार्जुनोदुम्बरवत्सकानां त्वचां कषायैः परिधावनेन ।

कषायकल्केरपि चैभिरेव सिद्धं घृतं घ्राणविपाकनाशि ॥ ४२

इति सर्जादिकषायो घृतं च ।

अथ पीनसादिषु—

नासावनाहे कर्तव्यं पानं गव्यस्य सर्पिषः ॥ ४३ ॥

1870

1870

1870

1870

1870

नासास्रावे घ्राणयोश्चूर्णमुक्तं
 नाड्याऽऽदेयं येऽबपीडाश्च पथ्याः ।
 तीक्ष्णान्धूमान्देवदार्वग्निकाभ्यां
 मांसं चाऽऽजं पथ्यमन्नाऽऽदिशन्ति ॥ ४४ ॥

इति पीनसादिषु ।

अथ व्याघ्रीतैलम्—

व्याघ्रीदन्तीवचाशिगुसुरसाव्योषसिन्धुजैः ।
 सिद्धं तैलं नसि क्षिप्तं पूतिनासागदापहम् ॥ ४५ ॥

इति व्याघ्रीतैलम् ।

अथ शिगुतैलम्—

शिगुसिंहीनिकुम्भानां बीजैः सव्योषसैन्धवैः ।
 बिल्वपत्ररसे सिद्धं तैलं स्यात्पूतिनस्यनुत् ॥ ४६ ॥

इति शिगुतैलम् ।

घृतगुग्गुलुमिश्रस्य कापित्थस्य प्रयत्नतः ।
 धूमं क्षवथुरोगघ्नं भ्रंशथुघ्नं च निर्दिशेत् ॥ ४७ ॥
 शुण्ठीकुष्ठकणाबिल्वद्राक्षाकल्ककषायवत् ।
 तैलं पक्वमथाऽऽज्यं वा नस्यात्क्षवथुनाशनम् ॥ ४८ ॥

नस्यं हितं निम्बरसाञ्जनाभ्यां क्षीते शिरःस्वेदनमल्पशस्तु ।
 नस्ये कृते क्षीरजलावसेकाञ्जंशान्ति भुञ्जीत च मुद्गयूषैः ॥ ४९ ॥
 नासास्रावेऽतिनस्यानि तीक्ष्णद्रव्यस्य कल्पयेत् ।
 नासाशोषे क्षीरपानं ससितं च प्रशस्यते ॥ ५० ॥

अथ प्रतिश्यायप्रतीकारः—

प्रतिश्यायेषु सर्वेषु गृहं वातविवर्जितम् ।
 वज्रेण गुरुणोष्णेन शिरसो वेष्टनं हितम् ॥ ५१ ॥
 विडङ्गं सैन्धवं हिङ्गुं गुग्गुलुं समनःशिलाम् ।
 प्रतिश्याये वचायुक्तं शक्या धूमं पिबेन्नरः ॥ ५२ ॥
 प्रतिश्यायेषु सशिरःपीडेषु नवसागरम् ।
 समानकलिकाचूर्णं सूक्ष्मं संचूर्ण्य तद्वयम् ॥ ५३ ॥

— — — — —

— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —
— — — — —

— — — — —

— — — — —

— — — — —
— — — — —
— — — — —

— — — — —

— — — — —
— — — — —
— — — — —

— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —

— — — — —

— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —
— — — — —

गुञ्जामात्रं तु तच्चूर्णं नस्यं प्रधमनं चरेत् ।
 नश्यन्त्यनेन नस्येन प्रतिश्यायशिरोरुजः ॥ ५४ ॥
 सवचं चूर्णमाघ्राय वाससा पोटलीकृतम् ।
 कारवीं वल्लवद्धां वा प्रतिश्यायमपोहति ॥ ५५ ॥
 सटीतामलकीव्योषचूर्णं सर्पिर्गुडान्वितम् ।
 हरेद्दधोरं प्रतिश्यायं पार्श्वहृद्दस्तिशूलनुत् ॥ ५६ ॥

इति सत्याद्यं चूर्णम् ।

अथ चित्रकहरीतकी-

घृततैलसमायुक्तं सक्तुधूमं पिबेन्नरः ।
 स धूमः स्यात्प्रतिश्यायकासहिक्काहरः परः ॥ ५७ ॥
 प्रतिश्याये पिबेद्दधूमं सर्वगं च समायुतम् ।
 चातुर्जातकचूर्णं वा घ्रेयं वा कृष्णजरिकम् ॥ ५८ ॥
 पुटपक्वं जयापत्रं तैलं सैन्धवसंयुतम् ।
 प्रतिश्यायेषु सर्वेषु शीलितं परमौषधम् ॥ ५९ ॥
 पिप्पल्यः शिशुबीजानि विडङ्गमरिचानि च ।
 अवपीडः प्रशस्तोऽयं प्रतिश्यायनिवारणे ॥ ६० ॥
 शिरसोऽभ्यञ्जनैः स्वेदैर्नस्यैर्मन्दाल्पभोजनैः ।
 वमनैर्घृतपानैश्च तान्यथास्वमुपाचरेत् ॥ ६१ ॥
 कृमिघ्ना ये क्रमाः प्रोक्तास्तान्वै कृमिषु योजयेत् ।
 धावनानि कृमिघ्नानि भेषजानि च बुद्धिमान् ॥ ६२ ॥
 रक्तपित्तानि शोथाश्च तथाऽर्शास्यर्बुदानि च ।
 नासिकायां स्युरेतेषां स्वं स्वं कुर्याच्चिकित्सितम् ॥ ६३ ॥
 गृहधूमकणादारुक्षारतक्ताह्वसैन्धवैः ।
 सिद्धं शिखरिबीजैश्च तैलं नासार्शसे हितम् ॥ ६४ ॥

चत्वार्यत्र शतानि चित्रकजटायुकपञ्चमूलामृता-

धात्रीणामुदकार्मणैस्त्रिभिरपां द्रोणेन च क्वाथयेत् ।

पादस्थे कथने गुडस्य च तुलां पथ्याढकेनान्वितां

पक्त्वाऽस्मिञ्छृतशीतले तु मधुनः प्रस्थार्धमच्छं क्षिपेत् ॥ ६५ ॥

व्योषस्य त्रिसुगन्धिकस्य च पलान्यत्रैव षट् प्रक्षिपेत्

क्षारस्यार्धपलं रसायनमिदं संसेव्यते सर्वदा ।

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that proper record-keeping is essential for the integrity of the financial system and for the ability to detect and prevent fraud.

2. The second part of the document outlines the specific requirements for record-keeping. It states that all transactions must be recorded in a timely and accurate manner, and that the records must be maintained for a minimum of five years. It also discusses the importance of ensuring that the records are secure and that they are accessible to the appropriate authorities.

3. The third part of the document discusses the role of the auditor in ensuring the integrity of the financial system. It states that the auditor is responsible for examining the records and for reporting on the results of the examination. It also discusses the importance of the auditor's independence and of the auditor's ability to detect and prevent fraud.

4. The fourth part of the document discusses the role of the management in ensuring the integrity of the financial system. It states that the management is responsible for establishing and maintaining a system of internal controls that is designed to prevent and detect fraud. It also discusses the importance of the management's commitment to the integrity of the financial system and of the management's ability to detect and prevent fraud.

5. The fifth part of the document discusses the role of the public in ensuring the integrity of the financial system. It states that the public has a right to know about the financial system and that the public should be able to access the records of the financial system. It also discusses the importance of the public's ability to detect and prevent fraud.

शोषश्वासमलाप्रवृत्तिवमथुश्लेष्मप्रतिश्यायिभिः

क्षीणोरःक्षतहिक्किभिः कफशिरोरुग्भिः प्रनष्टाग्निभिः ॥ ६६ ॥
इति चित्रकहरीतकी ।

अथ हिङ्गवादितैलम्—

हिङ्गुव्योषविडङ्गकटफलवचारुक्ती*क्ष्णगन्धायुतै-

र्लाक्षाश्वेतपुनर्नवाकुटजैः पुष्पोद्भवैः सौरभैः ।

इत्येभिः कटुतैलमेतदनले मन्दे समूत्रे शृतं

पीतं नासिकया यथाविधि भवेन्नासामयिभ्यो हितम् ॥ ६७ ॥

इति हिङ्गवादितैलम् ।

अनुक्तान्नासिकारोगानिह वातादिलक्षणैः ।

ज्ञात्वा भिषगुपाचर्याद्यथास्वं सुसमाहितः ॥ ६८ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां नासारोगचिकित्साकथनं नाम

त्रिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १३० ॥

अथैकत्रिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ नेत्ररोगनिदानम्—

उष्णाभितप्तस्य जलप्रवेशाद्दूरेक्षणात्स्वप्नाविपर्ययाच्च ।

स्वेदाद्रजोधूमनिषेवणाच्च छेदैर्विघाताद्वमनातियोगात् ॥ १ ॥

द्रवान्नपानादतिसेवनाच्च विण्मूत्रशुक्रानिलनिग्रहाच्च ।

प्रसक्तसंरोदनशोककोपाच्छिरोभितापादतिमद्यपानात् ॥ २ ॥

तथा ऋतूनां च विपर्ययेण क्लेशाभिघातादतिमैथुनाच्च ।

बाष्पग्रहात्सूक्ष्मनिरीक्षणाच्च नेत्रे विकाराञ्जनयन्ति दोषाः ॥ ३ ॥

वातात्पित्तात्कफाद्रक्तादभिष्यन्दश्चतुर्विधः ।

प्रायेण जायते घोरः सर्वनेत्रामयाकरः ॥ ४ ॥

वातजविकारानाह—

निस्तोदनस्तम्भनरोमहर्षसंकोचपारुष्यशिरोभितापाः ।

विशुष्कभावः शिशिराश्रुता च वाताभिपन्ने नयने भवन्ति ॥ ५ ॥

* क. सौभाग्यनाम ।

१ क. संघर्षपा ।

1. The first part of the document is a letter from the President of the United States to the Congress, dated January 3, 1801. It is a very important document, as it contains the President's first message to the Congress, and it is also the first time that the President has addressed the Congress in person.

2. The second part of the document is a letter from the President to the Congress, dated January 11, 1801. It is also a very important document, as it contains the President's second message to the Congress, and it is also the first time that the President has addressed the Congress in person.

3. The third part of the document is a letter from the President to the Congress, dated January 18, 1801. It is also a very important document, as it contains the President's third message to the Congress, and it is also the first time that the President has addressed the Congress in person.

4. The fourth part of the document is a letter from the President to the Congress, dated January 25, 1801. It is also a very important document, as it contains the President's fourth message to the Congress, and it is also the first time that the President has addressed the Congress in person.

पित्तजविकारानाह—

दाहप्रपाकौ शिशिराभिनन्दा धूयनं बाष्पसमुच्छ्रयश्च ।
उष्णाश्रुता पीतकनेत्रता च पित्ताभिपन्ने नयने भवन्ति ॥ ६ ॥

कफजविकारानाह—

उष्णाभिनन्दा गुरुताऽक्षिशोकः कण्डूपदेहावतिशीतता च ।
स्रावो बहुः पिच्छिल एव चापि कफाभिपन्ने नयने भवन्ति ॥ ७ ॥

रक्तजविकारानाह—

ताम्राश्रुता लोहितनेत्रता च राज्यः समन्तादतिलोहिताश्च ।
पित्तस्य लिङ्गानि च यानि तानि रक्ताभिपन्ने नयने भवन्ति ॥ ८ ॥

तत्राधिमन्थदोषमाह—

वृद्धैरेतैरभिष्यन्दैर्नराणामक्रियावताम् ।
तावन्तस्त्वधिमन्थाः स्युर्नयने तीव्रवेदनाः ॥ ९ ॥
उत्पाद्यत इवात्यर्थं नेत्रं निर्मथ्यते तथा ।
शिरोर्ध्वं वेदनां विद्यादधिमन्थं स्वलक्षणैः ॥ १० ॥

दोषजदृष्टिघातस्य नियमदिनान्याह—

हन्याद्वृष्टिं श्लैष्मिकः सतरात्राद्योऽधीमन्थो रक्तजः पञ्चरात्रात् ।
षड्रात्राद्वा वातिको वै निह्नयान्निध्याचारात्पैत्तिकः सद्य एव ॥ ११ ॥

आमान्वितमाह—

उदीर्णवेदनं नेत्रं रागशोथसमन्वितम् ।
वर्धनिस्तोदशूलाश्रुयुक्तमामान्वितं विदुः ॥ १२ ॥

पक्वदोषमाह—

मन्दवेदनता कण्डूः संरम्भाश्रुप्रशान्तता ।
प्रसन्नवर्णता चाक्ष्णोः संपक्वं दोषमादिशेत् ॥ १३ ॥

नेत्रपाकमाह—

कण्डूपदेहाश्रुयुतः पक्वोदुम्बरसंनिभः ।
संरम्भी पच्यते यस्तु नेत्रपाकः स शोथजः ।
शोफहीनानि लिङ्गानि नेत्रपाके त्वशाथजे ॥ १४ ॥

हताधिमन्थरोगमाह—

उपेक्षणादाक्षि यदाऽधिमन्थो वातात्मकः सादयति प्रसह्य ।

रुजाभिरुग्राभिरसंध्य एष हताधिमन्थः खलु नाम रोगः ॥ १५ ॥

वातपर्ययमाह—

वारं वारं च पर्येति भुवौ नेत्रे च मारुतः ।

रुजश्च विविधास्तीव्राः स ज्ञेयो वातपर्ययः ॥ १६ ॥

शुष्कनेत्रपाकमाह—

यत्कूणितं दारुणरूक्षवर्त्म संदृश्यते चाऽऽविलदर्शनं च ।

सुदारुणं यत्प्रतिबोधने च शुष्काक्षिपाकोपहतं तदक्षि ॥ १७ ॥

अन्यतोवातमाह—

यः श्यावदृक्कर्णशिराहनुस्थो मन्यागतो वाऽप्यनिलोत्थितो वा ।

कुर्याद्भुजं वै भुवि लोचने च तमन्यतोवातमुदाहरन्ति ॥ १८ ॥

अम्लाध्युषितनेत्रमाह—

श्यावं लोहितपर्यन्तं सर्वं चाक्षि प्रपच्यते ।

सदाहशोथं सप्तावमम्लाध्युषितमम्लतः ॥ १९ ॥

शिरोत्पातनेत्रदोषमाह—

अवेदना वाऽपि सवेदना वा यस्याक्षिराज्यो हि भवन्ति ताम्राः ।

मुहुर्विरज्यन्ति च याः स तादृग्व्याधिः शिरोत्पात इति प्रविष्टः ॥ २० ॥

मोहाच्छिरोत्पात उपेक्षितस्तु जायेत रोगः स शिराप्रहर्षः ।

ताम्राक्षमस्रं स्रवति प्रगाढं तथा न शक्नोत्यभिवीक्षितुं च ॥ २१ ॥

इति सर्वगताः ।

अथ कृष्णगताः—

निमग्नरूपं तु भवेद्धि कृष्णे सूच्येव बिन्द्वं प्रतिभाति यद्वै ।

स्रावं सवेदुष्णमतीव यच्च तत्स्रवणं शुक्रमुदाहरन्ति ॥ २२ ॥

दृष्टेः समीपे न भवेत्तु यच्च न चावगाढं न च संस्रवेच्च ।

अवेदनं वा न च युग्मशुक्रं न सिद्धिमायाति कदाचिदेव ॥ २३ ॥

स्यन्दात्मकं कृष्णगतं सचोषं शङ्खेन्दुकुन्दप्रतिमावमासम् ।

वेहायसाभ्रप्रतनुप्रकाशमथाव्रणं साध्यतमं वदन्ति ॥ २४ ॥



गम्भीरजातं बहलं च शुक्रं चिरोत्थितं चापि विवर्जनीयम् ।
 विच्छिन्नमध्यं पिशितावृतं च चलं शिरासूक्ष्ममट्टिकृच्च ॥ २५ ॥
 द्वित्वगतं लोहितमन्ततश्च चिरोत्थितं चापि विवर्जनीयम् ।
 उष्णाशुपातः पिटका च नेत्रे यस्मिन्भवेन्मुद्गनिभं च शुक्रम् ॥ २६ ॥
 तदप्यसाध्यं प्रवदन्ति केचिदन्यच्च यत्तित्तिरिपक्षतुल्यम् ।
 श्वेतः समाक्रामति सर्वतो हि दोषेण यस्यासितमण्डलं तु ॥ २७ ॥
 तमक्षिपाकात्ययमक्षिकोपं सर्वात्मकं वर्जयितव्यमाहुः ।
 अजापुरीषप्रतिमो रुजावान्संलोहितो लोहितपिच्छिलाश्रुः ॥ २८ ॥
 विगृह्य कृष्णं प्रचयोऽभ्युपैति तं चाजकाजातमिति व्यवस्थेत् ॥ २९ ॥
 इति कृष्णगताः ।

अथ दृष्टिगताः—

प्रथमपटलगतदोषजविकारानाह—

प्रथमे पटले दोषो यस्य दृष्ट्या व्यवस्थितः ।
 अव्यक्तानि च रूपाणि कदाचिद्यश्च पश्यति ॥ ३० ॥

द्वितीयपटलगतदोषजविकारानाह—

दृष्टेर्भृशं विह्वलत्वं द्वितीयं पटलं गते ।

त्रितीयपटलगतदोषजविकारानाह—

मक्षिका मशकांश्चापि जालकानि च पश्यति ॥ ३१ ॥
 मण्डलानि शताकाश्च मरीचीन्कुण्डलानि च ।
 परिपुवांश्च विविधान्वर्षमभ्रतमांसि च ॥ ३२ ॥
 दूरस्थानि च रूपाणि मन्यते स समीपतः ।
 समीपस्थानि दूरे च दृष्टेर्गोचरविभ्रमात् ॥ ३३ ॥
 यत्तवानपि चाल्यर्थं सूचीपाशं न पश्यति ।
 ऊर्ध्वं पश्यति नाधस्तात्तृतीये पटले गते ॥ ३४ ॥

चतुर्थपटलगतदोषजविकारानाह—

महान्त्यपि च रूपाणि छादितानीव चाम्बरैः ।
 कर्णनासाक्षिहीनानि विकृतानि च पश्यति ॥ ३५ ॥
 यथादोषं च रज्येत दृष्टेर्दोषे बलीयसि ।
 अधस्थिते समीपस्थं दूरस्थं चोपरिस्थिते ॥ ३६ ॥

पार्श्वस्थिते तथा दोषे पार्श्वस्थं नैव पश्यति ।
 समन्ततः स्थिते दोषे संकुलानि च पश्यति ॥ ३७ ॥
 दृष्टिमध्यस्थिते दोषे स एकं मन्यते द्विधा ।
 द्विधास्थिते त्रिधा पश्येद्बहुधा चानवस्थिते ॥ ३८ ॥
 दोषे दृष्ट्याश्रिते तिर्यङ्माहद्भस्वं च पश्यति ।
 तिमिराख्यः स वै दोषश्चतुर्थपटलं गतः ॥ ३९ ॥

लिङ्गनाशमाह—

यद्यप्युपेक्षमाणस्य चतुर्थपटलं गतः ।
 रुणाद्धि सर्वतो दृष्टिं लिङ्गनाशमतः परम् ॥ ४० ॥
 लिङ्गनाशं मलः कुर्याच्छादयेद्दृष्टिमण्डलम् ।
 अस्मिन्नपि तमोभूते नातिरूढे महागदे ॥ ४१ ॥
 चन्द्रादित्यौ सनक्षत्रावन्तरिक्षे च विद्युतः ।
 निर्मलानि च तेजांसि भ्राजि णूनि च पश्यति ॥ ४२ ॥
 स एव लिङ्गनाशस्तु नीलकाकाचसंज्ञितः ।

वातजदोषे रूपदर्शनम्—

वातेन चात्र रूपाणि भ्रमन्तीव स पश्यति ॥ ४३ ॥
 आविलान्यरुणाभानि व्याविद्धानीव मानवः ।

पित्तजदोषे रूपदर्शनम्

पित्तेनाऽऽदित्यखद्योतशुक्रचापतडिङ्गणान् ॥ ४४ ॥
 नृत्यतश्चैव शिखिनः सर्वं नीलं च पश्यति ।

कफजदोषे रूपदर्शनम्—

गौरचामरगौराणि श्वेताभ्रमितानि च ॥ ४५ ॥
 ककेन पश्येद्दूपाणि स्निग्धानि च सितानि च ।
 पश्येदसूक्ष्माणयत्ययं व्यभ्रे चैवाभ्रसंप्लवम् ॥ ४६ ॥
 सलिलप्लावितानीव परिजाड्यानि मानवः ।

रक्तजदोषे रूपदर्शनम्—

पश्येद्रक्तानि रक्तेन तमांसि विविधानि च ॥ ४७ ॥
 ससितान्येव कुष्णानि पीतान्यपि च मानवः ।

संनिपातजदोषे रूपदर्शनम्—

संनिपातेन चित्राणि विप्लुतानि च पश्यति ॥ ४८ ॥

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that proper record-keeping is essential for the transparency and accountability of the organization. This section also outlines the specific procedures for recording and verifying financial data.

2. The second part of the document focuses on the role of the audit committee. It details the committee's responsibilities, including monitoring the internal control system, reviewing the financial statements, and ensuring compliance with applicable laws and regulations. The document also describes the process for selecting and appointing audit committee members.

3. The third part of the document addresses the issue of risk management. It explains how the organization identifies, assesses, and mitigates various risks that could impact its operations. This section includes a discussion of the risk management framework and the specific measures taken to manage risk.

4. The fourth part of the document discusses the organization's approach to corporate governance. It outlines the principles and standards that guide the organization's decision-making and management practices. This section also describes the various mechanisms in place to ensure that the organization is governed in a fair and ethical manner.

5. The fifth part of the document discusses the organization's commitment to environmental and social responsibility. It outlines the organization's policies and practices for managing its environmental and social impacts. This section also describes the various initiatives and programs in place to promote sustainability and social responsibility.

6. The sixth part of the document discusses the organization's approach to human resources management. It outlines the organization's policies and practices for recruiting, developing, and retaining its workforce. This section also describes the various initiatives and programs in place to promote employee well-being and engagement.

7. The seventh part of the document discusses the organization's approach to information technology management. It outlines the organization's policies and practices for managing its information technology resources. This section also describes the various initiatives and programs in place to promote information security and data protection.

8. The eighth part of the document discusses the organization's approach to legal and regulatory compliance. It outlines the organization's policies and practices for ensuring that it complies with all applicable laws and regulations. This section also describes the various initiatives and programs in place to promote legal and regulatory compliance.

9. The ninth part of the document discusses the organization's approach to financial management. It outlines the organization's policies and practices for managing its financial resources. This section also describes the various initiatives and programs in place to promote financial stability and growth.

10. The tenth part of the document discusses the organization's approach to strategic management. It outlines the organization's vision, mission, and strategic goals. This section also describes the various initiatives and programs in place to implement the organization's strategy and achieve its long-term objectives.

बहुधा वा द्विधा वाऽपि सर्वाण्येव समन्ततः ।
हीनाधिकाङ्गान्यथ वा ज्योतीष्यपि च पश्यति ॥ ४९ ॥
पित्तं कुर्यात्परिम्लायि मूर्छितं रक्ततेजसा ।
पीता दिशस्तु खोतमादित्यमिव पश्यति ॥ ५० ॥
विकीर्यमाणान्खद्योतैवृक्षांस्तेजोभिरेव वा ।

षड्विधरागलक्षणमाह—

वक्ष्यामि षड्विधं रागैर्लिङ्गनाशमतः परम् ॥ ५१ ॥
रागोऽरुणो मारुतजः प्रदिष्टो म्लायी च नीलश्च तदैव पित्तात् ।
कफात्सितः शोणितजस्तु रक्तः समस्तदोषप्रभवो विचित्रः ॥ ५२ ॥
अरुणं मण्डलं दृष्ट्यां स्थूलकाचारुणप्रभम् ।
परिम्लायिनि रोगे स्यान्म्लायि नीलं च मण्डलम् ॥ ५३ ॥
दोषक्षयात्स्वयं तत्र कदाचित्स्वात्प्रदर्शनम् ।
अरुणं मण्डलं वार्ताञ्चञ्चलं परुषं तथा ॥ ५४ ॥
पित्तान्मण्डलमानीलं कांस्याभं पीतमेव च ।
श्लेष्मणा बहलं स्निग्धं शङ्खकुन्देन्दुपाण्डुरम् ॥ ५५ ॥
चलपद्ममलाशस्थः शुक्लो बिन्दुरिवाम्भसः ।
सृद्यमानं तु नयने मण्डलं तद्विसर्पति ॥ ५६ ॥
प्रवालपद्मपत्राभं मण्डलं शोणितात्मकम् ।
हृष्टिरागो भवेच्चित्रो लिङ्गनाशे त्रिदोषजे ।
यथास्वं दोषलिङ्गानि सर्वेष्वेव भवन्ति हि ॥ ५७ ॥

षड्रोगानाह—

यथा नरः पित्तविदग्धदृष्टिः कर्केन चान्यस्त्वथ धूमदर्शी ।
यो ह्रस्वजातो नकुलान्धता च गम्भीरसंज्ञा च तथैव दृष्टिः ॥ ५८ ॥
षड्रलिङ्गनाशाः षडिम च रागा दृष्ट्याश्रिताः षट्च षडेव चापि ।

पित्तविदग्धदृष्टिमाह—

पित्तेन दुष्टेन विदग्धदृष्टिः पीता भवेद्यस्य नरस्य दृष्टिः ॥ ५९ ॥
पीतानि रूपाणि च मन्यते यः स वै नरः पित्तविदग्धदृष्टिः ।
प्राप्ते तृतीयं पटलं तु दोषे दिवा न पश्येन्नशि वोक्षते च ॥ ६० ॥

THE
JOURNAL
OF THE
ROYAL
ANTHROPOLOGICAL
INSTITUTE
LONDON

1907

THE
JOURNAL
OF THE
ROYAL
ANTHROPOLOGICAL
INSTITUTE
LONDON

THE
JOURNAL
OF THE
ROYAL
ANTHROPOLOGICAL
INSTITUTE
LONDON

THE
JOURNAL
OF THE
ROYAL
ANTHROPOLOGICAL
INSTITUTE
LONDON

1907

THE
JOURNAL
OF THE
ROYAL
ANTHROPOLOGICAL
INSTITUTE
LONDON

1907

THE
JOURNAL
OF THE
ROYAL
ANTHROPOLOGICAL
INSTITUTE
LONDON

रात्रौ स शीतानुगृहीतदृष्टिः पित्तालपभावादपि तानि पश्येत् ।

श्लेष्मविदग्धदृष्टिमाह—

तथा नरः श्लेष्मविदग्धदृष्टिस्तान्येव शुक्लानि च मन्यते सः ॥ ६१ ॥

त्रिषु स्थितो यः पटलेषु दोषो नक्तान्ध्यमापादयति प्रसह्य ।

दिवा स सूर्यानुगृहीतदृष्टिः पश्येत्स रूपाणि कफाल्पभावात् ॥ ६२ ॥

धूमदर्शिनमाह—

शोकज्वरायासशिरोमितापैरभ्याहता यस्य नरस्य दृष्टिः ।

धूमांस्तथा पश्यति सर्वभावान्स धूमदर्शीति नरः प्रविष्टः ॥ ६३ ॥

ह्रस्वजात्यमाह—

यो ह्रस्वजात्यो दिवसेषु कृच्छ्राद्धस्वाणि रूपाणि च तेन पश्येत् ।

नकुलान्ध्यमाह—

विद्योतते यस्य नरस्य दृष्टिर्दोषाभिपन्ना नकुलस्य यद्वत् ॥ ६४ ॥

चित्राणि रूपाणि दिवा स पश्येत्स वै विकारो नकुलान्ध्यसंज्ञः ।

गम्भीरसंज्ञकमाह—

दृष्टिर्विरूपा श्वसनोपमृष्टा संकुच्यतेऽभ्यन्तरतस्तु याति ॥ ६५ ॥

रुजावगाढा च तमक्षिरोगं गम्भीरकेति प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ।

बाह्यौ पुनर्द्वाविह संप्रदिष्टौ निमित्ततश्चाप्यनिमित्ततश्च ॥ ६६ ॥

निमित्ततस्तत्र शिरोमितापाज्ज्ञेयस्त्वभिष्यन्दनिदर्शनैः सः ।

विदीर्यते सीदति हीयते वा नृणामभीघातहता च दृष्टिः ॥ ६७ ॥

सुरार्षिगन्धर्वमहोरगाणां संदर्शनेनापि च भास्करस्य ।

हन्येत दृष्टिर्मनुजस्य यस्य स लिङ्गनाशस्त्वनिमित्तसंज्ञः ।

तत्राक्षि विस्पष्टमिवावभाति वैदूर्यवर्णा विमला च दृष्टिः ॥ ६८ ॥

इति दृष्टिगताः ।

अथ शुक्लगताः—

प्रसारि तनु विस्तीर्णं श्यावं रक्तनिभं सिते ।

सश्वेतं मुदु शुक्लार्म शुक्ले तद्वर्धते चिरात् ॥ ६९ ॥

पद्माभं मुदुरक्तार्म यन्मांसं चीयते सिते ।

पृथुमुद्विधमांसार्म बहलं च यकृन्निभम् ॥ ७० ॥

स्थिरं प्रसारि मांसाढ्यं शुष्कं स्नाय्वर्म पञ्चमम् ॥ ७१ ॥

इयावाः स्युः पिशितनिमाश्च बिन्दवो ये
 शुक्त्याभास्वासितसिताश्च शुक्तिसंज्ञाः ।
 एको यः शशरुधिरोपमश्च बिन्दुः
 शुक्लस्थो भवति तदर्जुनं वदन्ति ॥ ७२ ॥
 श्लेष्ममारुतकोपेन यच्छुक्ले मांसमुन्नतम् ।
 पिष्टवत्पिष्टकं विद्धि मलाक्तादर्शसंनिमम् ॥ ७३ ॥
 जालाभः कठिनशिरो महान्सरक्तः
 संतानः स्मृत इह जालसंज्ञितस्तु ।
 शुक्लस्थाः सितपिटकाः शिरावृता या-
 स्ता विद्यादसितसमीपजाः शिराजाः ॥ ७४ ॥
 कांस्याभोऽमृदुरथ वारिबिन्दुकल्पो
 विज्ञेयो नयनसिते बलासरूपः ॥ ७५ ॥
 इति शुक्लगताः ।

अथ संधिगताः—

पक्वः शोथः संधिजो यः सतोदः स्रवेत्पूथं स हि पूयालसाख्यः ।
 ग्रन्थिनाल्पो दृष्टिसंधावपाकी कण्डूप्रायो नीरुजस्तूपनाहः ॥ ७६ ॥
 गत्वा संधीनश्रुमार्गेण दोषाः कुर्युः स्रावालक्षणैः स्वरूपेताम् ।
 तं हि स्रावं नेत्रनाडीति चैके तस्या लिङ्गं कीर्तयिष्ये चतुर्धा ॥ ७७ ॥
 पाकात्संधौ संस्रवेद्यस्तु पूथं पूयास्रावः स गदः सर्वजस्तु ।
 श्वेतं सान्द्रं पिच्छिलं यः स्रवेत् श्लेष्मस्रावोऽसौ विकारो मतस्तु ।
 रक्तास्रावः शोणितोत्थो विकारः स्रवेदुष्णं तत्र रक्तं प्रभूतम् ।
 हरिद्राभं नीलमुष्णं जलं वा पित्तात्स्रावः संस्रवेत्संधिमध्यात् ॥ ७८ ॥
 ताम्रा तन्वी दाहशूलोपपन्ना ज्ञेया रक्तात्पर्वणी वृत्तशोफा ।
 जाता संधौ शुक्लकृष्णेऽलजी स्यात्तस्मिन्नेव ख्यापिता पूर्वलिङ्गैः ॥ ८० ॥
 क्रिमिं ग्रन्थिं वर्त्मनः पक्ष्मणश्च कण्डूं कुर्युर्जन्तवः संधिजाताः ।
 नानारूपा वर्त्मशुक्लान्तसंधौ चरन्त्यन्तर्नयनं दूषयन्तः ॥ ८१ ॥
 इति संधिगताः ।

अथ वर्त्मपक्ष्मजाः—

आभ्यन्तरमुखी ताम्रा बाह्यतो वर्त्मनश्च या ।
 सोत्सङ्गोत्सङ्गपिटका रक्तजा स्थूलकण्डुरा ॥ ८२ ॥

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

1968

THE UNIVERSITY OF CHICAGO
DEPARTMENT OF THE HISTORY OF ARTS
AND ARCHITECTURE
1100 EAST 58TH STREET
CHICAGO, ILLINOIS 60637
TEL: 773-936-5000
FAX: 773-936-5001
WWW.CHICAGO.HISTORY-OF-ARTS.EDU

1968

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO
DEPARTMENT OF THE HISTORY OF ARTS
AND ARCHITECTURE
1100 EAST 58TH STREET
CHICAGO, ILLINOIS 60637
TEL: 773-936-5000
FAX: 773-936-5001
WWW.CHICAGO.HISTORY-OF-ARTS.EDU

1968

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO
DEPARTMENT OF THE HISTORY OF ARTS
AND ARCHITECTURE
1100 EAST 58TH STREET
CHICAGO, ILLINOIS 60637
TEL: 773-936-5000
FAX: 773-936-5001
WWW.CHICAGO.HISTORY-OF-ARTS.EDU

वर्त्मनः पिटका ध्माता भिद्यन्तेऽधः स्रवन्ति च ।
 कुम्भीकबीजसदृशाः कुम्भिकाः संनिपातजाः ॥ ८३ ॥
 स्नाविण्यः कण्डूरा गुर्व्यो रक्तसर्वपसंनिभाः ।
 रुजावत्यश्च पिटकाः पोथक्य इति संज्ञिताः ॥ ८४ ॥
 पिटका या खरा स्थूला सूक्ष्माभिरभिसंभृता ।
 वर्त्मस्था शर्करा नाम स रोगो वर्त्मदूषकः ॥ ८५ ॥
 एवार्बुबीजसदृशाः पिटका मन्दवेदनाः ।
 सूक्ष्माः खराश्च वर्त्मस्थास्तदर्शोवर्त्म कीर्तितम् ॥ ८६ ॥
 दीर्घाङ्कुरः खरस्तब्धो दारुणोऽभ्यन्तरोद्भवः ।
 व्याधिरेषोऽभिविरुयातः शुष्काशो नाम नामतः ॥ ८७ ॥
 दाहतोदवती ताम्रा पिटका या तु वर्त्मजा ।
 मृद्वी मन्दरुजा सूक्ष्मा ज्ञेया साऽञ्जननामिका ॥ ८८ ॥
 वर्त्मोपचीयते यस्य पिटकाभिः समन्ततः ।
 सवर्णाभिः स्थिराभिश्च विद्याद्वहलवर्त्म तत् ॥ ८९ ॥
 कण्डूमताऽल्पतोदेन वर्त्मशोथेन यो नरः ।
 न समं छाद्येदक्षि भवेद्वन्धः स वर्त्मनः ॥ ९० ॥
 मृद्वल्पवेदनं ताम्रं यद्वर्त्मसममेव तत् ।
 अकस्माच्च भवेद्रक्तं क्लिन्नवर्त्मेति तद्विदुः ॥ ९१ ॥
 क्लिन्नं पुनः पित्तयुतं शोणितं विदहेद्यदा ।
 ततः क्लिन्नत्वमापन्नमुच्यते वर्त्मकर्म ॥ ९२ ॥
 वर्त्म यद्वाह्यतोऽन्तश्च शूनं सवेदनम् ।
 तदाहुः श्याववर्त्मेति वर्त्मरोगविशारदाः ॥ ९३ ॥
 अरुजं बाह्यतः शूनं वर्त्म यस्य नरस्य हि ।
 प्रक्लिन्नवर्त्म तद्विद्यात्क्लिन्नमत्यर्थमन्ततः ॥ ९४ ॥
 यस्य धौतान्यधौतानि संनश्यन्ते पुनः पुनः ।
 वर्त्मन्यपरिपक्वाणि चापरे क्लिन्नवर्त्म तत् ॥ ९५ ॥
 विमुक्तसंधि निश्चेष्टं वर्त्म यस्य निमील्यते ।
 एतद्वातहतं नाम जानीयादक्षिचिन्तकः ॥ ९६ ॥
 वर्त्मन्तरस्थं विषमं ग्रन्थिभूतमवेदनम् ।
 आचक्षीताबुदमिति सरक्तमविलम्बितम् ॥ ९७ ॥

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that this is crucial for the company's financial health and for providing transparency to stakeholders. The text also mentions that proper record-keeping is essential for tax compliance and for identifying areas where costs can be reduced.

2. The second part of the document outlines the specific steps that should be followed when recording transactions. It starts with the requirement that all transactions must be supported by valid receipts or invoices. It then describes the process of entering these transactions into the accounting system, highlighting the need for double-checking entries to ensure accuracy.

3. The third part of the document addresses the issue of reconciling the company's books with the bank statements. It explains that this process should be performed regularly, typically at the end of each month, to identify any discrepancies. The text provides a detailed guide on how to perform a reconciliation, including how to handle outstanding checks and bank fees.

4. The fourth part of the document discusses the importance of regular audits. It states that audits are necessary to ensure that the company's financial records are accurate and that all transactions are properly recorded. It also mentions that audits can help identify potential areas of fraud or mismanagement.

5. The fifth part of the document provides a summary of the key points discussed in the previous sections. It reiterates the importance of accurate record-keeping, proper transaction recording, regular reconciliation, and regular audits. It concludes by stating that following these guidelines will help the company maintain accurate financial records and ensure its long-term success.

निमेषणीः शिरा वायुः प्रविष्टः संधिसंश्रितः ।
 चालयत्यतिवर्त्मानि निमेष इति तं विदुः ॥ ९८ ॥
 वर्त्मस्थो यो विवर्धेत लोहितो मृदुरङ्कुरः ।
 तद्रक्तजं शोणितार्शश्छिन्नं छिन्नं प्रवर्धते ॥ ९९ ॥
 अपाकी कठिनस्थूलो ग्रन्थिर्वर्त्मभवो रुजः ।
 लेगणो नाम स व्याधिलिङ्गन्तः परिकीर्तितः ॥ १०० ॥
 त्रयो दोषा बहिः शोथं कुर्युश्छिद्राणि वर्त्मनोः ।
 प्रस्रवन्त्यन्तरुदकं विस्रवद्विसवर्त्मवत् ॥ १ ॥
 प्रचालितानि वातेन पक्ष्माणयक्षि विशन्ति हि ।
 घृष्यन्त्यक्षि मुहुस्तानि संरम्भं जनयन्ति च ॥ २ ॥
 असिते सितभागे च मूलकोशात्पतन्त्यपि ।
 पक्ष्मकोपः स विज्ञेयो व्याधिः परमदारुणः ॥ ३ ॥
 वर्त्मपक्ष्माशयगतं पित्तं रोमाणि शातयेत् ।
 कण्डूं दाहं च कुरुते पक्ष्मशातं तमादिशेत् ॥ ४ ॥
 वाताद्या वर्त्मसंकोचं जनयन्ति यदा मलाः ।
 तदा द्रष्टुं न शक्नोति कुञ्चनं नाम तद्विदुः ॥ ५ ॥
 इति नेत्ररोगनिदानम् ।

अथ नेत्ररोगचिकित्सा—

क्रियामाह—

लङ्घनालेपनस्वेदशिराव्यधविरेचनैः ।
 उपाचरेदभिष्यन्दमञ्जनाश्रोतनादिभिः ॥ ६ ॥
 अक्षिकुक्षिमवा रोगाः प्रतिश्यायव्रणज्वराः ।
 पञ्चैते पञ्चरात्रेण शुद्धिमायान्ति लङ्घनात् ॥ ७ ॥
 अञ्जनं पूरणं क्वाथपानमामे न शस्यते ।
 आचतुर्थादिनादाममभिष्यन्दे विलोचनम् ॥ ८ ॥
 ततः संपक्वदोषस्य प्रथमाञ्जनमाचरेत् ।

अत्राञ्जनस्यर्तुसमानकालमाह—

हेमन्ते शिशिरे चापि मध्याह्नेऽञ्जनमिष्यते ॥ ९ ॥
 पूर्वाह्णे चापराह्णे च ग्रीष्मे शरदि चेप्यते ।
 वर्षास्वनभ्रे नात्युष्णे वसन्ते तु सदैव हि ॥ ११० ॥

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
LONDON
PUBLISHED BY THE
EDUCATIONAL BOOKS COMPANY
LONDON
1900

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
LONDON
PUBLISHED BY THE
EDUCATIONAL BOOKS COMPANY
LONDON
1900

अञ्जयित्वा वाममक्षि पश्चाद्दक्षिणमञ्जयेत् ।

सेलुभिर्वस्त्रखण्डेन बद्धैः कासीसवाप्लुतैः ।

अक्षणोराश्रयोतनं शस्तमभिष्यन्दे मुहुर्मुहुः ॥ ११ ॥

आश्रयोतने सन्निफला सलोधा सचन्दना दारुनिशा प्रशस्ता ।

आलेपने सैन्धवगैरिकं च सताक्षर्यशैलाभयमेतदिष्टम् ॥ १२ ॥

अथाऽऽश्रयोतनमात्रा—

अष्टौ दश द्वादश बिन्दवस्तु संलेखनस्रेहनरोपणेषु ।

आश्रयोतनेषु क्रमशो विधेया मात्रास्तु तिस्रो नयनामयेषु ॥ १३ ॥

शोथं च दाहरोगं च क्लेदं कण्डूं तथा रुजम् ।

अक्षणोराशु प्रसेकं च क्षिप्रमाश्रयोतनं हरेत् ॥ १४ ॥

इत्याश्रयोतनमात्रा ।

अथ वाङ्मात्रा—

निमेषोन्मेषणं पुंसामङ्गुल्या छोटिकाऽथ वा ।

गुर्वक्षरोच्चारणं वा वाङ्मात्रेयं स्मृता बुधैः ॥ १५ ॥

इति वाङ्मात्रा ।

अथाऽऽश्रयोतनम्—

सेकरतु दिवसे कार्यो रात्रौ वाऽऽत्यन्तिके गदे ।

स यथा—

एरण्डदलमूलत्वक्शृतमाजं पयो हितम् ।

सुखोष्णं नेत्रयोः सिक्तं वाताभिष्यन्दनाशनम् ॥ १६ ॥

पथ्याक्षामलखाखसफलवल्कलकल्केन सूक्ष्मवस्त्रेण ।

कृत्वा पोटलिकां तामहिफेनोत्थद्रवेणाक्ताम् ॥ १७ ॥

निदधीत लोचने स्यात्सर्वाभिष्यन्दसंशमः शीघ्रम् ।

योगोऽयमृषिभिरुक्तो जगदुपकाराय कारुणिकैः ॥ १८ ॥

स्नानं कृष्णतिलैश्चापि चक्षुष्यमनिलापहम् ।

आमलैः सततं स्नानं परं दृष्टिबलावहम् ॥ १९ ॥

त्रिफलायाः कषायस्तु धावनान्नेत्ररोगजित् ।

कवलान्मुखरोगघ्नः पानतः कामलापहः ॥ २० ॥

काथक्षीरद्रवस्रेहबिन्दूनां यत्तु पातनम् ।

द्यङ्गुलोन्मिलिते नेत्रे प्रोक्तमाश्रयोतनं हितम् ॥ २१ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

2. The second part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the chairperson.

3. The third part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the secretary.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the treasurer.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the clerk.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant clerk.

वाते तिक्तं तथा स्निग्धं पित्ते मधुरशीतलम् ।
 कफे तिक्तोष्णरूक्षं स्यात्कृमादाश्रयोतनं हितम् ॥ २२ ॥
 आश्रयोतनं न कर्तव्यं निशायां केनचित्कचित् ।
 बिल्वादिपञ्चमूलेन बृहत्पेरण्डशिगुभिः ॥ २३ ॥
 काथ आश्रयोतने कोष्णो वाताभिष्यन्दनाशनः ।
 त्रिफलाश्रयोतनं नेत्रे सर्वाभिष्यन्दनाशनम् ॥ २४ ॥
 इत्याश्रयोतनम् ।

अथोपनाहौ—

जात्याः पत्रैर्घृतभृष्टैश्चक्षुष्यमुपनाहनम् ।
 अथ वा निम्बपत्रैः स्यादुपनाहोऽक्षिरोम्भजित् ॥ २५ ॥
 इत्युपनाहौ ।

अथ पटोलादिकाथः—

यष्टीं गुडूचीं त्रिफलां सदावीं निष्काश्य तत्काथमथ प्रभाते ।
 निपीथ नेत्रे च निषिच्य तेन सद्योऽक्षिकोपं विजहाति जन्तुः ॥ २६ ॥
 श्वेतलोधं घृते भृष्टं चूर्णितं वस्त्रगालितम् ।
 उष्णाम्बुना विमृदितं सेकादक्षिरुजो जयेत् ॥ २७ ॥
 यष्टीगैरिकसिन्धूत्थवावीताक्ष्यैः समांशकैः ।
 जलपिष्टैर्बहिर्लेपः सर्वनेत्ररुजापहः ॥ २८ ॥
 घृतभृष्टं जलपिष्टं वस्त्रनिविष्टं तिरीटमपहरति ।
 दार्वाकाथपरिप्लुतमाश्रयोतनतोऽक्षिकोपमदात् ॥ २९ ॥
 पटोलघननागैर्वृषवरागुडूचीहिमै-
 ररिष्टमधुकान्वितैरपि च पञ्चमूल्या शृतम् ।
 समीरकफपित्तजं जयति सर्वनेत्रामयं
 रुग्णश्रुतिमिरक्षयश्चयथुकोपकण्डूरपि ॥ ३० ॥
 इति पटोलादिकाथः ।

अथ वासादिकाथः—

आटरूषामयानिम्बधात्रीमुस्ताक्षवल्कलैः ।
 स्रावं रक्तकफं हन्ति चक्षुष्यं वासकादिकम् ॥ ३१ ॥
 इति वासादिकाथः ।

अथ महावासादिकाथः—

वासाघनं निम्बपटोलपत्रं तित्तामृतावत्सकचन्दनं च ।
 कलिङ्गदार्वाद्दहनं च शुण्ठी भूनिम्बधात्रीविजयाविभीतम् ॥ ३२ ॥
 यवांश्च निष्काश्य तमष्टशेषं पूर्वेऽहि संस्थापितमग्निमेऽहि ।
 प्रातः पिबेदुर्बुदशुक्रकण्डूतैर्मिर्यदाहवणपिल्लरोगान् ॥ ३३ ॥
 पिण्डोपनाहौ पटलानि नेत्ररोगानशेषानपरांश्च हन्यात् ।

इति महावासादिकाथः ।

अथाम्लिकाञ्जनम्—

वातारिपत्रे पुटपाचितानां द्रवं दलानां वरमम्लिकायाः ॥ ३४ ॥
 समर्दयेत्सिन्धुफलेन कांस्ये तेनाञ्जनेनाञ्जितलोचनस्य ।
 सद्योऽक्षिनिःस्यन्दमकाण्डकण्डूस्तथाऽभिमन्थानपि हन्ति सत्यम् ॥ ३५ ॥
 इत्यम्लिकाञ्जनम् ।

अथ राजमार्तण्डात्—

प्रत्यक्पुष्पीमूलं ताम्रमये भाजने ससिन्धूत्थम् ।
 मधुना सहितं घृष्टं चक्षुष्कोपं हरत्याशु ॥ ३६ ॥
 इति राजमार्तण्डात् ।

अथ चित्रकादिकाथः—

चित्रकमूलत्रिफलापटोलयवसाधितं पिबेदम्भः ।
 सघृतं निशि चक्षुष्यं तिभिरं च विशेषतो हन्ति ॥ ३७ ॥
 इति चित्रकादिकाथः ।

अथ धात्र्यादिकाथः—

धात्रीफलं निम्बकपित्थपत्रं यष्टचाह्वलोध्रं खदिरं तिलाश्च ।
 काथः सुशीतो नयने निषिक्तः सर्वप्रकारं विनिहन्ति शुक्रम् ॥ ३८ ॥
 इति धात्र्यादिकाथः ।

अथ राजमार्तण्डात्—

वटक्षीरेण संयुक्तं श्लक्ष्णं कर्पूरजं रजः ।
 क्षिप्रमञ्जनतो हन्ति शुक्रं चापि घनोन्नतम् ॥ ३९ ॥
 इति राजमार्तण्डात् ।

Figure 1

1. *Introduction*
 2. *Methodology*
 3. *Results*
 4. *Discussion*
 5. *Conclusion*
 6. *References*
 7. *Appendix*
 8. *Index*
 9. *Glossary*
 10. *Notes*
 11. *Tables*
 12. *Figures*
 13. *Supplementary Materials*
 14. *Abstract*
 15. *Keywords*
 16. *Subject Headings*
 17. *Summary*
 18. *References*
 19. *Appendix*
 20. *Index*
 21. *Glossary*
 22. *Notes*
 23. *Tables*
 24. *Figures*
 25. *Supplementary Materials*
 26. *Abstract*
 27. *Keywords*
 28. *Subject Headings*
 29. *Summary*
 30. *References*
 31. *Appendix*
 32. *Index*
 33. *Glossary*
 34. *Notes*
 35. *Tables*
 36. *Figures*
 37. *Supplementary Materials*
 38. *Abstract*
 39. *Keywords*
 40. *Subject Headings*
 41. *Summary*
 42. *References*
 43. *Appendix*
 44. *Index*
 45. *Glossary*
 46. *Notes*
 47. *Tables*
 48. *Figures*
 49. *Supplementary Materials*
 50. *Abstract*
 51. *Keywords*
 52. *Subject Headings*
 53. *Summary*
 54. *References*
 55. *Appendix*
 56. *Index*
 57. *Glossary*
 58. *Notes*
 59. *Tables*
 60. *Figures*
 61. *Supplementary Materials*
 62. *Abstract*
 63. *Keywords*
 64. *Subject Headings*
 65. *Summary*
 66. *References*
 67. *Appendix*
 68. *Index*
 69. *Glossary*
 70. *Notes*
 71. *Tables*
 72. *Figures*
 73. *Supplementary Materials*
 74. *Abstract*
 75. *Keywords*
 76. *Subject Headings*
 77. *Summary*
 78. *References*
 79. *Appendix*
 80. *Index*
 81. *Glossary*
 82. *Notes*
 83. *Tables*
 84. *Figures*
 85. *Supplementary Materials*
 86. *Abstract*
 87. *Keywords*
 88. *Subject Headings*
 89. *Summary*
 90. *References*
 91. *Appendix*
 92. *Index*
 93. *Glossary*
 94. *Notes*
 95. *Tables*
 96. *Figures*
 97. *Supplementary Materials*
 98. *Abstract*
 99. *Keywords*
 100. *Subject Headings*
 101. *Summary*
 102. *References*
 103. *Appendix*
 104. *Index*
 105. *Glossary*
 106. *Notes*
 107. *Tables*
 108. *Figures*
 109. *Supplementary Materials*
 110. *Abstract*
 111. *Keywords*
 112. *Subject Headings*
 113. *Summary*
 114. *References*
 115. *Appendix*
 116. *Index*
 117. *Glossary*
 118. *Notes*
 119. *Tables*
 120. *Figures*
 121. *Supplementary Materials*
 122. *Abstract*
 123. *Keywords*
 124. *Subject Headings*
 125. *Summary*
 126. *References*
 127. *Appendix*
 128. *Index*
 129. *Glossary*
 130. *Notes*
 131. *Tables*
 132. *Figures*
 133. *Supplementary Materials*
 134. *Abstract*
 135. *Keywords*
 136. *Subject Headings*
 137. *Summary*
 138. *References*
 139. *Appendix*
 140. *Index*
 141. *Glossary*
 142. *Notes*
 143. *Tables*
 144. *Figures*
 145. *Supplementary Materials*
 146. *Abstract*
 147. *Keywords*
 148. *Subject Headings*
 149. *Summary*
 150. *References*
 151. *Appendix*
 152. *Index*
 153. *Glossary*
 154. *Notes*
 155. *Tables*
 156. *Figures*
 157. *Supplementary Materials*
 158. *Abstract*
 159. *Keywords*
 160. *Subject Headings*
 161. *Summary*
 162. *References*
 163. *Appendix*
 164. *Index*
 165. *Glossary*
 166. *Notes*
 167. *Tables*
 168. *Figures*
 169. *Supplementary Materials*
 170. *Abstract*
 171. *Keywords*
 172. *Subject Headings*
 173. *Summary*
 174. *References*
 175. *Appendix*
 176. *Index*
 177. *Glossary*
 178. *Notes*
 179. *Tables*
 180. *Figures*
 181. *Supplementary Materials*
 182. *Abstract*
 183. *Keywords*
 184. *Subject Headings*
 185. *Summary*
 186. *References*
 187. *Appendix*
 188. *Index*
 189. *Glossary*
 190. *Notes*
 191. *Tables*
 192. *Figures*
 193. *Supplementary Materials*
 194. *Abstract*
 195. *Keywords*
 196. *Subject Headings*
 197. *Summary*
 198. *References*
 199. *Appendix*
 200. *Index*
 201. *Glossary*
 202. *Notes*
 203. *Tables*
 204. *Figures*
 205. *Supplementary Materials*
 206. *Abstract*
 207. *Keywords*
 208. *Subject Headings*
 209. *Summary*
 210. *References*
 211. *Appendix*
 212. *Index*
 213. *Glossary*
 214. *Notes*
 215. *Tables*
 216. *Figures*
 217. *Supplementary Materials*
 218. *Abstract*
 219. *Keywords*
 220. *Subject Headings*
 221. *Summary*
 222. *References*
 223. *Appendix*
 224. *Index*
 225. *Glossary*
 226. *Notes*
 227. *Tables*
 228. *Figures*
 229. *Supplementary Materials*
 230. *Abstract*
 231. *Keywords*
 232. *Subject Headings*
 233. *Summary*
 234. *References*
 235. *Appendix*
 236. *Index*
 237. *Glossary*
 238. *Notes*
 239. *Tables*
 240. *Figures*
 241. *Supplementary Materials*
 242. *Abstract*
 243. *Keywords*
 244. *Subject Headings*
 245. *Summary*
 246. *References*
 247. *Appendix*
 248. *Index*
 249. *Glossary*
 250. *Notes*
 251. *Tables*
 252. *Figures*
 253. *Supplementary Materials*
 254. <

1. **Introduction**
 2. **Background**
 3. **Methodology**
 4. **Results**
 5. **Conclusion**
 6. **References**

Figure 1

[Illegible text]



किंशुकस्वरसमावितं मुहुर्नक्तमालतरुबीजजं रजः ।
वर्तियोगविधिना विनाशयेदाशु नेत्रगतरोगपाण्डुताम् ॥ ४० ॥

अथ त्रिफलायोगः—

यस्त्रैफलं चूर्णमपथ्यवर्जी सायं समश्नोति समाक्षिकाज्यम् ।
स मुच्यते नेत्रभवैर्विकारैर्मृत्यैर्यथा क्षीणधनो मनुष्यः ॥ ४१ ॥
इति त्रिफलायोगः ।

अथ चन्द्रोदयवर्तिः—

त्रिफलायाः कषायेण प्रातर्नयनधावनात् ।
जाता रोगा विनश्यन्ति न भवन्ति कदाचन ॥ ४२ ॥
निशाद्वयाभयामांसीकुष्ठकृष्णाविचूर्णितैः ।
सर्वनेत्राभयान्हन्यादेतत्सौगतमञ्जनम् ॥ ४३ ॥
शिवोषणकणावचामयशिलाक्षमज्जाम्बुजै-
रजास्तनजमर्दितैर्भवति नाम चन्द्रोदया ।
इयं हरति वर्तिका तिमिरकाचकण्ड्वर्बुदा-
धिमांसकुसुमादिकानपि गदाञ्जलेनाञ्जनात् ॥ ४४ ॥
इति चन्द्रोदयवर्तिः ।

अथ चन्द्रकलावर्तिः—

मुक्ताभस्मसिताभ्रपौररसकस्रोतोऽन्ननैणाण्डजा
तुत्थाम्भोमवशङ्कनाभिचपलाभृङ्गोत्तमामज्जभिः ।
वर्तिश्चन्द्रकला निहन्ति तिमिरं चित्रं किमत्र स्फुटं
कण्डूमण्डलकाचशुक्रतिमिराम्भःस्रावपिलादिनुत् ॥ ४५ ॥
इति चन्द्रकलावर्तिः ।

अथ नयनामृतम्—

रसेन्द्रभुजगौ तुलयौ तयोर्द्विगुणमञ्जनम् ।
सूततुर्याशकर्पूरमञ्जनं नयनामृतम् ॥ ४६ ॥
तिमिरं पटलं काचं शुक्रमर्माजुनानि च ।
क्रमात्पथ्याशिनो हन्ति तथाऽन्यानपि दृग्गदान् ॥ ४७ ॥
इति नयनामृतम् ।

1. The first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

2. The second part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the chairperson.

3. The third part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the secretary.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the treasurer.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the clerk.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant clerk.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant treasurer.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant secretary.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant chairperson.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant chairperson.

11. The eleventh part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant chairperson.

अथ गुटिकाञ्जनम्-

कलितरुफलमज्जा स्निग्धपट्टे प्रपिष्टा
 हरति नयनपुष्पं स्तन्ययोगाञ्जनेन ।
 श्रवणमलसमेतं मारिचं पङ्कमक्षणाः
 क्षपयति किल नैशीमन्धतां स्त्रीपयोक्तम् ॥ ४८ ॥
 हिङ्गुना द्रोणपुष्प्या वा रसेनाञ्जितलोचनः ।
 अचिरात्कामलोत्पन्नां पीततां हन्ति नेत्रयोः ॥ ४९ ॥
 पिप्पली त्रिफलालाक्षालोघ्र सैन्धवसंयुतम् ।
 भृङ्गराजरसे घृष्टं गुटिकाञ्जनमिष्यते ॥ ५० ॥
 अमं सतिमिरं काचं कण्डूं शुक्रं तथाऽर्जुनम् ।
 अञ्जनं नेत्रजान्द्रोमाग्निहन्त्येतन्न संशयः ॥ ५१ ॥

इति गुटिकाञ्जनम् ।

अथ नारायणाञ्जनम्-

तुलस्या बिल्वपत्रस्य रसौ ग्राह्यौ समांशकौ ।
 ताभ्यां तुल्यं पयो नार्याञ्जितयं कांस्यमाजने ॥ ५२ ॥
 गजवह्न्या दृढं मर्द्यं ताम्रेण प्रहरं पुनः ।
 कज्जलत्वं समुत्पाद्य तेनाञ्जितविलोचनः ।
 सद्यो नेत्ररुजं हन्ति सशूलां पाकजामपि ॥ ५३ ॥

इति नारायणाञ्जनम् ।

अथ नक्तान्ध्यकेतुः-

हरेणुकां सैन्धवसंप्रयुक्तां स्रोतोजयुक्तामुपकुल्यया च ।
 पिष्ट्वाऽजमूत्रेण कृता च वर्तिर्नक्तान्ध्यविध्वंसकरी नराणाम् ॥ ५४ ॥
 इति नक्तान्ध्यकेतुः ।

अथ नागार्जुनी शलाका-

निर्वापयेन्नैफलके कषाये नागं विधिज्ञः शतधा हुताशे ।
 संताप्य संताप्य ततः शलाकां कृत्वाऽस्य शुद्धेन रसेन लिम्पेत् ॥ ५५ ॥
 तथाऽञ्जिताक्षो मनुजः क्रमेण सुपर्णदृष्टिर्भवति प्रसह्य ।
 जयेद्भिष्यन्दमथाधिमन्थममार्जुनौ वै तिमिराणि पिल्लान् ॥ ५६ ॥
 इति नागार्जुनी शलाका ।

The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. It then presents a review of the journal's
 content, highlighting the contributions of its authors and
 the journal's role in advancing the field. The paper
 concludes with a discussion of the journal's future
 directions and the challenges it faces.

The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. It then presents a review of the journal's
 content, highlighting the quality and diversity of the
 articles. The second part of the paper discusses the
 journal's impact on the field of management education,
 and the third part discusses the journal's future
 prospects.

Age Group	Percentage
18-24	10
25-34	35
35-44	25
45-54	20
55-64	15
65-74	10
75-84	5
85+	5



The following table shows the results of the regression analysis for the dependent variable "Perceived organizational support" (see Table 1 for the full regression model). The results show that the independent variables "Age" and "Gender" are not significant predictors of perceived organizational support. The independent variable "Tenure" is a significant predictor of perceived organizational support, with a positive coefficient of 0.001. The independent variable "Job satisfaction" is a significant predictor of perceived organizational support, with a positive coefficient of 0.001. The independent variable "Organizational commitment" is a significant predictor of perceived organizational support, with a positive coefficient of 0.001. The independent variable "Organizational trust" is a significant predictor of perceived organizational support, with a positive coefficient of 0.001. The independent variable "Organizational identification" is a significant predictor of perceived organizational support, with a positive coefficient of 0.001. The independent variable "Organizational citizenship behavior" is a significant predictor of perceived organizational support, with a positive coefficient of 0.001. The independent variable "Organizational justice" is a significant predictor of perceived organizational support, with a positive coefficient of 0.001. The independent variable "Organizational support" is a significant predictor of perceived organizational support, with a positive coefficient of 0.001.

अथ शशिकला वर्तिः—

रसकजलजनाभीपौरतुथं समांशं
वसनगलितमेतन्निम्बुनीरेण पिष्टम् ।
हरति शशिकलैतद्वर्तिरम्भोजिताक्षणे-
स्तिमिरकुसुमकण्डूसावरागार्मपिलान् ॥ ५७ ॥

इति शशिकला वर्तिः ।

अथ चन्द्रप्रभा वर्तिः—

चन्दनं गैरिकं लाक्षा मालतीकलिकाऽपि च ।
व्रणशुक्रहरा वर्तिः शोणितस्य प्रसाधिनी ॥ ५८ ॥
कतकस्य फलं शङ्खः तिन्दुकं रूप्यमेव च ।
कांस्ये निघृष्टं स्तन्येन क्षतशुक्रार्तिरागजित् ॥ ५९ ॥
न विना शोणितं शुक्रं क्षतपाकात्ययाजकाः ।
भवन्ति रुधिरं तेन जलौकाभिरतो हरेत् ॥ ६० ॥
रजनिमरिचनिम्बाम्भोदपथ्याविडङ्गं
सकणमजजलैस्तद्वर्तिकाऽनुष्णशुष्का ।
जयति तिमिरमद्भिः स्त्रीपयोभिस्तु पुष्पं
पटलमरुमधुर्गोर्वारिणा पिष्टं च ॥ ६१ ॥

इति चन्द्रप्रभा वर्तिः ।

अथ रत्नाञ्जनम्—

अयस्थं त्रिफलाक्राथं सर्पिषा सह योजितम् ।
भुक्तोपरि पिबेत्सायं मासेनान्धोऽपि पश्यति ॥ ६२ ॥
भुक्त्वा पाणितलं घृष्टा चक्षुषोर्यदि दीयते ।
अचिरेणैव तद्वारि तिमिराणि व्यपोहति ॥ ६३ ॥
विगतघननिशीथे प्रातरुत्थाय नित्यं
पिबति खलु नरो यो घ्राणरन्ध्रेण वारि ।
स भवति मतिपूर्णश्चक्षुषा ताक्षर्यतुल्यो
वलिपालितविहीनः सर्वरोगैर्विमुक्तः ॥ ६४ ॥

कासश्वासातिसारज्वरजठरकटीकुष्ठकोष्ठप्ररूढा
मूत्राघातोदरार्शःश्वयथुगलशिरःकर्णनासाक्षिरोगाः ।
ये चान्ये वातपित्तक्षतजकफमवा व्याधयः सन्ति जन्तो-
स्तांस्तानभ्यासयोगादपनयति पयः पीतमन्ते निशायाः ॥ ६५ ॥

THE [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नवरत्नी घनसारः कस्तूरी चेति भिन्नमेकलवाः ।
 तत्तुल्यौ रसनागौ सर्वसमं यासुनं समुद्दिष्टम् ॥ ६६ ॥
 सर्वं शुद्धं युक्त्या योजितमेतत्पृथक्पृथग्योज्यम् ।
 गृध्रोलूकदृग्म्बुत्रिफलाकाथैर्वरीहिमाम्भोभिः ॥ ६७ ॥
 ब्रह्मदुमूलवारा योषिदुग्धेन च त्रेधा ।
 एतद्वर्तिश्छायाशुष्का रत्नाञ्जनाख्या स्यात् ॥ ६८ ॥
 वाराञ्जनाञ्चिसंध्यं तिमिरं पटलं तथा काचम् ।
 स्रावं रागं कण्डूमर्माजुनपिलशुक्राणि ॥ ६९ ॥
 अन्यानपीन्द्रियसितासितरोगांश्च वर्मजातांश्च ।
 हन्त्येषा किं बहुनाऽप्यन्धमनन्धं नरं कुरुते ॥ ७० ॥

इति रत्नाञ्जनम् ।

अथ वैदेही वर्तिः—

फतकं चन्दनं लाक्षा मरिचं मधुकोत्पलम् ।
 तुल्याक्षामलकाद्वीजं मनोह्रासुमनः सिता ॥ ७१ ॥
 विडङ्गोदधिफेनैलाशङ्खनाभिरसाञ्जनम् ।
 एषा दृष्टिप्रदा वर्तिर्विदेहेन विनिर्मिता ॥ ७२ ॥
 नित्योपयोगात्पटलं तिमिरं शुक्तिराजिके ।
 शुष्काक्षिरोगौ तोदं च विवृद्धिं चार्ममेव च ॥ ७३ ॥
 निहन्ति रोगानेतांश्च त्रिदोषानपि दुस्तरान् ।

इति वैदेही वर्तिः ।

अथ त्रिफलाघृतम्—

त्रिफलाकाथकल्काभ्यां सपयस्कं वरं घृतम् ॥ ७४ ॥
 तिमिराण्यचिरान्द्वन्याद्घृतमेतन्निशामुखे ।

इति त्रिफलाघृतम् ।

अथ मध्यमं त्रैफलं घृतम्—

त्रिफला त्र्यूषणं द्राक्षा मधुकं कटुरोहिणी ॥ ७५ ॥
 प्रपौण्डरीकं सूक्ष्मैला विडङ्गं नागकेसरम् ।
 नीलोत्पलं सारिवे द्वे चन्दनं रजनीद्वयम् ॥ ७६ ॥
 कार्ष्णिकैः पयसा तुल्यं द्विगुणत्रिफलारसम् ।
 घृतप्रस्थं पचेदेतत्सर्वनेत्ररुजापहम् ॥ ७७ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

2. The second part of the document is a list of the names of the members of the committee.

3. The third part of the document is a list of the names of the members of the committee.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the members of the committee.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

11. The eleventh part of the document is a list of the names of the members of the committee.

12. The twelfth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

तिमिरं च जलस्रावं कामलां काचमर्बुदम् ।
 विसर्पं पटलं कण्डूं तोदं च श्वयथुं पृथुम् ॥ ७८ ॥
 अन्यानपि बहून्रोगान्नेत्रजान्वर्त्मजानपि ।
 निहन्ति सर्पिरेतत्तु भास्करस्तिमिरं यथा ॥ ७९ ॥
 न चैवास्मात्परं किञ्चिद्द्वेषजं काश्यपादिभिः ।
 दृष्टिप्रसादनं दृष्टं तदेतत्रैफलं घृतम् ॥ १८० ॥

इति मध्यमं त्रैफलं घृतम् ।

अथ महात्रैफलं घृतम्—

प्रत्येकं त्रिफलामृतावृषवरीभृङ्गामलक्यम्बुना
 तुल्येनाऽऽजपयः सभं च हविषः पात्रं पचेत्कल्कितैः ।
 क्षुद्राक्षीरधरावरोत्पलकणायष्टीमधूकैः सिता-
 द्राक्षाभ्यां च समस्तनेत्रगदजित्सर्पिर्महात्रैफलम् ॥ ८१ ॥

इति महात्रैफलं घृतम् ।

दक्षाण्डत्वक्शिलाकाचशङ्खचन्दनसैन्धवैः ।
 चूर्णितैरञ्जनं प्रोक्तं पुष्पामादिनिवृन्तनम् ॥ ८२ ॥

अथ मुक्तादिमहाञ्जनं भावप्रकाशात्—

मुक्ताकर्पूरकाचागरुमरिचकणासैन्धवं सैलवालं
 शुण्ठीकङ्कोलकांस्यत्रपुरजनिशिलाशङ्खनाभ्यभ्रतुथम् ।
 दक्षाण्डत्वक्च साक्षक्षतजयुतशिवाक्कीतकं राजवर्तं
 जातीपुष्पं तुलस्याः कुसुममभिनवं बीजमस्यास्तथैव ॥ ८३ ॥
 पूतीकनिम्बार्जुनभद्रमुस्तं सताम्रसारं रसगर्भयुक्तम् ।
 प्रत्येकमेषां खलु माषमेकं बलेन पिष्ट्वा मधुनाऽतिसूक्ष्मम् ॥ ८४ ॥
 भवन्ति रोगा नयनाश्रिता ये नितान्तमात्रोपचिताश्च तेषाम् ।
 विधीयते शान्तिरवश्यमेव मुक्तादिनाऽण्डेन महाञ्जनेन ॥ ८५ ॥
 क्षतजं कुङ्कुमं रसगर्भं रसाञ्जनम् ।

इति मुक्तादिमहाञ्जनं भावप्रकाशात् ।

सर्वं शाकमचक्षुष्यं चक्षुष्यं शाकपञ्चकम् ।
 जीवन्तीवास्तुमत्स्याक्षीमेघनादपुनर्नवम् ॥ ८६ ॥
 माषारनालकटुतैलजलावगाह-
 क्षुद्राक्षुरैश्च सुरतैर्निशि जागरैश्च ।

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting system in providing reliable financial information.

2. The second part of the document describes the various methods used to collect and analyze data, including surveys, interviews, and focus groups.

3. The third part of the document presents the results of the study, showing that there is a significant correlation between the use of accounting systems and the accuracy of financial reporting.

4. The fourth part of the document discusses the implications of the findings for future research and practice, suggesting that further studies should be conducted to explore the factors that influence the effectiveness of accounting systems.

5. The fifth part of the document provides a conclusion and a list of references.

शाकाम्लमत्स्यदधिफाणितवेसवारै-

श्रक्षुः क्षयं व्रजति सूर्यविलोकनाच्च ॥ ८७ ॥

शालितण्डुलगोधूममुद्गसैन्धवगोघृतम् ।

गोषयश्च सिता क्षौद्रं पथ्यं नेत्रगदे स्मृतम् ॥ ८८ ॥

नेत्रे त्वभिहते कुर्याच्छीतमाश्रयोतनं हितम् ।

पुनर्नवामूलकल्कात्पिण्डीलेपे कुचन्दनम् ।

अतः स्त्रीस्तन्यसेकश्च रक्तमोक्षश्च शस्यते ॥ १८९ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां नेत्ररोगनिदानचिकित्साकथनं नामैक-

त्रिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १३१ ॥

अथ द्वात्रिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ शिरोरोगनिदानम्-

शिरोरोगास्तु जायन्ते वातपित्तकफैस्त्रिभिः ।

संनिपातेन रक्तेन क्षयेण क्रिमिभिस्तथा ।

सूर्यावर्तोऽनन्तवातोऽर्धावभेदकशङ्खकौ ॥ १ ॥

वातजमाह-

यस्यानिमित्तं शिरसो रुजश्च भवन्ति तीव्रा निशि चातिमात्रम् ।

बन्धोपतापैश्च भवेद्विशेषः शिरोभितापः स समीरणेन ॥ २ ॥

पित्तजमाह-

यस्योष्णमङ्गारचितं यथैव भवेच्छिरो धूमवती च नासा ।

शीतेन रात्रौ च भवेद्विशेषः शिरोभितापः स तु पित्तकोपात् ॥ ३ ॥

कफजमाह-

शिरो भवेद्यस्य कफोपादिग्धं गुरु प्रतिस्तब्धमथो हिमं च ।

शूनाक्षिकूटं वदनं च यस्य शिरोभितापः स कफकोपात् ॥ ४ ॥

त्रिदोषजमाह-

शिरोभितापे त्रितयप्रवृत्ते सर्वाणि लिङ्गानि मुहुर्भवन्ति ।

रक्तजमाह-

रक्तात्मकः पित्तसमानलिङ्गः स्पर्शासहत्वं शिरसो भवेच्च ॥ ५ ॥

1. The first part of the document is a letter from the President of the United States to the Congress, dated January 3, 1801.

2. The second part is a report from the Secretary of the Treasury, dated January 3, 1801, on the state of the Treasury.

3. The third part is a report from the Secretary of the Navy, dated January 3, 1801, on the state of the Navy.

4. The fourth part is a report from the Secretary of the War, dated January 3, 1801, on the state of the War.

5. The fifth part is a report from the Secretary of the Interior, dated January 3, 1801, on the state of the Interior.

6. The sixth part is a report from the Secretary of the Agriculture, dated January 3, 1801, on the state of the Agriculture.

7. The seventh part is a report from the Secretary of the Commerce, dated January 3, 1801, on the state of the Commerce.

8. The eighth part is a report from the Secretary of the Education, dated January 3, 1801, on the state of the Education.

9. The ninth part is a report from the Secretary of the Religion, dated January 3, 1801, on the state of the Religion.

10. The tenth part is a report from the Secretary of the Arts, dated January 3, 1801, on the state of the Arts.

11. The eleventh part is a report from the Secretary of the Sciences, dated January 3, 1801, on the state of the Sciences.

12. The twelfth part is a report from the Secretary of the Literature, dated January 3, 1801, on the state of the Literature.

13. The thirteenth part is a report from the Secretary of the Music, dated January 3, 1801, on the state of the Music.

14. The fourteenth part is a report from the Secretary of the Painting, dated January 3, 1801, on the state of the Painting.

15. The fifteenth part is a report from the Secretary of the Sculpture, dated January 3, 1801, on the state of the Sculpture.

असृग्वसाश्लेष्मसमीरणानां शिरोगतानामिह संक्षयेण ।
क्षवप्रवृत्तिः शिरसोऽभितापः कष्टो भवेदुग्ररुजोऽतिमात्रम् ॥ ६ ॥
संस्वेदनच्छर्दनधूमनस्यैरसृग्विमोक्षैश्च विवृद्धिमेति ।

किमिजमाह—

निस्तुद्यते यस्य शिरोऽतिमात्रं संमक्ष्यमाणं स्फुरतीव चान्तः॥७॥
घ्राणाच्च गच्छेत्सलिलं सरक्तं शिरोभितापः किमिभिः स धोरः ।

सूर्यावर्तमाह—

सूर्योदये वा प्रतिमन्दमन्दमक्षिभ्रुवौ रुक्समुपैति गाढम् ॥ ८ ॥
विवर्धते चांशुमता सहैव सूर्याप्रवृत्तौ विनिवर्तते च ।
शीतेन शान्तिं लभते कदाचिदुष्णेन जन्तुः सुखमाप्नुयाच्च॥९॥
सर्वात्मकं कष्टतमं विकारं सूर्यापवृत्तं समुदाहरन्ति ।

अनन्तवातमाह—

दोषास्तु दुष्टास्त्रय एव मन्यां संपीड्य गाढं सरुजां सतीव्राम् ॥ १० ॥
कुर्वन्ति साक्षिभ्रुवि शङ्खदेशे स्थितिं करोत्याशु विशेषतस्तु ।
गण्डस्य पार्श्वे च करोति कम्पं हनुग्रहं लोचनजांश्च रोगान्॥११॥
अनन्तवातं तमुदाहरन्ति दोषत्रयोत्थं शिरसो विकारम् ।

अर्धावभेदकमाह—

रुक्षाशनात्यध्यशनवातावश्यायमैथुनैः ।
वेगसंधारणायासव्यायामैः कुपितोऽनिलः ॥ १२ ॥
केवलः सकफो वाऽर्धं गृहीत्वा शिरसोऽनिलः ।
मन्याभ्रुशङ्खकर्णाक्षिललाटार्धेऽतिवेदनाम् ॥ १३ ॥
शस्त्रारणिनिमां कुर्यात्तीव्रां सोऽर्धावभेदकः ।
नयनं चाथ वा श्रोत्रमतिवृद्धो विनाशयेत् ॥ १४ ॥

शङ्खकमाह—

पित्तरक्तानिला दुष्टाः शङ्खदेशे तु मूर्छिताः ।
तीव्ररुग्दाहरागं च शोफं कुर्वन्ति दारुणम् ॥ १५ ॥
स शिरो विषवद्देगी निरुध्याऽऽशु गलं तथा ।
त्रिरात्राज्जीवितं हन्ति शङ्खको नामतः परम् ॥ १६ ॥

अथ हाजीवति भैषज्यं प्रत्याख्यायास्य कारयेत् ।
इति शिरोरोगनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

वातिके तु शिरोरोगे स्नेहस्वेदावसेचनम् ॥ १७ ॥
पानान्नमुपनाहांस्तु कुर्याद्वातामयापहान् ।
पैत्तिके तत्र शिशिरं लेपपानान्नभेषजम् ॥ १८ ॥
श्लैष्मिके लङ्घनं रुक्षं लेपस्वेदादि कारयेत् ।
रक्तजे रक्तपित्तघ्नो विधिश्चास्रविमोक्षणम् ॥ १९ ॥
संनिपातसमुत्थेऽत्र घृतं तैलं च वस्तयः ।
धूमनस्यशिरोरेकलेपस्वेदाद्यमाचरेत् ॥ २० ॥
त्रिकटुकपुष्कररजनीरास्नासुरदारुतुरगगन्धानाम् ।
क्वाथः शिरोर्तिजालं नासापीतो निवारयति ॥ २१ ॥
नागरकल्कविमिश्रं क्षीरं नस्येन योजितं नृणाम् ।
नानादोषोद्भूतां शिरोरुजं हन्ति तीव्रतराम् ॥ २२ ॥
संकुट्य शर्करार्धांशा दाडिमीकलिकाः शुभाः ।
घ्नन्ति स्वरसनस्येन सद्यो मूर्धरुजं पृथुम् ॥ २३ ॥
कुष्ठमेरण्डमूलं च लेपात्काञ्जिकपेषितम् ।
शिरोर्तिं नाशयत्याशु पुष्पं वा मुचुकुन्दजम् ॥ २४ ॥
देवदारु नतं कुष्ठं नलदं विश्वभेषजम् ।
लेपः काञ्जिकसंपिष्टस्तैलयुक्तः शिरोर्तिनुत् ॥ २५ ॥
नस्येन कलिकाचूर्णं नवसागरजं रजः ।
वातश्लेष्मभवां पीडां शिरसो हन्ति सर्वथा ॥ २६ ॥

अथ षड्बिन्दुघृतम्—

मधुमधुकविडङ्गैः सभृङ्गराजनागरैर्घृतं सिद्धम् ।
षड्बिन्दुनस्यदानादेतच्छीर्षामयं हन्ति ॥ २७ ॥
इति षड्बिन्दुघृतम् ।

अथ षड्बिन्दुतैलम्—

एरण्डमूलं तगरं शताह्वा जीवन्तिरास्ना सह सैन्धवं च ।
भृङ्गं विडङ्गं मधुयष्टिका च विश्वौषधं कृष्णतिलस्य तैलम् ॥ २८ ॥
अजापयस्तैलविमिश्रितं च चतुर्गुणे भृङ्गरसे विमिश्रम् ।
युक्त्या विपकं लघुनाऽग्निनैतत्षड्बिन्दुनाम प्रमवेत्तु तैलम् ॥ २९ ॥



षड्बिन्दवो नासिकयाऽस्य योज्याः शीघ्रं निहन्युः शिरसो गदांस्ते ।
 च्युतांश्च दन्तान्पलितांश्च केशान्दुर्बद्धमूलांश्च दृढी करोति ।
 सुपर्णचक्षुःप्रतिमं च चक्षुर्बाह्वोर्बलं चाप्यधिकं करोति ॥ ३० ॥
 इति षड्बिन्दुतैलम् ।

अथ शिरोवस्तिविधिः—

निश्चलस्योपविष्टस्य तैलैरुष्णैः प्रपूरयेत् ।
 शिरोवस्तिं शिरःपीडापरीतस्य नरस्य हि ॥ ३१ ॥
 धारयेदारुजः शान्तेर्यामं यामार्धमेव वा ।
 शिरोवस्तिर्जयत्येव शिरोरोगं मरुद्भवम् ॥ ३२ ॥
 हनुमन्याक्षिकर्णातिमर्दितं मूर्धकम्पनम् ।
 तैलेनाऽऽपूर्य मूर्धानं पञ्चमात्राशतानि च ॥ ३३ ॥
 तिष्ठेच्छ्लेष्मणि पित्तेऽष्टौ दश वाते शिरोगते ।
 विना भोजनभेवायं शिरोवस्तिः प्रशस्यते ॥ ३४ ॥
 पञ्चाहं षडहं वाऽपि सप्ताहं चैवमाचरेत् ।

इति शिरोवस्तिविधिः ।

अथ विडङ्गायं तैलम्—

क्षयजे तु शिरोरोगे कर्तव्यो बृंहणो विधिः ॥ ३५ ॥
 पाने वस्तौ च सर्पिः स्याद्वातघ्नमधुरैः शृतम् ।
 क्षयकासापहं चात्र सर्पिः पथ्यतमं मतम् ॥ ३६ ॥
 कृमिजे तु शिरोरोगे व्योषनक्ताहशिग्रुजैः ।
 अजमूत्रेण संपिष्टैर्नस्यं कृमिहरं परम् ॥ ३७ ॥
 विडङ्गं स्वर्जिकादन्तिहिङ्गुगोमूत्रसंयुतम् ।
 विषकं सार्धपं तैलं कृमिघ्नं नस्यतः स्मृतम् ॥ ३८ ॥

इति विडङ्गायं तैलम् ।

अथ कुङ्कुमयोगः—

सूर्यावर्ते शिरावेधो नावनं क्षीरसर्पिषोः ।
 हितः क्षीरघृताभ्यासस्ताभ्यां सह विरेचनम् ॥ ३९ ॥
 मृङ्गराजरसश्छागक्षीरतुल्योऽर्कतापितः ।
 सूर्यावर्तं निहनत्याशु नस्येनैष प्रयोगराट् ॥ ४० ॥

सशर्करं कुङ्कुममाज्यभृष्टं नस्यं विधेयं पवनासृगुत्थे ।

भृशङ्ककर्णाक्षिशिरोर्धगूले दिनाभिवृद्धिप्रमवे च रोगे ॥ ४१ ॥

इति कुङ्कुमयोगः ।

अथ योगचतुष्टयमिन्द्रलुप्ते-

सितोपलायुतं घृष्टं मदनं गोपयोनितम् ।

नस्यतोऽनुविते सूर्ये निहन्त्येवार्धभेदकम् ॥ ४२ ॥

सारिवोत्पलकुष्ठानि मधुकं चाम्लपेषितम् ।

सर्पिस्तैलयुतं लिम्पेत्सूर्यावर्तार्धभेदके ॥ ४३ ॥

पीत्वा शशमुण्डरसं मरिचैरवचूर्णितम् ।

भौजनादौ तु सप्ताहात्सूर्यावर्तार्धभेदकौ ॥ ४४ ॥

हन्ति सर्वात्मकौ शीघ्रं दुःखदौ भृशदारुणौ ।

मद्भ्रियं पुण्डरीकं मधुकं नीलमुत्पलम् ॥ ४५ ॥

पद्माख्यं वेतसं दूर्वा लामज्जकमथापि वा ।

दार्वाहरिद्रामञ्जिष्ठाशिरीषोशीरपद्मकम् ॥ ४६ ॥

एतैरालेपनं कुर्याच्छङ्खकस्य प्रशान्तये ।

अनन्तवाते कर्तव्यो रक्तमोक्षः शिराव्यधैः ॥ ४७ ॥

आहारश्च विधातव्यो वातपित्तविनाशनः ।

मांसी कुष्ठं तिलाः कृष्णाः सारिवामूलमुत्पलम् ।

सक्षौद्रं क्षीरपिष्टानि केशसंवर्धनानि हि ॥ ४८ ॥

मार्कवस्वरसभावितगुञ्जाबीजचूर्णपरिपाचितैलम् ।

मिश्रितं त्रुटिजयासुरकुष्ठैः केशमारजननं जनतायाः ॥ ४९ ॥

मांसीबलाबकुलजामलकैः सकुष्ठैः

पिष्टैः प्रलिप्तशिरसो न पतन्ति केशाः ।

स्निग्धायतातिकुटिलाकृतयो भवन्ति

ये प्रच्युता अपि मिलिन्दकुलप्रकाशाः ॥ ५० ॥

बृहतीफलरसपिष्टं गुञ्जायाः फलमथापि वा मूलम् ।

हेमनिघृष्टं लिप्तं व्यपनयति महेन्द्रलुप्ताख्यम् ॥ ५१ ॥

नीलोत्पलाक्षफलमभ्रतिलाजगन्धाः

सार्धं प्रियङ्गुलतया समधूककल्काः ।

संपिष्य यः प्रकुरुते बहुशः प्रलेपं

खालित्यमस्य न पदं विदधाति मूर्ध्नि ॥ ५२ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

2. The second part of the document is a list of the names of the members of the committee.

3. The third part of the document is a list of the names of the members of the committee.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the members of the committee.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

11. The eleventh part of the document is a list of the names of the members of the committee.

12. The twelfth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

13. The thirteenth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

14. The fourteenth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

15. The fifteenth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

16. The sixteenth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

17. The seventeenth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

18. The eighteenth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

19. The nineteenth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

20. The twentieth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

21. The twenty-first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

22. The twenty-second part of the document is a list of the names of the members of the committee.

23. The twenty-third part of the document is a list of the names of the members of the committee.

24. The twenty-fourth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

25. The twenty-fifth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

26. The twenty-sixth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

पुराणमथ पिण्याकं पुरीषं कुक्कुटस्य च ।
 मूत्रपिष्टः प्रलेपोऽयं शीघ्रं हन्यादरुंधिकाम् ॥ ५३ ॥
 बिल्वस्य मज्जा पिष्टेन सह दध्ना हयद्विषः ।
 स्नायात्प्रलिप्य मूर्धानमरुंधिविनिवृत्तये ॥ ५४ ॥
 दध्ना योऽनुदिनं मर्त्यो मूर्धानमनुलिम्पति ।
 अरुंधिका सर्वथाऽस्य नश्यत्यल्पैस्तु वासरैः ॥ ५५ ॥
 पिप्पलं बीजमधुकुष्ठमाषैः ससैन्धवैः ।
 कार्यो दारुणके मूर्ध्नि प्रलेपो मधुसंयुतः ॥ ५६ ॥
 आम्रबीजस्य चूर्णेन शिवाचूर्णं समं कृतम् ।
 दुग्धपिष्टं प्रलेपेन दारुणं हन्ति दारुणम् ॥ ५७ ॥
 रसस्तिक्तपटोलस्य पत्राणां तद्विलेपनात् ।
 इन्द्रलुप्तं शमं याति त्रिभिरेव दिनैर्ध्रुवम् ॥ ५८ ॥
 इन्द्रलुप्तापहो लेपो मधुना बृहतीरसः ।
 गुञ्जामूलं फलं वाऽपि मल्लातकरसेऽपि वा ॥ ५९ ॥
 इति योगचतुष्टयमिन्द्रलुप्ते ।

अथ महानीलतैलम्—

हस्तिदन्तमर्षीं कृत्वा छागीदुग्धरसाञ्जनम् ।
 लोमान्यनेन जायन्ते लेपात्पाणितलेष्वपि ॥ ६० ॥
 चतुष्पदानां त्वग्रोमनखशृङ्गास्थिमस्मभिः ।
 तैलेन सह लेपोऽयं रोमसंजननः परः ॥ ६१ ॥
 इन्द्रवारुणिकाबीजतैलेनाभ्यङ्गमाचरेत् ।
 प्रत्यहं तेन कालाग्निसंनिमाः कुन्तला अलम् ॥ ६२ ॥
 अयोरजो भृङ्गराजस्त्रिफला कृष्णमृत्तिका ।
 स्थितमिक्षुरसे मासं लेपनात्पलितं जयेत् ॥ ६३ ॥
 त्रिफला नीलिनीपत्रं लौहं भृङ्गरजःसमम् ।
 अविमूत्रेण संपिष्टं लेपात्कृष्णीकरं परम् ॥ ६४ ॥

तिलतैलमृष्टगोणीखण्डयन्त्रितमाजूमफलरक्तिः ४ नवसागररती ४
 तुत्थरती ४ ताम्रपत्ररती ४ एतच्चतुष्टयं लोहमर्दकेनैव लोहपात्र आम-
 रसं गृहीत्वा यावद्रक्तकपिशता भवति तावन्मर्दयित्वा तेन कल्केन
 श्वेतान्कैचांस्तण्डुलार्धमानेन संमर्द्य लिम्पेत् । पश्चादेरण्डपत्रैरावेष्ट्य
 सुष्यात् । प्रातस्तैलामलकाभ्यां स्नात्वा भ्रमरसदृशकेशो भवति ।



काश्मर्यजुनपुष्पजाम्बवहिमश्यामारुणायोवरा-
 पिण्डीताम्रिकणासनोत्पलमृणालीपङ्कनील्यञ्जनैः ।
 भल्लाभ्रास्थिकसीसपुण्ड्रमदयन्तीबाकुचीतिल्वकै-
 स्तुल्यैर्द्विःसणबीजसौरसदलार्कैष्टार्कमांजासुरैः ॥ ६५ ॥
 यष्टीभृङ्गकुरण्टकैश्च सितिभिर्द्वैधेक्षतैलं महा-
 नीलं धात्र्युदकेऽर्कतः पयसि चेज्जन्तूर्ध्वकेशार्तिषु ॥ ६६ ॥
 इति महानीलतैलम् ।

अथ शांकरी कृतिः-

साबुनशुष्कटङ्कः १, काम्बिसेन्दुरटङ्कः १, कळिचुनाटङ्कः १, एतद्वी-
 षधत्रयं घोषेऽङ्गुल्या यावन्नखं कपिशं भवति तावन्मर्दयेत् । ततो रूक्षेषु
 कचेषु गाढमङ्गुल्या घर्षणपूर्वं लिम्पेत् । घटिकार्धं स्थापयित्वा तैलामल-
 काभ्यां स्नायात् । सणसदृशकेशोऽपि भ्रमरसदृशकेशो भवति ।
 इति शांकरी कृतिः ।

अथ तैलकृष्णीकृतिः-

मुरडशङ्खटङ्काः ४, छाखटङ्काः ४, एतद्वयं माहिषाम्लतक्रेण नख-
 कापिशं खल्वे संमर्द्य तेन कल्केन रूक्षान्कचानालिप्य वातारिपत्रै-
 रावेष्ट्य प्रहरं तिष्ठेत् । ततस्तत्र कल्के शुष्के तैलामलकाम्यां स्नात्वा
 शङ्खपाण्डुकुरलोऽपि भिन्नाञ्जनसदृशकेशो नरो भवति ।
 माजूफलतोळा १, हरीतकीतो० १, अम्बरा तो०, ७ खर्पर तो० २,
 तुतिआ तो० १, लिलवरी तो० १०, नवसागर तो० १, लोहचूर्ण तो०
 १, फटकी तो० १, ताम्रविद् तो० २, भृङ्गद्रवैः पिष्ट्वाऽयःपात्रे
 त्रिदिनं संधितेनानेन रूक्षान्केशानालिप्य वातारिपत्रैरावेष्ट्य सुष्यात् ।
 ततः प्रातस्तैलामलकैः स्नात्वा सितकेशोऽसितकेशो भवति ।

इति तैलकृष्णीकृतिः ।

निम्बतैलैः पूतितैलैरिङ्गुदीतैलतोऽपि वा ।

भल्लीतैलैः क्षारमृदा लेपो वा यौकनाशनः ॥ ६७ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां शिरोरोगचिकित्साकथनं नाम

द्वात्रिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १३२ ॥

1. The first part of the document is a letter from the President of the United States to the Congress, dated January 3, 1801.

He begins by expressing his gratitude for the support of the Congress during his administration, and then proceeds to discuss the state of the Union and the progress of the government.

2. The second part of the document is a report from the Secretary of the Treasury, dated January 3, 1801.

He provides a detailed account of the financial state of the government, including the amount of revenue received and the expenses incurred during the year.

3. The third part of the document is a report from the Secretary of the Navy, dated January 3, 1801.

He describes the activities of the Navy during the year, including the construction of new ships and the operations of the fleet.

4. The fourth part of the document is a report from the Secretary of the War, dated January 3, 1801.

He discusses the military operations of the year, including the campaigns in the Northwest Territory and the War of 1812.

5. The fifth part of the document is a report from the Secretary of the Interior, dated January 3, 1801.

[चतुर्विंशदधिकशततमस्तरङ्गः] बृहद्योगतरङ्गिणी ।

८९७

अथ त्रयविंशदधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ स्त्रीरोगाः—

अथ स्त्रीपुष्पजननोपायः—

सगुडः श्यामतिलानां काथः पीतः सुशीतलो नार्या ।
जनयति कुसुमं सहसा गतमपि सुचिरं निरातङ्कम् ॥ १ ॥
तिलसेलुकारवीनां काथं पीत्वाऽपि नष्टरजाः ।
सगुडं शिशिरं वनिता जनयति कुसुमं न संदेहः ॥ २ ॥
इक्ष्वाकुबीजदन्तीचपलागुडमदनकिण्वयाषशूकैः ।
सस्नुक्क्षीरैर्वर्तियोनिगता कुसुमसंजननी ॥ ३ ॥
कार्पासबीजमज्जानां चूर्णं तैलेन पाययेत् ।
तेन संजायते पुष्पं युवतीनां चिरंतनम् ॥ ४ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां कुसुमसंजननविधिकथनं नाम त्रय-
विंशदधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १३३ ॥

अथ चतुर्विंशदधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ प्रदरनिदानम्—

विरुद्धमद्याध्यशनादजीर्णादूर्ध्वप्रपातादतिमैथुनाच्च ।
यानाध्वशोकादतिकर्षणाच्च भाराभिघाताच्छयनाद्विवाच्च ॥ १ ॥

वातजमाह—

असृग्दरं भवेत्सर्वं साङ्गमर्दं सवेदनम् ।
तस्यातिवृद्धौ दौर्बल्यं भ्रमो मूर्छा क्लमस्तृषा ॥ २ ॥
दाहः प्रलापः पाण्डुत्वं तन्द्रा रोगाश्च वातजाः ।

कफजमाह—

तं श्लेष्मपित्तानिलसंनिपातैश्चतुष्प्रकारं प्रदरं वदन्ति ॥ ३ ॥
आमं सपिच्छप्रतिमं सपाण्डु पुलाकबोयप्रतिमं कफात्तु ।

पित्तजमाह—

सपीतनीलासितरक्तमुष्णं पित्तार्तियुक्तं भृशवेगि पित्तात् ॥ ४ ॥

ORIGINAL ARTICLES

SYMPTOMS

OF

ACUTE

ARTHRITIS
OF THE
HANDS
AND
FEET
IN
RHEUMATOID
DYSERYTHRODERMA

BY
DR. J. H. HARRIS
OF THE
UNIVERSITY OF CHICAGO
AND
DR. J. H. HARRIS
OF THE
UNIVERSITY OF CHICAGO

WITH
A
REPORT
ON
THE
SYMPTOMS
OF
ACUTE
ARTHRITIS
OF THE
HANDS
AND
FEET
IN
RHEUMATOID
DYSERYTHRODERMA

BY
DR. J. H. HARRIS
OF THE
UNIVERSITY OF CHICAGO

AND

DR. J. H. HARRIS
OF THE
UNIVERSITY OF CHICAGO

THE
SYMPTOMS
OF
ACUTE
ARTHRITIS
OF THE
HANDS
AND
FEET
IN
RHEUMATOID
DYSERYTHRODERMA

BY
DR. J. H. HARRIS
OF THE
UNIVERSITY OF CHICAGO
AND
DR. J. H. HARRIS
OF THE
UNIVERSITY OF CHICAGO

THE
SYMPTOMS
OF
ACUTE
ARTHRITIS
OF THE
HANDS
AND
FEET
IN
RHEUMATOID
DYSERYTHRODERMA

BY
DR. J. H. HARRIS
OF THE
UNIVERSITY OF CHICAGO
AND
DR. J. H. HARRIS
OF THE
UNIVERSITY OF CHICAGO

द्वंद्वजमाह—

रूक्षानिलं फेनिलमल्पमल्पं वातार्तिवातात्पिशितोदकामम् ।

त्रिदोषजमाह—

सक्षौद्रसर्पिर्हरितालवर्णं मज्जाप्रकाशं कुणपं त्रिदोषम् ॥ ५ ॥
तच्चाप्यसाध्यं प्रवदन्ति तज्ज्ञा न तत्र कुर्वीत मिषक्विकित्साम् ।

शुद्धार्तवमाह—

मासादपिच्छदाहार्ति पञ्चरात्रानुबन्धि च ॥ ६ ॥
नैवाति बहु नात्यल्पमार्तवं शुद्धमादिशेत् ।
शशासृक्प्रतिमं यच्च यद्वा लाक्षारसोपमम् ॥ ७ ॥
तदार्तवं प्रशंसन्ति यदप्यु न विरज्यते ।

असाध्यमाह—

शश्वत्स्रवन्तमास्रावं तृषादाहज्वरान्वितम् ॥ ८ ॥
क्षीणरक्तं दुर्बलं च तमसाध्यं विनिर्दिशेत् ।

इति प्रदरनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

नागरं मधुकं तैलं सिता दधि च तत्समम् ॥ ९ ॥
खजेनोन्मथितं पीतं वातप्रदरनाशनम् ।
दध्ना सौवर्चलाजाजीमधुकं नीलमुत्पलम् ॥ १० ॥
पिबेत्क्षौद्रयुतं नारी वातासृग्दरशान्तये ।
एलामंशुमतीं द्राक्षामुशीरं तिक्तरोहिणीम् ॥ ११ ॥
चन्दनं कृष्णलवणं सारिवालोधसंयुतम् ।
वातासृग्दरशान्त्यर्थं पिबेद्दध्ना सहाङ्गना ॥ १२ ॥
पित्तासृग्दरशान्त्यर्थं सक्षौद्रं ललना पिबेत् ।
वासकस्य गुडूच्या वा रसं किंवा वरीभवम् ॥ १३ ॥
मद्यैर्निम्बगुडूच्योश्च रोहितस्याथ वा रसम् ।
कफप्रदरनाशाय पिबेद्वा मलयूरसम् ॥ १४ ॥
काकजङ्घामूलरसं मधुना सह मामिनी ।
सलोध्रचूर्णमापीय कफप्रदरकं जयेत् ॥ १५ ॥

[चतुर्विंशदधिकशततमस्तरङ्गः] बृहद्योगतरङ्गिणी ।

८९३

पथ्यामलकविभीतकविश्वौषधदारुजनीनाम् ।

सक्षौद्रलोध्रचूर्णः काथो हन्त्येष सर्वजं प्रदरम् ॥ १६ ॥

इति पथ्यादिः ।

अथ दाव्यादिः—

दावीरसाञ्जनवृषाब्दकिरातविल्व-

मल्लातकैरवकृतो मधुना कषायः ।

पीतो जयत्यतिबलं प्रदरं सशूलं

पीतासितारुणविलोहितनीलशुक्लम् ॥ १७ ॥

इति दाव्यादिः ।

तण्डुलीयकमूलं हि तण्डुलाम्बुप्रपेषितम् ।

सताक्षर्यशैलं सक्षौद्रं प्रपीतं प्रदरं जयेत् ॥ १८ ॥

पिष्टं तण्डुलतोयेन कुशमूलं सशारदम् ।

सरसाञ्जनमापीय प्रदरं त्रिदिनाज्जयेत् ॥ १९ ॥

आखोः पुरीषं पयसा निपीय बह्वेर्बलादेकमहर्द्यहं वा ।

स्त्रियरूपहं वा प्रदरासनद्याः प्रसह्य पारं परमाप्नुवन्ति ॥ २० ॥

अशोकवल्कलं पिष्ट्वा सताक्षर्यं तण्डुलाम्भसा ।

सक्षौद्रं तद्रसं पीत्वा प्रदरान्मुच्यतेऽङ्गना ॥ २१ ॥

भूम्यामलकमूलं तु पीतं तण्डुलवारिणा ।

द्वित्रैरेव दिनैर्नार्याः प्रदरं दुस्तरं जयेत् ॥ २२ ॥

धात्रीरसं सितायुक्तं योनिदाहापहं पिबेत् ।

सौरभेयं पयो वाऽपि ससितं स्त्री यथाबलम् ॥ २३ ॥

शुण्ठीतिरीटयोश्चूर्णं भुक्तं सघृतशर्करम् ।

प्रबलं प्रदरं हन्ति नार्या वा कुटजाष्टकम् ॥ २४ ॥

रसाञ्जनं तण्डुलकस्य मूलं क्षौद्रान्वितं तण्डुलतोयपीतम् ।

असृग्दरं सर्वभवं निहन्ति श्वासं च मार्गी सह नागरेण ॥ २५ ॥

अशोकवल्कलकाथशृतदुग्धं सशीतलम् ।

यथाबलं पिबेत्प्रातस्तीव्रासृग्दरनाशनम् ॥ २६ ॥

कुशमूलं समुद्धृत्य पेषयेत्तण्डुलाम्बुना ।

एतत्पीत्वा त्र्यहं नारी प्रदरात्परिमुच्यते ॥ २७ ॥

क्षौद्रयुक्तं फलरसं काष्ठोदुम्बरिजं पिबेत् ।
 असृग्दरविनाशाय शर्कराञ्च पयोन्नमुक् ॥ २८ ॥
 मलयूफलचूर्णस्य शर्करासहितस्य च ।
 मधुना मोदकं कृत्वा खादेत्प्रदरशान्तये ॥ २९ ॥
 अथ जीरकावलेहः—

जीरकं प्रस्थमेकं तु क्षीरं द्वाढकमेव च ।
 प्रस्थार्धं लोधघृतयोः पचेन्मन्वेन वह्निना ॥ ३० ॥
 लेहीमूतेऽत्र शीतेऽत्र सिताप्रस्थं विनिक्षिपेत् ।
 चातुर्जातिकणाविश्वमजाजीमुस्तबालकैः ॥ ३१ ॥
 वाडिमं रसजं धान्यं रजनी पटवासकम् ।
 वंशजं च तवक्षीरं प्रत्येकं शुक्तिसंमितम् ॥ ३२ ॥
 जीरकस्यावलेहोऽयं प्रमेहप्रदरापहः ।
 ज्वराबल्यारुचिश्वासतृष्णावाहक्षयापहः ॥ ३३ ॥

इति जीरकावलेहः ।

अथ मुद्गघृतम्—

मुद्गमाषविनिर्यूहे रास्नाचित्रकनागरैः ।
 सिद्धं सपिप्पलीबिल्वैः सर्पिः श्रेष्ठमसृग्दरे ॥ ३४ ॥
 नागरमत्र मुस्तम् ।

इति मुद्गघृतम् ।

अथ शाल्मलीघृतम्—

शाल्मलीपुष्पनिर्यासः पृश्निपर्णी तथैव च ।
 काश्मरीचन्दनं चैषां कल्केन स्वरसेन वा ॥ ३५ ॥
 गव्यं पचेद्घृतं प्रस्थं तत्सिद्धं तरुणी पिबेत् ।
 सर्वप्रदरनाशाय बलवर्णाग्निवर्धनम् ॥ ३६ ॥

इति शाल्मलीघृतम् ।

अथ काश्मरीघृतम्—

काश्मरीबाढमुद्गाश्च गुडूचीमधुकं वृषम् ।
 आज्ञेन पयसा सिद्धमेतद्घृतमसृग्दरे ॥ ३७ ॥

इति काश्मरीघृतम् ।

अथ प्रदरारिः—

रसं गन्धं सीसं मृतमिति समं तैस्तु रसजं
समानं सर्वैः स्यात्तुलितमपि लोभं वृषरसैः ।
दिनं पिष्टं नाम्ना प्रदररिपुरेषोऽपहरति
द्विवलः क्षौद्रेण प्रदरमतिदुःसाध्यमपि च ॥ ३८ ॥

इति प्रदरारिः ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां प्रदररोगनिदानचिकित्साकथनं नाम
चतुर्विंशदधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १३४ ॥

अथ पञ्चात्रिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ सोमरोगनिदानम्—

स्त्रीणातिप्रसङ्गाद्वा शोकाच्चापि श्रमादपि ।
आभिचारिकयोगाद्वा गरयोगान्तथैव च ॥ १ ॥
आपः सर्वशरीरस्थाः क्षुभ्यन्ति प्रस्रवन्ति च ।
तस्यास्ताः प्रच्युताः स्थानान्मूत्रमार्गं व्रजन्ति हि ॥ २ ॥

तस्य लक्षणमाह—

बहला विमलाः शीता निर्गन्धा नीरुजः सिताः ।
स्रवन्ति चातिमात्रं ताः साऽशक्ता चातिदुर्बला ॥ ३ ॥
वेगं धारयितुं तासां न विन्दति सुखं क्वचित् ।
शिरसः शिथिलत्वं च मुखतालुप्रशोषणम् ॥ ४ ॥
मूर्छा जृम्भा प्रलापश्च त्वग्रूक्षा चातिमात्रतः ।
मक्ष्यैर्मोज्यैश्च पेयैश्च न तृप्तिं लभते सदा ॥ ५ ॥
सोमरोग इति ज्ञेयो देहसोमक्षयात्स्त्रियाः ।
शरीरधारणाच्चापि सोम इत्यभिशाब्दितः ॥ ६ ॥
तस्मात्सोमक्षयाद्देहो निश्चेष्टश्च भवेत्सदा ।

इति सोमरोगनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

कदलीनां फलं पक्वं धात्रीफलरसं मधु ॥ ७ ॥

शर्करासहितं पेयं सोमधारणमुत्तमम् ।
 माषचूर्णं च मधुकं विदारीं मधु शर्कराम् ॥ ८ ॥
 पयसा पाययेत्प्रातरपां धारणमुत्तमम् ।
 स एव सोमो रजसा सह मूत्रेण च स्रवेत् ॥ ९ ॥
 तत्रैलापत्रचूर्णेन पाययेत्सह वारुणीम् ।
 जलेनाऽऽमलकीबीजकल्कं समधुशर्करम् ॥ १० ॥
 पिबेद्दिनत्रयेणैव श्वेतप्रदरनाशनम् ।
 तक्रौडनाहाररता संपिबेन्नागकेसरम् ॥ ११ ॥
 उग्रहं तक्रेण संपिष्टं श्वेतप्रदरनाशनम् ।
 सोमरोगे चिरं जाते स्रवेन्मूत्रमभीक्ष्णशः ॥ १२ ॥
 मूत्रातीसारमित्येवं तमाहुर्बलनाशनम् ।
 तालकन्दं च वरुणं खर्जूरं कदलीफलम् ॥ १३ ॥
 पयसा पाययेत्प्रातरपां धारणमुत्तमम् ।
 तालकन्दं च खर्जूरं मधुकं च विदारिकाम् ॥ १४ ॥
 शर्करां मधु च प्राश्य मूत्रातीसारकं जयेत् ।
 चक्रमर्दकमूलं तु संपिष्टं तण्डुलाम्बुना ॥ १५ ॥
 प्रमातसमये पीतं जलप्रदरनाशनम् ।
 रजन्यावसृतापाठाकोष्ठं दारुफलत्रयम् ।
 लेहयेन्मधुना सार्धं बहुमूत्रापनुत्तये ॥ १६ ॥
 इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां सोमरोगनिदानचिकित्साकथनं नाम
 षट्त्रिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १३५ ॥

अथ षट्त्रिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ नागार्जुनकृतयोगसारोक्तस्त्रीद्वेषचिकित्सा—

अथ स्त्रीणां प्रिये द्वेषमभिधास्ये स तु त्रिधा ।
 दैवादक्षपुरुषात्सपत्न्यादेश्च जायते ॥ १ ॥

अस्यायमर्थः—

दैवादिति । विरुद्धनक्षत्रपरिणामादिदोषात्स प्रथमत एव जायते ।

अदक्षपुरुषादिति । अचतुरासमर्थकुरूपकुत्सितालापद्विपुरुषसंयोगा-
द्वितीयः । सप्तन्यादेरिति । नानाप्रकाररचितकर्मादिजनितस्तृतीयो द्वेषः
स त्वनियतकाल एव जायते । तत्र प्रथमे विवाहकालिकविधानान्द्रोमः
कर्तव्यः । ततः प्रदोषार्थं भक्तपुत्तलिकाद्वयं कृत्वा गन्धादिभिरभ्यर्च्य
वस्त्रावृतं पिधाय जीवकतूलवर्तिकादीपसहितं शुक्लपुष्पमाल्यार्चितं
कुशविन्यस्तं कोणेषु चतुर्वर्णध्वजयुक्तं तस्याः स्त्रियाः संदर्शनीकृत्य
चतुष्पथे स्थापयित्वा । 'ॐ हूं हूं वशी कुरुष्व स्वाहा इति दशवारं
जपेत्ततः शुभं संपद्यते । द्वितीये तु लज्जालुमूलेन गजमदान्वितेन कर्पू-
रमिश्रितेनाङ्गलेपनं कृत्वा प्रसिद्धनवनारीविभ्रमधूपेन कृतगन्धधूपः
समालम्भनादिना कृतशृङ्गारवेषोऽनुगताभिमतस्थानसंबन्धिवृद्धस्त्रीचा-
तुवचनविमोहिता वस्त्रालंकारादिना प्रतार्य पुरुषोऽनिच्छन्ती स्त्रियं
गच्छेत् । कुमारीणां भोजनमुत्सृजेत् । ततः संपद्यते सुखम् । तृतीये
तु प्रियङ्गुमयूरशिखाश्वेतपुनर्नवामूलं पिष्ट्वाऽमलपयसा समालोढ्य
स्त्रीयोनिं प्रक्षालयेत् । पिष्टेन सूकरमांसेन वितस्तिप्रमाणां पुत्तलिं गन्धा-
दिनाऽभ्यर्च्य स्त्रियं समुद्दिश्य श्मशाने वैकप्रहरे गते स्थापयेत् । कुमारीं
भोजयेत् । ततः संपद्यते शुभम् । 'अघोरांक्षप्रियं जनन हूं हूं स्वाहा'
इति मन्त्रं दशवारं जपेत् ।

इति नागार्जुनकृतयोगसारोक्तस्त्रीद्वेषचिकित्सा ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां स्त्रीद्वेषचिकित्साधनं नाम षट्त्रिंशदधि-

कशततमस्तरङ्गः ॥ १३६ ॥

अथ सप्तत्रिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ योनिरोगनिदानम्—

विंशतिवर्षापदो योनौ निर्दिष्टा रोगसंग्रहे ।

मिथ्याचारेण ताः स्त्रीणां प्रदुष्टेनाऽऽर्तवेन च ॥ १ ॥

जायन्ते बीजदोषाच्च दैवाच्च गृणु ताः पृथक् ।

सा फेनिलमुदावर्ता रजः कृच्छ्रेण मुञ्चति ॥ २ ॥

१ क. 'स्थानः' । सं० । २ क. 'बीजदुः' । ३ क. 'ते स्थाने स्या' । ४ ग. 'सक्षं प्रि' । ५
क. 'जन हूं' ।



वन्ध्यां नष्टार्तवां विद्याद्विप्लुतां नित्यवेदनाम् ।
परिप्लुतायां भवति ग्राम्यधर्मेण रुग्मृशम् ॥ ३ ॥

वातजमाह—

वातला कर्कशा स्तब्धा शूलनिस्तोष्पीडिता ।
चतसृष्वपि चाऽऽद्यासु भवन्त्यनिलवेदनाः ॥ ४ ॥

पित्तजमाह—

सदाहं क्षीयते रक्तं यस्यां सा लोहितक्षया ।
सघातमुद्विरेद्धीजं वामिनी रजसा युतम् ॥ ५ ॥
प्रसंसिनी संसते च क्षोमिता दुष्प्रजायिनी ।
स्थितं स्थितं हन्ति गर्भं पुत्रघ्नी रक्तसंस्त्रवात् ॥ ६ ॥
अत्यर्थं पित्तला योनिर्दाहपाकज्वरान्विता ।
चतसृष्वपि चाऽऽद्यासु पित्तलिङ्गोच्छ्रयो भवेत् ॥ ७ ॥
अत्यानन्दा न संतोषं ग्राम्यधर्मेण गच्छति ।
कर्णिन्यां कर्णिका योनौ श्लेष्मसृग्भ्यां च जायते ॥ ८ ॥
मैथुनाचरणात्पूर्वं पुरुषादतिरिच्यते ।
बहुशश्चातिचरणात्तयोर्बीजं न विन्दति ॥ ९ ॥

श्लेष्मजमाह—

श्लेष्मणा पिच्छिला योनिः कण्डूग्रस्ताऽतिशीतला ।
चतसृष्वपि चाऽऽद्यासु श्लेष्मलिङ्गोच्छ्रयो भवेत् ॥ १० ॥
अनार्तवा स्तनी षण्ढी खरस्पर्शा च मैथुने ।
अतिकामगृहीता या तरुणी त्वण्डिनी भवेत् ॥ ११ ॥

सर्वदोषप्रकोपजामाह—

विवृताऽतिमहायोनिः सूचीवक्त्राऽतिसंवृता ।
सर्वलिङ्गसमुत्थाना सर्वदोषप्रकोपजा ॥ १२ ॥
चतसृष्वपि चाऽऽद्यासु सर्वलिङ्गानुदर्शनम् ।
पञ्चासाध्या भवन्तीह योनयः सर्वदोषजाः ॥ १३ ॥

इति योनिदोषनिदानम् ।

10

11

12

13

14

15

16

17

18

19

20

21

22

23

24

25

अथ चिकित्सा—

योनिव्यापत्सु भूयिष्ठं शस्यते कर्म वातजित् ।
 स्नेहस्वेदनवस्त्रादिविशेषाद्वातजासु च ॥ १४ ॥
 स्निग्धस्विन्नां तथा योनिं दुःस्थितां स्थापयेत्समाम् ।
 मधुरौषधिसंनिद्धान्वेसवारांश्च योनिषु ॥ १५ ॥
 निक्षिप्य धारयेच्चापि पिचुतैलं यथाबलम् ।
 योनिशूलरुजादौस्थयशोफस्रावप्रशान्तये ॥ १६ ॥

अथ वचाद्यवलेहः—

वचोपकुञ्चिकाजजीकृष्णावृषभसैन्धवम् ।
 अजमोदायवक्षारचित्रकं शर्करान्वितम् ॥ १७ ॥
 पिष्ट्वा प्रसन्नयाऽऽलोज्य खादेत्तद्वृतमर्जितम् ।
 योनिपाश्वर्तिहृद्रोगगुल्मार्शोविनिवृत्तये ॥ १८ ॥

इति वचाद्यवलेहः ।

रास्नाश्वगन्धावृषकैर्योनिशूलहरं पयः ।
 गुडूचीत्रिफलादन्तीकाथैश्च परिधेचनम् ॥ १९ ॥
 नतवार्ताकिनीकुष्ठसैन्धवामरदारुभिः ।
 तैलात्प्रसाधितो धार्यः पिचुर्योनौ रुजापहः ॥ २० ॥
 वातलां कर्कशां स्तब्धामल्पस्पर्शां तथैव च ।
 कुम्भीस्वेदैरुपचरेदन्तर्वेश्मनि संवृते ॥ २१ ॥
 धारयेद्वा पिचुं योनौ तिलतैलस्य सा सदा ।
 पित्तलानां च योनीनां सेकाभ्यङ्गपिचुक्रियाः ॥ २२ ॥
 शीताः पित्तहराः कार्याः स्नेहनार्थं घृतानि च ।
 पिचवश्च घृताभ्यक्ताश्चन्दनाम्मःसमुक्षिताः ॥ २३ ॥
 योनौ स्थाप्याः स्त्रिया दाहकृच्छ्रपाकप्रशान्तये ।
 धात्रीरसं सितायुक्तं योनिदाहे पिबेत्सदा ॥ २४ ॥
 सूर्यक्रान्तामवं मूलं पिबेद्वा तण्डुलाम्बुना ।
 योन्यां बलासजुष्टायां सर्वं रूक्षोष्णमौषधम् ॥ २५ ॥
 तैलं साधु यवान्नं च पथ्यारिष्टं च योजयेत् ।
 पिपल्या मरिचैर्माषैः शताह्वाकुष्ठसैन्धवैः ॥ २६ ॥
 वर्तिस्तुल्या प्रदेशिन्या धार्या योनिविशोधिनी ।
 सुरामण्डोक्षितो धार्यः पिचुर्योनौ कफात्मनि ॥ २७ ॥

THE
JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
OF GREAT BRITAIN AND IRELAND
PUBLISHED BY THE INSTITUTE
1911

CONTENTS

THE
JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
OF GREAT BRITAIN AND IRELAND
PUBLISHED BY THE INSTITUTE
1911

THE
JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
OF GREAT BRITAIN AND IRELAND
PUBLISHED BY THE INSTITUTE
1911

कण्डूपैच्छिल्यसंस्नावशैथिल्यविनिवृत्तये ।
 संनिपातसमुत्थानां कार्या योन्यां यदा क्रिया ॥ २८ ॥
 साधारणी दशाङ्गि श्रीमदाक्राथपिचुर्हितः ।
 सुगन्धीनां पदार्थानां कल्कचूर्णशृतैः कृतः ॥ २९ ॥
 योनौ दौर्गन्ध्यशमनो योनौ दौर्गन्ध्यभाजि च ।
 योन्यां तु पूयसाविण्यां शोधनद्रव्यनिर्मितम् ॥ ३० ॥
 सगोमूत्रैः सलवणैः पिण्डैः संपूरणं हितम् ।

शोधनद्रव्याणि निम्बपत्रादीनि ।

गुडूचीत्रिफलादन्तीकथितोदकधारया ।
 योनिं प्रक्षालयेत्तेन तत्र कण्डूः प्रशाम्यति ॥ ३१ ॥
 मुद्गपुष्पं सखदिरं पथ्याजाजीफलं तथा ।
 विक्किं घृणं च संचूर्ण्य वस्त्रपूतं क्षिपेद्भगे ॥ ३२ ॥
 योनिर्भवति संकीर्णा न स्रवेच्च जलं ततः ॥ ३३ ॥
 कपिकच्छूमवं मूलं क्राथयेद्विधिना भवेत् ।
 योनेः संकीर्णताशान्तिः क्राथेनानेन धावनात् ॥ ३४ ॥
 जीरकद्वितयं कृष्णा सुषवी सुरभिर्वचा ।
 वासकः सैन्धवश्चापि यवक्षारो यवानिका ॥ ३५ ॥
 एषां चूर्णं घृते किञ्चिद्दृष्ट्वा खण्डेन मोदकम् ।
 कृत्वा खादेद्यथावह्नि योनिरोगाद्विमुच्यते ॥ ३६ ॥
 इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां योनिरोगनिदानचिकित्साकथनं नाम
 सप्तत्रिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १३७ ॥

(अष्टात्रिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ।)

अथ योनिकन्दनिदानम्—

दिवास्वप्नादतिक्रोधाद्यायामादतिमैथुनात् ।
 क्षताच्च नखदन्ताद्यैर्वाताद्याः कृपिता यदा ॥ १ ॥
 पूयशोणितसंकाशो लकुचाकृतिसंनिभः ।
 उत्पद्यते तदा योनौ नाम्ना कन्दस्तु योनिजः ॥ २ ॥
 रुक्षं विवर्णं स्फुटितं वातिकं तं विनिर्दिशेत् ।
 दाहरागज्वरयुतं पैत्तिकं तं वदेद्भिषक् ॥ ३ ॥

The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. It then presents a review of the journal's
 content, highlighting the quality and diversity of the
 articles. The second part of the paper discusses the
 journal's impact on the field of management education,
 including its role in advancing research and practice.
 The paper concludes with a discussion of the journal's
 future and its potential to continue to make a
 significant contribution to the field.

Age Group	Percentage
18-24	10%
25-34	15%
35-44	20%
45-54	25%
55-64	20%
65-74	15%
75-84	10%
85+	5%

Age Group	Male (%)	Female (%)
18-24	~15	~15
25-34	~25	~25
35-44	~35	~35
45-54	~45	~45
55-64	~55	~55
65-74	~65	~65
75-84	~75	~75
85+	~85	~85

100

नीलपुष्पप्रतीकाशं कण्डूमन्तं कफात्मकम् ।
सर्वलिङ्गसमायुक्तं संनिपातात्मकं वदेत् ॥ ४ ॥

इति योनिकन्दनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

त्रिफलायाः कषायेण सक्षौद्रेण च सेचयेत् ।
प्रमदा योनिकन्देन व्याधिना परिमुच्यते ॥ ५ ॥
मूषकक्राथसंसिद्धस्तिलतैलकृतः पिचुः ।
नाशयेद्योनिरोगांस्तान्धृतो योनौ न संशयः ॥ ६ ॥
आखोर्मांसं सपदि बहुधा सूक्ष्मखण्डीकृतं त-
त्तैले पाच्यं *ज्वलति नियतं +यावदेतन्न सस्यकृ ।
तत्तैलाक्तं वसनमनिशं योनिदेशे दधाना
सत्यं पीडाजनकमबला योनिकन्दं निहन्ति ॥ ७ ॥
त्रिफलां द्वौ सहचरौ गुडूचीं सपुनर्नवाम् ।
शूकनासां हरिद्रे द्वे रास्नां मेदां शतावरीम् ॥ ८ ॥
कल्कीकृत्य घृतप्रस्थं पचेत्क्षीरे चतुर्गुणे ।
तत्सिद्धं पाययेन्नारीं योनिरोगात्प्रमुच्यते ॥ ९ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां योनिकन्दनिदानचिकित्साकथनं
नामाष्टात्रिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १३८ ॥

अथैकोनचत्वारिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ गर्भोत्पादनविधिः—

नष्टार्तवचिकित्सा—

आर्तवादर्शने नारी मत्स्यान्सेवेत नित्यशः ।
काञ्जिकं च निलान्माषानुदश्विच्च तथा दधि ॥ १ ॥
पीतं ज्योतिष्मतीपत्रं राजिकोग्रासनं व्यहम् ।
शीतेन पयसा पिष्टं कुसुमं जनयेद्भुवम् ॥ २ ॥

* क. द्रवति । + क. यावदेतन्न ।

१ ग. तिल° । २ ग. व्रीडाज° ।

अन्ये योगाः सगुडश्यामादिकुसुमजननोपायाः पूर्वमुक्ताः ।

गर्भाविस्थामाह—

एवं योनिषु शुद्धासु गर्भं विन्दन्ति योषितः ।
अदुष्टे प्राकृते बीजे जीवोपक्रमणे सति ॥ ३ ॥
बीजस्य पतनं नाऽऽशु ह्लादि मूत्रं च फेनिलम् ।
पुमान्स्याल्लक्षणैरेभिर्विपरीतैस्तु षण्ढकः ॥ ४ ॥
सक्षीरशाल्यन्नभुजा तिलमाषोत्तराशना ।
मासं स्थित्वाऽङ्गना गच्छेत्पुत्रकामा निजं पतिम् ॥ ५ ॥
समयोर्धस्त्रनिशयोः पुत्रः स्यात्कन्यकाऽन्यथा ।
चतुर्थे दिवसे गच्छेत्पुत्रकामो नरोऽङ्गनाम् ॥ ६ ॥
पुत्रः स्याच्छुक्रबाहुल्याद्दुहिता त्वार्तवेऽधिके ।
आदाविमं समुच्चार्य मन्त्रं पश्चाद्रतं चरेत् ॥ ७ ॥

स यथा—

‘ ॐ अहिरसि आयुरसि सर्वतः प्रतिष्ठाऽसि धाता त्वा दधातु ।
विनता त्वा दधातु ब्रह्मवर्चसी भवेत् ’ इति ॥

उक्तं च—

ब्रह्मा प्रजापतिर्विष्णुः सोमः सूर्यस्तथाऽश्विनौ ।
भगोऽथ मित्रावरुणौ वीरं ददतु मे सुतम् ॥ ८ ॥
तच्चित्तोत्तानदेहा स्त्री तिष्ठेच्चापि समन्विता ।
एवं सा सुतमाप्नोति रूपायुर्बलशालिनम् ॥ ९ ॥
पुण्ये पुत्तलिकां कृत्वा हैमीं वह्निप्रतापिताम् ।
क्षीरे निर्वाप्य संतप्तं तत्पिबेच्चुलकाष्टकम् ॥ १० ॥
क्रतोश्चतुर्थदिवसे गर्भं धत्तेऽङ्गना सुखम् ।
लक्ष्मणां वटशृङ्गांश्च पिष्ट्वा क्षीरेण तिन्दुकान् ॥ ११ ॥
चतुरः पुत्रकामायाः सव्येतरपुटे पिबेत् ।
नसः सव्ये पुटे कन्यां लभतेऽत्र न संशयः ॥ १२ ॥
काथेन हयगन्धायाः साधितं सघृतं पयः ।
प्रातः स्नात्वाऽबला पीत्वा गर्भं धत्ते न संशयः ॥ १३ ॥

पुत्रकारकयोगमाह—

तिलतैलदुग्धफाणितदधिघृतमेकत्र पाणिना मथितम् ।
पीतं सपिप्पलीकं जनयति पुत्रं परं महिला ॥ १४ ॥

एकपत्रपलाशस्य पत्रमेकं पयोन्वितम् ।
 निपीय लभते पुत्रमृत्वन्ते सर्वथाऽबला ॥ १५ ॥
 पुण्योद्धृतं लक्ष्मणाया मूलं पिष्टं च कन्यया ।
 ऋत्वन्ते घृतदुग्धाभ्यां पीत्वाऽऽप्नोत्यबला सुतम् ॥ १६ ॥
 नागकेसरमेकं तु पिष्ट्वा क्षीरेण याऽबला ।
 पिबेत्सा सुतमाप्नोति ऋत्वन्ते चिरजीविनम् ॥ १७ ॥
 शिवलिङ्गीफलमेकं ऋत्वन्ते याऽबला गिलति ।
 बन्ध्याऽपि पुत्ररत्नं लभते सा नात्र संदेहः ॥ १८ ॥
 एकस्य मातुलुङ्गस्य बीजानि सकलान्यपि ।
 ऋत्वन्ते दुग्धपिष्टानि पीत्वाऽऽप्नोत्यबला सुतम् ॥ १९ ॥
 श्वेतायाः कण्टकार्यास्तु मूलं पुण्ये समुद्धृतम् ।
 गोपयःपिष्टमबला पीत्वाऽऽप्नोत्यात्मजं तथा ॥ २० ॥
 बलासितासातिबलामधूकं वटस्य शृङ्गं गजकेसरं च ।
 एतन्मधुक्षीरघृतैर्निपीतं बन्ध्या सुपुत्रं नियतं प्रसूते ॥ २१ ॥
 कुरण्टमूलं धातक्याः कुसुमानि वटाङ्कुराः ।
 नीलोत्पलं पयोयुक्तमेतद्गर्भप्रदं परम् ॥ २२ ॥
 शूकरशिम्बीमूलं मध्यं वा दधिफलपयस्कम् ।
 पीत्वाऽथोभयलिङ्गीबीजं कन्यां न सूते स्त्री ॥ २३ ॥
 पीत्वा तण्डुलतोयेन तण्डुलीयजटामृतौ ।
 पतद्गर्भा च या नारी स्थिरगर्भा प्रजायते ॥ २४ ॥
 रोमराजी भवेद्यस्या वामतस्तु सुमूर्छिता ।
 तस्याः कन्यां विजानीयाद्दक्षिणे तनयं शुभम् ॥ २५ ॥
 उन्नते दक्षिणे कुक्षौ गर्भे च परिमण्डले ।
 पुत्रं सूतेऽन्यथा कन्यां वामे क्लीबं समेऽङ्गना ॥ २६ ॥
 उदधियमाणे छिन्ने कन्या पुत्रस्तु न छिन्ने ।
 मूले खरमञ्जरीः परीक्षणं कोष्ठगतगर्भे स्यात् ॥ २७ ॥

अथ फलघृतम्—

मुस्तं कुष्ठं हरिद्रे द्वे पिप्पली कटुरोहिणी ।
 काकोली क्षीरकाकोली विडङ्गं त्रिफला वचा ॥ २८ ॥
 मेंदा रास्ना विशाला च देवदारु प्रियङ्गुका ।
 द्वे सारिवे शताह्वा च दन्ती मधुकमुत्पलम् ॥ २९ ॥

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
OF GREAT BRITAIN AND IRELAND
PUBLISHED BY THE INSTITUTE
OF GREAT BRITAIN AND IRELAND
VOLUME LXXI
PART I
1911

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
OF GREAT BRITAIN AND IRELAND
PUBLISHED BY THE INSTITUTE
OF GREAT BRITAIN AND IRELAND
VOLUME LXXI
PART I
1911

अजमोदा महामेदा चन्दनं रक्तचन्दनम् ।
 जातीपुष्पं तुगा क्षीरी कट्फलं हिङ्गु शर्करा ॥ ३० ॥
 एतैरक्षसमैः कल्कैर्घृतप्रस्थं भिषक्तमः ।
 चतुर्गुणेन पयसा विपचेद्गोमयाग्निना ॥ ३१ ॥
 पुष्यनक्षत्रसंपन्नं भाण्डे हेमादिजे स्थितम् ।
 सर्पिरेतन्नरः पीत्वा स्त्रीषु नित्यं वृषायते ॥ ३२ ॥
 या च वन्ध्या पिवेन्नारी या च कन्याप्रजायिनी ।
 पीत्वैतत्स्थिरगर्भा स्याद्या च सूता पुनः स्थिता ॥ ३३ ॥
 अनायुषं या जनयेद्या वा जनयते मृतम् ।
 सा च संजनयेत्पुत्रं दीर्घायुषमरोगिणम् ॥ ३४ ॥
 वेदवेदाङ्गशास्त्रज्ञं सर्वावयवसुन्दरम् ।
 नानेन सदृशं किञ्चिदौषधं चान्यदुत्तमम् ॥ ३५ ॥
 वर्तते मर्त्यलोकेऽत्र योषितां पुत्रदं परम् ।
 नाम्ना फलघृतं ह्यतद्भारद्वाजेन निर्मितम् ॥ ३६ ॥
 अनुक्तं लक्ष्मणामूलं क्षिपन्त्यत्र चिकित्सकाः ।
 जीवद्वत्सैकवर्णाया घृतमस्मिन्प्रशस्यते ।
 आरण्यगोमयेनात्र वह्निज्वालाविधिः स्मृतः ॥ ३७ ॥

मेदा महामेदा तयोरभावे शतावरी द्विगुणा देया । काकोलीयुगला-
 भावेऽश्वगन्धा द्विगुणा देया । पुनर्ग्रहणं द्वैगुण्यर्थम् । जीवकर्षभकयो-
 रभावे विदारीकन्दो द्विगुणो देयः । एतस्य फलघृतस्यपाठो नानात-
 न्त्रेषु नानाविधः । तत्र हिङ्गुवचातगरजावकर्षभका अधिकाः ।

इति फलघृतम् ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां गर्भोत्पादनविधिर्नामैकोनचत्वारिंशदधि-

कशततमस्तरङ्गः ॥ १३९ ॥

अथ चत्वारिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ भूढगर्भनिदानम्—

भयाभिधाततीक्ष्णोष्णपानाशननिषेवणात् ।

गर्भे पतति रक्तस्य सशूलं दर्शनं भवेत् ॥ १ ॥

आचतुर्थात्तथा मासात्प्रसवेद्वर्गविद्रवः ।
 ततः स्थिरशरीरस्य पातः पञ्चमषष्ठयोः ॥ २ ॥
 गर्भोऽभिघातविषमासनपीडनाद्यैः
 पक्वं द्रुमादिव फलं पतति क्षणेन ।
 मूढः करोति पवनः खलु मूढगर्भं
 शूलं च योनिजठरादिषु मूत्रसङ्गम् ॥ ३ ॥
 मुग्नोऽनिलेन विगुणेन ततः स गर्भः
 संख्यामुपैति बहुधा समुपैति योनिम् ।
 द्वारं निरुध्य शिरसा जठरेण कश्चि-
 त्कश्चिच्छरीरपरिवर्तितकुब्जदेहः ॥ ४ ॥
 एकेन कश्चिदपरस्तु भुजद्वयेन
 तिर्यग्गतो भवति कश्चिद्वाङ्मुखोऽन्यः ।
 पार्श्वाप्रवृत्तगतिरेति तथैव कश्चि-
 दित्यष्टधा गतिरियं ह्यपरा चतुर्धा ॥ ५ ॥
 संकीलकः प्रतिखुरः परिघोऽथ बीज-
 स्तेषूर्ध्वबाहुचरणैः शिरसा च योनिम् ।
 सङ्गी च यो भवति कीलकवत्सकीलो
 दृश्यैः खुरैः प्रतिखुरः स हि कायसङ्गी ॥ ६ ॥
 गच्छेद्भुजद्वयशिराः स तु बीजकाख्यो
 योनौ स्थितः सपरिघः परिघेण तुल्यः ॥ ७ ॥
 अपविद्धशिरा या तु शीताङ्गी निरपत्रपा ।
 नीलोद्धतशिरा हन्ति सा गर्भं स च तां तथा ॥ ८ ॥
 गर्भास्यन्दनमावीनां प्रणाशः श्यावपाण्डुता ।
 मवेदुच्छ्वासपूतित्वं शूनताऽन्तर्मुते शिशौ ॥ ९ ॥
 मानसागन्तुभिर्मातुरुपतापैः प्रपीडितः ।
 गर्भो व्यापद्यते कुक्षौ व्याधिभिश्च प्रपीडितः ॥ १० ॥
 योनिसंवरणं सङ्गः कुक्षौ मक्कल एव च ।
 हन्युः स्त्रियं मूढगर्भा यथोक्ताश्चाप्युपद्रवाः ॥ ११ ॥

इति मूढगर्भनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

सूतिका कर्मकुशला वृद्धा दक्षाङ्गना भृशम् ।
 योनिं तु मूढगर्भायास्तेलेनाभ्यज्य पाणिना ॥ १२ ॥

संस्वेद्य मन्दं निर्वति हस्तं योनौ निधाय च ।
 कीलस्य पाणिपादौ च समीकृत्योर्ध्वगौ धिया ॥ १३ ॥
 योनेरभिमुखं तस्य मूर्धानं विरचय्य च ।
 पाणिं निष्काश्य च ततो निजं कर्म समाचरेत् ॥ १४ ॥
 एष एव विधिः कार्यः परिघेऽपि तथा धिया ।
 बीजप्रतिखुरौ द्वौ तु योनिपृष्ठकटिग्रहैः ॥ १५ ॥
 उपाचरेत्तथा गर्भो गर्भिणी वैति नो मृतिम् ।
 मृते गर्भे भिषक्प्राज्ञश्छित्त्वा शस्त्रेण यत्नतः ॥ १६ ॥
 आकर्षेदल्पमल्पं तु तत्स्वण्डं योनितः शनैः ।
 न चोपेक्षेन्मृतं गर्भं मुहूर्तमपि पण्डितः ॥ १७ ॥
 सोऽन्यथा जननीं हन्ति रुद्धश्वासः पशुर्यथा ।
 भण्डलाग्रेण कर्तव्यं छेदमन्तर्विजानता ॥ १८ ॥
 वृद्धिपत्रं तु तीक्ष्णाग्रं नारीं हिंस्यात्कथंचन ।
 सचेतनं तु शस्त्रेण न कथंचन दारयेत् ॥ १९ ॥
 आत्मानं जननीं वाऽपि हन्यादाशु सचेतनः ।
 अभिघातमृतायास्तु गर्भः प्रस्यन्दते यदि ॥ २० ॥
 पाटयित्वोद्धरेज्जीवं यत्नाद्रक्षेत्रिजं यशः ।

स्त्रावप्रतिबन्धोपायमाह—

मधुकं शाकबीजं च पयस्या सुरदारु च ॥ २१ ॥
 अश्मन्तकः कृष्णतिलास्ताम्रवल्ली शतावरी ।
 वृक्षादनी पयस्या च तथैवोत्पलसारिवा ॥ २२ ॥
 अनन्ता सारिवा रास्ना पद्मा मधुकमेव च ।
 बृहतीद्वयकाश्मर्यक्षीरिशृङ्गात्वचो घृतम् ॥ २३ ॥
 पृथक्पर्णी बला शिशुः श्वदंष्ट्रा मधुयष्टिका ।
 शृङ्गाटकं विसं द्राक्षा कसेरु मधुकं सिता ॥ २४ ॥
 वत्सैते सप्त योगाः स्युरर्धश्लोकसमापनाः ।
 यथाक्रमं प्रयोक्तव्या गर्भस्त्रावे पयोन्विताः ॥ २५ ॥

गर्भरक्षणोपायमाह—

कपित्थविल्वबृहतीपटोलेक्षुनिदिग्धिकाः ।
 मूलानि क्षीरसिद्धानि पायथेद्भिषगष्टमे ॥ २६ ॥

10

10

10

10

10

नवमे मधुकानन्तापयस्यासारिवाः पिबेत् ।

पयस्तु दशमे शुण्ठ्या शृतशीतं प्रशस्यते ॥ २७ ॥

शूलनिवारणोपायमाह—

सक्षीरा वा हिता शुण्ठी मधुकं देवदारु च ।

क्षीरिकामुत्पलं दुग्धं सभङ्गामूलकं शिवाम् ॥ २८ ॥

पिबेदेकादशे मासि गर्भिणी शूलशान्तये ।

सिताविदारीकाकोलीक्षीरं वाऽपि मृणालिकाम् ॥ २९ ॥

गर्भिणी द्वादशे मासे पिबेद्वातघ्नमोषधम् ।

एवमाप्यायते गर्भस्तीव्रा रुक्च प्रशाम्यति ॥ ३० ॥

कुशकाशोरुबूकाणां मूलेर्गोक्षुरकस्य च ।

शृतं दुग्धं सितायुक्तं गर्भिण्याः शूलनुत्परम् ॥ ३१ ॥

कसेरुशृङ्गाटकपद्मकोत्पलं समुद्रपर्णिमधुकं सशर्करम् ।

सशूलगर्भसुतिपीडिताऽबला पयोविमिश्रं पयसाऽन्नमुक्पिबेत् ॥ ३२ ॥

गर्भिणीज्वरादिशान्त्युपायमाह—

चन्दनं सारिवालोधमुद्रीकाशर्करान्वितम् ।

क्राथं कृत्वा प्रदातव्यं गर्भिण्या ज्वरशान्तये ॥ ३३ ॥

आम्रजम्बूत्वचाक्राथैर्लाजसवत्ववलेहिका ।

लीद्वा निहन्ति ग्रहणीं गर्भिण्या दुस्तरामपि ॥ ३४ ॥

अथ ह्रीविरादिक्राथः—

ह्रीविरारलुरक्तचन्दनबलाधान्याकवत्सादनी-

मुस्तोशीरयवासपर्पटविषाक्राथं पिबेद्गर्भिणी ।

नानाव्याधियुतातिसारगदके त्वस्रस्रुतौ वा ज्वरे

योगोऽयं मुनिभिः पुरा निगदितः शूलामयेऽप्युत्तमः ॥ ३५ ॥

इति ह्रीविरादिक्राथः ।

गर्भिण्युपद्रवनिवारणोपायः—

गोधामांसं प्रयत्नेन गर्भिणीनां प्रदापयेत् ।

वातपित्तकफोत्था ये ग्रहोत्था येऽप्युपद्रवाः ॥ ३६ ॥

गर्भिण्युपद्रवांस्तस्ति गोधामांसमपोहति ।

गर्भपातनिवारणोपायः—

लज्जालुधातकीपुष्पमुत्पलं मधुलोध्रकम् ॥ ३७ ॥

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE

VOLUME 37

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
PUBLISHED BY THE
EDUCATIONAL SOCIETY
OF GREAT BRITAIN
AND IRELAND
LONDON
1907

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
PUBLISHED BY THE
EDUCATIONAL SOCIETY
OF GREAT BRITAIN
AND IRELAND
LONDON
1907

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
PUBLISHED BY THE
EDUCATIONAL SOCIETY
OF GREAT BRITAIN
AND IRELAND
LONDON
1907

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
PUBLISHED BY THE
EDUCATIONAL SOCIETY
OF GREAT BRITAIN
AND IRELAND
LONDON
1907

जलस्थया स्त्रिया पीतं गर्भपातं निवारयेत् ।
 पतन्तं स्तम्भयेद्गर्भं लुलालकरमुत्तिका ॥ ३८ ॥
 मधुच्छागीपयः पीतं किं वा श्वेताऽपराजिता ।
 पारावतमलः पीतरूपं तण्डुलवारिणा ।
 गर्भिणीगर्भतो रक्तं स्तम्भयेन्निरुपद्रवम् ॥ ३९ ॥
 शकराबिसतिलं समांशकं माक्षिकेण सह भक्ष्यते स्त्रिया ।
 नास्ति गर्भपतनोद्भवं भयं पापभीतिरिव तीर्थसेवया ॥ ४० ॥
 शृङ्गाटकं बिसं द्राक्षा कसेरुर्मधुकं सिता ।
 निवारयन्त्यमी गर्भपातं परमवेदनम् ॥ ४१ ॥
 कङ्कतीमूलमाबद्धं कुमारीसूत्रकैः समैः ।
 क्राटिदेशे नितम्बिन्या गर्भपातं निवारयेत् ॥ ४२ ॥

मूढगर्भापकर्षणमाह—

पाठासुरसर्पिहास्यमयूरकुटजैः पृथक् ।
 नाभिबस्तिभगे लेपो मूढगर्भापकर्षणः ॥ ४३ ॥

सुखप्रसवोपायमाह—

मातुलुङ्गस्य मूलानि मधुकं मधुसंयुतम् ।
 घृतेन सह पातव्यं सुखं नारी प्रसूयते ॥ ४४ ॥
 तुषाम्बुपरिपिष्टेन मूलेन परिलेपयेत् ।
 लाङ्गल्याश्चरणौ सूते क्षिप्रमापन्नगर्भिणी ॥ ४५ ॥
 सुदर्शनात्पृश्निपण्या अपामार्गस्य वा पृथक् ।
 नाभियोनिप्रलेपेन क्षिप्रं सूते नितम्बिनी ॥ ४६ ॥
 पुटदग्धभुजगकञ्जुकजलमधुपूरितेक्षणद्वन्द्वम् ।
 सद्यो भवति विशल्या विमूढगर्भाऽपि गर्भवती ॥ ४७ ॥
 इहामृतं च सोमश्च चित्रभानुश्च भामिनि ।
 उच्चैःश्रवाश्च तुरगो मन्दिरे निवसन्तु ते ॥ ४८ ॥
 इदममृतमपां समुद्धृतं वे तव लघुगर्भमिमं विमुञ्चतु स्त्रि ।
 तदनलपवनार्कवासवास्ते सह लवणाम्बुधरैर्दिशन्तु शान्तिम् ॥ ४९ ॥
 मुक्ताः पाशविपाशाश्च मुक्ताः सूर्यस्य रश्मयः ।
 मुक्ताः सर्वभयाद्गर्भ एहि मा चिरमाचिरं स्वाहा ॥ ५० ॥

The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. It highlights the journal's role in providing
 a platform for the dissemination of research findings and
 the advancement of the discipline. The second part of the
 paper focuses on the journal's commitment to diversity and
 inclusion, emphasizing the need for a more equitable and
 inclusive research agenda. The third part of the paper
 discusses the journal's efforts to promote the use of
 research in management education, highlighting the
 importance of evidence-based practice. The fourth part of
 the paper discusses the journal's commitment to
 transparency and accountability, emphasizing the need for
 open access and the sharing of research data. The fifth
 part of the paper discusses the journal's commitment to
 the future of management education, highlighting the
 need for innovation and the development of new
 research paradigms. The final part of the paper
 discusses the journal's commitment to the management
 education community, emphasizing the need for
 collaboration and the sharing of resources.

1. **Introduction**
 2. **Background**
 3. **Methodology**
 4. **Results**
 5. **Conclusion**
 6. **References**
 7. **Appendix**
 8. **Index**
 9. **Table of Contents**
 10. **Figure 1**
 11. **Figure 2**
 12. **Figure 3**
 13. **Figure 4**
 14. **Figure 5**
 15. **Figure 6**
 16. **Figure 7**
 17. **Figure 8**
 18. **Figure 9**
 19. **Figure 10**
 20. **Figure 11**
 21. **Figure 12**
 22. **Figure 13**
 23. **Figure 14**
 24. **Figure 15**
 25. **Figure 16**
 26. **Figure 17**
 27. **Figure 18**
 28. **Figure 19**
 29. **Figure 20**
 30. **Figure 21**
 31. **Figure 22**
 32. **Figure 23**
 33. **Figure 24**
 34. **Figure 25**
 35. **Figure 26**
 36. **Figure 27**
 37. **Figure 28**
 38. **Figure 29**
 39. **Figure 30**
 40. **Figure 31**
 41. **Figure 32**
 42. **Figure 33**
 43. **Figure 34**
 44. **Figure 35**
 45. **Figure 36**
 46. **Figure 37**
 47. **Figure 38**
 48. **Figure 39**
 49. **Figure 40**
 50. **Figure 41**
 51. **Figure 42**
 52. **Figure 43**
 53. **Figure 44**
 54. **Figure 45**
 55. **Figure 46**
 56. **Figure 47**
 57. **Figure 48**
 58. **Figure 49**
 59. **Figure 50**
 60. **Figure 51**
 61. **Figure 52**
 62. **Figure 53**
 63. **Figure 54**
 64. **Figure 55**
 65. **Figure 56**
 66. **Figure 57**
 67. **Figure 58**
 68. **Figure 59**
 69. **Figure 60**
 70. **Figure 61**
 71. **Figure 62**
 72. **Figure 63**
 73. **Figure 64**
 74. **Figure 65**
 75. **Figure 66**
 76. **Figure 67**
 77. **Figure 68**
 78. **Figure 69**
 79. **Figure 70**
 80. **Figure 71**
 81. **Figure 72**
 82. **Figure 73**
 83. **Figure 74**
 84. **Figure 75**
 85. **Figure 76**
 86. **Figure 77**
 87. **Figure 78**
 88. **Figure 79**
 89. **Figure 80**
 90. **Figure 81**
 91. **Figure 82**
 92. **Figure 83**
 93. **Figure 84**
 94. **Figure 85**
 95. **Figure 86**
 96. **Figure 87**
 97. **Figure 88**
 98. **Figure 89**
 99. **Figure 90**
 100. **Figure 91**
 101. **Figure 92**
 102. **Figure 93**
 103. **Figure 94**
 104. **Figure 95**
 105. **Figure 96**
 106. **Figure 97**
 107. **Figure 98**
 108. **Figure 99**
 109. **Figure 100**
 110. **Figure 101**
 111. **Figure 102**
 112. **Figure 103**
 113. **Figure 104**
 114. **Figure 105**
 115. **Figure 106**
 116. **Figure 107**
 117. **Figure 108**
 118. **Figure 109**
 119. **Figure 110**
 120. **Figure 111**
 121. **Figure 112**
 122. **Figure 113**
 123. **Figure 114**
 124. **Figure 115**
 125. **Figure 116**
 126. **Figure 117**
 127. **Figure 118**
 128. **Figure 119**
 129. **Figure 120**
 130. **Figure 121**
 131. **Figure 122**
 132. **Figure 123**
 133. **Figure 124**
 134. **Figure 125**
 135. **Figure 126**
 136. **Figure 127**
 137. **Figure 128**
 138. **Figure 129**
 139. **Figure 130**
 140. **Figure 131**
 141. **Figure 132**
 142. **Figure 133**
 143. **Figure 134**
 144. **Figure 135**
 145. **Figure 136**
 146. **Figure 137**
 147. **Figure 138**
 148. **Figure 139**
 149. **Figure 140**
 150. **Figure 141**
 151. **Figure 142**
 152. **Figure 143**
 153. **Figure 144**
 154. **Figure 145**
 155. **Figure 146**
 156. **Figure 147**
 157. **Figure 148**
 158. **Figure 149**
 159. **Figure 150**
 160. **Figure 151**
 161. **Figure 152**
 162. **Figure 153**
 163. **Figure 154**
 164. **Figure 155**
 165. **Figure 156**
 166. **Figure 157**
 167. **Figure 158**
 168. **Figure 159**
 169. **Figure 160**
 170. **Figure 161**
 171. **Figure 162**
 172. **Figure 163**
 173. **Figure 164**
 174. **Figure 165**
 175. **Figure 166**
 176. **Figure 167**
 177. **Figure 168**
 178. **Figure 169**
 179. **Figure 170**
 180. **Figure 171**
 181. **Figure 172**
 182. **Figure 173**
 183. **Figure 174**
 184. **Figure 175**
 185. **Figure 176**
 186. **Figure 177**
 187. **Figure 178**
 188. **Figure 179**
 189. **Figure 180**
 190. **Figure 181**
 191. **Figure 182**
 192. **Figure 183**
 193. **Figure 184**
 194. **Figure 185**
 195. **Figure 186**
 196. **Figure 187**
 197. **Figure 188**
 198. **Figure 189**
 199. **Figure 190**
 200. **Figure 191**
 201. **Figure 192**
 202. **Figure 193**
 203. **Figure 194**
 204. **Figure 195**
 205. **Figure 196**
 206. **Figure 197**
 207. **Figure 198**
 208. **Figure 199**
 209. **Figure 200**
 210. **Figure 201**
 211. **Figure 202**
 212. **Figure 203**
 213. **Figure 204**
 214. **Figure 205**
 215. **Figure 206**
 216. **Figure 207**
 217. **Figure 208**

The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. It highlights the journal's role in providing
 a platform for the dissemination of research findings and
 the advancement of the discipline. The second part of the
 paper focuses on the journal's commitment to diversity and
 inclusion, emphasizing the need for a more equitable and
 inclusive research agenda. The third part of the paper
 discusses the journal's efforts to promote the use of
 research findings in the classroom, highlighting the
 importance of evidence-based practice in management
 education. The fourth part of the paper discusses the
 journal's commitment to the development of the
 management education field, highlighting the need for
 ongoing research and innovation. The fifth part of the
 paper discusses the journal's commitment to the
 advancement of the management education field,
 highlighting the need for ongoing research and
 innovation. The sixth part of the paper discusses the
 journal's commitment to the advancement of the
 management education field, highlighting the need for
 ongoing research and innovation. The seventh part of
 the paper discusses the journal's commitment to the
 advancement of the management education field,
 highlighting the need for ongoing research and
 innovation. The eighth part of the paper discusses the
 journal's commitment to the advancement of the
 management education field, highlighting the need for
 ongoing research and innovation. The ninth part of the
 paper discusses the journal's commitment to the
 advancement of the management education field,
 highlighting the need for ongoing research and
 innovation. The tenth part of the paper discusses the
 journal's commitment to the advancement of the
 management education field, highlighting the need for
 ongoing research and innovation.

जलं च्यावनमन्त्रेण सप्तवाराभिमन्त्रितम् ।
पीत्वा प्रसूयते नारी दृष्ट्वा चाभयत्रिंशकम् ॥ ५१ ॥
कलारसाष्टभिः पक्षदिगष्टादशभिः क्रमात् ।
अर्कैश्च भुवनैर्वैदैरुभयत्रिंशकं वदेत् ॥ ५२ ॥

उभयत्रिंशपञ्चम् ।

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

इति पञ्चं दर्शयित्वा

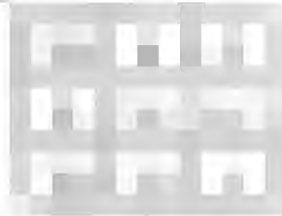
हिमवद्दक्षिणे पार्श्वे सुरसा नाम यक्षिणी ।
तस्या नूपुरशब्देन विशल्या भव गर्भिणी ॥ ५३ ॥
इमं श्लोकं पठित्वा तु क्षिपेवक्षतपञ्चकम् ।
गर्भिण्युपरि सद्यः सा गर्भं मुञ्चति गर्भिणी ॥ ५४ ॥

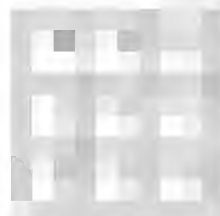
गजाम्बिवेदाशशिवाणखेटारसाद्विपक्षा नवकोष्ठमध्ये ।
प्रसूतिकाले लिखितं मृहीत्वा सुखेन नारीप्रसवोऽतिशीघ्रम् ॥ ५५ ॥

अन्यच्च—

८	३	४
१	५	९
६	७	२

बनितायाः प्रसूताया वातो रूक्षेण वर्धितः ।
तीक्ष्णैरशोधितं रक्तं रुद्ध्वा ग्रन्थिं करोति हि ॥ ५६ ॥
नाभ्यधः पार्श्वयोर्वस्तौ वस्तिमूर्धनि वाऽपि वा ।
आध्मानं मूत्रसङ्गश्च नाभिबस्त्युदरेऽतिरुक् ॥ ५७ ॥
एतद्विषग्भिरुदितं मक्कलामयलक्षणम् ।
प्रसवस्य विलम्बे तु धूपयेदमितो भगम् ॥ ५८ ॥
कृष्णसर्पस्य निर्मोकैस्तथा पिण्डीतकेन वा ।
तन्तुना लाङ्गलीमूलं बध्नीयान्द्रस्तपादयोः ॥ ५९ ॥
सुवर्चलां विशल्यां वा धारयेदाशु सूतये ।





इक्षोरुत्तरमूलं स्वतनुमानेन तन्तुना ॥ ६० ॥

बद्ध्वा कट्यां तु नियतं सुखं नारी प्रसूयते ।

अथ वातशुष्कगर्भस्य चिकित्सा—

गर्भो वातेन संशुष्को नोदरं पूरयेद्यदि ॥ ६१ ॥

तं बृंहणीयैः सांसेन्द्रं दुग्धं मांसरसं पिबेत् ।

शुक्रार्तवमजाताङ्गप्रत्यङ्गं मरुताऽर्दितम् ॥ ६२ ॥

त्यक्तं जीवेन तत्तस्मात्क्राथितं चावतिष्ठते ।

शुक्रार्तवादिको वायुरुदराध्मानकृद्भवेत् ॥ ६३ ॥

कदाचिच्चेत्तदाऽऽध्मानं स्वयमेवोपजायते ।

तदा स गर्भो भवति लोके नागोदराह्वयः * ॥ ६४ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां मूढगर्भनिदानचिकित्साकथनं नाम चत्वारिंश-
दधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १४० ॥

अथैकचत्वारिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ मक्कल्लनिदानम्—

पृथिव्यां पतिते वत्से योनौ पीडनमिष्यते ।

अप्रवेशो यथा वायोस्तथा संरक्षणक्रिया ॥ १ ॥

वायुः प्रकुपितः कुर्यात्संरुध्य रुधिरं च्युतम् ।

सूताया हृच्छिरोवस्तिशूलं + मक्कल्लसंज्ञितम् ॥ २ ॥

इति मक्कल्लनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

लङ्घनाभ्यञ्जनस्वेदाः कर्तव्याश्च यथोदिताः ।

क्रिया वातप्रशमनाः पूगाद्यावर्तिताम्बु च ॥ ३ ॥

हिताय सूतिकायाः स्वकुलाचारविधिं चरेत् ।

त्रिरात्रानन्तरं ग्राह्यं शोधनं च यथाबलम् ॥ ४ ॥

* एतस्याग्रेऽर्थं ग्रन्थो ग. पुस्तके—अथापरः पातनविधिः—

कटुतुम्ब्यहिनिर्मोककृतवेधनसर्षपैः । कटुतैलान्वितैर्धूपो योनेः पातयते परम् ॥ १ ॥

कचवेष्टे तथाऽङ्गल्या घृष्टे कण्ठे सुखं पतेत् । परामूलेन लाङ्गल्या संलिप्ते पाणिपादे वा ॥ २ ॥

इत्यपरः पातनविधिः । + ग. पुस्तके सर्वत्र मधुलशब्देनैव व्यवहारः क्रियते ।

1. The first part of the document is a letter from the President of the United States to the Congress, dated January 1, 1861.

2. The second part is a report from the Secretary of the Treasury, dated January 1, 1861.

3. The third part is a report from the Secretary of the Interior, dated January 1, 1861.

4. The fourth part is a report from the Secretary of the Navy, dated January 1, 1861.

5. The fifth part is a report from the Secretary of the War, dated January 1, 1861.

6. The sixth part is a report from the Secretary of the State, dated January 1, 1861.

7. The seventh part is a report from the Secretary of the Army, dated January 1, 1861.

8. The eighth part is a report from the Secretary of the Navy, dated January 1, 1861.

9. The ninth part is a report from the Secretary of the War, dated January 1, 1861.

10. The tenth part is a report from the Secretary of the State, dated January 1, 1861.

11. The eleventh part is a report from the Secretary of the Army, dated January 1, 1861.

12. The twelfth part is a report from the Secretary of the Navy, dated January 1, 1861.

13. The thirteenth part is a report from the Secretary of the War, dated January 1, 1861.

14. The fourteenth part is a report from the Secretary of the State, dated January 1, 1861.

उपकुञ्चीं पिप्पलीं च मदिरां लाभतः पिबेत् ।
 सौवर्चलेन संयुक्तां योनिशूलनिवृत्तये ॥ ५ ॥
 यवक्षारं पिबेद्द्वयसर्पिषोष्णोदकेन वा ।
 मक्कलदोषशान्त्यर्थं किंवा दशजटाशृतम् ॥ ६ ॥
 त्रिकटुत्रिजातधान्यकचूर्णानि पुराणगुडमिश्राणि ।
 पीत्वैव सूतिका स्त्री जहाति मक्कलसंज्ञकं शूलम् ॥ ७ ॥
 शोणं बोलं सघृतं सगुडं गुटिकीकृतं गिलितम् ।
 मक्कलाभिधशूलं हन्ति समूलं सशोणितातङ्कम् ॥ ८ ॥
 हिङ्गुशुद्धं ससर्पिष्कं भुक्तं मक्कलशूलनुत् ।
 द्यूषणं पिप्पलीमूलं दारु चव्यं सचित्रकम् ॥ ९ ॥
 रजन्यौ हृषुषाज्जीसक्षारं लवणत्रयम् ।
 कल्कमुष्णाम्बुना पीत्वा सुखेनाऽऽशु विरिच्यते ॥ १० ॥
 त्रिकटुकचातुर्जातककुस्तुम्बुरुचूर्णसंयुक्तम् ।
 खादेद्गुडं पुराणं नित्यं नारी मक्कलदलनाय ॥ ११ ॥
 इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां मक्कलशूलनिदानचिकित्साकथनं नामैक-
 चत्वारिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १४१ ॥

अथ द्विचत्वारिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ सूतिकारोगनिदानम्—

अङ्गमर्दो ज्वरः कम्पः पिपासा गुरुगात्रता ।
 शोफः शूलातिसारौ च सूतिकारोगलक्षणम् ॥ १ ॥
 मिथ्योपचारात्संक्रेशाद्विषमाजीर्णभोजनात् ।
 सूतिकायाश्च ये रोगा जायन्ते दारुणाश्च ते ॥ २ ॥
 ज्वरातिसारशोथाश्च शूलानाहबलक्षयाः ।
 तन्द्रारुचिप्रसेकाद्याः कफवातोद्भवाश्च ये ॥ ३ ॥
 कुच्छ्रसाध्या हि ते रोगाः क्षीणमांसबलाग्निताः ।
 ते सर्वे सूतिकानाम्ना रोगास्ते चाप्युपद्रवाः ॥ ४ ॥
 इति सूतिकारोगनिदानम् ।

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
VOLUME XLII
PART I
1911
PUBLISHED BY THE
EDUCATIONAL SOCIETY
LONDON
PRINTED BY
HARRISON AND SONS
ST. MARTIN'S LANE
W.C.2

THE JOURNAL OF THE
ROYAL ANTHROPOLOGICAL INSTITUTE
VOLUME XLII
PART II
1911
PUBLISHED BY THE
EDUCATIONAL SOCIETY
LONDON
PRINTED BY
HARRISON AND SONS
ST. MARTIN'S LANE
W.C.2

अथ चिकित्सा—

अथ दशमूलकाथः—

दशमूलीशृतं तोयं कवोष्णं पिप्पलीयुतम् ।

पीतं तत्सूतिकारोगमुदग्रमपि कृन्तति ॥ ५ ॥

इति दशमूलकाथः ।

अथ निर्गुण्ड्यादिकाथः—

संयोजितो दलितया कणया कवोष्णो

निर्गुण्डिकालशुननागरजः कषायः ।

पीतो निहन्ति कफमारुतकोपजातं

सूत्यामयं सकलमेव सुदुस्तरं च ॥ ६ ॥

इति निर्गुण्ड्यादिकाथः ।

अथ देवदारवादिकाथः—

सूतिकारोगशान्त्यर्थं कुर्याद्वातहरीं क्रियाम् ।

स्वेदोपनाहनाभ्यङ्गः सावगाहः प्रशस्यते ॥ ७ ॥

सुरदारुविश्ववचासुताघनकर्कटत्रिकण्टकामया-

कटुकाकिरातविषायवासनिदिग्धिकायुगधान्यैः ।

गदपिप्पलीद्वयकृष्णजीरककटफलश्च शृतो जये-

द्विधिवत्स सिन्धुजरामठो नवसूतिकासकलामयम् ॥ ८ ॥

इति देवदारवादिकाथः ।

अथामृतादिकाथः—

सुतसलोहमादाय वारुण्यां विनिधाषयेत् ।

सा पीता सूतिकातङ्कांस्तान्सर्वानपकर्षति ॥ ९ ॥

अमृतानागरसहचरभद्रोत्कटपञ्चमूलजलदजलम् ।

शृतशीतं पीतं मधुना सह शमयति सूतिकातङ्कम् ॥ १० ॥

इत्यमृतादिकाथः ।

अथ सहचरादिकाथः—

सहचरकुलत्थपुष्करदारुनिशादारुवेतसकाथः ।

पीतः सहिङ्गुलवणः शमयति शूलज्वरौ सूत्याः ॥ ११ ॥

इति सहचरादिकाथः ।



अथ मध्यमसौभाग्यशुण्ठ्यवलेहः—

नागरस्य पलान्यष्टौ घृतस्थे च चतुष्पलम् ।
क्षीराढकेन संयुक्तं खण्डस्यार्धतुलां पचेत् ॥ १२ ॥
शताह्वाजीरकव्योषत्रिसुगन्धिजवानिका ।
कारवीमिशिव्याग्निसुस्तानां च पलं पलम् ॥ १३ ॥
शुद्धाभ्रकायसंयोज्यं त्रिपलं च पृथक्पृथक् ।
स्वर्णं तारं ततो योज्यं यथा चाग्निबलं भवेत् ॥ १४ ॥
लेहीभूतमिदं सिद्धं घृतभाण्डे निधापयेत् ।
तद्यथाग्निबलं स्वादेत्सूतिका तु विशेषतः ॥ १५ ॥
बल्यं वण्यं तथा पुष्टं बलीपलितनाशनम् ।
वयसः स्थापनं हृद्यं मन्दाग्नेर्दीपनं परम् ॥ १६ ॥
आमवातप्रशमनं सौभाग्यकरमुत्तमम् ।
मक्कलशूलशमनं सूतिकारोगनाशनम् ॥ १७ ॥

इति मध्यमसौभाग्यशुण्ठ्यवलेहः ।

अथापरा सौभाग्यशुण्ठी—

आज्यस्याञ्जलियुग्ममत्र पयसैः कंसं तुलार्धं तथा-
खण्डस्यापि पचेद्विचूर्णितमिदं विश्वौषधं प्रक्षिपेत् ।
प्रस्थार्धं गुडवद्विपाच्य विधिना मुष्टित्रयं धान्यकं
मिश्याः पञ्चपलं पलं कृमिरिपोः साजाजिजीरं तथा ॥ १८ ॥
व्योषाम्भोददलोरगेन्द्रविडकाभृङ्गस्य च प्रक्षिपेत्
तृट्कासज्वरपाण्डुरोगशमनं विडभेदविध्वंसनम् ।
शूलारोचकनाशनं कृमिहरं मन्दाग्निसंदीपनं
सूतानां खलु खण्डनागरमिदं सौभाग्यदं सेवितम् ॥ १९ ॥
इत्यपरा सौभाग्यशुण्ठी ।

अथ पञ्चजीरावलेहः—

जीराल्लामिशिमैथिदीप्यहपुषाषट्कद्रुविश्वं पृथु-
र्वन्दाशीतकपित्थवेल्हबदरश्यामाभयानागजम् ।

१ ग. 'स्थ' पञ्चविंशतिम् । क्षी° । २ क. 'सः' प्रस्थद्वयं खण्डतः पञ्चाशत्पलमत्र चूर्णितमथ
प्रक्षि° । ३ क. कच्ची ।

ARTICLE
ORIGINAL ARTICLES

THE EFFECT OF THE
VITAMIN C DEFICIENCY
ON THE METABOLISM OF
THE CARBOHYDRATE
AND LIPID METABOLISM
IN THE RAT
BY
J. H. HARRIS, JR., M.D., AND
J. H. HARRIS, JR., M.D.
From the Department of Medicine,
University of California, Los Angeles,
California

Received for publication, June 1, 1934.

Revised manuscript received, July 1, 1934.

The effect of the vitamin C deficiency on the metabolism of the carbohydrate and lipid metabolism in the rat has been studied. The results show that the deficiency of vitamin C causes a marked increase in the rate of oxidation of the carbohydrate and lipid metabolism. This increase is not due to a direct effect of the deficiency on the metabolism of the carbohydrate and lipid, but is due to a secondary effect of the deficiency on the metabolism of the carbohydrate and lipid. The results also show that the deficiency of vitamin C causes a marked increase in the rate of oxidation of the carbohydrate and lipid metabolism. This increase is not due to a direct effect of the deficiency on the metabolism of the carbohydrate and lipid, but is due to a secondary effect of the deficiency on the metabolism of the carbohydrate and lipid.

From the Department of Medicine,
University of California, Los Angeles,
California

Revised manuscript received, July 1, 1934.

The effect of the vitamin C deficiency on the metabolism of the carbohydrate and lipid metabolism in the rat has been studied. The results show that the deficiency of vitamin C causes a marked increase in the rate of oxidation of the carbohydrate and lipid metabolism. This increase is not due to a direct effect of the deficiency on the metabolism of the carbohydrate and lipid, but is due to a secondary effect of the deficiency on the metabolism of the carbohydrate and lipid.

THE JOURNAL OF THE AMERICAN MEDICAL ASSOCIATION
PUBLISHED WEEKLY

बैल्वं क्षीरगुडाज्यभाजनतुलार्धं प्रस्थपक्वं चतुः
कंसैलौषधकृष्णजीरमबलार्तीः पञ्चजीरो जयेत् ॥ २० ॥
इति पञ्चजीरावलेहः ।

अथ प्रतापलङ्केश्वरो रसः—

एकेन्दुचन्द्रानलवार्धिकुम्भिकलैकभागं कमशो विमिश्रम् ।
सूताभ्रगन्धोषणलोहशङ्खवन्योपलाभस्मविषं च पिष्टम् ॥ २१ ॥
प्रसूतिवर्तेऽनिलदन्तबन्धे चाऽऽर्द्राभ्रसा बल्लममुष्य दद्यात् ।
वातामये श्लेष्मगदेऽर्शासि स्यात्पुरामृतार्द्रात्रिफलायुतोऽयम् ।
सशृङ्गबेरद्रव एष हन्ति ससंनिपातं ज्वरमुग्ररूपम् ॥ २२ ॥
इति प्रतापलङ्केश्वरो रसः ।

इति सूतिकारोगनिदानचिकित्साकथनं नाम द्विचत्वारिंशदधिक-
शततमस्तरङ्गः ॥ १४२ ॥

अथ त्रिचत्वारिंशदधिकः शततमस्तरङ्गः ।

अथ स्तनरोगः—

सक्षीरौ वाप्यदुग्धौ वा दोषं प्राप्य स्तनौ स्त्रियाः ।
प्रदूष्य मांसं रुधिरं स्तनरोगाय कल्पते ॥ १ ॥
पञ्चानामपि तेषां हि रक्तजं विद्रधिं विना ।
लक्षणानि समानानि बाह्यविद्रधिलक्षणैः ॥ २ ॥

अथ स्तनशोथोपक्रमः—

शोथं स्तनोत्थितमवेक्ष्य भिषग्विदध्या-
द्यद्विद्रधावभिहितं बहुधा विधानम् ।
आमे विदह्यति तथैव गते च पाकं
स्यातां स्तनौ सततमेव विवृद्धिहीनौ ॥ ३ ॥
जलौकाभिर्हरेद्रक्तं न स्तनावुपनाहयेत् ।
पित्तघ्नानि तु शीतानि द्रव्याण्यत्र नियोजयेत् ॥ ४ ॥

१ ख. पुस्तके—वातानिलदन्तबन्धमाद्रौम्बुना धोरसुमंनिपाते ।

निजानुपानैर्निजपथ्ययोगैः सर्वातिसारग्रहणीगदेषु ॥

प्रतापलङ्केश्वरनामधेयो रसः प्रयुक्तो गिरिराजपुत्र्या । इति पाठः ।



योजयेद्वृणवत्सर्वं गतिं संरक्ष्य पाटयेत् ।
 लेपो विशालामूलस्य हन्ति पीडां स्तनोत्थिताम् ॥ ५ ॥
 पिप्पल्यास्तप्तलोहं च निर्वाप्य सलिलं पिबेत् ।
 दुःखस्तना च या नारी सा शीघ्रं सुखिता भवेत् ॥ ६ ॥
 सहरिद्रं कुमार्यास्तु मूलं पानीयपेषितम् ।
 स्तनरोगं हन्ति लेपात्किं वा कर्कोटिका जटा ॥ ७ ॥

इति स्तनशोथोपक्रमः ।

अथ स्तन्यरोगः—

विशस्तेष्वपि गात्रेषु यथा शुक्रं न दृश्यते ।
 सर्वदेहाश्रितत्वाच्च शुक्लक्षणमुच्यते ॥ ८ ॥
 तदेव चेष्टयुवतेर्दर्शनात्स्मरणादपि ।
 शब्दसंश्रवणात्स्पर्शात्संहर्षाच्च प्रवर्तते ॥ ९ ॥
 सुप्रसन्नं मनस्तत्र हर्षणे हेतुरुच्यते ।
 आहाररसयोनित्वादेवं स्तन्यमपि स्त्रियाः ॥ १० ॥
 तदेवापत्यसंस्पर्शाद्दर्शनात्स्मरणादपि ।
 ग्रहणाच्च शरीरस्य शुक्रवत्संप्रवर्तते ॥ ११ ॥
 स्नेहो निरन्तरस्तत्र प्रसवे हेतुरुच्यते ।
 गुरुभिर्विषमैरन्नेर्दुष्टैर्दोषैः प्रदूषितम् ॥ १२ ॥
 क्षीरं धात्र्याः कुमारस्य नानारोगाय कल्पते ।

सप्तविधक्षीरमाह—

लवणं तत्र चाम्लत्वं कटुकं फेनिलं तथा ॥ १३ ॥
 मांसधावनसंकाशं पीताभं च तथा परम् ।
 एतत्सप्तविधं क्षीरमशुद्धं जीवकोऽब्रवीत् ॥ १४ ॥
 मधुतैलघृतप्रख्यं कषायं च तदुत्तमम् ।
 करोति लवणं क्षीरमकाले मलनिर्गमम् ॥ १५ ॥
 कफं तु तत्रगं कुर्यादम्लं तु मुखपाकताम् ।
 मांसधावनसंकाशं छर्दनं कुरुते शिशोः ॥ १६ ॥
 फेनिलं श्वासकासौ च कटुपीते तु मूत्रले ।
 घृतप्रख्ये भवेत्पुष्टिस्तैलाभे बलवान्भवेत् ॥ १७ ॥
 मधुप्रख्ये भवेद्दृक्षः कषायो मारुतो भवेत् ।
 कषायं सलिलप्लावि स्तन्यं मारुतदूषितम् ॥ १८ ॥

कट्वम्ललवणं पीतराजिमत्पित्तसंगतम् ।
 कफजुष्टं घनं तोये निमज्जति सुपिच्छिलम् ॥ १९ ॥
 द्विलिङ्गं द्वन्द्वजं विद्यात्सर्वलिङ्गं त्रिदोषजम् ।
 अदुष्टं वारिनिक्षिप्तमेकी भवति पाण्डुरम् ॥ २० ॥
 मधुरं चाविवर्णं च तत्प्रसन्नं विनिर्दिशेत् ।

वातदुष्टस्तन्य उपायमाह—

तत्र वातात्मके स्तन्ये दशमूलीं त्र्यहं पिबेत् ॥ २१ ॥
 वातव्याधिहरं सर्पिः पीत्वा मृदु विरेचयेत् ।

पित्तदुष्टस्तन्य उपायमाह—

पित्तदुष्टेऽमृताभीरुपटोलं निम्बचन्दनम् ॥ २२ ॥
 धात्री कुमारश्च पिबेत्काथं पीत्वा सशर्करम् ।

कफदुष्टस्तन्य उपायमाह—

कफदुष्टे घृतं पेयं यष्टीसैन्धवसंयुतम् ॥ २३ ॥
 राठपुष्पैः स्तनौ लिम्पेच्छिशोश्च दशनच्छदौ ।
 सुखमेवं वमेद्दालः कफकोपश्च शाम्यति ॥ २४ ॥

द्विदोषदुष्टस्तन्य उपायमाह—

द्वन्द्वदुष्टं द्वियोगाभ्यां पूर्वोक्ताभ्यां विशोधयेत् ।

त्रिदोषदुष्टस्तन्य उपायमाह—

स्तन्ये त्रिदोषसंदुष्टे शकृदामं जलोपमम् ॥ २५ ॥
 नानावर्णरुजं चाऽऽह्नं विबद्धमुपवेश्यते ।

क्षीरालसकमाह—

भ्रमारोचकघर्मास्यपाकतृष्णाज्वरादयः ॥ २६ ॥
 स्युर्यत्र तं विजानीयात्क्षीरालसकसंज्ञकम् ।

अथ स्तन्यविशुद्धिविधिः—

धात्री क्षीरविशुद्ध्यर्थं मुद्गयूषरसाशिनी ॥ २७ ॥
 भार्गवादारुवचाः पिष्ट्वा पिबेत्सातिविषामृताः ।
 पाठां मूवां च भूनिम्बदारुशुण्ठीकलिङ्गकाः ॥ २८ ॥
 सारिवानन्ततिकाख्यास्ततः स्तन्यविशोधनम् ।

इति स्तन्यविशुद्धिविधिः ।

10

10

10

10

10

10

10

10

10

10

10

10

10

10

10

अथ स्तन्यवृद्धिः—

भूमिकूष्माण्डमूलस्य क्षीरपिष्टस्य वा स्तम् ॥ २९ ॥
 पिबेत्सशर्करं तस्याः क्षीरं बहु विवर्धते ।
 शतावरी क्षीरपिष्टा पीता स्तन्यविवर्धिनी ॥ ३० ॥
 कवोष्णं कणया पीतं क्षीरं क्षीरविवर्धनम् ।
 वनकार्पासिकेक्ष्वाकुमूलं सौवीरकेण वा ॥ ३१ ॥
 विदारिकन्दस्वरसं पिबेद्वा स्तन्यवर्धनम् ।

अथ वज्रकाञ्चिकम्—

पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्यं शुण्ठी यवानिका ॥ ३२ ॥
 जीरके द्वे हरिद्वे द्वे विडं सौवर्चलं तथा ।
 एतैरेवौषधैः पिष्टैरारनालं विपाचयेत् ॥ ३३ ॥
 तद्यथाग्निबलं पीत्वा प्रसूता सुखमश्नुते ।
 आमवातहरं वृष्यं कफघ्नं वातनाशनम् ॥ ३४ ॥
 तद्वज्रकाञ्चिकं नाम्ना स्त्रीणामग्निविवर्धनम् ।
 मल्लशूलशमनं परं क्षीरविवर्धनम् ॥ ३५ ॥

इति वज्रकाञ्चिकम् । इति स्तन्यवृद्धिः ।

अथ सूतास्तनरक्षा—

तृतीयेऽङ्गि चतुर्थे वा सूतास्तन्यं प्रवर्तते ।
 ज्वरभ्रमाङ्गमर्दाः स्युस्तेन तस्यास्तदा स्त्रियाः ॥ ३६ ॥
 तदुपद्रवशान्त्यर्थं रक्षामन्त्रेण मार्जयेत् ।
 प्रसूतां कुशतोयेन शतमष्टोत्तरं सूधीः ॥ ३७ ॥
 स यथा ॐ वीरमद्र प्रसूताया अस्या नाशय नाशय ।
 पयोहेतूनादनाशु ज्वराद्यांस्त्वमुमाज्ञया ॥ ३८ ॥

अथ स्तनमार्जनमन्त्रौ यथा—

चत्वारः सागराः पुण्याः स्तनयोः क्षीरवाहिनः ।
 सन्तु ते सुभगे नित्यं बालस्याऽऽयुर्बलप्रदाः ॥ ३९ ॥
 पीत्वा* बालोऽमृतरसं पयस्तव यथेच्छया ।
 दीर्घमायुरवाप्नोति देवाः प्राश्यामृतं यथा ॥ ४० ॥

इति सूतास्तनरक्षा ।

* क. 'पयोऽमृतरसं पीत्वा कुमारस्ते भुभानने' इति सुश्रुतपाठः ।

अथ श्रीमल्लतैलम्—

अलंबुषाकणाकल्कैः सिद्धं तैलं करोति वनितायाः ।

पिचुधरणनस्यदानात्कुचयुगलं श्रीफलाकारम् ॥ ४१ ॥

श्रीपर्णीरसकल्काभ्यां तैलं सिद्धं तिलोद्भवम् ।

तत्तैलं तूलकेनैव स्तनस्योपरि दापयेत् ।

पतितावुत्थितौ स्यातामङ्गनायाः पयोधरौ ॥ ४२ ॥

इति श्रीमल्लतैलम् ।

अथ कासीसाद्यं तैलम्—

कासीसतुरगगन्धासावरगजपिप्पलीविपक्वेन ।

तैलेन यान्ति वृद्धिं स्तनकर्णवराङ्गलिङ्गानि ॥ ४३ ॥

इति कासीसाद्यं तैलम् ।

अथ करवीराद्यं तैलम्—

तालरालाचूर्णमेकद्विचतुर्भागमम्बुना ।

अग्नौ हन्यात्पक्वमेतत्लेपो लोम क्षणार्धतः ॥ ४४ ॥

हरितालभाग एको भागाः पञ्चैव शङ्खचूर्णस्य ।

भागः पलाशमस्मन एवं लेपात्कचा न स्युः ॥ ४५ ॥

करवीरशिफा दन्ती चित्रको धातकीति च ।

रम्भाक्षारोदके तैलं प्रशस्तं लोमशातनम् ॥ ४६ ॥

इति करवीराद्यं तैलम् ।

अथ कर्पूराद्यं तैलम्—

कर्पूरमल्लतकशङ्खचूर्णं क्षारो यवानामजमोदकं च ।

तैलं विपक्वं हरितालमिश्रं लोमानि निर्मूलयति क्षणेन ॥ ४७ ॥

इति कर्पूराद्यं तैलम् । इति लोमनिर्मूलीकरणम् ।

अथ योनिस्कोचीकरणम्—

मोचरससूक्ष्मचूर्णं क्षिप्तं योनौ स्थितं प्रहरम् ।

शतवारं प्रसूताया अपि योनिः सूक्ष्मरन्ध्रा स्यात् ॥ ४८ ॥

भङ्गापटोलिकां दत्त्वा प्रहरं काममन्दिरे ।

शतवारं प्रसूताऽपि पुनर्भवति कन्यका ॥ ४९ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

बम्बूलकुसुमं लोभ्रं दाडिमीमूलवल्कलम् ।

चूर्णीकृत्य क्षिपेद्योनौ योनिसंकोचनं परम् ॥ ५० ॥

सौराष्ट्रिकाटङ्कणसिन्धुशोषमायाफलेन्दुप्रकृता वटीयम् ।

शृतेन बम्बूलभवेन योनौ धृता च सूची गमनेऽसमर्था ॥ ५१ ॥

टङ्कणोऽमरहृद्दी च कर्पूरो मधुना सह ।

वटीकृता धृता योनौ संकोचो जायते भगे ॥ ५२ ॥

इति योनिसंकोचीकरणम् ।

अथ रण्डादियोषिद्गर्भनिवारणपातनविधिः—

तालीसगैरिकं पीतं बिडालपदमात्रकम् ।

शीताम्बुना चतुर्थेऽह्नि वन्ध्यां स्त्रीं कुरुते मृशम् ॥ ५३ ॥

पलाशबीजमध्वाज्यलेपात्सामर्थ्ययोगतः ।

योनिमध्य ऋतौ गर्भं न धत्ते स्त्री कदाचन ॥ ५४ ॥

धूपिते योनिरन्ध्रे तु निम्बकाष्ठेन युक्तितः ।

ऋत्वन्ते रमते या स्त्री न सा गर्भमवाप्नुयात् ॥ ५५ ॥

तैलाविलं सैन्धवखण्डमादौ निधाय रण्डा निजयोनिमध्ये ।

नरेण सार्धं रतमातनोति या सा न गर्भं लभते कदाचित् ॥ ५६ ॥

धत्तूरमूलिका पुष्पे गृहीता कटिसंस्थिता ।

गर्भं निवारयत्येव रण्डावेश्यादियोषिताम् ॥ ५७ ॥

तण्डुलीयकमूलानि पिष्ट्वा तण्डुलवारिणां ।

ऋत्वन्ते व्यहृपीतानि वन्ध्याः कुर्वन्ति योषितः ॥ ५८ ॥

राजिकं तिलतैलं च पिष्ट्वा नारी ऋतौ पिबेत् ।

त्रिदिनं तेन गर्भस्य संभवो नैव जायते ॥ ५९ ॥

पिबति प्रसूतिसमये काञ्जिकयुक्तं जपामवं पुष्पम् ।

न बिभर्ति सा प्रसूतिं धृतेऽपि तस्या न गर्भः स्यात् ॥ ६० ॥

मृतप्रिया प्रोषितभर्तृका या सुखेन सर्वैः सुरतं करोतु ।

पश्चाद्भगे सैन्धवदीप्यतैलैरगर्भदां पोटलिकां ददातु ॥ ६१ ॥

जाता सगर्भैव यदा तदा सा गर्भस्य पातं सहसा करोतु ।

सद्गन्धहिङ्गुसुपलाशबीजमपि प्रपीत्वा ननु गोप्यमेतत् ॥ ६२ ॥

गृञ्जनस्य च बीजानि तिलकारविके अपि ।
गुडेन मुक्तमेतत्तु गर्भं पातयति ध्रुवम् ॥ ६३ ॥
इति रण्डादियोषिद्वर्गनिवारणपातनविधिः ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां श्रीरोगनिदानचिकित्साकथने नाम त्रिचत्वारिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १४९ ॥

अथ चतुश्चत्वारिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ बालरोगनिदानम्—

त्रिविधः कथितो बालः क्षीरान्नोमयवर्तनः ।
स्वास्थ्यं ताभ्यामदुष्टाभ्यां दुष्टाभ्यां रोगसंभवः ॥ १ ॥
घातदुष्टं शिशुः स्तन्यं पिबन्वातगदातुरः ।
क्षामस्वरः कृशाङ्गः स्याद्बुद्धविण्मूत्रमारुतः ॥ २ ॥
स्वेदी भिन्नमलो बालः कामलापित्तरोगवान् ।
तृष्णालुरुष्णसर्वाङ्गः पित्तदुष्टं पिबन्पयः ॥ ३ ॥
कफदुष्टं पिबन्क्षीरं बालस्तु श्लेष्मरोगवान् ।
निद्राद्वितो जडः शून्यकत्राक्षश्छर्दनः शिशुः ॥ ४ ॥
शिशोस्तीव्रामतीव्रां च रोदनालक्षयेद्भुजम् ।
स्रोतांसि चाङ्गसंघांश्च पश्येद्यत्नान्मुहुर्मुहुः ॥ ५ ॥
कुक्कणकः क्षीरक्षोषाच्छिशूनामेव वर्त्मनि ।
जायते तेन तस्त्रेत्रं कण्डुरं च स्रवेन्मुहुः ॥ ६ ॥
शिशुः कुर्याल्ललाटाक्षिकूटनासावघर्षणम् ।
शक्तो नार्कप्रमां द्रष्टुं न वर्त्मोन्मीलनक्षमः ॥ ७ ॥
मातुः कुमारो गर्भिण्याः स्तन्यं प्रायः पिबन्नपि ।
कासाग्निसादवमथुतन्द्राकाश्यारुचिभ्रमैः ॥ ८ ॥
युज्यते कोष्ठवृद्ध्या तु तमाहुः पारिगर्भिकम् ।
रोगं परिभवाख्यं च युज्यतात्त्राग्निदीपनम् ॥ ९ ॥
तालुमांसे कफः क्रुद्धः कुरुते तालुकण्टकम् ।
तेन तालुप्रदेशस्य निम्नता मूर्ध्नि जायते ॥ १० ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city government.

तालुपाते स्तनद्वेषः कृच्छ्रात्पानं शकृद्भवम् ।
 तृडक्षिकण्ठास्यरुजा ग्रीवादुर्धरता वमिः ॥ ११ ॥
 विसर्पस्तु शिशोः प्राणनाशनो बस्तिशीर्षजः ।
 पञ्चवर्णो महापद्मो रोगो दोषत्रयोद्भवः ॥ १२ ॥
 शङ्काभ्यां हृदयं याति हृदयाद्वा गुदं व्रजेत् ।
 क्षुद्ररोगे हि कथिते अजगलयहिपूतने ॥ १३ ॥
 ज्वराद्या व्याधयः सर्वे महतां ये पुरोदिताः ।
 बालदेहेऽपि ते तद्वद्विज्ञेयाः कुशलैः सदा ॥ १४ ॥

इति बालरोगनिदानम् ।

अथ ग्रहग्रस्तबालरोगनिदानम्—

रावण उवाच—

क्षणादुद्विजते बालः क्षणादस्यति रोदिति ।
 नखैर्दन्तैर्दारयति धात्रीमात्मानमेष च ॥ १५ ॥
 उर्ध्वं निरीक्षते दन्तान्खादेत्कूजति जृम्भते ।
 भ्रुवौ क्षिपति दन्तोष्ठं फेनं वमति चासकृत् ॥ १६ ॥
 क्षामाङ्गो निशि जागर्ति शूनाङ्गो भिन्नविदस्वरः ।
 मत्स्यशोणितगन्धिश्च न चाश्नाति यथा पुरा ॥ १७ ॥
 सामान्यग्रहजुष्टानां लक्षणं समुदाहृतम् ।
 एकनेत्रस्य गात्रस्य स्रावस्यन्दनकम्पनम् ॥ १८ ॥
 अर्धवृष्ट्या निरीक्षेत वक्रास्यो रक्तगन्धिकः ।
 दन्ताम्खादति वित्रस्तः स्तन्यं नैवाभिनन्दति ॥ १९ ॥
 स्कन्दग्रहगृहीतानां रोदनं चाल्पमेव च ।
 नष्टसंज्ञो वमेत्फेनं संज्ञावानतिरोदिति ।
 पूयशोणितगन्धत्वं स्कन्दापस्मारलक्षणम् ॥ २० ॥
 स्रस्ताङ्गो भयचकितो विहङ्गगन्धिः
 सास्रावव्रणपरिपीडितः समन्तात् ।
 स्फोटैश्च प्रचिततनुः सदाहपाके-
 विज्ञेयो भवति शिशुः क्षतः शकुन्या ॥ २१ ॥
 व्रणैः स्फोटैश्चितं गात्रं पङ्कगन्धं स्रवेदसृक् ।
 भिन्नवर्चा ज्वरो दाहो रेवतीग्रस्तलक्षणम् ॥ २२ ॥

अतीसारो ज्वरस्तृष्णा तिर्यक्प्रेक्षणरोदनम् ।
 नष्टनिद्रस्तथोद्विग्नो ग्रस्तः पूतनया शिशुः ॥ २३ ॥
 प्रसन्नवर्णवदनः शिराभिरभिसंवृतः ।
 मूत्रविड्गन्धबद्धाशी मुखमण्डिकया ग्रहे ॥ २४ ॥
 छर्दिः कासो ज्वरस्तृष्णा वसागन्धोऽतिरोदनम् ।
 स्तन्यद्वेषोऽतिसारश्च अन्धपूतनया भवेत् ॥ २५ ॥
 वेपते कासते क्षीणो नेत्ररोगो विगन्धिता ।
 छर्द्यतीसारयुक्तश्च शीतपूतनया भवेत् ॥ २६ ॥
 छर्दिस्पन्दनकण्ठास्यशोषमूर्च्छाविगन्धिता ।
 ऊर्ध्वं पश्येद्दशेद्वन्ताज्ञैगमेषग्रहं वदेत् ॥ २७ ॥

असाध्यलक्षणमाह—

प्रस्तब्धाक्षः स्तनद्वेषी मुह्यते वाऽनिशं मुहुः ।
 तं बालमचिराद्भ्रन्ति ग्रहः संपूर्णलक्षणः ॥ २८ ॥
 विपरीततमः साध्यश्चिकित्सेदचिराद्धितम् ।

इति ग्रहग्रस्तबालरोगनिदानम् ।

अथ चिकित्सा—

बालानामौषधदानमात्रामाह—

भैषज्यं पूर्वमुद्दिष्टं महतां यज्ज्वरादिषु ॥ २९ ॥
 देयं तदेव बालेऽपि मात्रा किं तु कनीयसी ।
 विडङ्गफलमात्रं तु जातमात्रस्य भैषजम् ॥ ३० ॥
 मासि मासि प्रयोक्तव्यं विडङ्गानां विवर्धनम् ।
 अब्दादूर्ध्वं कुमारानां दद्यात्कोलास्थिमात्रकम् ॥ ३१ ॥
 क्षीरान्नादे शिशौ कोलमन्नादे तदुदुम्बरम् ।
 क्षीरादस्यौषधं धात्र्यां क्षीरान्नादस्य चोभयोः ॥ ३२ ॥
 आत्मन्यन्नाशिनो देयमौषधं चेति जेज्जटः ।
 यथायोगं स्तनौ लिप्त्वा भैषज्यं पाययेच्छिशुम् ॥ ३३ ॥
 मात्रया लङ्घयेद्भात्रीं शिशोर्नात्र विशोषणम् ।
 सर्वं निवार्यते बाले न स्तन्यं वार्यते क्वचित् ।
 स्तन्यामावे पयश्छागं गन्धं वा तद्वृणं पिबेत् ॥ ३४ ॥

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

बालानां ज्वरवान्तिरेककसनश्वासेषु शृङ्गीविषा
 कृष्णाब्दं मधुयुक्तथाऽऽर्द्रपटुहिङ्ग्वेलार्धमानाहके ।
 कृच्छ्रे मस्तुयुता त्रुटिर्द्विजगदे दंष्ट्रा शुनः कण्ठगा
 कार्श्यं क्षीरविदारिकाशृतप्लुतं दाहादिके नीलिका ॥ ३५ ॥
 मृत्पिण्डेनाग्नितप्तेन क्षीरसिक्तेन सोष्मणा ।
 स्वेदयेदुत्थितं नाभिं शोथभतेनोपशाम्यति ॥ ३६ ॥
 दग्धेन च्छागशकृता नाभिपाकेऽवचूर्णनम् ।
 त्वग्भूत्या क्षीरिणां वाऽपि कुर्याच्चन्दनरेणुना ॥ ३७ ॥
 नाभिपाके शिलालोधप्रियङ्गुमधुकैः शृतम् ।
 तैलमभ्यञ्जने शस्तमेभिर्वाऽप्यवचूर्णनम् ॥ ३८ ॥
 बालो योऽचिरजातः स्तन्यं गृह्णाति नो तदा तस्य ।
 सैन्धवधात्रीमधुघृतपथ्याकल्केन घर्षयेज्जिह्वाम् ॥ ३९ ॥
 मुस्ताभयावचाब्राह्मीकतकं क्षौद्रसर्पिषा ।
 वर्णायुःकान्तिजननं लेहं बालस्य दापयेत् ॥ ४० ॥

अथ मूर्वाद्यवलेहः—

मूर्वाव्योषवचाकोलजम्बूत्वग्दारुसर्षपाः ।
 सपाठा मधुना लीढा स्तन्यदोषनिबर्हणाः ॥ ४१ ॥

इति मूर्वाद्यवलेहः ।

अथ मद्रमुस्ताकाथः—

पीतं पीतं वमति यः स्तन्यं तन्मधुसर्पिषा ।
 द्विवार्ताकीफलरसं पञ्चकोलं च लेहयेत् ॥ ४२ ॥
 सक्षौद्रशर्करां तिक्तां लीढ्वा बालज्वरं जयेत् ।
 मद्रमुस्तामयानिम्बपटोलमधुकैः कृतः ॥ ४३ ॥
 काथः कोष्णस्तु बालानां सकलज्वरनाशनः ।

इति मद्रमुस्ताकाथः ।

अथ पलंकषादिधूपः—

पलंकषावचाकुष्ठं गजचर्माविचर्म च ॥ ४४ ॥

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting department in ensuring the integrity of the financial statements.

2. The second part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting department in ensuring the integrity of the financial statements.

3. The third part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting department in ensuring the integrity of the financial statements.

4. The fourth part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting department in ensuring the integrity of the financial statements.

5. The fifth part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting department in ensuring the integrity of the financial statements.

6. The sixth part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting department in ensuring the integrity of the financial statements.

7. The seventh part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting department in ensuring the integrity of the financial statements.

8. The eighth part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting department in ensuring the integrity of the financial statements.

9. The ninth part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting department in ensuring the integrity of the financial statements.

10. The tenth part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting department in ensuring the integrity of the financial statements.

निम्बस्य पत्रं माक्षीकं सर्पिर्युक्तं च धूपनम् ।

ज्वरवेगं निहन्त्याशु बालकानां विशेषतः ॥ ४५ ॥

इति पलंकषादिधूपः ।

अथ मूर्वाद्युद्वर्तनम्—

मूर्वानिशासर्षपपरामसेनश्वेतासमङ्गाम्बुदकारवीणाम् ।

छागीपयोभिः सह पेषितानामुद्वर्तनं स्यान्मधुना शिशूनाम् ॥ ४६ ॥

इति मूर्वाद्युद्वर्तनम् ।

अथ बिल्वादिकाथावलेहौ—

शृङ्गयङ्ककृष्णातिविषं विचूर्ण्य लेहं विदध्यान्मधुना शिशूनाम् ।

कासज्वरच्छर्दिभिरर्दितानां समाक्षिकां वाऽतिविषामथैकाम् ॥ ४७ ॥

बिल्वं च पुष्पाणि च धातकीनां जलं सलोध्रे गजपिप्पलीं च ।

काथावलेहौ मधुना विमिश्रौ बालेषु योज्यावतिसारितेषु ॥ ४८ ॥

इति बिल्वादिकाथावलेहौ ।

अथ नागरादिकाथः—

नागरातिविषामुस्ताबालकेन्द्रयवेः शृतम् ।

कुमारं पाययेत्प्रातः सर्वातीसारनाशनम् ॥ ४९ ॥

इति नागरादिकाथः ।

अथ लोध्राद्यवलेहः—

लोध्रेन्द्रयवधान्याकधात्रीह्रीविरमुस्तकम् ।

मधुना लेहयेद्दालं ज्वरातीसारनाशनम् ॥ ५० ॥

इति लोध्राद्यवलेहः ।

अथ मुस्ताद्यवलेहः—

घनकृष्णारुणाशृङ्गीचूर्णं क्षौद्रेण योजितम् ।

शिशोर्ज्वरातिसारघ्नं कासश्वासवमीहरम् ॥ ५१ ॥

इति मुस्ताद्यवलेहः ।

अथ समङ्गाद्यवलेहः—

समङ्गोत्पलमञ्जिष्ठातिरीटतिलचन्दनम् ।

छागीक्षीरेण सक्षौद्रं रक्तातीसारनाशनम् ॥ ५२ ॥

इति समङ्गाद्यवलेहः ।

1. The first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

2. The second part of the document is a list of the names of the members of the committee.

3. The third part of the document is a list of the names of the members of the committee.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the members of the committee.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the members of the committee.

11. The eleventh part of the document is a list of the names of the members of the committee.

अथाष्टमङ्गलम्—

पुष्करातिविषायासकणाशृङ्गीरजो लिहेत् ।
 मधुना मुच्यते बालः कासैः पञ्चभिरुच्छ्रितैः ॥ ५३ ॥
 तुगा च क्षौद्रसंलीढा कासश्वासौ शिशोर्जयेत् ।
 दुरालभां कणां द्राक्षां पथ्यां क्षौद्रेण लेहयेत् ॥ ५४ ॥
 त्रिरात्रं पञ्चरात्रं वा कासश्वासहरीं शिशोः ।
 चूर्णं कटुकरोहिण्या मधुना सह योजितम् ॥ ५५ ॥
 हिक्कां प्रशमयेत्क्षिप्रं शिशोश्छर्दिश्च दुस्तराम् ।
 पटोलत्रिफलारिष्टहरिद्राकथितं पिबेत् ॥ ५६ ॥
 बाहविस्फोटवीसर्पज्वराणां शान्तये शिशुः ।
 कणोषणसिताक्षौद्रसूक्ष्मैलासैन्धवैः कृतः ॥ ५७ ॥
 मूत्रग्रहे प्रदातव्यो बालानां लेह उत्तमः ।
 घृतेन सिन्धुविश्वैलाहिक्कुमार्गीरजो लिहेत् ॥ ५८ ॥
 आनाहं वातिकं शूलं जयत्तोयेन वा शिशुः ।
 पिष्ट्वा गन्धर्वबीजानि त्वाखुविह्वनिम्बुर्वीरिणा ॥ ५९ ॥
 नामो गुदे वा लेपेन शिशूनां रेचनं परम् ।
 इन्दुलोचननेत्राणि शिखिभागं हि योजयेत् ॥ ६० ॥
 झुटिगन्धकमुद्गदारशतपुष्पा विचूर्णिताः ।
 माषद्वयं गवां दुग्धैः सेवयेद्दिनपञ्चकम् ॥ ६१ ॥
 रेचयेन्मृत्तिकां शुद्धां शिशूनां हितमौषधम् ।
 छुच्छुन्दरीमलो माषो हरिद्रा बिल्वपत्रकम् ॥ ६२ ॥
 इदं सुरेशयववद्धूपनं यः प्रयोजयेत् ।
 निहन्ति रोदनं रात्रौ बालकस्य न संशयः ॥ ६३ ॥

फलत्रिकं लोधपुनर्नवे च सशृङ्गवेरं बृहतीफलं च ।
 आलेपनं श्लेष्महरं सुखोष्णं कुकूणके कार्यमुदाहरन्ति ॥ ६४ ॥
 व्योषं सभृङ्गं समनःशिलालं करञ्जबीजं च सुपिष्टमेतत् ।
 कण्डूदितानामथ वर्त्मनां तु श्रेष्ठं शिशूनां नयने विदध्यात् ॥ ६५ ॥
 त्यजेत्पयस्तु गर्भिण्या बालकः * पारिमद्रके ।
 औषधं मक्षयेदत्र विशेषादग्निदीपनम् ॥ ६६ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city of New York.

2.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city of New York.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city of New York.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city of New York.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city of New York.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city of New York.

7. The seventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city of New York.

8. The eighth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city of New York.

9. The ninth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city of New York.

10. The tenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city of New York.

11. The eleventh part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city of New York.

12. The twelfth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city of New York.

13. The thirteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city of New York.

14. The fourteenth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city of New York.

तालुपाके यवक्षारमधुभ्यां प्रतिसारणम् ।
 हरीतकीवचाकुष्ठकल्कं माक्षिकसंयुतम् ॥ ६७ ॥
 पीत्वा कुमारः स्तन्येन मुच्यते तालुकण्टकात् ।
 मुखपाके तु बालानामास्रसारमयोरजः ॥ ६८ ॥
 गैरिकं क्षौद्रसंयुक्तं भेषजं सरसाञ्जनम् ।
 दार्वायष्ट्याभयाजार्जीपत्रक्षौद्रैस्तु धावनम् ॥ ६९ ॥
 मुखपाकस्य तु श्रेष्ठं लेपस्त्वश्वत्थवल्कजः ।
 शङ्खपुष्प्यञ्जनरजो बालानां गुदपाकनुत् ॥ ७० ॥
 श्वजिह्वाभस्मना लेपः पीतं वा सितचन्दनम् ।
 वचा कुष्ठं तथा ब्राह्मी सिद्धार्थकमथापि च ॥ ७१ ॥
 सारिवा सैन्धवं चापि पिप्पली घृतमष्टमम् ।
 मेध्यं घृतमिदं सिद्धं पातव्यं मासमेव च ॥ ७२ ॥
 द्रुतश्रुतिः क्षिप्रमेधाः कुमारो बुद्धिमान्भवेत् ।
 न पिशाचा न रक्षांसि न भूता न च मातरः ॥ ७३ ॥
 बाधन्ते च कुमाराणां पिबतामष्टमङ्गलम् ।

इत्यष्टमङ्गलम् ।

अथ सोमघृतम्—

सिद्धार्थकवचां ब्राह्मीं शङ्खपुष्पीं पुनर्नवाम् ॥ ७४ ॥
 पयस्यां मधुयष्टीं च कटुतैलां फलत्रयम् ।
 सारिवे रजनीं पाठां भृङ्गदारुसुवर्चलाः ॥ ७५ ॥
 मस्तिष्ठां त्रिफलां श्यामां वृषपुष्पं सगैरिकम् ।
 भिषक्पक्त्वा घृतप्रस्थं सम्यङ्मन्त्राभिमन्त्रितम् ॥ ७६ ॥
 प्रसवेर्दुर्मिणी नारी षण्मासान्सा प्रयोजयेत् ।
 सर्वथा जनयेत्पुत्रं सर्वामयविवर्जितम् ॥ ७७ ॥
 अस्य प्रयोगात्कुक्षिस्थः स्फुटवाग्वाहरत्यपि ।
 योनिदुष्टाश्च या नार्यो रेतोदुष्टाश्च ये नराः ॥ ७८ ॥
 बन्ध्याऽपि लभते पुत्रं शूरं पण्डितमानिनम् ।
 जडगद्गदमूकत्वं पानादेवापकर्षति ॥ ७९ ॥

सत्तरात्रप्रयोगेण नरः श्रुतिधरो भवेत् ।
नाग्निर्दहति तद्वेश्म न वज्रमपि हन्ति च ।
न तत्र व्यथते बालो यत्राऽऽस्ते सोमसंज्ञकम्* ॥ ८० ॥
इति सोमघृतम् ।

अथ ग्रहग्रस्तबालरोगचिकित्सा—

तत्र सामान्यविधिः—

संभेदकूलद्वयमृत्तिकाया मूर्तिं विधायैककरप्रमाणाम् ।
त्रिलोचनां शूलकपालपाणिं जटाधरां रुद्रतनुं दधानाम् ॥
भुजङ्गभूषां भसितोज्ज्वलाङ्गीमङ्गीकृताशेषललामलीलाम् ॥ ८१ ॥
अत्र मूर्तीं समावाह्य रुद्रं सर्वग्रहाधिपम् ।
नन्दादिपूतनायुक्तं पूजयेच्चन्दनादिभिः ॥ ८२ ॥
विरच्य तण्डुलैश्चूर्णैश्चतुरस्रं करोन्मितम् ।
तत्र संस्थाप्य पूर्वास्यां तदर्चाया विधिं चरेत् ॥
तत्तन्मन्त्रैर्विचित्रैश्च नानोपकरणादिभिः ॥ ८३ ॥

तत्र क्रमो यथा—

गोमयलिप्तायां भूमौ तण्डुलचूर्णेन हस्तमात्रं चतुरस्रं कृत्वा तन्मध्ये
पूर्वोक्तां ग्रहाधिपमूर्तिं संस्थाप्योमद्येति स्मृत्वाऽमुकनाम्नोऽमुकगोत्रो-
त्पन्नस्यैतस्य बालस्य शरीरस्थितसर्वग्रहशान्त्यर्थं सर्वग्रहबलिं ब्राह्मण-
द्वारा कारपिण्ये स्वयं वा करिष्य इति संकल्प्य तस्यां सर्वग्रहप्राण-
प्रतिष्ठां विधाय 'सर्वग्रहाधिपतये हुं फट् स्वाहा' इति मन्त्रेण स्नान-
वस्त्रचन्दनाक्षतधूपदीपनैवेद्यसप्तपताकासप्तप्रदीपादिकं विधाय ततो
गुडोदकमैत्स्यमांससुरावटकान्नस्विन्नगोधूमादि विस्तीर्णवंशपात्रस्था-
यास्तस्याः पुरस्तात्परिवेश्य 'ॐ नमो भगवते गरुडाय त्र्यम्बकाय
सत्यसुवसत्यसुव हुं फट् स्वाहा इति मन्त्रं पठित्वा बालकेन मुष्टिमात्र-
मन्त्रं संग्राह्य पूर्वपारवेशितेऽन्ने त्याजयेत् । ततोऽन्यन्मुष्टिमात्रमन्त्रं गृहीत्वा
'ॐ फट् वैनतेयाय नमः' ततोऽन्यदपि 'ॐ ह्रीं ह्रीं क्षः' इति वारत्रयं
बलिं दत्त्वा बालप्रमाणपुष्पमालां गृहीत्वा बालोपरि त्रिः परिभ्राम्य
'ॐ कारिणि स्वर्णपक्षि बालकं रक्ष रक्ष स्वाहा' इति मन्त्रेण तां

* ग. फलत्रयं त्वत्र दाक्षा काश्मर्यं (भु) परुषकम् ।

१ क. 'य बस्तमुण्डोद' । २ क. मर्त्यमां ।

कण्ठेऽर्पयेत् । ततस्तत्सर्वं रात्रौ चतुष्पथे स्थापयित्वा पश्चादपश्यन्नेव गृहमागच्छेत् । ततो माहेश्वरधूपेन बालं धूपयेत् । स यथा—

कार्पासास्थिमयूरपिच्छबृहतीनि*माल्यपि+ण्डीतक-

त्वङ्मांसवीषदंशविट्पुषवचाकेशाहिनिर्मोककैः ।

+नागेन्द्रद्विजहिङ्गुशृङ्गमरिचैस्तुल्यैः कृतं धूपनं

कृत्योन्मादपिशाचराक्षससुरावेशग्रहघ्नः स्मृतः ॥ ८४ ॥

इति माहेश्वरो धूपः ।

एवं त्रिदिनं कुर्यात् । ततश्चतुर्थे दिने चतुरो ब्राह्मणान्भोजयेच्छुभं भवति ।

इति सामान्यपूतनाविधिः ।

अथ विशेषविधिः—

प्रथमे दिवसे मासे वर्षे नन्दाशिशोर्ग्रहः ।

तया गृहीतमात्रस्य प्रथमं भवति ज्वरः ॥ ८५ ॥

कुन्थत्यनेकधा रोदित्याकारं कुरुतेऽपि च ।

स्तन्यं न गृह्णाति शिशुस्तद्वलिं शुभदं शृणु ॥ ८६ ॥

नदीकूलद्वयान्मृत्स्नानानीयास्याश्च पुत्तलीम् ।

कृत्वा शुक्लोपकरणैः शुक्लान्नकुसुमाम्बरैः ॥ ८७ ॥

शुक्लसप्तध्वजैः सप्तदीपैर्गन्धाक्षतादिभिः ।

गुडाम्बुमांसमत्स्याद्यैर्मध्याह्ने बलिमाहरेत् ॥ ८८ ॥

पूर्वस्यां दिशि पिष्टस्य वेदिकायां चतुष्पथे ।

अश्वत्थपत्रे सप्तांशान्कृत्वा दद्याद्वलिं शिशुः ॥ ८९ ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं नन्दे प्रथमदिनमासवर्षग्रहे इमं बलिं गृह्ण गृह्ण एनं बालं त्यज त्यज एतस्य सकलबाधां हन हन स्वाहा ।

इति बलिमन्त्रः ।

ततो यथाशक्ति हेम दक्षिणां दद्यात् । ततोऽश्वत्थपत्रेण शान्त्युदकेन बालमभिषिञ्चेत् 'शान्तिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु यच्छ्रेयस्तदस्तु' इति । ततो रसोनसिद्धार्थमेषशृङ्गनिम्बपत्रशिवनिर्माल्यैर्बालं धूपयेत् ।

* क. बिल्वम् । + क. गेळफळ । × क. मोजरविट् । ÷ क. हस्तिदन्तः । = क. गोशृङ्गम् । — क. स्कन्धः ।

धूपमन्त्रो यथा—

‘ॐ नमो नारायणाय हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा’ । ततश्चतुर्थेऽहनि चतुरो ब्राह्मणान्भोजयेत्ततः संपद्यते शुभम् ।

द्वितीये दिवसे मासे वर्षे गृह्णाति मातरा ।

सुनन्दा नामतस्तस्य प्रथमं भवति ज्वरः ॥ ९० ॥

उन्मीलयति नो नेत्रे सोऽङ्गमुद्वेजयत्यपि ।

न शेते रोदिति स्तन्यं न गृह्णाति च कुन्थति ॥ ९१ ॥

तस्या बलिर्यथा—

प्रस्थैकेन तण्डुलेन शरावं पूरयित्वा दधि गुडघृतमिश्रितं वेदिकां विधाय गन्धताम्बूलपीतपुष्पपीतसप्तपताकाः सप्तकलशाः सप्त दीपाः सप्तस्वस्तिका मत्स्यादि सर्वं संपाद्य पश्चिमस्यां दिशि चतुष्पथे संध्यायां बलिर्देयः । एवं दिनत्रयं कुर्यात् । ततः शान्त्युदकेन स्नानम् । शिवनिर्माल्यसिद्धार्थकमार्जारलोमोशीरबालकघृतैर्बालं धूपयेत् ।

बलिधूपयोर्मन्त्रो यथा—

ॐ नमो रावणाय हन हन मुञ्च मुञ्च हुं फद् स्वाहा’ । ततश्चतुर्थेऽहनि चतुरो ब्राह्मणान्भोजयेत् ।

तृतीये दिवसे मासे वर्षे च पूतनानामग्रहः । तद्गृहीतलक्षणं यथा—

स्तन्यं न गृह्णाति निवद्धमुष्टिः क्रन्दत्यकस्मादुपरीक्षते च ।

उद्वेजयत्यङ्गमकाण एव कुमारकः पूनतया गृहीतः ॥ ९२ ॥

तद्वलिर्यथा—

नशुभयकूलमृत्तिकया द्विभुजां प्रलम्बपयोधरां त्रिनेत्रां बालं स्तन्यं पाययन्तीं लालयन्तीं च कृत्वा रक्तोपचारैः पूर्वोक्तैर्मत्स्यादिभिर्दक्षिणस्यां दिशि चतुष्पथेऽपराह्ण बलिर्देयः । शिवनिर्माल्यसर्षपगुग्गुलुमेघशृङ्गैर्धूपयेत् । एवं दिनत्रयम् ।

बलिधूपयोर्मन्त्रो यथा—

‘ॐ नमो रावणाय हन हन मुञ्च मुञ्च त्रासय त्रासय स्वाहा । चतुर्थे दिने चतुरो ब्राह्मणान्भोजयेत् । ततः संपद्यते शुभम् ।

चतुर्थे दिवसे मासे वर्षे गृह्णाति बालकम् ।

मुखमण्डितिका नाम्ना ग्रहस्तलक्षणं यथा ॥ ९३ ॥

उन्मीलयति दृग्द्वन्द्वं ग्रीवां नमयति क्षणात् ।

मुखमण्डितिकाग्रस्तः स्तन्यं गृह्णाति नार्मकः ॥ ९४ ॥

तद्वलिर्यथा—

नष्टमयकूलमुदा पुत्तलीं द्विभुजां कपालकर्तुकाहस्तां नीलोपचारे-
नीलदशध्वजैश्चतुर्द्विपञ्चयोदशस्वास्तिकैः सह बलिर्देयः । मत्स्यमांससु-
रान्नपिण्डं पत्रावल्यां स्थापयित्वोत्तरस्यां दिश्यपराह्णे चतुष्पथे ।
'ॐ नमो रावणाय हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा' चतुर्थेऽहनि चतुरो
ब्राह्मणान्मोजयेत् । धूपोऽत्र माहेश्वर एव । एवं दिनत्रयम् । ततः
संपद्यते शुभम् ।

पञ्चमे दिवसे मासे वर्षे गृह्णाति बालकम् ।

ग्रहः स पूतना नाम्ना तालिङ्गं पूतनासवत् ॥ ९५ ॥

कुलालचक्रमृत्तिकया पूर्वोक्तलक्षणां पुत्तलिकां कृत्वा शुक्लगन्धागु-
पचारैः पञ्चध्वजैः पञ्चवटकैः पञ्चदीपैः श्वेतपुष्पैः सहैशान्यां दिशि
चतुष्पथे नक्त बलिर्देयः । शान्त्युदकन बालमभिषिञ्चेत् । शिवनिर्मा-
ल्यसर्पनिर्मोकगुग्गुलुनिम्बपत्रवालकघृतैर्बालं धूपयेत् ।

उभयोर्मन्त्रो यथा—

'ॐ नमो नारायणाय नमश्चूर्णय स्वाहा ।

चतुर्थेऽहनि चतुरो ब्राह्मणान्मोजयेत् ।

षष्ठे दिवसे मासे वर्षे शकुनिर्नाम ग्रहस्तलक्षणम् ।

जाग्रत्यहर्निशं चोर्ध्वं वीक्षते गात्रभेदवान् ।

अतीसारी ज्वरी वाऽपि शकुनिग्रस्तबालकः ॥ ९६ ॥

तद्वलिर्यथा—

पिष्टकेन पुत्तलिकां कृत्वा शुक्लरक्तपीतैः पुष्पैरक्षतैर्गन्धैः प्रदीपैस्ता-
म्बूलेन च पीतदशध्वजदशस्वास्तिकदशवटकैः सह क्षीरजम्बूतिलमत्स्य-
मांससुरान्नपिण्डमाग्रेय्यां दिशि मध्याह्ने चतुष्पथे बलिर्देयः । शान्त्यु-
दकेन स्नानं शिवनिर्माल्यसर्पनिर्मोकपुरनिम्बपत्रैर्धूपः ।

उभयोर्मन्त्रो यथा—

'ॐ नमो नारायणाय चूर्णय हन हन स्वाहा । चतुर्थे ब्राह्मणमो-
जनं ततः शुभमुत्पद्यत इति ।

[illegible]

सप्तमे दिने मासे वर्षे वा शुष्करेवती नाम मातृका बालं गृह्णाति ।

शुष्करेवतिकाग्रस्तो गात्रमुद्वेजयत्यथ ।

मुष्टिं बध्नाति विभ्रान्तनेत्रः स्याद्बालकोऽसकृत् ॥ ९७ ॥

रक्तशुक्लैर्गन्धादिभिः कृशरासुरामांसमीनपिण्डं त्रयोदशशङ्कुली-
त्रयोदशदीपत्रयोदशस्वस्तिकैर्ध्वजैश्च सह पश्चिमस्यां दिश्यपराह्णे
ग्रामनिष्काशप्रदेशे बलिं दद्यात् । शान्त्युदकेन स्नानम् । ' ॐ नमो
रावणाय त्रैलोक्यविद्रावणाय संमोक्षय ज्वल ज्वल हन हन हुं फट्
स्वाहा ' गुग्गुलुमेषशृङ्गसर्षपोशीरवालकघृतैर्धूपयेद्बालम् । चतुर्थेऽह्नि
चतुरो ब्राह्मणान्भोजयेत् । ततः संपद्यते शुभम् ।

अष्टमे दिवसे मासे वर्षे आर्यका नाम पूतना । तद्भस्तलक्षणं यथा—

गृध्रगन्धः पूतिगन्धो नाऽऽहारं विन्दतेऽसकृत् ।

उद्वेजयति गात्राणि बाल आर्यकयाऽऽहतः ॥ ९८ ॥

रक्तपीतचन्दनपुष्पाभरणवस्त्रध्वजदीपैः सह मत्स्यमांसमद्यान्नवटक-
बलिः प्रत्यूषे पूर्वस्यां दिशि देयः । ' ॐ नमो रावणाय त्रैलोक्यविद्रा-
वणाय संमोक्षय संमोक्षय ज्वल ज्वल हन हन ॐ हुं फट् स्वाहा ' ।
अत्रापि माहेश्वरो धूपः । शान्त्युदकेनाभिषेकः । चतुर्थेऽह्नि ब्राह्मण-
भोजनम् ।

नवमे सूतिकानाम्नी पूतना तद्गृहीतलक्षणं यथा—

गात्रभेदो वमिभ्रान्तिर्मुष्टिबन्धोऽतिनिद्रता ।

सूतिकाग्रहग्रस्तस्य ज्वरश्चोत्पद्यते शिशोः ॥ ९९ ॥

तद्भस्तबालकोपद्रवशान्तिर्यथा—

नद्युभयतटमृत्तिकायाः पुत्तलिकां द्विभुजां त्रिलोचनां कृत्वा शुक्ल-
वाससाऽऽच्छाद्य शुक्लपुष्पाद्यैः शुक्लत्रयोदशध्वजदीपस्वस्तिकैश्चत्रयोदश-
वटकमत्स्यमांससुरान्नरुत्तरदिशि ग्रामनिष्काशप्रदेशे बलिर्देयः । शान्त्यु-
दकेनाभिषेकः । गुग्गुलुगोशृङ्गानिम्बपत्रश्वेतसर्पपघृतैर्धूपः । ' ॐ नमो
रावणाय चतुर्भुजाय हन हन स्वाहा ' । इति बल्युत्सर्गमन्त्रः । चतुर्थे
ब्राह्मणभोजनम् ।

दशमे दिवसे मासे वर्षे निर्ऋता नाम पूतना ।

उद्वेजयति गात्राणि रोदित्यां कुरुतेऽपि च ।

मूत्रं पुरीषं गृह्णाति बालो निर्ऋतया हतः ॥ १०० ॥

समुद्रमुत्तिकया महानदीकूलद्वयमुत्तिकया वा पूर्ववत्पुत्तलिकां कृत्वा रक्तचन्दनरक्तपुष्परक्तवस्त्ररक्तपञ्चध्वजपञ्चदीपपञ्चस्वस्तिकपञ्चपूरिका-
मत्स्यमांसान्नादिभिर्वायव्यां दिशि संध्यायां बलिर्देयः । शान्त्युदकेन स्नानम् । काकविष्ठागोमांसगोशृङ्गरसोनमार्जारलोमनिम्बपत्रघृतैर्बालकं धूपयेत् । 'ॐ नमो रावणाय चूर्णिताय मुञ्च मुञ्च स्वाहा ।' चतुर्थे ब्राह्मणभोजनं ततः संपद्यते सुखम् ।

एकादशे पिलपिण्डिका नाम पूतना ।

पिलपिण्डिकया ग्रस्तो नाऽऽहारं विदन्ते शिशुः ।

ऊर्ध्वदृष्टिर्गात्रमङ्गयुक्तः क्रन्दति दीर्घशः ॥ १ ॥

पिष्टकेन पूर्ववत्पुत्तलीं कृत्वा पूर्वोक्तैः धीतैरुपचारैः पूर्वोक्तस्थाने बलिः । निर्माल्यमहिषशृङ्गपुरनिर्मोकघृतैर्बालकं धूपयेत् । 'ॐ नमो रावणाय चूर्णिताय मुञ्च मुञ्च स्वाहा' चतुर्थे ब्राह्मणभोजनम् । ततः संपद्यते शुभम् ॥ १ ॥

द्वादशे दिवसे मासे वर्षे कामुका नाम बालग्रहः ।

कामुकास्तः शिशुर्हासं कुरुते तर्जयत्यपि ।

मुहुर्मुहुर्निश्वासिति कृशो हुं न करोति च ॥ २ ॥

क्षीरेण पुत्तलीं कृत्वा गोस्तण्डुलरजोयुता ।

श्वेतगन्धादिनाऽभ्यर्च्य सप्तदीपध्वजादिभिः ॥ ३ ॥

मत्स्यमांससुरापुष्पभक्तकस्मैस्तद्वलिर्भतः ।

ऐशान्यां दिशि नक्तं तु चतुर्मासि तदर्पणम् ॥ १०४ ॥

'ॐ नमो रावणाय मुञ्च मुञ्च हन हन स्वाहा' इति मन्त्रेण बलिधूपौ देयौ । निर्माल्यपुरनिर्मोकसर्षपघृतैर्धूपः । शान्त्युदकेनाभिषेकः । चतुर्थेऽहि ब्राह्मणभोजनम् । एवं दिनत्रयं कर्तव्यं ततः शुभं संपद्यते ।

इति रावणकृते कौमारतन्त्रे पूतनाविधानम् ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां बालरोगनिदानचिकित्साकथनं नाम

चतुश्चत्वारिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १४४ ॥

(अथ पञ्चचत्वारिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ।)

अथ विषनिदानम्—

स्थावरं जङ्गमं चेति विषं प्रोक्तमकृत्रिमम् ।
 कृत्रिमं गरसंज्ञं तु क्रियते विविधौषधैः ॥ १ ॥
 स्थावरं जङ्गमं चेति द्विविधं विषमुच्यते ।
 मूलाद्यात्मकमाद्यं स्यात्परं सर्पादिसंभवम् ॥ २ ॥
 निद्रां तन्द्रां क्लमं दाहं संपाकं रोमहर्षणम् ।
 शोथं चैवातिसारं च कुरुते जङ्गमं विषम् ॥ ३ ॥
 स्थावरं तु ज्वरं हिक्रां दन्तहर्षं गलग्रहम् ।
 फेनच्छर्द्यरुचिश्वासं मूर्छां च कुरुते विषम् ॥ ४ ॥
 इङ्गितज्ञो मनुष्याणां वाक्चेष्टामुखवैकृतैः ।
 जानीयाद्विषदातारमेभिलिङ्गैश्च बुद्धिमान् ॥ ५ ॥
 न ददात्युत्तरं पृष्टो विवक्षुर्मोहमेति च ।
 अपार्थं बहुसंकीर्णं भाषते चापि मूढवत् ॥ ६ ॥
 हसत्यकस्मात्स्फुटति चाङ्गुलीभिलिखेन्महीम् ।
 वेपथुश्चास्य भवति त्रस्तश्चान्योन्यमीक्षते ॥ ७ ॥
 विवर्णवक्त्रो ध्यामश्च नखैः किञ्चिच्छिनत्यपि ।
 वर्तते विपरीतं च विषदाता विचेतनः ॥ ८ ॥
 आलभेत सकृद्दीनो करेण च शिरोरुहान् ।
 उद्वेष्टनं मूलविषैः प्रलापो मोह एव च ॥ ९ ॥
 जृम्भणं वेपनं श्वासो ज्ञेयं पत्रविषेषु च ।
 मुष्कशोफः फलविषैर्दाहोऽन्नद्वेष एव च ॥ १० ॥
 भवेत्पुष्पविषैश्छर्दिराध्मानं श्वास एव च ।
 त्वक्सारनिर्यासविषैरुपयुक्तैर्भवन्ति हि ॥ ११ ॥
 आस्यदौर्गन्ध्यगारुष्यशिरोरुक्कफसंज्ञवाः ।
 फेनागमः क्षीरविषैर्विड्मेदो गुरुजिह्वता ॥ १२ ॥
 हृत्पीडनं धातुविषैर्मूर्छां दाहश्च तालुनि ।
 प्रायेण प्राणघातीनि विषाण्येतानि निर्दिशेत् ॥ १३ ॥
 सद्यः क्षतं जायते यस्य जन्तोः स्रवेद्रक्तं पच्यते चाप्यभीक्षणम् ।
 कृष्णीभूतं क्लिप्तमत्यर्थयुते क्षतान्मांसं शीर्यते यस्य चापि ॥ १४ ॥

CONTENTS

Editorial Introduction 1

Book Reviews 2

Book Reviews 3

Book Reviews 4

Book Reviews 5

Book Reviews 6

Book Reviews 7

Book Reviews 8

Book Reviews 9

Book Reviews 10

Book Reviews 11

Book Reviews 12

Book Reviews 13

Book Reviews 14

Book Reviews 15

Book Reviews 16

Book Reviews 17

Book Reviews 18

Book Reviews 19

Book Reviews 20

Book Reviews 21

Book Reviews 22

Book Reviews 23

Book Reviews 24

Book Reviews 25

Book Reviews 26

Book Reviews 27

Book Reviews 28

Book Reviews 29

Book Reviews 30

Book Reviews 31

Book Reviews 32

Book Reviews 33

Book Reviews 34

Book Reviews 35

Book Reviews 36

Book Reviews 37

Book Reviews 38

Book Reviews 39

तृष्णा मूर्छा ज्वरदाहौ च यस्य दिग्धाहतं तं मनुजं व्यवस्येत् ।
लिङ्गान्येतान्येव कुर्यादमित्रैर्व्रणे विषं यस्य दत्तं प्रमादात् ॥१५॥
इति स्थावरविषम् ।

अथ जङ्गमविषम्—

वातपित्तकफात्मानो भोगिमण्डलिराजिलाः ।
यथाकमं समाख्याता ह्यन्तरा द्वन्द्वरूपिणः ॥ १६ ॥
दंशो भोगिकृतः कृष्णः सर्ववातविकारकृतः ।
पीतो मण्डलिजः शोथो मृदुः पित्तविकारवान् ॥ १७ ॥
राजिलोत्थो भवेदंशः स्थिरः शोथश्च पिच्छिलः ।
पाण्डुस्निग्धोऽतिसान्द्रासृक्सर्वश्लेष्मविकारकृतः ॥ १८ ॥
मघाद्राकृत्तिकाश्लेषाभरणीषु प्रयत्नतः ।
पूर्वासु च प्रदष्टस्य कस्याचिज्जीवितं भवेत् ॥ १९ ॥
नवमी पञ्चमी पष्ठी तथा कृष्णचतुर्दशी ।
चतुर्थी चात्र दद्यानां सर्पैः कस्यापि जीवनम् ॥ २० ॥
अश्वत्थदेवायतनश्मशानवल्मीकसंध्यासु चतुष्पथेषु ।
याम्ये च पैत्र्ये परिवर्जनीयाः कुक्षौ शिरोर्मसु ये च दद्याः ॥२१॥
दात्रीकराणां विषमाशु हन्ति सर्वाणि चोक्तानि यथाक्रमेण ।
अजीर्णपित्तातपपीडितेषु बालेषु वृद्धेषु बुभुक्षितेषु ॥ २२ ॥
क्षीणक्षते मेहिनि कुष्ठजुष्टे रूक्षेऽबले गर्भवतीषु चापि ।
शस्त्रक्षते यस्य न रक्तमेति राज्यो लताभिश्च न संभवन्ति ॥२३॥
शीताभिरद्भिश्च न रोमहर्षो विषाभिभूतं परिवर्जयेत्तम् ।
जिह्वं मुखं यस्य च केशपातो नासावसादश्च सकण्ठभङ्गः ॥२४॥
कृष्णः सरक्तः श्वयथुश्च दंशो हन्वोः स्थिरत्वं च स वर्जनीयः ।
वर्तिर्घना यस्य निरेति वक्त्राद्रक्तं स्रवेदूर्ध्वमधश्च यस्य ॥ २५ ॥
दंष्ट्रानिपाताश्चतुरोऽपि यस्य तं चापि वैद्यः परिवर्जयेत् ।
उन्मत्तमत्यर्थमुपद्रुतं वा हीनस्वरं वाऽप्यथ वा विवर्णम् ॥ २६ ॥
सारिष्टमत्यर्थमवेगिनं च जह्याद्द्रुतं तत्र न कर्म कुर्यात् ।

अथ दूषीविषमाह—

जीर्णं विषघ्नौषधिभिर्हतं वा दावाग्निवातातपशोषितं वा ॥ २७ ॥

[illegible]

The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. It highlights the journal's role in providing
 a platform for the dissemination of research findings and
 the advancement of the discipline. The second part of the
 paper focuses on the journal's commitment to diversity and
 inclusion, emphasizing the need for a more equitable and
 inclusive research agenda. The third part of the paper
 discusses the journal's efforts to promote the use of
 research in management education, highlighting the
 importance of evidence-based practice. The fourth part of
 the paper discusses the journal's commitment to
 transparency and accountability, emphasizing the need for
 open access and the sharing of research data. The fifth
 part of the paper discusses the journal's commitment to
 the development of the field of management education,
 highlighting the importance of ongoing research and
 innovation. The final part of the paper discusses the
 journal's commitment to the advancement of the
 discipline, highlighting the importance of the
 Journal of Management Education in the field of
 management education.

The following table shows the results of the regression analysis for the dependent variable "Number of children in the household" (N = 1,000). The independent variables are "Age of the head of household" and "Gender of the head of household". The table includes the coefficient estimates, standard errors, t-statistics, and p-values for each variable.

Variable	Coefficient	Standard Error	t-statistic	p-value
Age of the head of household	0.05	0.02	2.50	0.01
Gender of the head of household (Male = 1, Female = 0)	-0.10	0.03	-3.33	0.00
Constant	1.50	0.10	15.00	0.00

The regression results indicate that the number of children in the household is positively related to the age of the head of household and negatively related to the gender of the head of household. Specifically, for every one-year increase in the age of the head of household, the number of children in the household increases by 0.05, holding all other variables constant. Conversely, for every one-unit increase in the gender variable (from female to male), the number of children in the household decreases by 0.10, holding all other variables constant.

स्वभावतो वा गुणविप्रहीनं विषं हि दूषीविषतामुपैति ।
 वीर्यातिभावान्न निपातयेत्तत्कफान्वितं वर्षगुणानुबन्धि ॥ २८ ॥
 तेनार्दितो भिन्नपुरीषवर्णो विगन्धिवैरस्ययुतः पिपासी ।
 मूर्च्छाभ्रमं गद्गद्वाग्वमिं च विचेष्टमानोऽरतिमाप्नुयाद्वा ॥ २९ ॥
 आमाशयस्थे कफवातरोगी पक्वाशयस्थेऽनिलपित्तरोगी ।
 मवेत्समुद्ध्वस्तशिरोरुहाङ्गो विलूनपक्षस्तु यथा विहङ्गः ॥ ३० ॥
 स्थितं रसादिष्वथ वा यथोक्तान्करोति धातुप्रभवान्विकारान् ।
 कोपं च शीतानिलदुर्दिनेषु यात्याशु पूर्वं शृणु तस्य रूपम् ॥ ३१ ॥
 निद्रा गुरुत्वं च विजृम्भणं च विश्लेषहर्षावथ चाङ्गमर्दः ।
 ततः करोत्यन्नमदाविषाकावरोचकं मण्डलकोठजन्म ॥ ३२ ॥
 मांसक्षयं पादकरप्रशोथं मूर्च्छां तथा छर्दिमथातिसारम् ।
 दूषीविषं श्वासतृषाज्वरांश्च कुर्यात्प्रवृद्धिं जठरस्य चापि ॥ ३३ ॥
 उन्मादमन्यजनयेत्तथाऽन्यदानाहमन्यत्क्षपयेच्च शुक्रम् ।
 दुःसाध्यमन्यजनयेच्च कुष्ठं तांस्तान्विकारांश्च बहुप्रकारान् ॥ ३४ ॥
 दूषितं देशकालान्नदिवास्वप्नैरभीक्ष्णशः ।
 यस्मात्संदूषयेद्भातंस्तस्माद्दूषीविषं स्मृतम् ॥ ३५ ॥
 साध्यमात्मवतः सद्यो याप्यं संवत्सरोषितम् ।
 दूषीविषमसाध्यं तु क्षीणस्याहितसेविनः ॥ ३६ ॥
 सौभाग्यार्थं स्त्रियः स्वेदरजोनानाङ्गजान्मलान् ।
 शत्रुप्रयुक्तांश्च गरान्प्रयच्छन्त्यन्नमिश्रितान् ॥ ३७ ॥
 तैः स्यात्पाण्डुः कृशोऽल्पाग्निर्गरश्चास्योपजायते ।
 मर्मप्रधमनाध्मानं हस्तयोः शोथं एव च ॥ ३८ ॥
 जठरं ग्रहणीदोषो यक्ष्मा गुल्मः क्षयो ज्वरः ।
 एवंविधस्य वाऽन्यस्य व्याधेरलिङ्गानि दर्शयेत् ॥ ३९ ॥
 इति दूषीविषनिदानम् ।

अथ लूताविषनिदानम्—

यस्माल्लूनतृणं प्राप्ता मुनेः प्रस्वेदबिन्दवः ।
 तस्माल्लूतास्तु भाष्यन्ते संख्यया तास्तु षोडश ॥ ४० ॥
 तामिदंष्ट्रे दंशकोऽथ प्रवृत्तिः क्षतजस्य च ।
 ज्वरो दाहोऽतिसारश्च गदाः स्युश्च त्रिदोषजाः ॥ ४१ ॥

the first of these is the fact that the
bones of the skull are not
fused together as in the
human skull, but are
separated by a layer of
cartilage. This is a
characteristic of the
lower mammals, and
is a sign of a more
primitive type of
organization. The
second point is that the
teeth are not
differentiated into
incisors, canines, and
molars, but are all
of the same size and
shape. This is also a
characteristic of the
lower mammals, and
is a sign of a more
primitive type of
organization. The
third point is that the
bones of the skull are
not fused together as in
the human skull, but are
separated by a layer of
cartilage. This is a
characteristic of the
lower mammals, and
is a sign of a more
primitive type of
organization.

The fourth point is that the
teeth are not
differentiated into
incisors, canines, and
molars, but are all
of the same size and
shape. This is also a
characteristic of the
lower mammals, and
is a sign of a more
primitive type of
organization. The
fifth point is that the
bones of the skull are
not fused together as in
the human skull, but are
separated by a layer of
cartilage. This is a
characteristic of the
lower mammals, and
is a sign of a more
primitive type of
organization.

The sixth point is that the
teeth are not
differentiated into
incisors, canines, and
molars, but are all
of the same size and
shape. This is also a
characteristic of the
lower mammals, and
is a sign of a more
primitive type of
organization.

The seventh point is that the
bones of the skull are
not fused together as in
the human skull, but are
separated by a layer of
cartilage. This is a
characteristic of the
lower mammals, and
is a sign of a more
primitive type of
organization.

The eighth point is that the
teeth are not
differentiated into
incisors, canines, and
molars, but are all
of the same size and
shape. This is also a
characteristic of the
lower mammals, and
is a sign of a more
primitive type of
organization.

The ninth point is that the
bones of the skull are
not fused together as in
the human skull, but are
separated by a layer of
cartilage. This is a
characteristic of the
lower mammals, and
is a sign of a more
primitive type of
organization. The
tenth point is that the
teeth are not
differentiated into
incisors, canines, and
molars, but are all
of the same size and
shape. This is also a
characteristic of the
lower mammals, and
is a sign of a more
primitive type of
organization.

The eleventh point is that the
bones of the skull are
not fused together as in
the human skull, but are
separated by a layer of
cartilage. This is a
characteristic of the
lower mammals, and
is a sign of a more
primitive type of
organization.

पिटका विविधाकारा मण्डलानि महान्ति च ।
 शोथा महान्तो मुदवो रक्ताः श्यावाश्चलास्तथा ॥ ४२ ॥
 सामान्यं सर्वलूतानामेतद्वंशस्य लक्षणम् ।
 दंशमध्ये तु यत्कृष्णं श्यामं वा जालकावृतम् ॥ ४३ ॥
 देग्धाकृति विषं पाकः स्वेदशोथज्वरान्वितम् ।
 दूषीविषाभिर्लूताभिस्तं दृष्टमिति निर्दिशेत् ॥ ४४ ॥
 शोथः श्वेता सिता रक्ता पीता च पिडका ज्वरः ।
 प्राणान्तिको भवेद्दाहः श्वासहिक्राशिरोग्रहाः ॥ ४५ ॥
 आदंशाच्छोणितं पाण्डु मण्डलानि ज्वरोऽरुचिः ।
 लोमहर्षश्च दाहश्च लूतादूषीविषादिते ॥ ४६ ॥

मूषकविषमाह—

मूर्छाङ्गशोथवैवर्ण्यक्लेदमन्दश्रुतिज्वराः ।
 शिरोगुरुत्वं लालासृक्छर्दिदंष्ट्रे तु मूषकैः ॥ ४७ ॥

कृकण्टक(गिरधोरा) विषमाह—

कार्श्यं श्यावत्वमथ वा नानावर्णत्वमेव वा ।
 मोहोऽथ वर्चसो भेदो दृष्टः स स्यात्कृकण्टकैः ॥ ४८ ॥

वृश्चिकविषमाह—

दहस्यग्निरिवाऽऽदौ तु भिनत्तीवोर्ध्वमाशु च ।
 वृश्चिकस्य विषं याति दंशः पश्चात्तु तिष्ठति ॥ ४९ ॥
 दष्टोऽसाध्यस्तु हृद्घ्राणरसनोपहतो नरः ।
 मांसैः पतद्भिरत्यर्थं वेदनातर्जो जहात्यसून् ॥ ५० ॥

कणभविषमाह—

विसर्पः श्वयथुः शूलं ज्वरश्छर्दिस्थापि च ।
 लक्षणं कणभैर्दष्टे दंशश्चैवावशीर्यते ॥ ५१ ॥

मण्डूकविषमाह—

हृष्टलोमोच्चिटिक्नेन स्तब्धालिङ्गो भृशार्तिमान् ।
 दृष्टः शीतोदकेनेव सिक्तान्यङ्गानि मन्यते ॥ ५२ ॥

१ ऊर्ध्वाकृति भृशं पा० । २ ग. 'दकोय' । ३ म. दाहो मोहहि० । ४ क. श्व आसुदू० ।
 ५ क. कृष्णलो० ।

10

11

12

13

14

15

16

17

18

19

20

21

22

एकदंष्ट्रार्पितः शूनः सरुजः पीतकः सतृह ।
छर्दिनिद्रा च सविषैर्मण्डूकैर्दष्टलक्षणम् ॥ ५३ ॥

मत्स्यविषमाह—

मत्स्यास्तु सविषाः कुर्युर्दाहं शोथं तथा ज्वरम् ।

जलौकाविषमाह—

कण्डूं शोथं ज्वरं मूर्च्छां सविषास्तु जलौकसः ॥ ५४ ॥

गृहगोधिकाविषमाह—

विदाहं श्वयथुं तोदं स्वेदं च गृहगोधिका ।

शतपयादिविषमाह—

दंशे स्वेदं रुजं दाहं कुर्याच्छतपदीविषम् ॥ ५५ ॥

कण्डूमान्मशकैरीषच्छोथः स्यान्मन्दवेदनः ।

असाध्यकीटसदृशमसाध्यं मशकक्षतम् ॥ ५६ ॥

मक्षिकाविषमाह—

सद्यः प्रस्राविणी श्यावा दाहमूर्च्छाज्वरान्विता ।

पिटका मक्षिकादंशे तासां तु स्थगिका सुहृत् ॥ ५७ ॥

चतुष्पदादिजीवविषमाह—

चातुष्पाद्भिर्द्विपाद्भिर्वा नखदन्तैः क्षतं च यत् ।

शीर्यते पच्यते वाऽपि स्रवति ज्वरयत्यपि ॥ ५८ ॥

अविषत्वमाह—

प्रसन्नदोषं प्रकृतिस्थितं तमन्नाभिकामं सममूत्रविट्कम् ।

प्रसन्नवर्णेन्द्रियचित्तचेष्टं वैद्योऽवगच्छेदविषं मनुष्यम् ॥ ५९ ॥

अथ श्वविषमाह—

त्रस्तो भ्रान्तः सतापः श्वसनकसनवान्पीतवृक्कीटमूत्रः

सोन्मादो भुक्कमाणो दशति च मनुजं याति कालक्रमेण ।

मेघाकाले विशेषात्प्रभवति विकलोऽसाध्यतामाप्नुयाच्च

प्रायो वातप्रधानोऽखिलमलकलितः सारमेयेन दष्टः ॥ ६० ॥

इति विषनिदानम् ।

आदौ सर्पविषचिकित्सा—

कार्या सद्यः सर्पदष्टे मणिमन्त्रौषधक्रिया ।
 अचिन्त्यो हि प्रभावोऽस्ति मणिमन्त्रौषधस्य यत् ॥ ६१ ॥
 मूलं तण्डुलवारिणा पिबति यः प्रत्यङ्गिरासंभवं
 निष्पिष्टं शुचिभद्रयोगादेवसे तस्याहिभीतिः कुतः ।
 दूपादेव कणी यदा दशति तं मोहान्वितं मूढधीः
 स्थाने तत्र तदैव याति नियतं वश्यं यमस्याचिरात् ॥ ६२ ॥
 मसूरं निम्बपत्राभ्यां खादेन्मेषगते रवौ ।
 अब्दमेकं न भीतिः स्याद्विषार्तस्य न संशयः ॥ ६३ ॥
 दंशस्योपरि बध्नीयात्तत्क्षणाच्चतुरङ्गुलम् ।
 क्षौमादिभिर्वेणिकया सिद्धमन्त्रैश्च मन्त्रवित् ॥ ६४ ॥
 अम्बुवत्सेतुबन्धेन बन्धेन स्तभ्यते विषम् ।
 न जायते विषोद्वेगो बीजनाशादिवाङ्कुरः ॥ ६५ ॥
 सत्त्वमालम्ब्य दष्टव्यस्तत्क्षणादुरगो रिपुः ।
 तदैव निर्विषो मर्त्यो जायते भोगिभक्षितः ॥ ६६ ॥
 श्लेष्मणः कर्णगूथस्य वामनासिकया कृतः ।
 लेपो हन्याद्विषं घोरं नृमूत्रासेचनं तथा ॥ ६७ ॥
 कुलिकामूलनस्येन कालदष्टोऽपि जीवति ।
 शिरीषपुष्पस्वरसे सप्ताहं मरिचं सितम् ॥ ६८ ॥
 स्थापितं सर्पदष्टानां पाननस्याञ्जने हितम् ।
 वन्ध्याकर्कोटिकामूलं छागक्षीरेण पेषितम् ॥ ६९ ॥
 नस्यं काञ्जिकसंपिष्टं विषोपहतचेतसः ।
 नक्तमालफलव्योषबिल्वमूलनिशाद्वयम् ॥
 सौरसं पुष्पमाजं च मूत्रं बोधनमञ्जनम् ॥ ७० ॥
 यः पिबति पुष्पयोगे जलपिष्टं सितपुनर्नवामूलम् ।
 तत्संनिधौ न वर्षं वृश्चिकभुजगाः प्रसर्पन्ति ॥ ७१ ॥
 तण्डुलीयकमूलं हि पिष्टं तण्डुलवारिणा ।
 सोषणं पीतमात्रं तु निर्विषं कुरुते नरम् ॥ ७२ ॥
 भूलतामरिचं चाम्बुपिष्टं दष्टेन भोगिना ।
 पीतमात्रं हरेत्तूर्णं विषमं विषमञ्जसा ॥ ७३ ॥

घृतमधुनवनीतं पिप्पलीशृङ्गबेरं

मरिचमपि च दद्यात्सप्तमं सैन्धवेन ।

यदि भवति सरोषं तक्षकेणापि दष्टोऽ-

गदमिह खलु पीत्वा निर्विषं तत्क्षणेन ॥ ७४ ॥

प्रपौण्डरीकं सुरदारुमुस्तं कालानुसारी कटुरोहिणी च ।

स्थौणेयकं ध्यामकगुग्गुलूनि पुंतागतालीसमुवर्चलाश्च ॥ ७५ ॥

कुटनटैलासितसिन्दुवाराच्छिफाश्च कुष्ठं तगरं प्रियङ्गु ।

लोधाञ्जने काञ्चनगैरिकं च समागधं सैन्धवचन्दने च ॥ ७६ ॥

सूक्ष्माणि चूर्णानि समानि कृत्वा भाण्डे निदध्यान्मधुसंयुतानि ।

एषोऽगदस्ताक्षर्य इति प्रदिष्टो विषं निहन्यादपि तक्षकस्य ।

पानाञ्जनाभ्यञ्जननस्ययोगे प्रयुज्यमानो भिषजा जवेन ॥ ७७ ॥

इति प्रपौण्डरीकादिरगदः ।

अथ सर्पविषहरा वर्तिः—

जयपालस्य मज्जानं भाषयेन्निम्बुकद्रवैः ।

एकविंशतिवारांस्तु ततो वर्तिः प्रकल्पयेत् ॥ ७८ ॥

मनुष्यलालया घृष्ट्वा ततो नेत्रे तथाऽञ्जयेत् ।

सर्पदष्टविषं जित्वा सा जीवयति मानवम् ॥ ७९ ॥

इति सर्पविषहरा वर्तिः ।

अथ तीसटात—

कपित्थकाश्मर्यशिरीषधातुपुष्पाणि पिष्ट्वा सलिलैरनुष्णैः ।

पीतानि सर्पस्य विषं निहन्युर्विषं महामण्डलिनां च कुष्ठम् ॥ ८० ॥

त्वक्सप्तपर्णात्कुटजात्सनिम्बादब्दामयोशीरनतानि ताप्यम् ।

लोध्रं विदध्यान्नवमं नवाङ्गं *प्राचेतसं चूर्णमुदाहरन्ति ॥ ८१ ॥

लौहेऽथ हैमे त्वथ राजते वा स्थितं सदा सद्भानि भूपतीनाम् ।

क्षौद्रेण लीढं सचराचराणि विषाणि हन्याद्भुवि मानवानाम् ॥ ८२ ॥

कषौतविद्धमर्त्यशिरोरुहाणि सङ्गाविषाणां शिखिपिच्छकाग्रम् ।

यवस्य धान्यस्य तुषस्य बीजं कार्पासकं चाध्युषिता च माला ॥ ८३ ॥

इत्यौषधीभिः परिकल्पितोऽयं धूपोऽगदः स्याद्भुजगाखुयुक्ते ।

गृहे विधेयः कुशलैरनेन निघ्नन्ति सर्पाश्च तथाऽऽस्ववश्च ॥ ८४ ॥

आस्तिकागदमाह-

श्लेष्मान्तकत्वकक्षवकं गुडूची नृपद्मत्वग्बृहतीद्वयं च ।

एषोऽगदः सर्वविषाणि हन्यादास्तीकनाम्ना मुनिना प्रदिष्टः ॥८५॥

इति सर्पविषचिकित्सा ।

अथ वृश्चिकविषप्रतीकारः-

आरक्तवृन्तापामार्गपत्रं भुक्तं तदैव हि ।

वृश्चिकेन नरं विद्धं कुरुते सुखिनं भृशम् ॥ ८६ ॥

पानीयपिष्टजेपालकल्कलेपेन सर्वथा ।

विषं वृश्चिकविद्धस्य मस्मी भवति तत्क्षणात् ॥ ८७ ॥

नवसागरहरिताले पिष्टे तोयेन लेपनादंशे ।

तत्क्षणमेव हि जयतो वृश्चिकविद्धस्य दुर्धरं क्ष्वेदम् ॥ ८८ ॥

अजाक्षीरेण संपिष्टा शिरीषफलमिश्रिता ।

उपकुल्या विषं हन्ति वृश्चिकस्य न संशयः ॥ ८९ ॥

मनःशिलाकुष्ठकरञ्जबीजशिरीषकाश्मीरभवैः समांशैः ।

गुटी कृताऽऽस्ये विधृता च लिप्ता संहारिणी वृश्चिकवैकृतस्य ॥ ९० ॥

अवतारयत्यधो नीतमूर्ध्वमारोपितं तु वर्धयति ।

वृश्चिकगरलं विधिवत्सायकपुङ्खामवं मूलम् ॥ ९१ ॥

द्विरदपुरीषसमुत्थच्छत्रकबहुवारफलकृता गुटिका ।

वृश्चिकविषस्य कुरुते संक्रमणं नैव पाणिधृता ॥ ९२ ॥

तत्र मन्त्रः-

ॐ आदित्यरथवेगेन विष्णुबाहुबलेन च ।

सुपर्णपक्षघातेन भूम्यां गच्छ महाविष ॥ ९३ ॥

‘ ॐ पक्षियोगिपादाज्ञा श्रीशिवोत्तमप्रमुपादाज्ञा भूम्यां गच्छ महा-
विष ’ इति मन्त्रं वृश्चिकविद्धकर्णे त्रिःसप्तवारं जपेत् ।

दशं स्पृष्ट्वाऽप्येकविशन्तिवारं जपेत्सर्वथा निर्विषो भवति ।

इति तीसटात् । इति वृश्चिकविषप्रतीकारः ।

अथ श्वविषप्रतीकारः-

काकोदुम्बरिकामूलं धतूरफलसंयुतम् ।

पीतं तण्डुलतोयेन सारमेयविषापहम् ॥ ९४ ॥

[Illegible text block]

*कारस्करफलं सेव्यं क्रमवृद्धं दिने दिने ।

सारमेयविषं हन्ति मासेन न हि संशयः ॥ ९५ ॥

तैलार्कदुग्धपल्लैः सगुडैरमीभिर्योगः समैरिति चतुर्भिरलर्कदृष्टे ।

स्यात्सारमेयविषहा शरपुङ्खया वा धतूरबीजयुतपिटकपिप्पली वा ॥

धतूरस्य शिफा पेया कणाक्षीरेण पेयिता ।

अङ्गोटवंशजा वाऽपि श्वविषघ्नी प्रयत्नतः ॥ ९७ ॥

इति श्वविषप्रतीकारः ।

अथ नखदन्तविषप्रतीकारः—

पित्तुमन्दशमीवटकलकयुतं कथितं जलमाशु विलेपनतः ।

नखदन्तविषाणि निहन्ति नृणां विषमाण्यखिलान्यपि सत्यमिदम् ॥ ९८ ॥

इति नखदन्तविषप्रतीकारः ।

अथ मक्षिकाविषप्रतीकारः—

सोमवल्लोऽश्वकर्णश्च गोजिह्वा हंसपद्मपि ।

रजन्यौ गैरिकं लेपो मक्षिकापिटकापहः ॥ ९९ ॥

इति मक्षिकाविषप्रतीकारः ।

अथ वरटीविषम्—

मरिचं नागरोपेतं सिन्धुसौवर्चलान्वितम् ।

फणिवल्लिरसैर्लेपाद्भन्ति तद्वरटीविषम् ॥ १०० ॥

इति वरटीविषम् ।

अथ भ्रमरविषम्—

नागरं गृहकपोतपुरीषं बीजपूरकरसो हरितालम् ।

सैन्धवं च विनिहन्ति विलेपादाशु भृङ्गजनितं विषमेतत् ॥ १ ॥

तमायःस्वेदतामृङ्गया वराट्याश्च विघर्षणात् ।

वृकव्याघ्रतरक्षर्ष्यसृगालद्वीपिवाजिनाम् ॥ २ ॥

रुधिरं स्रावयेद्दंशाद्द्वेलोहशलाकया ।

इति भ्रमरविषम् ।

अथ मूषकविषम्—

अङ्गारधूममाञ्जिष्ठारजनीलवणोत्तमैः ।

लेपो जयत्याखुविषं कोशातक्यथ वा सिता ॥ ३ ॥

कुष्ठं वचामदनकोशवतः फलं च

संयोजितं तदिति चूर्णमिदं चतुर्णाम् ।

गोमूत्रपीतमखिलाखुविषं निहन्ति

कोशातकीकथनमापिबतो नराणाम् ॥ ४ ॥

इति मूषकविषम् ।

अथ मण्डूकविषम्—

शिरीषबीजैः कुलिशद्रुमस्य क्षीरेण पिष्टैः कृतलेपनानाम् ।

विषं विनाशं व्रजति क्षणेन मण्डूकदंशप्रभवं नराणाम् ॥ ५ ॥

इति मण्डूकविषम् ।

अथ स्त्रीविद्धविषप्रतीकारः—

शनौ निमन्त्रयेद्यष्टिं पूर्वं पुष्करिणीस्थिताम् ।

रवौ प्रातस्तत्र गत्वा विद्वान्संयतमानसः ॥ ६ ॥

तडागसंस्थितस्तम्भात्काष्ठमानीय खण्डशः ।

पिबेद्धृद्धः प्रमुच्येत नार्या विद्धेन्द्रियोऽपि च ॥ ७ ॥

इति स्त्रीविद्धविषप्रतीकारः ।

अथ शृङ्गीमत्स्यविषप्रतीकारः—

कृष्णवेत्रस्य निष्क्राथः कल्को वा घृतमिश्रितः ।

शृङ्गीमत्स्यविषं हन्ति धूमो वा बर्हिपक्षजः ॥ ८ ॥

इति शृङ्गीमत्स्यविषप्रतीकारः ।

अथ पिपीलिकादिविषप्रतीकारः—

पिपीलिकाभिर्दृष्टानां मक्षिकामशकैस्तथा ।

गोमूत्रेण वरो लेपः कृष्णवल्मीकमुत्कृतः ॥ ९ ॥

इति पिपीलिकादिविषप्रतीकारः ।

1. The first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

2. The second part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the chairperson.

3. The third part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the secretary.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the treasurer.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the clerk.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of the assistant clerk.

अथ शतपदीविषम्—

लेपः प्रदीपतैलस्य खर्जूरविषनाशनः ।

हरिद्राद्वयलेपो वा सगैरिकमनःशिला ॥ १० ॥

इति शतपदीविषम् ।

अथ स्थावरविषप्रतीकारः—

अथ सर्वविषनाशिनी महाविद्या—

दक्षिणकरगतं कांस्यपात्रस्थं जलं वामकरानामयाऽऽलोड्य सप्तवारं क्षयमाणमन्त्रेण मन्त्रयेत् । ततस्तत्पात्रं दक्षिणकरस्थं वामकरे गृहीत्वा क्षिणकरेण जलमादाय सप्तवारं शिरसि क्षिपेत्सप्त जुलुकानि पायये-
पर्वस्थावरविषान्मुच्यते ।

मन्त्रो यथा—

‘ ॐ गुरुके पायशरण उर्ववीचवीचारिभारविषमौगटी ’ इमं शाब-
मन्त्रं कर्णे सप्तवारं जपेत् । ‘ ॐ नमो भगवते श्रीघोणे हर २ दूर २
र २ वर २ वष २ ल २ र २ लां ३ हर २ मां ३ सर २ शं २ क्षव २
॥ २ ह्रीं २ भगवति घोणेयः ३ सं ३ सः २ वर २ रस ४ खण्डावर-
पे ह्रीं ३ वरविहङ्गममानुषयोगक्षेमं वद शेखरिशेखरिखः ३ स्वाहा
सप्तवारं प्रजप्तेन तोयेन किल विद्यया ।

अनया प्रोक्षितो मर्त्यो मुच्यते विषतोऽखिलात् ॥ ११ ॥

तक्षकेणापि यो दष्टो विषं वा येन भक्षितम् ।

तावुभावापि जायेते विमुक्तौ विषमाद्विषात् ॥ १२ ॥

विषं दृष्ट्वा यदा मन्त्री मन्त्रमावर्तयेत्सकृत् ।

याति निर्विषतां तूर्णमपि भारशतं विषम् ॥ १३ ॥

इति सर्वविषनाशिनी महाविद्या ।

अथ विषज्वरपातो रसः—

पाययेद्विषमोक्तारं तत्क्षणाद्वस्तशोणितम् ।

किं वा छागं पयः पश्चाद्दामयेदा विषक्षयम् ॥ १४ ॥

स्थिरी भवति तत्कोष्ठे यदाऽसौ निर्विषस्तदा ।

शीतोपचारा वा सेकाः शीताः शीतस्थलस्थितः ॥

विषार्तविषवेगानां शान्त्यै स्युरमृतं यथा ॥ १५ ॥

मूनागताग्रं शिखिपिच्छताग्रं जहद्विषं वा फणभृन्मणिं वा ।
 प्रक्षाल्य तद्गारि निपीय मर्त्यो विषं जयेत्स्थावरजङ्गमाख्यम् ॥ १६ ॥
 मारिचं निम्बपत्राणि सैन्धवं मधुसर्पिषा ।
 घ्नन्ति पीतानि वेगेन विषं स्थावरजङ्गमम् ॥ १७ ॥
 अङ्गोलमूलनिष्काथं फाणितं सघृतं लिहेत् ।
 तैलाक्तश्चित्रनानाङ्गगरदोषविषापहः ॥ १८ ॥
 शर्कराचूर्णसंयुक्तं चूर्णं ताप्यसुवर्णयोः ।
 लेहः प्रशमयत्युग्रं नानायोगकृतं विषम् ॥ १९ ॥
 रङ्गं विषं टङ्कणमूषणं च तुत्थं समांशं कुरु देवदाल्याः ।
 रसेन पिष्टो विषवज्रपातो रसो मवेत्सर्वविषैकहन्ता ॥ २० ॥
 निष्कोऽस्य संजीवयति प्रयुक्तो नृमूत्रयोगेण च सर्वथैव ।
 जराविषेणाऽऽकुलितं तथाऽन्यैर्दुष्टैर्विषैर्धूणितमातुरं च ॥ २१ ॥
 इति विषवज्रपातो रसः ।
 इति स्थावरविषप्रतीकारः ।

अथ लूताविषम्—

कटम्पर्जुनकासीसशेलुक्षीरिद्रुमत्वचः ।
 कषायकल्कचूर्णाः स्युः कीटलूतावणापहाः ॥ २२ ॥
 रजनीद्वयमस्त्रिष्ठापतङ्गगजकेसरैः ।
 शीताम्बुपिष्टैरालेपः सद्यो लूताविषापहः ॥ २३ ॥
 गिरिकर्णीद्वयं शेलुः पाटला द्वे पुनर्नवे ।
 कपित्थश्च शिरीषश्च लेपो लूताविषापहः ॥ २४ ॥
 इति लूताविषम् ।

विषमुक्तनिषेधमाह—

विरुद्धाध्यशनक्रोधक्षुधाव्यायाममैथुनम् ।
 वर्जयेद्विषमुक्तोऽपि दिवास्वापं विशेषतः ॥ २५ ॥
 पयो गव्यं नव्यं घृतमतिसितं नूतनसिता
 मृदुमौद्गः सूपो समरिचपटोलीफलरसः ।
 अपि स्निग्धं मुग्धं दधि च सितभक्तं किल मिथो
 विभक्तं तत्पथ्यं गदितमिह पथ्यं विषजुषाम् ॥ २६ ॥



छत्री झझरपाणिश्च चरेद्वात्रौ तथा दिवा ।
 तच्छायाशब्दवित्रस्ताः पलायन्ते भुजंगमाः ॥ २७ ॥
 सोत्कम्पः पुलकावृतः प्रति मुहुर्वक्त्रं समालोकते
 दन्तेनाधरपल्लवं दशति चेत्सीत्कारमुत्कूजति ।
 यस्तापं जडतां च याति नितरां दष्टः स उत्कण्ठते
 रन्तुं वष्टि चितां मलाम्बरवतीं रौद्रीं श्मशानस्थलीम् ॥ २८ ॥
 नासावर्त्म विहाय यस्य पवनो वक्त्रेण याति हुतो
 नेत्रे चातिविकासिते वहति यो ग्रीवां च वक्रामलम् ।
 चन्द्रं पश्यति भानुबिम्बसदृशं सूर्यं शशाङ्काकृतिं
 दष्टो याति भुजंगमेन सदनं वैवस्वतस्याचिरात् ॥ २९ ॥
 यो मर्त्यो नीलकण्ठोऽस्म्यहमिति मनसा मावयन्मध्यनाडी—
 मार्गेणोर्ध्वं समीरं नयति च वपुषः शून्यतां ध्यायमानः ।
 संदष्टस्तक्षकेणाप्यथ गिलितमहाकालकूटोऽपि मूर्च्छां
 प्राप्तोऽप्याश्वेव भूयो भवति स मनुजो निर्विषस्तत्क्षणेन ॥ ३० ॥
 इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां विषनिदानचिकित्साकथनं नाम षट्चत्वारिंशद-
 धिकशततमस्तरङ्गः ॥ १४९ ॥

अथ षट्चत्वारिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ।

विरुद्धाहारोऽपि विषवत्तरं मारयतीति विषरोगानन्तरं

विरुद्धाहारो भण्यते—

विरुद्धमपि चाऽऽहारं विद्याद्वरविषोपमम् ।
 तद्दोषाय भिषक्स्थाप्यो भोजनावसरे नृपैः ॥ १ ॥
 कालक्रमेण सद्यो वा विरुद्धाहारसेवनम् ।
 निहन्ति मानवं तस्माद्विरुद्धमशनं त्यजेत् ॥ २ ॥
 व्याधिमिन्द्रियदौर्बल्यं मरणं वा प्रयच्छति ।
 विरुद्धमशनं तस्माद्वर्जयेदात्मवान्नरः ॥ ३ ॥

The first part of the paper discusses the importance of understanding the underlying mechanisms of the observed phenomena. This section provides a comprehensive overview of the current state of research in this field, highlighting the key challenges and opportunities for future work. The authors argue that a deeper understanding of these mechanisms is essential for developing effective interventions and policies.

In the second part, the authors present a detailed analysis of the data collected from the study. They use a combination of qualitative and quantitative methods to explore the patterns and trends in the data, providing a rich and nuanced understanding of the phenomena under investigation.

The third part of the paper focuses on the implications of the findings for practice and policy. The authors discuss the potential applications of the research and provide recommendations for how the findings can be used to inform decision-making and improve outcomes.

Conclusion

References

1. Smith, J. (2010). The impact of social media on communication.

Appendix

Table 1: Summary of key findings

Table 2: Detailed data analysis

The following table provides a detailed breakdown of the data collected from the study. It includes information on the demographic characteristics of the participants, the specific measures used in the study, and the results of the various statistical tests conducted. This table is intended to provide a comprehensive overview of the data and to allow readers to verify the findings of the study.

दुग्धं शाककुलत्थमीनमदिरावल्लीफलक्षारप-
 द्मलैर्मांसकरीरजाम्बवदधिक्षौद्रैः पृथग्वाऽपृथक् ।
 दुष्टं स्याद्दधि उष्णलाकुचपयस्तैलासवाङ्गद्वयायुधैः*-
 स्तैलेनाप्यथ तक्रमाज्यकदलीधानापयःसक्तुभिः ॥ ४ ॥
 इदं संयोगविरुद्धम् ।

अथ कालविरुद्धं यथा—

मुहूर्तपञ्चकादूर्ध्वं क्षीरं भजति विक्रियाम् ।
 तदेव द्विगुणे काले विषवद्भ्रान्ति मानवम् ॥ ५ ॥
 अकथितं दश घटिकाः कथितं द्विगुणाश्च ताः पयः पथ्यम् ।
 अथ वा मधुररसाढ्यं यावत्तावत्पयः पथ्यम् ॥ ६ ॥

अथ विशिष्टसंयोगविरुद्धं यथा—

मत्स्यमांसगुडमुद्गसूलकैः कुष्ठमावहति सेवितं पयः ।
 शाकजाम्बवसुरासवैः पुनर्मरियत्यबुधमाशु सर्पवत् ॥ ७ ॥
 एणैर्मृगैर्मयूरैश्च तित्तिरैर्लविकादिभिः ।
 सर्वैर्जङ्गलमांसैश्च क्षीरं न प्रतिषिध्यते ॥ ८ ॥
 अम्लेष्वामलकं पथ्यं लवणेषु च सैन्धवम् ।
 कषायेष्वभया शस्ता कटुवर्गेषु नागरम् ॥ ९ ॥
 पटोलं तिक्तवर्गेषु मधुरेषु तु शर्करा ।
 एतैः सह हितं दुग्धमेतदन्यैर्विकारकृत् ॥ १० ॥
 रात्रिक्षीरं न सेवेत यदि सेवेत न स्वपेत् ।
 यदि स्वपेद्भ्रतर्यायुस्तस्मात्पथ्यं दिवा पयः ॥ ११ ॥
 विवर्णं विरसं चाम्लं दुर्गन्धिग्रथितं पयः ।
 वर्जयेत्कामलापाण्डुशोफकुष्ठादिरोगकृत् ॥ १२ ॥
 न रात्रौ दधि भुञ्जीत न चाप्यघृतशर्करम् ।
 नामुद्गसूपं नाक्षौद्रं नोष्णं नाऽऽमलकैर्विना ॥ १३ ॥
 शस्यते दधि नो रात्रौ शस्तं चाम्बुघृतान्वितम् ।
 रक्तपित्तकफोत्थेषु विकारेषु हितं न तत् ॥ १४ ॥
 हेमन्ते शिशिरे चापि वर्षासु दधि शस्यते ।
 शरद्रीष्मवसन्तेषु प्रायशस्तद्धि गर्हितम् ॥ १५ ॥

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting department in ensuring the integrity of the financial statements. It also highlights the need for transparency and accountability in the reporting process.

2. The second part of the document outlines the various methods used to collect and analyze data, including interviews, surveys, and focus groups. It also discusses the challenges associated with data collection and the steps taken to ensure the reliability and validity of the results.

3. The third part of the document presents the findings of the study, which show that there is a significant correlation between the use of technology and the accuracy of financial reporting. It also identifies the factors that influence the adoption of technology and the barriers to its widespread use.

4. The fourth part of the document discusses the implications of the findings for the accounting profession and the need for ongoing research and development in this area. It also provides recommendations for the implementation of technology in the accounting department.

5. The fifth part of the document concludes the study and summarizes the key findings and recommendations. It also acknowledges the limitations of the study and the need for further research in this area.

ज्वरासृक्कुष्ठबीसर्पपित्तपाण्ड्वामयभ्रमान् ।
 प्राप्नुयात्कामलां चोग्रां विधिं हित्वा दधिप्रियः ॥ १६ ॥
 नैव तर्कं केशे दद्यान्नोष्णकाले न दुर्बले ।
 न मूर्च्छाभ्रमदाहेषु न रोगे रक्तपित्तजे ॥ १७ ॥
 घातपित्ते तथा चोग्रे कफोत्थेष्वामयेषु च ।
 मार्गावरोध उष्णे च वायौ तर्कं प्रशस्यते ॥ १८ ॥
 उष्णेन दिव्यसलिलेन वराहगोधा-
 मांसेन याति विकृतिं मधु मूलकैश्च ।
 तर्केण चोष्णमपि तुल्यघृतं घृतं च
 कांस्ये दशाहमुषितं च तथा घृतं च ॥ १९ ॥
 गोधातित्तिरलावबर्हिपललान्येरण्डतैलाग्निना
 मत्स्यास्त्वैक्ष्वमाधवैरथ पृषदक्षामिषाण्यासवैः ।
 तैलैः सर्षपजैः कपोतपललं सिद्धं विरुद्धं तथा
 नानैकत्र तु पाचितानि तरसा व्यापादयन्त्याङ्गिनम् ॥ २० ॥
 हारीतस्य पलं हि दारुरजनी शूलेन विद्धा निशा
 वह्नौ पाचितमस्ति मानवमथौ कौसुममैलैरपि ।
 प्रोतं केनचिदेव भासपललं शूलेन दुष्टं मतं
 वारुण्या बिसकण्टिका सह तथा कुल्माषकैश्चाहिता ॥ २१ ॥
 दुष्टं पायसमन्वितं कृशरया चन्द्रस्तु निम्बूरसै-
 स्तैलैः सार्धमफेनकं किटिवसासिद्धौ विरुद्धौ बकः ।
 सर्पिःक्षौद्रवसांभुतैलमपृथक्कृत्वा द्विशो वा त्रिशो
 मिस्सा पर्युषिता तथा मुहुरनुष्णोष्णीकृता नो हिता ॥ २२ ॥
 अत्युष्णं वमिरेककृन्निगदितं वृन्ताकमापाचितं
 पिण्याकेन तु साधिता सह विरेकाय स्मृतोपोदका ।
 सूपो माषमवस्तु मूलकयुतः शूलामगुल्मप्रदो
 दुष्टं लाकुचमाज्यदुग्धगुडदध्यन्नं समापं पृथक् ॥ २३ ॥
 सक्तुर्मक्तपयःपलैः समथितैर्दुष्टः पृथग्वाऽपृथक्-
 तीक्ष्णं क्षौद्रकणागुडैः सह तथा स्यात्काकमाची भृशम् ।

Age Group	Percentage
18-24	10%
25-34	20%
35-44	25%
45-54	20%
55-64	15%
65-74	10%
75-84	5%
85+	5%



The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. It then presents a review of the journal's
 content, highlighting the contributions of its authors and
 the quality of its research. The second part of the paper
 discusses the journal's impact on the field of management
 education, including its influence on the development of
 management education programs and the advancement of
 research in the field. The paper concludes with a
 discussion of the journal's future prospects and the
 challenges it faces.

Abstract

Abstract

1000

1000

1000

1000

100

1000

Abstract



स्नेहे निस्तलने झषस्य तलिता किंवोषिता यामिनीं
कम्पिलस्तु सतक्र एवमहिमैर्मल्लामन्नादिभिः ॥ २४ ॥

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां विरुद्धाहारकथनं नाम षट्चत्वारिंश-
दधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १४६ ॥

अथ सप्तचत्वारिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ षण्ढ्याधिकारः—

प्रमवति न हि पुंस्त्वं यस्य पुंसः प्रकामं
स न मवति समर्थस्त्रीषु गन्तुं कथंचित् ।
न च सुखमुपयाति प्रायशो बालकानां
समुदयति च लज्जा तस्य दृष्ट्वा सपुत्राम् ॥ १ ॥
वितरति न हि कन्यां कोऽपि षण्ढाय पुंसे
त्यजति च परिणीता सुन्दरी तं स्मरार्ता ।
उपहसति तमुच्चैः कामहीनं मनुष्यं
तत इह कथयिष्ये षण्ढतायाश्चिकित्साम् ॥ २ ॥
षण्ढयानि कानिचिद्दोषरक्तदुष्टेन रेतसा ।
पृथक्पृथग्भवन्त्यन्यन्मनोग्रेन च हेतुना ॥ ३ ॥
अन्यदोजःक्षयादन्यद्वेतःक्षेप्येन तद्भवेत् ।
आसेक्यश्च सुगन्धी च कुम्भीकश्चेर्ष्यकस्तथा ॥ ४ ॥
एते षण्ढा बीजदोषदुराचरणपाप्मभिः ।
एकाङ्गमपि षण्ढं हि वदन्त्यन्येऽगदंकराः ॥ ५ ॥
मर्मच्छेदजमेकं तदपरं सहजं स्मृतम् ।
एवमष्टादशविधं षण्ढ्यं समुपजायते ॥ ६ ॥

स्वहेतुजमाह—

अतिव्यवायशीलस्य दोषा दुष्टाः स्वहेतुभिः ।
शुक्रनाडीगताः शुक्रं दूषयन्ति पृथक्पृथक् ॥ ७ ॥

वातदुष्टशुक्रमाह—

तत्र वातविदुष्टे तु शुक्रे स्तः शोणमेचकौ ।
वर्णौ तोदादयः सर्वे जायन्ते गात्रसंधिषु ॥ ८ ॥



पित्तदुष्टशुकमाह—

पित्तेन दुष्टे तस्मिंस्तु नीलपीतप्रभे मते ।
दाहदोषादयो देहे लोहगन्धश्च जायते ॥ ९ ॥

श्लेष्मदुष्टशुकमाह—

शुके तु श्लेष्मणा दुष्टे श्वेतवर्णोऽभिजायते ।
पूतिगन्धश्च वपुषि कण्ड्वर्तिगुरुतादयः ॥ १० ॥

रक्तदुष्टमाह—

रक्तेन दुष्टे शुके तु गन्धः कुणपवद्भवेत् ।
अनल्पं च भवेच्छुक्रमतः कुणपनामकम् ॥ ११ ॥

द्विदोषदुष्टमाह—

यच्छुक्रं दूषितं वातश्लेष्मभ्यां ग्रन्थिलं हि तत् ।
द्विदोषवर्णपीडाभिरुपयुक्तं च जायते ॥ १२ ॥
दूषितं श्लेष्मपित्ताभ्यां शुक्रं पूयसमं भवेत् ।
श्लेष्मपित्तरुजावर्णगन्धं चापि प्रजायते ॥ १३ ॥
प्रदुष्टं वातपित्ताभ्यां क्षीणशुक्रं प्रजायते ।
तद्वर्णवेदनागन्धयुक्तं क्षीणाभिधं हि तत् ॥ १४ ॥

त्रिदोषदुष्टमाह—

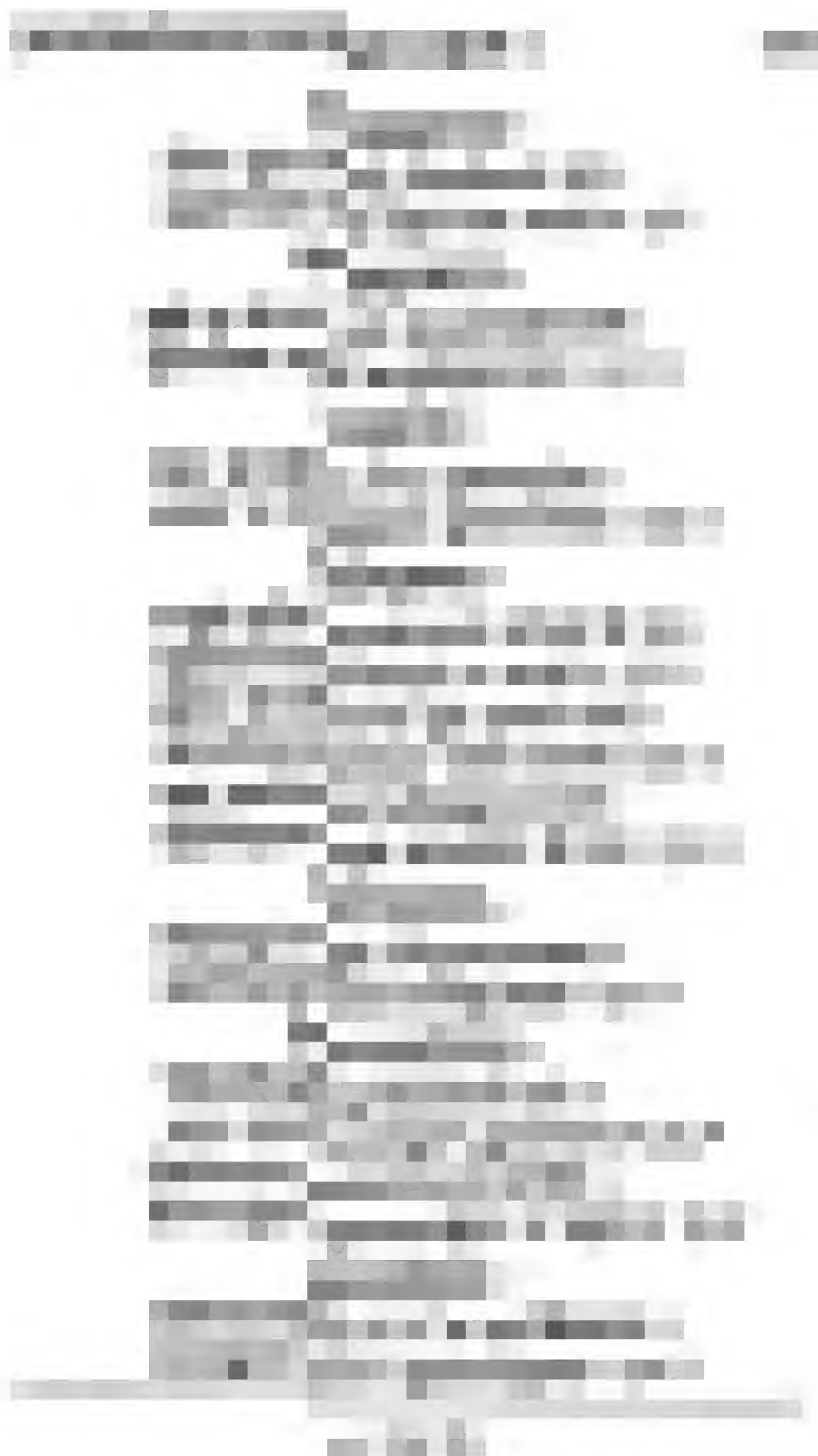
त्रिदोषदुष्टं यच्छुक्रं तन्मूत्रमलगन्धवत् ।
तद्वर्णवेदनायुक्तमसाध्यमतिदुःखदम् ॥ १५ ॥

क्लैव्यजननदोषमाह—

तैस्तैर्मावैरह्यैस्तु रिरंसोर्मनसि क्षते ।
ध्वजः पतत्यतो नृणां क्लैव्यं समुपजायते ॥ १६ ॥
नीक्षणैरम्लोष्णलवणैरतिमात्रोपसेवितैः ।
सौम्यधातुक्षयो वृष्टस्तस्मात्क्लैव्यं परं स्मृतम् ॥ १७ ॥

शुक्रक्षयहेतुमाह—

अतिव्यवायशीलो यो न च वाजीक्रियारतः ।
ध्वजमङ्गमवाप्नोति स शुक्रक्षयहेतुकम् ॥ १८ ॥



शुकजननक्रममाह—

पित्रोरत्यल्पबीजत्वादासेक्यः पुरुषो भवेत् ।
स शुकं प्राश्य लभते ध्वजोच्छ्रायमसंशयम् ॥ १९ ॥

सौगन्धिकदोषमाह—

यः पूतियोनौ जायेत स सौगन्धिकसंज्ञकः ।
स योनिशेफसोर्गन्धमाग्राय लभते बलम् ॥ २० ॥

कुम्भीकदोषमाह—

स्वे गुदे ब्रह्मचर्याद्यः स्त्रीषु पुंवत्प्रवर्तते ।
कुम्भीकः स तु विज्ञेय ईर्ष्यकं शृणु चापरम् ॥ २१ ॥

ईर्ष्यकदोषमाह—

वृद्धा व्यवायमन्येषां व्यवाये यः प्रवर्तते ।
ईर्ष्यकः स तु विज्ञेयो हृग्योन्याख्योऽपि स स्मृतः ॥ २२ ॥

एकाङ्गदोषमाह—

या शुकं यस्य बध्नाति तस्यामेव स पूरुषः ।
अन्यस्यां जायते क्लीब एकाङ्गं तं विदुर्बुधाः ॥ २३ ॥

मर्मच्छेददोषमाह—

शुकवाहिशिरामर्मच्छेदाद्वाऽश्मरिशोधनात् ।
क्लेशं संजायते नृणां तन्मर्मच्छेदजं स्मृतम् ॥ २४ ॥

महाषण्डमाह—

यो मार्यायामृतौ मोहादङ्गनेव प्रवर्तते ।
तत्र स्त्रीचेष्टिताकारो महाषण्डो भवेन्नरः ॥ २५ ॥
असाध्यं सहजं षाण्ड्यमेतदाहुर्मनीषिणः ।
मर्मच्छेदजमप्येवं यच्च विद्वगन्धिरेतसः ॥ २६ ॥

इति पुरुषषाण्ड्यनिदानम् ।

अथ स्त्रीषाण्ड्यनिदानम्—

स्त्रीणामार्तवमप्येवं पृथग्दोषैर्द्विशस्त्रिः ।
रक्तेन च विदुष्टं हि नापत्यजननक्षमम् ॥ २७ ॥

[Illegible text block]

पूर्वोक्तान्येव नामानि विद्यादेषां भिषग्वरः ।

बीजदोषा अपि क्लृप्ते गणिता निष्फला यतः ॥ २८ ॥

इति स्त्रीषाण्डयनिदानम् ।

अथ शुक्रार्तवयोर्लक्षणम्—

स्फटिकामं द्रवं स्निग्धं मधुरं मधुगन्धि च ।

शुक्रमिच्छन्ति केचित्तु तैलक्षौद्रनिभं वरम् ॥ २९ ॥

शशास्त्रप्रतिमं यत्तु यद्वा लाक्षारसोपमम् ।

तदार्तवं प्रशंसन्ति यद्वासो न विरञ्जयेत् ॥ ३० ॥

शुद्धार्तवां यदा नारीं शुद्धशुक्रः पुमान्वजेत् ।

सा तदा गर्भमाधत्ते नान्यथेति विनिश्चितम् ॥ ३१ ॥

बलवीर्यप्रभातेजोमेधावीर्यायुरन्वितः ।

तयोः संजायते पुत्रः पुंस्त्रियोः शुद्धरेतसोः ॥ ३२ ॥

इति शुक्रार्तवयोर्लक्षणम् ।

अथ वाजीकरणविधिमाह—

नरो वाजीकरान्योगान्सम्यक्शुद्धो निरामयः ।

आसप्तति प्रकुर्वीत वर्षादूर्ध्वं तु षोडशात् ॥ ३३ ॥

न तु वै षोडशोनस्य सप्ततेः परतो न च ।

आयुष्कामो नरः स्त्रीभिः संयोगं कर्तुमर्हति ॥ ३४ ॥

शुष्कं रूक्षं यथाकामं क्षयकाण्यतिपाण्डुताः ।

अतिव्यवायाज्जायन्ते रोगाश्चाऽऽक्षेपकादयः ॥ ३५ ॥

स्त्रीसेवनान्मेहमेदोवृद्धिरङ्गे च मार्दवम् ।

त्यजेत्पूज्यशुचिस्थाने लोकाध्यक्षं च मैथुनम् ॥ ३६ ॥

आयुष्मन्तो मन्दजरावपुर्वर्णबलान्विताः ।

स्थिरोपचितमांसाश्च भवन्ति स्त्रीषु संयुताः ॥ ३७ ॥

अथ स्त्रीगमन ऋतुदिनमर्यादामाह—

त्र्यहाद्वसन्तशरदोः पक्षाद्वर्षानिदाघयोः ।

हेमन्ते शिशिरे चापि कामं सेवेत कामिनीम् ॥ ३८ ॥

ग्लानिः कायाग्निदौर्बल्यं धात्विन्द्रियबलक्षयः ।

क्षयवृद्धशुष्यपदंशाश्च रोगाश्चान्येऽतिदुर्जयाः ॥ ३९ ॥

अकालमरणं च स्याद्व्रजतस्त्रियमन्यथा ।

अथ स्त्रीसङ्गनिषेधः—

रजस्वलामकामां च मलिनामप्रजामपि ॥ ४० ॥
 वर्णवृद्धां वयोवृद्धां तथा व्याधिप्रपीडिताम् ।
 हीनाङ्गीं कुटिलां द्वेष्यां योनिदोषसमन्विताम् ॥ ४१ ॥
 स्वगोत्रां गुरुपत्नीं च तथा प्रव्रजितामपि ।
 संध्ययोः श्राद्धदिवसे संक्रान्तिदिवसेऽपि च ॥ ४२ ॥
 नरो नितम्बिनीं नैव भजेदायुर्विवृद्धये ।
 रजस्वलां चतुर्थाहान्नरस्याऽऽसेवनात्पुनः ॥ ४३ ॥
 दृष्ट्यायुस्तेजसां हानिरधर्मश्च ततो भवेत् ।

सेवनयोग्यां स्त्रियमाह—

वयोरूपगुणोपेतां तुल्यशीलगुणान्वयाम् ॥ ४४ ॥
 अतिकामोऽतिकामाढ्यां हृष्टो हृष्टामलंकृताम् ।
 सेवेत प्रमदां मर्त्यो वाजीकरणवृंहितः ॥ ४५ ॥

मैथुनान्ते हितमाह—

स्नानं सशर्करं क्षीरं रसो मक्ष्याश्च गौडिकाः ।
 व्यजनं स्वप्रसेवा च व्यवायान्ते हितानि तु ॥ ४६ ॥

तत्र शुक्रदोषनिवारणार्थं भेषजमाह—

तत्राऽऽद्याऽशुक्रदोषांस्त्रीन्नेहस्वेदादिभिर्जयेत् ।
 क्रियाविशेषैर्मतिमांस्तथैवोत्तरवस्तिभिः ॥ ४७ ॥
 पाययेत नरं सर्पिर्भिषक्कुणपरेतसि ।
 धातकीपुष्पखदिरदाडिमार्जुनसाधितम् ॥ ४८ ॥
 ग्रन्थीभूते सटीसिद्धं पालाशे वाऽथ भस्मनि ।
 परूषकवटादिभ्यां पूयप्रख्येऽत्र साधितम् ॥ ४९ ॥
 प्रागुक्तं वक्ष्यते यच्च तत्कार्यं क्षीणरेतसि ।
 विट्प्रभे तु पिबेत्सर्पिः सिद्धं चोशीरहिङ्गुभिः ॥ ५० ॥
 स्निग्धं वान्तं विरिक्तं च निरूढमनुवासितम् ।
 योजयेच्छुक्रदोषातं सम्यगुत्तरवस्तिना ॥ ५१ ॥
 दुर्गन्धे पूयसंकाशे मज्जप्रख्ये तथाऽऽर्तवे ।
 पिबेद्भद्रश्रियः काथं चन्दनकाथमेव वा ॥ ५२ ॥

विधिमुत्तरबस्त्यन्तं कुर्यादार्तवशुद्धये ।
 स्त्रीणां स्नेहादियुक्तानां सर्वास्वार्तवरुक्षु वै ॥ ५३ ॥
 कुर्यात्कल्कान्पिचूंश्चापि पथ्यान्याचमनानि च ।
 मनोघ्नजे तु कर्तव्या निदानविपरीतता ॥ ५४ ॥
 वक्ष्यमाणो विशिष्टोऽपि विधेयो विधिरादरात् ।
 सौम्यधातुक्षयोत्थेऽत्र निदानपरिवर्जनम् ॥ ५५ ॥
 अभ्यङ्गस्नानदुग्धाज्यब्रह्मचर्यसितासवम् ।
 जाङ्गलामिषयूषाश्च वरवासःस्रगादयः ॥ ५६ ॥
 साधुसौधास्थितिर्वर्यमुगन्धिद्रव्यसेवनम् ।
 विधिर्वाजीकरः सर्वः कर्तव्यश्च विजानता ॥ ५७ ॥
 शुक्रक्षयोत्थे षाण्ढ्ये तु ब्रह्मचर्यं विशेषतः ।
 वृष्यो विधिः समस्तोऽपि वक्ष्यमाणोऽत्र शस्यते ॥ ५८ ॥
 आसेव्यादेः प्रतीकारो निदानेन सहोदितः ।
 निबद्धं स्वं यथा रेतस्तथा कृत्वा रतं सह ॥ ५९ ॥
 तद्योनिगलितं बीजं युक्त्या तूलेन संहरेत् ।
 यथा सा न विजानाति तथा तस्या भगे क्षिपेत् ॥ ६० ॥
 तद्बीजं तत्र भवति स पुमान्मदनोपमः ।
 यत्र यत्र करोत्येवं तत्र तत्र स पूरुषः ॥ ६१ ॥

अथ सामान्यविधिः—

चूर्णं विदार्याः सुकृतं स्वरसेनैव भावितम् ।
 सर्पिः क्षौद्रयुतं लीढ्वा दश गच्छेन्नरोऽङ्गनाः ॥ ६२ ॥
 एवमामलकं चूर्णं स्वरसेनैव भावितम् ।
 शर्करामधुसर्पिभ्यां युक्तं लीढ्वा पयः पिबेत् ॥ ६३ ॥
 एतेनाशीतिवर्षोऽपि युवेव परिहृष्यति ।
 विदारीकन्दकल्कं च घृतेन पयसा नरः ॥ ६४ ॥
 उदुम्बरसमं भुक्त्वा वृद्धोऽपि तरुणाञ्जयेत् ।
 अश्वत्थफलशृङ्गाभ्रमूलत्वङ्निःशृतं पयः ॥ ६५ ॥
 पीत्वा सशर्करं चैव वृद्धोऽपि तरुणायते ।
 स्वयंगुप्तेक्षुरकयोर्बीजचूर्णं सशर्करम् ॥ ६६ ॥
 धारोष्णेन नरः पीत्वा पयसा न क्षयं व्रजेत् ।
 माषाणां पलमेकं तु संयुक्तं मधुसर्पिषा ॥ ६७ ॥

तलीद्वा तु पिबेत्क्षीरं तेन वाजी मवेन्नरः ।
 कर्षं मधुकचूर्णस्य घृतक्षौद्रसमन्वितम् ॥ ६८ ॥
 पयोनुपानं यो लिह्यात्स गच्छेद्दश चाङ्गनाः ।
 गृष्टीनां वृद्धवत्सानां भाषपर्णीभुजां गवाम् ॥ ६९ ॥
 यत्क्षीरं तत्प्रशंसन्ति बलकामेषु जन्तुषु ।
 शर्करायाः पलैकं स्यादेकं गव्यस्य सर्पिषः ॥ ७० ॥
 प्रस्थो विदारीचूर्णानां पिप्पल्याः प्रस्थ एव च ।
 अर्धाढकं तुगाक्षीर्याः क्षौद्रस्याभिनवस्य च ॥ ७१ ॥
 तत्सर्वं मूर्छितं तिष्ठेद्भाजने घृतभाषिते ।
 मात्रामग्नेः समां तस्य प्रातः प्रातः प्रयोजयेत् ॥ ७२ ॥
 एष वृष्यः परं योगः कण्ठ्यो बृंहण एव च ।

अथ पूपलिकापाकः—

कुडवश्चूर्णितानां स्यादात्मगुप्ताफलस्य च ॥ ७३ ॥
 कुडवश्चैव तत्सर्वं विपचेत्क्षीरसर्पिषा ।
 पक्कां पूपलिकां खादेवृद्धाः स्युर्यस्य योषितः ॥ ७४ ॥

इति पूपलिकापाकः ।

अथ रसालाकरणविधिः—

दध्नामाढकमीषदम्लमधुरं खण्डस्य चन्द्रद्युतेः
 प्रस्थं क्षौद्रपलं पलं च हविषः शुठ्याश्चतुर्माषकाः ॥
 अक्षार्धं मरिचाद्विगृह्य तु पुनर्द्वौ माषकावेकतः
 कृत्वा शुक्लपटे शनैः करतलेनोन्मथ्य विस्रावयेत् ॥ ७५ ॥
 मृद्धाण्डे मृगनाभिचन्दनरसस्पृष्टेऽगुरुधूपिते
 सत्कर्पूररजोरजस्पृशि भृशं दिव्या रसाला मवेत् ॥
 या पीता परमेश्वरेण सुरसा सेयं रसाला तथा
 राज्ञां मन्मथदीपनी सुरुचिरा कान्ता च नित्यप्रिया ॥ ७६ ॥

इति रसालाकरणविधिः ।

अथ बृहदश्वगन्धायं घृतम्—

शुभदेशोत्थितमच्छं मूलशतं सम्यगश्वगन्धायाः ।
 पुण्येऽहनि तत्क्षुण्णं विपचेद्घोणेऽम्भसोऽग्निना विद्वान् ॥ ७७ ॥



ज्ञात्वाऽष्टमागशेषं गृह्णीयात्तदसं सुपरिपूतम् ।
 द्वे अत्र षलशते वै दद्याच्छागस्य शुद्धमांसस्य ॥ ७८ ॥
 सर्पिष्प्रस्थमथैकं गव्यं पयसश्चतुर्गुणं दद्यात् ।
 कल्कानक्षसमांशानूर्ध्वमतः संप्रवक्ष्यामि ॥ ७९ ॥
 काकोल्यौ मृद्वीके द्वे मेदे जीवकर्षभौ स्वयंगुप्ताम् ।
 एलां यष्टीमधुकं माषच्छदमुद्रपण्यौ च ॥ ८० ॥
 जीवन्तीमुपकुल्यां बलाविदारीवरीश्चापि ।
 दत्त्वा सम्यग्विपचेत्सर्पिरथोद्धृत्य माजने सुदृढे ॥ ८१ ॥
 मधुशर्करयोः कुडवं दत्त्वा संस्थापयेच्च ततः ।
 तल्लीदवा पाणितलं मुञ्जीत तथा यथेष्टमाहारम् ॥ ८२ ॥
 क्षीणक्षतशिशुवृद्धाः क्षीणेन्द्रियबलवर्णमांसाश्च ।
 प्राश्यैतज्जलमन्ते पुष्टिबलारोग्यतेजसां वृद्धिः ॥ ८३ ॥
 उपयुज्य सर्पिरेतत्सप्ततिवर्षोऽपि पूरुषः सद्दसा ।
 बह्वशः स्त्रियोऽधिगच्छति नश्यति शुक्रक्षयः क्वापि ॥ ८४ ॥
 पुत्रार्थिनी च नारी लभते तनयं सुबन्ध्याऽपि ।
 उपयुक्ते यः पुरुषस्त्रीन्मासान्सार्धमासं वा ॥ ८५ ॥
 नारीशतं स गच्छेन्नैव भवेद्योषितां वृत्तिः ।
 खालित्यवलीपलितैर्न चास्य देहोऽमिभूयते क्षिप्रम् ॥ ८६ ॥
 वातव्याधिमिरार्तास्तथैव हृद्वस्तिरोगार्ताः ।
 अचिरादपि मुञ्जानाः सर्पिररोगाय भवतीह ॥ ८७ ॥
 एवं जगद्धितार्थं सर्पिरिवं वाजिगन्धायाः ।
 श्रेष्ठं वाजीकरणं निर्दिष्टं पूर्वमश्विभ्याम् ॥ ८८ ॥

इति बृहदश्वगन्धाद्यं घृतम् ।

अथ शतावरीघृतम्—

घृतं शतावरीगर्मक्षीरे दशगुणे गवाम् ।
 विपचेत्तन्निपीयाऽऽशु महद्वलमवाप्नुयात् ॥ ८९ ॥

इति शतावरीघृतम् ।

अथ लघुवाजिगन्धाद्यं घृतम्—

कल्केन वाजिगन्धाया विपचेद्घृतमुत्तमम् ।
 चतुर्गुणमजाक्षीरं दत्त्वाोद्धृत्याथ शीतले ॥

100



The first part of the paper discusses the importance of the research and the objectives of the study. The second part describes the methodology used in the study, including the data collection and analysis techniques. The third part presents the results of the study, and the fourth part discusses the conclusions and implications of the findings.

1. *What is the main purpose of the study?*
 2. *What are the research objectives?*
 3. *What is the research methodology?*
 4. *What are the findings of the study?*
 5. *What are the conclusions of the study?*
 6. *What are the limitations of the study?*
 7. *What are the implications of the study?*
 8. *What are the future research directions?*
 9. *What are the contributions of the study?*
 10. *What are the key words of the study?*

सितां समां प्रदायाद्याद्वलपुष्टिविवृद्धये ॥ ९० ॥
इति लघुवाजिगन्धाद्यं घृतम् ।

अथ गोक्षुरादिचूर्णम्—

गोक्षुस्सुरकौ शतमूलीवानरिनागबलाऽतिबला च ।
चूर्णमिदं पयसा निशि पेयं यस्य गृहे प्रमदाशतमस्ति ॥ ९१ ॥
इति गोक्षुरादिचूर्णम् ।

अथ स्वर्णमाक्षिकादिचूर्णम्—

माक्षीकधातुगदपारदलोहचूर्णं
पथ्याशिलाजतुविडङ्गघृतानि योऽद्यात् ।
एकोनविंशतिदिनानि गदार्तितोऽपि
साशीतिकोऽपि रमयत्यबलां युवेव ॥ ९२ ॥
इति स्वर्णमाक्षिकादिचूर्णम् ।

अथ पायसविधिः—

गवां विरूढवत्सानां सिद्धं पयसि पायसम् ।
गोधूमशमितासूत्रैः सितासर्पिर्विशिञ्चितम् ॥ ९३ ॥
भुक्त्वा हृष्यति जीर्णोऽपि दशवारांस्तुरङ्गवत् ।
इति पायसविधिः ।

अथ माषादिचूर्णम्—

पिप्पलीलवणोपेतौ बस्ताण्डौ क्षीरसर्पिषा ॥ ९४ ॥
साधितौ मक्षयेद्यस्तु स गच्छेत्प्रमदाशतम् ।
बस्ताण्डसिद्धे पयसि भावितानसकृत्तिलान् ॥ ९५ ॥
यः खादेत्स नरो गच्छेत्स्त्रीणां शतमपूर्ववत् ।
कुलीरकूर्मनकाणामण्डान्येवं हि भोजयेत् ॥ ९६ ॥
उच्चटाचूर्णमप्येवं क्षीरेणात्तममुच्यते ।
शतावर्युच्चटाचूर्णं पेयमेवं सुखाम्बुना ॥ ९७ ॥
घृतलिप्तमाषविदलं दुग्धे सिद्धं सिताज्यसंयुक्तम् ।
मुक्तं तदेव कुरुते तरुणीभिरतीव दुस्तोषम् ॥ ९८ ॥
त्रिकण्टकात्मगुप्तानां बीजचूर्णं सशर्करम् ।
क्षीरं चानुपिवन्नाच्छेद्दशवारान्निरन्तरम् ॥ ९९ ॥

1. The first part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

2. The second part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

3. The third part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

5. The fifth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

6. The sixth part of the document is a list of the names of the persons who have been appointed to the various offices of the city.

माषपिप्पलिशालीनां यवगोधूमयोस्तथा ।

शर्करापिप्पलीयुक्तं चूर्णं तद्वृष्यमिष्यते ॥ १०० ॥

इति माषादिचूर्णम् ।

अथ माषाद्यं घृतम्—

माषाणामात्मगुप्ताया बीजानामाढकत्रयम् ।

जीवकर्षभकौ वीरा मेदा वृद्धिः शतावरी ॥ १ ॥

मधुकं चाश्वगन्धा च साधयेत्कुडवोन्मितान् ।

समे तस्मिन्घृतप्रस्थं द्रव्याद्दशगुणं पयः ॥ २ ॥

विदारीणां रसप्रस्थं प्रस्थमिधुरसस्य च ।

दत्त्वा मृदग्निना साध्यं सिद्धं सर्पिर्विपाचयेत् ॥ ३ ॥

शर्करायास्तुगाक्षीर्याः क्षौद्रस्य च पृथक्पृथक् ।

मागाश्चतुष्पला वाऽत्र पिप्पल्याः स्रावयेत्पलम् ॥ ४ ॥

पलं पूर्वमतो लीढ्वा ततोऽन्नमुपयोजयेत् ।

यदीच्छेदक्षयं शुक्रं शेफसः स्तब्धतामपि ॥ ५ ॥

इति माषाद्यं घृतम् ।

अथ गोधूमाद्यं घृतम्—

गोधूमतः पलशतं निष्काश्य सलिलाढके ।

पावावशेषे पूतेऽत्र द्रव्याणीमानि दापयेत् ॥ ६ ॥

गोधूममुञ्जातफलं माषो द्राक्षापरूषकम् ।

काकोली क्षीरकाकोली विदारी सशतावरी ॥ ७ ॥

अश्वगन्धा सखर्जूरा मधुकं त्र्यूषणं सिता ।

मल्लातकं चाऽऽत्मगुप्ता सममाम्भानि कारयेत् ॥ ८ ॥

घृतप्रस्थं पचेदेव क्षीरं दत्त्वा चतुर्गुणम् ।

मृदग्निनाऽथ सिद्धेऽस्मिन्द्रव्याण्येतानि निक्षिपेत् ॥ ९ ॥

त्वगेले पिप्पलीं धान्यं कर्पूरं नागकेसरम् ।

यथालाभं विनिक्षिप्य सिताक्षौद्रपलाटकम् ॥ १० ॥

दत्त्वेक्षुदण्डेनाऽऽलोड्य विधिवद्विनियोजयेत् ।

शाल्योदनेन मुञ्जीत पिबेन्मांसरसेन वा ॥ ११ ॥

केवलं वा पिबेद्वृष्यं पलमात्रप्रमाणतः ।

न तस्य लिङ्गशैथिल्यं न च शुक्रक्षयो भवेत् ॥ १२ ॥

बल्यं परं वातहरं शुक्रसंजननं परम् ।
 परमौजस्करं चैव पुष्टिवर्णबलप्रदम् ॥ १३ ॥
 शुक्रकृच्छ्रप्रशमनं वृद्धानां चापि शस्यते ।
 पलद्वयं तदश्रीयाद्दशरात्रमतन्द्रितः ॥ १४ ॥
 स्त्रीणां शतं च भजते पीत्वा चारु पिबेत्पयः ।
 अश्विभ्यां निर्मितं चैव गोधूमाद्यं रसायनम् ॥ १५ ॥
 जलद्रोणेऽथ गोधूमक्वाथस्तच्छेष आढकम् ।
 मुद्गाढकस्य तत्स्थाने तत्समं तालमस्तकम् ॥ १६ ॥

इति गोधूमाद्यं घृतम् ।

अथ जीवन्तीयं घृतम्—

जीवन्त्यतिबलाभेदाकाकोलीद्वयजीवकैः ।
 सममागीकृतैः कृष्णाकाकनासारसायनैः ॥ १७ ॥
 रास्नामदनपट्याहसरलाभीरुचन्दनैः ।
 स्वयंगुप्तासटीशृङ्गीकलशीसारिषाब्दकैः ॥ १८ ॥
 सहदेवावराविश्वापिप्पलीमूलवज्जनैः ।
 पिष्टैस्तैलं घृतं पक्वं क्षीरेणाष्टगुणेन च ॥ १९ ॥
 तद्वन्नमनुवासरे ज्ञेयं बलशुक्राग्निवर्धनम् ।
 बृंहणं वातपित्तघ्नं गुल्मानाहहरं परम् ॥ २० ॥
 नस्ये पानेऽस्य संयुक्तमूर्ध्वजन्तुगदापहम् ।

इति जीवन्तीयं घृतम् ।

अथ गुडकूष्माण्डकावलेहः—

कूष्माण्डकात्पलशतं सुस्निग्धं निष्कुलीकृतम् ॥ २१ ॥
 प्रस्थं च घृततैलस्य तस्मिंस्तप्ते निधापयेत् ।
 त्वक्पत्रधान्यकव्योषजीरकैलाद्विषानलम् ॥ २२ ॥
 षड्ग्रन्थाचव्यमातङ्गपिप्पलीशुङ्गबेरकम् ।
 शुङ्गाटकं कसेरूणि प्रवालं तालमस्तकम् ॥ २३ ॥
 चूर्णीकृत्य पलांशं च गुडस्य तुलया पचेत् ।
 शीतीमूते पलान्यष्टौ मधुनः संप्रकल्पयेत् ॥ २४ ॥

1

2

3

4

5

6

7

8

9

कफपित्तानिलहरं मन्दाग्नीनां च दीपनम् ।
 कृशानां बृंहणं श्रेष्ठं वाजीकरणमुत्तमम् ॥ २५ ॥
 प्रमदासु प्रसक्तानां ये च स्युः क्षीणरेतसः ।
 क्षयेण च गृहीतानां परमेतद्विषग्नितम् ॥ २६ ॥
 कासं श्वासं ज्वरं हिक्रां हन्ति च्छर्दिमरोचकम् ।
 गुडकूष्माण्डकं ख्यातमश्विभ्यां समुदाहृतम् ॥ २७ ॥

इति गुडकूष्माण्डकावलेहः ।

अथ बृहत्कूष्माण्डपाकः—

कूष्माण्डस्य तुलां निधाय विधिवत्स्विन्नां प्रपिष्टां पुन-
 र्युक्तां कर्षमितैः सुचूर्णिततमैर्व्योषालुजीराग्निभिः ।
 चातुर्जातवराबलात्रयवरीतालीसमेथीत्रिवृ-
 हन्तीवारणपिप्पलीक्षुरतिलद्राक्षान्निकण्टाम्बुदैः ॥ २८ ॥
 चव्याश्वामयचारवानरिसटीयष्टीतुगापिप्पली-
 मूलाब्जैः सलवङ्गशाल्मलिजयाकङ्कूलजातीफलैः ।
 जातीकोशाविदारिसिन्धुमुसलाशृङ्गाटकैः सर्पिषः
 प्रस्थेनाभ्रपलेन चापि सितया सार्धं तुलामानया ॥ २९ ॥
 युक्त्या साधु विपाच्य माजनगतं कृत्वा यथाग्निं प्रगे
 कूष्माण्डस्य रसायनं सुललितं शुद्धो नरः शीलयेत् ।
 वृष्यं बृंहणमग्निदीपनकरं यक्षमाम्लपित्तापहं
 पाण्डुश्वासजिदम्लपित्तशमनं मेहादिरोगप्रणुत् ॥ ३० ॥
 एतेनातिबली बलीविरहितः स्त्रीणां युवेव व्रजे-
 द्वृन्दं वृद्धतरो नरोऽतिललितः प्रज्ञाप्रभापूजितः ।

इति बृहत्कूष्माण्डपाकः ।

अथ महाकूष्माण्डपाकः—

कूष्माण्डस्य पचेलिमस्य बृहतः खण्डांस्तुलासंमितां-
 स्तद्वीजान्विगतत्वचश्च विपचेन्मन्देन सप्तार्चिषा ॥ ३१ ॥
 पक्वान्किंचिदमूनमूढद्वयः पिष्ट्वा शिलायां शने-
 स्तत्कल्कं सुरभीघृतेन कुडवद्वन्द्वेन संभर्जयेत् ।

शीते तत्र वरा वरी सन्निमिश्रीश्रीखण्डवंशीबला
 बेलाहावनषट्कटुक्षुरहयोशीराजमोदात्रिवृत ॥ ३२ ॥
 कुठं कटुफलमूसलीगजकणातालीसजीरद्वय-
 ब्राक्षागोक्षुरवृद्धदारुहुतमुग्गशीलवङ्गाम्बुजम् ।
 शृङ्गीचारजवानरीकुमुदिकाखर्जूरवैमीतकं
 कङ्कोलो हपुषाविदारिलवणश्रेष्ठश्चतुर्जातकम् ॥ ३३ ॥
 जातीकोशसुवर्णमाक्षिकयुगं शृङ्गाटकं शालमली-
 त्वक्चेषां मृदुलं रजः पिचुमितं प्रत्येकमत्र क्षिपेत् ।
 अभ्रं वाऽपि पलप्रमाणममलं ताम्रं सलोहं मृतं
 प्रत्येकं पिचुयुग्मकं च सितया साकं तुलामानया ॥ ३४ ॥
 सपाच्यानलयोगतो विरचयेच्चक्रीं यथाग्निं प्रगे
 तामद्यादपि सायमम्बु क्विपदाचाभेच्च ताम्बूलमुक् ।
 कूष्माण्डस्य रसायनं निगदितं वाजीकरं स्त्रीजुषा-
 मश्विभ्यां कफवातपित्तगदजिष्णुक्रातुवातहनुत् ॥ ३५ ॥
 वृष्यं चाप्यतिबृंहणं क्षयहरं जीर्णज्वरघ्नं वमि-
 मेहच्छेदि च रक्तपित्तविजयि स्यादम्लपित्तापहम् ।
 रक्तातौ च विडामयप्रदरयोः पाण्डौ प्रसूत्वामये
 मन्दाग्रौ जठरामयेऽरुचिशिरःपीडाङ्गपीडासु च ॥ ३६ ॥
 आबल्ये पालिते वलीषु नयनश्रोत्रामये शस्यते
 दाहे सर्वशरीरजेऽपि पवनासौ पाण्डुकृच्छ्रेषु च ॥ ३७ ॥

इति महाकूष्माण्डपाकः ।

अथाश्वगन्धापाकः—

अश्वगन्धाप्रस्थमेकं पचेत्क्षीरे चतुर्गुणे ।
 घृतप्रस्थं समादाय खण्डप्रस्थत्रयं तथा ॥ ३८ ॥
 प्रस्थाधांश्च तिलान्माषान्पाचयेन्मृदुवाह्निना ।
 व्योषं त्रिजातं हपुषां शताह्वां शतमूलिकाम् ॥ ३९ ॥
 दीप्यपौष्करकाजार्जी सठीं गोक्षुरकं बलाम् ।
 यवानीं ग्रन्थिकं लोहं नागं शुल्बं पलं परम् ॥ ४० ॥
 दत्त्वा सिद्धेऽत्र विधिवत्प्रातः स्वादेद्यथाबलम् ।
 सर्ववातामयान्हन्ति कटिपृष्ठगुदस्थितान् ॥ ४१ ॥

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that proper record-keeping is essential for the transparency and accountability of the organization. This section also outlines the various methods used to collect and analyze data, ensuring that the information is reliable and up-to-date.

2. The second part of the document focuses on the implementation of the proposed changes. It details the steps involved in the rollout process, from initial planning to final execution. This section also addresses potential challenges and provides strategies to overcome them, ensuring a smooth transition to the new system.

3. The third part of the document discusses the ongoing monitoring and evaluation of the project. It highlights the importance of regular communication and feedback from stakeholders to ensure that the project remains on track and meets its objectives. This section also includes a timeline for the project, with key milestones and deadlines.

4. The final part of the document provides a summary of the project and its outcomes. It reiterates the key findings and recommendations, emphasizing the importance of continued support and collaboration from all stakeholders. This section also includes a list of references and a glossary of terms, providing a comprehensive overview of the project and its context.

अस्थिमज्जं तथा शोफं संधिवातं सुदारुणम् ।
वर्धहृद्रोगगुल्मार्शःकासश्वासप्रमेहनुत् ॥
अश्विभ्यां विहितो योगो वाजीकरणमुत्तमम् ॥ ४२ ॥

इत्यश्वगन्धापाकः ।

अथ गोक्षुरपाकविधिः—

प्रस्थं गोक्षुस्सूक्ष्मचूर्णमुदितं दुग्धाढके पाचितं
जातीपत्रलवङ्गलोहमरिचं कर्पूरमाकलकम् ।
अब्धेः शोषमजाजियुग्ममुसलीधात्रीकणाकेशरं
जातीकोशपल्लदीप्यनलदं शुण्ठीकुबेराक्षजम् ॥ ४३ ॥
स्वक्पत्रं करिकेसरं गजकणारात्रीर्बलाबीजकं
चीनीकन्दयवानिकुङ्कुमतुगाकर्षद्वयं योजयेत् ।
तुल्यं शर्करया तदर्धविजयां प्रस्थार्धकं गोघृतं
शुक्त्या वैद्यवरेण निर्मितमिदं श्रौढाङ्गनाद्वयनुत् ॥ ४४ ॥
वीर्यस्तम्भनतुष्टिपुष्टिजनकं वाजीकरं कामिनां
मुक्तो गोक्षुरपाक एष हरिणीनेत्राविलासास्पदम् ॥ ४५ ॥

इति गोक्षुरपाकविधिः ।

अथ कपिकच्छुपाकः—

प्रस्थं स्वगुप्तबीजानां सूक्ष्मं चूर्णीकृतं मिषक् ।
पचेत्पञ्चाढके दुग्धे मृत्पात्रे मृदुबहिना ॥ ४६ ॥
प्रस्थार्धं गोघृतं दत्त्वा द्विप्रस्थां शर्करामपि ।
जातीफलं जातिपत्रं कङ्कालं नागकेशरम् ॥ ४७ ॥
लवङ्गं दीप्यमाकलमब्धिशोषं त्रिकद्वयः ।
त्रिजातं हेमजीरं च प्रियङ्गुं गजपिप्पलाम् ॥ ४८ ॥
प्रत्येकं कर्षमादाय भक्षयेत्पलमात्रया ।
प्रमेहक्षैण्यकृच्छ्राश्मगुल्मशूलानिलामये ॥ ४९ ॥
शस्तोऽयं स्त्रीषु गर्मार्थं षण्ढानां शुक्रवृद्धये ।
प्रसूतानां हितो रक्तविकारविनिवारकः ॥ ५० ॥
पुंसां वाजीकरो बल्यश्चक्षुष्यः कामवर्धनः ।
कामिनीदर्पविध्वंसकर्ता निधुवने नृणाम् ॥ ५१ ॥

नास्त्यनेन समो योगो वस्राभ्यां निर्मितः शुभः ।
कपिकच्छूबीजपाको दीपनः पाचनः परः ॥ ५२ ॥

इति कपिकच्छुपाकः ।

अथ बृहन्मुसलीपाकः—

मुसलीकन्दचूर्णं तु क्षीरेऽष्टगुणिते पचेत् ।
प्रस्थं घनेऽत्र दातव्यं चूर्णमेषां पृथक्पलम् ॥ ५२ ॥
व्योषं त्रिजातहपुषे शताह्वा शतमूलिका ।
अजाजी दीप्यकश्चैव चित्रको गजपिप्पली ॥ ५४ ॥
यवानी ग्रन्थिकं धात्रीसठीगोक्षुरधान्यकम् ।
अश्वगन्धामयोमोचाः सिन्धुशोषो लवङ्गकम् ॥ ५५ ॥
जातीफलं जातिपत्री नागकेसरकं क्षुरः ।
बला चातिबला नागबला मर्कटिबीजकम् ॥ ५६ ॥
यष्टीशालमलिनिर्यासशृङ्गाटाम्बुदजोङ्गकम् ।
त्वक्क्षीरिका बालकश्च कङ्कोलाकलकं हिमम् ॥ ५७ ॥
लुञ्चितानां तिलानां तु प्रस्थार्धमिह योजयेत् ।
मस्म सूतपलार्धं तु पलमभ्रकलोहयोः ॥ ५८ ॥
सर्वद्विगुणखण्डस्य पाकं कृत्वाऽत्र योजयेत् ।
मैषज्यानां गणं सर्वं वटीकुर्याद्विचक्षणः ॥ ५९ ॥
अर्धमुष्टिमितास्तासु शुभेऽहनि विचक्षणः ।
इष्टदेवं समभ्यर्च्य खादेदेकामहर्मुखे ॥ ६० ॥
ततः किञ्चित्पयः पेयं खादेद्वीडकमुत्तमम् ।
मन्दाग्निगुल्ममेहार्शःश्वासकासव्रणक्षयान् ॥ ६१ ॥
कामलां पाण्डुरोगं च शुक्रक्षैण्यं च दृक्क्षयम् ।
वातरोगं पित्तरोगं कफरोगं तथैव च ॥ ६२ ॥
षाण्ड्यं च प्रदरं स्त्रीणां शुक्रदोषमुरःक्षतम् ।
रजोदोषं मूत्रकृच्छ्रं मूत्राघातं तथाऽश्मरीम् ॥ ६३ ॥
मलदोषं तथाऽऽनाहं कार्श्यमाबल्यमुत्बणम् ।
वातरक्तं च हन्त्येष मुसलीकन्दलेहकः ॥ ६४ ॥



अग्निक्वत्कान्तिकृत्तैजोवृद्धिकृत्कामवृद्धिकृत् ।
अश्विभ्यां निर्मितो योगो वलीपलितनाशनः ॥ ६५ ॥
क्षीणशुक्रान्नरान्दृष्ट्वा नारीश्च क्षीणवीर्यकाः ।
तालमूल्यवलेहोऽयं निर्मितो धरणीतले ।
नास्त्यनेन समो योगो विशेषाच्छुक्रवृद्धये ॥ ६६ ॥

इति बृहन्मुसलीपाकः ।

अथाश्वगन्धापाको योगसारात्—

संचूर्णं तुरगीविदारिमुसलीगोक्षूरकं तत्पृथग्-
द्व्याम्रांशं मृदु पाचितं च महिषीदुग्धाढके गोघृतम् ।
द्व्याम्रां चेश्वरबीजमर्कटिभवं मोचारसं पालिकं
जातीपत्रिलवङ्गजातिफलकं भीरुचतुर्जातकम् ॥ ६७ ॥
शुक्त्यंशं पृथगत्र केशरजटामांस्यब्धिशोषं तुगा-
जाजीग्रन्थिकशोथहात्रिकटुकं धात्रीजलाकलकम् ।
कङ्कालोच्चटपद्मबीजचविकाकर्षांचूर्णं पृथ-
ग्विप्रस्थासितशर्करामृतरसं कर्षं च मन्दाग्निना ॥ ६८ ॥
युक्त्या वैद्यवरेण पाचितमिदं संप्रेक्ष्य सात्त्विकं बलं
प्रातः सेवितमौषधं पिचुयुगं दुग्धं तदन्ते पिबेत् ।
रागार्तो जरठोऽपि नित्यमसकृत्कन्दर्पदर्पोद्धतं
रामाणां शतकं विजित्य हि भवेत्तेजःप्रतापोद्धतः ॥ ६९ ॥
घातं पित्तकफक्षयं च कसनं पाण्डुप्रमेहादिका-
ञ्जित्वा मन्मथकान्तिविग्रहधरः पाकोऽश्वगन्धाभिधः ॥ ७० ॥

इत्यश्वगन्धापाको योगसारात् ।

अथ बृहत्सौभाग्यशुण्ठी—

नागरं खण्डशः कृत्वा प्रस्थमात्रं भिषग्वरः ।
अजादुग्धाढकद्वन्द्वे विपचेन्मन्दवह्निना ॥ ७१ ॥
घनीभूते तु पयसि शुण्ठीं तस्मात्समुद्धरेत् ।
अतिसूक्ष्मं च निष्पेक्ष्य शोषयेदातपे दिनम् ॥ ७२ ॥
घृतमानां समावाप्य तद्दुग्धं तु पुनः पचेत् ।
यावत्पिण्डत्वमायाति ततस्तत्र च मिश्रयेत् ॥ ७३ ॥

चातुर्जातं तुगां वेहं धान्यकं जरिकद्वयम् ।
 मिशिमाकलकं कुष्ठं लवङ्गं च शतावरीम् ॥ ७४ ॥
 तालमूलीं त्रिकटुकं कपिकच्छुं च षट्कटु ।
 जातीफलं जातिकोशं गृङ्गाटं वृद्धदारकम् ॥ ७५ ॥
 त्रिवृतं पद्मबीजं च त्रिफलां च बलात्रयम् ।
 जलं सेव्यं वाजिगन्धाचन्दनागरुकारवीः ॥ ७६ ॥
 कङ्कोलमजगन्धां च द्राक्षामक्षोटचारजम् ।
 अजमोदां च वातामनारिकेलगरं तथा ॥ ७७ ॥
 कर्पूरमभ्रकं लोहं वङ्गं ताम्रं शिलाजतु ।
 स्वर्णमाक्षिकमप्येतत्प्रत्येकं कर्षसंमितम् ॥ ७८ ॥
 चूर्णीकृत्य क्षिपेत्तत्र पाणिभ्यां मर्दयेद्बृहत् ।
 ततः खण्डतुलां पक्त्वा तथा तच्चक्रिकां चरेत् ॥ ७९ ॥
 खण्डनगरकं नाम्ना भैषज्यमिदमुत्तमम् ।
 यथाबलमिदं खादेत्प्रातर्नक्तं च भेषजम् ॥ ८० ॥
 स्त्रीणामतिहितं नात्र पथ्यापथ्यविचारणा ।
 क्षये पाण्डौ ज्वरे कासे श्वासे मन्दानले तथा ॥ ८१ ॥
 संग्रहण्यां रक्तगुल्मे प्रदरे सोमरोगके ।
 रक्तपित्ते चाम्लपित्ते सर्ववातामयेषु च ॥ ८२ ॥
 पित्तरोगेषु सर्वेषु वातपित्तभेदेषु च ।
 धातुशोषे प्रमेहे च रजोदोषे स्वरक्षये ॥ ८३ ॥
 दुग्धक्षये मूत्ररोगे कामलायां गलग्रहे ।
 सूतिकापवनव्याधौ शस्तमेतन्न संशयः ।
 एषा सौभाग्यदा शुण्ठी स्त्रीणां पुत्रप्रदोत्तमा ॥ ८४ ॥

इति बृहत्सौभाग्यशुण्ठी ।

अथामृतभल्लातकम्—

भल्लातकानां पवनोज्झितानां वृन्तच्युतानां तु यदाढकं स्यात् ।
 घृष्टेष्टिकाचूर्णकणैर्जलेन प्रक्षाल्य संशोध्य च मारुतेन ॥ ८५ ॥
 शुष्काणि तानि द्विदलीकृतानि विपाचयेदप्सु चतुर्गुणासु ।
 पादावशेषं परिपूतशीतं क्षीरेण तुल्येन पुनः पचेत्तु ॥ ८६ ॥
 तत्पादशेषं पुनरेव शीतं घृतेन तुल्येन विपाचयेत्तत् ।
 तदर्धया शर्करया विमिश्र्य पश्चात्स्वजेनोन्मथनं विधाय ॥ ८७ ॥

सत्रयूषणं त्रैफलचन्द्रमांसीत्रिवृच्च वांशीखदिरामृतं च ।
 सचन्दनाकलङ्कचीनवासं सदेवपुष्पं मुसलीद्वयं च ॥ ८८ ॥
 कङ्कालमोचाह्वयदीप्ययुग्मं नतं समातङ्गकणाविदारि ।
 मेदाद्वयं लोहरसेन्द्रवङ्गमभ्रं तथा कुङ्कुमकं च कर्षम् ॥ ८९ ॥
 जातीफलं मुस्तकजातिपत्रीकुबेरजीरागरुसाब्धिशोषम् ।
 *तत्सप्तरात्रादुपयुज्य वीर्यं सुधाकरादप्यधिकं लभेत् ॥ १९० ॥
 प्रातः प्रबुद्धः कृतदेवकार्यो मात्रां भजेदात्मशरीरयाग्योम् ।
 × × × न चान्नपाने परिहार्यमस्ति ॥ १९१ ॥
 यथेष्टचेष्टां विचरेत्प्रयोगान्नरो भवेत्काश्चनराशिगौरः ।
 अनल्पमेधा नरसिंहवीर्यो हृद्वेन्द्रियो व्याधिमतः सुबुद्धिः ॥ १९२ ॥
 दन्ता विशीर्णा पुनरेव भव्याः केशा विशीर्णाः पुनरेव नव्याः ।
 विशीर्णकर्णाङ्गुलिनासिकोऽपि कृम्यर्दितो भिन्नगलोऽपि कुटी ॥ १९३ ॥
 शुष्कः पुनः स्वाङ्गतमूलशाखस्तरुयथा माति नवाम्बुसिक्तः ।
 बृहस्पतेरप्यधिकं हि बुद्ध्या ग्रन्थं विशालं च नवं करोति ॥ १९४ ॥
 गृह्णाति सद्यो न च विस्मृतिं च करोति कल्पायुरनल्पवीर्यम् ।
 कुर्वन्निमं कल्पमनल्पबुद्धिं जीवन्नरो वर्षशतं सुखी स्यात् ॥
 पुष्टान्मयूराञ्जयति स्वरेण बलेन नगं तुरगं जवेन ॥ १९५ ॥
 इत्यमृतमह्यातकम् ।

अथ रतिवल्लभाख्यपूगपाकः—

पूगं दक्षिणदेशजं दशपलोन्मानं मृशं कर्तये-
 तच्छिन्नं जलयोगतो मृदुतरं संकुट्य चूर्णीकृतम् ।
 तच्चूर्णं पटशोधितं वसुगुणे गोशुद्धदुग्धे पचे-
 द्गव्याज्याञ्जलिसंयुतेऽतिनिविडे दद्यात्तुलाधौ सिताम् ॥ १९६ ॥
 पक्वं तज्ज्वलनात्क्षितिं प्रतिनयेत्तस्मिन्पुनः प्रक्षिपे-
 द्यद्यत्तत्तदुदाहरामि च जघादहृद्वाऽऽवरात्संहिताः ।
 एला नागबला बला सचपला जातीफलालिङ्गिता-
 जातीपत्रकपत्रपत्रकयुतं तच्च त्वचा संयुतम् ॥ १९७ ॥
 विश्वा वारणवारि वारिदवरा वांशी वरी वानरी-
 द्राक्षा सेक्षुरगोक्षुराऽथ महती खजूरिका क्षीरिका ।

धान्याकं सकसेरुकं समधुकं शृङ्गाटकं जीरकं
 पृथ्वीकाऽथ यवानिका वरटिका मांसी मिशी मेथिका ॥ ९८ ॥
 कन्देष्वत्र विदारिकाऽथ मुसली गन्धर्वगन्धा तथा
 कर्चूरं करिकेसरं समरिचं चारस्य बीजानि च ।
 बीजं शाल्मलिसंभवं करिकणाबीजं वरा जीवजं
 श्वेतं चन्दनमत्र रक्तमपि च श्रीसंज्ञपुष्पैः समम् ॥ ९९ ॥
 सर्वं चेति पृथक्पृथक्फलमितं संचूर्ण्य तत्र क्षिपे-
 त्सूतं वङ्गभुजंगलोहगगनं सन्मारितं स्वेच्छया ।
 कस्तूरीघनसारचूर्णमपि च प्राप्तं यथा प्रक्षिपे-
 त्पश्चादस्य तु मोदकान्विरचयेद्विल्वप्रमाणानथ ॥ २०० ॥
 तान्मोक्ताऽतिसदा यथानलबलं भुञ्जीत नाम्लं रसं
 पूर्वस्मिन्नाशिते गते परिणतिं प्राग्भोजनाद्भक्षयेत् ।
 नित्यं श्रीरतिवल्गुमाख्यममुकं यः पूगपाकं मजे-
 त्स स्याद्दीर्घविवृद्धिवृद्धमदनो वाजीव शक्तो रतौ ॥ १ ॥
 दीप्ताग्निर्बलवान्बली विरहितो हृष्टः स पुष्टः सदा
 वृद्धो योऽपि युवेव सोऽपि रुचिरः पूर्णेन्दुवत्सुन्दरः ॥ २ ॥
 इति रतिवल्गुमाख्यपूगपाकः ।

अथ महाकामेश्वरः—

एतस्मिन्नरतिवल्गुभे यदि पुनः सम्यक्खुरासानिका
 धतूरस्य तु बीजमर्ककरमः पाथोऽब्धिशोषस्तथा ।
 सन्माजूफलकं तथा खसफलं पक्त्वाऽपि यः क्षिप्यते
 चूर्णार्था विजया तदा स हि मवेत्कामेश्वरः संज्ञया ॥ ३ ॥
 इति महाकामेश्वरः ।

अथ कामसुन्दरो मोदकः—

मेथी गुडूची मुसली सटी च विदारिकन्दस्त्रिसुगन्धिसिन्धुः ।
 धात्री लवङ्गेश्वरगोक्षुराश्च शतावरी मोचरसश्च पैर्ण्यः ॥ ४ ॥
 कृष्णाश्वगन्धाकदलीजकन्दनागाह्वजातीफलजातिपत्रम् ।
 शृङ्गीधनीयाह्वयकदफलं च चूर्णान्मृताभ्रं द्विगुणं नियोज्यम् ॥ ५ ॥

[Illegible text block]

सर्वतुर्यांशविजया सर्वद्विगुणशर्करा ।

पिण्डि च मधुसर्पिभ्यां माषौ दण्डोऽथ वा मितिः ॥ ६ ।

इति कामसुन्दरो मोदकः ।

अथ मूलकामेश्वरो रसः—

शरपुङ्खवा जयायास्त्वग्दर्पाश्वश्च जटात्वचः ।

चाम्पेयमूलजात्पक्वविदारीकन्दजं रजः ॥ ७ ॥

समुद्रफलजं चूर्णमजगन्मोत्थबीजम् ।

बीजं चातिबलायाश्च पृथक्फलमितं रजः ॥ ८ ॥

तुल्यशक्राशनस्याम्भश्चूर्णं तुर्यांशमिष्यते ।

तद्भावनौषधेषु स्याच्चूर्णद्विगुणशर्करा ॥ ९ ॥

अतिश्वेता तुर्याकस्तु तुर्यांशं जातिकाफलम् ।

मात्रा स्यात्पञ्चभिः शानैर्मूलकामेश्वरो रसः ॥ २१० ॥

इति मूलकामेश्वरो रसः ।

अथ कामदेववटी सारसंग्रहात्—

कुष्ठं कट्फलसैन्धवं त्रिकटुकं मेथीयवानीद्वयं

वासामोचरसं विदारिमुसलीजातीफलं चित्रकम् ।

जीरं चापरजीरकं गजकणाद्राक्षाभयावानरी

तालीसं त्रिसुगन्धिकं त्रिलवणं वैभीतकं शृङ्गिका ॥ ११ ॥

रम्भाकन्दशतावरीहयसटीयष्टीप्रियालामृता

जातीपत्रलवङ्गकेसरजलं गोक्षूरकं शाल्मली ।

धात्रीमाषपुनर्नवाश्च कनकं शृङ्गाटकं मस्तकी

मांसी चापि बलात्रयं च नलदं भार्गविकर्णस्तिलाः ॥ १२ ॥

कङ्कोलं करहाटकं च विजयः श्रीरुद्रगन्धा कुहू-

र्मज्जा पद्मकबीजमेतदखिलं चूर्णीकृतं स्निग्धकम् ।

एतत्कर्षमितं पृथक्पृथगथो तुर्यांशतुल्यां जयां

तस्या अर्धमितं मृताभ्रकमहो वङ्गं तदर्धं क्षिपेत् ॥ १३ ॥

लोहं मारितमेतदर्धममलं सूतं तदर्धं मृतं

सर्वेभ्यो द्विगुणा सिताऽथ मधुना चाऽऽज्येन संमिश्रयेत् ।

[illegible]

1. **Introduction**
 2. **Background**
 3. **Methodology**
 4. **Results**
 5. **Discussion**
 6. **Conclusion**
 7. **References**
 8. **Appendix**
 9. **Figure 1**
 10. **Figure 2**
 11. **Figure 3**
 12. **Figure 4**
 13. **Figure 5**
 14. **Figure 6**
 15. **Figure 7**
 16. **Figure 8**
 17. **Figure 9**
 18. **Figure 10**
 19. **Figure 11**
 20. **Figure 12**
 21. **Figure 13**
 22. **Figure 14**
 23. **Figure 15**
 24. **Figure 16**
 25. **Figure 17**
 26. **Figure 18**
 27. **Figure 19**
 28. **Figure 20**
 29. **Figure 21**
 30. **Figure 22**
 31. **Figure 23**
 32. **Figure 24**
 33. **Figure 25**
 34. **Figure 26**
 35. **Figure 27**
 36. **Figure 28**
 37. **Figure 29**
 38. **Figure 30**
 39. **Figure 31**
 40. **Figure 32**
 41. **Figure 33**
 42. **Figure 34**
 43. **Figure 35**
 44. **Figure 36**
 45. **Figure 37**
 46. **Figure 38**
 47. **Figure 39**
 48. **Figure 40**
 49. **Figure 41**
 50. **Figure 42**
 51. **Figure 43**
 52. **Figure 44**
 53. **Figure 45**
 54. **Figure 46**
 55. **Figure 47**
 56. **Figure 48**
 57. **Figure 49**
 58. **Figure 50**
 59. **Figure 51**
 60. **Figure 52**
 61. **Figure 53**
 62. **Figure 54**
 63. **Figure 55**
 64. **Figure 56**
 65. **Figure 57**
 66. **Figure 58**
 67. **Figure 59**
 68. **Figure 60**
 69. **Figure 61**
 70. **Figure 62**
 71. **Figure 63**
 72. **Figure 64**
 73. **Figure 65**
 74. **Figure 66**
 75. **Figure 67**
 76. **Figure 68**
 77. **Figure 69**
 78. **Figure 70**
 79. **Figure 71**
 80. **Figure 72**
 81. **Figure 73**
 82. **Figure 74**
 83. **Figure 75**
 84. **Figure 76**
 85. **Figure 77**
 86. **Figure 78**
 87. **Figure 79**
 88. **Figure 80**
 89. **Figure 81**
 90. **Figure 82**
 91. **Figure 83**
 92. **Figure 84**
 93. **Figure 85**
 94. **Figure 86**
 95. **Figure 87**
 96. **Figure 88**
 97. **Figure 89**
 98. **Figure 90**
 99. **Figure 91**
 100. **Figure 92**
 101. **Figure 93**
 102. **Figure 94**
 103. **Figure 95**
 104. **Figure 96**
 105. **Figure 97**
 106. **Figure 98**
 107. **Figure 99**
 108. **Figure 100**
 109. **Figure 101**
 110. **Figure 102**
 111. **Figure 103**
 112. **Figure 104**
 113. **Figure 105**
 114. **Figure 106**
 115. **Figure 107**
 116. **Figure 108**
 117. **Figure 109**
 118. **Figure 110**
 119. **Figure 111**
 120. **Figure 112**
 121. **Figure 113**
 122. **Figure 114**
 123. **Figure 115**
 124. **Figure 116**
 125. **Figure 117**
 126. **Figure 118**
 127. **Figure 119**
 128. **Figure 120**
 129. **Figure 121**
 130. **Figure 122**
 131. **Figure 123**
 132. **Figure 124**
 133. **Figure 125**
 134. **Figure 126**
 135. **Figure 127**
 136. **Figure 128**
 137. **Figure 129**
 138. **Figure 130**
 139. **Figure 131**
 140. **Figure 132**
 141. **Figure 133**
 142. **Figure 134**
 143. **Figure 135**
 144. **Figure 136**
 145. **Figure 137**
 146. **Figure 138**
 147. **Figure 139**
 148. **Figure 140**
 149. **Figure 141**
 150. **Figure 142**
 151. **Figure 143**
 152. **Figure 144**
 153. **Figure 145**
 154. **Figure 146**
 155. **Figure 147**
 156. **Figure 148**
 157. **Figure 149**
 158. **Figure 150**
 159. **Figure 151**
 160. **Figure 152**
 161. **Figure 153**
 162. **Figure 154**
 163. **Figure 155**
 164. **Figure 156**
 165. **Figure 157**
 166. **Figure 158**
 167. **Figure 159**
 168. **Figure 160**
 169. **Figure 161**
 170. **Figure 162**
 171. **Figure 163**
 172. **Figure 164**
 173. **Figure 165**
 174. **Figure 166**
 175. **Figure 167**
 176. **Figure 168**
 177. **Figure 169**
 178. **Figure 170**
 179. **Figure 171**
 180. **Figure 172**
 181. **Figure 173**
 182. **Figure 174**
 183. **Figure 175**
 184. **Figure 176**
 185. **Figure 177**
 186. **Figure 178**
 187. **Figure 179**
 188. **Figure 180**
 189. **Figure 181**
 190. **Figure 182**
 191. **Figure 183**
 192. **Figure 184**
 193. **Figure 185**
 194. **Figure 186**
 195. **Figure 187**
 196. **Figure 188**
 197. **Figure 189**
 198. **Figure 190**
 199. **Figure 191**
 200. **Figure 192**
 201. **Figure 193**
 202. **Figure 194**
 203. **Figure 195**
 204. **Figure 196**
 205. **Figure 197**
 206. **Figure 198**
 207. **Figure 199**
 208. **Figure 200**
 209. **Figure 201**
 210. **Figure 202**
 211. **Figure 203**
 212. **Figure 204**
 213. **Figure 205**
 214. **Figure 206**
 215. **Figure 207**
 216. **Figure 208**
 217. **Figure 209**

कार्यास्तस्य पलार्धमानवटिकाः स्वादेयथाग्निं प्रगे
 नक्तं चापि जराविपत्तिशमनीमेकां च दुग्धं पिबेत् ॥ १४ ॥
 एषा सौगतिर्सिंहनामभिषजा लोके प्रकाशीकृता
 हम्भीराय महीभुजे शतवधूसंभोगभाजे भृशम् ।
 एषा वीर्यकरी महामयहरी क्षुद्रोधतेजस्करी
 कान्तिस्थौल्यमतिप्रकाशजननी चित्तामयध्वंसिनी ।
 तारुण्योद्धतकामिनीजनमहादर्पद्विपानां महा-
 सिंही सर्वमनोविनोदनवती श्रीकामदेवामिधा ॥ १५ ॥

इति कामदेववटी सारसंग्रहात् ।

अथ कामदेवचूर्णं वृन्दात्—

पलं गोक्षुरबीजस्य द्विपलं कपिकच्छुरम् ।
 पलं नागबलाबीजं पलमेकं शतावरी ॥ १६ ॥
 विदारीकन्दचूर्णस्य पलद्वयमथापरम् ।
 अणूसबीजं द्विपलं वाजिगन्धापलत्रयम् ॥ १७ ॥
 वासा च तालमूली च गुडूचीरक्तचन्दनम् ।
 त्रिसुगन्धिकणाधात्रीलवङ्गं नागकेशस्म ॥ १८ ॥
 एतानि कर्षमात्राणि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ।
 बालशाल्यलिमूलं च भवेदेकैकविंशतिः ॥ १९ ॥
 कुशकाशशिफासप्तशर्करासमयोजितम् ।
 दुष्टशुक्रं वीर्यहानिं मूत्रकृच्छ्राणि यानि च ॥ २० ॥
 मूत्राघातं मूत्रदोषं जयेच्छुक्रविवर्धनम् ।
 शतं गच्छति च स्त्रीणां हयतुल्यपराक्रमः ॥ २१ ॥
 बन्ध्या पुत्रमवाप्नोति भुक्त्वा चूर्णमिदं क्रमात् ।
 कामदेवामिधं चूर्णं धन्वन्तरिनिरूपितम् ॥ २२ ॥

इति कामदेवचूर्णं वृन्दात् ।

अथ मदनमञ्जरी वटिका—

चत्वारो व्योषभागास्तदनु निगदितं भागयुग्मं च वङ्गं
 भागैकं शम्भुबीजं त्रितयमपि मृतं तत्समा सिद्धमूली ।

[Illegible text block]

[Illegible text block]

[Illegible text block]

[Illegible text block]

[Illegible text block]

[Illegible text block]

चातुर्जातं सजातीफलमरिचकणानागरं देवपुष्पं
जातीपत्रं च भागाद्वितीयमथ पृथक्सर्वमेकत्र चूर्णम् ॥ २३ ॥
सर्वद्व्यंशा सिता स्याद्घृतमधुसहिता मोदकीकृत्य चैत-
त्खादेदग्निं समीक्ष्य प्रसभमभिनवानन्दसंवर्धनाय ।
योगो वाजीकराख्योऽयमिह निगदितो भैरवानन्दनाम्ना
निःशेषव्याधिहन्ता दलितबहुवधूदामकन्दर्पदर्पः ॥ २४ ॥
इति मदनमञ्जरी वटिका ।

अथ वङ्गेश्वरादिवटी—

वङ्गं मृतं मृतं लोहं मृगनाभिश्च कुङ्कुमम् ।
अभ्रकं पारदश्चैव हिङ्गुगुल्मगन्धकस्तथा ॥ २५ ॥
मस्तकी नागफेनश्च कवचाजातिपत्रकम् ।
जातीफलं च त्वक्चारं शुण्ठीमर्कटिबीजकम् ॥ २६ ॥
बला तुगा च कर्पूरो लवङ्गं पिप्पली तथा ।
आकलकरमश्चैव नागो भुजगवल्लरी ॥ २७ ॥
नागकेसरमुस्ताग्नि चन्दनं चव्यकं सठी ।
मरिचं पत्रकं यष्टी शालमलीत्वक् च कट्फलम् ॥ २८ ॥
वर्षाभूर्मुसली चैव क्षीरकन्दः शतावरी ।
कृष्णाश्वगन्धा कनकं मांसी मोचरसो बला ॥ २९ ॥
मृङ्गराजश्च गोकण्टः कङ्कोलः सयवानिकः ।
समुद्रशोषबीजानि त्रिपञ्चाशद्विरौषधैः ॥ ३० ॥
योजयेत्समभागैश्च सूक्ष्मचूर्णाकृतेभिषक् ।
अष्टांशां विजयां शुद्धां सितां सर्वसमां क्षिपेत् ॥ ३१ ॥
गुटिका मधुसर्पिभ्यां कर्षमात्रा विधीयते ।
प्रमाते वाऽथ मध्यह्ने संध्यायां वा विशेषतः ॥ ३२ ॥
एकां खादेदनु पिबेत्पयः शर्करया युतम् ।
बलवृद्धिमवाप्नोति रेतोवृद्धिं विशेषतः ॥ ३३ ॥
रेतःस्तम्भं वयःस्तम्भं वलीपलितनाशनम् ।
क्षौण्यज्वरातिसारांश्च ग्रहणीं नाशयेदपि ॥ ३४ ॥
नारीवश्यकरं चैव नारीद्वयकरं तथा ।
कान्तिदं प्रतिभादं च बुद्धिमेधाविवर्धनम् ।
संवत्सरप्रयोगेण सर्वव्याधिविनाशनम् ॥ ३५ ॥
इति वङ्गेश्वरादिवटी ।

अथ कामेश्वरो मोदकः—

सम्यङ्मारितमभ्रकं कटुफलं कुष्ठाश्वगन्धाभृता-
 मेथीर्मोचरसं विदारिमुसलीगोक्षूरकेशूरकम् ।
 रम्भाकन्दशतावरीमजमुदामाषांस्तिलान्धान्यकं
 यष्टीनागबलाकचूरमदनं जातीफलं सैन्धवम् ॥ ३६ ॥
 भाङ्गीककटशृङ्गिकात्रिकटुकं जीरद्वयं चित्रकं
 चातुर्जातपुनर्नवागजकणाद्राक्षाभयावासकम् ।
 बीजं मर्कटिशालमलित्रिफलं चूर्णं समं कल्पये-
 च्चूर्णांशा विजया सिता द्विगुणिता मध्वाज्ययोः पिण्डितम् ॥ ३७ ॥
 कर्षाधां गुष्टिकामथ द्विगुणितं संसेव्य पेयं पयः
 श्वेताढ्यं प्रबलासु वीर्यकरणे स्तम्भेऽप्यसौ कामिनाम् ।
 रामावश्यकरं सुखातिसुखदं रम्पाङ्गनाद्रावकं
 सौन्दर्यप्रतिभाविमानि च पदं भैषज्यमेतन्मतम् ॥ ३८ ॥
 क्षीणे पुष्टिकरं क्षयक्षयकरं हन्त्याशु सर्वामयं
 कासश्वासमहातिसारशमनं मन्दाग्निसन्दीपनम् ।
 दुर्नामग्रहणीप्रमेहनिचयश्लेष्मातिरक्तप्रणु-
 न्नित्यानन्दकरं विशेषकवितावाचाविलासोद्भवम् ॥ ३९ ॥
 धत्ते सर्वगुणं महास्थिरदशाध्यानावसानाकुल-
 मभ्यासेन निहन्ति मृत्युपलितं कामेश्वरो वत्सरात् ।
 सर्वेषां हितकारको निगदितः श्रीनित्यनाथेन च
 वृद्धानां हि तनौ मनोभवकरः प्रौढाङ्गनासंगमे ।
 सिद्धोऽयं मम दृष्टप्रत्ययकरो राज्ञा सदा सेव्यताम् ॥ २४० ॥
 इति कामेश्वरो मोदकः ।

अथ महाकामेश्वरो मोदकः—

कङ्कालो बृहदेलिकागजबलावीरावरीन्दीवरी-
 वासावत्सकबीजवारणकणाविश्वोपकुल्योषणम् ।
 बीजानि त्रपुसत्रिकण्टकसणामाषेशुराणां तथा
 मज्जानो बदरीविमीतकशिवाधात्रीप्रियालोद्भवाः ॥ ४१ ॥

* क. 'बला' इति पाठान्तरम् ।

१ क. 'तिमावभातिवयदं भै' ।

The first part of the paper discusses the importance of the research and the objectives of the study. It then presents a literature review of the existing research on the topic. The second part of the paper describes the methodology used in the study, including the data collection and analysis techniques. The third part of the paper presents the results of the study, and the fourth part discusses the conclusions and implications of the findings.

Figure 6

Figure 6 shows a series of five grayscale images illustrating the progression of a biological process over time. The images are arranged vertically, showing a transition from a dark, textured state at the top to a lighter, more uniform state at the bottom.

तालीसं शिवकन्दलामृतलतागाङ्गेरुकीबीजकं
 शृङ्गीधान्यकचित्रकं समुसलीहीरासटीमेथिकाः ।
 दूर्वायुग्वृषमोऽथ मेदसुमहामेदे च काकोलिका
 तद्वक्षीरकवायसी निगदिता वृद्धिस्तथा मृद्विका ॥ ४२ ॥
 शालूकद्वयराजिकाद्वयपृथग्जीराजमोदाद्वयं
 श्रीखण्डद्वयमब्धिशोषमुसली मांसी सर्वाशी मिसिः ।
 जातीपत्रिलवङ्गमर्ककरमः काश्मीरकं वाडिमं
 चातुर्जातकलोणिकाकुमुदिकाजातीफलं यष्टिका ॥ ४३ ॥
 द्राक्षास्वाखसबल्कलं मदनकं शृङ्गाटशुभ्रोषणं
 जम्बूपद्मकपुष्कराह्वकदलीकन्दाश्वगन्धास्तिलाः ।
 माषाः शाल्मलिबीजबल्कलरसामूलं च पौनर्नवं
 कर्षां विजयाऽखिलार्धतुलया देयाऽथ शुक्त्यंशकाः ॥ ४४ ॥
 रसरसकमुजङ्गास्तारतापीजवङ्गा
 गगनतरणिसारा वेधमुख्यास्तुषाराः ।
 द्विमुणितसितमेतच्चूर्णगोलं विद्ध्या-
 तदनु मधुहविभ्यां प्राश्य पेयं पयोऽनु ॥ ४५ ॥
 यक्षमाणं ग्रहणीगदं गुदरुजामानाहृष्टीहोदरा-
 ण्युन्मादानलसाददीर्घकसनापस्मारमेहाश्मरीः ।
 शूलं श्वासमरोचकं ज्वरमुरोरोगं क्रिमिं कामलां
 पाण्डुत्वं च हलीमकं च जयति श्रीमानयं लीलया ॥ ४६ ॥
 रेतःक्षीणमलं करोति मदनोन्मादेन मन्दानलं
 पक्त्वा गुर्वशनस्य दीनवपुषं कान्त्या जडं मेधया ।
 कान्ताटीशतसङ्गसङ्गरजयोद्दामभिया कामिनं
 दुर्बीजं शुमरेतसं सुतनयं कुर्यात्त्वलंकारिणम् ॥ ४७ ॥
 पारीन्द्रं च पराक्रमेण तुरगं वेगेन तारापतिं
 कान्त्या च द्विरक्षं बलेन शिसिनं नादेन बुद्ध्या बुधम् ।
 नासत्याबधरी करोति वपुषा लावण्यलक्ष्मीजुषा
 श्रीकामेश्वरसेवया गतवया अप्येति यूनः श्रियम् ॥ ४८ ॥
 इति महाकामेश्वरो मोदकः ।

अथ चन्द्रोदयो रसः—

पलं मृदुः स्वर्णदलं रसेन्द्रं पलायकं षोडशगन्धकस्य ।
 शोणैश्च कार्पासमवैः प्रसूनैः सर्वं विमर्द्याथ कुमारिकाद्धिः ॥४९॥
 तत्काचकुम्भे निहितं सुगाढे मृत्कपटैस्तद्विवसन्नयं च ।
 पचेत्कमाग्नौ सिकताखययन्त्रे ततो रजः पल्लवरागरम्यम् ॥ ५० ॥
 निगृह्य चैतस्य पलं पलानि चत्वारि कर्पूररजस्तथैव ।
 ज्ञातीफलं सोषणमिन्द्रपुष्पं कस्तूरिकाया इह शाण एकः ॥५१॥
 चन्द्रोदयोऽयं कथितोऽस्य माषो मुक्तो हि वल्लीदलमध्यवर्ती ।
 मदोन्मदानां प्रमदाशतानां गर्वाधिकत्वं श्लथयत्यकाण्डे ॥ ५२ ॥
 शृतं घनीभूतमतीव दुग्धं मृदूति मांसानि समण्डकानि ।
 माषाक्षपिष्ठानि भवन्ति पथ्यमानन्ददायान्यपराणि चात्र ॥५३॥

वलीपलितनाशनस्तनुभृतां वयस्तम्भनः

समस्तगदखण्डनः प्रचुरयोगपञ्चाननः ।

गृहेषु रसराडयं वसति यस्य चन्द्रोदयः

स पञ्चशरवर्षितो मृगवृशां भवेद्बलमः ॥ ५४ ॥

रतिकाले रतान्ते वा पुनः सेव्यो रसोत्तमः ।

अभ्यासात्साधकः स्त्रीणां शतं जयति नित्यशः ॥ ५५ ॥

मानहानिं करोत्येष प्रमदानां तु निश्चितम् ।

स्थावरं जङ्गमविषं विषमं विषवारि च ॥ ५६ ॥

न विकाराय भवति साधकेन्द्रस्य वत्सरात् ।

मृत्युं जयो यथाऽभ्यासान्मृत्युं जयति देहिनाम् ॥

तथाऽयं साधकेन्द्रस्य जरामरणनाशनः ॥ ५७ ॥

दाक्षिणात्याः शोणकार्पासद्रवमेव गृह्णन्ति ।

पाश्चात्यास्तत्पुष्पेणैव यावदार्द्रत्वं मर्दयन्ति ॥

उभयथैव निष्पत्तेरदोषः । शास्त्रान्तरेऽस्य मकरध्वजो नाम ।

इति चन्द्रोदयो रसः ।

अथ कामवाणो रसः—

सूतेन्द्रामृतमग्निशोषसुमनाजातीफलाकल्करा-

फेनाश्वाह्वजहाश्च देवकुसुमं कर्पूरकस्तूरिकाम् ।

1. Introduction

2. Objectives

The purpose of this study is to investigate the effects of the proposed system on the performance of the participants. The study was conducted in a controlled environment with a sample of 30 participants. The results of the study are presented in the following sections. The first section describes the methodology used in the study. The second section presents the results of the study. The third section discusses the implications of the study. The fourth section concludes the study.

3. Methodology

The study was conducted in a controlled environment with a sample of 30 participants. The participants were divided into two groups: a control group and an experimental group. The control group used the traditional system, while the experimental group used the proposed system.

4. Results

The results of the study show that the proposed system significantly improved the performance of the participants. The experimental group performed better than the control group in all measures of performance. The results are presented in the following table.

5. Conclusion

The study concludes that the proposed system is effective in improving the performance of the participants. The results of the study are presented in the following table.

6. References

1. Smith, J. (2010). The effects of the proposed system on the performance of the participants. *Journal of the American Psychological Association*, 115(1), 1-10.

पिष्ट्वा तत्समभागिकं मुनिमितैः कृष्णाहिवलीरसै-
 र्भाष्यं पक्वफले निधाय सजले तन्नारिकेलोदरे ॥ ५८ ॥
 क्षीरद्रोणयुगे विपाच्य विधिवत्तज्जीर्णदुग्धं हरे-
 त्सूक्ष्मं स्वर्णयुतं विधाय पर्यसा वलत्रयं सेवयेत् ।
 ताम्बूलेन समं निशासु समये कामाग्निसंदीपनं
 षण्ढाऽपि प्रमदां विजित्य तनुते कान्तिं तनोति स्त्रियाः ॥ ५९ ॥
 बुद्धिं चातिबलं वृद्धाति नितरां युक्त्याऽनुपानैरयं
 वृद्धानां मदनौदर्यं वितनुते स्यात्कामबाणो रसः ।
 इति कामबाणो रसः ।

अथ कामदेवो रसः—

तारं हिङ्गुलसीसकाभ्रकमृतं लोहं च वङ्गं तथा
 वृद्धांशौ रसमस्मना रसपतेः सर्वं च खल्वे शुभे ॥ ६० ॥
 मद्योन्मत्तजयारसेन मुसलीनीरेण तत्सप्तधा
 सिद्धौऽयं किल कामदेवरसंराहुराज्ञां भवेद्बलमः ।
 बलैकप्रमितोऽनुपानसंहितः सर्वान्गदाम्नाशयेत्
 रतम्भे निस्तुषमृष्टजाणकजयाजातीसिताज्यैर्युतः ॥ ६१ ॥
 पुष्टौ साज्यसिताविदारिमुसलीयुक्तः प्रभाते लिह्ये-
 त्स्त्रीणां यौवनवर्धनगवितशतानां द्रावणे विक्रमः ॥ ६२ ॥
 इति कामदेवो रसः ।

अथ मृत्युञ्जयो रसः—

बलिः सूतो निम्बूरससमरसो मस्म सिकता-
 ह्वये यन्त्रे कृत्वा समरविकणाटङ्कणरजः ।
 त्रिघसं लुङ्गाम्भोलवकदलितः क्षौद्रहविषाऽ-
 वलीढो माषैकं द्रवयति समस्तं गर्दगणम् ॥ ६३ ॥
 जरां वर्षैकेण क्षपयति च पुष्टिं वितनुते
 तनौ तेजः स्फूर्त्तं रमयति बधूनामपि शतम् ।
 रसः श्रीमान्मृत्युञ्जय इति गिरीशेन गदितः
 प्रभावं को वाऽन्यः कथयितुमपारं प्रभवति ॥ ६४ ॥
 लुङ्गाम्भोलवकदलित इति । मातुलुङ्गद्वयं कणशो, दत्त्वा त्रिदिनं
 मर्दयेदित्यर्थः ।
 इति मृत्युञ्जयो रसः ।



अथाऽऽनन्दो रसः—

शुद्धं रसं समविषं प्रहरं विमर्द्यं
तद्गोलकं कनकचारुफले निधाय ।
द्वोलागतं पञ्च दिनं विषमुष्टितोये
प्रक्षाल्य तत्पुनरपीह तथा द्विवारम् ॥ ६५ ॥

तत्सूतकं गिरिशलोचनयुग्मगन्धं
युक्त्वाऽवहार्य कुरु मस्म समं च तस्य ।
वैक्रान्तमस्म जयपालनवांशकार्थं
सर्वैर्विषं द्विगुणितं मृदितं च खल्वे ॥ ६६ ॥

यस्यत्रयं कनकभृङ्गरसेन गाढ-
मावेश्य माजनतले विषधूपमाजि ।
मृङ्गद्रवेण शिथिलं लघुकाचकूपी-
मापूर्य रुद्धवदमं सिकताख्ययन्त्रे ॥ ६७ ॥

तां वासरार्धमुपदीप्य निसर्गशीतां
दृष्ट्वा विचूर्ण्य गङ्गशालिषु शालिमात्रम् ।
आनन्दसूतमखिलामयकुम्भिसिंहं
गद्याणकार्थसितया सह लिङ्गं पश्चात् ॥ ६८ ॥

रोगानुरूपमनुपानमपि प्रकाशं
क्षोणीभुजां प्रचुरपूजनमाप्नुहि त्वम् ।
कीर्त्या विशो धवलया स्फुटमिन्दुकान्त्या
वैद्येश्वरेतिबिरुदं मज वैद्यराज ॥ ६९ ॥

तथा द्विवारमिति । पूर्ववदखिलं द्विः कुर्यात् । गिरिशलोचनयुग्मे-
ति । षड्गुणयुक्तेति यावत्काचकूप्यादौ ।

इत्यानन्दो रसः ।

अथानङ्गनिगडो रसः—

मिहिरकुलिशमुक्तातालवैक्रान्तमास्व-
न्मणिकुजमणिमस्मान्येकमागानि कृत्वा ।

कनकरजतताप्यव्योमसस्त्वानि चत्वा-
र्याखिलसमरसेन्द्रं गन्धकं सर्वतुल्यम् ॥ ७० ॥

—

—

—

—

मृदुविलितमेतच्छोणकार्पासपुष्पा-

म्बुभिरमलतरैस्त्रिर्मावयित्वा विशोष्य ।

क्रमदहनविपक्वं वालुकाकाचकुम्भे

त्रिदिनमथ कलांशेनाच्छहालाहलेन ॥ ७१ ॥

युतमथ मरिचेन्दुत्वक्पयोजातिकोशा-

मरकुसुममृगाण्डैर्मावयेज्जायतेऽसौ ।

मदननिगडनामा माषमात्रो दिनादौ

निशि च मुजगवलीपर्णखण्डेन मुक्तः ॥ ७२ ॥

तदनु सुरभि दुग्धं पेयमल्पं सिताढ्यं

पुनरपि ससिताभ्रं चारुताम्बूलमद्यात् ।

इह समुदितमन्नं पथ्यमाह द्विजन्मा

मुनिरखिलगदानामन्तके ख्यातवीर्ये ॥ ७३ ॥

एनं संसेव्य मर्त्यो रमयति रमणीवृन्दमानन्दतुन्द-

मामन्दं तस्य शुक्रं क्व च न च भवति प्रत्यहं वर्धते च ।

षण्ठः षाण्ड्यं जहाति प्रबलतरमपि प्रौढिमाप्नोति गाढं

शोफः पातित्ययुक्तं गतनवतिसमस्यापि मर्त्यस्य चारु ॥ ७४ ॥

किं बहुना कथितेन गृहेऽसौ यस्य नरस्य वसत्यसमस्य ।

पञ्चशरस्य शरस्य शरव्यं भवतीह सदा महिलाहृदयस्थः ॥ ७५ ॥

मेहान्विशतिमेष हन्ति सहसा यक्षमाणमुग्रं जये-

वानाहग्रहणीग्रहान्गलपयति प्रौढं विधत्ते बलम् ।

षाण्ड्यं खण्डयति प्रसह्य रचयत्यशोविनाशं मृशं

पित्तास्रं दलयत्यवश्यमुदरव्याधिं विलुम्पत्यपि ॥ ७६ ॥

ओजःकान्तिबलप्रमोदधिषणाद्वृद्धन्तनासाश्रुति-

प्रौढिं देहदृढत्वमग्निपटुतां पुंसः प्रकुर्यादयम् ।

रोगो नास्ति स यो न शान्तिमुपयात्येतेन भूमीतले

भूमीपद्मजपूजितेन रमणीप्रेमास्पदेनानिशम् ॥ ७७ ॥

इत्यनङ्गनिगडो रसः ।

अथ प्रमदेभाङ्कुशपाठः—

विशुद्धो रसो मासमुन्मत्ततैले दशाहानि तैले तथो*षड्देषु ।

विपाच्योऽहर्निशं तच्च तैलं पलं जीर्यते तत्समो गन्धनामा ॥ ७८ ॥



कृतां कज्जलिं तां विनिक्षिप्य कूप्यां मृदुस्वर्णपात्राणि सूताष्टमांशात् ।
 ततो भस्मसादकयामं विधाय स्वशीतं समादाय सिन्नूरकल्पम् ॥७९॥
 इयहं खाखसत्वक्कषायैर्विमर्द्य इयहं वैजयीजातिसारैर्दिनैकम् ।
 तथा कोकिलाक्षस्य घस्त्रे कषायैर्विद्वार्याथ भूमौ क्षिपेद्गोलकं तम् ॥८०॥
 मृदा द्व्यङ्गुलोन्मादमाच्छाद्य पश्चादरण्योपलद्वन्द्ववह्निं विधाय ।
 सुशीतं मृदुस्वेदमाप्तं रसेन्द्रं गृहीत्वा ततो भागभागं वदामः ॥८१॥
 रसाद्वयोमवैक्रान्तजातीप्रसूनं लवङ्गं द्विभागं त्रिभागं मुजङ्गम् ।
 *सितं कान्तमस्मं विषं केसरारुच्यं त्रिजातं तथा वङ्गमस्मसमस्तम् ॥८२॥
 अहेः फेनतापीजयौ + रधभागं विमर्द्याथ यामं मरुद्भू × प्रसूनैः ।
 विद्वारीवरावासकैर्नागधलीबलाशात्मलीमर्कटीमूलजातैः ॥ ८३ ॥
 पयोमिश्र गोधा = इग्निरम्भासमुत्थैः शताह्वामहादीप्यमुण्डीसमुत्थैः ।
 ◡महापत्रिकायाद्विहस्तिद्रवैश्च विभाव्यं त्रिवारं ततो गोलमस्य ॥८४॥
 दिनं स्वेदयेत्खाखसत्वक्कषायैर्निबध्याम्बरे दोलकायन्त्रमध्ये ।
 अकूपारशोषस्य तैलेन भाव्ये द्विवारं तथा स्वर्णबीजस्य तैलैः ॥८५॥
 तथा वैजयैर्जातिसारस्य तैलैर्द्विवारं विभाव्योऽथ गोलं निबध्य ।
 ततो मृत्पटैस्त्रिधराधारयन्त्रे पचेत्पूर्ववत्स्वाङ्गशीतं ततस्त्रिः ॥८६॥
 उशीरेण भाव्यः सुगन्धेन तद्वत्तथाऽजागुडेनाथ कस्तूरिकाद्भिः ।
 विभाव्यं शिवद्विद्वेकुचाद्भिः शिफालीद्रवैः शातपत्रोद्भवैः सिद्ध एषः
 तमेनं स्वतूर्पाशकपूर्वयुक्तं निषेवेत वलद्वयेनामितं च ।
 लवङ्गं सितापुष्पसारोऽनुपातं हितं क्षीरपानं विवर्ज्याऽऽलवर्गः ॥ ८८ ॥
 पठित्वा च पश्चाक्षरं मन्त्रराजं कुमारिश्च यन्त्राणि वै पूजयित्वा ।
 निषेवेत पूर्वोक्तरीत्या रसेन्द्रं निषेवेदसौ कामिनीसङ्गमं च ॥ ८९ ॥
 त्रिदोषघ्न एषोऽबलागर्वहारी वशी कार्यकारी महास्तम्भकारी ।
 सदा पुंस्त्वजोत्थानकारी नराणां तथा पातकारी न चावाक् च कारी
 यद्येकरात्रादपि मूत्रयोषासङ्गाच्छ्रुतं वीर्यबलाद्विरिच्यते ।
 तथाऽपि तुल्यो द्रवकालयुक्तेस्तेजोबलं नैव जहाति किञ्चित् ॥ ९१ ॥

* क. रौप्यमस्म । + रसापेक्षया सार्धभागम् । × क. अर्कपुष्पैः । = क. भावणी । ◡ क. तिपत्री ।

१ विजयाबीजतैलेजातीफलतैले । २ क. अरण्योपलद्वन्द्ववह्निः । ३ क. त्रिगुणधेन ।
 क. कुङ्कुमकेसरेण । ४ क. केतकीस्तनरसैः । ५ क. तुलसी । ६ क. पत्री । ७ क. योगिनी ।

रसमेनं सेवयित्वा न सेवेत स्त्रियं यदि ।

निर्गच्छेन्नेत्रयोर्वीर्यं नेत्रनाशस्तदा भवेत् ॥ ९२ ॥

नाङ्गं शैथिल्यमावं प्रजति न च कटिस्तुष्यते तस्य कान्ति-

र्हमाभा जायतेऽष्टादशविधमतुलं नाशमेति प्रमेहम् ।

नष्टं वीर्यं प्रपन्नं प्रभवति यदि पुमान्सेवते रस्यकान्तां

षण्ठो वा वाजितुल्यो जनयति च महावाजितुल्यांश्च पुत्रान् ॥ ९३ ॥

एनं रसं च प्रमदा निषेवेत्कुमारितुल्योऽस्तवयाऽपि सा स्यात् ।

एतद्रसास्वादनतः पुमांस्तां युवाऽपि यातुं न समर्थ एव ॥ ९४ ॥

गर्माशयगतान्क्षोषान्दहति त्रातकफोद्भवान् ।

प्रमदेभाङ्कुशो नाम रसराजः सुसिद्धिदः ॥ ९५ ॥

हरिषधूरतितः पती रसाया यवनपतिर्वनितासहस्रयुक्तः ।

स तु युवतिरतीविधातुकामः प्रणतिपरः स बभूव बुद्धिनाथे ॥ ९६ ॥

प्रमदेभाङ्कुशसंज्ञं रसमस्मै बुद्धिनाथोऽदात् ।

राजा प्रीत्याऽदात्कौरवपञ्चकबहुनागध्रुवकरं तस्मै ॥ ९७ ॥

इति प्रमदेभाङ्कुशो रसः ।

अथ पुष्पधन्वा रसः—

हरमुजगलोहं साभ्रकं चाग्निमाव्यं

विजयकनकयष्टीशाल्मलीनागवत्या ।

धृतमधुपयस्खण्डं पुष्पधन्वा द्विवहो

रमयति बह्वकान्ता वीर्यमायुर्नराणाम् ॥ ९८ ॥

इति पुष्पधन्वा रसः ।

अथ पञ्चसायकः—

सूतं मस्मीकृतं शुद्धं मगनं द्रव्यं तथा ।

अब्दिशोषं नागफेनं जातीपत्रीफलं तथा ॥ ९९ ॥

अर्कहाटांस्तथा बोधावानरीकोकिलाक्षकान् ।

पुतानि सममागानि खल्वे चूर्णीकृतानि वै ॥ १०० ॥

विजयाशाल्मलीमूलमसितस्वर्णबीजकैः ।

शताह्वापोस्तमधुकनागवल्लीद्वलद्रवैः ॥ १ ॥

मार्गांशकपूरयुतो रसोऽयं पञ्चसायकः ।

मात्रावल्लभं चास्य मधुञ्जितयसंयुतः ॥ २ ॥

पथ्यं क्षीरं यथासात्म्यं गच्छेच्च प्रमदाशतम् ।

निशामुखे रसो ग्राह्योऽम्लवर्गं च वर्जयेत् ॥ ३ ॥

इति पञ्चसायकः ।

अथ प्रमदानन्दो रसः—

कणाजातिजं हिक्कुलं टक्कुणं च

वराटं विषं हेमबीजं च विश्वम् ।

मृशं मर्दयेन्निम्बुनीरेण यामं

तथा धूर्ततोयेन मृङ्गीरसेन ॥ ४ ॥

अदध्रे च मेहे विकारग्रहण्यां

कफे वातशूले सुतौ खण्डमेहे ।

प्रशस्तः सितासेवितः शुक्रकाशी

रसः सर्वदाऽऽनन्दनामा प्रसिद्धः ॥ ५ ॥

चपलानवयौवनमिन्नमदाप्रमदाशतदर्पहरः सहसा ।

कथितो मृगुणा मुनिना शतशोऽनुमितो रसिके रसरजपरः ॥ ६ ॥

इति प्रमदानन्दो रसः ।

अथ मदनकामेश्वरः—

बलिं पारदं नागफेनं समांशं विमर्द्याहिवल्लीरसैर्याममात्रम् ।

वटी बल्लमात्रा सिताढ्या हि सेव्या पुनर्मोजनं नैव कार्यं तदन्ते ॥ ७ ॥

पयो माहिषं सेवनीयं निशादौ मजेन्मैथुनं निम्बुनीरं सिताढ्यम् ।

पिबेद्वीजमुक्त्यै पुनर्मैथुनं च रसः कामदेवेशमात्रा प्रसिद्धः ॥ ८ ॥

इति मदनकामेश्वरः ।

अथ नारीमत्तगजाङ्कुशः—

पारदं स्वर्णनागाश्रं वङ्गं तीक्ष्णं सतारकम् ।

मनःशिलामाक्षिकं च यथोत्तरविवर्धितम् ॥ ९ ॥

सर्वाधांशं चाहिफेनं शुद्धमेकत्र मर्दयेत् ।

स्वर्णाह्विजयापत्ररसेन सुरपुष्पतः ॥ १० ॥

करहाटात्काञ्चनारात्पिप्पल्या आवणीद्वयात् ।

नागबल्ल्याः कुङ्कुमाच्च रसेन च पृथक्त्रयम् ॥ ११ ॥

एवं सिद्धो रसो नाम्ना नारीमत्तगजाङ्कुशः ।

काश्मीरकं चानुपानं सुरपुष्पयुतं समम् ॥ १२ ॥

[illegible]

100

Age Group	Percentage
18-24	10%
25-34	15%
35-44	20%
45-54	25%
55-64	20%
65-74	15%
75-84	10%
85+	5%

1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 26

Age Group	Percentage
18-24	10%
25-34	20%
35-44	25%
45-54	20%
55-64	15%
65-74	10%
75-84	5%
85+	5%



The first part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of management
 education. The second part of the paper discusses the
 importance of the *Journal of Management Education* in the
 field of management education. The third part of the paper
 discusses the importance of the *Journal of Management
 Education* in the field of management education. The
 fourth part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of
 management education. The fifth part of the paper
 discusses the importance of the *Journal of Management
 Education* in the field of management education. The
 sixth part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of
 management education. The seventh part of the paper
 discusses the importance of the *Journal of Management
 Education* in the field of management education. The
 eighth part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of
 management education. The ninth part of the paper
 discusses the importance of the *Journal of Management
 Education* in the field of management education. The
 tenth part of the paper discusses the importance of the
 Journal of Management Education in the field of
 management education.

[illegible]

प्रत्यूषे बलमेकं तु खादेदम्लादि वर्जयेत् ।

पीषरोरुस्तनश्रोणीनारीशतमनुव्रजेत् ॥

रसमेनं सेवयित्वा प्रमेहादिविनाशनम् ॥ १३ ॥

इति नारीमत्तगजाङ्कुशः ।

अथ पञ्चबाणो रसः स्तम्भने—

रसाभ्रनागायसगन्धवङ्गं कापर्दिकं तत्समभागयोजितम् ।

रसेन हेम द्विगुणं विमिश्रितं क्षीरेण भाव्यं च गवां त्रिवारम् ॥ १४ ॥

एकाधिकाविंशजयारसस्य ततश्च दद्यात्कनकस्य सप्त ।

लवङ्गजातीफलकुङ्कुमं तथा कङ्कोलकाकलगजेन्द्रकाञ्च ॥ १५ ॥

कृष्णाहरेश्चन्दनतोयभाव्यः प्रत्येकमेकस्य च सप्त भावनाः ।

दर्पेण चैकां च ददीत भावनां सिद्धो रसः स्यादिति पञ्चबाणः ॥ १६ ॥

वीर्यस्य वृद्धिं च करोति पुंस्त्वं नष्टेन्द्रियाणां हि सुखावहं च ।

येषां गृहे चागणिता रमण्यस्तेनैव कार्यो रसरराज एषः ॥

कान्ताप्रियत्वं बहुशुक्रतां च शेफाभिवृद्धिं वृद्धतामुपैति ॥ १७ ॥

इति पञ्चबाणः ।

अथ शृङ्गाराभ्रम्—

व्योमाभ्रौ चन्द्रवारीमकणगजगदत्वग्दलं चोचमांसी

तालीसं जातिकोशं सुरकुसुममदापारदं चेति शाणम् ।

शाणार्धं विश्वकृष्णोषणशिवपूतनाक्षद्विशाणं सुगन्धं

सैलं जातीफलं तत्पृथगथ विधिना मेलयित्वाऽम्मसैव ॥ १८ ॥

वक्ष्यः कार्याः परूषाद्रवदिनवदने मक्षयेत्ताश्चतस्रः

सान्द्रं पूर्णं च तोयं तदनु परिहरत्यग्निमान्द्यामरोगान् ।

शृङ्गाराभ्रं प्रमेहक्षयकफकसनश्वासशूलाम्लपित्ता-

सृक्पित्तच्छर्दिपाण्डुश्वसनगदतृषो हन्ति वृष्यं विशेषात् ॥ १९ ॥

इति शृङ्गाराभ्रम् ।

अथ षण्मुखरसः—

हराकायोवङ्गाभ्रकबालिकलैकद्विजलधिं

द्विपादास्त्रिंशद्भिर्मिलितमनलैः शैर्मुदि पुनः ।

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

[REDACTED]

द्वयहं पक्वं कूप्यां भवति सिकतायन्त्रजुषित-
स्तलस्थः षण्ढत्वप्रलयकृदयं षण्मुखरसः ॥ ३२० ॥

इति षण्मुखरसः ।

अथ रसरसजः—

क्ष्वेडाहिफेनफलिनीचिषमुष्टिदिग्धे
वस्त्रे निबध्य रसगन्धकखर्पराणि ।
गौर्या पचेत्तदनु लावपुटेः शतेन
सौवर्णबीजजठरे विनियोजितानि ॥ २१ ॥
निष्पेषयेद्दशदशान्तरतश्च तेषां
तोयैरपूपमुपकल्प्य विशुष्कमर्कैः ।
तत्कर्दमे प्रतिपुटं प्रविधाय दिग्ध-
मेवं पुटेदधिशतं रसरसज एषः ॥ २२ ॥

रेतःस्तम्भं विधत्ते वपुषि च घनतामग्निमान्द्यं निहन्त्या-
द्यक्षमाणं च क्षणेन क्षपयति सहसा पौरुषं व्यातनोति ।
उच्चैःशूलप्रमेहानिलकफगदहृद्रोगपाण्डुप्रतिश्या-
कासश्वासोदराक्षिश्रवणमुखगदानाशु खादत्यवश्यम् ॥ २३ ॥

इति रसरसजः ।

अथ महाराजवटीरसः—

बीजं ब्रह्मतरोर्विधाय बहुधा खण्डं त्रियामोषितं
छागे दुग्धवरेऽथ शुष्कमथ तद्वन्धेन तिथ्यंशिना ।
युक्तं काचैर्घटीच्युतं हुतभुजो योगेन कृत्वा ततः
सत्त्वं तस्य निगृह्य काचघटिते भाण्डे मुखं स्थापयेत् ॥ २४ ॥
तत्तैलं बल्लमादाय ताम्बुलीपत्रगं चरेत् ।
क्षिप्त्वा तत्र रसं बल्लमङ्गुल्यग्रेण मर्दयेत् ॥ २५ ॥
युक्त्या तां कज्जलीं भुक्त्वा ताम्बूलं शीलयेदनु ।
शाकाम्लमाषषट्कादिवर्जितं पथ्यमाचरेत् ॥ २६ ॥
अनेन रसरसजेन षण्ढोऽपि पुरुषायते ।
अपूर्ववच्छतं गच्छेद्वनितानामदो गणान् ॥ २७ ॥

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that proper record-keeping is essential for the company's financial health and for providing reliable information to stakeholders.

2. The second part of the document outlines the specific procedures for recording transactions. It details the steps involved in the accounting process, from identifying the transaction to posting it to the appropriate ledger accounts. It also discusses the importance of double-checking entries to ensure accuracy.

3. The third part of the document provides a detailed explanation of the accounting cycle. It describes the eight steps of the cycle, from identifying the transaction to preparing the financial statements. It also discusses the importance of closing the books at the end of each accounting period.

[सप्तचत्वारिंशदधिकशततमस्तरङ्गः] बृहद्योगतरङ्गिणी ।

१८७

पुरुषोऽशीतिवर्षीयोऽप्यनेन तरुणो भवेत् ।
स रोगो नास्ति नानेन यः प्रशाम्यति देहिनः ॥ २८ ॥
वलीपलितविध्वंसी योगोऽयं क्षयकुष्ठजित् ।
वातपित्तकफातङ्कहस्तिपश्चाननः परम् ॥ २९ ॥
नास्त्यनेन समं लोके किञ्चिदन्यद्रसायनम् ।

इति महाराजवटीरसः ।

अथ राजवटीरसः—

श्यामधत्तूरसुरसाकाशमर्दपुनर्नवाः ॥ ३० ॥
बिल्वमार्कवदूर्वे च पिप्पलीरुबुवासकाः ।
सोमराजीचक्रमर्दतिलपर्णीदिवाकराः ॥ ३१ ॥
एतेषां स्वरसैस्त्रिभिर्भावयेन्निर्मलाम्बरम् ।
परिणाहे च दैर्घ्यं च हस्तमात्रं भिषग्वरः ॥ ३२ ॥
आतपे शोषयेद्बुद्ध्या प्रतिवारं तृणोत्तरैः ।
ततः पलमितं गन्धं पेषयेच्चतुराज्यकम् ॥ ३३ ॥
तत्पिष्ट्वा लेपयेद्द्वयं तद्वर्तिस्तस्य कल्पयेत् ।
अयःशलाकयाऽऽविध्य तस्याः पुच्छं मुखं पुनः ॥ ३४ ॥
प्रज्वाल्याधःस्थिते पात्रे शाणसर्पिः स्रवेच्च यत् ।
गृहीत्वा काचपात्रे तत्स्थापयेद्विष्टमन्त्रितम् ॥ ३५ ॥
नागवल्लीदले तच्च चतूरक्तिककामितम् ।
गृहीत्वा पारदं बलं शुद्धं तत्र च निक्षिपेत् ॥ ३६ ॥
अङ्गुल्या मृदु संमर्द्य तयोः कज्जलिकां चरेत् ।
खादेत्तद्वटिकां प्रातः पथ्यं दुग्धौदनं लघु ॥ ३७ ॥
दिनानि मनुसंख्यानि पश्चान्मुद्गं ससैन्धवम् ।
त्रिसप्ताहे व्यतीते तु शाकमाषाम्लवर्जिते ॥ ३८ ॥
ककारषट्करहितं भोजनं पथ्यमुत्तमम् ।
कुष्ठमष्टादशविधं प्रमेहक्षयकामलाः ॥ ३९ ॥
हृद्रोगग्रहणीपाण्डुकासश्वासभगंदराः ।
व्रणाश्च विविधाः सर्वे कृमिशूलानिलार्तयः ॥ ४० ॥
आमवाताक्षिवदनकर्णस्याऽऽतङ्कसंचयाः ।
अग्निमान्द्यं च पाण्ड्यं च रक्तपित्तं भ्रमस्तृषा ॥ ४१ ॥

मूर्छां तन्द्रां सहद्रोगा जठराण्यखिलानि च ।
 अजीर्णानि च सर्वाणि वलयः पलितानि च ॥ ४२ ॥
 नश्यन्त्यनेन योगेन सत्यं शिववचो यदि ।
 नास्त्यनेन समो योगो वृष्यः कुत्रापि भूतले ॥ ४३ ॥

इति राजवटीरसः ।

अथ मदनकामेश्वरो रसः—

तारं वज्रं सुवर्णं च ताम्रं सूतं च गन्धकम् ।
 लोहं क्रमविवृद्धानि कुर्यादेतानि मात्रया ॥ ४४ ॥
 विमर्द्य कन्यकाद्रावैर्न्यसेत्काचमये घटे ।
 विमुद्र्य पिठरीं मध्ये धारयेत्सैन्धवे मृते ॥ ४५ ॥
 पिठरीं मुद्रयेत्सम्यक्ततश्चुह्यां निवेशयेत् ।
 वह्निं शनैः शनैः कुर्याद्विनैकं तत उद्धरेत् ॥ ४६ ॥
 स्वाङ्गशीतं च संचूर्ण्य भावयेदर्कदुग्धकैः ।
 अश्वगन्धा च काकोली वानरी मुसली सरा ॥ ४७ ॥
 त्रिंत्रिवेलं रसैर्भाव्यं शतावर्याश्च भावयेत् ।
 पद्मकन्दकसेरूपां रसैः काशस्य भावयेत् ॥ ४८ ॥
 कस्तूरीव्याषकपूरकङ्कोलैलालवङ्गकम् ।
 पूर्वचूर्णादष्टमांशमेतच्चूर्णं विमिश्रयेत् ॥ ४९ ॥
 सर्वैः समां शर्करां च दत्त्वा शाणोन्मितं पिबेत् ।
 गोदुग्धद्विपलेनैव मधुराहारसेवकः ॥ ५० ॥
 अस्य प्रमावात्सौन्दर्यं बलं तेजो विवर्धते ।
 तरुणी रमयेद्वह्नीर्न च हानिः प्रजायते ॥ ५१ ॥

इति मदनकामेश्वरो रसः ।

अथ पूर्णेन्दुरसः—

शाल्मल्युत्थैर्द्रवैर्मर्द्यं पक्षैकं शुद्धसूतकम् ।
 यामद्वयं पचेदाज्यैर्वस्त्रैर्वद्ध्वाऽथ मर्दयेत् ॥ ५२ ॥
 दिनैकं शाल्मलीद्रवैर्मर्दयित्वा वटीकृतम् ।
 वेष्टयेन्नागवल्याऽथ निक्षिपेत्काचमाजने ॥ ५३ ॥

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

—

माजनं शाल्मलीद्रावैः पूर्णं यामद्वयं पचेत् ।
 बालुकायन्त्रमध्ये तु द्रवे जीर्णे समुद्धरेत् ॥ ५४ ॥
 द्विगुञ्जं मक्षयेत्प्रातर्नागवल्लीदलान्तरे ।
 मुसलीं ससितां क्षीरं पलैकं पाययेदनु ॥ ५५ ॥
 रसः पूर्णेन्दुनामाऽयं सम्यग्वीर्यकरो भवेत् ।
 कामिनीनां सहस्रैकं नरः कामयते ध्रुवम् ॥ ५६ ॥

इति पूर्णेन्दुरसः ।

अथ वीर्यरोधिनी गुटिका—

नागवल्लीदलद्रावैः सप्ताहं शुद्धस्तूतकम् ।
 मर्दयेत्क्षालयेदम्लैश्चतुर्निष्कप्रमाणकम् ॥ ५७ ॥
 विषकन्दगतं कृत्वा विषेणैव निरोधयेत् ।
 ततः सूकरमांसस्य गर्भे क्षिप्त्वाऽथ शोषयेत् ॥ ५८ ॥
 संध्याकाले बलिं दत्त्वा कुक्कुटं वारुणीच्युतम् ।
 ततश्चुह्यां लोहपात्रे तैले धत्तूरसंभवे ॥ ५९ ॥
 क्षिप्त्वा विंशत्पले पाच्यं यद्रसं मांसपिण्डगम् ।
 संध्यामारभ्य मन्दाग्नौ यावत्सूर्योदयं पचेत् ॥ ६० ॥
 हठाज्जागरणं कुर्यादन्यथा तन्न सिध्यति ।
 प्रातरुद्धृत्य गुटिकां क्षीरभाण्डे ततः क्षिपेत् ॥ ६१ ॥
 ततः क्षीरं शुष्यते यत्क्षिप्रं प्रत्ययकारकम् ।
 रतिकाले मुखं धार्या गुटिका वीर्यरोधिनी ॥ ६२ ॥
 क्षीरं पीत्वा रमेद्रामां कामाकुलकलान्विताम् ।
 मुखस्थां धारयेदन्तैस्तदा वीर्यं न मुञ्चति ॥ ६३ ॥

अथ हिरण्यगर्भगुटिका—

उत्कृष्य मूलं विषजं विदध्याद्गर्भेऽस्य सूतं कनकां(क)स्य पिष्टम् ।
 संवेष्टयेत्कोलमवेन तत्तु मांसेन पश्चात्पचनेन यामम् ॥ ६४ ॥
 धत्तूरबीजोद्भवतैलगर्भे संबद्धतां याति मुखस्थितोऽयम् ।
 संभोगकाले दृढतां करोति वीर्यस्य दुग्धं भजतां नराणाम् ॥ ६५ ॥

इति हिरण्यगर्भगुटिका ।

अथान्यो रसरजः—

नागाहिफेनफलनीविषमुष्टिविलेपिते ।
 वस्त्रे निर्बध्य विधिवद्रसगन्धकस्पर्शरम् ॥ ६६ ॥

गौर्या पचेलावपुटे शतेन च नियोज्य तु ।
 ऊर्ध्वाधो हेमबीजानि पेषयेद्दशतः क्रमात् ॥ ६७ ॥
 तेषां तोयैः पुनः कृत्वा पूषिकामर्कशोषिताम् ।
 तत्कर्दमैः प्रतिपुटं दिग्धां कृत्वा पुटेच्छतम् ॥ ६८ ॥
 रसराजो भवत्येष सर्वरोगहरो रसः ।
 जम्बूवर्णोऽतिकठिनो रूक्षो वीर्यबली भवेत् ॥ ६९ ॥
 जातीफललवङ्गाभ्यां रतौ वीर्यं निरोधयेत् ।
 पटुदीप्यशिवाविश्वैर्वैश्वानरविवर्धनः ॥ ७० ॥
 क्षयघ्नस्तु तथाऽर्शोघ्नस्तक्रकृष्णामयान्वितः ।
 ग्रहण्यां जातिकोशेन रेके कुटजवारिणा ॥ ७१ ॥
 प्रमेहे शाल्मलीद्रवैर्बर्दर्याऽक्षिगदे हितः ।
 सामे वाऽपि निरामे वा समे वा विषमे ज्वरे ॥ ७२ ॥
 देयो नताब्दकटुकाकारविश्वसृतेन वै ।
 रास्नाम्भसा वातरोगे पित्तरोगे सिताद्भुटिः ॥ ७३ ॥
 अक्षत्वचा कफव्याधौ पाण्डुरोगेऽजमूत्रकैः ।
 अश्मर्यामश्मभेदेन कुष्ठे वल्गुजवायसैः ॥ ७४ ॥
 मगंदरे गुडेनैव व्रणे पौनर्नवायुतः ।
 मेदोरोगेऽम्बुमधुना प्रदरेऽशोकवारिणा ॥ ७५ ॥
 शूले हिङ्गुकरञ्जाभ्यामरुचौ रुचकेन वा ।
 छर्द्यां धात्रीरसेनैव क्षण्ये पर्णेन दापयेत् ॥ ७६ ॥
 द्राक्षारसेन शोषे च संज्ञानाशे किरातकैः ।
 मूर्छायां चन्दनाम्भोमिर्विद्रधौ वरणाम्बुना ॥ ७७ ॥
 सर्वेष्वन्येषु रोगेषु ताम्बूलीदलयोगतः ।

इत्यन्यो रसराजः ।

अथ कामिनीमदनञ्जनो रसः—

शुद्धसूतसमं गन्धं रक्तोत्पलदलद्रवैः ॥ ७८ ॥
 मर्दितं बालुकायन्त्रे यामं संपुटकं पचेत् ।
 रक्तागस्त्यद्रवैर्मयिं दिनैकं सितया सह ॥ ७९ ॥
 यथेष्टं मक्षयेच्चानु कामयेत्कामिनीशतम् ॥ ८० ॥

इति कामिनीमदनमञ्जनो रसः ।

अथ महासुगन्धितैलम्—

कपूरागरुचोचबोलनलिकालाक्षासटीधातकी-
 पुष्पैः सप्तदलैलवालुगुरसैः शैलेयमांसीप्लवैः ।
 एलाकुङ्कुमरोचनादमनकश्रीवासजातीफलैः
 कङ्कोलैः क्रमुकैर्जटामदमुराकौन्तीलवङ्गामयैः ॥ ८१ ॥
 बालोशीरमृणालजातिकुसुमस्थौणेयचण्डानरवेर्जाती-
 पत्रकुलीरपद्मकयुतैः सृक्कान्वितैः पालिकैः ।
 लाक्षायोजनवल्लिलोध्रसलिलस्तैलं विपच्याऽऽढकं
 तेनाभ्यज्य तनुं जरा न हि भवेत्स्त्रीणां परं बल्लभः ॥ ८२ ॥
 शुक्राढ्यो ह्युतिमाननल्पतनयः षण्ढोऽपि रत्नसुको
 बन्ध्या गर्भवती भवेदपि तथा वृद्धाऽपि सूते सुतम् ।
 कण्डूस्वेदविचर्चिकामलहरं दौर्गन्ध्यकुष्ठापहं
 दस्राभ्यां परिकीर्तितं बहुगुणं तैलं सुगन्धाभिधम् ॥ ८३ ॥

इति महासुगन्धितैलम् ।

अथ रतिवल्लभाख्यं तैलम्—

सितचन्दनागरुकुङ्कुमामरदारुसिंहकसारिवा-
 मृगनाभिरक्तपटीरवालकमुस्तकुन्दुरुधान्यकैः ।
 तगरैलवालुकबोलकुष्ठपतङ्गभृङ्गलवङ्गकैः
 रजनीशवीरणमूलपीतपटीरयोजनवल्लिभिः ॥ ८४ ॥
 दलनागकेसरजातिकोशमुरासठीबहुलानरवै-
 र्झलिकाविडालजटावचावरशीघ्रजातिफलैरपि ।
 मृदुपेषितैस्तिलजं चतुर्दधिवारिधारिजतूदके
 न समेन साधु विपाचयेदिदमाख्यया रतिवल्लभम् ॥ ८५ ॥
 रतिवल्लभस्य विलेपनादचिरेण पञ्चशरप्रम-
 वोऽबलासु खरोचिरप्यबलो बली भवतीन्द्रवत् ।
 मन्थरप्रमदागणेन न तुष्यति प्रसभं रतौ
 शतहायनोऽपि समीरपित्तकफामयेन समुज्जितः ॥ ८६ ॥

इति रतिवल्लभाख्यं तैलम् ।

अथ पञ्चसायकः—

द्राक्षातुलामुपादाय जलद्रोणचतुष्टये ।
 पक्त्वा चतुर्थशेषं तु तं कषायमुपाहरेत् ॥ ८५ ॥
 दत्त्वा गुडतुलां तत्र धातकीप्रस्थमेव च ।
 निरवाय स्थापयेद्धूमौ यावत्पाशो वरो भवेत् ॥ ८६ ॥
 ततस्तत्सारमादाय वारुणीयन्त्रतः शनैः ।
 पुनस्तं वारुणीयन्त्रे समारोप्य तमाहरेत् ॥ ८७ ॥
 एवं तु दशधा सारं पौनःपुन्येन संहरेत् ।
 ततस्तस्मिंश्चतुर्जातजातीकोशलवङ्गकम् ॥ ८८ ॥
 कर्पूरकुङ्कुमं चापि यथालाभं नियोजितम् ।
 तं यथाग्निलं मर्त्यः पिबेत्सर्वक्षयापहम् ॥ ८९ ॥
 मांसेन सह चान्नेन स्निग्धेन मधुरेण च ।
 नरो नवतिवर्षीयोऽप्यनेन दश कामिनीः ॥ ९० ॥
 प्रत्यहं रमयत्येव युवेव न च हीयते ।
 पञ्चसायकनामेदं रसायनमुदाहृतम् ॥ ९१ ॥

इति पञ्चसायकः ।

अथ कामिनीविधूननः—

कज्जलीकृतसुगन्धकशम्भोस्तुल्यभागकनकस्य च बीजम् ।
 मर्दयेत्कनकतैलयुतं स्यात्कामिनीमदविधूनन एषः ॥ ९२ ॥
 अस्य बल्लयुगुलं ससितं वा सेवितं हरति मेहगदौघान् ।
 वीर्यदार्यकरणे कमनीयो द्रावणेऽयमुदितस्तरुणीनाम् ॥ ९३ ॥
 इति कामिनीमदविधूननः ।

अथ सिद्धलक्ष्मीश्वरो रसः—

अष्टांशहेमचपले शिखिमूषिकायां
 संजार्यं षड्गुणबलिं क्रमशोऽधिकं च ।
 ऊर्ध्वं पयोऽग्निमधरे विनिधाय धीराः
 सिद्धीः समग्रमतुलाः स्वकरे कुरुध्वम् ॥ ९४ ॥
 अष्टांशेत्युपलक्षणे । हेमेतिचपले रसे । शिखीति लोहितसारमूषायां
 च । अधिकमिति शतगुणपर्यन्तम् ।
 इति सिद्धलक्ष्मीश्वरो रसः ।

1. The first part of the document is a list of the names of the members of the committee.

2. The second part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of chairman.

3. The third part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of secretary.

4. The fourth part of the document is a list of the names of the members of the committee who have been elected to the office of treasurer.

अथ लक्ष्मीविलासो रसः—

पलं कृष्णाभ्रचूर्णस्य तदर्धौ रसगन्धकौ ।
 कर्पूरस्य तदर्धं च जातीकोशफले तथा ॥ १५ ॥
 वृद्धदारुकबीजं च बीजमुन्मत्तकस्य च ।
 त्रैलोक्यविजयाबीजं विदारीकन्दमेव च ॥ १६ ॥
 *नारायणी तथा नागबला चातिबला तथा ।
 बीजं गोक्षुरकस्यापि+ऐलजं बीजमेव च ॥ १७ ॥
 एतेषां कार्ष्णिकं चूर्णं गृहीत्वा वारिणा ततः ॥ १८ ॥
 निष्पिष्य वटिका कार्या त्रिगुञ्जाफलमानतः ।
 निहन्ति संनिपातोत्थान्गदान्धोरान्सुदारुणान् ।
 वातोत्थान्पैत्तिकांश्चापि नास्त्यत्र नियमः क्वचित् ॥ १९ ॥
 कुष्ठमष्टादशाख्यं च प्रमेहान्विंशतिं तथा ।
 नाडीव्रणं व्रणं घोरं गुदामयभगंदरम् ॥ ४०० ॥
 गलशोथमन्त्रवृद्धिमतीसारं सुदारुणम् ।
 कासपीनसयक्ष्मार्शःस्थौल्यदौर्गन्ध्यमेव च ॥ १ ॥
 आमवातं सर्वरूपं सर्वशूलविनाशनम् ।
 उदरं कर्णनासाक्षिञ्चीणां गदनिषूदनम् ॥ २ ॥
 वटिकां प्रातरेकैकां स्वादेन्नित्यं यथाचलम् ।
 अनुपानमिह प्रोक्तं मांसं पिष्टं पयो दधि ॥ ३ ॥
 वारितक्रसुरासीधुसेवनात्कामरूपधृत् ।
 वृद्धोऽपि तरुणस्पर्धी न च शुक्रस्य संक्षयः ॥ ४ ॥
 न च लिङ्गस्य शैथिल्यं न केशा यान्ति पक्वताम् ।
 नित्यं शतं स्त्रियो गच्छेन्मत्तवारणविक्रमः ॥ ५ ॥
 द्विलक्षयोजनी दृष्टिर्जायते पौष्टिकः परः ।
 प्रोक्तः प्रयोगराजोऽयं नारदेन महात्मना ॥ ६ ॥
 रसो लक्ष्मीविलासस्तु वासुदेवे जगद्गुरौ ।
 अभ्यासाद्यस्य भगवाँल्लक्षनारीषु बल्लभः ॥ ७ ॥

इति लक्ष्मीविलासो रसः ।

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting department in ensuring the integrity of the financial statements. It highlights the need for transparency and accountability in the reporting process.

2. The second part of the document focuses on the implementation of internal controls to prevent fraud and misstatement. It outlines the key components of a robust internal control system, including segregation of duties, authorization procedures, and regular monitoring.

3. The third part of the document addresses the challenges faced by the accounting department in the current business environment. It discusses the impact of technological advancements, such as automation and data analytics, on the traditional accounting functions.

4. The fourth part of the document provides recommendations for improving the efficiency and effectiveness of the accounting department. It suggests the adoption of best practices, the use of technology, and the implementation of continuous improvement processes.

5. The fifth part of the document concludes with a summary of the key findings and a call to action for the management to support the accounting department in its efforts to enhance the financial reporting process.

अथ वीर्यस्तम्भनम्—

सदहिफेनविमर्दितपारदे कनकबीजरसेन विमर्दिते ।
समसिताविजये यदि भक्षिते न रजनी न दिवा न दिवाकरः ॥ ८ ॥
इति वीर्यस्तम्भनम् ।

अथ जातीफलवटिका—

जातीफलार्ककरहाटलवङ्गशुण्ठी-
कङ्कालकेसरकणाहरिचन्दनं च ।
एतत्समानमहिफेनमचन्द्रमभ्रं
सर्वैः समं न सहते रतिबिन्दुपातम् ॥ ९ ॥
घृतमधुभ्यां वटिका टङ्कमिता ।
इति जातीफलवटिका ।

अथ लोहादियोगः—

लोहं ताम्राभ्रसूतं सुरकुसुमजलं चन्द्रसंजातिपत्रं
पत्रं जातीफलैलासमरिचकरहाटाजमोदाहिफेनम् ।
सामुद्रं सिन्धुशोषावपि घृतमधुना मर्दयित्वाऽस्य टङ्कं
खादेदन्नेऽतिजीर्णे नियतमिह रतौ स्तम्भनं रेतसः स्यात् ॥ १० ॥
इति लोहादियोगः ।

अथान्यप्रकारः—

खसफलशुण्ठीक्वाथः षोडशशेषेण गुडेन निशि पीतः ।
कुरुते रतेन पुंसो रेतःपतनं विनाऽम्लेन ॥ ११ ॥
चटकाण्डं तु संगृह्य नवनीतेन पेषयेत् ।
तेन प्रलिप्तपादस्य शुक्रस्तम्भः प्रजायते ।
यावन्न स्पृशते भूमिं तावत्स्यान्नात्र संशयः ॥ १२ ॥
खसफलतिलमेकं शुण्ठीकर्षं सितापलद्वन्द्वम् ॥
एतच्चूर्णं पयसा पीतं रेतोरतं ध्रुवं धत्ते ॥ १३ ॥

अथ भोगपुरंदरवटी—

हिङ्गुलं च चतुर्जातं लवङ्गोषणचन्दनम् ।
जातीकेसरकं कृष्णा चाकलमहिफेनकम् ॥ १४ ॥
कस्तूरीन्दुसमं सर्वं तत्समे विजयासिते ।
क्षुद्रकोलमिता कार्या गुटी भोगपुरंदरी ॥ १५ ॥

—

—

—

—

—

—

शुकस्तम्भकरी ह्येषा बलमांसविवर्धिनी ।
नरश्चटकवद्गच्छेच्छतवारं स्थिरेन्द्रियः ॥ १६ ॥

इति भोगपुरंदरवटी ।

अथानङ्गमेखला गुटिका—

विषमुष्टिं द्व्यब्धिषोऽहिफेनोऽकलकः समाः ।
मृङ्गनीरेण गुटिका कार्या प्रकृतिरूपतः ॥ १७ ॥
सायाह्ने मक्षयेद्वीर्यरोधिनी कामवर्धिनी ।
निम्बुनीरेण चोत्तारो गुटिकाऽनङ्गमेखला ॥ १८ ॥

इत्यनङ्गमेखला गुटिका ।

अथानङ्गमेखलो मोदको वसन्तराजात्—

अहिफेनं पलमितं वरं दुग्धाढके पचेत् ।
जातीफलं चतुर्जातं जातीकोशं लवङ्गकम् ॥ १९ ॥
व्योषमाकारकरममजमोदां पतङ्गकम् ।
कङ्कालं चन्दनं चापि कुङ्कुमैणमदेन्दुकान् ॥ ४२० ॥
जातीफलाद्यं भैषज्यं प्रत्येकं कर्षसंमितम् ।
मृगनाभिं च कर्पूरं प्रत्येकं माषयुग्मकम् ॥ २१ ॥
सितां ह्यष्टपलां दत्त्वा युक्त्या गुरुमुखोत्थया ।
संमेल्य गुटिका कार्या यथादेहं यथाबलम् ॥ २२ ॥
महाबलकरी वृष्या रतिरागविवर्धिनी ।
शुकस्तम्भकरी पुंसां वनितानां समागमे ॥ २३ ॥
पाण्डुकासक्षयश्वासशूलमेहव्रणभ्रमान् ।
निहन्ति जनयत्यग्निं सर्वदैव प्रपूजितः ॥ २४ ॥
उक्तप्रमाणाद्धां तु गुटिकां ब्रुवते परे ।
अनङ्गमेखलो नाम शिवेन समुदीरितः ॥ २५ ॥

इत्यनङ्गमेखलो मोदको वसन्तराजात् ।

अथ कर्पूरादिलेपनम्—

कर्पूरं टङ्कणं सूतं तुल्यं मुनिरसं मधु ।
समर्थं लेपयेद्विहङ्गं स्थित्वा ग्रामं तथैव च ॥ २६ ॥

ततः प्रक्षाल्य रमयेद्वनितानां शतं सुखम् ।

वीर्यस्तम्भकरं सम्यक्सम्यङ्नागार्जुनोदितम् ॥ २७ ॥

इति कर्पूरादिलेपनम् ।

अथाहिफेनयोगः—

अहिफेनं दुग्धशुद्धं रक्तिकात्रितयोन्मितम् ।

बिन्दुवेगं ध्रुवं धत्ते सितया निशि भक्षितम् ॥ २८ ॥

इत्याहिफेनयोगः ।

अथैषा सौरतगुटिका—

पारदगन्धकचम्पककेसरसुरसकुसुमकरहाटाः ।

अजमोदाम्बुधिशोषौ जातीपत्रं च जातिफलम् ॥ २९ ॥

प्रत्येकं भागैकं भागद्वितयं च शुद्धमहिफेनम् ।

वनवदरसदृशगुटिकाः कार्या मधुनाऽथ भक्षयेद्वेकाम् ॥ ३० ॥

यामेऽतीते ललनासविधे स्थित्वा जवानिकाकर्षम् ।

तैलाद्रं मुञ्जीयादनुपानं चैतदेतस्य ॥ ३१ ॥

लिङ्गं कठिनतरं स्याद्वीर्यस्तम्भं भवेद्यामम् ।

एषा सौरतगुटिका सत्यं सत्यं च शुक्ररोधकरी ॥ ३२ ॥

इत्येषा सौरतगुटिका ।

अथ वीर्यरोधनगुटी रससिन्धोः—

रसं कनकतैलेन मर्दयेद्दिनसप्तकम् ।

विषग्रन्थि समुत्कृष्य सार्धं गद्याणकत्रयम् ॥ ३३ ॥

हेम तैलं च निक्षिप्य तन्मुखं रोधयेद्विषात् ।

सप्तमिर्मृत्तिकाभिश्च वेष्टयित्वा विशोषयेत् ॥ ३४ ॥

माहिषमांसपिण्डे तु स्थले क्षिप्त्वाऽथ सीवयेत् ।

मांसं तत्पोटलीं कृत्वा दृढं वस्त्रेण वेष्टयेत् ॥ ३५ ॥

तत्क्षणं वेष्टयेत्सप्तमृत्साकर्पटसंज्ञकैः ।

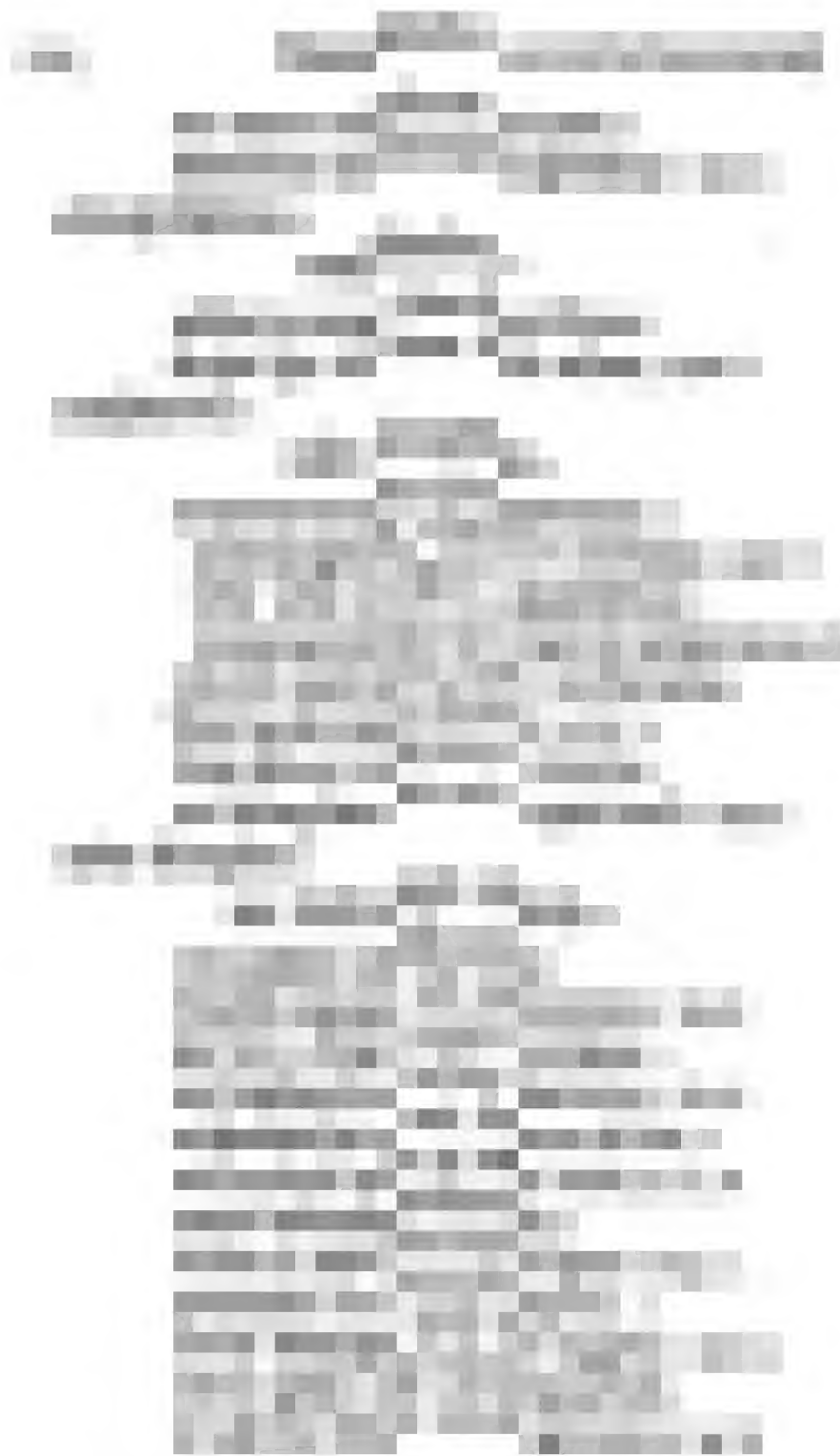
गोमयेन च संलेप्य गोलं तत्पूजयेद्विषक् ॥ ३६ ॥

हस्तत्रयमितो गर्तो गोशकृत्पिण्डपूरिताः ।

तन्मध्ये निक्षिपेद्गोलं दग्ध्वा शीतं समुद्धरेत् ॥ ३७ ॥

तत्रस्था गुटिका ग्राह्या दिव्यकौतुकदायिनी ।

सा मुखे येन निक्षिप्ता रमयेत्सोऽङ्गनाशतम् ॥ ३८ ॥



यावत्सा गुटिका वक्त्रे तावन्न द्रवते नरः ।
इति वीर्यरोधिनी गुटी रससिन्धोः ।

अथ जातीफलगुटिका—

जातीफलं टङ्कमितमाहिफेनं च टङ्ककम् ॥ ३९ ॥
अजमोदा चैकटङ्कां चन्द्रसं चैकटङ्ककम् ।
सितोपला त्रिटङ्का स्यात्पञ्चटङ्को गुडो मतः ॥ ४० ॥
बुद्ध्या संमेल्य गुटिकाः कार्या द्वादश तुल्यशः ।
तत्रैकां भक्षयेद्धीमाञ्शुक्रस्तम्भकरीं ध्रुवम् ॥ ४१ ॥
इति जातीफलगुटिका ।

अथ पतङ्गयोगः—

टङ्कं पतङ्गचूर्णस्य जातीपत्रस्य टङ्ककम् ।
अहिफेनस्य टङ्कं हि द्रवं टङ्कयुग्मकम् ॥ ४२ ॥
अर्धं वाऽप्यथ वा सर्वं चूर्णं खादेद्यथाबलम् ।
पिबेदनु पयः स्वल्पं वीर्यस्तम्भं करोति हि ॥ ४३ ॥
महायोगोऽयमुदितः शुक्रस्तम्भकरः परः ।
इति पतङ्गयोगः ।

अथ लेपनम्—

श्वेताश्वमारमूलत्वक्करहाटाजमोदकम् ॥ ४४ ॥
कृष्णधत्तूरबीजानि सम्यग्जातीफलं तथा ।
एतेषां वारिपिष्टानां गुटिका मरिचोन्मिता ॥ ४५ ॥
एकया मणिलेपो हि नरमूत्रनिघृष्टया ।
वीर्यं संस्तम्भयत्येव सत्यमत्र न संशयः ॥ ४६ ॥
इति लेपनम् ।

किरितव्यवसापूर्णे कूर्मखर्परके धिया ।
रक्तकार्पासिकावर्त्या दीपः शुक्रनिरोधकृत् ॥ ४७ ॥

अथ ध्वजवृद्धीकरणम्—

मल्लतकास्थिजलशूकमथाब्जपत्र-
मन्तर्विदह्य मतिमान्सह सैन्धवेन ।
एतद्विरूढबृहतीफलतोयपिष्ट-
मालेपयेन्महिषविद्धिमलीकृतेऽङ्गे ।

स्थूलं महद्वरतुरंगमतुल्यमाशु

शेफं करोत्यभिमतं न हि संशयोऽस्ति ॥ ४८ ॥

कासीसतुरगगन्धासारिवगजपिप्पलीविषक्केन ।

तैलेन यान्ति वृद्धिं स्तनकर्णवराङ्गलिङ्गानि ॥ ४९ ॥

सेवालसैन्धवसरोरुहिणीदलानि

मल्लतकानि च फलानि च कण्टकार्याः ।

हैयंगवीनमपि माहिषमश्वगन्धा-

कन्दं सुधीः प्रणिद्धीत दिनानि सप्त ॥ ४५० ॥

तैरुद्धतैस्तदनु यन्माहिषीपुरीषे-

णोद्धृत्य लिङ्गमुपलेपितमादरेण ।

तस्याग्रतः खरतुरंगमतंगजानां

लिङ्गानि लाघवपदं परमं प्रयान्ति ॥ ५१ ॥

अथ वा-

उन्मत्तकस्वरसपेषितवाजिगन्धा-

कन्दोपगूढमाहिषीनवनीतमादौ ।

धार्यं फले वृषभवाहनवल्लभस्य

निःशेषबीजराहिते कतिचिद्दिनानि ॥ ५२ ॥

उद्धर्तितं तदनु यन्माहिषीपुरीषे-

र्धचतुरकाम्बुनवनीतविलेपितं च ।

तत्साधनं निधुवनप्रणयोद्धतानां

नारीवराङ्गदलनक्षमतां दधाति ॥ ५३ ॥

क्षौद्रं क्षुद्रातगरमरिचैः पिप्पलीसैन्धवाभ्यां

प्रत्यक्पुष्पीयवतिलगुडश्वेतसिद्धार्थमाषैः ।

श्लक्ष्णीभूतैर्मवति मिलितं वाजिगन्धासनाथैः

श्रोणीश्रोत्रस्तनकचशिरःशेफसां वृद्धिकारी ॥ ५४ ॥

इति राजमार्तण्डात् ।

इति ध्वजवृद्धीकरणम् ।

अथ योनिसंकोचीकरणम्-

उत्पलानि सपद्मानि क्षीरेणाऽऽज्येन पेषयेत् ।

गुटिकां सुकृशां कृत्वा नारीयोनौ प्रवेशयेत् ।

दशवारप्रसूताऽपि पुनर्भवति कन्यका ॥ ५५ ॥

1. The first part of the paper is devoted to a general discussion of the problem of the existence of solutions of the system of equations (1) for arbitrary values of the parameters α and β . It is shown that the system of equations (1) has solutions for arbitrary values of the parameters α and β if and only if the condition $\alpha + \beta = 1$ is satisfied. This condition is also necessary for the existence of solutions of the system of equations (1) for arbitrary values of the parameters α and β .

2. In the second part of the paper the problem of the existence of solutions of the system of equations (1) for arbitrary values of the parameters α and β is solved. It is shown that the system of equations (1) has solutions for arbitrary values of the parameters α and β if and only if the condition $\alpha + \beta = 1$ is satisfied. This condition is also necessary for the existence of solutions of the system of equations (1) for arbitrary values of the parameters α and β .

3. In the third part of the paper the problem of the existence of solutions of the system of equations (1) for arbitrary values of the parameters α and β is solved. It is shown that the system of equations (1) has solutions for arbitrary values of the parameters α and β if and only if the condition $\alpha + \beta = 1$ is satisfied. This condition is also necessary for the existence of solutions of the system of equations (1) for arbitrary values of the parameters α and β .

अथान्यः—

मृङ्गाषोटलिका दत्ता प्रहरं काममन्दिरे ।
नितम्बिन्याः करोत्येव कुमारीभगवद्भगम् ॥ ५६ ॥

अथान्यः—

जातीफलमहिफेनं दार्वी चेति त्रिभिः समा मृङ्गा ।
वरटीछत्रयुताऽसौ गुटिका संकोचनी योनेः ॥ ५७ ॥

अथान्यः—

बम्बूलशिम्बीस्वरसमावितं घर्मशोषितम् ।
दाडिमीत्वग्रजस्तत्तु युक्त्या गुञ्जाचतुष्टयम् ॥ ५८ ॥
योनौ विनिहितं स्थाप्यं कामिन्या प्रहरं धिया ।
सा प्रसूताऽपि दशधा पुनर्भवति कन्यका ॥ ५९ ॥

अथान्यप्रकारः—

वरटीछत्रपानीयधावनादपि ते गुणाः ।

अथान्यः—

मोचचूर्णं विनिक्षिप्तं योनिं संकोचयेत्परम् ॥ ४६० ॥
इति योनिसंकोचीकरणम् ।

अथ योषिद्द्रावणम्—

शम्बूकमांसस्वरसपिष्टेन्दुखदिरोद्भवाम् ।
चणकामां गुटीं दत्त्वा योनौ द्रवति कामिनी ॥ ६१ ॥
सिन्धुक्षौद्रमहाराष्ट्रीलिप्तालिङ्गोपभोगतः ।
सद्यो द्रवति कामार्ता योषिन्नात्र विचारणा ॥ ४६२ ॥
इति योषिद्द्रावणम् ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां षाण्ड्यवाजीकरणादिकथनं नाम सप्तवत्सवा-
रिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ॥ १४७ ॥

अथाष्टचत्वारिंशदधिकशततमस्तरङ्गः ।

अथ संक्षेपतः सर्वरोगचिकित्सा—

कैराताम्बुदपपटं ज्वरगदे तक्रं ग्रहणयामयेऽ-
तीसारं कुटजः कृमौ कृमिरिपुर्दुर्नामकेऽरुणकरम् ।

2019年12月

2019年12月

2019年12月

2019年12月

2019年12月

2019年12月

2019年12月

2019年12月

2019年12月

पाण्डौ किङ्कमथ क्षये गिरिजतु श्वासे तु भाग्यौषधं
 मेहे त्वामलकं क्षये तृषि जलं संतप्तहेमाश्रितम् ॥ १ ॥
 शूले हिङ्गुकरञ्जमामपवने तैलं रुबोर्मूत्रयुक्
 श्रेष्ठा प्लीहि कणा विषे शुकतरुः कासे तु कण्टारिका ।
 वातव्याधिषु गुग्गुलुश्च लशुनः स्याद्वक्तृपित्ते वृषोऽ-
 पस्मारे तु वचासवागथ गरे हेमोदरे रेचनम् (?) ॥ २ ॥
 वातास्रे तु गुडूचिकाऽर्दितगदे माषेण्डरी मेदसि
 क्षौद्राम्भः प्रदरे तिरीटमरुचौ लङ्को व्रणेऽयं पुरम् ।
 शोके मद्यमथाम्लपित्तरुजि तु द्राक्षाऽथ कृच्छ्रे वरी
 कूष्माण्डाम्बु वृगामये तु त्रिफलोन्मादे पुराणं घृतम् ॥ ३ ॥
 कुष्ठे खादिरसारवार्यथ पयो निद्राक्षये माहिषं
 श्वित्रे बाकुचिफलवज्जीर्णरुजि तु स्वापो भये शोषणम् ।
 छर्दौ लाजमधूर्ध्वजन्तुविकृतौ नस्यं सतीक्ष्णौषधं
 शूले पार्श्वभवे तु पुष्करजटा मूर्छासु शीतो विधिः ॥ ४ ॥
 कार्श्ये मांसरसोऽश्मरीषु गिरिभिद्वल्लभेषु सेतुत्वचा
 मोक्षोऽस्य तु विद्रधौ जतुरसैर्हिध्मासु नस्यं हितम् ।
 दाहे शीतविधिर्भगंदरगदे मूवांलताश्वास्थिनी
 घृष्टे रासभलोहितैः स्वरगदे मध्वन्वितं पौष्करम् ॥ ५ ॥
 इति संक्षेपतः सर्वरोगचिकित्सा ।

इति श्रीयोगतरङ्गिण्यां संक्षेपतः सर्वरोगचिकित्साकथनं नामाष्टचत्वारिंशदधि-
 कशततमस्तरङ्गः ॥ १४८ ॥

अथ ग्रन्थप्रशस्तिः—

शारीरसम्बुरुहाणि नादनिनदा सम्यक्चिकित्सोदका
 द्रव्याख्यानखगा सुयोगलहरी नाड्यादिबोधाटवी ।
 सत्सूतादिविधानमीननिवहा धातुक्रियाशैवला
 नाम्ना योगतरङ्गिणी भुवि चिरं जीयादियं संहिता ॥ १ ॥
 आयुर्वेदसुधासमुद्रलहरी कीर्तीन्दुदुग्धोदधि-
 र्गताज्ञानतमोवितानमलिनीभूतात्मनां दीपिका ।
 श्रेयःश्रेणिलताम्बुसेकरचना संपन्मृगीवागुरा
 भूयाद्योगतरङ्गिणी बुधभिषक्तोषाय कोशावनिः ॥ २ ॥
